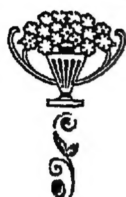
प्रेमोपहार



श्री

के

कर कमलों में भेंट

आपका—

समर्पण

पूज्यवर्य गुणवान
चौथमल्ल हुए यशस्वी
सम्प्रदाय महँ जास
उदय भो पूर्ण मनस्वी ।
उदयचन्द्र मुनि नाम
धाम आराम कहीजे
ज्ञान दान दातार
गुरू गुण मोह लहीजे ॥

उन स्वर्गीय मुनीस के कर कमलों के मांहि ।
रामायण संग्रह सहित धरूं हृदय उच्छाहि ॥

आपका:—
श्रावक धूलचन्द सुराणा जैन,
मु० पीपाड़ (मारवाड़)

भूमिका

श्री राम-गुण रसिक प्रिय पाठकगण !

रामायण का महत्व — अखिल संसार के तत्वों का सार, आत्म कल्याण का आधार और नर तन जीवन का निर्धार नियमतः ज्ञानी जनों ने सत्य और सदाचार ही को फरमाया है।

सत्य सदाचार ही आत्मधर्म है, सत्य सदाचार ही आध्यात्मिक कर्म है, विशेष तो क्या कहें पर सत्य सदाचार ही धर्म का मर्म है।

संसार में सत्य और सदाचार को जिन पुरुषों ने हृदय से धारण किया है उन्हीं महापुरुषों का आत्म-कल्याण हुआ था, होता है, और होगा। सत्य-सदाचारी पुरुषों की ही संसार में जय विजय हुआ करती है, ऋद्धियों सिद्धियों लब्धियों व शक्तियों सत्य-सदाचारी मानव के चरणारविंदों में सदैव दास दासियों की तरह नतमस्तक हो हाजिर रहा करती है और अधिक तो क्या पर सत्य-सदाचारी की देव, दानव, सुर असुर किन्नर सभी नम्रीभूत हो सेवा करते हैं। यथा—

देव दानव गंधव्वा, जक्ख रक्खस किन्नरा।
बम्भयारिं नमंसन्ति, दुक्करं जे करन्ति ते ॥

उत्त० अ० १६ गाथा १६

और जिस पुरुष में सत्य सदाचार की तपश्चर्या है, उस मानव में सब प्रकार की तपश्चर्या है, कहा भी है कि–"तवेसु वा उत्तमं

ब्रम्हचेरं" "सत्यं चेत्तपसा च किं" इत्यादि आर्ष वचनों से स्वयं सिद्ध ही है और सत्य सदाचार से रहित मानव कितना ही जप तप तीर्थ व्रत त्याग क्रिया कर्म करले पर आत्म-कल्याण होना महा दुष्कर है, क्योंकि सब धर्म कर्म का मर्म सत्य सदाचार ही है, इसके बिना न धर्म है न कर्म और न कल्याण है।

अग्नि का जल बना देना, जल का थल बना देना महा भयंकर शेर का श्यार कर देना, और खूंखार सर्प की फूलों की माला बना देना इत्यादि शक्तियां सत्य सदाचार के प्रताप से ही उत्पन्न हुआ करती है।

जैन-पद्य रामायण का परिचय

अब इसके उदाहरण के लिए पुरुष-पावन श्री राम और सती शिरोमणि श्री सीताजी का जीवन चरित्र ही पर्याप्त होगा, अतएव यह "जैन पद्य-रामायण" पाठकों की सेवा में पेश कर रहा हूं।

रामायण का आशय यही है कि राम+अयन यानि राम का मार्ग अर्थात् रामचन्द्रजी जिस न्याय-नीति का आश्रय लेकर चले थे अथवा जिस सदाचार के मार्ग पर प्रगति की उसका जिसमें दिग्दर्शन किया गया हो उसी का नाम रामायण है।

रामायण का महत्त्व जैन दर्शन व अजैन दर्शन में सर्वत्र अति आदर से माना गया है. जैनेतर दर्शन में आदि कवि वाल्मीक व श्री गोस्वामी तुलसीदासजी और राधेश्याम आदि कवियों ने रामायण की बड़ी रसीली रचना की है और जैन दर्शन में पहले पहल श्री हेमचंद्राचार्यजी ने संस्कृत भाषा में 'रामायण'

का निर्माण किया था। तदन्तर स्वल्पज्ञों के हितार्थ संगीतमय रामायण की कृति कवि 'केशराजजी' ने की है। अन्यान्य जैन कवियों ने भी यथाशक्ति 'रामायण' पर लेखनी चलाई परन्तु उपरोक्त कवियों की कविता जितनी प्रख्याति में आई उतनी अन्य कवियों की नहीं। अस्तु,

जैन पद्य रामायण के प्रकाशन की आवश्यकता

पाठक महाशय! जैन पद्य रामायण का प्रकाशन क्यों किया जा रहा है और इसमें क्या अधिकता है? इत्यादि के उत्तर में इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि 'केशराजजी' रचित रामयश का प्रकाशन कितने ही वर्षों के पहले हुआ था, मगर उसकी इस समय उपलब्धि विशेषतः कम होती है और स्थानकवासी जैन समाज में उसकी पूर्ण आवश्यकता भी है। बस इसी की पूर्ती करने के निमित्त ही इस जैन पद्य रामायण का प्रकाशन किया जा रहा है।

इसमें अधिकता भी रहेगी वह यह कि इस जैन पद्य रामायण में कवि केशराजजी के सिवा अन्य जैन व अजैन कवियों की प्रसंगोपात सुन्दर रचनायें भी प्रविष्ट की गई है। संशोधन का खयाल तो पूर्ण रूप से रहा ही है पर उससे भी अधिक कागज कम्पोज-साइज बाइंडिंग आदि पुस्तक का कलेवर भी पूर्ण रूप से सजाया गया है। इसमें विशेष सुविधा तो यह रही है कि पुस्तक बहुत बड़ी शानदार व सजिल्द होने पर भी स्वल्प मूल्य रख कर ग्राहकों के हाथ दी गई है।

संग्राहकजी का परिचय-

इसके संग्रहकर्ता ओसवाल वंश वीशा खानदान के सुराणा जाति के जैनोपदेशक वैद्य धूलचन्दजी है। आपका जन्म मरुधर देश पीपाड़ सीटी में सं १९४५

की साल में कार्तिक वदि चतुर्दशी (दीवाली) के दिन हुआ। आप बचपन से ही विद्यारसिक है। किन्तु आपकी बालकाल में ही चेचक (माता) की बीमारी से नजर चली गई थी, क्या किया जाय " कर्मणो गहना गतिः " कर्मों के आगे किसका जोर चल सकता है। बस आप प्रज्ञाचक्षु रहने पर भी वाणिज्य कला में पूर्ण प्रवीन बन गये और प्रत्येक कर्तव्य में आपकी कुशलता को देख कर बहुत से महाशय दंग होजाते हैं। ज्योतिष शास्त्र में आपकी अच्छी गति है और वैद्यक शास्त्र में तो आपका पूरा अधिकार है, आप जैन-वैद्य हैं, इलाज भी आपका ठीक ही हुआ करता है और औषधियों का निर्माण भी आप अपने ही हाथों किया करते हैं आपको नाड़ीज्ञान में भी काफी सफलता प्राप्त हुई हैं। जैन सूत्रों का तो आपको बोध बचपन से ही है।

आपके दिल में यह भावना कितने ही अर्से से थी कि 'रामायण' का संग्रह करवा कर प्रकाशन करूं मगर आप प्रज्ञा-चक्षु रहे अतः आप लिख नहीं सकने के कारण यह भावना मन ही मन रही।

अच्छी भावना प्रत्येक प्राणी की समय पाकर हो ही जाती है, फलस्वरूप लेखकजी का भी संयोग मिल गया और पुस्तक भी तैयार होगई।

इस पुस्तक के लिखने का परिश्रम मरुस्थलीय श्रीमज्जै-नाचार्य त्यागमूर्ति प्रसिद्ध पूज्य श्री श्री १००८ श्री चौथमलजी महाराज साहब की सम्प्रदायस्थ शान्त दान्त विमल वैरागी सकल कुवासना त्यागी यम नियम निष्ठ सकल गुण विशिष्ट स्थविर पद विभूषित श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव प्रवर्तक स्वामीजी श्री श्री 'शार्दूलसिंहजी' म० सा० के प्रधान शिष्य सरल हृदय

कवि मुनि श्री 'रूपचन्द्रजी' म० सा० ने हमारे अतीव आग्रह से आपने अपना अमूल्य समय देकर जो उदारता प्रकट की है एतदर्थ संग्राहक आपका पूर्ण आभारी है।

अब आपको यह भी मालूम कर देता हूं कि "जैन पद्य रामायण" में किन २ कवियों की रचना संग्रह की गई है।

मुख्यता में तो कवि 'केशराजजी' की मूल रामायण है, फिर पूज्य श्री जयमल्लजी म० सा० की सम्प्रदाय के पंडित मुनिश्री रामचन्द्रजी म० की कविता व श्री व्याख्यान वाचस्पति स्वामीजी श्री नथमल्लजी म० सा० की विशेष कविता ली गई है, आप दोनों सर्व गुण सम्पन्न व महान प्रतापी महात्मा थे, आप दोनों की कविताएँ काफी विद्यमान है।

तीसरे नम्बर में स्वामीजी श्री नथमलजी म० सा० के प्रधान शिष्य कविकुल कुमुद कलाधर स्वामीजी मन्त्री श्री चौथमल्लजी म० सा० की कविता का संग्रह किया गया है।

चौथे नम्बर में स्वामीजी आत्मार्थी मुनि श्री रावत-मलजी म० सा० की कविता का संग्रह किया गया है।

पांचवें नम्बर में श्रीमज्जैनाचार्य श्री अमरसिंहजी म० सा० के सम्प्रदानुयायी स्वामीजी श्री नेमीचन्दजी म० की कविता भी संकलित की गई है जोकि शांत मुनिश्री नारायण-दासजी म० सा० की कृपा से प्राप्त हुई है। श्री पूज्य प्रखर पण्डित वादीगज केसरी रेखराजजी म० के शिष्य श्री नथ-मल्लजी म० की अनुपम कविता भी इसमें डाली गई है।

छठे नम्बर में श्रीमान् दिवंगत पूज्य श्री १००८ श्री कानमलजी म० के सुशिष्य न्यायरत्न साहित्य-प्रेमी कविता कामिनीकान्त युवक हृदय पंडितरत्न श्री चैनमलजी म० की बनाई हुई 'सती अंजना नामक' पुस्तक है उसका प्रत्येक शब्द

यद्यपि बहुत साहित्य सुधार सरसित है तथापि पहिले खण्ड में हनुमानजी की उत्पत्ति के प्रसंग में थोड़ा सा अंजना का भी अधिकार केशराजजी ने अपने रामयश में लिया है तदनुसार हमने भी उस 'सती अंजना' से खास खास मौके पर गायन लिखे हैं आपकी बनाई हुई कई पुस्तकें हैं।

सातवें नम्बर पूज्य गुरुदेव श्री शार्दुलसिंहजी म० सा० के सुशिष्य मुनिश्री रूपचन्द्रजी म० सा० की कविता का संकलन चारों ही खण्डों में किया गया हैं इस ग्रंथ को संशोधन करने का कष्ट आपही ने किया है। आपकी बनाई हुई कई पुस्तकें हैं वे सब एक एक से बढकर हैं।

आठवें नम्बर में श्रीमान् जैनोपदेशक वैद्य धूलचन्दजी सुराणा की सरस व अतीव उपयोगी कविता का संग्रह समग्र ग्रंथ में किया गया है।

अवशेष में श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी की कविता का व राधेश्यामजी की कविता का भी प्रसंग २ पर और अमृतलालजी माथुर (जोधपुर निवासी) की कविता का भी संग्रह है जोकि ग्रंथ समाप्ति के बाद उपलब्ध होने से परिशिष्ट में लिखी गई है इत्यादि कवियों की मौलिक कविता का इस (जैन पद्य रामायण) में संग्रह किया गया है।

अब पाठकों के सम्मुख एक और शब्द कह कर इस भूमिका को यहीं समाप्त करता हूं तथा साथ ही शुद्धिपत्र जो इसके साथ दिया गया है उसकी सहायता लेते रहें और भी कोई गलती रह गई हो तो कृपया संग्रहाकजी को सूचित करें जिससे द्वितीयवृत्ति शुद्ध प्रकाशित हो सके।

आपका—

पं. बालकृष्ण उपाध्याय

* श्रीमतेऽर्हते नमः *

णमुत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स

श्री जैन पद्य रामायण

—: का :—

प्रथम खण्ड

दोहा वेला-वलरागे

श्री "मुनिसुव्रत" स्वामीजी, त्रिभुवन तारण देव,
तीर्थंकर प्रभुवीशमो, सुरनरसारे सेव ॥ १ ॥
पुत्र "सुमित्र" नरेन्द्रनो, "पउमावई"[१] तसुमाय ।
जन्मभूमि जिनवर तणी, राजगृह" कहिवाय ॥ २ ॥
अवतरिया "हरिवंशमें", "हरि" साचविया चार ।
"कल्याणक" पांचेभला, नामसदा जयकार ॥ ३ ॥
चरण कमल तेहना नमी, "राम" सु "लिछमन" राय ।
"सीता" ने "रावण" तणूं, "चरित" रचूं सुखदाय ॥४॥
सुखदाई सहुलोकने. "रामकथा" अभिराम ।
श्रवण सुणन्त सरेसही, मनना वंछित काम ॥ ५ ॥
"रा" उच्चरतांमुखथकी, पाप पुलाई जाय ।
मतिफरि आवे तेहथी, "ममो" कमाड़ी थाय ॥ ६ ॥

---

१ पद्मावती = २ = केटलीक प्रतांमें "साचवीया" पाठान्तरे साचवीया, छे तेमनू पूर्व भवेसिंहगिरि नामहतू तेथी हरिसिंह थी वध्या राम अर्थ थईशके ॥ ३ रा अक्षर बोलतां (मुख खुली जायछे तेमाटे पेटमांथी नीकलीने) पापदूर थायछे, तेफरी पेशतू नथी कारणके मम्मो कमाडी थाय एटले म अक्षर कमाड़ रूप थायछे, (म बोलतां मुख बध थायछे ॥

पावनमें पावनमहा, कलिमल हरण अपार ।
मोक्षपन्थनूं सम्बलू, सज्जन जीवन सार ॥ ७ ॥
विसरामोस्थान की भलू, क्षेम कुशलनो ठाम ।
बीजधर्म तरुवरतणूं, "रामचन्द्र" नूं नाम ॥ ८ ॥
"लिंछमन" "रावण" राजीया, तीर्थंकर पदपाय ।
मुक्तिपुरी जईथायसे, सकल जगतना राय ॥ ९ ॥
सत्यवती "सीता" सती, शीलतणो अवदात ।
स्वर्ग पहूंती बारहवें, वसुधामांहि विख्यात ॥ १० ॥

तर्ज गर्व मतिकररे—ढाल प्रक्षेप ।

श्रीमद् "सिद्ध" शिरनामी, गुरुका चरण महिरपामी, मेट निज तनमन की खामी, शारदा सन्तन सुखदाई "महिर कर वरदे मुजमाई" सत्यव्रत पालो, मेरी जहान सत्य व्रतपालो, सत्यसे पाप विलय जावे, सत्य से "राम" शिवपावें, सत्यका सुरनर गुण-गावे ॥ सत्य० ॥ १ ॥

ढालपहीली तर्ज झकडी, सुण २ कन्तारे सीख सुहावणी ।

"जम्बू" द्वीपे क्षेत्र "भरतभलू" "लंका" नगरी स्थानक निरमलू; (उलालो) निर्मलू स्थानक पूरी "लंका," द्वीपतो "राक्षस" जुवो ॥ "अजित" जिनवरतणे वारेभूप "धनवाहन" हुवो ॥ "महाराक्षस" सुत पाट थापी, अजित स्वामीहाथए ॥ चारित्र लेई मोक्ष पहूंच्या, घणा "मुनिवर" साथए ॥ १ ॥

मूलगी-ढालप्रक्षेप तर्ज गर्वमति कररे ।

"रूपाचल" "रत्न" पूरी राजे "भूपतिहां धनवाहन" छाजे "कंचनपुरी" "अशनीवेग" गाजे ॥ कन्यातसु "श्री कांन्ता" भारी, वरयाजिणभूपतिदिलधारी ॥ सत्यव्रतपालो ॥२॥

विद्याधर अमरससहुभरिया, " भूप " धनवाहन " नीसरीया, " अजित " जिनपायशरणवरिया । ' अभय ' जिनराज उचरीया ईन्द्र तब भीम समझावे, भूपने लंका पहठावे ॥ सत्य० ॥३॥ राक्षसी विद्याही दीथी माणक नवहार परसिंद्धि, भूप ने सर्व कही विधी, परस्त्री, साधु सन्तावेगा, उन्ही से राज्य गमावेगा ॥ सत्य व्रत पालो ॥४॥

धूलचन्दजी कृत ढाल प्रक्षेप तर्ज अरणक मुनिवर चाल्या गौचरी-

लवण समुन्दर तिहूंदिश शोभतो, त्रिकूट गिरी इक पासोजी । राक्षस द्वीप विच रलियामणो, जोयण सातसो खासोजी ॥ निसुणो भवियण वल्लभ वारता ॥ टेर ॥ १ ॥ स्वर्गपूरी सम लंका तेहमे, सुवर्ण में शोभावेजी । पंचप्रकारे मणिना कांगरा, निरखत तृप्ति न आवेजी ॥ निसुणो ॥ २ ॥ एहवी नगरीरे आपूं तुमभणी, अरिनो जोर न थावेजी । अठ जोयण की लंका दूसरी, पूहवी मांहि कहावेजी ॥ निसुणो ॥ ३ ॥

यतः पंचपाषाण प्राकाराः प्राकाराः सप्त चेष्टकाः
पुनस्ताम्रपुजः पंच, दशतेममयास्ततः ॥ १ ॥

राक्षस द्वीपकी चौड़ापणो ७ योजन प्रमाण है ॥ उसमें त्रीकूट पर्वत की ऊचाई नवयोजन और लम्बाई पांचसो योजन की है ॥ त्रीकूट पर्वत के नीचे तीनसो जोजन की खुली जमीन है वहां पाताल लका हैं, जमीन में गुफाकार पाताल लंका है । पाताल लंका की लम्बाई व वड़ाई बीश योजन की है । त्रिकूट पर्वत के विचले कूट में लका नगर है, लका के कोट का प्रमाण तीश लाख क्रोडमण लोह, बारा लाख क्रोड मण तांबो, दश लाख क्रोड़मण सोनो, कोटकी नीव में है ॥ सवैयो-पनरे योजन नीव भीत लंका की जाणो, ऊंची योजन साठ भीत गढ की परवाणों त्रिशत जोजन लम्ब, डोडसो पहूली जाणो, आगे जोजन शत, लका रो प परमाणो । चार हजार पोलहै छिनूहै दरवान, तत्ववेता निर्णय कीयो लंकातणो बयान ॥१॥

(ढाल मूलगी)

राक्षस राजा राज्य करेघणूं, अवसर जाणी तपसंयम तणू, (उलालो)
अवसर जाणी पुण्यप्राणी "देवराक्षस" सुतभणी,
राज्य आपी ग्रही संयम, लही मोक्ष सुहामणी ॥
असंख्याता हुवा भूपति, समय दशमा जिनतणे
"कीर्ति धवल" नरेन्द्र नीको राय आडम्बर घणे ॥ २ ॥
इण अवसर मेरे "रूपाचल[१]" विखे "मेघाभिधापुर[२]" नगर अछे[३] अखे
अखे खग[४] "अतीन्द्र" राजा नारी तेहनी "श्रीमती"
"श्रीकण्ठ" पुत्र पवित्र पुत्री नामे "देवी" गुणवती
"पुष्पोत्तर" नृप "रत्नपुरी" पति नन्द "पद्मोत्तर" सही ।
तस अर्थे "देवी कन्यका रायमांगी ऊमही ॥ ३ ॥
खेचर सुतने परणावी नहीं, 'लंक पतिने' विवाहै गहगही ॥
गहगहि विवाहै अति उमाहै 'कीर्तिधवल' नरेन्द्र ने
देवी' व[५] देवीसदा सुखदा शची[६] जेम सुरेन्द्र ने ॥
अति इर्ष्या थी 'रत्नपुरी' पति वहै अमरस[७] आकरो
नारी हैते क्लेश अधिको ऊपजे सुणीये खरो ॥ ४ ॥
'पुष्पोत्तर' नीं 'पद्मा कुँवरी, खग 'श्रीकण्ठे' रागे अपहरी,
अपहरी निसुणी जाम 'पद्मा' 'पुष्पोत्तर' नृप राजीयो ।
दलबल विराजी पूठे हुचो, ताम खेचर[८] भाजीयो ॥
लंक पतिनूं शरण लीधूं लंकपति बतका करी ।
समजावी राजा ल्यात्र[९] कोधो पक्षतो जीते खरी ॥ ५ ॥
भाखे लंका नोपति सादरो, वास तुम्हारो इहांही करो ।
इहांही तुम्ह वास ठाणो, तिहां तुम्ह द्वेषी सहू,
कोई वेला पिशुन्यत्रासे[१०] लाज तोल घटे बहू ॥

---

१ वैताढ्य पर्वत. २ मेघपुर, ३ छै, ४ राक्षस, ५ अथवा, ६ इन्द्राणी ७ क्रोध, ८ राक्षस (श्रीकण्ठ), ९ लग्न, १० चुगलखोर (शत्रु)

द्वीप वानर त्रिशतजोजन[१] ठाम अधिक सुहामणो,
वास कीजे सुखे रहीजे, प्रेमसाचो आपणो ॥ ६ ॥
भगिनी[२] पतिनो भाषित मानीयो, पुरी किष्किंधा वास वखाणीयो,
वरवाणीयो वरवास वारु, महिल मोटा मन्दिरू,
सुन्दराकार उत्तंग 'पोषह शाल' दिसे सुन्दरू ।
उत्तमांचार अपार सहु अति, धर्म कर्म समाचरे,
देव अरिहन्त सुगुरु सेवा, जन्मनें सफलोकरे ॥ ७ ॥
'वानर द्वीपे' वानर देखीये, राजा रींज्यो प्रेम विसेखीये,
विसेखिये तब प्रेम बहुलो, मारिवा को नविलहै ।
अन्नपाणी दीजीये 'नृप वचन' सहुए सद्दहै,
चित्र[३] विलेखे सुछत्र खेचर रूप वानरनूं करे ॥
तेहथी अथ द्वीपनामे, जाम वानर विस्तरे ॥ ८ ॥
'थीकण्ठ' हीथी उपन्यो नन्दन, 'वज्रसुकण्ठ' नामे आनन्दन ॥
आनन्द कारी राय इकदिन सभामें बैठो जिसे,
द्वीप अष्ट में जात्र देते जात देख्या सुरतिसे ॥
राय चलियो 'मानुष्योत्तरगिरी' यान खलाईयो ।
साधु संगे लेई संयम राय मोक्ष सिधाईयो ॥ ९ ॥
वज्र सुकण्ठादिक अनेकजी, राजा हुवाछे सुविवेकजी ॥
सुविवेकी राय हुवा वीशमां जिनने समे,
'घनो दधि' वर राय हुवो अनमता आवीनमे ॥
लंक नगरी 'तडित्केश' ज राय रूडो राजतो,
राक्षसां वानरां मांहि प्रेमनो गुण गाजतो ।
नन्दन वन में लंकानो धणी, रमवा चाल्यो साथे त्रियाघणी,
त्रियासाथे रायखेले वानरो इक एटले ।
राय त्रियाना कुचविलूर्या, कोपीयो नृप तेटले ॥

---

१ तीन सो । २ बहिननो पति । ३ छत्रादि ऊपर वानरनो रूप चित्रने से द्वीपनो नाम वानर द्वीप हुवा ।

वाणे हणीयो भांय परियो; साधु दीये नवकारए,
सईयूं साचूं सोई वानर हुवो उदधी कुंवारए ॥ ११ ॥
ज्ञानपयुंजी देखे देवजी, आवी ऋषिजी सारे सेवजी,
सेवसारे ताम नृपना लोप वानर मारए ।
देखी कोप्यो देववानर सैन्य अतिविस्तारए ॥
कोपीया कपि तरु शिलासूं हणे राक्षस लाखए ।
सांति ने बले सुर मनाव्यो बक्षीस अब इमभाखए ॥ १२ ॥
साधु समीपे दोई आवीया, देशना निसुणी साता पावीया ॥
पावीया साता रायपूछे कहिये ऋषि करुणा करी ।
वानर नी ने माहरीए सुनावो पूरव[१] चरी ॥
पुरी 'सावत्थी' ए मंत्री–पुत्र तूंतो 'दत्त' हुतो,
'कासिंए' लुब्धक 'जीव कपीनो पापजीवी'[२] थो छतो १३॥
मुनिवर पासे ते दीक्षावरी, 'वणारसीए' आव्यो संचरी ।
संचरी आव्यो ताम 'लुब्धक' मारियो ते मुनिवरु,
माहेन्द्र[३] कल्पे देव होई तूं हुवोरे नरेश्वरू ॥
नरकना दुःख देखी लुब्धक ऊपज्यो वानर पणे,
वैरकारण भवधारण ज्ञान बले मुनिवर भणे ॥ १४ ॥
पुत्र 'सुकेशीने' पद आपीयूं, संयम माथे नृपमन थापीयूं ।
थापियू संजम माथे एमन, मोक्षमारग साधियो ।
'घनोदधि' वर ग्रही संजम, मोक्षपद आराधीयो ॥
'किष्कन्धी' राजा किष्कन्धाए, 'सुकेशी' लङ्कावली ।
'केशराज' अधिकार पहिली, ढाल ए भाखी भली ॥ १५ ॥

॥ दोहा भैरव रागे ॥

गिरी वैताढ्य विशेष थी, 'रथनूपुर' पुर देख ।
'अशनीवेग' राजाभलो, पाले राज्य विशेख ॥ १ ॥

१ पूर्व भवनो चरित्र (परि चरित्र । २ पारधी । ३ देवलोक दशमो ।

'विजयसिंह' विजयीमहा, 'विद्युत्वेग विशेष।
दोरदण्ड[१] दो नन्दना, पावे सोह[२] नरेश ॥ २ ॥
तिण पर्वत 'आदित्य' पुरे, 'मन्दिरमाली' राय।
तेघर पुत्री ऊपनी, 'श्रीमाला' सुखदाय ॥ ३ ॥
स्वयम्बर मण्डप तेहने, बोलाव्या बहु भूप।
मण्डपनी रचना रची, आछी भांत अनूप ॥ ४ ॥
रायसहूने अति क्रमी, वरियो किष्किन्धी राय।
'विजयसिंह' कोप्योघणूं अमरस सह्यो न जाय ॥५॥
आगे ही ऊतारीया, पर्वतथी तुम आंहि।
अरे छंडेला[३] छलवटो,[४] अबहु तजो न कांहि ॥ ६ ॥
कहे आपोवर मालिका, के शूरा संग्राम।
राय सुणी कोप्यो घणूं, वानर-राक्षस स्वाम ॥ ७ ॥
'विजयसिंह[५]' ने मारियो, किष्किन्धी नृपनोभ्रात।
अंध कहणी बदलो लीयो, विजयसिंह ने तात ॥ ८ ॥
किष्किन्धा 'लङ्का' धणी, कूटी काढ्या दोय।
इहां पलेखो को नहीं, बलियो करे सो होय ॥ ९ ॥

ढाल दूजी तर्ज-प्रभुजी ने अङ्गी सुहावती है।
(कड़वो रे गुड़ भेली रो)

बलियां शूं कुण लागता है, फिरी पाछा ही भागता है ॥ टेर ॥
किष्किन्धा 'लङ्का' ना नायक, पायालां थिती ठावता है।
'लङ्कपयाल' प्रसिद्ध पृथिवी, वास कियां सुखपावता है ॥ब०॥१॥
अशनीवेगे 'नृपनिर्घात' ज, 'लङ्का' थाने थापता है।
देशनगर पुर पाटण सहुए, यथायोग्य ने आपता है ॥बलि० ॥२॥

१ पुत्ररूपी बे भुजदण्ड। २ शोभा। ३ छोडेला। ४ कपट। ५ विजय सिंह ने किष्किधीना नानाभाई अन्धकेमार्यो तेथी विजयसिंहना बापे अन्धकूने मारी बदलो लीधो।

सहश्रार ' सुतने देई पदवी, आपण संयम धारता है ।
समिति गुप्ति व्रतनो प्रतिपालक, निज-पर-कारज सारता है ।।व०।।३।।
राय 'सुकेशी' घरे इन्द्राणी, नारि शिरोमणि नायका है ।
'माली' 'सुमाली' माल्यान ए, पुत्र तिनोंकी दायका है ।व०।।४।।
किष्किंधा पतिनी वरवनिता, नामेतो वरमाला है ।
'रुक्षरज' 'आदित्यरज' दो सुतनो, माय सुविशाला है ।।व०।।५।।
राय किष्किंधी 'मधु' पर्वतपरे[1], सुखसाता अति माणता है ।
नाम 'किष्किंधा' नगर निवसावी, वास विशेषे ठाणता है।।व०।।६।।
राय 'सुकेशी' तणा सुत कोप्या, नृप 'निर्घात' निकासीयो[2] है ।
'मालि' 'लंका' पुरी 'किष्किंधा' 'सूररजा'[3] नृप वासीयो है।व०।।७।।
नृप 'सहश्रार' तणे घरनारी, 'चित्त' सुन्दरी राजे है ।।
नन्दन 'ईन्द्र' अनोपम जायो, उपमा ईन्द्रही साजे है ।व० ।।८।।
'मालि' राजा इन्द्रेनिपात्यो[4], पुनरपि लंका लीधी है ।
नृप 'वैश्रवण' भणीसा दीधी, खुणसनी खुणसी कीधी है ।व० ।।९।।
'लंकपयाल' 'सुमालि' वसन्तो, 'रत्नश्रवा' सुत तण्डियो है ।
कुसुमोद्याने जय विद्यानो, साधन मोटो मण्डियो है ।व० ।।१०।।
खेचरनी कुंवरी मन हरणी, पासे आवी ऊभी है ।
तनमन राची रहीछे साची, प्रभुजीने गुणे खोभी है ।व०।।११।।
निश्चलमन राखन्तो नरवरे, सूधो साधन साधियो है ।
'मानव' सुन्दरी विद्यासाधी, वानघणेरो वाधियो है ।व० ।।१२।।
दृष्टि पसारी जोतो देखे, पासे पद्मनी ठाढी है ।
आपण कुण अछो कहै सुन्दरी, बचने क़थने गाढी है ।व० ।।१३।।
'कोतुक मंगल' पुखर महोटूं, 'व्योमविन्दू' तिहां राजा है ।
'कौशिका' कैकसी वेसहोदरी, रूप कला गुणताजा है ।व० ।।१४।।
'कौशिका' तो 'विश्रवसा' घरे, 'वैश्रवण' सुतवंका है ।

---

१ ऊपर । २ मारीयो । ३ आदित्यरज पाठे । ४ मार्यो ।

'इन्द्र' तणे अधिकारे अधिको, लंका राज्य निशंका है ।व० ॥१५॥
निमित्तिए मुज तुमपर भाख्यो, मनसा अधिक उमाही है ।
तेडी कुटुम्ब आडम्बरे राजा, सा कन्या तव व्याही है ॥व०॥१६॥
पुर 'कुसुमांतर' नयरे वसावी, वासवनो[1] सुखमाणे है ।
धर्म सुकर्म करन्तां बहुलो. जन्म कृतार्थ जाणे है ।व० ॥ १७ ॥
एक दिवस 'कैकशी' निशाए, सिंह सलूणो देखीयो है ।
गजकुम्भस्थल[2] भेद करंतो, नृपने हर्ष विसेखियो है । व०॥१८॥
गर्भवती सा राणी वाणी, अति असुहाणी भाखे है ।
मोडे अंग कलेश करन्ती, मानघणूं मनराखे है ।व० ॥ १९ ॥
दर्पण छांडी खडगे मुख देखे, इन्द्रही आण मनावे है ।
अरिशिर पाव दियूं इत्यादिक गर्भ प्रभाव जणावे है ।व० ॥२०॥
प्रति[3]पखियों घर त्रास पडंतों, शुभवेला सुत जायो है ।
सहस[4] चतुर्दश वर्ष प्रमाणे, अविचल होई आयो है । व० ॥२१॥
'भीमेन्द्रेण'[5] पूरार्पित परगट, माणिक नव निपायो है ।
हार उठाई ऊंचो लीधो, पहरी गले शोभायो है ।व० ॥ २२ ॥
देखी 'कैकशी' एह तमासो, अचरिज अधिक उपायो है ।
'रत्नश्रवाने एह अपूरब, राणीए ख्याल दिखायो है ।व० ॥२३॥
राक्षस इन्द्रे 'घनवाहन ने' आप्योथो इम सुणियो है ।
पूर्वेज जे तवअर्च्यो पूज्यो, देव तणी परे थुणियो है ।व० ॥२४॥
नाग हजारे सेवित किणही, ऊपाड्यो नवि दीठो है ।
बालक थांरो लिलाएसो, कण्ठे पहरी बैठो है ।व० ॥ २५ ॥
नव माणिक मानव मुख दीसे, दशमो सहज दिखायो है ।
'दशमुख' नाम पिता तव थापे, उच्छव अधिको थायो है ।व० ॥२६॥

---

१ इन्द्र । २ हाथीनूं कुम्भस्थल भेदतां सिंह दीठू । ३ शत्रु । ३ चौदह हजार वर्ष (सहस-सहस्त्र) जैनरामायणमां साडा बारे हजार वर्ष नूं प्रमाण लख्यूं छे । ५ भीमेन्द्र राजाए पूर्वे आपेलु ॥

'सुमालि' मन्दिर[१] गिरी गयोथो, ज्ञानवन्त ऋषि पूछियो है ।
नवमाणिकनोहार वहैसो, त्रिखण्डाधिप[२] सूजीयो है ।व० ॥२७॥
भानु[३] स्वपन देखी सुतजायो, 'भानुकर्ण' कहायो है ।
'कुम्भकर्ण' तो अपर नामथी, सूर्य-तेज सुहायो है ।व० ॥२८॥
तीजीवारे[४] 'शूर्पनखाजी' पुत्रीतो अति प्यारी है ।
चौथी वारे 'चन्द्र स्वपन सूं, 'विभीषण' सुखकारी है ।व० ॥२९॥
षोडसेसाग्र[५] धनुष्य समुन्नत, सहोदर सम भाया है ।
बीजीढाल विशाल विशेषे, केशराज गुणगाया है ।व० ॥ ३० ॥

॥ दोहा काफी रागे ॥

एक दिवस 'रावण' प्रभु, ऊंचूं जुवे जाम,
बैसी विमाने आवतो, 'वैश्रवण' गुणनोधाम ॥ १ ॥
देखी पूछे मायजी, ए कुण राजा होय ? ।
मासी सुततो ताहरो, मुज भगिनी सुत जोय ॥ २ ॥
'वैश्रवण' नामेभलो, इन्द्र तणे घर एह,
मानीजे मति आगलो, सकजां साथे स्नेह ॥ ३ ॥
तोय 'पितामह[६]' मारिने, लंक ग्रही हरिराय.
आपीछे ते एहने, ए दुःख सह्यू न जाय ॥ ४ ॥
लंकादोई[७] नामथी, विद्या राक्षसि नाम,
राक्षस 'भीम' कृपाकरी, आपीथी अभिराम ॥ ५ ॥
'घनवाहन' राजाथकी, एस्थिती चालीजाय,
अबतो कांई ही नथी, दीनवदे नृपमाय ॥ ६ ॥

---

१ मेरुपर्वत । २ त्रिखण्ड-अधिप-त्रिखण्डना धणी अर्ध-चक्री प्रति-वासुदेव । ३ सूर्य । ४ तीजीवारे विभिषणने अने सूर्पनखाने जन्म-आप्यो, एम जैनरामायण में है । शूर्पनखानूं अपर नाम-चन्द्रनखा । ५ रावण-कुम्भकर्ण तथा विभिषण ए त्रण भाई ओनो, शरीर सोले धनुष्य प्रमाण ऊंचू हतूं । ६ पितानो पिता (दादा) । ७ लका—पाताल लका ।

धरती छूटे जेहनी, मान महातम जाय,
सधन थकी निर्धन हुवे, जीवित मुआ गणाय ॥७॥
अण रखवाले छेत्रने, जो जाणे सो खाय,
रखवाला बैठां थकां, कोईयन खावा पाय ॥ ८ ॥
सो दिन नयणें निरख सूं, लंका नगरी जाय,
पितामहने आसने, तुम बैसो उसराय ॥ ९ ॥
लंकाना लूंट नारने, वन्दि खाना मांहे ।
देखिस तव जाणिस सही, पुत्रवती हूं प्राहै ॥ १० ॥
एह मनोरथ माहरा, गगन[1] कुसुम समदेख,
मरुदेशे 'मरालिका' दिन २ क्षीण विशेख ॥ ११ ॥
एम वचन श्रवणे सुणी, विभीसण बोलन्त,
थाधिरी ढाढस पकड़, माता मत डोलन्त ॥ १२ ॥

॥ ढाल तीजी तर्ज=पद आसावरी ॥

दशकंधर[2] राजा चढतो तेज प्रतापे, तीन भुवन को कंटक कहीये।
आणन कोई उथापे, रावण राजा चढतो० ॥ टेर ॥
कौणछे 'इन्द्र धनद[2]' विचारा, कौणछे खेचर जाण,
ग्रहगण[3] रात्री न रात्री पतिरहै, जब ऊगे इक भाण ॥दश० ॥२॥
'रावण' घर बैठां सुखपावो, 'कुम्भकरण' को जोर,
'अष्टापद'[4] ऊठ्यां थी 'केहरी' भाजीजाये भोर ॥ दश० ॥ ३ ॥
'कुम्भकरण' भी अलगो जावो, माहरी अधिकी टेक ।
'मयंगल' मातो[5] 'केहरी' आगे, पाव भरे नहीं एक ॥दश० ॥४॥
'रावण' भाखे माय सुणोजी, दिओ अमनें आदेश,

---

१ आकाशना फूल। २ धन+द=धन देनार धनेन्द्र वैश्रवण। देव
३ सूर्योदय से ग्रहगण पटले तारानो समूह रात्री यानि-अन्धकार और रात्रीपति अर्थात् चन्द्रमा रहै नहीं। ४ सिंह को मारने वाला प्राणी। ५ मदोन्मत्त हाथी।

विद्या साधन साधी आवूं वाधे वान विशेष ॥ दश० ॥५॥
शुद्धा राधननें वलि साधी, विद्या एक हजार।
'सिंह' तणा नतु पाखर बैठा, हुवा अगंज अपार ॥ दश० ॥६॥
'कुम्भकर्ण' तो पांचज पामी, चार विभीषण लाधी।
क्षेम कुशलसूं तीने बंधव, आया विद्या साधी ॥ दश० ॥७॥
विद्या साधन विधि अधिकी, पद्म पुराणे वखणी।
मैं संबंध संक्षेपे कीधो, ग्रन्थ वधन्तो जाणी ॥ दश० ॥ ८ ॥
'षट्[१] उपवासे खांडो साध्यो, 'चन्द्रहास' वरदाई।
चन्द्र जिम कला नित्य चढती, वाधे अधिक वडाई ॥ दश० ॥९॥
गिरि 'वैताढ्य' दक्षिणश्रेणी, पुरवर 'सुरसंगीत'।
'मय' नृप 'केतुमतिनी'[२] जायी, 'मन्दोदरिय' पवित्त ॥दश० ॥१०॥
परणावी राजा 'रावण' ने, सन्मुख आणी कुंवारी।
जिम शचि इन्द्र घरे राणी, राय घरे ए नारी ॥ दश० ॥११॥
गिरि 'मेघरथ' खेचर पुत्री, रमति दीठी राय।
छए हजार वरी इकसाथे, पूरव पुण्य पसाय ॥ दश० ॥ १२ ॥
'पउमावई' पुत्रिनो तातज 'सुर सुन्दर' वडराजा।
अवर जनक सहु मिलीसाथे, आया लस्कर ताजा ॥ दश० ॥१३॥
वहु सहु मिली बोले स्वामी, वेगे विमान चलावो।
आया कटक विकट भट भारी, टले वैरी एम टलावो ॥ दश० ॥१४॥
'रावण' भाखे 'भामनियोंशूं' आरति कोई म आणो।
भूरी[३] भुजंगे[४] गरुड न बीहे, ए उखाणो जाणो ॥ दश० ॥१५॥
करी संग्राम सहुने जीती, नागज पासे बांधे।
नारी वचने छोडी बंधनथी, नेहघणेरो सांधे ॥ दश० ॥१६॥
'महोदर' नृप 'कुम्भ' पुराधिप, 'सुरूपनयना' राणी।

---

१ छ--जैन रामायणां षोडस-सोले पत्ता है। २ हेमवतीति जैन-रामायणे। ३ बहुत। ४ सर्प।

,'तडितमाला'' पुत्रीपरणी, 'कुम्भकरण'' घर आणी ॥ ॥ दश-१७ ॥
''ज्योतिपुर ''पति'' ''वीर नरेश्वर. नन्दवती नी जायी ।
'पंकजश्री' पंकजवरनयणी, विभीषणसुखदाई ॥ ॥ दश० १८ ॥
'मन्दोदरिये' नन्दन जायो ईन्द्र सरीसे तेजे ।
'इन्द्रजीतजी' नामप्रमाणी, बोलाव्यो घणाहेजे ॥ ॥ दश० १९ ॥
मेघ सरीसो नयणां नन्दन, बीजो नन्दन जायो ।
'मेघवाहन' चारू कुंवर, कर्मे तो कहवायो ॥ ॥ दश० २० ॥
'कुम्भकरण' विभीषण भाई, लंकाने उजाडे ।
'धनद' सुमालिसूं, ओलम्भो, दूत मुखे देवाडे ॥ ॥ दश०२१ ॥
रावण राजा भाई ताजा, चढिया ताम संग्रामे ।
'धनद' संघाते युद्ध किया थी, 'रावणजी' जशपामे ॥ ॥दश०२२॥
चरम 'शरीरी' धनद नरेश्वर, चारित्र सूं चित्त लावे ॥
शत्रुमित्रसूं सम परिणांमी, 'रावण' आवी खमावे ॥ ॥दश० २३
'लंका' लीधो रावण राये, 'पुष्पक' लीधू विमान ।
माय मनोरथ पूरा कीधा, पुरुषों एह प्रमाण ॥ ॥ दश० २४ ॥
'पुष्पक' विमाने बेसीने, गिरी- वैताढ्ये आवे ।
भुवना लंकृत हाथी साही, गजशाले बन्धावे ॥ ॥ दश० २५ ॥
एक[1] 'विद्याधर' आवीसुनावे 'किष्किधा' नृपजाय ॥
'लंकपयाल' तजी निजनगरी, लेवासारु आय ॥ ॥ दश० २६ ॥

---

१ एक विद्याधर रावण के पास आकर कहने लगा कि किष्किधा राजा के दोनों पुत्रों को यमराजा ने युद्ध में हराकर कैद में डाल दिया है और वे आपके सेवक हैं इसलिए उन्हों को आप छुडावें। ऐसा सुनकर रावण यमराज के पास जाकर यमराजा को परास्त कर दोनों पुत्रों को छुडा लाया और यमराजा रथनूपुर मां जाकर वहां का इन्द्र राजा ने अपनी मदद करने के लिये कहने पर वह तैयार हुवा तब मंत्री ने इन्कार किया फिर यम को सुरसङ्गीतक नगर देकर युद्ध करवाके लिये बुलावाये हैं।

युद्धे हरावी 'यम' राजा तस बन्दी खाने ठावे ।
'रावणे' छोडाव्या' यम हरिख, एम उदन्त सुणावे ॥ दश० २७॥
'लंका' लेई' किष्किंधा लीधी, पुष्पक लीधू विमान ।
'सूर सुन्दर' संग्रामे हरायो, आज बडो राजान ॥ ॥दश० २८॥
कोप्यो 'इन्द्र' प्रधाने निषेध्यो, देखोनीं सूं थाय, ।
'यमने' सुरसंगीतक' समर्प्युं, आघूं काढे राय ॥ दश०॥ २९॥
'सूररज' ने पुरी 'किष्किंधा' प्रीतीधरी नृपआये ।
'ऋक्ष' नगरे तो 'ऋक्ष रजने', आपणड़ो करी थापे ॥ दश० ३०
भलेमूहुर्ते डिम्भ घणांसूं, 'रावण' लंका आवे ।
नारी वधावे मंगलगावे । सयणमहासुखपावे ॥ ॥दश० ३१॥
अनन्द रंग विनोद विशेषे, घर २ मंगला चार ।
'केशराज' एत्रीजी ढाले, मुख २ जय २ कार ॥ ॥दस० ३२॥

॥ दोहा रामग्रीरागे ॥

'सूररज' ने घरजाणीये 'इन्दुमालिनी' नारि ।
'बालि सुत ऊपन्यो बली, कौन सके तस वारि ॥ १ ॥
समुद्रान्त पृथिवी सहु, नित्य प्रदिक्षणादेय ।
सब विधि वातां आगलो, शूर बीर जश लेय ॥ २ ॥
पुनरपि केते आंतरे, जायो सुत सुग्रीव ।
'सुप्रभा' छे कन्या भली, शोभनीक सदीव ।
'ऋक्षरजा' घर कामनी, 'हरीकांता' सुविधान ॥
'नील' अने 'नल' नामथी, जाया पुत्र प्रधान ॥ ४ ॥
'सूररजा' 'बाली' भणी, नृप पदवी आपन्त ।
चारित्र पाली निर्मलू, मोक्षे पहूंच्यो सन्त ॥ ५ ॥

ढाल चोथी तर्ज छठो भावनामनधरो ए ।

एकदिवस 'लंका पति' क्रिडानी उपनी रति[1], उपनीरती पहूंच्यो

[1] इच्छा ।

परबत मन्दरूए१ ।। 'शूरपनखा ने'अप हरी, खर खेचर गयो संचरी संचरी, 'लंकपयाले' घर कर्यू ए ।। १ ।। 'सूररजानो नन्दन, 'चन्द्रोदर' आनन्दन, नन्दन 'सूररजा' नो मारियोए ।। खबर लईने राजीयो, 'खर' ऊपर दल साजीयो, साजीयो 'मन्दोदरि' ये वारियो ए ।।२।। 'लंक पयाला' नो धणी, कीधो भगनी पतिभणि पतिभणि, आपणड़ो कर थापीयोए ।। 'चन्द्रोदर' मारयो सुणी 'अनुराधा' त्राटीघणी, त्राटीघणी दैव रण्डापो आपीयोए ॥ ३ ॥ वनमां नन्दन जाईयो, नामे "विराध" कहाईयो, कहाइयो सकल कला गुण आगलोए। यौवननी वयपामीयो, वैरि विशोधन कामीयो, कामियो कामकरण ऊतावलोए ।।४।। 'वलि' सेवा वांछतो, आणमां लेवूं इच्छतो, इच्छतो, आतुर दूत चलावियोए ॥ 'वालि' ने पग लागियो, अन्तः करण अनुरागीयो, रागियो 'रावण वचन सुणावीयोए ।। ५ ।। 'कीर्ति धवल' थी मुजतांई, 'श्रीकण्ठ' थी तुजतांइ, तुजतांइ, चाल्यूपति सेवक पणूंए।। अब अभिमान न कीजीये. जो कीजे तो खीजिये, खीजीए थोडामां भाखूंघणूंए।।६।। 'वालि' कहै ए सहु खरो, उणघरसूं नहिं आंतरो, आंतरो पड्योछे मनमाहरे ए ।। देव अने गुरु टालिये, न नमूं मस्तक वालिये, वालिये, नावूं हूं घर ताहरे ए ।।७।। जन अपवाद थकी डरूँ, नही तो जाणूं जीम त्िम करूं, तिमकरूँ कीधाथी टलसूं नहीं ए।। जा तुजस्वामीने कहै, अबतू शीलो कां वहै, कां वहै, एतो आवी वणी सहीए ।।८।। 'दूत' बचन जब सांभल्यो राजा 'रावण' परजल्यो, परजल्यो, दलबल बहु लेई चालीयोए ॥ कपिपति सामो आवीयो, दल बल अन्तन पावीयो, पावीयो, लोक उपद्रव टालीयोए ।। ९ ॥ द्वन्द युद्धनी स्थापना, टाले उपाय ते पापना, पापना, उपायए अलगा कीयाए ॥ दोइतो

---

१ मेरू।

श्रावक भला, होईतो मति आगला, आगला, 'दया धर्म चित्त में लीयाए ॥ १० ॥ 'अस्त्र शस्त्र जो चालवे, 'वालि' तेसहु झालवे, झालवे, 'रावण' ना उमकर्म ने ए ॥ चतुर महाछे चौकसी, चोट करे अति औकसी, औकसी, हाम न मेटे धर्म ने ए ॥ ११ ॥ गिन्दुक[१] ने परे पिड़ियो, करकोटे इम भीड़ीयो. भीड़ीयो, चारे समुद्रे फेरीयो ए ॥ होई खिसाणो आपजी, आणे मन संतापजी, संतापजी, हारीयो 'रावण' हेरीयो ए ॥१२॥ सम्भारे अति सारजी, पूरब ना उपकारजी, उपकारजी, छोड़ीयो 'रावण' राजीयो ए ॥ लघुभाई स्थिर स्थापीने, राज्यतणीस्थिति आपीने, आपीने, आपण संयम साजीयो ए ॥१३॥ 'सुग्रीवे' सुविचारीयो, 'रावण' तो अधिकारियो, अधिकारीयो, 'श्रीप्रभा' परणावीयो ए । 'बाली' ऋषीश्वर संचरे, प्रतिमाधर बहु तपकरे, तपकरे, लब्धीवन्त कहावीयो ए ॥ १४ ॥ मास २ पारणूं करें, सदा सुखकारणो वरे, कारणोवरे, 'अष्टापद' गिरि आवीयो ए ॥ 'काउसग्गने' समाचरे, योग ध्यान निश्चलधरे, निश्चलधरे, जिनशासन शोभावीयो ए ॥१५॥ 'नित्यालोक' ज पुरवरु, 'नित्या लोक' नरेश्वरू, नरेश्वरू कन्यकाछे 'रयणावलीए' ॥ 'रावण' नृपजावे जाम, 'अष्टापद' आये ताम, आये ताम. आगेतो नासके चलीए ॥१६॥ दीठा तले ऋषिजी टाढो, 'रावण' रोष करे गाढो, करे गाढो, जाणूं ए पर्वत पाडे ए ॥ माथा माथे ऊपाडीयूं, तबते पर्वत खड़हड़यों, खड़हड्यो, मुनिदाब्यो अंगूठड़े ए ॥ १७ ॥ त्रासकरीने[२] नामीयो, ऋषि चरणे चित्त वासीयो, वासीयो, रह्यो साधु पग अनुसरय ए ॥ ऋषिजी ने राग न रोषजी, सहु साथे सन्तोषजी, सन्तोषजी, लब्धीपणं देखाडीयू ऐ ॥ १८ ॥ साधु जुहारी युक्तीसूं जिनगुण गावे भक्ति सूं, भक्ति सूं, तब धरणेन्द्र पधारीयो ए ॥ 'अमोघ विजया' नामे भली, शक्तीरूपछे निर्मलो, निर्मलो, विद्या-

---

१ दड़ो=२ वाली मुनिना त्रासथी दशकधर । र व अर्थात् बूमपाडने से उसका रावण नाम पडा=

देई सिधावीयोए ॥ १९ ॥ दश विध आराधनकरी, "बाली" ऋषी शिव गतिवरी, शिवगतिवरी, नमो २ ऋषिरायछेए ॥ चौथी ढाले चतुराई, चतुरलोकरेमनभाई, मनभाई "केशराज" गुणगायछेए ॥ २० ॥

॥ दोहा नयत श्री रागे ॥

गिरि "वैताढय" विशेषथी, 'ज्योती' पुर वरनाम ।
विद्याधरछे" ज्वलन सिंह" राजागुण अभिराम ॥ १ ॥
नारी नामे "श्रीमती" पुत्री तो परधान, ।
"तारा" तार विलोचना, कोईयन तेहसमान ॥ २ ॥
नृप "चक्रांक" तणोसही, सुत "साहसगति" जोय ।
तारा दर्शनमोहियो, करे याचनासोय, ॥ ३ ॥
वानरपतिनी वांछना, तात लखिएवात ।
"साहसगति" स्वल्पायुषो[१], "कपिपति" ने दीये तात ॥४॥
"तारा" उदरे ऊपन्या, अंगज आछा दोय ।
"जयानन्द" "अंगद" भला, वेलीसमफलजोय ॥ ५ ॥
"साहसगति" सांसोपड्यो, झूरे रातने दीह,
अणसरजे किम पामीये, ए जिन वचननी लीह, ॥ ६ ॥
कोई दाय उपायसूं, तारासंगकराऊं ।
तो जीवित्व लेखेगिणूं, नहींतो सद्य मगीजाऊं ॥ ७ ॥
रूपपरावर्तनकरी, विद्यानो आरम्भ, ।
हिमवन्त परबत जई, मण्डे करवा दम्भ ॥ ८ ॥
भूचर खेचर राजवी, दलबली सबलचिराज ।
दिग् मात्राए चालीयो, "रावण" रूडे साज ॥ ९ ॥

॥ ढाल पांचवीं ॥ तर्ज—वनमाला के छोहरा ॥

"रावण" दिग्विजये चालियो, साथे सब परिवारोरे ।
तेज प्रताप वाधेघणो, ऊगन्तो दिनकारोरे ॥ रा० ॥ १ ॥

(१) अल्प उमर वाला ।

"लंकपायाले" आवीयो, "खर" "दूषण" मानीयोरे ।
खेचर चउद हजारसूं, साथे चलेवा वाणीयोरे ॥ रा० ॥ २॥
सरस खरो "सुग्रीवजी," चाल्यो "रावण" लारोरे ॥
अवसर ने आराधियों, उपजे प्रेम अपारोरे ॥ रा० ॥ ३ ॥
नदी "नर्वदा" आवीयो, कांठे कटक पडावोरे ।
सभा सरस मेलीकरी, बैठो "रावण" रावोरे ॥ रा० ॥ ४ ॥
अणचिन्त्यूं जलवाधीयो, "रावण" साज तणाणोरे ।
खबर करी जन आवीया, पूछे रावण राणोरे ॥ रा० ॥ ५ ॥
नगरीछे "माहिष्मती", "सहश्रांस" तिहां राजा रे ।
रायहजारे सेवियै, अधिकाछे अन्दाजारे ॥ रावण० ॥ ६ ॥
सहस एक छे सुन्दरी तसु सेवक दो लाखो रे ।
पंचेन्द्री सुख भोगवे, जलसूं अति अभिलाखो रे ॥ रावण० ॥७॥
पाली बांधी पाणी में केवल नारी साथी रे ।
सेवक राखी पाखती. हर्षे रमें जिम हाथी रे ॥ रावण० ॥ ८ ॥
सुभट गया तस साहिना, सामां मार मचाई रे ।
कोई न आवे आसनो, देखी तसु सुभटाई रे ॥ रावण० ॥ ९ ॥
"रावण" जी आवी अड्या, सामो थयो शर सांधो रे ।
लड़िया विविधा-युद्ध सूं, लीधो रांवणे बांधी रे ॥ रावण० ॥१०॥
आकाशेथी ऊतरी चारण ऋषि इक आवे रे ।
"शतबाहू" नामें भलो. आवी सुत छोडावे रे ॥ रावण० ॥११॥
"ऋषिजी" नू मन राखवां, मानीयो सोकरी भाई रे ।
देश अनेरो आपतां, चरण ग्रहै सुखदाई रे ॥ रावण० ॥ १२ ॥
'अन्नरण्य' नरेन्द्र सूं मित्र पणे छे वाचा रे ।
चारित्र लेसां एकठा, सगपण तो ए साचा रे ॥ रावण० ॥ १३ ॥
'दशरथ' नन्दन ने दीया, पूरी अयोध्या राजो रे ।
'अन्नरण्य' व्रत आदरी, सार्यो आतम काजो रें ॥ रावण० ॥१४॥

लात धमूकां कूटीयो, नारद आवी पुकारयो रे।
राजा 'रावण' पूछतां, उत्तर दीये हूं मरायो रे॥ रावण० ॥१५॥
'राज' नगर नो राजीयो, नामे 'मरुत' कहायो रे।
मिथ्या दृष्टि छे घणो, कुगुरनो भरमायो रे॥ रावण० ॥ १६ ॥
यज्ञ में हिंसाघणी, करतां में अत्रगणियो रे।
विप्र विशेषे कोपीया, ते कारण हूं हणियो रे॥ रावण० ॥ १७ ॥
'रावण' चाली आवीयो, 'मरुत' नूं मुखभंज्यो रे।
जिनमते अधिक दृढावीयो. ऋषिजी नू मन रंज्यो रे॥रावण०१८॥
'रावण' जी सुसतोकरी, यज्ञ धणी समजायो रे।
साचेते राचे सहूं, धर्म दया मन भायो रे॥ रावण० ॥ १९ ॥
'नारद' ने नृपे पूछीयो, ए मत कौण चलायो रे।
'वसु' राजाथी चालीयो, पापे पिण्ड भरायो रे॥ रावण० ॥२०॥
'कनक प्रभा' छे कुंवरी, 'मरुत' रायनी जाई रे।
'रावण' ने परणावतां, बांधी प्रीत सवाई रे॥ रावण० ॥ २१ ॥
तिहां थकी नृप आवीयो, 'मथुरा' पुरी मजारो रे।
'हरिवाहन' छे भूपतिं, पुत्रमधु सुविचारो रे॥ रावण० ॥ २२ ॥
राम तणे पग लागतां, 'त्रिसुल' 'मधु' कर देखी रे।
किहां थकी ते पामीयो, राये वात विशेखी रे॥ रावण० ॥ २३ ॥
मधुरपणे 'मधु' बोलियो, 'चमरेन्द्रे' मुजदीधोरे।
पूर्वभवना मित्र थी, ए उपकारज कीधो रे॥ रावण० ॥ २४ ॥
'चमरे' कह्यो मुज आगले, धात की खण्डे जोई रे।
क्षैत्र 'ऐरावते' भलो, 'शतद्वार' पुरी होई रे॥ रावण० ॥ २५ ॥
राय 'सुमीत्र' सोहामणो, 'प्रभव, अछे तस मित्रो रे।
कला अभ्यासे गुरुकने. होई पुण्य पवित्रो रे॥ रावण० ॥ २६ ॥
घोड़ा ने खेंच्यो थको, अटवीने अवगाहै रे।
'पल्ली पतिनो' कुंवरी, 'वनमाला' ने विवाहै रे॥ रावण० ॥२७॥

मित्र तणो मन मोहियो, मानिनीसूं मनलावे रे।
रहैं घणूं उदासीयूं, राम तदा बोलावे रे॥ रावण० ॥२८॥
मौन रह्यो बोले नहीं, राजा फरि २ भाखे रे।
आरती थारा मनतणी, मत को छानी राखे रे ॥ रावण० ॥२९॥
चित्तनी आरती सांभली, हँसी नरेश्वर बोले रे।
ए तुच्छ वातने कारणे, मित्र किस्यूं डमडोले रे॥ रावण० ॥३०॥
मित्र तणे घरे मोकली, आवी भाखे वातोरे।
प्राण न राखे मांगतां मुज सरसी कौण मातोरे॥ रावण० ॥३१॥
'प्रभव' कहै हूं पापीयो. निर्लज धीट अत्यन्तोरे।
नार न राखी मांगतां, धन्य २ म्हारो मित्तोरे॥ रावण० ॥३२॥
आवो पधारो मातजी, बोले वारम्वारोरे।
हूं अपराधी रायनो, फिट म्हारो अवतारोरे॥ रावण० ॥३३॥
गुप्त रहीने निरखियो, राजा सहु विरतन्तोरे।
राणीजी घर मोकली, छेदे कण्ठ तुरन्तोरे॥ रावण० ॥३४॥
राजाये धसी साहिया, मित्र तणावे हाथोरे।
करे प्रशंसा मित्रनी, हरख धरी नरनाथोरे॥ रावण० ॥३५॥
राजाजी व्रत आदरी, पाम्यो कल्प ईशानोरे।
चवि 'हरिवाहन' नन्दन, 'मधु' नामे प्रधानोरे॥ रावण० ॥३६॥
मित्रभामी भवमें घणूं, 'विस्वावसु' उदारोरे।
'ज्योतिर्मति' उपरे ऊपनो, 'श्री कुंवर' कुंवारो रे ॥रावण० ॥३७॥
तप तपी नियाणूं करी, 'चमर' हुवो हूं एहोरे।
पूर्व स्नेहना बन्धथी, ए तुज साथे सनेहोरे॥ रावण० ॥३८॥
देई त्रिशूल सिधावीयो, ए मुज कही अवधारोरे।
काज करी फरी आवही, जोजन दोय हजारोरे॥ रावण० ॥३९॥
इमनिसुणी सुखमानीयूं, मधु सूं करे सगाईरे।
'मनोरमा' कुंवरी भली, दीधी तस परणाईरे॥ रावण० ॥ ४०॥

ढाल भली ए पांचवीं, पांचों रे मन भाई रे ।
'केशराज' 'रावण' तणूं, चरित्र अछे सुखदाई रे ॥ ४१ ॥

॥ दोहा सोरठ रागे ॥

घर छोड्यों भूपाल ने, हुवा वर्ष अढार ।
देश भलीपरे साधीने, घरने आवणहार ॥ १ ॥
फरि आयो महिमण्डले, ' नलकुबेर ' दिग्पाल ।
पुर ' दुर्लंघ्य ' तणो धणी, राज्यकरे सुविशाल ॥ २ ॥
' आसालीविद्या ' करी, शत जोजन परिमाण ।
अग्नीकोट अति आकरो, अग्नी तणो मण्डाण ॥ ३ ॥
'कुम्भकर्ण' 'घन' साथ सूँ, आणी अडियो नरेश ।
अग्नीजालने देखवे, कोईयन करे प्रवेश ॥ ४ ॥
' कुम्भकर्ण ' फरिआवियो, स्वामीतणे मनसोर ।
सुभटां पगपाछापड़े, कोईयन चाले जोर ॥ ५ ॥
आरति अधिकीऊपनी, केम रहै अब लाज ।
एटले राणी रावली, पति करवाने काज ॥ ६ ॥
' रावण ' पासे दूतिका, भेजी करे अरदास ।
जो मन राखो माह्ररो, तो पहूँचे सब आस ॥ ७ ॥
' आसाली ' विद्यामहा, वस्यवर्तावूं आज ।
चक्र ' सुदर्शन ' सूँ सही, सूँपूं सगलो राज ॥ ८ ॥
तुमसाथे मुजमनवस्यूं, इह भवे तूं भरतार ।
प्रभु तुम विच में आंतरो, सो जाणे किरतार ॥ ९ ॥
' उपरम्भा ' नी वीनती, मनमांहि अवधारि ।
उत्तरदीयो उतावलो, आतुर अतिसा नारि ॥ १० ॥

॥ ढाल छठो तर्ज-कुँवर सुभानु सुजाणजी ॥

आतुर अति जाणी करी (टेर) लघु बन्धव तब बोले रे ।
वेगे पधारो पद्मणी, तूँ इन्द्राणी तोले रे ॥ आतुर ॥ १ ॥

' रावण ' रीसवस्ये कहै, बन्धव इमकिम भाखे रे ।
पुरुषपनो तो तेहिज, परत्रियथी मन (न) राखे रे ॥आ०॥ २ ॥
कहै ' विभीषण ' दूषण, किहां हीथी होई रे ।
विष व्यवहार करे सहू, मरण तो खायाँ जोई रे ॥ आतुर ॥ ३ ॥
बात कहन्तो कामनी, वेग ही वेग मूँ आई रे ।
विद्यादिधी विधिकही, साधी वार न लाई रे ॥ आतुर ॥ ४ ॥
शस्त्रदीयां सुरसानीधी, कारमियां सुविशालो रे ।
नगर जीती ' नलकुबेर ' ने, लहुसाही तत्कालो रे ॥ आतुर॥ ५ ॥
'चक्रसुदर्शन' पामीयो, पाम्यो अतिघणी शोभा रे ।
' नलकुबेर ' करी आपणो, थापियो न कियो लोभा रे॥आतुर॥६॥
' उपरम्भा ' समजावीने, रायसूं प्रेम मिलायो रे ।
' रथनूपुर ' पुर ऊपरे, ' रावण ' जी चढी आयो रे ॥आतुर॥७॥
' सहश्रार ' नृप ' इन्द्र ' ज, नन्दन ने समझावे रे ।
झूंठ किलेस करूं किस्युं, कोई न पूगे दावे रे ॥ आतुर ॥ ८ ॥
सहश्र[१] सूं नृप सेवितो, ' सहश्रांशू ' ने जीत्यो रे ।
' अष्टापद ' ने उपाडतां, वसुदा मांहि विदितो रे ॥ आतुर ॥९॥
विद्या साधन द्विपपती, गिरि वैताढये चाल्यो रे ।
पौमावे[२] पति शक्तीजी, सफल तणो वर आल्योरे ॥आतुर॥१०॥
'मरुत' तणूं मुख भंजन, भंजन काल हरायो रे ।
'धनद' तणो मद मर्दन, सुग्रीव सेवकरायो रे ॥ आतुर ॥११॥
पुर 'दुर्लंघ्य' उलंघन, 'नल कुवेर' बल भंजीयो रे ।
रायां राय कहावतो, आजन जावे गंजियो रे ॥ आतुर ॥१२॥
रूपवती अति 'रूपीणी' पुत्री ने परणावी रे ।
आघू काढीयो नन्दन, चितने लियो समजावी रे ॥ आतुर ॥१३॥
अति आकुलपणे अष्टापद, पामे छे सन्तापो रे ।

---

(१) हजार मनुष्य सेवा करते हैं। (२) पद्मावतीनो पति धरणेन्द्र शक्तिनो रावण राजाने सबल वर दियो।

घननूं कांई न विणसीयूं, प्राण तजेते आपो रे ॥ आतुर ॥१४॥
तात वचन नवि मानीजे, ताणे आप घणेरो रे।
धन्य हो धन्य थे तातजी, धन्य मनो ए तारो रे ॥ आतुर ॥१५॥
जे हणवो तस हाथेजी, सगपण केम कराय रे ? ।
आज किस्यूं रे वैरतो, आगे चाली-यूं जाय रे ॥ आतुर ॥१६॥
'रावण' दूत पठावीयो, आयो इन्द्र ही पासे रे।
पुर घेराणं ताहरूं, नृप अब किस्यूं विमासे रे ॥ आतुर ॥१७॥
भक्ती शक्ती दोई छेजी, जीव तजी रखवाली रे।
भक्ती भजो सन्मुख जाई, के लियो शक्ती सम्भालीरे॥आतुर॥१८॥
'दूत' प्रते 'सुरपति' कहै, रे ! तुम तो भरमाणा रे।
रांक मनावी रींजीया, पण नवि नमिया राणा रे ॥ आतुर ॥१९॥

ढाल प्रक्षेप तर्ज—गर्व मति कर रे।

जाय तुम स्वामी ने कहीजे, गाफिल तूं जरा मति रहीजे, बाण तूं म्यारा ही सहीजे। इन्द्र इममानसे बोले, जरा दिल मांय नहीं तोले ॥ भूप इम बोले मेरी जान भूप इमबोले, छक्यों नृप मान क्यूँ रूतो. याद उण दिन ने तूंतो ॥ भूप ॥ १ ॥ टेर ॥ दूत जब आई ने भाखे. किणी की शंक नहीं राखे, मिजाज है मन मांहै जाके, सुणी इम 'रावण पर जलियो, वचन ओ किम बोले अलीयो ॥ भूप इम बोले ॥ २ ॥ चतुरङ्गी सेन्या सिणगारी, इन्द्र पिण आयो कर त्यारी, परस्पर युद्ध मंड्यो भारी. जोधां का जोर बाण छूटे. अरि उर आग ही ऊठे ॥ भूप इम बोले ॥ ३ ॥ आवीयो 'विभीषण' बलियो, सारो ही दल तो खल चलियो, इन्द्र तब कोपे पर जलीयो, दोनों का जोर है जाजा, 'रावण' का सुधरेला काजा ॥ भूप इम बोले ॥ ४ ॥ सेन्या हटी 'रावण' ही देखी, सामने आयो विवेकी, निकालूं अब इणरी सेखी, सराभर बाण मेह बूठा, तुरत ही इन्द्र पग छूटा ॥ भूप इम बोले ॥ ५ ॥

ढाल प्रक्षेप तर्ज--पूर्ववत् ।

सकजहो आयो महिपति, माची ताम लड़ाई रे ।
सेनानी ' रावण ' तणो, भिड़ियो आगे आई रे ॥ आतुर ॥ टेर ॥
देवे कांईक राक्षसां, पाछा पैर हटाया रे ।
'रावण' राजा मोकल्या शूर सुभट जे आया रे ॥ आतुर ॥ २ ॥
'वज्रवेग' 'हस्त' 'प्रहस्त' जी, 'मारिच' उदभयवज्रो रे ।
'शुक' 'घोर' 'सारण' 'गगन'' जी, 'ज्वलन' 'महाजय' 'जवरोरे ॥३॥
ए 'द्वादश' ही राजवी, वानर राक्षस पूरा रे ।
आवी 'देवन' सूं अड्या, शूर भागी गया दूरा रे ॥ आतुर ॥ ४ ॥
फौज भागी लखी इन्द्रजी, भेज्याा नीका राजा रे ।
'मैघ' 'मालि' 'तडितांग' जी, 'ज्वलन तक्ष' अति ताजारे ॥आ०॥५॥
'सज्वर' 'पाचकसीद' जी, आया फौज ने आगे रे ।
ए 'पट्' ही धीरज धरे, पिण धीरज नहीं जागेरे ॥ आतुर ॥ ६ ॥
सहन सक्या सुरतेगने, वानर राक्षस भाजे रे ।
'महेन्द्रसेन' हाकोकरे, भाज्यां थी न रहै लाजेरे ॥ आतुर ॥ ७ ॥
महैन्द्र सेन वानर वंशी, राक्षस ने वड मित्रो रे ।
'प्रश्न कीर्ति' सुत तेहनो, पोखे प्रेम पवित्रो रे ॥ आतुर ॥ ८ ॥
मार हटाया खेचरु, अन्यदेव भट आवे रे ।
घेर लीयो 'प्रश्नकीर्ति ने, तब माल्यवान' सुत धावेरे ॥ आ ॥९॥
'श्रीमाली' नामे भलो, 'रावण' रायनो काको रे ।
बाणे अम्बर छाइयो, सुर उडिया जिम फाको रे ॥ आतुर ॥१०॥
'सुरस्थम्भन' 'सुरपति' तणो, भाणेजो चल आवे रे ।
'सिखकेशी' दण्डो ग्रही, कनक प्रवर बहुदावे रे ॥ आतुर ॥११॥
मारी कीधा पाधरा, 'माल्य' भणी जश दीधो रे ।
'सुरपति' सुण आतुर थयो, आप चढण दिल कीधोरे ॥ आ १२॥
'इन्द्र' अनुज 'जयचन्तजी', नमी चरण इम दाखे रे ।
जे अंकुर नखछेदीये, फरसीबल किम राखे रे ॥ आतुर ॥१३॥

एम कही आज्ञा लही, आयो रण रस रङ्गे रे ।
'श्रीमाली' कुंवार ने, देख बराबर जंगे रे ॥ आतुर ॥ १४ ॥
करी लड़ाई एहवी, काण न राखी कोई रे ।
राक्षस वानर देवजी, अचिरज अधिको जोईरे ॥ आतुर ॥ १५ ॥
'श्रीमाली' हरिपुत्रनो, रथतोडी वज्र घायो रे ।
'हरिसुत' रथ वारे पड्यो, मूर्छा रे वश थायो रे ॥ आतुर ॥१६॥
चेत लही खिण अन्तरे, 'श्रीमाली' तिम कीधो रे ।
देव सेन्य हर्षित थई, पाछो बदलो लीधो रे ॥ आतुर ॥ १७ ॥
चेत लही आवी अड्या, मानो सिंह ने बालो रे ।
रथ छोडी दोनो अड्या, करवे नहीं कोई टालो रे ॥ आ० ॥१८॥
'जयन्त' दई श्रीमाली ने, छाती गदा डराणी रे ।
मूरछाई धरणी ढल्यो, बोलन सकीयो वाणी रे ॥ आतुर ॥ १९ ॥
हरिसुत शंक ने पूरीयो, राक्षस सेन्य भय पामी रे ।
'इन्द्रजीत' चढ़ आवीयो, शूरवीर गुण धामी रे ॥ आतुर ॥ २० ॥
घायल 'हरिसुत' ने कीयो, 'इन्द्र' आप चढ़ आयो रे ।
रथबेशी दश-कन्धरु, टलवे नहीं टलायो रे ॥ आतुर ॥ २१ ॥
'सुरपति' ने 'दशकन्धरु', नांखे शस्त्र ने वाणो रे ।
विचमांही काटी दीये, कायर कम्पे प्राणो रे ॥ आतुर ॥ २२ ॥
अगनी विकुर्वी सुरपति, 'रावण' जलसूं निवारो रे ।
तामस बाणे 'इन्द्रजी', कीधो जाम अन्धारो रे ॥ आतुर ॥ २३ ॥
बाण प्रकाशे रायजी, तामस दूर पुलावे रे ।
कोप करी 'दशकन्धरु' नाग पासा शर ठावे रे ॥ आतुर ॥ २४ ॥
तेह उपद्रव टालीयो, गरुड़बाण हरी तामो रे ।
शुक्ल ध्यान जिमध्यावतां, नासे कर्म विरामो रे ॥ आतुर ॥ २५ ॥
कोपे दशानन ऊछली, इन्द्रनी ग्रीवा पकड़ी रे ।
ले आव्यो निज कटकमें, बांध्यो गाडो झकड़ी रे ॥ आतुर ॥२६॥

॥ ढाल मूलगी ॥

इन्द्र चढ़ी रण आवीयो, रेणु रही नभ छाहीरे ।
जेम वखाणी ग्रन्थ में, तेम हुई लढाईरे ॥ आतुर ॥ २० ॥
हारयो 'इन्द्र' नरेन्द्रजी, जीत्यो 'रावण' राजा रे ।
जय २ कार हुवो बहु, वाग्या जशना बाजा रे ॥ आतुर ॥ २१ ॥
'रावण' 'लङ्का' आवीयो, सयण तणे मन भायोरे ।
'इन्द्र' दीयो काठ पिंजरे, आप कीयो फल पायोरे ॥ आ०॥२२॥
'सहस्रार' नृप आवीयो, 'रावण' सूं अरदासोरे ।
पुत्रभिक्षा मुज आपीये, थापो करी निज दासो रे ॥ आ० ॥२३॥
राय कहे सुण खेचरा, 'इन्द्र' करे ए कामो रे ।
नगर बुहारे नित्य को, आछो राखे गामो रे ॥ आतुर ॥ २४ ॥
सघली बात मनावीयो, छोडीयो 'इन्द्रज' राय रे ।
नीचूं काम करन्तजी, आरती में दिन जाय रे ॥ आतुर ॥ २५ ॥
'साधु' समीपे पूछीयो, पूर्वभव 'इन्द्र' ही आपो रे ।
नीच कर्म करवूं पडयूं, कोण कियो थो पापो रे ॥ आतुर ॥२६॥
साधु कहे नृप सांभलो, पूर्वभव भाखूं एहोरे ।
'अरिजय' पुरनो भूपती, खेचर 'मणिगुण' गेहोरे ॥ आतुर ॥२७॥
'ज्वलनसिंह' घरे नारीजी, ' वेगवती ' सुविचारी रे ।
'अहिल्या' नाम्ने सुता अछे, मात पिता ने प्यारी रे ॥आतुर॥२८॥
'स्वयम्बर मण्डपे' तेहने, राय घणा मिली आवे रे ।
'आनन्दमालि' ने कन्याजी, वरमाला पहिरावे रे ॥ आतुर ॥२९॥
नाम 'तडित्प्रभ' तूं तवजी. खीज्यो मनही मझारो रे ।
'आनन्दमालि' साथेजी, बहतो अतिघन खारो रे ॥ आतुर ॥३०॥
'आनन्दमालि' चारित्र ग्रही, करतो उग्रविहारो रे ।
ध्यानारूढ मुनीश्वरु, देख्योते इकवारो रे ॥ आतुर ॥ ३१ ॥
दीधो परिषह आकरो, साधुनो चूक्यो ध्यानो रे ।
सिंह सारिखो ना हुवो, हुओ श्वान समानो रे ॥आतुर॥३२॥

तब 'कल्याण' गुणधरा, 'आनन्दमालि' आतो रे।
तेजु लेश्या मूके ही, तुजने देखा अशामतो रे॥ आतुर ॥३३॥
'सत्यश्री' तुज नारिये, कृपोजी शीतल कीधो रे।
लेश्या अपूठी संहरी, संयम सूं चित्त दीधो रे॥ आतुर ॥ ३४ ॥
भवभमी शुभकर्म तणे, पामियो हुवो नरेन्द्रोरे।
'सहस्त्रार' नृप नन्दन, ए हुवो तूं इन्दोरे॥ आतुर॥ ३५॥
ते दुःख दीधूं साधु ने, तुजने 'रावण' राय रे।
कर्म कीधां विणभोगव्यो, किमही विलय न जाय रे॥आ० ३६॥
इम सुणी 'रथनूपुर' पति,शुद्ध संयम ने धारयूं रे।
कर्म खपावी 'केवल' लही, आतम कारज सारयूं रे॥ आ० ॥३७॥
'सुवर्ण तुङ्गगिरी' पहुतलो, 'रावण' जी अन्य दिवसो रे।
'अनन्तवीर्य' केवली, वांदे नृप जगीसो रे॥ आतुर॥ ३८॥
सुणिय वखाण सुजाणजी, प्रश्न करे ए रूडो रे।
कौण हाथे 'मरणो' मुज ? भाखो भवस्थिति कूंडो रे॥ आ० ॥३९॥
परदाराने दूपणे, वासु देवने हाथो रे।
निश्चय मरण बतावीयू, त्रिभुवन केरे नाथो रे॥ आतुर॥ ४०॥
अण इच्छन्ती नारिनो, तब लीधो नृप नियमो रे।
देवगुरु धर्म साधुजी, मांड्यो अति घणो प्रेमो रे॥ आतुर ॥४१॥
छठी ढाले साधुजी, नमो २ ए इन्दो रे।
'केशराजजी' इमकहै, नमिये सम्पत मुनिन्दो रे॥ आतुर ॥४२॥

दोहा केदार राग—

अथ उत्पति सुहावणी, मय रनी भविलोय।
सावधान होई सुणो, सुणतां साता होय॥१॥
'रूपाचल' पर्वत भलो, भला भला अहिठाण।
भला २ नृप मंदिरा, भला २ मण्डाण॥ २॥

ढाल सातवीं तर्ज-करे लड़ानी—

श्री 'हनुमन्त' गाइलोरे, चरम शरीरी होय, हनु०

सुधारचा भवदोय ॥ हनु० ॥ खट् दर्शन में जोय ॥ हनु० ॥
ए सम अवरन कोय ॥ हनु० सु० ॥ १ ॥
सेवक 'हनुमन्त' सारिसोरे, 'राम' सरीखोरे राय ।
हुयो नहीं होसे नहीं, आजन कोई देखाय ॥ हनु० सु० ॥ २ ॥
स्वामिना ए बोल छे, थारो कपि उपकार ।
प्राण दियां पणना वले, शेष तणो शिर भार ॥ हनु० सु० ॥३॥
सेवक ना ए बोल छे, वानर माहरो नाम ।
शाखा थी शाखा जई, पावूं सही विश्राम ॥ हनु० सु० ॥ ४ ॥
सायर जल उलंघियूं, बाली[1] नगरी लङ्क ।
'राम' राय परसादथी, कीधा काम निशंक ॥ हनु० सु० ॥ ५ ॥
दिन-करनी पर दीपतो, पुर 'आदित्य' प्रधान । हनु०
राय 'प्रहल्लाद' सुहामणो, पाले जिनवर आण ॥ हनु० सु० ॥६॥
'केतुमति' महिमावती, सत्यवती घरनार । हनु०
प्रीतिवति लीलावती, शीलवती संसार ॥ हनु० सु० ॥ ७ ॥
शुभसुपनो अवलोकीयो, विनवीयो जई राय । हनु०
रायकहै रलियामणो, नन्दन उपज्यो आय ॥ हनु० सु० ॥ ८ ॥
शुभ वेला सुत जाईयो, गुड़िया गुहिर निसाण । हनु०
घर २ बार वधामणां, घर २ अति मण्डाण ॥ हनु० सु० ॥ ९ ॥
बारस में दिन थापीयो, पवनंजय तसु नाम । हनु०
चन्द्र कला जिम वाधतो, वाधे सुत अभिराम ॥हनु० सु० ॥१०॥
बहोत्तरी बत्रीशजी, चार चार तनु मांडे । हनु०
सात अठार परिहरे, पुत्र पनो-तो प्राहै ॥ हनु० सु० ॥ ११ ॥
पुरवरछे 'माहेन्द्रजी', राय 'माहेन्द्र' उदार । हनु०
'रिदय सुन्दरी' सुन्दरी, सुन्दर ने सुविचार ॥ हनु० सु० ॥१२॥
पुत्र एक शत ऊपरे, पुत्री हुई एक । हनु०
नामे 'अंजना' सुन्दरी, सकल गुणे सुविवेक ॥ हनु० सु० ॥१३॥

(१) पाड़ी इति पाठान्तरे ।

ब्रह्मचर्य-रक्षा ।

रचयिता जैनोपदेशक वैद्य-धूलचंदजी सुराणा-पीपाड़-

तर्ज—धीमा बोलो भाभी रा देवर लाडलारे लाल

ब्रह्मचारीजी! सीख सुगुरुरी मानजोरे लाल ॥ टेर ॥
चूहो तो डरतो रहेरे लाल, नहींकरे मिनी रो विश्वास ब्रह्म चारीजी। जिम मुनिवर नारीसूं डरे रेलाल नहीं होवे वरत विणास ब्रह्म० ॥ सीख० ॥ १ ॥ निम्बूरो समरण कियों रे लाल, मुखमें नीर भराय ब्रह्मचारीजी । जिम कामण री विकथा कियोंरे लाल, व्रत तणो भंग थाय ॥ ब्र० सी० २ ॥ मूकेला पुदगल नारनारे लाल, फरसे नवि पखीण-ब्रह्म चारीजी । खार खराबी हुवे छांय थीरे लाल, जिम हुवे वरत मलीन ॥ ब्र० सी० ॥ ३ ॥ सूरज सांमां जोवतां रे लाल, घटसी नेणोंरी जोत ॥ ब्रह्म चारीजी ॥ तिम नारी सांमां निरखतां रे लाल, व्रत में लागे छांत ॥ ब्र० सी० ॥ ४ ॥ सो वरसों री डोकरी रे लाल, कर-पग-छै दीया होय ॥ ब्रह्म चारीजी । तो पिण जोवणां तवि कयोरे लाल, जोयो व्रत देवे खोय ॥ ब्र० सी० ॥ ५ ॥ दम्पति भोगनी वारता रे लाल, कदीयन सांभले कान ॥ ब्रह्म चारीजी ॥ गाज-मोर-ना न्याय सूं रे लाल, व्रत में हुवे नुकसान ॥ ब्र० सी० ॥ ६ ॥ काम क्रीडा गत कालनीरे लाल सुमरे नहीं मन मांय ॥ ब्रह्म चारीजी ॥ छास-वटा ऊनी परेरे लाल व्रत में दूषण थाय ॥ ब्र० सी० ॥ ७ ॥ भोजन-विविध प्रकारनोरे लाल, नित्य प्रते नवि खाय ॥ ब्रह्म चारीजी ॥ दूध-मिश्री-सन्नीपात में रे लाल, दीधों थी दुःखियो थाय ॥ ब्रह्मचारीजी सी० ८ ॥ सादो आहार सराय नेरे लाल, ठांस २ ने नहीं खाय ॥ ब्रह्मचारीजी ॥ अधिक अनाजरी तोलड़ी रे लाल, रांधन्तां फट जाय ॥ ब्र० सी० ॥ ९ ॥ मन-वचन-काया-तणी रे लाल, शोभा नहीं करे

काय ॥ ब्रह्मचारीजी ॥ रांक हाथे जिम रतन ही रे लाल, कहां लगे ठहराय ॥ ब्र० सी० ॥ १० ॥ पांच-काम गुण को तजे रे लाल, सदा रहे चित्त शान्त ॥ ब्रह्मचारीजी ॥ वाड़ नवनो ए कोट छे रे लाल, सीधो है शिवपुर पन्थ ॥ ब्र० सी० ॥ ११ ॥ विष है विविध प्रकारना रे लाल, जंगम स्थावर जान ॥ ब्रह्मचारीजी ॥ पिण विषय-समो विषको नहीं रे लाल, हुवे अनन्ती हाण ॥ ब्र० सी० ॥ १२ ॥ जुगबाहु-मयणरेहा-कारणे रे लाल, मणिरथ घाल्यो घाय ॥ ब्र० ॥ सीता ने हरतां थकां रे लाल, रावण-लंक-गमाय ॥ ब्र० सी० ॥ १३ ॥ वाड़ सहित व्रत जे धरे रे लाल, शीयल व्रत सुख दाय ॥ ब्र० ॥ देव-असुर-सुर-तेहने रे लाल, नित्य प्रते नमन कराय ॥ ब्र० सीता ॥ १४ ॥ 'धूलचन्द' जे धारसी रे लाल, व्रत यह दुद्धर धार ॥ ब्र० ॥ पाले आराधे शुद्ध भावसुं रे लाल, हो जावे खेवो पार ॥ ब्र० सी० ॥ १५ ॥



मावित्रोने वाहालीखरी, वीरानो वड़मान। हनु०
भोजाई भगिनी महा, आदर मेरु समाल ॥ हनु० सु० ॥ १४ ॥
पुत्रीने परणाववा, यौवनवन्त कुँवार।
प्रधाने प्रगट कीया, जोई केई हजार ॥ हनु० सु० ॥ १५ ॥
वरतो दो मन मानीया, सगला मांहि देखी।
'पवनंजय' 'प्रल्हाद' नो, विद्युत्प्रभ सुविशेखी ॥हनु० सु०॥१६॥
अष्टादशवर्षान्तरे, विद्युत्प्रभ शिवजाय।
प्रत्यक्षथयूछे आउखो, कन्याकेम देवाय ॥ हनु० सु० ॥ १७ ॥
'पवनंजय' चिर आउखे, पवनंजय परिमाण।
पुत्री 'पवनंजय' भणी, देवाकही राजान ॥ हनु० सु० ॥ १८ ॥
खेचर मिलीया एकठा, नंदीश्वरनी जात।
प्रार्थना 'प्रह्लादनी', माने सगली तात ॥ हनु० सु० ॥ १९ ॥
आजथकी दिन तीसरे, मानसरोवर जाय।
विवाह करीजे वेग सूं, मेलोसहु समुदाय ॥ हनु० सु० ॥ २० ॥
'पवनंजय' कहै मित्र सूं, ते दीठी साबाल।
रम्भाथी अधिकी सही, रूपे झाक झमाल ॥ हनु० सु० ॥ २१ ॥
जे-हवो आंखे देखिया, लहिये चैन अत्यन्त।
तेहवो वाचाएकरी, कौण कहै सुण मित्त ॥ हनु० सु० ॥ २२ ॥
'पवनंजय' बोल्योहसी, वासरताएदूरी।
हूं जाणूं हमणांजाई, जोई होऊं हजूरी ॥ हनु० सु० ॥ २३ ॥
वाल्हाना मेलाविषे, घड़िते एक दिन थाय।
दिनतो जई मासा मिले, कहोरे केम रहिवाय ॥ हनु०सु०॥२४॥
मित्रकहै सुण स्वामीजी, आरती दूर निवार।
रात रहस्य पणेजई, देखाडूं तुजनार ॥ हनु० सु० ॥ २५ ॥
'पवनंजय' कुमारही, चाल्यो मित्रसमेत।
आयो अति उतावलो, नारी निरखण हेत ॥हनु० सु०॥२६॥

जिम २ निरखे नारिने, तिम २ पावे चैन ।
दैव वहै अति आकरो, सुखमांहि दुख दैन ॥ हनु० सु० ॥२७॥
बैठी सप्तमी भूमिका, वारुवात विनोद ।
रङ्ग मांहि राचीथकी, करती अधिक प्रमोद ॥ हनु० सु० ॥ २८ ॥
'वसन्ततिलका' कहै सखी, कुँवरी तुजवड़भाग ।
'पवनंजय' पतिपाईयो, जेहनो जश सोभाग ॥ हनु०सु० ॥ २९ ॥
'मिश्रकेशी' कहै सखी, केम प्रशंस्यो ऐह ।
'विद्युत्प्रभ' वरतो भलो, जेहनो अन्तिम देह ॥ हनु० सु० ॥३०॥
'वसन्ततिलका' कहेफरी, भोली जाणे न भेद ।
'विद्युत्प्रभ' स्वल्पायुषी, तेथीनसरे उमेद ॥ हनु० सु० ॥ ३१ ॥
अपर कहै आवात में, तूँ नवि लिखे लिगार ।
चन्दन थोड़ो ही भलो, नहीं विपकेरो भार ॥ हनु० सु० ॥ ३२ ॥
'पवनंजय' परिणाम सूँ, तातो थयो तिवार ।
कुँवरी तो वरजे नहीं, जोई रही वातां प्यार ॥ हनु० सु० ॥ ३३ ॥
काढी खड्ग खड़ो रयो, ए दोई संहार ।
करूँ सही उतावलो, बोले राज कुँवार ॥ हनु० सु० ॥३४॥
मित्र कहै प्रभुजी सुणो, नारी अवध्य कहाय ।
तिण में निर अपराधणी, कहो प्रभु केम हणाय ॥हनु० सु०॥३५॥
कुँवरीए निन्दा नविकरी, ए कोई लें लवाड़ ।
तुमतो गिरुवा चाहीयो, पृथ्वीनाप्रतिपाल ॥ हनु० सु० ॥ ३६ ॥
फरिआण्यो निजथानके, ते कहै न करूँ विवाह ।
प्रथमज कवले मक्षिका, आयां कुण उच्छाह ॥ हनु० सु० ॥ ३७ ॥
रांधतहीजे कुहीयो, ते अन्ननी न मिठास ।
पछी कीसी परे पामिये, पिरसन्तां शाबास ॥ हनु० सु० ॥ ३८ ॥
मोतीत्रट्यां ना मिले, त्रट्यां नामिले नेह ।
ते माटे धुरही थकी, तूटणमतिद्यो तेह ॥ हनु० सु० ॥ ३९ ॥

ढाल प्रक्षेप तर्ज–नवीन रसीया—मंत्री श्री चौथमलजी म० कृत–

म्हांने मिली कुपातर नार, खबर म्हांने पड़गई सारी आज ॥ टेर ॥
में तो जाणतो छे मुजप्यारी, होसी नहीं हरगिज दुजारी।
निजरां देखी आज, खूँटी पर धरदी सारी लाज ॥ म्हांने० ॥१॥
एवातां सुपने नहीं जाणी, करसी आ अपने मन मानी।
सारो इणरो आय गयो है, मन मांही लो माज ॥ म्हांने ॥ २ ॥
इसी जाणतो जो मैं पैली, अधविच में आ गोतो देली।
तो नहीं करतो प्यार, नार आ मिली अवगुण की जाज ॥म्हांने॥३॥
मैं भोलो ओ काम न जान्यो, धोलो २ दूध पिछान्यो।
पडी न मांने तोल, पोल आ निकली कीयो अकाज ॥म्हांने॥४॥
कोई किणरी हुई न नारी, चौथमल्ल कहै समज्यो सारी।
मने चेतायों पैली गुरुजी, 'नथमलजी' महाराज ॥ म्हांने॥५॥

॥ ढाल मूलगी ॥

मित्र कहै इम किम हुवे, आपण बोल्या बोल।
न पले तब सहु ये कहै, फिट् २ फूट्या ढोल ॥ हनु० सु० ॥ ४० ॥
सांतक में वेतालजी, उठाइया अजाण।
भङ्ग न पाड़े रङ्ग में' सज्जन नूं रे सयाण ॥ हनु० सु० ॥ ४१ ॥
सायरे शिवने आपीयूं, विषतो विश्वावीस।
नीलकण्ठ नामे रहै, अलगूं न करे ईश ॥ हनु० सु० ॥ ४२ ॥
चौंरी चढियो आय के, मित्रतणी मतिमान।
विवाहतणी विधि साचवी, नाम तणे अनुमान ॥हनु० सु० ॥४३॥

॥ ढाल प्रक्षेप तर्ज–मल्लीजिन बाल ब्रह्मचारी—धूलचन्दजी कृत ॥

पवनजी तोरण पर आयारे २ सब सखियन रही देख अचम्भे आनन्द अतिपाया ॥ टेर ॥
झीणेश्वर सूँ नारीसधवा, धवल मङ्गल गाया।
आनन्द रङ्ग विनोद विशेपे, हुवा चित्त चाया ॥ पवनजी ॥ १ ॥

इन्द्रतणी पर रूप अनूपम, दीसेसवाया ।
निरखन्तां धापे नहीं नयणां, सयणां मनभाया ॥ पवनजी ॥ २ ॥

ढाल मूलगी

मयङ्गल मोटा मलपता, अति ताजा तो खार ।
दीधा वरने दायजे, मणि मोती वरहार ॥ हनु० सु० ॥ ४४ ॥
लाडीने लेईकरी, घरे आयो प्रह्लाद ।
सप्तभूमिसुहामणो, दीधो वर प्रासाद ॥ हनु० सु० ॥ ४५ ॥
हुंसे मनाची हरख सूं, उत्रागी अखियात ।
भायग भोग-वियेसही, ए निश्चय विधिवात ॥ हनु० सु० ॥४६॥
ढाल भणी ए सातमी, 'पवनंजय' परणेत ।
'केशराज' सुखपामिये, जो होवे चित्तचेत ॥ हनु० सु० ॥ ४७ ॥

दोहा खम्भायती रागे

बोल कुबोलन बीसरे, सालसमां सालन्त ।
क्षणहि रति नविऊपजे, आगति घणी आलन्त ॥ १ ॥
नजर न मेले नाहलो, ऊपजे अति उचाट ।
आवटणूं लागेघणूं. विरहै वांकी वाट ॥ २ ॥
मात पितानी लाडली, सुसरानी शुभ दीठ ।
कंतमया बिन कामिनी, ओछे देखे नीठ ॥ ३ ॥
'पवनंजय' नी पदमनी, परममहा सुखकारी ।
नाह निस्नेह निपटही, मेली माथे मारि ॥ ४ ॥

ढाल आठवीं तर्ज-भटियानी

मेली माथे मारि, 'पवनंजय' की नारी,
आरति आकरीए, आणे सा खरीए ।
लांबा लीए निस्सास, वासर जाय निराश,
दैवकिसो कीयोए, फाटे छे हीयोए ॥ १ ॥
दिन वातां में जाय, रयणी दुभरथाय,
विरह वियोगणीए, सखी हूं योगणीए ॥

(ढाल प्रक्षेप तर्ज-खोटो लालचीयो, स्वा. श्री चौथमलजी म. कृ.)

सखी भणी कहे सुन्दरी, म्हारो मनमोहन भरतार सखि किम रूठोए।
में जानूं जिम करतार, कलङ्क दीयूं झूंठोए ॥ टेर ॥
कुन भरमायो पापीये, कोई चुगलखोर चण्डाल। सखि०
म्हारे इणभव वो सही है हिवड़ा केरो हार ॥ सखि० ॥ १ ॥
विगर गुन्हैही छोड़दी, म्हारी सगी नणद रो वीर। सखि०
हाय हिवे हूंस्यूं करूं, म्हारे लग्यो कलेजे तीर ॥ सखि० ॥ २ ॥
शीलवती सा सुन्दरी कांई बदन कीयो दिलगीर। सखि०
नीर झरे दोऊं आंख में, कांई भीनो दिखनी चीर ॥ सखि० ॥३॥
विन इजत स्यूं जीवनो, कांई मरूं कटारी खाय। सखि०
वसन्तमाला इम धीरपे, कहै 'चौथू' 'नाथ' सुपसाय ॥ स० ॥४॥

ढाल मूलगी

बोली सखी 'वसन्त तिलका' निकट वसन्त, बाइयन रोइयेए, काठो होइयेए ॥ २ ॥ सघला दिन एक रूप, नविजावे एरे विरूप, फरिबाहुड़सेए नेह जोड़सेए ॥ मांय बापते वार समझावे विचार, त्रियस्यूं हठइस्यूंए, पुत्र करें किस्युंए ॥ ३ ॥ उत्तर न आपे जाम, छाना रहिया ताम, ताणि न तोडियेए, तूटयुं जोडियेए ॥ ढिलूं मूँकीयु काम आप ही आवे ठाम, तूटे खेचीयूए, अधिकूं इच्छीयूए ॥ ४ ।

क्षेपक तर्ज अजनारी

पियरथी आवी रे सुखडी, वसन्त माला कर मोकली सोयतो।
लेकर स्वामी आगे धरी, गावता गन्धर्व ने आपी छे तोय तो ॥
वस्त्र आभूषण-मोकल्या, जाणूं म्हारा स्वामीने शोभसी अंगतो।
वस्त्र फाड़ी ने कटका कर्या, आभरण लेईने आपींयामातङ्गतो ॥
सती में शिरोमणी अंजना ॥ टेर ॥
आणा घणा पाछा मोकल्या, इणरे आणे आवीयो वडवीर तो।
अंजना-कहे नवि-वालीये, वस्त्र आभूषण मोकलिया चीरतो ॥

स्वामी ने मन मान्या नहीं, पीयर आवी हूं सूं करूं वात तो ।
बन्धव पाछो हो थे वलो, मात पिता दुःख धरे दिन रात तो । सती ।
अंजना बैठी रे गोखमें, पवनजी तुरीय खेलावण जाय तो ।
आवतां जावतां निरखती, तिम २ हर्ष वधे हियमांयतो ॥
पवनजी कोपे रे पर जल्यां, अंजना आणे छे अति घणी प्रीत तो ।
जाणे रे नार नी हालसी, गोंखो आडी रे चुणाई छे भींततो । स. ।
पांच से गांव पोते लिया, राय राणी बेहूं वर्जे छे पूत तो ।
अंजणा सती रे सुलक्षणी, एहने सूंपीये निज घर सूत तो ॥
म्होटा रे कुलतणी ऊपनी, राजा हो महेन्द्र तणी बहु लाज तो ।
अंजना आदर कीजीये, यूं कहे केतुमति, राय-प्रहलाद तो ॥ स. ॥

ढाल मूलगी

आयो दूत उदार, 'रावण' नो सुविचार, भाषित कहै भलोए, प्रभुजी सांभलोए ॥ 'वरुण' न माने आण, राखे अधिक गुमान, 'रावण' रावलोए, मिलीयो छे घणोए ॥ ५ ॥ 'वरुणसुत सुविशाल, बांधिलीया तत्काल, 'खर दूषण' खराए, खेचर आकराए, तेड्यो ' रावण राय ', खेचर मिलीया आय, प्रभु तुमही चलोए काम उतावलोए ॥ ६ ॥

मंत्री श्री चौथमलजी म० कृ० ढाल प्रक्षेप तर्ज–खबर नहीं है जुग में

दूत 'दशमुख' नृपनो आयोरे ॥२॥ युद्धकरन के हेत राय प्रहलाद ने बुलवायो सहथ पुत्रां का पिता वरुण महा अभिमानी राजा ।
रावण सन्मुख राड़ करण को. गयो वजत वाजा ॥ दूत ॥ १ ॥
चार प्रकार चमुले चालो, दूत इसी दाखे ।
सुनकर राजा सन्नद्ध बद्ध हुय, सुभटों ने भाखे ॥ दूत ॥ २ ॥
हां सुभटों जल्दी से सारा, होवो हूंसीयार ॥
थे म्हारी शक्तिने जोइ जो, मैं जोस्यूं थांरी ॥ दूत ॥ ३ ॥
सुन कर सुभट घणा संसाया, वरुण कोन बपूरो ।
थो थो चनो बजे जगमांहै, कसविन जेम कपूरो ॥ दूत ॥ ४ ॥

इन पर करत ओ गाज सुभट सब, कूदे नवतालों ।
'चौथमल्ल' नथमाल मुनि शिष्य, जोडी ए ढालो ॥ दूत ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी

तात निपेदी जाम, चाल्यो कुँवर जाम, 'पवनंजय' जयोए, आनंद अति थयोए ॥ हयगय रह अधिकाय, मेली जनसमुदाय, कुंवर चालीयोए, हरखे हालीयोए ॥ ७ ॥ निसुणीए विरतन्त, कटके चलन्तोकन्त, दर्शने सा चालीए, आवे उतावलीए ॥ पश्चाली जिम जोय, आगे ऊभी होय, पलकन पालटेए, प्रिय जोवूं घटेए ॥८॥ पड़वानो जेमचन्द दुर्बलदीसेमन्द, मांसन देखीयेए, चाम विसेखीयेए ॥ लुखी तालक देखाय, नहींरे विलेपनकाय, सादीसाटिकाए, तिमही ललाटिकाए ॥ ६ ॥ अण खाया तम्बोल, धूंसर अधर अमोल, काया दूबलीए, शीथलपड़ी वलीए ॥ नयन जल में झूली रही छे तन मन भूली, नारी निरखतोए, चाल्यो हरखतोये ॥१०॥ धसि लागी पतिपाय, सखी कहै खगराय, दासी तुमारड़ीए, चित्तहमारड़ीए ॥ तिरस्कारीछे एह, मैं जाणीधुरेछेह, मानन मांगतांए, लहिए लागतांए ॥ ११ ॥

मन्त्री श्री चौथमल्लजी कृत ढाल प्रक्षेप तर्ज-परस्तान से उतरी परी

पवन अंजनीपर रीसकरी इणविरिया कां निजरपरी ॥ टेर ॥
आपापन व्यभिचारण नारी आडी क्यों आई इण वारी
मैं जगरनकारन राह पकरी प० १ मैं देख्यो पापण को मूंडो
वणसी आगे कारज भूंडो इण पर उणरी बुद्ध विगरी प० २
पियमन तिय की परवाह नांही सातिय पिय को लेवे वधाई
वा तिय पतिभर्त्ता सखरी प० ३ सति अंजना की मति मोटी
धन्यवाद है कोटान कोटी शिष्यनाथ चोथु उचरी प० ४

ढाल मूलगी

फरि आवी घरमांहि, धरणिये पड़ि श्राहि,
अबला नामथीए, अरु परीणामथीए ॥

ढाल प्रक्षेप तर्ज–नवीन रसीया–स्वामी श्री चौथमलजी म० कृत

म्हारा प्राण पतीजी प्रेम केम दीयो ऊंचो मेली रे ॥ टेर ॥
पंचां री साखी कर पियु मुज, लारे लेली रे।
कांई कीयो मैं चूक करी मने, आज अकेली रे ॥ म्हारा ॥ १ ॥
चाय नहीं म्हारे और चाहूं मैं दरसण डेहली रे।
तूं जाणे जूं जाण म्हारे तो तूंहिज बेली रे ॥ म्यारा ॥ २ ॥
मन मेलारी मालूम म्हांने पड़ी न पेली रे।
सतगुरु पासे जाकर मैं तो बनती चेली रे ॥ म्हारा ॥ ३ ॥
'नाथ नो चौथू' कहत जोधाणे, सति अलबेली रे।
पियू तणी अपमानित तदपि नवल नहेली रे ॥ म्हारा ॥ ४ ॥

ढाल मूलगो

दलबलनो विस्तार, चाल्यो राजकुंवार, मानसरोवरुए, वासो अनुसरुए ॥ १२ ॥ मंदिर रचना कीध, पलंकडे परसिध, सुतोसुंदरुए भोग पुरुन्दरूए ॥ दीनपणे कुरलन्त, पंखिणी शब्द सुणन्त, मनसूं जागीयोए, राय अनुरागीयोए ॥ १३ ॥

१. ढाल प्रक्षेप तर्ज नाथ कैसे गजको फन्द छुडायो

चकवी यों क्यूं शोर मचायो, क्यों चहचाट लगायो ॥ टेर ॥
रति नहीं कारण दीसत रनमें, जिससे जिय घबरायो।
बिन कारण ही क्यों कुरलावे, पूरो पतो नहीं पायो ॥चकवी ॥१॥
सुनकर 'सज्जन' यू मन सोचे, आछो अवसर आयो।
जिनसे सतिको यह अपनावें, ऐसो रङ्ग लगायो ॥ चकवी ॥२॥
चकवी इण विद्ध शोर मचायो ॥ टेर ॥
चकवी कहती चतुर सुनो तुम, चित्त किनको चमकायो।
कलंक लगाकर कीया विछोहा, जिनको विरहफल पायो ।च०।३।
सती अंजनापे रंज को कारण, सगलो भेद बतायो।
ऐसो ढङ्ग रङ्ग दिखलाकर पवन केऽनङ्ग जगायो ॥ च० ॥ ४ ॥

---

१ सती अञ्जना से। नोट–''सती अञ्जना'' कविवर पण्डित मुनि श्री चैनमलजी महाराज रचित है।

वासर माणे भोग, रजनिनोरे वियोग,
ते कुरले घणीए, वचने दयामणीए ॥
जेहने दिन ने रात, एकज सरखी जात,
ते केम जीवहीए, आरती अति वहीए ॥ १४ ॥
परण्या पछीरेएह, साथे कीयो नहीं नेह,
सतिय शिरोमणीए, सादीधी अवगणीए ॥
जो आवीथी चाल, तोहूँ गयो मुँह टाल,
बोल सन्तोषनोए, न कहिवाणो घणोए ॥ १५ ॥
आज लगेहती आश, अब तो हुई निराश,
आजमरे सहीए, एतो में लहीए ॥
नारी हत्यानूं पाप, महोटो छे सन्ताप,
मुजने लागसेए, अपजश जागसेए ॥ १६ ॥
मित्र 'प्रहसित' बोलाय, मननी बात सुणाय,
पूछे सूँ करूँए, मित्र कहै खरूँए ॥
नारी हुई निराधार, मरत न लावे वार,
साचो सोचणोए, मान विमोचणोए ॥ १७ ॥

१ ढाल प्रक्षेप तर्ज-हांक मतिकर गर्व दिवाना ॥

हां ! काम में खोटो करीयो, लोक लाज से जरा न डरियो
द्वेष सती के ऊपरे नाहकही धरीयो रे ॥ टेर ॥
मात पिता मुजने समजायो, तो पिण में नहीं रस्ते आयो ॥
मित्रतणी नहीं बात मान में, उलटो लड़ियो रे ॥ काम में ॥१॥

---

१ सती अञ्जना से—चैनमलजी महाराज रचित है ।

(ढाल मूलगी)

अब ही जावूं तास, सन्तोषूं स उल्हास, मानी माननीए, आशा आननीए । मध्य रात्रीये सोई, स्वामी सेवक दोई, आया संचरीए, गगन गतीकरीए ॥ १८ ॥ स्वामी रहीयो बार, सेवग गेहमंझार, आवी जोवहीए, राणी रोवहीए ॥ पोयणे मारी हेम, मा तवदीसे नेम, जल विण माछलीए, तलपे बल बलीए ॥ १९ ॥ ऊंची नीची थाय, चैन न रंच लहाय, कंकण तोड़तीए, गिरवं लोटतीए ॥ वरजी २ राखन्त, धाई भल भाखन्त, जीवन्तां महुए, सुख हो से बहुए ॥ ॥ २० ॥ संचर जाणी थाय, धर्मीनस नारी ग्रहाय, काढे जेट लेए, माखे नेट लेए ॥ हूं स्वामी नो मित्र, नामे "प्रहसित" पवित्र, स्वामी आवीयोए, मनने भावीयोए ॥ २१ ॥ भूंडा ? एसी हासी, कुंवरी कहे उदासी, नाम न मुज गमेए, दर्शन किम रमेए ॥ वर्ष हुवा मुजवार, नवि दीठो भरतार, अलगोही रहेए, खार घणूं वहेए ॥ २२ ॥

दोहा— सति अंजना की सखी, सुण्या अपूरव बोल ।
बोली उत्तर में, अहो, सुण रे फूटा ढोल ॥१॥

१ ढाल प्रक्षेप तर्ज कायथडा

हांरे लम्पटी के तूं मारग भूलीयो, हांरे लम्पटी के थारो आगयो काल रे पापी म्हारा पिया परदेशां में ॥ टेर ॥
हांरेक लम्पटी बालूं थारी जीभड़ी, हांरेक लम्पटी थारी चिराऊं खाल रे पापी म्हारा पिया० ॥१॥ हांरे लम्पटी में एसी नहीं कामनी, हांरे लम्पटी रार्चू थारे फन्द रे पापी म्हारा पिया० ॥२॥ हांरे लम्पटी क्या तूं मेरे सामने, हांरे लम्पटी गिणूं न इन्द्र नरेन्द्र रे पापी म्हारा० ॥ ३ ॥

दोहा— सती शील में झिल रही, लखली पवन कुंवार ।
प्रेम लायके पुनरपि बोल्यो वचन विचार ॥१॥

१ सती अंजना से ।

१ ढाल क्षेपक तर्ज मेरा नन्नासा देवरा

जिनके लिये तूं झूरे झूरणा, उनको देवे किम गारी है ॥
मैं हूं तुम्हारा पियू पियारा, तूं है मेरी पियारी है ॥
हां म्हारी प्यारी अंजना, तो पर वारी है ॥ १ ॥

दोहा— दीपक लेकर देखीयो, निश्चय पवन कुंवार ॥
जाय वसन्ती सती भणी, बोली इणी प्रकार ॥१॥

ढाल मूलगी

कर्म तणो एदोष, करवो राग न रोस,
कीधो आपणोए, इह-पर भव तणोए
कामनीनो करतार, दीठो भलो भरतार,
फूली अङ्गमांए, राणी रङ्गमांए ॥२३॥

२ ढाल प्रक्षेप तर्ज–पन्नजी मूडे बोल

पियू घर आयोए २। सुन सती अंजना मान वढायोए ॥ टेर ॥
बोल २ अब खोल मून तूं, थारो भाग्य सवायोए।
देख २ अब आयो पियुडो, विना बुलायोए ॥ पियु० ॥ १ ॥
सुण्यो वचन ओ सती अंजना, अनहद मोद वढायोए।
पियु आने से सती हिया में हर्ष न मायोए ॥ पियु० ॥ २ ॥
ऊठी सती तव निज आसन से, वदन कमल विकसायोए।
खोल दुवार जोड़ कर दोनों, बचन सुनायोए ॥ पियु० ॥ ३ ॥

३ ढाल प्रक्षेप तर्ज–गवरल ईशरजी केवे तो०॥

भले आया हो प्रियतमजी जावूं वारणा हो, थांपर वारी हो बलिहारी राज पधारणा हो ॥ टेर ॥
सती झट ऊठी शीष नमायो, पियु दरशन से मन विकसायो, अपनो सब अपराध खमायो, झटपट आसन लाय विछायो काज सुधारणा हो ॥ १ ॥ आज आंगण में सुरतरु फलियो, म्हारो सारो दुखडो टलियो, पुण्य योग से प्रियतम मिलीयो, म्हारी

१ सती अंजना से। २ सती अंजना से। ३ सती अंजना से।

धन्य घडी धन्य भाग के लाज वधारणा हो ॥ २ ॥

दोहा—सती सरलता क्षांतिता, पतिवरता पिण और ।
लखकर मन मुदित हुवा, बोला कुंवर किशोर ॥१॥

ढाल मूलगी

भद्रे ! खम अपराध, थारो छेह न लाध,
ओछो हूं घणीए, पूरी तूं भणीए ।
दुःख सायर अगवाह, कांठे आवी नाह,
नामा धारथीए, नावा कारथीए २४ ॥
हसी रमी सुख पाय चालण लाग्यो राय,
राणी तव कहेए. गर्भ रहै सहेए ।
उत्तरनूं अहिनाण, आपो स्वामी सुजाण.
लोकां थी डरूंए. सुखमें दिन भरूंए ॥२५॥

मंत्री श्री चौथमलजी म० कृत ढाल प्रक्षेप तर्ज—नवीन रसिया

पाछा जाता प्रियवर ! राज मायत से मिलता जाईजोजी ॥ टेर ॥
तीन रात मैं रह्यो महिलां में, यों फुरमाईजोजी ।
कहनो हमारो मान पति थे मत शर्माईजोजी ॥ पाछा ॥ १ ॥
वात कही मैं सोच समझ मत यों ही गमाईजोजी ।
भविष्य ऊजरो होय इसी पिय वात बनाईजोजी ॥ पाछा ॥ २ ॥
जंग वरुण को जीत सुजशवर लारे लाईजोजी ॥
नित की ऊडास्यूं काग कंत झट पाछा आईजोजी ॥ पाछा ॥ ३ ॥
आनन्द मंगल वर्तें नित २ धर्म वधाईजोजी ॥
"चौथू" कहै पवनंजयने नथमाल. मनाईजोजी ॥ पाछा ॥ ४॥

(ढाल मूलगी)

देई मूंदडी देव, चाली गयो ततखेव.
कट के जई मिल्योए. किणहिन अटकल्योए ।
केशराज ए ढाल, नग[1] संख्या सुविशाल.
नारी नाहलोए, मिलण उमाहलोए ॥ २६ ॥

---

१ पर्वत (आठ)

दोहा (धन्या श्री रागे)

"पवनंजय" तब पाधरो, "लंका" नगरी जाय ।।
भूप भली परे भेटीयो, अति रलियायत थाय ।। १ ।।
"रावण" रूड़े रावले, शुभ वेला सुविचार ।
वरुणो परि तत्खिण चल्यो, दल चलने अनुसार ।।२ ।।
अब तो अंजना सुन्दरी, गर्भ धरे तिण वार ।
गुप्त पणा नूं कामए, कोईयन जाणे सार ।। ३ ।।
गर्भ तणे तव लक्षणे, गर्भ जणाणो जाम ।
"केतुमति" सासू कहे, किस्यूं कियो ए काम ।।४।।
"पवनंजय" परदेश छे, बहु वधारयूं पेट ।
हूं जाणू के एम हुसे, सोई हुवो नेट ।। ५ ।।

ढाल नवमी तर्ज झुमकड़ानी

"केतुमति" कलह कारिणीजी, काल रूपणी होई, करमगति दोहली ।
बहु किस्यूं ते ए कियुंजी, लाजविया घर दोई ।। कर्म० ।। १ ।।
भोली अभागणी निठुरणीजी, थो मननो उन्माद ।। कर्म० ।।
प्राण तजवाथा भलाजी, कां लीधो अपवाद ।। कर्म० ।। २ ।।
मरवा थी फरि जीवीयेजी. शील रह्यां संसार ।। कर्म० ।।
शील भलो सहुने सहीजी, सुन्दरी नो सिणगार ।। कर्म० ।। ३ ।।
नन्दननी अब मानताजी, जाणतां सहु कोय ।। कर्म० ।।
एण थारो असतिपणोजी, आजे जणाणो जोय ।। कर्म० ।। ।।४।।
रोवे राणी रावलीजी, दुःख हिये न समात ।। कर्म० ।।

दोहा— कटुक वचन सासू तणा, सुण्या "अंजना" नार ।।
उत्तर में आतुर तदा, बोली वचन विचार ।। १ ।।

मंत्री श्री चौथमलजी म० कृत ढाल प्रक्षेप तर्ज नवीन रसीया

साची कहदूं हो सासुजी मांसूं झूंठ न बोल्यो जाय ।
झूंठ न बोल्यो जाय मांसूं साच न खोल्यो (छोड्यो) जाय ।।टेर।।
झूठ बोल क्यों जन्म बिगारूं, चौर जार समजो सुत थारूं ।
रया तीन इतरात सासुजी कटक सूं पाछा आय ।। साची ।।१।।

सासू रीस करीने बोले: तूं कह भूली किण रे भोले ।
बोले क्यूं नहीं साच देवूंलां मैं थारी स्यान गमाय ॥ साची ॥२॥
सती कयो सासू नहीं माने, झूठी सारी वातां जाणे ।
'नाथ शिष्य चोथु' दी निसाणी तत्खिणप्रति दिखाय ॥सा० ३॥

१　　ढाल प्रक्षेप तर्ज-तावडा धीमोमो पडजारे

लाडीजी लखण नहीं आछा हे २ खोटा करके काम अबे थे बण-
रया हो साचा ॥ टेर ॥
चौरी कर तूं लाई गहणा, बण रही साहूकार ।
जाणूं लखण मैं थारा सारा, तूं सेवे व्यभिचार ॥ लाडी ॥ १ ॥

(ढाल मूलगी)

देखावी सा मूंदड़ीजी पति आगमनी बात ॥ कर्मगत दोहीली ॥५॥
बलती बायण बेगसूंजी, संभलावे सहु लोक ॥ कर्मगत० ॥
नाम न भावे तेहनोजी, तेहसूं स्यूं संयोग ॥ कर्मगत ॥ ६ ॥
गिरी गिराई मुंद्रड़ीजी, हाथ चढी कहीं आय ॥ कर्मगत० ॥
साची होवे सुन्दरीजी, क्यू न बोलावे ए माय ॥ कर्मगत० ॥७॥

दोहा—कूड़ा बोली कामणी, राखूं नहीं इक रात ।
आंख थकी अलगी करो, भाखे राणी बात ॥१॥

मंत्री स्वा० श्री चौथमलजी म० कृत ढाल क्षेपक तर्ज-गिणगोर की-

सासूजी थे म्हारा थांरा जाया ने आवण दोजी, जाया ने आवण
दो जितरे ए बातां जावणदोजी ॥ टेर ॥
हाथ जोड़ ने अरज करू मैं बडा वरों की जाईजी ।
ऐसी बात सुणी नहीं आगे, आ कांई बात सुणाईजी ॥ सासु ॥१॥
एकलडी बनमांहे मांने, मतना मेलो सासूजी ॥
ऐंठो खाय रहूं घर मांहे, बोले न्हाखी आंसूजी ॥ सासु ॥ २ ॥
माडांणी जो बन में मेलो, साप स्यार मुझ खासीजी ।
बिगर गुन्हे ही मुझ मरवासो तो, थांरे हाथे कांई आसीजी ॥सासु॥३॥
सासू सुमरा सेथी बोलो, कांई जोर मैं करसूंजी ।

१ सती अञ्जना से ।

भूखां तिरसां मरती मैं तो, विना मौत मैं मरसूंजी ॥ सासु ॥४॥
दीन वचन हुय बोले बहुयर, सासूजी थे मानोजी।
दासी की दासी हुय रहसूं, चोथू कहूं मत तानोजी ॥सासु ॥५॥

श्री. वैद्य धूलचन्दजी सुराणा कृत ढाल क्षेपक तर्ज-वधव बोल मानो.

सासुजी म्हारी अरज सुणीजे हो, तुम सुत आवे ज्यां लगे घर मांही राखीजे हो ॥ टेर ॥
विगर गुन्है काढो मती, मन खांत करीजे हो।
कटक भणी जन मोकली खबरां कर लीजे हो ॥ सासु ॥ १ ॥
अर्ज इती अब धारजो, माताजी मोरी हो।
पछे ही पछतावसो, कहूं कर जोरी हो ॥ सासु ॥ २ ॥
गद २ वाणी बोलती नयणां जल ढलके हो।
दुःख अपूरब सांभरे. कालेजो कलके हो ॥ सासु ॥ ३ ॥
क्रोधवसे राणी कहे, बोले किण दावे हो।
झूठ बके मुझ आगले, जरा शर्म न आवे हो ॥ सासु ॥ ४ ॥
करम कोई बांधो मति, भवि जीवां भारी हो।
भुगतण विरियां जीवने, नहीं लागे कारी हो ॥ सासु ॥ ५ ॥

दोहा—राणी बोली रोस भर, दो दासी ने मार।
एह काम सब इण कीया, पकड़ी चेटी चार ॥१॥

ढाल क्षेपक तर्ज-हमीरीयानी। धूलचन्दजी सुराणा कृत-

बाजेरे लोला ताजणा, रोवन्ती असराल सनेही।
डील थयो चक चोलं ज्यूं, छूटे रुद्रनी धार सनेही-कर्म तणी गति दोहली ॥ टेर ॥
कूटण वाली कम्पे घणी, नहीं लागे कछु जोर सनेही।
हुकम धणीरे कारणे, काम करां ए भोर सनेही ॥ कर्म० ॥ २ ॥
सूंस करी सति भाखती. न्हाखे मुख निस्सास सनेही।
चौरी मैं कीधी नहीं, भावे देवो मुझ पास सनेही ॥ कर्म ॥३॥

दोहा—केतुमती अति क्रोध में, सुन्या न वचन लिगार॥
अनुचर को बुलवायके, बोली यों ललकार ॥ १ ॥

अन्न पाणी री आखड़ी, जोलो ए नहीं जाय ॥
सति विचारे चित्त में, अब बोलीजे नाय ॥ २ ॥

क्षेपक तर्ज लावणी (लेखक).

दोनों को कालो वास तुरत पहिराया,
जो आभूषण मणीमाल तुरत उतराया ॥
कालो रथ ने काला तुरङ्ग मंगाया,
दीयो कालो स्वारथी काला हीया बनाया ॥
सती करे अरराट सखी समझावे,
रथ चाल्यो सननाट नगर विच आवे ।
मत देना कोई आल किसी पर भाई,
भुगते हाथो हाथ हुवे दुःख दाई ॥ टेर ॥१॥

धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज आज शहर में हजा माफ सीपडे

नर नारी हो सारी जोवती, रोवती भर २ नेण, सुज्ञानी ।
हा हा दैव ए कांम कीयो कीसूं, भाखे इण पर वेण ॥ सु० ॥
जोइजो अवस्था सतियों में पड़ी ॥ टेर ॥ १ ॥
म्होटा घर में अकाज हुवा इसा, छोटांनो स्यूं थाह ॥ सु० ॥
आरत करती हो कामण अतिघणो, जोवे नगरना शाह ॥सु.जो.॥२॥
काला रथ में बैसा संचरे, धरती दुःख अपार । सु०
मुख कुमलाणों मालती फूल ज्यूं लोक घणा छै लार ॥सु जो.॥३॥
नगरी उल्लंघी हो आई वन विषे, तन में तेज न कांय । सु०
मन दुःख धरतो स्वारथी बोलियो, दोषण म्हारो न माय ।सु.जो.४।
सती दुःख देखी स्वारथी इम कहे, धिक् २ पापी पेट । सु० ।
जन्म डुबोयो हो मैं इण वस पड्यो, नीच कर्म कीयो नेट ।सु.जो.५

ढाल मूलगी

निर्भ्रंछी वचने खरीजी, आरक्ष पुरुषां हाथ ॥ कर्म०
काढी नगरे बाहरेजी, सखी चाली तस साथ ॥ कर्म० ॥ ८ ॥
आरक्ष पुरुषे पाधरीजी, पीहरे आणी सोय ॥ कर्म०
बाहिर मूकी बाहुड्याजी, एतो इमहिज होय ॥ कर्म० ॥ ९ ॥

रात्रे बाहीरे रहीजी, करती शोवा शोच। कर्म०
किणही ठामे पड़े नहींजी, आरतीमे आलोच ॥ कर्म ॥ १० ॥

धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज खबर नहीं है पलकी

सती में विपत पड़ी भारी रे, स०
मत कोई बांधो कर्म चतुर सब सुणजो नरनारी ॥ टेर ॥
क्यों रह्यो छे पीहर सासरो, प्रीयतम क्यों प्यारी।
अहो २ कर्म गती कुणटारे, निज कृत दुखकारी ॥ सती० ॥१॥
आक्रन्दशब्द करे दोई वनमें, रन है भयकारी।
रुदन सुनी पंखी कुरलावे, सुनत लगे खारी ॥ सती में ॥ २ ॥

१ ढाल क्षेपक तर्ज पपैया काहे मचावे शोर।

सहेली अब किम धारूँ धीर, पड़े नयन से नीर ॥ टेर ॥
परणी जद तो प्रीतम मुझपर, नाहक थे नाराज।
पिया प्रेम जब कीया मेर से, सासु बिगाड़ी लाज ॥
कलङ्क के काले तनपर चीर ॥ सहेली ॥ १ ॥
जशजीवन अपजश है मरना, कहते नीतिकार।
इसमें श्रेय मुझे हैं मरना, मरधूं खाय कटार ॥
सुनत यों जाय कलेजा चीर ॥ सहेली ॥ २ ॥

दोहा-रात पड़ी रवि आथमीयो, प्रसरयो घोर अंधार।
सागारी अनशन कीयो. नामगुणे नवकार ॥ १ ॥

तर्ज—अंजना री—

अंजना कहै सुन सुन्दरी, दुःखमांहे दुःख मुझ ऊपन्यो आज तो।
पाणीथकी कीवी पातली, सासरा बिच म्हारी नीगमी लाजतो ॥
माता ने मुख किम दाखवूं. भाई भोजायों किम करसीए नीहतो।
ज्यों लगे स्वामी आवे नहीं. किमकरी दुखभर्या नीगमूं ?
सती में शिरोमणी अंजना ॥ १ ॥
'वसन्तमाला' वलती कहै, जहां लगे निर्मला ऊ.
तहां लगे स्वजन सुहामणा, हर्ष बोलावसी तुम

१ सती अंजना से।

माता मनोरथ पूरसी, भाई भोजाईयों मिलसी उमङ्ग तो।
जहांलगे स्वामी आवे नहीं, तहां लगे पीयर पोखजो अङ्गतो।सती।२।
१ ॥ ढाल क्षेपक तर्ज–मैं अङ्गरेजी पढ़ रई हूं ॥
नहीं पीयरीये चालू, मुझको शर्म सताती ॥ टेर ॥
कलंक लेय किम पीयर जावूं, साच कहूं महियर शर्मावूं।
हा हा कैसे हालू ॥ मुझको० ॥ १ ॥
जोगिन बनकर अलख जगाऊं, सुत होने से फिर जलजाऊं।
पूरण पतिव्रत पालूं ॥ मुझको० ॥ २ ॥
दोहा–क्षेपक,–उपसर्ग सहतां ऊगियो, सहस किरणनो सूर।
पीयर जावे पवणी, विकट पन्थ छै भूर ॥
॥ धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज लावणी ॥
दोनों तो भूली वाट ऊजड़ में जावें,
रनवन के मांहि फिर फिर गोता खावे।
माणस मिलीयां विन रास्ता कुण दिखलावे,
सतीयन की छाती मांय दुःख नहीं मावे ॥
यों बोले अंजना सुन तूँ सखी हमारी,
कर्मों की रेख कोई टले न किनसे टारी ॥ टेर ॥
मैं पूर्व भव में पाप कीया अति खोटा,
मैं लीया अदत्तादान आल दिया म्होटा।
वलि भूख तृषा से जीव घणो घबरावे,
तो पिण पीयर की आशा मन में लावे ॥
तिहां विविध परे तो वन दुःख सहतां हारी ॥ कर्मों की० ॥२॥
दोहा—अनुक्रमे वाटे चालतां, चरण थया चक चोल।
मन संकोचित माननी, आई नगरनी पोल ॥ १ ॥
॥ क्षेपक तर्ज—अंजनारी ॥
नगरनी सेरी हो संचरी, आधो घूंघट नीचो है मुख तो।
काला हो वेष शोभे नहीं, दीठां ऊपजे अति घणूं दुःख तो ॥

१ सती अंजना से।

हंस गमन गति चालती, राज विछोही ए दीसे छे नार तो ।
पाछल परजाहो परवरी, इण पर पहूंचीछे राज दुवारतो ।सती.।३।

॥ ढाल मूलगी ॥

दीन मुखी गाढी दुःखीजी, ऊभी राजदुवार ॥ कर्म०
प्रतिहारी ए आवीनेजी, कीधो राय जुहार ॥ कर्म० ॥ ११ ॥

॥ धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज-पन्नजी मूंडे बोल ॥

खाट हिंडोले हींचे राजा, खुल रही केसर क्यारी रे ।
आनन्द रङ्ग विनोद विविध पर पालक अरज गुजारी रे ॥
मत कोई बांधोरे, मत कोई बांधो कर्म शुभाशुभ लगे न सांधोरे ॥टेर॥
पोल के बारे अंजना ऊभी, एक सखी तसु लारी रे ।
नगर सिणगारो नरपति बोले, करो नच २ त्यारी रे ॥ मत० १ ॥
प्रच्छन्न पणे सहु सम्बन्ध सुणायो, भयो शोच अति भारी रें ।
लग्यो कलेजे दाह भूप मूर्च्छा तिणवारी रे ॥ मत० ॥ २ ॥

॥ ढाल मूलगी ॥

सर्व विरतंत सुनावतांजी, राजा रोप धरन्त ॥ कर्म०
हाथ घसे शिर धूणवेजी, पश्चाताप करन्त ॥ कर्म० ॥ १२ ॥
कुलटा कर्म समाचरीजी, कुलने लीक[१] लगाय ॥ कर्म०
आवी मुख देखाड़वाजी, ए कुण भलपण थाय ॥ कर्म० ॥ १३ ॥
घन[२] थी ऊपजे वीजलीजी, अमृतथी विष वेली ॥ कर्म०
दीवाथी जेम कालिमाजी[३], मुझ थी ए इम मेली[४] ॥ कर्म० ॥१४॥
प्रसन्न कीर्तिजी वदेजी, पापणी परहि जाय ॥ कर्म०
अंगुठो तो अहिरुपाजी[५], दसिवाथी न रखाय ॥ कर्म० ॥ १५ ॥
सघलाने काने सुणीजी, कहै 'महोत्साह' मन्त्रीश ॥ कर्म०
दांते चढाची आंगुलीजी, किस्यूं कहो छो ईश ॥ कर्म० ॥ १६ ॥
रूठी बैठी पीहराजी[६], सुणो अछे आवन्त ॥ कर्म० ॥
जलथी अग्नी न ऊपजेजी, काष्ट थकी उपजन्त ॥ कर्म० ॥१७॥

१ लांछन (लीटी) । २ बरसादथी । ३ काजल । ४ अस्वच्छ । ५ सर्प
६ पीयरीए ।

कुंवरी छाने राखियेजी, मेटी[1] सयल कहाव ॥ कर्म०
छल्या छल्याथी ऊजलाजी, हो, राया राव ॥ कर्म० ॥ १८ ॥
'केतुमती' नामे सुणोजी, अप कीर्ति छे आद[2] ॥ कर्म०
झूठो दोष लगाड़नेजी, बहु विगोवे वाद ॥ कर्म० ॥ १९ ॥
राजा कहै मन्त्रीशसुंजी, तूं नहीं जाणे मर्म ॥ कर्म०
सास बहु ने अवगणेजी, एतो अछे अधर्म ॥ कर्म० ॥ २० ॥
अण मिलत भरतारसुंजी, तिण ही में परदेश ॥ कर्म०
पिछे हुई गर्भणीजी, एछे कांई विशेष ॥ कर्म० ॥ २१ ॥
उहांथी उत्तर करोजी, जाजे अलगी अपार ॥ कर्म०
मुख नवि देखूं ताहरोजी, छूं ! बहुलो विस्तार ॥ कर्म० ॥ २२ ॥
दिन सुधे सुधूं सहीजी, वांका थी अति वंक ॥ कर्म०
माणसनूं सारो नहीं जी, एजिन वचन निशंक ॥ कर्म० ॥ २३ ॥
नृप आदेशे पोलीयेजी, दूर करी ते बाल ॥ कर्म०

दोहा—कही सही नृपती कही, आतुर अनुचर आय ।
कदलीदल ज्यों धरणी पे, पड़ी बाल मूर्च्छाय ॥१॥

॥ ढाल क्षेपक तर्ज–कोरो काजलियो ॥

'वसन्तमाला' वसने करी, कांई घाले शीत समीर ॥ पापी बावलीयो ॥
साव चेत हुई सुन्दरी, कांई नयनों वर्षे नीर ॥ पापी० ॥ १ ॥
'वसन्तमाला' बाला कहै, मोरा कालो देखी वेस ॥ पापी०
पूछ तांछ नहीं जांच की, उलटो करीयो द्वेष ॥ पापी० ॥ २ ॥
हट करके रहती नहीं, मैं कहती सुख दुःख वात ॥ पापी०
पीछे प्रभो ! पिछतावसो, कांई जद आसी जामात ॥ पापी० ॥३॥

॥ तर्ज–अञ्जनारी ॥

पोलिये आवी उठावीयो, तुम्ह पर रूठो विद्याधर रायतो ।
बांह साहा ने बैसी करी, मनमांही चिन्तवे आंपणी मायतो ॥

१ मुकी (तजी)। २ आदि (प्रथमथी)। ३ सती अंजना से।

आंख थकीरे आंसू झरे, शरीर सूनो थयो शुद्ध न सारतो।
आंधारे पाय पाछा पडे, इणपर पहोंतीछे माय दुवारतो॥सती में ४॥
दोहा—माता मन्दिर मांयने, करती नवा २ रङ्ग।
बारी मारग देखतां, आवे पुत्री विरङ्ग॥ २॥
॥ तर्ज-अञ्जनारी॥
होठ सूकारे खरपटी पड़ी, जीभ सूकी नहीं तालवे नीरतो।
इण पर चालती बालिका, ढींचण पगतले फाटेछे चीरतो॥
कालोरे वेश शोभे नहीं, नयन झरे जांणे मोतीना बिन्दतो।
मुख कुमलाणोरे कामनी, जाणेके राहु ग्रह्योछे चंदतो॥सतीमें ५॥
१ ॥ ढाल क्षेपक तर्ज-मैं अङ्गरेजी पढ गई हू॥
मैं शरणे अब आई हूं, सुन तूं मेरी मैया॥ टेर॥
तेरी गोद में तुमने पाली, मेरे मोद में होती काली।
मैं वही तेरी हां जाई हूं॥ सुन०॥ १॥
सासू मो शिर कलंक चढ़ाया, काला वेष मुझे पहनाया।
जिन से मैं शर्माई हूं॥सुन०॥ २॥
पिता साहब ने हुकम लगाया, प्यासी ने नहीं नीर पिलाया।
गाढ़ी मैं घबराई हूं॥ सुन०॥ ३॥
दोहा—हींडे हींचती मातने, सुनली ताम पुकार॥
लखि पुत्रीका अंजना, बोली निजर निहार॥ १॥
२ ढाल क्षेपक तर्ज आखिर नार पराई है।
जबही अन्नजल खाऊँगी, कन्या बाहर कढाऊँगी॥ टेर॥
कलङ्क लेय क्यों आई आज, इनको जरा न आवे लाज॥
मैं नहीं मुँह लगाऊँगी॥ कन्या०॥ १॥
वांझ प्रभु हा! क्यों नहीं कीनी, क्यों कुलटा यह कन्या दीनी॥
इनका नाक कटाऊँगी॥ कन्या०॥ २॥
दोहा—आई क्यों यहां अंजना, माता का नहीं प्रेम॥
चेड़ी नेड़ी आयके, बोली बेडी एम॥ १॥

१ सती अञ्जना से। २ सती अञ्जना से।

१ ढाल क्षेपक तर्ज थीगा लूंबां झूंबां हंई आईजो ॥
म्हांरी बूरी लगावोला कांईजी, तूं क्यों पी रीए आईजी ॥ टेर ॥
क्यों खोटा कर्म कमाया, थे कुलने चावल चढायाजी ॥ म्हां० ॥
थे अब तो कुछ शर्मावो, म्हांने मूंडो मति दिखावोजी ॥म्हां०॥१॥
मत मन्दिर अन्दर आना, चले झटपट यहां से जानाजी ॥म्हां०॥
है माताजी का कहना, मत खड़े मिन्ट भर रहनाजी ॥ म्हां० ॥२॥
दोहा—सती आंखको लालकर, बोली यों ललकार ॥
बस बस अब खामोश हो, बोलो वचन विचार ॥१॥
२ ढाल प्रक्षेप तर्ज-नवीन रसीया ॥
पहीले कहूं विचारी बोल सखी पीछे पिछतावोगी ॥ टेर ॥
सन्मुख मुझको गाली देते, नहीं गम खाओगी ॥
जितनी बनी सैतान आज, उतनी दुःख पाओगी ॥ पहीले० ॥१॥
भूखी प्यासी दासी को देख तुम दया न लाओगी ॥
जब दिन मेरे घर आवेंगे, फिर घबराओगी ॥ पहीले० ॥ २ ॥
पति पवन जब युद्ध से आसी, फिर शर्माओगो ॥
सबके मुँह में धूड़ पडेगी, बदन छिपाओगो ॥ पहीले० ॥ ३ ॥
(लेखक) ढाल क्षेपक तर्ज पणिहारी—
सुण माता कहे अंजना, हूँ आई है,
जानी जनम देवाल, कीध मनाई है ॥
मैं नचिजानी मायड़ी, छेह देसी है,
निकली कीध बेहाल ॥ वैरण जैसी है ॥ १ ॥
सुख दुःखनी जे वातड़ी, नहीं पूछी है,
नहीं कह्यो पीले नीर ॥ चढ गई ऊँची है ॥
तूं निर्दय किम नीकली, मोरी जननी है,
इक इचरज इकपीर, म्हारे मननी है ॥ २ ॥
कमल नयन से नीर, नीझर छूटी है,
मानो मोतीयन की माल, तट के तूटीहै ॥

१ सती अञ्जना से। २ सती अञ्जना से।

मूर्च्छित होय धरणी पड़ो, अत ही रोो रे,
तब कहै 'वसन्तमाल' क्यों तन खोवे है ॥ ३ ॥
बाईसा रोवो मती, रहो गाढा है,
ए मावित नहीं आज, आया आडा है ॥
बांह पकर बैठी करी, झट चाली है,
अब भौजाई घरे जाय, भावज भाली है ॥ ४ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज-पनजी मूँडे बोल ॥ मन्त्री श्री चौथमलजी म० कृत.

बाईसारो वेप देखने, भोजाईजी भिड़कीरे ॥
दास्यांने कहै वेगी जाकर, देदो खिड़की रे ॥ ॥
भावज मूँडे बोल, बोल २ घर आई थारी नणद्ल बाई है ॥
खिड़की वेगी खोल, खोल २ म्हारी सावसगी तूं वाहली भोजाईहो टेर।
नीची झुक २ जालियों में, नणद बाई ने निरखे रे।
ऊंची निजरां करी अञ्जना, प्रेम परखे रे ॥ भावज० ॥ १ ॥
निरमल जल झारी भर पावो, अवरन मांगू कांई रे।
पानी पीकर बन में जास्यां, डापो नांई रे ॥ खिड़की० ॥ ३ ॥
बचन सुण्यां अणसुण्यां करने, भावज अन्दर बड़गी रे।
गोखां मायली बारीयां, वा जाती जड़गी रे ॥ खिड़की० ॥ ४ ॥
देख भावजरा भाव अंजना, गेल छोड गई आगे रे।
नाथ मुनि शिष्य 'चौथमल' कहै, सतियों सागे रे ॥ भावज ॥५॥

॥ तर्ज अजनारी ॥

अंजना घर २ हींडती, पग कुंकू वरणा कमलसम देहतो।
खुचता कांटाने काकरा, गिर रक्त राती भूमि थई तेहतो ॥
दीन बचन मुख दाखती, नैण झरे जाणू सावण मेहतो।
भूखी तिरसा करी आकुली, भाई भोजायां सब दीनो छे छेहतो॥सती,६

दोहा—ऐसे आखिर आगई, माणक चौक मझार।
नागरीक नरसे सती, कर रही एम पुकार ॥ १ ॥

१ ॥ ढाल क्षेपक तर्ज-तरकारी लेलो ॥

नगरी का लोकों ! कोई तो पिलावो पानी आयके ॥ टेर ॥
प्यासां मरती मरूं हाय मैं, नीर नयन में आयो ।
मात पिता तो मुझ पर रूठे, पानी भी नहीं पायो रे ।।नगरी १॥
अयि ! नगरा के लोकों आवो, मतना तुम भय खावो ।
दीन दुःखी अबला दुर्बल की, जरा दया दिल लावो रे ॥ नगरी. २॥

दोहा—ऐसे कहतां अंजना, दृग भर आयो नीर ।
हृदय विदारक आहसे, जाय कलेजे तीर ॥ १ ॥

॥ छन्द मालती ॥

सब नगर निवासी देख लाये उदासी ।
अति दुखित पियासी अंजना और दासी ॥
सब जन भय खावे चित्त में दुःख पावे ।
पर जल न पिलावे पास कोई न आवे ॥ १ ॥

॥ छन्द द्रुत विलम्बित ॥

नगरि में गरि में चरचा यही-
सुजनता जनता अकुला रही ॥
जल नहीं तुं कहां अन खावनो-
पुरभयो सघलो अण खावणो ॥ १ ॥

॥ छन्द मालती ॥

शिर पर अति चोटी हाथ सोटी लिये हैं ।
जल भर कर लोटी स्नान शुद्धि किये हैं ॥
अतिकर करुणाई विप्र ने पास आई ।
इम किम कुमलाई बोल तूं बोल बाई ॥ १ ॥

॥ छन्द द्रुत विलम्बित ॥

नृपति की पति की घटना सही ।
तब कथा विकथा घटना कही ॥
जनकजी रु जहां जननी रहै ।
मुझ लिये तू नहीं जन ! नीर है ॥ १ ॥

---

१ सती अंजना से । २ सती अञ्जना से ।

॥ छन्द मालती ॥

सुनकर अकुलायो विप्र ने शीष नायो ।
नहिं मन वबरायो धैर्य ऐसे बँधायो ॥
मुझ विनय सुनीजे देर माता न कीजे ।
झटपट अब लीजे नीर ठण्डा तूं पीजे ॥१॥

दोहा—नीर पिऊं नहीं नगर में, सुनहु ब्राह्मण वीर ।
आकर पुरने बाहरे, पायो निर्मल नीर ॥ १ ॥

॥ ढाल मूलगी ॥

लोक विलाप करे घणूंजी, भूल्योरे भूपाल ॥ कर्म० ॥ २४ ॥
भूखीं तरसी तलवले जी, आंसूं वरसे नयन ॥ कर्म०
दर्भाकुर पग वींधतांजी, पामे अधिक कु चयन ॥ कर्म० ॥ २५ ॥
पगे पगे गिर गिर पडेजी, तरु तर लीये विसराम ॥ कर्म०
'वसन्ततिलका' साथणीजी, चाली जाये नाम ॥ कर्म० ॥ २६ ॥
गाम नगर पुर पाटणेजी, नृपनी आयश कार ॥ कर्म०
पहिलाहिज कही आवीयाजी, को मत द्यो पेसार ॥ कर्म० ॥२७॥
वासो ही अण पावतीजी, धरती अति सन्ताप ॥ कर्म०
पामी अटवी मोटिकीजी, करती अति ही विलाप ॥ कर्म० ॥२८॥
भाग्य हीन जे भामिनीजी, सहूंनी हूं सिरदार ॥ कर्म०
एह पराभव देखवाजी, कां सरजी किरतार ॥ कर्म० ॥ २९ ॥
तात फर्यो माता फरीजी, फरीया भाई भूर ॥ कर्म०
नाथ फर्यो थी जग फर्योजी, मरवूं झूरी विझूर ॥ कर्म० ॥ ३० ॥
मरवामें ओछो नहीं जी, साच तणो विश्वास ॥ कर्म०
पकड़ावे ढाढस घणीजी, नृप जाया दीये त्रास ॥ कर्म० ॥ ३१ ॥

१ ॥ ढाल क्षेपक तर्ज–तूही २ याद प्रभू आवे दरद में ॥

चालो अब बाई सम्भालो विपनने, सम्भालो विपनने निभावोला पन नें ॥ टेर ॥

१ सती अञ्जना से ।

पीयर सासरे आसरो नांही, कसकर कमरने बसकर मननें ।।चालो।।
वन मृगननके गनमें रहैंगे, भूल जाय तूं सखरे सदनने ।।चालो।।२।।

ढाल अंजनारी—

अंजना सती इण पर कहै, वसन्तमाला मने वन में ले जाय तो ।।
बिखमीरे डूंगर अति घणा, जेह वन में घणी तरुतणी छायतो ।
माणस मुख दीसे नहीं, सज्जन आपणां तिहां नहीं कोयतो ।।
सूरज किरण नहीं संचरे, तिण वनमें सुखे रहसां दोयतो ।।सतीमें।।७।।
अंजना वन मांहीं संचरी, लोक पीयर ना देवे छे गालतो ।।
नगरना लोक झूरे घणा, ए किस्यूं रायने ऊपज्यो ख्यालतो ।।
आंण दिवरावीजी घरो घरे, एहवो कर्म न करेरे चण्डालतो ।।
पेटनी पुत्रीरे परहरी, वनमांहीं काढी छे अंजना बालतो ।।सती।।८।।
माताजी दासीजी मोकली, जाए जोवो अंजणा रही किण ठामतो ।।
दासी कहै वाई वन गई, हा हा दैव यह स्यूँ कीधू काम तो ।।
माहरी कूख में ऊपनी, बालपणे बेटी पर अति घणों रागतो ।।
वनमांहीं वाघ विलूरसे, रात दिवस बले पेटनी आगतो ।।सती९।।
नित भोजन करती रे बापपे, भाई भोजाइयोंने आपती भागतो ।।
उच्छ रङ्ग रमती रे अमतणे, किम कर सहसी शीतने आगतो ।।
अन्न पाणी किम पामस्ये, मैं तो जाणीयो कोई राखसे वीरतो ।।
मातारे मूर्च्छारे वशथई, शरीर सम्भालीने साचव्यो चीरतो ।।सती।।१०
राजा हो राणी ने प्रीछवे, राज सम्बंध नहीं जाणीयो भेद तो ।।
कटक थी पवनजी आवस्ये, नासका कर्ण नो करसी रे छेद तो ।।
किम कर लोकंने प्रीछवूं[१] किम कर राखूं म्हारा देशनी कारतो ।।
जो घर आणूंरे अंजणा, तो नगरना लोक हींडे अनाचारतो।।सती११
वसन्तमाला इम उच्चरे, बाई तारो बाप छे कर्म चण्डाल तो ।।
मूर्ख मातारे तुमतणी, बन्धव कीधो छे कर्म विकरालतो ।।
आंगण न राखी अधघड़ी, कलंक चढावीने दीधो छे आलतो ।।

---

[१] पूछवूं ।

वसन्तमाला बलती कहै, थारा पिहर पर पड़जोरे धारतो ॥सती१२॥
बाई म्हारो बाप छे निरमलो, इण किणने नहीं दीधो छे आलतो ॥
माता छे म्हारी महासती, पतिव्रता धर्म तणी प्रति पालतो ॥
बंधव भगता छे बापना, धरिये नहीं वसन्तमाला मन रोसतो ॥
पूर्व पुण्य किया नहीं, ए सहु आपणां कर्म नो दोपतो ॥सती १३॥

ढाल मूलगी

आगे जातां देखीयाजी, गुफामां एक साध ॥ कर्म० ॥
"अमितगती" नामे भलाजी, दर्शन थी सुख लाध ॥कर्म०॥३२॥
नवमी ढाल सगातणोजी, सगपण नो व्यवहार ॥
"केशराज" देख्यो घणोजी, धर्म एक आधार ॥ कर्म ॥ ३३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज चालो सजनी बहेली ॥

चालो जल्दी बाई, देखोंनी बन के मांहीं, मोरी सजनी ज्ञानी गुरु ऊभाध्यान में ॥ टेर ॥
भलो भाग्य बाईजी थांरो, साचा सतगुरु मिलिया ॥
दर्शण करस्यां चरण भेटसां, अब तो दुखडा टलिया ॥ मोरी १ ॥
संयम रागी तृष्णा त्यागी, पूरण है वैरागी ॥
ज्ञान ध्यान में लीन मुनीश्वर, शिव पुर सूं लिव लागी ॥मोरी॥२॥
सती अंजना सुन सुख पाई, मुनिवर पासे आई ॥
नीची ढुल ढुल शीस नवाई, बोली कर लघुताई ॥ मोरी ॥ ३ ॥

दोहा- (आशावरी राग)

देई प्रदिक्षणा भाव सूं, विधीये वन्दन करन्त ।
सुख पूछी बयठी सती, अधिको हर्ष धरन्त ॥ १ ॥
पूछे चारण[1] ऋषी भणी, वसन्त तिलका ताम ॥
कोण कर्मना दोष थी, साचा झूँठा नाम ? ॥ २ ॥
ऋषि भाखे भले भाव सूं, कर्म कथा नहीं पार ॥
थोड़ा में भाखूं घणूं, सुणवा बोल बे चार ॥ ३ ॥

१ आकाश मां उड़ने वाला ।

॥ ढाळ दशवीं–तर्ज–गुरांजी थे मने गोडे न राख्यो ॥

पूर्व भव वात सुणावे स्वामी, सा निसुणे सुखसाता पामी ।
जम्बू द्वीप प्रसिद्ध प्रमाण, जोजन लाख तणो मण्डाण ॥
क्षेत्र सुक्षेत्र 'भरत' भणीजे, 'मन्दर' पुरवर नगर सुणीजे ।पूर्व. १।
वणिक वसे नामे 'प्रिय नंदी', नारी 'जया' नामे आनन्दी ।
जायो नन्दन नीको जाम, कला तणो सागर अभिराम । पूर्व. २ ।
एत दिवस उद्यान सिधायो, ऋषि दर्शन देखी सुख पायो ।
समकित पामी पाले नेम, साधु दान देवाने प्रेम ॥ पूर्व० ॥ ३ ॥
तप संयम सुधा आराधी, ईशाने सुरपदवी लाधी ।
नगर 'मृगांक' मनोहर कहीये, 'श्री हरिचन्द्र' नरेश्वर लहीये ।पूर्व. ४।
'प्रीयंगु लक्ष्मी' नारी नीकी, प्यारी छे अति राजाजी की ॥
सो सुर चवि राणी उयरे आयो, 'सिंहचन्द्रजी' नाम कहायो ।पूर्व.५।
धर्म करी फिर देवों मांहे, 'सिंहचन्द्रजी' उपज्यो प्रा है ॥
वैताढ्ये 'अरुणपुर' चारु, राय 'सुकण्ठ' अछेज्यूं उदारुं ॥ पूर्व० ६ ॥
'कनकोदरी' राणी उयरेनन्द, नामे 'सिंहवाहन' आनन्द ॥
राज्य करी चिरसोई नरेशर,' विमलनाथने' तीर्थे सुखकर ॥ पूर्व० ७ ॥
'लक्ष्मीधर' मुनि पासे पधार्यो, संजम साधी कारज सुधार्यो ॥
दुःकर तप करणी करी सोई,' लांतक' सुर लोके सुर होई ॥ पूर्व० ८ ॥
तुझ उदरे सो आवी वस्यो छे, पुण्यवन्त होवेरे तिस्यो छे ॥
चरम शरीरी उत्तम प्राणी, होशेए नन्दन तुझ राणी ॥ पूर्व० ९ ॥
'कनकपुरी' नगरीनों नायक. 'कनकरथ' राजा सुखदायक ॥
राणी 'कनकोदरीय' सयाणी, बीजी 'लक्ष्मीवती' ए वखाणी ।पूर्व. १०
'कनकोदरीए' नन्दन जायो, रूप कला करी अधिक सुहायो ॥
'लक्ष्मी वतीए' छिपायो बालो, माताजी दुःख हुवो असरालो ॥पूर्व११
वल वलती देखी तव राणी, पाडोसणी बोले तव वाणी ॥
रे भूंडी ! तें ए स्यू कीधो, माता थी बालक चोरी लीधो ॥पूर्व १२॥
हुई खिसाणी राणी आपे. माता पासे बालक थापे ॥
बाहर घडी नो अन्तर कीधो, तेथी अशुभ कर्म फल लीधो ॥पूर्व१३॥

देव धर्म गुरु सूधा सेवी, स्वर्ग सुधर्म होई देवी ॥
तिहां थकी तूं आवी सीधी, 'अंजना' सुन्दरी नाम प्रसिद्धि॥पूर्व१४॥
माता पुत्री अन्तर राखी, तेह तणां फल लेवे छे चाखी ॥
किधां कर्म न छूटे कोई, अन्तर नयणे लीजो जोई ॥ पूर्व॥ १५॥
तब तूं हूती भगनी एहनी, अनुमोदी थी करणी तेहनी ।
ते माटे दुःख पामे माथे, कीधू लाभे हाथो हाथे ॥ पूर्व० ॥१६॥
भोगवो पड्यो छे एसहु कर्म, आज थकी ऊपजसे शर्म ।
दिन २ साता बधती जासे, शील सती तूं अधिक दृढासे ।पूर्व.।१७।
आवसे ए कुंवरीनो मामो, देख्यां थी लेसो विश्रामो ।
तुमने निजघर लेई जासे, पति मेलां पण वेगो थासे । पूर्व. ।१८।

(अञ्जना चरित्र मे पूर्व भव इस प्रकार है)

पूर्व भव शोक लिखमावती, अहनिश करती हो जिनतणी सेवतो।
'सिंहरथ' पुत्र छे तेहनो, तेह पाडोसन अपहर्यों लेवतो ॥
तेरे घडी लगेंटलबली, जे नहीं वीहरे न्याय करी एमतो ।
जिहां लगे पुत्र देखू नहीं, तिहां लगे अन्नपाणी तणो नेमतो।सती १४।
साधवी आयने प्रीछव्यो, ताहरा मन मांही वसीयो वैरागतो ।
आपीयो पुत्र पाये नमी, मांहे मांही ऊपन्यो धर्म नो रागतो ॥
संजम साधीने तप करचो, आलोयणा विन पड्यो एकतो फेरतो ।
कीधारे कर्म नवि छूटोये, तेरे घड़ीना थया वर्ष तेरतो ।सती ।१५।
तिहां थकी तुमे सुरथया. सुरथकी चवी करी राजकुंवांरतो ।
साथ पाडोसण दुःख सहै, कूख तुम्हारे छे पुण्यवन्त बालतो ॥
चर्म शरीरो ए जीवडो, आगल होवसी धर्म साधारतो ।
पवनजी वरण संरण सीडी, कुशल घर आय करसी तुम सारतो ।स.१६

॥ ढाल मूलगी ॥

एम सुणी सुख पायो गाढो, ऋषिनू बचन सदा छे टाढो ।
पर उपकारी ऋषि पांगरीयो, गगनगति गगने संचरीयो ।पूर्व० १९।

॥ तर्ज अजनारी ॥

वनमांहे भमतीरे बालिका, एतले गुफामांही गूंज्यो सिंहतो ।

गासपाड़ी सर्व सावजां, जाणे आषाढांरो गाजीयो मेहतो ॥
अंजणा कहै अलगी रहो, वसन्तमाला कहै मरण दो मायतो ।
जाणसे पिऊ परदेशे गई, ए संदेह टालजो अम तणो जायतो ।स. १६।
'वसन्तमाला' विरखे चढी, अंजणा आसन दृढ करी ठायतो ।
नाम जपे जगनाथनो, जाणे के ध्यान चढीयो मुनिरायतो ॥
चऊं गति जीव जीव खमावती, चार शरणा चिन्तवे मनमांयतो ।
केसरी रुठा रे स्यूं करे, माहरो धर्म नहीं लेवे रे कायतो ॥ सतीमें० १७॥
'वसन्तमाला' विरखे टलवले, धाओ २ अंजना छे निराधारतो ।
बूंब पाडीने बटकाकरे, धाओ २ वन तणा रक्षपाल तो ॥
धाओ २ सज्जनजे हुवे, धाओं २ शील तणा रखवालतो ।
कुँवरीने वाघ वीदारसे, इम कही रुदन करे असरालनो ।सती.१८।

॥ ढाल मूलगी ॥

सिंह एक आयो तव चाली, थर थर धूजण लागी बाली ।
आयो तव खेचर 'मणिचूड', शरभ[1] रूप कीधूं प्रतिकूल ॥पूर्व २०॥
नाठो केसरी वार न लागी, सुन्दरीनी ए आरती भागी ।
मुनि सुव्रत जिन धर्म करन्ती, वर्ते छे शुभमति अनुसरती ॥पूर्व॥२१॥

(अञ्जना-चरित्र में सिंह को हटाना इस मुताफिक है)

तिणवन व्यन्तर जक्ष रहै, बाहर जोयण तणो रखवालतो ।
यक्षणी यक्षने इम कहै, आपणे शरणे आवी छे बे बालतो ॥
'शार्दूल' 'रूप' जक्षे कर्यो, नखकरी केसरीनी छेदी छे देहतो ।
शार्दूले सिंह पराभव्यो, कूटीने काढीयो वन तणे छेहतो ।सतीमें ।१९।
देवता साहाय शीले हुवो, आनन्द शील तणा गुण गायतो ।
नारी सहूमें तू निर्मली, बेकर जोडी सुर लागो छे पायतो ॥
शीले हो शिव सुख सम्पजे, शीयल हो मिलसे तिहारो कंततो ।
शीलेहो मामाजी आवसी, तिहां लग इनवन रहो निश्चन्ततो ।स. ।२०।

॥ ढाल मूलगी ॥

दिन पूरे प्रसव्यो वर पुत्र, जाणूं वाध्यूं सघलो घर सूत्र ।

---

१ अष्टापद नामनूं जानवर ।

सकल कला लक्षणं गुण पूरो, होसे ए कुंवर अति शूरो॥ पूर्व०॥ २२॥
प्रकृती कर्म करे उत्कर्षे, 'वसन्त तिलका' सखी सुहर्षे।
एक सखी अछे समभावी, आपदमें दुःख लेवे बटावी॥पूर्व० २३॥

॥ तर्ज-अञ्जनारी॥

चेतनी आठम चांदनी, पुष्प नक्षत्र ने सोमज वारतो।
पाछलो पहर रयणी तणो, अंजना जायो छे हनु रे कुँवारतो॥
जाणे के सूरज ऊगीयो, स्वर्ग थी सुर करे जय २ कारतो।
राक्षस रोवावण ऊपनो, रामनो सेवक धर्म नो धारतो॥लती २१॥
सहीयर पुत्र पखालीयो, निझरणे जाय पखालीयो चीरतो।
पुत्र पोढायोरे पाखती, सीतानो वारुहओ हनुमन्त वीरतो॥
निरखतां तृप्ती पामे नहीं, मांहो मांही वेहू सखी इम करे वाततो।
जन्म महोच्छव कहो कुणकरे,कटक चालीयोछै कुंवर तणो तातती २२

॥ ढाल मूलगो॥

सुतने आरोपीरे उच्छंगे[१], सुन्दरी दुःख आणे बहु भंगे।
रुदन करन्ती मूर्च्छा आवे, दुष्ट दैव तूं इम सुख पावे॥पूर्व २४॥
एहवा सुतनो तो अति महोच्छव, घरे पितातो करतोरे महोच्छव।
मैं अब रांकड़ीए सूं थाय,! इम चिन्तवतां हैयू भराय॥पूर्व २५॥

॥ तर्ज-अञ्जनारी॥

चांनणी रात पूनम तणी, अंजना बैठी छे सुत कर धरन्ततो।
चंचल चपल सुहामणो, अतिरलीयावणो बहु गुणवन्ततो॥
हर्ष बोलावेरे मायड़ी, कुंवर तणी अछे लघुवरवेयतो।
तारांने ताकेरे बालूड़ो, जाणेके चांदलो झपटीने लेयतो॥सती मैं २३॥

॥ ढाल मूलगी॥

'प्रतिसूर्य' नामे खग एक, आवीगयो मन आणी विवेक।
रुदन तणूने पूछे कारण, आपणपे छे दुःखनूं वारण॥ पूर्व॥ २६॥
वसन्त तिलका पासे कहावे, आदि अन्तथी चरित्र सुणावे।
सोभाखे हूं मामो थारो, पुत्री ! आरती सकल निवारो॥पूर्व २७॥

---

१ खोला में।

लगन लेईने वेला साधे, वेला साधतां मन वाधे ।
ग्रह ऊंचाछे एहना जेहवा, महोटा ने जोई जेरे तेहवा ।।पूर्व० २८।।
भाणेजी सुत सखी समेत, विमाने बैसाड़ी सुहेत ।
निज नगरीए चाल्यो जाय, हर्ष घणो हैडे न समाय ।।पूर्व २९।।
यान[१] तणा कंकण नो नाद, काने सुणो ऊपज्यो अहल्लाद ।
साहावाने उदल्लासियो जाम, माय[२] गोदथी छटकीयो ताम ।।पूर्व ३०।।
पड्यो पर्वत ऊपर आई, पर्वत चोट शक्यो न सहाई ।
बालक ने भारे चूराणो, वज्र पडे जिम तिम अधिकाणो ।।पूर्व ।।३१।।
अंजना सुन्दरी आणे दुःख, मुझ दुखियारी ने शूं सुख ।
जाण्यूं ए सुत नो मुख जोवन्त, दिनभर सुहर्ष होवन्त ।। पूर्व ।। ३२ ।।

३ ।। ढाल क्षेपक तर्ज नवीन रसीया ।।

म्हारो लाल गिर्यो सुकुमार लार मैं भी गिरजाऊंगी ।
मैंभी गिरजावूंगी हाय मैंभी मरजाऊँगी ।। टेर ।।
अब नहीं हरगिज जिन्दी रहूंगी, मैं दुःख पाऊँगी ।।
लकड़ बाल कर जालो जाल में, मैं जल जाऊंगी ।। म्हारो ।। १ ।।
जब तक लाल नहीं देखूंगी, अति दुःख पाऊंगी ।।
हा ! कर्मो ने यह क्या कीना, किम शान्ति मनाऊंगी ।। म्हारो ।। २ ।

(ढाल मूलगी)

पाछलथी मामो अति धसीयो, बालक ने देखी मन हसियो ।
आंचन आई कोई दीसे, पूण्यवन्तए वीश्वावीशे ।। पूर्व० ३३ ।।
माताने आणी सुत आप्यो, माताए हैडे सुत थाप्यो ।
हरखन कोई पुत्र सरीखो, पुत्रहीथी नाम निरीखो ।। पूर्व० ३४ ।।
'हनुपुर' पुरवर उच्छव ठाणे, भाणेजी ने मन्दिर आणे ।
सयल कुटुम्ब तणूं मनमानी, कुलदेवी जिम तिम सन्मानी।।पूर्व.३५।।
मामे नाम दीधूं हनुमान[४], चन्द्रकला जिम वधतूं वान ।

१ विमान । २ माताना खोलामाथी । ३ सती अञ्जना से । ४ जन्म्यापछी तुरत ते बालक ' हनुपुर ' मां आव्यो, तेथी तेना मामाए तेनूं नाम हनुमान पाड्यू ।

शैल[1] चूर वे अपर विधान, प्रगट मल्यू 'श्री शैल' प्रधान ।पूर्व.३६।
राजहंस जेम क्रीड़ा करतो, वाधे अंगज आनन्द धरतो ॥
दशमीढाल कही समभावे, 'केशराज' ने सांच सुहावे ॥पूर्व०३७॥

मुनि श्री रूपचंद्रजी महाराज कृत.

॥ ढाल चेपक तर्ज-छोटोसो बलमों मेरे आंगणा में गिल्ली खेले ॥

छोटोसो हनुमन्त मेरे आंगणा में रिमझिम खेले ॥
इत उत दौड़ी जाय कुंवर माताजी झेले ॥ टेर ॥
लक्षण अंगे विराजता, उत्तम अलबेले ।
चाले चाल मराल यों ठमके पगमेले ॥ छोटोसो ॥ १ ॥
घमके घूघरीया पगमें फुठरा कानोंमें झेले ।
रुदन करे तब बाल मात गोदी में लेले ॥छोटोसो ॥ २ ॥
मुक्ता झटित मस्तक टोपली मोतियन को गेरे ।
माता लुकजावे अन्दर महिलके जब हनुमंत हेरे ॥ छोटोसो ॥३॥
पहीरणने फावे अम्बर फूटरे लपियन के घेरे ।
हॅम २ रमतो बाल ख्याल कर चक्री ने फेरे ॥छोटोसो॥४॥

॥ दोहा (सोरठा रागे)

सुत मुख निरखया हरख अति, फरि अरती अह्लोल[2] ।
साल सरीखा साल ही, जो शिर चढ्या कुबोल ॥ १ ॥
सो दिन कब ही आवसे, घर आवे भरतार ।
लोकां मांही ऊजली, कद करसे करतार ॥ २ ॥

॥ तर्ज-अञ्जनारी ॥

'अंजना' 'हनुमंत' इहांरहै, पवनजी, कटकले पहूंता सनूरतो ॥
जाकर 'रावण' से मिल्या, लेई बीडोने चालियो शूरतो ॥
बांधीया 'खर' 'दुखर' छोडावजो, तिहां मनावजो हमतणी आणतो ॥
कटकलेई कर संचर्‍यो, मेघपुरी, कीयो जाय मेलाणतो ॥सती२४॥

---

१ शैल (पर्वत) ने चूरवाथी "श्री शैल" एवं प्रगट अने प्रधान (म्होटू) अपर विधान (बीजूं नाम) मल्यू । २ अत्यन्त । अतिशय—

'वरण' राजा तिहां आवीयो, सामुहो वर्षे छे वाणांनों मेहतो ॥
'पवनजी' पांव न चातरे, मांहांमाही शूरा जूंजेछे तेहतो॥
वरसदिवस झगडो रयो, मांहांमांही बेहूं जणा कीधोछे मेलतो ॥
बांधीया 'खर' दुखर छोडावीया, आंण रावण तणी लीधीछे झेलतो २५

— दोहा —

'पवनंजय' परगट पणे, वरुण जीती वड राय ।
'खर' 'दुषण' छोडावीया, रावण ने सुखथाय ॥ ३ ॥
'रावण' 'लंका' आवीयो, 'पवनंजय' पगे लागी ।
घर आवणने ऊमह्यो, प्रभुनी अनुमति मांगी ॥ ४ ॥
मतापिता पग प्रणमीया, नारी निरखण नेह ।
अकुलाणो अणदेखवे, मनमें अति अन्देह[१] ॥ ५ ॥

॥ ढाल ग्यारहवीं—तर्जः—रायखेंगारना गीतनी ॥

पूछ्यूं हो पूछ्यूं कोई नारी, भाखे हो भाखे भूप प्रते भलोए ।
सुन्दरी हो सुन्दरी केरीवात, वातज हो वातज सहु तुमे सांभलोए ।१।
गर्भ हो गर्भ तणे अहिनाण[२], देखी हो देखी खीजी सासुखरीए ।
जाणी हो जाणी वात विरोध, काढी हो काढी सा घर बाहीरे ए ॥२॥
आरक्ष हो आरक्ष पुरषों साथ, पीहर हो पीयरीए सा मोकलीए ।
आगे हो आगे जाणे देव, वीतकहो वीतक वितसे वलीए ॥३॥

दोहा—एह बात श्रवणेसुणी, कोप्यो पवन कुंवार ।
हा हा मायत सूं कीयो, कीजे कवण विचार ॥ १ ॥
माता धड़हड़ धूजती, आई पुत्र की लार ।
गदगद हो वाणी वदे, सुन जाया सुकुमार ॥ २ ॥

॥ ढाल चोपक तर्ज—हां सगीजी ने पेड़ा भावे ॥

हां[३] लाल ! सुन अर्ज हमारी, काया कम्पे कहतां सारी ।
क्या कहूं हा ! हकनाक सती में विपदा डारी रे ॥ टेर ॥

१ ए फारशी नो शब्द छे तेनो मूल शब्द अन्देशह-अन्देशो छे. तेनो अर्थ सन्देह (शक) थाय छे । २ एधाण निशानी । ३ सती अंजना से ।

गर्भ देख मैंने ललकारी, ऊँची टेर सखी को मारी ।
कहा सतीने खून मुझे हा कर लाचारी रे ॥ लाल ॥ १ ॥
तो भी मुझे दया नहीं आई, कैसी कुमति ऊँधी छाई ।
करके काला भेष देश के बार निकाली रे ॥ लाल ॥ २ ॥
पाछल बुद्धि नार कहावे, उणमें अकल कठासुं आवे ।
हां बेगम की जात रहै नहीं गम हित कारी रे ॥ लाल ॥ ३ ॥

दोहा—पवन श्रवण कर शीघ्र ही, प्रजल्यो कोप मझार ।
पर माता को देख के, बोला वचन विचार ॥ १ ॥

१ ढाल चेपक तर्ज—नवीन रसिया ।

माता ! जबर जुलम कर डार्यों वनमें भेजी दो सतियों ॥ टेर ॥
अगर तुझे था निर्णय करना देनीथी पत्तियों ॥
जैसी हुई थी वैसी मैया लिखदेता बतियों ॥ माता ॥ १ ॥
मैया तूं है समझदार क्यों छाई कुमतियों ॥
सतियों की हा दया न लाई, गजब करी गतियों ॥ माता ॥ २ ॥

दोहा—यों कह चाले पवनजी, आई माता दौड़ ॥
हाथ पकर कर लाल का, बोली बेकर जोड़ ॥ १ ॥
भूल हमारी पुत्र भूलकर, करिये भोजन चाल ।
पीहर होसी बीनणी, लेसां सार सम्भाल ॥ २ ॥

२ ढाल चेपक तर्ज—पाणीड़ो भरवादे ।

मैया मत करिये लाचार, झटपट जावणदो ॥ टेर ॥
भोजन माता किस विध भावे, जीव मेरा तो अति घबरावे ॥
आवे दुःख अपार ॥ झटपट ॥ १ ॥
नारी बिना नहीं नीर पीऊंगा, प्यारी बिना अब नहीं जीऊंगा ॥
मरसूं खाय कटार ॥ झटपट ॥ २ ॥
माता का झट हाथ छुड़ाकर, अपने मित्रों के महिलां आकर ॥
बोला यों ललकार ॥ झटपट ॥ ३ ॥

१ सती अञ्जना से । २ सती अञ्जना से ।

१ ढाल क्षेपक तर्ज—लङ्गड़ी चाल ।

जोगी बन तन रस्मी रमाऊं. प्यारी ढूंढ कर लाऊंगा ।
जो न मिले नार यार में, जहर खाय मरजाऊंगा ॥ टेर ॥
सती बिनां यह दुनियों सारी, मुझको झूँठी लखाती है ॥
बिना सती के गती हमारी, दिन २ बिगड़ी जाती है ॥
प्यारी बिना क्या महल अटारी, खाना सोना पीना क्या ॥
बिना प्रिया के सांच कहूं मैं, जगत् बीच में जीना क्या ॥
मरी हुई या जीती है, यह खास खबर ले आऊंगा ॥जोगी॥ १ ॥
दोहा—मित्र कहै सुन पवन कुंवरजी. यों मत करो खयाल ।
चलो शीघ्र कीजे खबर, जाकर निज सुसराल ॥ १ ॥

तर्ज—अञ्जनारी ।

पवनजी कहै मित्र ! माहरा, राय राणी ने किम करूं परणामतो ।
माता ए अंजना परहरी, सासरा बिच म्हारी निर्गमी मामतो ॥
बरस दिवस विग्रह हुवा, राजा हो वरुण सामो थयो जुजतो ।
बांध्या 'खर दुषण' छोड़ाविया, तेह तणी किण आगे करखूंरे गुज्जतो२६
मित्र कहै मती निर्मली, अवगुण आपरा काढसी जोयतो ॥
गुण तोरे परतणा शिरवहै, एहवी नारी नवि दीठेरे कोयतो ॥
पहिला मांही नहीं जावसां, अलगा थका हो कहाचो जुहारतो ॥
पवनजी आणेरे आवीया. अंजना पीहर पडी रे पुकारतो ।सती२७।
'महेन्द्र' कहै हूं पापीयो. कर्म कसाईनो कीधो तो काज तो ॥
हांजीया लोक म्हारे घणा, डावो नर कोई नहीं दीसे छे आजतो॥
सीखनी बात कोई ना कहीं, तो मन माहरी उतरतीं रीसतो ॥
नर्क नीयांणो में बांधीयो, इण कर्मे केम छूटूं जगदीशतो।सती२८।
पवनजी आणेरे आवीया, सांभल सासु उर पड़ी झालतो ॥
हीयो हणे दोउ हाथ सूं, उदर आधान तूं किहां गई बालतो ॥
ऊभी थकी शिर आफले, जाणे छे कर भरे लागे छे बाणतो ॥

१ सती अञ्जना से ।

पुत्रीनो दुःख साले घणो, अजहु न छूटा किम रह्या प्राणतो॥२९॥
सेना मेली कर संचरया, सुसरा जमाई ने सामो जायतो ॥
अति दुःख रायने सम्भवे, मन मांही पुत्रीनो अति घणो दाहतो॥
घरमें न राखी रे अध घड़ो, कालो मुख थई मिलीयो नरेशतो॥
पवनजी यहां रे पधारीया, महैन्द्र कहै में किसो उत्तर देसतो।३०।
नगरी मांही पधरावीया, मर्दनीया मर्दै छे तेल चम्पेलतो ॥
निर्मल नीर अंघोलीया, जीमण बैठा छे वेजणा छेलतो ॥
भोजन विविध पर पुरसीया, सोवन थाल ने विछावीयो पाटतो ॥
पवनजी हाथ खेंची रह्या, चउदिश अंजनानी जोवे छे वाटतो।३१।
अंजना जाई रे बालिका, पुत्र जायांनी वधामणी थायतो ॥
वसन्तमाला रे दीसे नहीं. वा पण कीहां रही रे छिपायतो ॥
सासूने घर पड्यो पीटणो, मांहो मांही बेऊँ मिलो इम करे वाततो॥
अंजना ने सासुरे दुहवी, पीयर आवीने करी अपघाततो ।सती।३२।
साला तणी सुत नांनड़ी, लेई उत्संगे बेसाड़ी छे बालतो ॥
कह थारी फूंही रे शूं करे, तिवारे रुदन करी कहै ततकालतो ॥
मात पिता ए बंधवा, पापीये कीधो छे कर्म चण्डालतो ॥
आंगणे न राखी रे अधघड़ी, कलङ्क देई करी काढी छे वारतो।३३।

१ ढाल चेपक तर्ज—आखिर नार पराई है।

इक दिन फूंफी आई थी, पिता नहीं बतलाई थी ॥ टेर ॥
माता से उणकरी पुकार, फिरी फेर सो बन्धव द्वार ॥
सबने बार कढाई थी ॥ इक दिन० ॥ १ ॥
फूंफी का लख काला बेष, राजा राणी करीयो द्वेष ॥
प्यासीने निकलाई थी ॥ एक दिन० ॥ २ ॥
कोई मति इणने बतलावो, भोजन और पाणी मत पावो ॥
एसी आण फिराई थी ॥ इक दिन० ॥ ३ ॥

१ सती अंजना से।

तर्ज–अञ्जनारी ।

वालनो वयण श्रवणे सुणी, माथा पर फेरवीने फेंकीयों थालतो ॥
महैन्द्र आवी पाए नम्यो, मंत्री कहै तुमे कर्म चण्डालतो ॥
ऊठो स्वामी क्यों बैठी रह्या, जीवती मूईनी कीजीये सारतो ॥
राजाना लोक वरजे घणा, तो पिण आया छे नगरने बारतो॥३४॥
वनमांही कुंवरजी टलवले, किहां गई दान दया तणी वेलतो ॥
किहां गई धर्मनी धूंसरी, किहां गई शील सन्तोपनी वेलतो ॥
आवोनी नार आगल रहो, ताहरा मुखतणूं जोवूँ छूं स्वरूपतो ॥
कटक थी कुशले हूं आवीयो, इम कही रुदन करे बहु भूपतो ।३५।

॥ ढाल मूलगी ॥

वज्र हो वज्र समो ए बोल, निसुणीहो निसुणी सासरड़े आव्यो सहीए ॥ सुसरोहो सुसरो बोलेएम, आवीहो आवी पण राखी नहीं ए ॥ ४ ॥ जङ्गल हो जङ्गल मांहै जाई, गिरिहो गिरि गिरि तरु तरु जोईया ए ॥ शुद्धि न हो शुद्धि न पामी कोय, आपण हो आपण उदासी होईयाए ॥ ५ ॥ मित्रजहो 'प्रहसित' नामे उदार, साथे हो साथे वदे वसुधा धणीए ॥ जाई हो जाई तूँहिज आप, बापज हो बाप अने माता भणीए ॥ ६ ॥ इमजहो इम कही तूं आव, लाधीहो लाधी नहीं छे सुन्दरीए ॥ घट[1]हो ए घटकेरो होम, करवोहो वांछे प्रभु निश्चय करीए ॥ ७ ॥ सुणतांहो सुणतां ए विपरीत, माताहो माता मूर्छाणी घणीए ॥ शीतलहो शीतल करी उपचार, मूर्छाहो मेटी माताजी तणीए ॥ ८ ॥ मित्रजहो मित्र संघाते ताम, माताहो माता ओलम्भो दीए एटलोए ॥ वालो हो वालो थारो विशेष, कांईहो कांई ते वीरो मेल्यो एकलोए ॥९॥ साचोहो साचो दैव विचार, आपणहो आप कीयां फल भोगवूंए ॥ विणठी हो विणठी वात अपार, सुतनेहो सुतने क्यूं करी जोगवूंए ॥ १० ॥ रोवेहो रोवे सा असराल, नयणांहो नयण प्रनाला जिम

[1] शरीर ।

चहैए ॥ ए जगहो ए जग महोटो न्याय, जेहेवो हो जेछे तेहवो फल लहैए ॥ ११ ॥ राजाहो राजा वहुले साथ, चाल्योहो चाल्यो पुत्र गवेषणेए ॥ खेचर हो खेचर लेई हजार, धायाहो धाया सुत सोधण भणीए ॥ १२ ॥ लाकड़हो लाकड़ खड़की जाम, जम्या हो जम्या वेछे जेटलेए ॥ पूर्वहो पूर्व पुण्य प्रमाण, तातजीहो तातजी आयो तेटलेए ॥ १३ ॥

॥ तर्ज–अंजनारी ॥

'महैन्द्र' राय तिहां आवीयो, नारी सहित आयो राय 'प्रहल्लादतो'॥
पवनजीने आय बांहै धर्या, कांई रे कायर तूं मूकीछे लाजतो ॥
कर्म थी बलीयोरे को नहीं, पेट चीलूरती आई अंजनानी मायतो ॥
राजाहो वरणसूं रणभड्या, अति दुःख करतां ऊखड़े घायतो ॥२६॥

॥ ढाल–मूलगी ॥

साहिहो साहि राख्यो सोई, लाकड़हो लाकड़ अलगा नांखीयाए ॥ जीवतहो जीवतने कल्याण, हेतजहो हेत घणो कही दाखीयाए ॥ १४ ॥ अवलाहो अवलानो ए काम, सवला हो सवलातो एम केम करेए ॥ थारीहो थारी तो एमाय, तुझविणहो तुझविण तो निश्चय मरेए ॥ १५ ॥ खेचरहो सोधन गया था जेह, हनुपुर हो हनुपुर वरे आवीयाए ॥ सुन्दरीहो सुन्दरीने पगेलागी, वीतकहो वीतक सहु सुणावीयाए ॥ १६ ॥ विन्हल हो विन्हल अधिकोहोय, घटमे हो घटमे थो प्रभु आगमेंए ॥ लिखियोहो लिखियो तुझ भरतार, करताहो करतारे तुझ भागमेंए ॥ १७ ॥ एटलेहो एटले आयो तात, राख्यो हो राख्यो मरवाथी तुझनायकूए ॥ चिन्ते हो चिन्ते मनही मझार, पापिणीहो पापिणी पति दुःखदायकूए ॥१८॥ मामाहो मामा निसुणी एह, ऊंहो वने हो ऊहीं वने वेगो जाईयेए॥ पति हो पति ने देई तोष, कांई हो कांई एवा ओरण थाईयेए ॥ १९ ॥ रचियूं हो रचियू ताम विमान, जाणे हो जाणे ऊग्यो दिन-पतीए ॥ मामोहो मामोजीने आप, सुतसूं हो सुतसूं चाली सा

सतीए ।।२०।। सोधत हो सोधत वन उद्यान, भूपज हो भूपज वने आया चलीए ।। मित्रेहो मित्रे दीठो ताम विमान, भूपतिहो भूपति सूं भाखे भलीए ।। २१ ।। आपो हो आपो मुझने ईश, आछी हो आछी आज वधामणीए ।। नयणे हो नयणे निरखी नारी, नन्दन हो नन्दन नंद शिरोमणीए ।। २२ ।। अमृत हो अमृत बूठ्यो मेह, चिन्तवण हो चिन्तवण चिन्ते चाहसूंए ।। प्रणमें हो प्रणमें सुसरा पाय, नयणां हो नयणां तेह उमाहसूंए ।। २३ ।। नन्दन हो नन्दन लीधो गोद, रूडो हो रूडोने रलियामणोए ।। रह्यो हो रह्यो कण्ठ लगाय, सुन्दर हो सुन्दर ने सुहामणोए ।। २४ ।। वारु हो वारु वार वखाण, वहुअर हो वहुअरने मामा तणोए ।। प्रभुजी हो प्रभु जी तुम परसाद, अमघर हो अमघर रंगवधामणोए ।। २५ ।। सुन्दरीहो सुन्दरी ना मा वाप, भाई हो भाई भोजाई सहुए ।। माताहो केतुमति पण आप, साजन हो साजन आवी मिल्या वहु ए ।। २६ ।। हनुपुर हो हनुपर पुरवरे आय, ओच्छव हो ओच्छव अधिको मांडीयोए ।। भोजन हो भोजन वर तम्बोल, दानेहो दाने दारिद्र खांडीयोए ।। २७ ।। दिन दस हो दिन दस तांई ताम, साजनहो साजन सहु ए गहगहेए ।। पहूंता हो पहूंता निज २ गेह, प्रभुजी हो वहु सुतसूं रे तिहां रहैए ।। २८ ।।

(अंजना चरित्र में पवनंजय का अंजना से मिलना इस प्रकार है)

आगल पवनजी चालीया, पूठे थकी आयो सहु साथतो ।।
आवतां सहियर ओलख्यो. एहछे स्वामीनी आंपणो नाथतो ।।
अंजना आई पावे पडी. खोले बेसावीयो हनुरे कुंवारतो ।।
घडीयक पुत्र सामो जुवे. घडीयक जोवेछे अंजना नारतो ।।
पवनजी आनंद पामी रह्या, एहवो सुख नहीं दीठोरे संसारतो।।२७।।
वसन्तमालाजी पाएनमी, ओटले घाली लीधी हीया मझारतो ।।
कहो बाई तुम दुःख किमसया, किमकर सही म्हारी मायनी मारतो।।
किम करी वनफल वीणीया, किमकर पर्वत रह्या निराधारतो ।।

अंजना पुत्र किम जन्मीयो, किमकर नीगम्यो दुःखभर्यो कालतो ।स ३८
जिवारे स्वामी थे कटकेगया, सासरा पीयर म्हांने दीनोंछे छेहतो ।
तिवारे ऊठीने अमें वनगया, वनफल वावरी राखीछे देहतो ।।
वनमांही मुनिवर भेटीया, देवता कीधोछे अम्ह तणी सारतो ।
धर्म करतां सुत जन्मीयो, अंजनागुण तणो नहीं लहूं पारतो ।सती ३९।
धिन मुख दीठोछे तुम्हतणो, बेऊं सखी बोलेछे मधुरीतो वाणतो ।
किम करी सैन्यमें संचर्या, किम कर सह्या राजा वरुणना वाणतो ।
'खर' 'दूषण' केम छोडावीया, पवनजी वोतक दीयो सुणाय तो ।
जुज करीने ऊवर्या, अति सुख ऊपन्यो अंग न मायतो ।सती ४०।
अंजना सामोरे संचरी, सासु सुसरा तणे लागी छे पायतो ।
पीयरीया आय सहु मिल्या, हस्त वदन रह्या सहुरे खमायतो ।।
अंजना कहै सहु सांभलो, मनमांही माहरी मत करो लाजतो ।
कर्म म्हारारे हूं वनगई, हर्ष वदन थई सहु मिलो आजतो ।सती ४१
हनुरे पाटण थकी संचर्या, अंजनाने आपीछे अति घणी आथतो ।
मामाजी आया पहोंचावना, रतनपुरो लग आयो सहु साथतो ।।
सामीहो परजा हो परवरी, लेई पधरावीया उत्तम ठायतो ।
पवनजी पाट बैसारने, राय राणी बेहूं तब वन जायतो ।सती ४२।

—: ढाल मूलगी :—

कुंवरहो कुंवर आचार्यजीने पास, पढियोहो पढियो पाठ अनेकनेए ।
बहुतेरहो बहुतेरही विज्ञान, जाणेहो जाणे विनय विवेकनेए ।।२९।।
विद्याहो विद्या साधन कीध, हुवोहो हुवो अधिक सकाजजीए ।
ढालजहो ढालज इग्यारवींएह, भाखेहो भाखे मुनि केशराजजीए ।३०।

दोहा (रामग्री रागे)

वरुण प्रत्ये रावण बली, मेले कटक अपार ।
'प्रति सूरज' ने 'पवननृप' बोलाव्या तिणवार ।।१।।
दोई भूपति चालतां, नीषेधी हनुमान ।
चाल्यो आडम्बर घणे, रींझाया राजान ।।२।।
सुग्रीवादिक खेचरा, वरुण साथे संग्राम ।

रावण ने वरुणात्मज, बाज्या ताम दुदाम ॥३॥

—: तर्ज—अंजनारी :—

रावण सेना देखी करी, पुत्र सो वरुण ना आवीया सोयतो ।
आगना ऊडेरे अङ्गारीया, लोह ना बाण करी आफले दोयतो ॥
सामाहो सुभटज आवीया, खेंचीया धनुष्यने सांधीया बाणतो ।
रोस चढ्या रण आफले, जोम सहित बोले इम वाणतो ॥सती४३॥
माताहो वैरण तुमतणी, तातने अलखावणो नांनडो बालतो ।
जो मुख आवेरे वरणने, जिण दिन खूटसी ताहरो कालतो ॥
वलतोहो हनुमन्त इम कहै, बंधव सोमीली आवीया साथतो ।
बोल साचो करी मानसूं, जद वावरसो रणमांही हाथतो ॥सती४४॥
बांदरी विद्या साधीकरी, वन्दर रूप कीयो तिणवारतो ।
हाक करी दल हाकवे, बारे जोजन लगे वाजे धूंकारतो ॥
हाके करी सेनाहो थरहरी, वृक्ष उखेड़ीने नांखेछे घायतो ।
पूछ फेरी करी एकठा, पुत्रसो बांधी नांख्या रणमांयतो ।सती ४५॥

दोहा—सेना दल लेईकरी, चढियो वरुण नरेश ॥
हनुमन्त तेपिण सज्जथयो, सेना सबल विशेष ॥१॥

धूलचन्दजी कृत ढाल चेपक तर्ज खड़का—

दोनोंई कटक सटक भेला हुआ, जोयण एक नो बीच राखे ।
राग सिंधु गाईयो पोरस चढ़ाईयो, कायर नर तिहां खाल ताखे ॥१॥
हनुमन्त वीर अति धीर रण में घणो ॥ टेर ॥
निज २ मोरचे सुभट रग रोपीया, तीर सणणाट कर मेह वरसे ॥
भलल कर वार कर खलल लोही वहै, शिर विना शूर नर लडे धरसे ॥
तिमिर बाणे करी तिमिर फेलावीयो, लावीयो हनुमन्त रोस भारी ॥
सूर्य बाणे करी तिमिर नासीगयो, तुरत उद्योत थयो जगत् जहारी ॥
वरुण नृप आय हनुमन्त साथे अडयो, लड़त है विविध आयुध धारी ॥
हनुमन्त योध उद्धन्त बलवन्त अति, वरुणना धनुष्यने तोड़ी डारी ॥
अगन बाण मेलीयो जलशर ठेलीयो, फेलीयो कपिदल जोर करने ॥
हाक दल हाकवे संक नहीं राखवे, आखवे अब किम जाय टरने ॥

तर्ज—अंजनारी

रथ थकी राजा हो ऊतरयो, आविने हनुमन्त दीधी छै बाथ तो ॥
चोटी ना बाल ते कर ग्रही, मूठीना प्रहार रु वाजे छै हाथ तो ॥
चपल चपेटारे वावरे, हनुमन्त ऊपरे बैठो छै रायतो ।
'रावण' हनुमन्त ऊपर कीयो, वरुणने बांधी नोख्यो रथ मांयतो ॥

(दोहा)

नन्दन वरुण तणेघणो, खेड़यो रावण जाम ।
हनुमन्ते ते बांधीयो, विद्याने बले ताम ॥ ४ ॥
'हनुमन्त' ऊपर वरुणजी, आवे होई विकराल ।
'रावण' रोसकरी घणो, जीत्यो ते ततकाल ॥ ५ ॥
जीत्यो वरुण विशेष थी, नृपने करे जुहार ।
थाप्यो थानक तेहने, अब नहीं खुनस लगार ॥ ६ ॥
'वरुण' घेर छे कन्यका, सत्यवती तसु नाम ।
परणावी हनुमन्तने, जाणी वर अभिराम ॥ ७ ॥
पुत्री शूर्पनखा तणी, अनंग कुसुमा नाम ।
हनुमन्तने विवाह सही, रावण जाणी सकाम ॥ ८ ॥
'पद्मसुरागा' पुत्रिका, वानर पतिने जोई ।
'नलराजा' हरिमालिनी, परणावी ए दोई ॥ ९ ॥
अनेरे विद्याधरे, पुत्री एक हजार ।
परवाणी हनुमन्तने, धर्मे सदा जयकार ॥ १० ॥
रावणना आदर लही, परणे नारी अमन्द ।
हनुमन्त आव्यो निज घरे, मातपिता आनन्द ॥ ११ ॥

तर्ज—अंजनारी

पाछली पहर रयणी तणो, धर्म चिन्ता करे अंजना देवतो ।
चारित्र लेवारे चित्त थयो, पवनजीरे पाव लागी ततखेवतो ॥
जन्म मरण दुःख दोहीला, जोग विजोग संसार कलेसतो ।
पवन कहै हनुमन्त नांनडो, संयम लेवजो वृद्धने वेसतो ॥स.४७॥
विलम्ब तो स्वामीजी जे करे, तेहने काल को हुवे विसवास तो ॥

विषयना सुख पूरा हुवा, संयम लेवातणी मन आसतो ॥
इम सुणी राय वैरागीयो, हनुमन्त ने कहै मत कर तूं अन्दोहतो ॥
माताना चरण झालीरया. मायतों ऊपरे है घणो मोहतो ॥स.४८॥
पुत्र समझावी संयम लीयो, अंजना राय खमावती सोयतो ।
छेड़ो छोडी करी संचर्या, इम तुम देवो लेवो नहीं कोयतो ॥
पवनजी मुनिव्रत आदर्या, तपकर पामसी शिवपुर ठामतो ।
अंजना गुरुणी पासे गई; वसन्त माला साथे थई तामतो ॥स. ४९॥
लोचकरी संयम लीयो कर्म तणी वेऊं तोडे छे कोड़तो ।
आभरण लेई सुत ऊदासीयो. सुग्रीव सुता समझावे कर जोडतो ॥
अंजना कीरीया करे घणी, मास २ तप पारणो धारतो ।
मांस ने लोही सूकी गयो, लीलडी चाम दीसे नसाजालतो । स. ।५०।
अनशन करीने अराधीया, वेहूं सती पोतीछे स्वर्ग मझारतो ।
चवनेहो मोक्ष सिधावसी, इम कहै शीयल ग्रंथे अधिकारतो ॥
एह कथारे इहांरही, आगल सांभलो सीता अधिकारतो ।
सत्यवतीरे सांची सती, जगत माताने रामनी नारतो ॥स. ॥५१॥

—: दोहा :—

अब मिथीला नगरी भली, हरिवंशी राजान ॥
'वासवकेतु' सुहामणो, 'विपुला' नारी सुजान ॥१२॥
तेज प्रतापे आगलो, जनक नामे जग जोय ॥
प्रजाने पालण भणी. जनक सारीखो होय ॥१३॥

॥ ढाल बारहवीं तर्ज—चौपाई ॥

पुरी 'अयोध्या' प्रगटे नाम, राज्य करे 'आदेश्वर' स्वाम ॥
'सुनन्दा' 'सुमङ्गला' वली, नारी निरूपम गुण आगली ॥ १ ॥
'सुमङ्गला' ना जाया नन्द. नवाणूं आनन्द ना कन्द ॥
'सुनन्दा' ए जायो एक, 'बाहुबल' तसु अविचल टेक ॥ २ ॥
सो पुत्रों में मोटो मही, पाटोधर 'भरतेसर' सही ॥
सवा क्रोड़ी नन्दन जेहने, 'सूर्यजशा' मुखियो तेहने ॥ ३ ॥
'सूर्यजशा' थी 'सूरजवंश', पृथिवी मांहै अधिक प्रशंस ।

पुरुष असंख्य हुवा तेटले 'मुनि सुव्रत' वारे जेटले ॥ ४ ॥
'विजय' राय मोटो राजान, 'हिमचूला' तसु नारी प्रधान ॥
जाया नन्दन नीका[1] दोय' 'वज्रबाहु' 'पुरन्दर' जोय ॥ ५ ॥
नगर 'अहिपुर[2]' छै अभिराम, 'हिमवाहन[3]' राजानूं नाम ॥
'चूड़ामणी' नामे घर नार, 'पुत्री' 'मनोरमा' है सुविचार ॥ ६ ॥
'वज्रबाहु सूं' कीधो विवाह, मनमां आणी अति उत्साह ॥
सुन्दरी लेई चाल्यो जाम, 'उदय सुन्दर' सालो ताम ॥ ७ ॥
पोंचावणने हुवो साथ, प्राती भणी लीधो नर नाथ ॥
वाटे 'गुण सागर' ऋषिराय, दीठा दौड़ी लाग्यो पाय ॥ ८ ॥
वारोवार प्रशंसा करे, भव-दुःखथी आतम उद्धरे ॥
दर्शन दीठो ऋषिराजनो, धन्य धन्य हो वासर[4] आजनो ॥ ९ ॥
हांसी मिसे सालो कहै एम, घणूं घणूं प्रशंसा केम ?
जाणूं लेसो संयम भार, कुँवर कहै अम एह विचार ॥ १० ॥
सालो भाखे ढोल है कांई, दिवस गयो फरी नावे प्राही[5] ॥
संयम साथे विमासण कीसी, म्हारे मन पिण एहीज वसी ॥११॥
कुंवर कहै ए सघली सही, वात विसेखे लीधी वही ॥
तूं मत चूके बोली वाच, सालो भाखे जाणों साच ॥ १२ ॥
संयम लेवा थयो होंसीयार, ऋषिने कहै तारो संसार ॥
सालो कहे कां साचो करो, विवाह तणा गीत मनमां धरो॥१३॥
कंकण नवि छुट्यो ताहरो, एह मनोरथ झूठो खरो ॥
तुजपियु पाखे[6] एसुन्दरी, मरीजासे दुःख भारे भरी ॥ १४ ॥
कुंवर कहै कुलवन्ती एह, नाह[7] सरिखो राखे नेह ॥
तोते क्यां न संयम आदरे, नारी नाह करणी अनुसरे ॥ १५ ॥
तूं तारी भगनी समजाव, तूं पण संयम मारगे आव ॥

१ ए हिन्दुस्थानी शब्द छे, सरस, उत्तम। २ नागपुर (जैन रामायण) ३ इभवाहन (जैन रामायणे)। ४ दिन। ५ एनो अर्थ "घणू करीने" एवो थाय छे, पण आ ठेकाणे मात्र अनुप्रास मेलववा अर्थेज वापर्यो जणाय छे (प्रायः प्राये)। ६ विना। ७ बुद्धि।

दुःख पूर्वक सांसारिक सुख, पाछू ही देखावे दुःख ॥ १६ ॥
नारी नाह ने सालो साथ, व्रत लीघां 'गुण सागर' हाथ ॥
अवरही कुंवर पणवीश, चरण ग्रहै तब वीश्वा वीश ॥ १७ ॥
हांसी थकी ऊपजीयो धर्म, धर्म थकी लेवे शिव शर्म ॥
सोही सगो जगमांहि भलो, धर्म करावे उतावलो ॥ १८ ॥
एह सुणी थी 'विजय' नरेश, वैरागे मन आणी विशेष ॥
'पुरन्दर' ने देई राज, राजाए सार्या निज काज ॥ १६ ॥
'पुरन्दर' सुत सोहामणो, जायो 'पृथिवी' राणी तणो ॥
'कीर्तिधर' ने पदवी दीध, राजाए संयम व्रत लीध ॥ २० ॥
'कीर्तिधर' नृप उदासीयो, संयम साथे मन वासीयो ॥
नकरे राज्य तणी सम्भाल, मंत्रीश्वर भाखे सुविशाल ॥ २१ ॥
जबघर ऊपजे नन्दन आय, तब तुम संयम लेवो राय ॥
भूप घणाए पाल्यू राज, तुम पगथी जाते छे आज ॥ २२ ॥
न्हानाही लोकोए सोच, तुम मन केम न करो आलोच ?॥
जेहने पाछल नहीं सन्तान, तेहना घरतो कह्या मसाण ॥ २३ ॥
एम सुणन्तां ढीलो पड्यो, विषय सुख ऊपर मन अड्यो ॥
'सहदेवी' नामे कामीनी, भाग्य वतीछे भली भामिनी ॥ २४ ॥
'सुकोशल' सुत ऊपन्यो जिसे, गुप्तपणेसो राख्यो तिसे ॥
जाण्यूं नृप थासे संयमी, राजऋद्धि रमणीने वमी ॥ २५ ॥
जाण्यो राजा भेद जेवार, सुतने सोंप्यो पृथिवी भार ॥
समतारस साथे चितधरी, राजेश्वरी तब संजम सीरी ॥ २६ ॥
यह बारमीं ढाल अनूप, संयम व्रत पाले भलो भूप ॥
'केश राज' ऋषिराज वखाण, करतां थाए जन्म प्रमाण ॥ २७ ॥

—ःदोहा सिन्धु रागेः—

भण्यो गुण्यो मति आगलो, करतो उग्र विहार ।
दिन केताने आंतरे, फरतो सो अणगार ॥ १ ॥

पुरि अयोध्या आवीयो, लेवा काजे आहार ।
मध्य दहाड़े तावडे, हिंडे घर घर बार ॥ २ ॥

अथाग्रे मारवाड़ी मंत्री शांतमूर्ति श्रीचौथमल्लजी म. सा. विनिर्मिता कीर्तिधर चौपाई (प्रक्षेप) ढाल पहीली (प्रक्षेप) तर्ज-गव मति करते—

असि आ उ सा युत ॐकारं, अलख अज प्रखण्ड अविकारं, अजया आपहिये धारं, कहूंकथा 'कीर्तिधर' *मुनिकी, राणी है 'सहदेवी' उनकी ॥ १ ॥ जुलम मति करते मेरी जान जुलम० जुलम से बहुत खराबी है, जुलम से शिव की ना भी है, पाते दुःख बात आवी है ॥ जुलम ॥ टेर ॥ 'अयोध्या' अवनी पति आछो, कीर्तिधर जाण्यो जग काचो, प्रवर्ज्या ले आयो पाछो, भूखा मुनि एक मासहूका, लेणकूं आये वहां टूका ॥ जुलम ॥ २ ॥

ढाल तेरहवीं तर्ज—देश सोरठ द्वारापुरी—

अई अई कर्म विटम्बना, राणी राजा लारोरे,
आप करे अविनय घणो, ए म्होटो अविचारोरे ॥ अई ॥ १ ॥
गोखे बेठी गोरड़ी, नगर निहालण हेतो रे,
फरतो ऋषि अवलोकीयो 'कडुआंणो[1] तसनेतोरे ॥ अई ॥ २ ॥
आप गयो मुजने तजी, लेई जासे ए पूतो रे,
वैरी विविधप्रकारनो, आयो करण कसूनो रे ॥ अई ॥ ३ ॥
पतिरे गयांथी पुत्रसूं, बांधी रहूंछू नेहो रे,
पुत्र गयां करस्यूं किस्यूं, मुजमन एह अन्देहो रे ॥ अई ॥ ४ ॥
अंत तपाणी आकरी, न रही शुद्धि लगारो रे,
पुत्रज व्हालो पतिथकी, ए जगनों व्यवहारो रे ॥ अई ॥ ५ ॥
अन्य सुलिंगी आकरा, आनी अडियां तामो रे ॥

ढाल प्रक्षेप तर्ज-गर्व मति करते

खिनाते राणी हलकारा, मोडेका करिये मुंह कारा, आये जहां

नोट—प्रक्षेप ढाल की अवशेष गाथायें ॥ गगाखे बेठी महाराणी, जेते मुनि देखे अन्न पानी, पुत्र के प्रेमे घबरानी, आगे मुज खाविन्द कं लेगा, पति ओपुत्र मूंडेगा ॥ जुलम ॥ ३ ॥ वात ए पुरजन सुन पाई, राणी के क्या दिल में आई, ऐसी क्यूं डूण्डी पिटवाई, राणी कूं सब जन धुरकारे, मुनिने क्यूं काढ्या वारे ॥ जुलम ॥ ८ ॥

* कीर्ति ध्वज पाठान्तरे ॥ १ क्रोधथी नेत्र राता थया ॥

चालो अनगारा, तेरे पर माजीसा डोडा, भागजा यहां से अब मोडा ॥ जुलम ॥ ४ ॥ फेर इस ग्रामे नहीं आना, आये तो हर-लेंगे प्राना, बोला मैं चवडे नहीं छांना ॥ हुकम नहीं रात रेणेका, हुकम तुज मार देने का ॥ जुलम ॥ ५ ॥ गई कर छोड़ां हो अब के, मुनिकहै परवाह नहीं हमके, मुनि तब निकरे यूं कहके ॥ करे मुनि बात याद अगली, स्वारथ की दुनियों है सगली ॥ जुलम ॥६॥ राग रु द्वेष से न्यारे, मुनि वो तिरे ओर तारे, सदा मुनि क्षम शम दम धारे ॥ मुनि चल वन मांही आये, तरुतल ध्यान ही ठाये ॥ जुलम ॥ ७ ॥

ढाल मूलगी

काढीयो नगरी बाहिरं, जोवा मिलीयो गामो रे ॥ अई ॥ ६ ॥
फिटकारो जण जण मुखे, राणी साथे रोसो रे ।
जोर न चाले कोई नो, पण आणे अफसोसो रे ॥ अई ॥ ७ ॥

ढाल प्रत्तेप तर्ज—गर्व मति कररे

धामाता सुनलो ए वातां, रानी क्यूं खोई है हाथां, संताये मुनिवर कू जातां, एसे कुन जग में हत्यारा, मारदे मुनिकूं निकारा, जुलम मतिं कररे ॥ ९ ॥

दोहा— रूठी मन भूठी नदा, कूटी काढ्या संत ।
ऊठी ए झूंठी नहीं, छूटी चाल्या संत ॥ १ ॥

ढाल मूलगी

धाव ज्यूं आवी रोवती, राजाजी ने पासेरे, कारण पूछ्यूं रायजी भाखे धाव उदासेरे ॥ अई ॥ ८ ॥ नात तुम्हारो देवजी, तपकरी दुर्बल कायेरे, भिक्षा लेवा कारणे, आयो थो उच्छायेरे ॥ अई ॥९॥

ढाल दूजी प्रत्तेप तर्ज—म्हारे हाथ में नवकर वाली

धामाता तब अरजी करवा, दौड़ गई दरवाररे, हाथ जोड़ नीचो कर लटको, इनविध करी पुकाररे ॥ १ ॥ महारानी निज नौकर मेली, जुल्म करायो आजरे, आहार लेनकूं आये मुनिवर " कीरत धज " महाराजरे ॥ टेर ॥

हलकारा कूं मेल रानीसा, मुनि कू दिया निकाररे, एक मास का मुनिवर भूखा, कीधो कर्म चण्डाररे ॥ महारानी ॥ २ ॥ धक्का दे मुनिकूं कढवाया, क्या लेता मुनिरायरे ॥ रात रेचन की आन दिराई एसी थांरी मायरे ॥ महारानी ॥ ३ ॥ जरा आपकू जाल सादि की, खबर पड़ी न लिगाररे, काम करयो खोटो महारानी, संताया अनगाररे ॥ महारानी ॥ ४ ॥ हाक फूटी है सब नगरी में, धुरकारा दे लोकरे, इण लखणां सू शिव किम मिलसी, दोरो है दिवलोकरे ॥ महारानी ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी

राणी सेवा साचवी. तेतो कहियन जायरे, पूर्वना परिचय थकी, ए मुज हैयू भरायरे ॥ अ. १० एम सुणन्ता वेगसूं, घाबरीयो भूपालोरे ॥

ढाल प्रक्षेप तर्ज गर्व मति कररे

जुल्म यह राजाजी सुणीया, सोच कर मस्तकने धुनीया, कहो कुन एसे हत पुनीया, उन्हीं को जूत मार लावो. कारागृह[1] मांही पधरावो ॥ जुल्म मति कररे ॥ १० ॥ रानीसा विजनस मुनि टाल्यो, हाय ओ मुनिवर क्यू शाल्यो, अरे ! उन मेरो उर बाल्यो लोक सब देवे है धुरियों, लगी मुज कारजे छुरियों ॥ जुल्म मति कररे ॥ ११ ॥ मुनि कूं कूटासी जालिम, उन्हीं की कर लूगो मालिम, भेजे तब पोलिस के आलिम, कारागृह जुल्मी को पकड़ी, डारे तब घाल गोडा लकडी ॥ जुल्म ॥ १२ ॥

ढाल मूलगी

वन्दन करवा ताततने, आय गयो तत्कालोरे ॥ अई. ॥ ११ ॥

ढाल प्रक्षेप तीजी तर्ज—नन्द षेण प्रति बुध्यो

घोड़े चढ राजा चाल्यो, वो रहे न किण को पाल्यो, नृप छडी असवारी हाल्यो, हो लाल १ ॥ जुल्म करयो रानी खोटो, सन्तायो मुनिवर म्होटो, इन वाते घर में टोटो हो लाल ॥ टेर ॥

---

१ केद ।

तरु तरे मुनिवर बैठा, हैं ज्ञान ध्यान में सेंठा, राजाजी ऊतरथा हैठा हो लाल, जु० ॥ ३ ॥ मुनिवर कूं करी सिलामी, मेरे शहर पधारो स्वामी, मैं अर्ज करूं शिरनामी हो लाल ॥ जु० ॥ ४ ॥ मेरी अर्ज मंजूरी कीजे, दुनियों ने दर्शण दीजे, थांरी दाय पडे ज्यूं कीजे हो लाल ॥ जुलम ॥ ५ ॥ तब बोल्या अन्तरजामी, मैं आस्यां अवसर पामी, म्हारे द्वेप नहीं शिव कामी हो लाल ॥ जुल्म० ॥ ६ ॥

ढाल मूलगी

पगे लागी ऊभो रह्यो, मांग्यो संयम भारोरे ।
जग में कोई केहनूं नहीं, स्वार्थीयोए संसारोरे ॥ अई. १२ ॥

ढाल प्रक्षेपक मूलगी—

मधुर ध्वनी मुनिवरजी बोल्या, जीव यह चतुर्गति डोल्या, स्वारथ का सगपन सहु भोल्या, मेरा अब कथन मान लेनी, अथिर यह जगत छोड़ देनी ॥ जुल्न० ॥ १३ ॥ देख रुज आंखे जल भरती मेरही मरणे वा मरती, अजीजां ईश्वर ने करती, बाकी वा सहदेवी रानी, लेने नहीं दिया आहार पानी ॥ जुल्म ॥ १४ ॥ जगत में जोरू का झगरा, कनक हेतु होते हैं रगरा, स्वपन का ख्याल जग सगरा, राज का भार छोर दीना, भार शिर संयम का लीना ॥ जुलम ॥ १५ ॥

ढाल चौथी प्रक्षेपक तर्ज—नवली चन्दनी हैक सजनी विन ऋतु वर्षे मेह—

राजाजी मुनिपै गया हैक सजनी, लोक मुखे या बात ॥ रानी सुन विलखी थई हैक सजनी. आमन दूमन घातक ॥१॥ निगुना नेहको होक, साजन अद्भुत कौतुक एह ॥ टेर ॥ दुःख पूरित दिन आगला हैक सजनो, विन सुन काढूं केम ॥ सुत कहनो मान्यो नहीं होक राजा, काम कर्यो विन फेम ॥ निगुना ॥ २ ॥ हरगिजते छोडे नहीं हैक साजन, कांमूं बनसी सुत ॥ कौन कुमोतसूं मारसी हैक सजनी, जद आसी पाछो पूतक ॥ निगुना ॥ ३ ॥

॥ ढाल–मूलगी ॥

करजोड़ीने वीनवे, देवी चित्रजमालारे,
सुत विन स्थिती किम चालसे. भाखो राय रसालारे ॥ अई ॥१३॥
गर्भ अछे उदर ताहरे, में तसु दीधो राजोरे,
अन्तराय कोई मति करो, सारण दीजो काजो रे ॥ अई ॥ १४ ॥
तात पासे थी समाचर्यो, चारित्र चोखो चायोरे,
वात सुणन्त मुंझ रही, तव सहदेवी मायो रे ॥ अई ॥ १५ ॥

॥ ढाल क्षेपक मूलगी ॥

रानीजी महिलों से फरके, ध्यान मन आरत ही धरके, सिंहनी वनमें हुई मरके, सिंहनी इधर उधर म्हाले, पशु और मिनख मार खाले ॥ जुलम ॥ १६ ॥

॥ ढाल मूलगी ॥

कांईक आर्तध्यान में. कांईक क्रोध परिणामोरे,
वनमें हुई वाघणी, गिरी गुहिर तम ठामोरे ॥ अई ॥ १६ ॥

॥ ढाल क्षेपक मूलगी ॥

मुनि कहे जुल्मी ऊधरियो, मंत्री तव हूंकारो भरियो, साच सहु पाछो संचरियो, वात यह सुणी राजवर्गी, जुल्म कर रानो सा मरगो ॥ जुलम ॥ १७ ॥ रानो के प्रेत कारज कीने, जुल्मी को किंचित छोड दीने, जगत में मंत्री जस लीने, पांगुरया मुनिवर महियल में, आवे नहीं कर्मठुके छल में ॥ जुलम ॥ १८ ॥

॥ ढाल मूलगी ॥

'कीर्तिधर' ने 'सुकोशलो', बाप पुत्र ए दोई रे,
चोखूं चारित्र पालतां, विचरे मुनिवर सोई रे ॥ अई ॥ १७ ॥
गिरी गुफा में अनुसरी, करता तप उपवासोरे,
समता रूपे विचरता, रह्या ऋषि चौमासोरे ॥ अई ॥ १८ ॥

॥ ढाल पांचवीं क्षेपक तर्ज–चंदा थारी चांदनी सी रात रे ॥

मुनिवर विचरत महियल में मतिवन्तरे, कांई आयारे गढ चित्तौडना बाग में ॥ उतरया मुनिवर निर्वद्य स्थानक तन्तरे, कांई लेलीरेक

आज्ञा मालागारनी ॥१॥ इतरे महिनो श्रावण को आवन्तरे, कांई जलऋतुरेक देखी जग सुख पावीयो, दो कोश की अलगी छे चित्तोड़रे, कांई विचमैंरेक डर वाघन को सुनाावियो ॥ २ ॥

॥ ढाल मूलगी ॥

कार्तिक पूनम कारणे, नगरमणी आवन्तारे,
एटले आवी वाघणी, ऋषि सामे धावन्तारे ॥ अई ॥ १९ ॥

॥ ढाल क्षेपक पांचवी ॥

वहिरन खातिर जावे मुनि चित्तोड़रे, कांई विचमें रेक मिलगी इक दिन वाघनी. होले होले चाले चेलो लाररे, कांई आतीरेक अलगी देखी सिंघनी ॥ ४ ॥ नीची निजरां घाली गुरुजी जायरे, कांई उनकीरेक खबरां उनको कोयनी ॥ धीमें धीमें हेलो चेलो पाड़रे, कांई उभारेक राख्या निज गुरु जोयनी ॥ ५ ॥

॥ ढाल क्षेपक मूलगी ॥

देखी इत वाघन कूं आती, क्रोधसे आंखेंही राती, हातल दे धरणी धूजाती, गुरु तब चेलाकूं बोले. नाठजा पर्वत के ओले।जु।१९

॥ ढाल मूलगी ॥

तातकहै सुत सांभलो, एह उपद्रव आयो रे,
होवादो मुज आगले, सुत बोलन्त सुहायो रे ॥ अई ॥ २० ॥

॥ ढाल क्षेपक मूलगी ॥

काम कांई क्या इत डरने का, कामए मुझकूं करणे का, मुझे नहीं सोच मरने का, लारे नहीं खुणे वेसण वाली, लहूं शिव आतम उजवाली ॥ जुलम ॥ २० ॥

ढाल छट्ठी क्षेपक तर्ज–ख्यालरी (गुरुजी थांरी वाणी प्यारीजी)

वाघन से मैं नहीं डरूंसरे, रविवंशी रजपूत, मुजे अगारी जानदोस मैं, देवूं मुगतरासूत ॥१॥ चेलाजी नहीं आगे घरवालीजी, आगे थे मतिजावो देखो आगे ऊभी पण१मुखवालीजी ॥ टेर ॥ कोमलतन वालो लघुसरे, तूं मुज जीवन प्रान, सुत चेलो वाल्हो घणोस तूं,

१ सिंहनी ।

किम कहूं आगीवान ॥ २ ॥ चेलाजी हूं जावूं मति वरजोजी, दाय पड़े ज्यूं कीजो लारे थेंतोथोंरे रति मति डरजोजी ॥ टेर ॥ हरगिज ते नहीं होंनरे सरे सुनो गरिब निवाज, आप अन्दाता किम भरोसरे, म्हारे बैठां आज ॥ ३ ॥ महाराजा में लेसूं शिव-पुरीजी, जाने दो अबी मने आगे मेरी करो अरज मंजूरीजी ॥टेर॥

ढाल क्षेपक छठी

उपधी मेली कीरत मुनिके तीररे, कांई आपजरे पधारया सिहनी सामने ॥ संलेखन कर कियो संथारो साररे, कांई मनमें रेक जाप जपे जिननामने ॥ ६ ॥

ढाल मूलगी

पाछा पग न पाठवूं, क्षत्रीनो ए धर्मोरे, सही उपद्रव ए आजए, साधसूं शिव शर्मोरे ॥ अ० २१ ॥ उहांही ऊभो रह्यो, आराधन विधि साध्योरे, ममता मूकी देहनी, आतम गुण आराध्योरे ।अ.२२।

ढाल छठी क्षेपक

आती वाघन छाती में दी मचकायरे, कांई हाथलरीक मारे मुनि इन पापनी, सररररररर रुद्र खाल चल जायरे, कांई न कह्योरे क अररर मुखथी आपनी ॥ ७ ॥

ढाल मूलगी

विद्युत्[1]पाततणीपरे, वाघणीतो विकरालोरे, आवी पड़ी सुत ऊपरे धरणी पड्यो ऋषि बालोरे ॥ अ० २३ ॥ विदारे नख अंकुशे, वाल्हा तनुनी[2] चामोरे, तरसी[3] ए वली अति तरसथी, पीवे लोही तामोरे ॥ अ० २४ ॥ तोड़ी तोड़ी तन तणूं, खाए तव सा मांसोरे, बिलूरी नोख्योघणूं, कीधो अधिक प्रयासोरे, ॥ अ० २५ ॥ अमृत ने कवले[4] करी, पोखीथी जे देहोरे, वैर विनाई वाघणी, तोड़ी

क्षेपक मूलगी ढाल की अवशेष गाथा ॥ पूज्य श्री "जयमल्ल" गच्छजीपै, साम्प्रत मुनि सोहै अवनीपै, मेरे गुरु "नथमलजी" दीपे, " चौथमल्ल " "सोजत" मन साचे, रागयुत रामचरित्र वांचे ॥ जुलम मति करो ॥२५॥

१ वीजली नूं पडवूं । २ शरीरनी । ३ तरस वूं एटले वैर लेवाने टांपी रहवूं अने तरस एटले आतुरता । ४ कोलिये ।

नोंखी तेहोरे ॥ अ० २६ ॥ चढ़ते परिणामे करी, पाम्यो केवल[1] नाणोरे, कुशलपणेरे सुकोशले, साध्योपद, निरवाणोरे[2] ॥अ. २७॥

—ढाल क्षेपक मूलगी—

ध्यानतो शुक्लही ध्याया, मुनि तो अमरापुर पाया, लारे हिव पड़ी रही काया ॥ खावे तन वाघन तसु अटकी, मुनि तब वाघन ने हटकी ॥ जुलम ॥ २१ ॥ पुत्र क्यूं मारयो हित्यारी, गति क्या होसी हिव थारी, दशन द्युति सुन्दर नीहारी. सुजाती स्मरनहीं धारयो, अररर मैं नन्दन क्यों मारयो ॥ जुलम ॥ २२ ॥ आतम की निन्दा ही करती, आंखों से आंसू ही भरती, अबे वा परभव से डरती । बाघन तब मुनिवर पे आई, 'सुकोशल' मार शर्माई ॥ जुलम ॥ २३ ॥ सिंहनी संथारो ठावे, कल्प तब आठ में जावे, 'कीर्ति ध्वज' मुनिवर शिव पावे, नमो नमो ऐसे मुनिवर कूं, 'सुकोशल' 'कीरत' नरवर कूं ॥ जुलम ॥ २४ ॥

ढाल मूलगी

'कीर्तिधर' करणी बले, कर्म तणो क्षय कीधोरे ॥
मोक्षे पहूंच्यो केवली, नरभवनो फल लीधो रे ॥ अई० ॥ २८ ॥
तेरसमीए ढालमें, जेरस पोख्यो तेणे रे ।
'केशराज' रस एहवो, पोषाय कहो केणेरे ॥ अई० ॥ २९ ॥

दोहा (गोडी रागे)

'चित्रसुमाला' राणीए, जायो सुन्दर नन्द ।
'हिरण्यगर्भ' नामेभलो, शत्रु रकन्द निकंद ॥ १ ॥
'हिरण्य गर्भ घरे गोरड़ो, 'मृगावती' अभिराम ॥
'नघूक'[3] नामे सुत जाइयो, दुःखितजन विश्राम ॥ २ ॥

ढाल चवदवीं तर्ज-माई धन्य दिवस (सुखकारण भवियण)

'हिरण्यगर्भ'नृप माथे धवलो केश,देखी आलोचे[4]ए जमदूत विशेष।१ तत्क्षणते राजा ' नघूक ' कुंवरने राज, आपी आपणपे सारे आतम

---

१ केवल ज्ञान । २ मोक्ष । ३ नहूष (जैन रामायण) । ४ आलोचवू एटले विचारवू ।

काज ॥ २ ॥ राजा घरे राणी 'सिंहिका' 'अभिधान', सा सबविधी जाणे शूरपणे सुविधान ॥ ३ ॥ उत्तर पंथना नृप, जीतण चाल्यो गय, दक्षिण पन्थना नृप अव्या 'अयोध्या' आय ॥ ४ ॥

(लेखक) ढाल चेपक तर्ज-हिंडे हालोरे ।

राणी शूरीरे २ आ शीलवती गुण हिम्मत पूरीरे ॥ टेर ॥
नृप राणी सिंहिका जाण्यो, फिर कोई दुस्मन आयारे ।
अब क्या करणी बात नाथतो, कटक सिधायारे ॥ राणी ॥ १ ॥
वचन वदे राणी दास्योंको, मर्दी वेस सब करलोरे ॥
वक्तर टोप पहर लो हाथ बाण, बंदूकों भरलोरे ॥ राणी ॥ २ ॥

मुनिश्री रूपचन्द्रजी म० कृत ढाल चेपक तर्ज-हां सगीजीने पेड़ा भावे

हां अबे सुभटां ! झट चालो, ज्यूं त्यूं कर दुस्मन दल टालो,
भालो झालो हाथ अबे पाछो मत भालोरे ॥ अबे ॥ १ ॥
राणी निज परिकर कर भेली, जोध झूंझार बनी अलबेली,
ताजा तूरी मंगाय जिणीपर, झीण मण्डालोरे ॥ अबे ॥ २ ॥
त्रिय सैन्या लड़वाने ताती, रीस लाय करआंखें राती ॥
देख वीरता कायर नर कहे आघा हालोरे ॥ अबे ॥ ३ ॥
हुवो युद्ध परस्पर भारी, हार्यो नृपने जीती नारी ॥
शार्दूल शिष्य मुनि रूप कहे जेतारण है वरसालोरे ॥ अबे ॥ ४ ॥

—ढाल मूलगी—

राणीए जीत्या करी सबल संग्राम,
सिंहणी के आगे गज क्यूं न तजे ठाम ॥ ५ ॥
नृप जीती आयो निसुणी एहउदन्त,
गाढो दुःख पायो कामिनी ऊपर कन्त ॥ ६ ॥
एहछे व्यभिचारणी, नहींतर एहवूं काम,
नकरे कोई बीजी, नारी धरावी नाम ॥ ७ ॥
रहियो मन खंचो, न वलें वाल्यो केम,
रुडु जग करतां, थाए भूंडू एम ॥ ८ ॥
राजाने डीले ऊपजीयो ज्वरदाह,

औषध नविमाने, आणे अस्ती[१] अगाह[२] ॥ ९ ॥
सा दोष उतारण राजा आगे राणी,
सहुने सांभलतां, प्रगटे अवसर जाणी ॥ १० ॥
मैं निज पति टाली. अवरन वंछयो कोई,
तो शासनदेवी, सानिद्ध करजो सोई ॥ ११ ॥
एम कहती राणी फरस्यूं राजा अङ्ग,
हरिवाहन[३] आयां भाजी जाय भुजंग ॥ १२ ॥
तेम वेदना नाठी दीठी देह निरोग,
राणीसूं राच्यो पंचेन्द्री सुख भोग ॥ १३ ॥
राणी उदरे ऊपनो, पुत्र भलो 'सौदास',
पट थापी आपे संजमथूं सुखवास ॥ १४ ॥
'सौदास' नरेश्वर अट्टाइक उच्छाह,
मंडावे गावे श्रीजिन गुण अगाह ॥ १५ ॥
तब जीवदयानो, पडहो राय वजावे,
मन्त्रीश्वर बोले एलो मुजने सुहावे ॥ १६ ॥
तब पूर्वज पुरुषे मांस न किणही खायो,
तुम ही तिम चालो जो चाहो जश पायो ॥ १७ ॥
दाक्षिण्यथी मानी. पण मन में न सुहाणी.
जे कुव्यसन पडियों, तेतो पापी प्राणी ॥ १८ ॥
तब सूद[४] संघाते, गुप्तपणे कहे राय,
क्षण एकहि में तो मांस पखेन रहाय ॥ १९ ॥
तूं हेतु म्हारो, तो मुज ने दीए मांस,
सोध्यो नविपावे दीठो करिय प्रयास ॥ २० ॥
एक बालक मूवो, नृपने आण खवावे,
माणसने मांसे स्वाद घणेरो आवे ॥ २१ ॥
गीधो[५] तब राजा, नित्ये एक मरावे,

१ दुःख । २ अगाध घणूँ । ३ गरुड़ । ४ रसोइयो । ५ गीधो (गृद्ध) मांसनो लोलूपी राजा नित्य एक बालक मरावतो ।

चर्यों नचिमाने लोक असाता पावे ॥ २२ ॥

मुनि श्रीरूपचंदजी म० कृत. ढाल क्षेपक तर्ज–तावड़ो धीमोसो पड़जा

सचिव ! म्हांरी अर्जी सुन लेना, रायकरे अन्याय अनूठो आखिर सुख है ना ॥ टेर ॥

नगर निवासी भये उदासी भरकर जल नैना, भलां हां भर० ।
मत कोई मारो जीव राज्य में, यह था नृप कहना ॥ सचिव १ ॥
मदिरा मांसतणा जे रसिया,* लुच्चा लागा कान, राजारे लुच्चा ।
बालक मांस खावे नित्य राजा, तोड़ी सघली आन ॥सचिव २॥
वल्लभ बालक मारण सारू, किण विध सूंप्यो जाय, राजाने किण ।
आगे अनरथ हुवो न एड़ो, करे सो खत्ता खाय ॥ सचिव ३ ॥
थे समजादो भूप भणी अब,तजदे खोटी चाल ।
'रूपमुनि' कहै रैयत बदल्यां, कांई करे भूपाल ॥ सचिव ४ ॥

मंत्रीश्वर म्होटो, राज्य तणो रखवालो,
कही कही समजावे, राजा नचिदीये टालो ॥ २३ ॥
तब बांधी काठो, काढी दीधो राजा,
थापक उत्थापक, लोक सदा ही ताजा ॥ २४ ॥
' सौदास ' तणांसुत, न्यायवन्त नरेश,
'सिंहरथ' स्थिर थाप्यो, सुखदाई सुविशेष ॥ २५ ॥
भूपति अति भमतो. दक्षिण दिस चलि आवे,
देखी इक मुनिवर, गाढी साता पावे ॥ २६ ॥
पूछे तब धर्मज, मुनिवर भाखे वारू,
परहरीये मांसज, अरु परिहरीये दारू ॥ २७ ॥
ओ बीजी नरके, ओत्रीजे पहूंचावे,
एम सुणतां मन में, राजा डर अति पावे ॥ २८ ॥
पच्चक्खाण करे नृप, मांस अने मधुकेरो,
तब श्रावक हुवो जाणे धर्म भलेरो ॥ २९ ॥

यतः * रोल विगाड़े राजने, मोल विगाड़े माल ॥ धीरे २ सरदाररी, चुगल विगाड़े चाल ॥ १ ॥

' महापुर ' चलि आयो, शुभ कर्म नो प्रेर्यो,
सुभटे परधाने, आवीने नृपवेर्यो ॥ ३० ॥
तव दिव्यसुं पंचे, 'महानगर' नो राजा,
सहु लोकां मान्यो, वाध्या अधिक दिवाजा ॥ ३१ ॥
तव पुरी 'अयोध्या' दूत मोकलीयो एक,
सुत सेवा[1] आवो, के तुम सहावो टेक ॥ ३२ ॥
सुतवात न माने, राजा दलवल साजे,
सुत पण सामहियो, सन्मुख आय विराजे ॥ ३३ ॥
तव तात पूत दोय, लड़िया विविध प्रकारे,
हार्यो तव नन्दन, जीत्यो तात ते वारे ॥ ३४ ॥
खिळखाणो देखी, राजा आंत तपाणी,
खोळे वेसाड़्यो, बालक आपणो जाणी ॥ ३५ ॥
दीधू दोनों राज्य, राजा संयम धारी,
विचरे महि मण्डळ, षट्कायों हितकारी ॥ ३६ ॥
'सिंहरथ' राजानो, पुत्र श्री 'ब्रह्मरथ',
'चतुर्मुख' राजा, 'हेमरथ' 'सत्यरथ' ॥ ३७ ॥
'उदय' 'पृथु' राजा, 'वारीरथ' 'शरीरथ',
'आदित्यरथ' राजा, 'मान्धाता' समरथ ॥ ३८ ॥
नृप 'वीरसेन' जी, 'प्रत्युमन्यु' मानीतो,
नृप 'पद्मबंधुजी', 'रविमन्यु' जाणीतो ॥ ३९ ॥
सवही मनभावे, 'वसन्त' तिलक नरेश,
'कुवेरदत्तजी' नृप 'कुन्थू' 'शरभ' विशेस ॥ ४० ॥
'द्विरद' नृप नीको, 'सिंहदर्शन' दिलपाक,
नृप 'हरिण्यकशुपुजी' जेहनी जगमे धाक ॥ ४१ ॥
'पुंजस्थल' 'प्रौढो' 'कुकुत्स्थ' ने 'रघुराय',
ए सूरजवंशी राजा सहु सुखदाय ॥ ४२ ॥

१ ताबामां आवो ।

कोई मोक्ष पधारया, स्वर्ग पधारया कोई,
ए वंश वडेरो, वीश्व वदीतो जोई ॥ ४३ ॥
'अन्यरण्य' नरेसर, अयोध्यानूं राज,
करतो अतिवर्त्त, सारे प्रजाना काज ॥ ४४ ॥
तेहना दो नन्दन, 'अनन्तरथ' अधिकाय,
'दशरथ' दिलदरियो, शोभा कहियन जाय ॥ ४५ ॥
'अन्यरण्य' नरेसर, खेचरसूं मित्राई,
साथे व्रत लेस्यां, आपण एह सगाई ॥ ४६ ॥
सो 'सहस्रकिरण'[1] नृप, 'रावण' साथे लड़ाई,
लेईने हार्यों तब व्रत लीधूं धाई ॥ ४७ ॥
'अन्यरण्य' नरेशर, 'अनन्तरथ' सुतसाथ,
संजमव्रत लीधूं म्होटा मुनिवर हाथ ॥ ४८ ॥
'विद्याधर' साथे, पाली बोली वाच,
सो मुक्ती सिधाव्या, जगनें म्होटो साच ॥ ४९ ॥
'चउदशमी' भाखी, ढाल रसाल अपार,
'केशराज' वखाणे, साधु सदा सुखकार ॥ ५० ॥

दोहा (परजिया रागे)

मास एकनो थापीयो, राजा 'दशरथ' राज ॥
चन्द्रकला जिम दिन दिने, वाधे दलबल साज ॥ १ ॥
शस्त्र शास्त्र आदे करी, कला सकलनो जाण ।
विनय विवेक विचार में, पण्डित पणूं प्रमाण ॥ २ ॥
यौवननी वय पामीयो, शूरवीर झूंझार ।
दाता भोक्ता अरु गुणी, वसुधा जश विस्तार ॥ ३ ॥

॥ ढाल पनरहवीं तर्ज–पांडूरी पोट लीया आ कोणरे ॥

राजा 'दशरथ' दीपतोरे, दिन दिन तेज प्रतापेरे ।
वंशधणी में एहनोरे, दीसे आपो आपे रे ॥ राजा ॥ १ ॥

१ सहस्रांशु इति पाठान्तरे।

'दर्भ[1] स्थलपुर' जाणीयेरे, 'सुकोशल' तिहां रायोरे ।
राणी नामे 'अमृतप्रभारे, राजाने सुख दायोरे ॥ राजा ॥ २ ॥
पुत्रीवर 'अपराजीताजी[2]', ईन्द्राणो अवतारोरे ।
व्याहै[3] 'दशरथ' रायनेरे. ओछव करिया अपारोरे ॥ ३ ॥
'सुशीला' त्रियनो पतीरे, मित्रसुभू[4]' भूपालोरे ।
'सुमित्रा' पुत्री परणावेरे, 'दशरथ' ने सुविशालोरे ॥ राजा ४ ॥
सुप्रभा अति देहनीरे, 'सुप्रभा' तस नामोरे ।
राजा रंगे परणावेरे, 'दशरथ' ने अभिरामोरे ॥ राजा ॥ ५ ॥
पंचेन्द्रिय सुख भोगवेरे, पूर्व पुण्य प्रसादोरे ।
पूरब पुरुष उजालीयारे, विस्तरीया जश वादोरे ॥ राजा ॥ ६ ॥
एक दिवस लङ्का धणोरे, बैठो परषदा मांहेरे ।
निमित्तियाने पूछोयूरे. निज आयुबल प्राहेरे ॥ राजा ॥ ७ ॥

॥ ढाल च्षेपक तर्ज–गर्व मति कररे ॥

एक दिन 'रावण महाराजा', सोले सहश्र सामन्त ही ताजा, वाजता निशदिन ही बाजा, सभा की देख खूब त्यारी, वण्यो दिल मांही अहंकारी ॥ सत्य व्रत पालो ॥ २ ॥ 'इन्द्रजीत' मेघ-वाहन' छाजे, पुत्र पौत्रादो अति गाजे, ऋद्धि सूं सुरपति पिण लाजे, पूण्यथी फते कीया काजा. बाजे नित सार्ध लक्ष बाजा ॥ सत्यव्रत पालो ॥ ३ ॥ 'विभीषण' कुम्भकर्ण भाई, मन्दोदरो राणी सुखदाई. चौपन सहस्र शास्त्र में गाई. जब्बरहै पूर्व पूण्याई, आंण है तीन खण्ड मांही ॥ सत्यव्रत पालो ॥ ४ ॥

स्वामीजी श्रीरामचन्दजी महाराज कृत.

ढाल च्षेपक तर्ज–तुम चलो सखी कुछ जेज न करीये ।

सहश्र विद्यात्रीखण्ड को भुक्ता, "रावण" मन में गरभायो ।
सुर नर पाय परे सब मेरे. कुणमुज से सांमे थायो ॥ स॰ १ ॥
सूरदेव तो तपे रसोई. चन्द्र आप दीपक थायो ।
वेमाता मुझ दले कोद्रवा, यम राजा पाणी लायो ॥ स० २ ॥

---

१ कुशस्थल, २ कौशल्या, ३ परणावे, ४ स्वबंधु तिलक ।

नवग्रह खाट तले नित रहते, दुर्गा आरती उत्तरायो।
पवनदेव नित महिल बूहारे, पार नहीं कोई पायो॥ स०॥ ३॥
मो सरिसो तो विरलो होगो. नाम थकी जग थररायो।
कुण मुज आज अड़े हुय सामो, किणरी मा अजमो खायो॥स०४॥
अब मुज मनमें ऐसी आवे, वार सदा मुज एरेसी।
केवलज्ञानी वातन छानी, पिण नैमित्तक केवे कीसी॥ स०॥५॥
'रावण' के मन ऐसी भासी, नैमित्तक तब बुलवायो।
'रामचन्द्र' कहै कोई गर्वन कीजो, गर्वन कोई ठहरायो॥स०॥६॥

॥ ढाल क्षेपक मूलगी तर्ज-गर्व मति कररे॥

हुवो नहीं होवेगा ऐसा, मुझसे झंग करे जैसा, सुरासुर सेवे हमेसां सुनकर सभा सकल बोले. नहीं जगमें प्रभुके तोले॥सत्यव्रत पालो॥ ५॥ तिहां इक नैमित्तिक बैठो, ज्ञान को जो रहै सेंठो, वचन यह सुनियो है धेठो॥ मुख से वचन नहीं भाखे, देख यह रीत भूप दाखे॥ सत्यव्रत०॥ ६॥ पंडितजी! क्यों न वचन बोलो, तुम्हारा ज्ञान ही तोलो, हीयाका भरम सभी खोलो॥ है कोई जगत बीच ऐसा, क मुझ को मार लेवे जैसा॥ सत्यव्रत॥ ७॥ विबुध कहै सुणीये महाराजा, गर्व क्या करीये दिल आजा, आज दिन पुण्य है ताजा, जिस दिन आयुखा आवे, दुनि सब यम घर कूं जावे॥ सत्य व्रत पालो०॥ ८॥

नं० ढाल क्षेपक तर्ज-चौकरी-स्वामी श्री नथमल्लजी म० कृत-

अहो नरवरजी, वचन विचारीने निजमुखसूं बोलीये॥
सुनो हितधरजी, वात ज्ञान की पूछो तो हिव खोलीये॥ टेर॥
हुवा अनन्त बलि अरिहन्त सारा, पिण आयु कर्म नहीं टारा॥
हुवा प्रभुजी शिवपुरना प्यारा॥ अहो नरवरजी॥ २॥
खट् खण्ड में आज्ञा विस्तारे, सुरसहसगमे सेवा सारे॥
पिण आयु कर्म आगे हारे॥ अहो नरवरजी॥ २॥
सुर इन्द्रादिक दीपे भारी, नव नव विध भोगतणी त्यारी॥

सुखमाने अमर पदवीधारी, पिण एक दिवस परभव त्यारी ॥३॥
जेजे जोध जिके बलिया, पिण काल आगे सहुको कलिया ॥
इण राव रंक सगला छलिया ॥ अहो नरवरजी ॥ ४ ॥
इण कारण प्रभुने आखूं छूं, अन्तर कपट न राखूं छूं ॥
जिम ज्ञानमें तिमही दाखूं छूं ॥ अहो नवरवरजी ॥ ५ ॥

॥ ढाल चेपक मूलगी ॥

'अयोध्या' नगरी है जहारी, राय तिहां 'दसरथ' सुखकारी. 'कौशल्या' 'सुमित्रा' नारी ॥ कूखतसु उतपत धारेगा, भूपत! सो तुझ मारेगा ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ९ ॥ 'जानकी' स्वयम्बर त्यारी, सारङ्ग वो धनुप है भारी, विद्याधर मानकूं मारी ॥ युगल ही धनुष चढावेगा ॥ भूपत ! सो तुझ मारेगा ॥ सत्य० ॥१०॥ 'वज्रकीर्ण' राजा सोहावे, 'सिंहोदर' पास फत्ते पावे. भर्त का संकट मिटावावे ॥ दण्डकी वन में आवेगा, क भूपत ! सो तुझ मारेगा ॥ सत्य० ॥ ११ ॥ 'संवुक' विद्या ही साधे, चन्द्रहास्य खडग आराधे, लिछमन कूं जिस दिन ही लाधे ॥ उसीका स्कन्ध विदारेगा, क नरपत ! सो तुझ मारेगा ॥सत्य०॥१२॥ 'दुःखर' 'खर' 'तिखर' ही भाई, विद्याधर चउदसहश्र घाई, विजय निज भुजते उपजाई, 'विराध' कूं राज दिरावेगा ॥ क नरपत ! सो तुज मारेगा ॥ सत्य० ॥ १३ ॥ 'सुग्रीव' को न्यायही करसी, विविध विध भूपत सूं लग्सी, अड़े सो जमगृह कूं वग्सी, खण्ड त्रय आण मनावेगा ॥ क नरपत ! सो तुज मारेगा ॥सत्य०॥१४॥ इसी में शङ्का मति आणो, 'राम' अरु 'जानकी' जाणो, 'जनक' की पुत्री गुण खांणो ॥ 'लिछमन' के हाथ है मरणो, नहीं है हरिहरको शरणो ॥ सत्य० ॥ १५ ॥ वात सुन सभा सर्व शङ्की, विवुध की वाणी है वङ्की, केवली वचन निःसंकी ! भूप कहै करणो अव कांई, विवुध कहै टले नहीं आई ॥ सत्य० ॥१६॥ राय कहै भावी बल टालो, ऐसा कोई उपाय नीकालो, हुवे जिम

जगमें उजवालो ॥ विबुध कहै टले नहीं आई, जचीसो प्रभुने दरसाई ॥ सत्य० ॥ १७ ॥ 'रत्नसेन' पुत्र आनन्दा, 'रत्नदत्त' पुनिम के चंदा, 'चन्द्रावती' व्याव सुखकन्दा, लगनदिन सत्तरमो जाणो, टलेतो वांछित फल पाणो ॥ सत्य० ॥ १८ ॥ राय कहै नाम ठाम दाखो, उन्हींकी उतपत सहु भाखो, वात यह दिलमां मत राखो ॥ तसल्ली सब के दिल आवे, मेरा जो मरणा टलजावे ॥ सत्य० ॥ १९ ॥

(स्वामी श्री नथमलजी म० विरचितम्) अथ रत्नदत्त व्याख्यानकं कथ्यते
(क्षेपक मिदंच)
॥ ढाल पहली तर्ज-परभव की खरची लेलो ॥

विबुध कहै सुणजो समाचार. टरे नहीं कोई होवनहार ॥ टेर ॥
वारु विशाल नगर अति वारु, 'रत्नसेन' नृप अधिक उदार ।बि०१।
प्रीतवती उर नन्दन ऊपज्यो, 'रत्नदत्त' कुंवर सिरदार ॥विबुध॥२॥
विद्यापढ यौवन वय पायो, आयो इक दिन सभा मजार॥विबुध॥३॥
देख आकृति सब जन मोह्या. नृप कहै शादश जोवो नार । बि०॥४॥
'मतिसार' मंत्री तब चाल्यो, चित्रपटले बहु परीवार ॥ विबुध ॥५॥
देश प्रदेश विदेश भम्यो अति, नहीं दीठी कुंवर उनिहार ॥बि०॥६॥
गङ्गा तट इक सरवर दीठो, मीठो अम्बू वृक्ष अपार ॥ विबुध ॥७॥
डेरो दीधो भोजन कीधो, जल भरिवा अपच्छर उनिहार ॥बि०॥८॥
कन्या दीठी लागे मीठी, आडो फिरियो आय तिवार ॥ बि० ॥९॥
सा भाखे कारण मुज दाखो, आखो नाम गाम नृप सार॥बि०॥१०॥
सा कहै 'चन्द्रस्थल' पुरजाणो, 'चन्द्रसेन्य' नृप सौम्य दीदार ।११।
पांचसयां पदमण अति सोहै, 'चन्द्रलेखा' नामे पटनार बि०।१२।
रूपे रूड़ी सोवन चूड़ी, चन्द्रावती तस उर अवतार ।विबुध १३।
ना ईन्द्राणी ना अप्सरा है, तसु गुणको नवि पावे पार ।विबुध१४।
तेहनी दासी छूं उपवासी, ए जलसा पीवे सुखकार ।विबुध १५।
जो तुम आखी सोमैं भाखी, सांभल मंत्री हुवो हूंसीयार। विबुध१६।

दोहा—कारज सरसी माहरो, इणमें मीन न मेख ।
चाली आयो उतावलो, नृप भेटण सुविशेष ॥१॥
अति आदर अवनीपती, द्ये मन्त्रीने ताम ।
कन्या सज शृंगार अति, मेली मां अभिराम ॥२॥
अवनीपति के अङ्क में, बैठी कन्या सोय ।
इण सदृश जो वर मिले, तो मुज वंछित होय ॥३॥

ढाल दूजी तर्ज-प्रभुजीने गावो रङ्गसं (महाराजाजी हथणापुर मति जावजो)

मन्त्री भाखेरे, किन कारन इहां आवीया, मंत्री० निवसो कुण से देश, राजिन्द पूछेरे वात कहो मुज मांडने ॥ टेर ॥ मंत्री० देश देखण ने नीसरयो, मंत्री० पुर २ भम्यो अशेस ॥ रा० ॥ १ ॥ इत चल आयारे, चरण भेटीया आपगा मन्त्री० आज सफल अवतार हुवो म्हारोरे अवनीपति तुम सांभलो ॥ टेर ॥ इलपति आखेरे, 'इचरज' वातको दाखवो. मन्त्री० इचरज नो नविपार ॥ मंत्री ॥ २ ॥ भूपति पभणेरे, पुरुष रूप कोई अभिनवो. किन ही देख्यो रे, कन्या वर मुज चाय. मन्त्री० रत्नाकीर्ण वसुंधरा. मन्त्री० कहतां पार न पाय ॥ मंत्री० ॥ ३ ॥ मन्त्री भाखेरे, पिण अद्भुत इक दाखवूं. सुणजो सारारे, रत्नसेन सुत जान ॥ मोहनगारारे सुरगुरु सम विद्याविषे, सब जन प्यारारे, शूरवीर सुविधान ॥ मंत्री ॥ ४ ॥ रत्नदत्तरे, रूपे काम कुंवर जिसो, प्रितवती नन्दनरे, दाता मोहन वेल ॥ मन्त्री० एक जीभथी किम कहूं, मंत्री चित्रनो जोवो खेल ॥ मंत्री० ॥ ५ ॥ चित्र अति नीकोरे, देख कन्या निश्चय कीयो, ओ नर तीकोरे, इण भव यो भरतार मो मन वसी योरे, नृप कहै फिर मैं पूछसूं, राजा भाखेरे, हिव जावो इन वार ॥ मंत्री० ॥ ६ ॥ पितुपय लागीरे, कन्या गई निज महल में, प्रीती जागीरे, चित्त में कुंवर ध्यान, मं० खान पान निन्द्रा तजी, मं० विरह जग्यो असमान ॥ मं० ॥ ७ ॥ सखि पूछेरे, कवण ध्यान छे ताहरो, स० तिलकावती तिणवार स० वात कहो सब

मांडने ॥ टेर ॥ सखि० माकिनी ग्राहित नी परे, स० के कोई नसामजार, स० ॥ ८ ॥ कन्या भाखेरे, ना कोई साकिनी मुज-ग्रही, कन्या० ना कोई अवर प्रकार ॥ कन्या-रतदत्त गुण सांभली क० निश्चय लीधो धार ॥ स० ॥ ९ ॥ क० मोहन मुजने नवि-मिले, क० षट्‌मासां के मांय। क० तो तन होमूं आगमें. क० अवर नहीं मुज चाय ॥ क० ॥ १० ॥

दोहा—तिलक वती तिण अवसरं, कही मायने जाय।
गणी सुण ते रायने. शीघ्र ही दीयो जताय ॥१॥
स्वयम्वर हूं मांडतो, मुज मन हूंती चाय।
कन्या मन जोए रुच्यो, तो देसूं परणाय ॥ २॥
तत् क्षिण तेडी मन्त्रीने, पूछे भूप तिहार।
कुंवर के कितनी कामनी, भाखो सकल विचार ॥३॥
मन्त्री कहै महिपति सुनो, अजहु न परणी कोय।
बहु नृप चाहै व्यावचा, शादश मिलिया जोय ॥४॥

॥ ढाल तीजी तर्ज-लावणी—खबर नहीं है जग में पलकी ॥

मन्त्री वचन सुणी वसुधापति, मनमें हर्षायो, तेरथा गणिक भणी तिणवारे, लगनतणी चायो ॥ सुणो सहु होणहार भाईरे, ! सुणो० छल बल कोई क्रोड़ करो तो टले नहीं आई ॥ टेर ॥ अगणित द्रव्यधरी मुख आगे. लगन शुद्ध कहीये, ते कहै दिन सतरमो जाणो, आगे नही लहीये ॥ सुणो ॥ २ ॥ जो ए टलेतो वर्ष युगल में, नहीं लगन आवे, भूप कहै भूमी है केती, शतयोजन थावे ॥ सुणो ॥ ३ ॥ भूप कहै मंत्री ! किम वणसी, सो कहै तिणवारो ॥ घड़ो योजन मुज सांड चले है, मति को विचारो ॥ सुणो ॥ ४ ॥ लेकर चित्र मंत्री तब चाल्यो, आय कही सारी, चित्र देख हरस्या सहु कोई, वाहा वाहा बुद्धि थांरी ॥ सुणो ॥५॥ दोनूं घरां उच्छाह मंड्यो अति, अदभुत तिणवारी, ईन्द्रादि आय मिले तो भाविबल टले नहीं टारी ॥ सुणो ॥ ६ ॥

दोहा—राणा ' रावण ' जी तदा, पण्डित धरियो मांय ॥
निशाचर[1] ने बुलायने, कहै 'चन्द्रस्थल' पुर जाय ॥ १ ॥
लावो बाला मुजकने, ढील न करणी रञ्च ॥
रङ्गभुवन सखिवृन्द मे, बैठी दीठी सञ्च ॥ २ ॥
तत्क्षिण ग्रही तसु चालीयो, सहु करे हाहाकार ॥
पिण कछु जोर चाले नहीं, न टले होवनहार ॥ ३ ॥
पूठे सहु आक्रन्द करे, सूंपी नृपने आय ॥
'नीमङ्गला' बुलायने, समुद्र तटे तूं जाय ॥ ४ ॥
यतन करीने राखजे, जब सतरादिन होय ॥
सूंपे ज्यो मुजने सही, पिण अवर अचिन्त्यो होय ॥ ५ ॥
पेटीधर मुखमें तदा, चाली देवी नाम ॥
गङ्गा सागर संग में, आवी बैठी आम ॥ ६ ॥

॥ ढाल चौथी तर्ज—योगी रासारी ॥

'तक्षनाग' ने ताम बोलावे, चारु विशाल ही जावो,
'रत्नदत्त' ने डंक देईने, वहिला पाछा आवो ॥ १ ॥
' रावण ' हुकमें अर्द्ध निशामें, रङ्ग महिल में आवे,
कुंवर सेजाए सुखमां सुतो, डङ्क देई ने सिधावे ॥२॥
आय 'रावण' ने सगली दाखी, दशस्कंधर हरखावे,
किम ए ग्याव हुसी ए एहनो, पिण भावी प्रवल कहावे ॥ ३ ॥
प्रात हुवा नृप खबर लही है, जहर व्याप्त तन देखे।
रेरे नन्दन मुज कुल भूषण, एह अवस्था देखे ॥ ४ ॥
मंत्री परमुख गारुड़ी तेड्या, कीया विविध उपचार।
यंत्र मंत्र ओषध नवि लागे, सहु करे हाहाकार ॥ ५ ॥
पुत्र वियोगे राजा राणी, नेत्र भरी जल नांखे।
योतिष जोई नैमित्तिक भाखे, मर्यो नहीं इमभाखे ॥६॥
आज तो उपचार न लागे, गङ्गाजल में वुहावो।

१ राक्षस।

पेटी मांही सुवाणी कुंवर, शीघ्र ए काम करावो ।। ७ ।।
नैमित्तिक वचने मिल सारा, ओहि कामज कीधो ।
सीरहुसीतो आय मिलेगो, जलनो दागजदीधो ।। ८ ।।

दोहा—देवी चिन्ते तिमञ्जला, हुवा दिवस अठार ।
बाई काढूं बाहिरे, हूं जावूं निज द्वार ।। १ ।।
कन्या ने काढी तिणे, वदे वचन इण भांत ।
हूं जावूं निजस्थान के, रहीजे करी निरात ।। २ ।।

।। ढाल क्षेपक तर्ज—मांड मुनि श्री रूपचन्दजी म० सा० कृत—

बनफल लेई संपीयारे, पीजे शीतल नीर ।
काम करीमें आवसूंरे, वहीली तारे तीर हो ।। १ ।।
सुनजो नरनारी, नहीं टले टाली, होण पदारथ वात ।। टेर ।।
निकली बाहिर वनफल खाधा, सा जोवे वनतैह ।
इतरे तिरती आवत दीठी, कुंवर मंजूषा जैह हो ।। सुनजो ।। २ ।।
कर हिम्मत सा पेटी काडी, जोवे निजर पसार ।
जहरग्रसित कुंवर तन दीठो, मनमोहन दीदार हो ।। सुनजो ३ ।।

—ढाल पांचवीं—

तर्ज-हँस २ पूछूं वात गौरी, आंखडल्यांरा काजल फीका क्यूं पड्या हो लाल

कुंवरी विचारे ताम, साजन, दीसे एह कुंवार 'रत्नदत्त' सारषो हो लाल, मणिमाला जल छांट, साजन, निर्विष कीनो तन तसु करने पारखो हो लाल ।।१।। पूछे मांही मांही बात, साजन सुणने मनमें उभय परम सुख पावीया हो लाल ।। आज मिल्यो भल जोग, साजन, दूधे जाणे आज क घन वरसावीया हो लाल ।। २ ।। हँस हँस बोले वेण, साजन, आज अचिंतित माला मुजमनरी फली हो लाल ।। भलां मिल्या तुम सेण, साजन, व्याव करी करो पूरण मम मन की रली हो लाल ।। ३ ।। धूलनी ढिगली कीध, साजन, श्रीफल लाया है होम करन के कारणे हो लाल ।। अरणी थी अगनी कीध, साजन, फेरा फिरीया चार लेवे पति ने वारणे

हो लाल ॥ ४ ॥ उभय परम सुख पाय, साजन, वंछित करी ने भोग आनन्द अति मानीयो हो लाल ॥ पेठा पेटी मांय, साजन, आडा सूती है बाल सफल दिन जानीयो हो लाल ॥ ५ ॥ इतरे आई तेह, साजन, साद करन्तां कन्या बोली है तदा हो लाल ॥ हूं सूती निज ठौर, साजन, सुन देवी मनमांही सुख माने मुदा हो लाल ॥ ६ ॥ संध्याये सूरी सार, साजन, चाली पेटी लेय पूछे देवी इणपरे हो लाल ॥ वजन वध्यो किण काम, साजन, कन्या तब मृदु वेन क मुखथी ऊचरे हो लाल ॥ ७ ॥ खाया फलने फूल साजन, पीधोजल लागो पवन अमारे तन तणे हो लाल ॥ आप ग्रही बहु वार, साजन, इण कारण सूं भारी लागे आपने हो लाल ॥ ८ ॥

दोहा—सूंपीसा 'रावण' भणी, आप गई निजधाम ॥
पोहरो राख्यो रातरा, प्रात उदय रवितास ॥ १ ॥
सभा सबल भारी जुड़ी, मिलीया राणो राण ॥
राय कहे सबही सुणो, अवसर मिलीयो आंण ॥ २ ॥
सतरादिन पूरा हुवा, नहीं हुवो ए व्याव ॥
नैमित्तिकने तेड़ने, भाखे नृप उच्छाह ॥ ३ ॥
जोवो ज्ञान तुम्हारडो, भावी टली के नांय ॥
श्रोता एक चित्त सांभलो, वदे नैमित्तिक वाय ॥ ४ ॥

॥ ढाल छठी तर्ज—हांक मतिकर गर्व दिवाना ॥

हां कहे इम योतिषनाणी, सुणो प्रभु ए म्हारी वाणी, टलेन होवन हार कयो इम केवल नाणी रे ॥ टेर ॥ तीर्थंकर चक्री महाराया, होणहार आगे घबराया, सम्भुमचक्री जल डबकाया, एसी भावी जान आन दिल भाख्यो ज्ञानीरे ॥ कहे ॥१॥ व्याव हुवो है दिन सतरमे, क्या जोवूं दर्पण में कर में, खोलो पेई निकसे भरमें, देखे सगलो लोक थोक ओ मिलीयो आनीरे ॥ कहे ॥ २ ॥ नैमित्तिक ए कैसे बोले, तत्क्षिण नृप पेईने खोले, कुंवर सूतो कन्या के

ओले, चिन्ते रावण राय वाय ए सुपने न जानीरे ॥ कहै ॥ ३ ॥
विबुध कहै चवडे देखावो, सब ही जन को भर्म मिटावो, कन्या कुंवर बाहिर दिखलावो, देखे सगला लोक बात ए सत्य पीछानी रे ॥ कहै ॥ ४ ॥ राम कहै भावी बल भारी, टले नहीं है होवन हारी, नैमित्तिक ने रींजदी सारी, खेचर सामे देय मेल्या उभय निज २ थानी रे ॥ कहै ॥ ५ ॥ 'नथमल' कहै सुनजो सब भाई, नैमित्तिक ने कथा सुणाई, रामायण में हर्ष धर गाई, देसी गुरु मुखधार गायां रींजे बहुप्रानी रे ॥ कहै ॥ ६ ॥

॥ इति रत्नदत्त कथानकं समाप्तम् ॥

—ढाल मूलगी—

कहै हूं मरिस आपथी रे, के कोई मारण हारो रे ?
इन्द्रादिक सुर ना रहै रे, माणसनो शो भारो रे ॥राजा दशरथ८॥
पण्डित प्रगट पणे भणे रे, सीता हेते विनाशो रे।
'दशरथ' सुत थी थायसे रे, लोक करे तव हांसो रे ॥राजा ॥९॥
विभीषण बलियो कहै रे, झूंठो पांड्र जाणो रे।
'दशरथ' 'जनक' विनासतांरे, विबुध वचन अप्रमाणोरे ॥राजा १०।
उत्पति बीज विना नहीं रे, 'रावण' कहै ए रुड़ रे।
भरोसो भाई तणो रे, कदी ही न कहै कूड़ रे ॥ राजा ॥ ११ ॥
'नारद' बैठो थो तिहां रे, करवाने उपगारो रे।
राजा 'दशरथ' आगले रे, भाखे एह विचारो रे ॥ राजा ॥ १२ ॥
मिथुला नगरी एजई रे, ' जनक ने रे ' जणावेरे,
जाणी स्वामी साचलीरे, मति अशाता पावेरे ॥ राजा० ॥ १३ ॥
एहिज भोलामण रायजी रे, मंत्रीश्वरने दीजेरे,
दोई परदेशे नीकल्यारे, जाणे जिमतिम जीजेरे ॥ राजा० ॥१४॥
मूर्ति दोई रायनीरे, लेपमयी तव कीजेरे,
' विभीषण ' भरमाववारे, एह उपाव ठवीजेरे ॥ राजा० ॥१५॥
रात अंधारे आवीयोरे, ' विभीषण ' विकरालोरे,
मूर्ति मस्तक छेदूंरे, कोप्यो जाणे कालोरे ॥ राजा० ॥ १६ ॥
कलकल शब्द हुवो घणोरे, सुभट सबही धाईरे,

माग्वा काज उतावलारे, नजर न आवे कांई रे ॥ राजा० ॥ १७ ॥
रोवे राणी रावलीरे, रोवे बाद गुलामोरे,
मृतकारज सगला कीयारे, गयो विभीपण तामोरे ॥राजा०॥१८॥

॥ ढाल मूलगी चेपक ॥

विभीपण मन में हर्षावे, प्रात हुवां सभा बीच जावे, वृत्तांत सब जनकूं सम्भलावे, सभामिल मंगलही गावे, धन्य २ सबही फुरमावे ॥ सत्य व्रत पालो ॥ २० ॥

॥ ढाल मूलगी ॥

मंत्री सोई मते खरोरे, राजा तेहिज मानोरे,
और मतने जाणे नहींरे, ओ आपण में ताणोरे ॥ राजा० ॥१९॥
बंधन बेठूं देखीयेरे, राजाजीनो राजोरे,
एक अवस्था दोयनीरे, प्रत्यक्ष दीसे आजोरे ॥ राजा० ॥ २० ॥
भमता २ एकठारे, 'दशरथ' 'जनक' मिलंतारे,
एक अवस्था दोयनीरे, साथे होई चलंतारे ॥ राजा० ॥ २१ ॥
कौतुक मंगल पुरवरेरे, 'शुभमति' राज्य करंतोरे,
'पृथिवी श्री' उदरे ऊपनीरे, 'कैकयी' गुणवन्तो रे ॥राजा०॥२२॥
'द्रोणमेघ' नो सहोदरीरे, स्वयम्वर मंडपतासोरे,
आव्या राणा राजीयारे, करी कन्यानी आशो रे ॥ राजा० ॥२३॥
'हरिवाहन' आदे सहुरे, बैठा आसने भूपो रे,
'दशरथ' 'जनक' पधारीया रे, ओपे सोह अनूपो रे ॥राजा०॥२४॥
कन्या मण्डपे आवतां रे, जोवे नृप अवलोही रे,
को नजर न आवीयो रे, आगे सरके सोई रे ॥ राजा० ॥ २५ ॥
'दशरथ' नृप मन मानीयो रे, पहिरावे वर मालो रे,
राजा रोस करे घणूं रे, हरिवाहन' भूपालो रे ॥ राजा० ॥२६॥
मेलो म्होटा राजवी रे, ए केम विवाहे रांको रे,
दीसे वेषे कापड़ी रे, एम वदन्तो वांको रे ॥ राजा० ॥ २७ ॥
चलगो जाई वेगसूं रे, लेई वरमाल छिनाई रे,
नापिस करो सा पाधरो रे, टलतां जाय वडाई रे ॥राजा० ॥२८॥

चतुरंगी सेन्या सजी रे, झंझा ओ वाजन्ता रे,
शूरा घेर वधामणां रे, कायर नर भाजन्ता रे ॥ राजा० ॥ २९ ॥
'शुभमति' पक्ष करे घणूं रे, जाणे जमाई जाचो रे,
सैन्य सजी आगे हुवो रे, शूर शिरोमणि साचो रे ॥राजा०॥३०॥

ढाल मूलगी क्षेपक

माल ए मुजकूं ही दीजे, अनुचित वात नहीं कीजे, दीयां विन सगला ही खींजे। रोसकर नरपति सव आया, स्वसुर मिल 'दशरथ' ही आया ॥ सत्य ॥ २१ ॥ 'कैकई' स्वारथी होवे, नृपति सहु सन्मुख ही जोवे, अड़े सो लाज ही खोवे ॥ सघनघन वान की धारा, वडे २ वीर संहारा ॥ सत्यव्रत पालो ॥ २२ ॥

ढाल मूलगी

'कैकई' हुई सारथी रे, खेड़े रथने जामो रे।
'दशरथ' दल मोड़े घणूं रे, पिशुन तणूं ते नामो रे ॥ राजा ३१ ॥
जीत्यो 'दशरथ' राजीयो रे, धर्म सदा जय होवे रे।
परमेश्वर परिवयो घणूं रे, साचा सामूं जोवे रे,
नृप वर१ आपे रीजीया रे, सा भण्डारे रहावे रे,
प्रस्तावे हूं मांगसूं रे, सुतने नृप पद थावे रे ॥ राजा० ॥ ३३ ॥
'कैकई' साथे लेईने रे, 'राजगृह' आवन्तो रे,
'जनक' गयो 'मिथुलापुरी' रे, हर्ष घणो पावन्तो रे॥राजा०॥३४॥
'दशरथ' निजपुर नावीयो रे, विभीषण ने त्रासो रे,
देशवणा जीती कर्या रे, 'राजगृह' आवासो रे ॥राजा० ॥ ३५ ॥
बोलावी 'अपराजीता' रे, आदी सगली नारी रे,
राजस्थान करी थाप्यूं रे, स्थिर स्थानक सुविचारी रे।राजा०।३६।
सिंह जिहां ही वासो वसे रे, तिहां ही तस थानो रे,
तिम 'दशरथ' राजा गण्यो रे, सर्व रायनो राजानो रे।राजा.।३७।
पन्नरमी ए ढाल विषे रे, अन्यरण्य दीपायो रे,

१ दशरथे कैकयीने वर (वचन) आप्यु ते तेणे नहीं मांगतां जरूर हसे त्यारे मांगवा जणाव्यूं ॥

'केशराज' नन्दन नीको रे, नीको तात कहायो रे ।।राजा०।।३८।।

दोहा (कान्हडा रागे)

ब्रह्मलोक थकी चवी, महर्धिक सुर सार ।।
मान सरोवर हंसलो, उद्रे लीयो अवतार ।। १ ।।
सुखमें सूती सुन्दरी, सुन्दर सेज मजार ।।
राणीजी 'अपराजिता' सुपन विलोक्या चार ।। २ ।।
सात हाथ ऊंचो सही, लांब पणे नव हाथ ।।
चौड पणे कर तीन जी, करी करणीनो नाथ ।। ३ ।।
केसरी कटी क्षीणोदरो, पश्च मुखे प्रवेश ।।
करन्तो दीठो मध्ये, राणी ए हर्ष विशेष ।। ४ ।।
नायक तो ग्रह गणतणो, रोहणी नो भरतार ।।
ऊतरथो आकाशथी, चन्द्रमहा सुखकार ।। ५ ।।
ऊगन्तो अति रातड़ो, नहीं बापड़ो लगार ।।
सूर्य सहश्र किरणे करी, पावे शोभा अपार ।। ६ ।।
राय जगावी वीनवे, ईश सुणो अरदास ।।
एह सुपन नूं फल कहो, जिम पोहोंचे मन आश ।। ७ ।।
पियु परम सुख पाय के, भाखे सुपन विचार ।।
पुत्रपनोतो प्रसव से   सहु जगनो आधार ।। ८ ।।
गर्भ दोष सहु टालतां, पोस करन्तां सार ।।
शुभ वेला सुत जाइयो, वर्त्या जय जय कार ।। ९ ।।

।। ढाल सोलहवी तर्ज—अब तं धीरो रे ।।

शुभ वेला शुभ वार कुंवर जायो रे ।।
हर्ष वधायो मंगल गायो, सब जगने रे सुहायो ।।कुंवरजायो रे।।१।।
नगर छंटायो, जल सिंचवायो, कुसुमाघन वरसायो रे ।।
चोक पुरायो, कलश वधायो, इन्द्र तमासे आयो ।। कुंवरजायो।।२।।
लोक मिलायो, ढोल बजायो, गुहिर निशान गुहिरायो रे ।।
आनन्द पायो सब मन भायो, ओच्छव अति मंडायो ।। कुंवर।।३।।

रमणी आवे, केली रचावे, कुंकुम हाथ देवरावे रे ॥
रास रमावे पात्र नचावे, उचित अधिक उपावे ॥ कुंवर० ॥ ४ ॥
घर घर बारे तोरण रचना, नारी अखाणूं लावे रे ॥
दुर्वा पुष्प फलादिक आणी, मंगलाचार करावे ॥ कुंवर० ॥५॥
'चिन्तामणि' सुरतरु जिम राजा, दाने दारिद्र निवारे रे ॥
याचक नाम अयाचक कीधां, सुजश हुवो जग सारे ॥ कुंवर० ॥६॥
पदमनोरे निवास तेहथी, 'पद्म' दीधूं तस नामोरे ॥
सहु जगने अभिराम पणाथी, बीजूं नामज 'रामो' ॥ कुंवर० ॥७॥
गज१, हरि२, रवि३, शशि४, अग्नी५, जलकमला६, सायर७, सुपनां सातोरे।
देखी 'सुमित्रा' स्वामी आगे, आवी कहे ए वातो ॥ कुंवर० ॥८॥
देवलोक थकी चवि आव्यो, उत्तम जीव अपारोरे ॥
राणी उदरे निवास कीयोरे, हर्ष्यो सहु परिवारो ॥ कुंवर० ॥९॥
श्यामवर्ण सुत जायो सुन्दर, राजा मन उत्साहोरे ॥
ओच्छव विविध प्रकार करीने, लीधो लच्छी लाहो ॥ कुंवर० ॥१०॥
दश दिवसनो ओछव कीधो, छोड्या बंदी वानोरे ॥
उत्तमपुरुष ऊपजीयाथी, सहुने होय कल्याणो ॥ कुंवर० ॥ ११ ॥
'नारायण' तसु नाम दीयोरे, 'लक्ष्मण' अपर विधानोरे ॥
सुरतरु कंद तणीपरे दोई, वाधे पुरुष प्रधानो ॥ कुंवर० ॥ १२ ॥
अनुक्रम वीर विशेष विशेषे, मोह घणेरो पोखेरे ॥
नीलाम्बर पीताम्बर पहीरे, साज्जनीया संतोखे ॥ कुंवर० ॥ १३ ॥
आचारज साखे करी सीख्या, सकल कला गुण तेहोरे ॥
जाण पणे ते सुरगुरु सारीसा, प्रत्यक्ष दीसे एहो ॥ कुंवर० ॥ १४ ॥
लीला मुष्ठि प्रहार करावे, पर्वत नांखे चूरीरे ॥
शूरवीर साहसिक मांही, पावे कीर्ति पूरीरे ॥ कुंवर० ॥ १५ ॥
क्रीड़ा कारण मनुष्य ग्रहीने, जब जब पूंखे बाणोरे ॥
सूरज शङ्क धरीने शंके, पाड़ेमति रे विमाणोरे ॥ कुंवर० ॥ १६ ॥
कांइक भुजबल राय विचारयो, कांइक सुत बल जाणी रे ॥

काइक धैर्य धरी नृप वसीयो, पूरी अयोध्या आणी ।कुंवर०।१७।
'भरत' पुत्र 'कैकेयी' जायो, पूरी 'अयोध्या' मांहै रे ॥
'सुप्रभा' ए 'शत्रुघ्नजी' जायो, जायो अधिक उत्साहै ।कुंवर०।१८।
'राम' अने 'लक्ष्मण' नी जोड़ी, कवि कथने रे कहाणीरे ॥
'भरत' अने 'शत्रुघ्न' केरी, जगमां जोड़ जणाणी ॥ कुंवर० ॥१९॥
गजदंताए मेरु महिधर, शोभा अधिक लहावेरे ॥
'दशरथ' राजा नंदन चारे, कर्मे तो कहावे ॥ कुंवर० ॥ २० ॥
ए सोलमी ढाल भलेरी, 'राम' तणो अवतारोरे ॥
इहां लगे 'केशराजे' वखाण्यो, ए पहेलो अधिकारो ।।कुंवर०।।२१।।



मङ्गलाचरणम्, रावणस्य वंशावली, रावणस्य जन्मः, विद्याखण्डयोश्च साधनम्, सन्यञ्जना हनुमतश्चरित्रंच, रामस्य वंशावली, नैमित्तिक द्वारा रावणस्य मृत्यु ज्ञानम् । रामप्रभृति चतुर्भ्रातृणां जन्म । एतद् विषयकं श्री जैन पद्य रामायणे-प्रथम खण्ड मिति ॥

श्री मज्जैनाचार्य्य श्री 'चौथमल्लेभ्यो' नमोनमः

खण्ड (स्कंध) दूजो



दोहा (धन्या श्री रागे)

गौतम गणधर गुणनीलो, गौतम गिरुओ नाम ॥
गौतम गुरु गुरु में बडो, गौतम करिय प्रणाम ॥ १ ॥
'भामण्डल' सीतातणो, युगलपणे अवतार ।
शे कारण अलगा पड्या, निसुणो एह विचार ॥ २ ॥
'जम्बूद्वीपे' भरत में, [१]वसतो 'दारु ग्राम' ॥
विप्रभलो 'वसुभूति' जी, 'अनुकोशा' नो स्वाम ॥ ३ ॥
अंगज[२] तो 'अनुभूति' जी, 'सरसा' बहुनूं नाम ।
'कयान' विप्रे अपहरी, पूठे हुओ पतिताम ॥ ४ ॥
मोहवस्ये मोह्यो घणूं माय बाप ते वार ॥
पुत्र गवेषण चालियां, विचे मिल्या अणगार ॥ ५ ॥
तेह तणा उपदेशथी, लीधो[३] संयमभार ॥
स्वर्ग सुधर्मे देवनो, पाम्यां पदवीसार ॥ ६ ॥

ढाल सत्तरहवीं तर्ज कहो २ मन मूरख मेरे—

सुण सुण रे सयण सयाणा, कांई होवे अधिक अयाणा ।
ए कर्म न छूटे कोई, सुर दानव मानव होई ॥ सु० ॥ १ ॥
'वैताढ्य' गिरे अभिरामो, 'रथनूपुर' 'पुरनूं' नामो ॥
सो देव[४] चवीने आयो, खग 'चन्द्रगति' रे कहायो ॥ सुण २ ॥
ओ नारी[५] हुई नारी, नृप 'चन्द्रगति' नी प्यारी ॥

---

१ वस–वसवूं रहेलूं उपरथी वसेलूं । २ अंगज. अंगथी उत्पन्न थयेलो पुत्र । ३ वसुभूतिअने 'अनुकोशा' ए साथे दीक्षा लीधी. और दोनों मरी. सौधर्म देवलोक में उत्पन्न हुवे । ४ वसुभूतिनोजीव । ५ अनुकोशानोजीव ।

'पुष्पवती' अभिधानो[१], सुखमाणे मेरु समाणो ॥ सुण ३ ॥
'सरसा' पिण संयम लेवी, बीजे सुरलोके देवी ॥
होई ने माने साता, सुख मांहे वासर[२] जाता ॥ सुण ४ ॥
'अनुभूतिज' आरती करतो, नारीनूं अति दुःख धरतो ॥
भवमांही भमतो होई, हंस बालक हुवो सोई ॥ सुण० ॥ ५ ॥
सिंचाणे साही नड़ीयो, ऋषि आगल आवी पड़ीयो ॥
ऋषिजीए दीधो नवकारो लीधो किन्नरनो अवतारो ॥सुण०॥६॥
दश सहस्र वरसनो आयो, भोगवतो पुण्य प्रभायो ॥
सो देव चवीने आवे, बदलो लेवे सुख पावे ॥ सुण० ॥ ७ ॥
विदग्ध नगर छे वारु, राजा छे अधिक उदारु ॥
'प्रकाशसिंह' नरनाहो 'प्रवरा' रेवतीनो नाहो । सुण० ॥ ८ ॥
सहु साजनने ए सुहायो. 'कुण्डल मण्डित' सुतजायो ॥
सुत सुन्दर अधिक सलूणो. सुनतेज प्रतापे दूणो ॥ सुण० ॥ ९ ॥
'कयान' भवमां भमतो, सो वादि जमारो गमतो ॥
नारी 'चक्रपुर' राजे, 'चक्रध्वज' राज विराजे ॥ सुण० ॥ १० ॥
'धूमसेन' पुरोहित[४] तेहने, 'स्वाहा' रमणी छे जेहने ॥
जायो तिहां 'पिंगल' नन्दो. उपज्यो मा-मन आणन्दो। सुण० । ११ ।
'अतिसुन्दरी' बैटी राजानी, खप करती अति विद्यानी ॥
श्री आचारिजजी पासे, 'पिंगल' पण पढे उल्लासे ॥ सुण० ॥ १२ ॥
तबतो बंधाणो नेहो. 'पिंगल' ने कुँवरी तेहो ॥
संगतथी विणसे कामो, एमजोजो बहुलाठामो ॥ सुण० ॥ १३ ॥
कुँवरी ने लेई नाठो, ओ ब्राह्मणी ओ अति धाठो[५] ॥
'विदग्ध' नगर चलि आयो. वसवानो मन ठहरायो ॥ सुण० ॥ १४ ॥
कसब[६] न कोई जाणे, तृण लाकड़ी मूली आणे ॥
जिमतिमतो पेट भरेवो, विण कसबज एम करेवो ॥ सुण० ॥ १५ ॥
ए कसब तणो अधिकाई, निजपुर में लहेरे वडाई ॥

१ नाम । २ दिन । ३ आयुष्य । ४ कुलगोर । ५ धीठो कठण हीयानो धीठ । ६ कामो (कला)

ए कसब कलाए दीठो, शशि[1] रुद्र तणेशिर बैठो ॥ सुण ॥ १६ ॥
'अति सुन्दरी' सुन्दरता ए, नृप सुतने कौन वताए ॥
सा लीधी तेणे छिनाई, पिंगल रहियो मुख वाई ॥ सुण० ॥ १७ ॥
भय बाप तणो अति आणी, पर्वत में पल्ली ठाणी ॥
'कुण्डलमण्डित' तिहां वसीयो, सुख दुःख न देखे रसीयो । सुण.।१८।
नागीनो आणी वियोग, 'पिंगल' तब लीधो योग ।
चित्तथी नवि छूटे नारी, घाटी ए म्होटी भारी ॥ सुण० ॥ १९ ॥
'दशरथ' नो देश विणा से 'कुण्डलमण्डित' जन त्रासे ॥
तब 'बालचन्द्र' चढि आयो, बांधी नृप पासे लायो ॥ सुण० ॥ २० ॥
तब दीनपणूं तस देखी, करुणा नृप ने सुविशेषी ॥
छोडी दीधो तिण वारो, 'कुण्डलमण्डित' सुकुमारो ॥ सुण० ॥ २१ ॥
ते बाप-राज्य ने काजे, कुंवरजी रहै नीति साजे ॥
'मुनिचंद्र' ऋषीश्वर संगे, हुवो श्रावक अति उच्छरंगे ॥ सुण. ॥ २२ ॥
राज्य-वांछाना मांहीं, तस प्राणज छूट्या प्राही ॥
जनक[1] घरे अवतारो, निसुणो[2] 'सीता' सुविचारो ॥ सुण० ॥ २३ ॥
'सरसा[3]' पण भवमें भमती, साफिरे इच्छाए रमती ॥
होई पुरोहितनी कुंवारी, सा पढवे गुणवे सुभारी ॥ सुण० ॥ २४ ॥
वेगवतीरे कहाणी, सुन्दर रूप सयाणी ॥
मुनि आल देई दुःख पायो, ते सुणज्यो चित्त ल्यायो ॥ सुण० ॥ २५ ॥

दोहा चेपक—

पाप अठारे जिनकया, करो मति भवी जीव ॥
कीयांथी दुःख पाहुवा, नरकां खावे रीव ॥ १ ॥
हिंसा झूठ चोरी अबम्भ, ममता घणी विशेष ॥
क्रोधमान माया लोभ, वले राग ने दोष ॥ २ ॥

---

१ जनक राजाके वहां भामण्डल पुत्र पणे पेदा हुवा । २ हवे सीतानो वीचार सांभलो । ३ सरसा जे ईशान देवलोकमां देवी थई हती ते त्यांथी चवी घणा भवकरी वेगवती नामे ऊपनी त्यांथी दीक्षा लेई ब्रह्म लोकमां जई त्यांथी चवी जनक राजानी स्त्री 'बिदेहा' ने पेटे अवतरी ।

कलह बारमो जाणीये, तेरमे देवे आल ॥
तिणथी कर्म बंधेघणा, ए मोटो चण्डाल ॥ ३ ॥
कलंक न दीजे केहने. वले साधुने विशेष ॥
पापकर्म सहुपर हरो. दुःख वेगवतीना देख ॥ ४ ॥
भर्तक्षत्रमांहीअछे नाम नगर मिरगाल ॥
विचरत साधु पधारीया, सुमति गुप प्रतिपाल ॥ ५ ॥
साधु तणो आगम सुणी, हर्ष्या सहु नरनार ।
वांदवा आया साधुने, हय गय रथ परिवार ॥ ६ ॥
दीधी साधु देशना, धन है साध महन्त ।
लोक प्रशंसा अति करे, जिन शासन जयवन्त ॥ ७ ॥
तिणपुर प्रोहित श्री भूत ने, नारी रूप रसाल ।
सरसा कूखे 'ऊपनी', वेगवती सुकुमाल ॥ ८ ॥

॥ ढाल क्षेपक तर्ज–धर्म दलाली चित्त करे ॥

वेगवती रे ब्राह्मणी महामिथ्यामति मोही रे ॥
साधु प्रशंसा सही नहीं, जिन शासन द्रोही रे ॥
साधु ने आल कूड़ो दियो ॥ टेर ॥ १ ॥
वेगमतीमन चिन्तवे, मूरख लोक न जाणे रे ।
आल देऊं कोई एहवो, जिम सहु को अपमाने रे ॥ साधुने २ ॥
वेगवतीइम चिन्तवी, गई लोकने पासे रे ।
स्त्री सेवी व्रत भांजता, मैं दीठो इम भासे रे ॥ साधुने ॥ ३ ॥
एह ऊडामणी सुणीकरी, साध घणूं विलखाणो रे ।
अनरथ मुझथकी ऊपनो, निज शासन ही लाणो रे ॥ साधुने ४॥
एह कलङ्क जो ऊतरे, तो अन्न पाणी लेऊं रे ।
नहीं तरतो आंपणा किया. वेदनी कर्म हूं वेऊं रे ॥ साधुने ५ ॥
आवो शासन देवता. साधुनो सानिधी कीधी रे ।
वेगवती ने वेदना. अति घणो सबली दीधी रे । साधुने ॥ ६ ॥
तुम्बथयो मुखस्वजने, पाप ना फल प्रत्यक्षो रे ।
करवा लागी एहवा,- वलि पिछतावा लक्षो रे ॥ साधुने ॥ ७ ॥

हा हा में महा पापणी, दीयो कूड़ो आलो रे ।
साधु समीपे जाकरो, मिल्या बाल गोपालो रे ॥ साधुने ॥ ८ ॥
भोभो लोक सहुसुणो, मैं दीधो आलज कूड़ोरे ।
पर तिख में फल पामीया, साधु एछे रूडोरे ॥ साधुने ॥ ९ ॥
लोक सुनी हर्षित थया, कंचन काटन कोई रे ।
ओ मोटो अणगार छे, कहो किम दूषण होई रे ॥ साधुने ॥ १० ॥
पूजा अर्चा साधुनी, वलिसहु करवा लागाजी ।
जिन शासन थयो ऊजलो, भर्म सहुनो भागाजी ॥ साधुने ११ ॥
संयम लीयो साधवी, पिण इर्षा मनमझारो रे ।
आलोयणा कीधो नहीं, थईस अति चारो रे ॥ साधुने ॥ १२ ॥
पहले देवलोके ऊपनी, देवीरूप उदारो रे ।
देवलोकथी चवकरी, जनक घरे अवतारो रे ॥ साधुने ॥ १३ ॥

—ढाल मूलगी—

'वेगवती' कहै वाणी, सजम साथे मन आणी ।
ब्रह्मदेव लोके होई आवी, राणी उदर ऊपनी ठावी ॥ सुण २५ ॥
कुँवर कुंवरी दो जाया ते युगल पणे सुखदाया ।
नाम विदेहा हरखी, सुत पुत्री नू मुख निरखी ॥ सुण ॥ २६ ॥
'पिङ्गल' मुनिवर गुणवन्तो, पहेले सुरलोके पहूंतो ।
अवधि ज्ञान सूं देखे, ठवतो अति रीस विसेषे ॥ सुण ॥ २७ ॥
तवते बालक अपहरीयो, ते सुर वर द्वेषे भरियो ।
जाणे अव अमर्ष पोषू, मारीने मन संतोषू ॥ सुण ॥ २८ ॥
विवेक विचारे तामो, एछे पातिक नो ठामो ।
वैर नवोरे वसायो, संसार घणोरे[1] वधावो ॥ सुण ॥ २९ ॥
पंचेन्द्रिय केरो पापो, सहेवो नरके ए संतापो ।
ते माटे तो एवालो, हणतां दूषण असरालो ॥ सुण ॥ ३० ॥
एमविमासी देवो, वैताढ्य गिरी ततखेवो ।
दक्षिण श्रेणे सोहन्तो, म्होटानो मन मोहन्तो ॥ सुण ॥ ३१ ॥

---

१ वधारचो ।

'रथनूपुर' पुर-चलि आया, भूषण स्यूं भूषी काया ।
ते बालक बनमांमूके, ते त्रिबुध विचार न चूके ॥ सुण ॥ ३२ ॥
जब खेचर 'चन्द्रगती' दीठो, तब लोचन अमिय पईठो ।
ऊठाई ऊंचो लीधो, त्रीया 'पुष्पवती' ने दीधो ॥ सुण ॥ ३३ ॥
घरे नहीं छे सन्तानो, ए आरती छे असमानो ।
मुजने तूठ्यो किरतारो, ए दीधो देव कुमारो ॥ सुण ॥ ३४ ॥
लोको में एम सुणायो, राणीजी नन्दन जायो ।
तब ओछव अधिक करीजे, लच्छीनो लाहो लीजे ॥ सुण ३५ ॥
तनु की अति कान्ति कहिजे, 'भामण्डल' नाम धरीजे ।
ए सतरमी छे ढालो, 'केशराज' कहै सुविशालो ॥ सुण ॥ ३६ ॥

दोहा (धनाश्री रागे)

'विदेहा' रे विशेषथो, सुत दुःख सायर मांहे ।
झूरे आंसूं न्हांखती, पति समझावे ग्राहै ॥ १ ॥
भवान्तर ने वयरीए, अपहरियो सुतएह ।
शोध करीश हूं मही, मकरिश तूं अन्देह ॥ २ ॥
स्थानक २ सोधिया, गिरी गुहिर आराम ।
खबर न पाम्या पुत्रनी, राजा राणी ताम ॥ ३ ॥
पुत्रीनूं मुख देखतां, शीतलता ने पाम ।
वालावो मां बापजी, सीता एहवे नाम ॥ ४ ॥

ढाल अठारहवीं—तर्ज–सुमति–सुमति दातार प्रभु तिभुवन तिलोकी॰
तर्ज–(कर्म तणी गति किण हीन जाणवी है)

सीता कुंवरी वाधतीरे, चन्द्रकला जिम देख ।
अनुक्रमे योवन पामीयोरे, रूपकला सुविशेष ॥
सीता सुन्दरीरे, मनुष्य लोक मझार ।
रूप पुरन्दरी रे, शील सिरोमणी नार ॥ सीता ॥ १ ॥
कोवर होसेएहनोरे, भूचर खेचर राय ॥
आरति आणे बापजीरे नररूड़े सुखथाय ॥ सीता ॥ २ ॥

देखाव्या वसुधाविखेरे, राजा राज कुंवार।
सारिखो संसारमेरे, कोईयन एक लगार ॥ सीता ३ ॥
अर्धवबरदेशनारे, अंतरंग" तसनाम,
म्लेछ महामयमंतछेरे, देश उजाड़े ताम ॥ सीता ॥ ४ ॥
जनक नपोंचेतेहनेरे, दूतमोकलेएक,
राजा दशरथ पाखतीरे, बोले आणी विवेक ॥ सीता ॥ ५ ॥
सूर्य रहामू देखीयेरे, आवे छींक जेवार ॥
मीडाणो छे भूपतीरे, आगे देव विचार ॥ सीता ॥ ६ ॥
ऊठ्यो अति आतुर थई रे, वाज्या ढोल दुमाम।
असवारी करवा भणी रे, ताम सूं बोले 'राम' ॥ सीता ॥ ७ ॥
तुमे पधारो छो सही रे, शूरां सूं संग्राम।
अमने घर वैसी रह्या रे, कीसी वध से[1] माम ॥ सीता ॥ ८ ॥

ढाल चेपक तर्ज-ख्याल की मन्त्री श्री चोथमल्लजी म० कृत

क्यों ? आप पधारो, हुकम करो तो जावूं जुद्ध में ॥ टेर ॥
भेडां ऊपर जावतां सरे, आछा न लागो आप।
अर्ज करूं इण कारणे सरे, वगसो आज्ञा बापजी ॥ क्यों ॥ १ ॥
नाजुक देह लघु वय थांरी, जिण सूं मेंही जावों।
जनक केसी टाबर ने मेल्या, इण सूं थे गम खावोजी ॥क्यों २॥
'रामचन्द्र' कहै सुनो पिताजी, 'लछमन' लेऊं साथ।
'जनक' रायरी मदत में सरे, जाय दिखाऊं हाथजी ॥ क्यों ३ ॥
म्हारी तर्फ रो राजा ? मनमें, जरा सोच मत लावो।
जावां वेगा जुद्ध में सरे, झट आज्ञा वगसावोजी ॥ क्यों ॥ ४ ॥
लेई फौजने पद्म पधारो, जुद्ध करनके तांई ॥
नवा शहरमे 'चोथमल्ल' कहै, 'नाथ' गुरु सुपसाईजी ॥क्यो ॥५ ॥

ढालमूलगी

अनु[1] ज्ञाने आगे करीरे, चाल्या 'राम' नरेश।
चतुरंगिणी सैन्या मझीरे, 'मिथीला' पुरीय प्रवेश ॥ सीता ॥ ९॥

---

१ होस भीत अथवा शर्म।

ढाल क्षेपक तर्ज–खडका स्वामी श्री नथमलजी म० कृत.

'दशरथ' नृपनो हुकमलेईचढे, 'राम' सु 'लिछमन' वीर शूरा ॥ हयगय रथ पायक दलसंचर्यो, सुभट ताजा लीया मानीपूरा ॥ चल्या श्री 'राम' 'लिछमन', अरिजीतवा, ॥टेर॥ १ ॥ मारग अनड़ नमावता जावता, जनक मिथीलापुरी आय मिलीया॥ जनक सैन्या लेई साथ हुवो तदा, असुर लड़वा भणी शीघ्र चलिया ॥ च. ॥२॥ म्लेछ मदमस्त अति पुष्ठ गर्भितरहै, राम, दल देखीने सजथावे ॥ वाजो रणतूर नो सांभली शूरमा, केईगज अश्व रथबैठआवे ॥ च, ॥ ३ ॥ शस्त्र रवाग चले कोई पालालडे. माचीयो शोर सं ग्रामभारी ॥ केई धरणीढले, केईपाछापड़े. लेय मुखत्रण केई जाय हारी ॥ च, ॥ ४ ॥

ढाल मूलगी—

असुरशूं आवीअड्यारे, सुभट जीके झुंझार ।
उठावरणी असुरांतणीरे, सही नमक्या इक वार ॥ सीता ॥ १० ॥
धनुष्य चढावी रामजीरे, करतो उठावणीआप ।
असुर सहुअलगाथयारे, धर्मथकीजिमपाप ॥ सीता ॥ ११ ॥
'जनक' तणा जनपद तणोरे, टल्यो सयल४ कलेश ।
राजाजी सुखपामीयारे, रंग विनोद विशेप ॥ सीता ॥ १२ ॥
'सीता' दीधी रामनेरे, सारिखो संयोग ।
भलु २ भाखे वणूरे. हर्षे मघला लोग ॥ सीता ॥ १३ ॥
सीता रूप सोहामणूंरे. निसुणीने सुरदेव ।
निरखण हेतेआवीया. सीताघरे ततखेव ॥ सीता ॥ १४ ॥
केश नैत्र पीला खगरे, तूम्बीछत्रिकाधार ।
दण्ड पाणी को५ पीन खूंरे, शिग्ही शिखा सुविचार ॥ सीता ॥ १५ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज रूयालकी स्वामी श्री नथमलजी कृत.

एक दिवस म्हेलमें नारद' देखणने आयो जानकी ॥ टेर ॥
सीता सुन्दरतिण समेंसरे. बैठी म्हैल मझार,
दर्पण आगे शोभतोसरे, प्रतिबिम्ब परखो तिणवारजी ॥ टेर ॥ १ ॥

आज्ञा–रजा । २ युद्ध ३ देश । ४ सघलो । ५ लंगोटी। ६ चोटी ।

ढाल मूलगी

'नारद' रूप डरामणूं रे, देखी 'सीता बाल'।
नाठी थरहर धूजती रे, गई घरमां ततकाल ॥ सीता ॥ १६ ॥

ढाल च्षेपक तर्ज–ख्याल की

देखी डरपी जानकी सरे, ओ कुण आयो एथ।
राज भवन में रङ्ग सूं सरे, चाल्यो जावे केथ रे ॥एक दिवस २॥
हूं हूं करने 'सीता' नाठी, काढो महलां बार।
दास्यां सघली होगई दोली, पकड़ी जटा तिवार रे ॥ एक ॥३॥
कोईयक मारे बकाज देवे बोले वचन अकार।
'नारद' चिन्ते नाहक आयो, जाणी रघुवर नार रे एक ॥ ४ ॥
मनमें इणरे मान घणेरो, पिण हूं देऊं ऊतार।
पडीयो फंद बंद छुट जावे तो, लेऊं खबर अबार रे ॥ एक ५ ॥

—ढाल मूलगी—

कण्ठ शिखा बांहै धरी रे, द्वारपाल ने दास।
सोही[१] रह्या जई ना सकेरे, हरिण पड्यो जिम पास ॥सीता १७॥
कल कल सुणी जन आवीया रे, हाथ ग्रही हथियार।
मार मार करता थकारे, जाणे जम अवतार ॥ सीता ॥ १८ ॥
'नारद' ऋषि ने देखतांरे, सुसता पड़िया सोय।
शनैः[२] शनैः सहु नीकल्यारे, काम करे सो जोय ॥ सीता १९॥
'रूप' लखि सीता तणो रे, 'भामण्डल' ने आय।
देखाड़े पट देखतां रे, कुंवर दुचिन्तो थाय ॥ सीता ॥ २० ॥
दुचिंताई कुंवर तणी रे, पूछे मित्रां साथ।
पट तदा ते दाखवेरे, ऋषि पूछ्यो 'नरनाथ' ॥ सीता ॥ २१ ॥

स्वा० श्री नथमलजी म० कृत.

ढाज च्षेपक तर्ज–बामण का आठ कूवा नव बावड़ी

महाराजाजी इक दिन मिथीलापुर गयो, महा–राजभवन के मांह,
म० तिहां दीठी इक सुन्दरी, म० स्वर्ग मृत्यु में नांय, म०
नारदजी इण पर कहै ॥ टेर ॥

१ पकड़ी रह्या पाठान्तरे। २ धीमे धीमे।

ढाल मूलगी

मिथिला नगरी छे भली रे, 'जनक' तिहां भूपाल ।
'विदेहा' उदरे ऊपनी रे, 'सीता' रूप रसाल ॥ सीता ॥२२॥
अमरी[1] कुंवरी नागनी रे, मैं दीठी अवि लोय ।
वारम्बार विचारतां रे, 'सीता' सम नहीं कोय ॥ सीता ॥२३॥
जेहवी छे सा सुन्दरी रे, तेहवी लखि न जाय ।
लखि तैसी कही को सकेरे, अचरज है खग राय ॥ सी ॥२४॥
'भामण्डल' ने भामिनी रे, जहरे मिले इक जोड़ ।
साचू सुख संसारनूंरे, म्हारे मन ए कोड ॥ सीता ॥ २५ ॥

ढाल क्षेपक पूर्ववत्

महाराजाजी हम जोगी जंगल फिरां महा० नहीं नारी में ध्यान, महा० तो घर आवे या कामनी महा० होवे परम कल्याण, म० नारदजी ॥ २ ॥ महा० दीधी 'दशरथ' नन्दने, म० इसड़ी सुणी में वात. म० शक्ती हुवे जो आपरी, म० तो तुमे घालजो हाथ । म० ॥ नारदजी ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी

सुत वचने संतोषीयो रे, भलू करे करतार ।
विसर्जीयो ऋषि राजीयो रे, उघमनो अधिकार ॥ सीता ॥२६॥
खग[2] 'चपलगति' मोकल्यो रे, करवाने अपहार ।

दोहा क्षेपक

नभचर[3] उड्यो आकाश में, ऊतरयो मिथीला मांय ।
कीयो रूप हयको सही, कांहूं धीरज नांय ॥ १ ॥
लोक मिली सहु जनकपे, कीधी ए अरदास ।
अश्व मण्ड्यो धोकल शबद, करे सबन को नाश ॥ २ ॥

सोरठा—राजा गज असवार, आयो हयने पकड़वा ।
कपट तणो बहुपार, कैसे पावे आदमी ॥ १ ॥

१ देवी । २ आकाश में उड़ने वाला । ३ नभ आकाश—चर—यानी फिरने वाला ।

—सवैयो—

देखो भूलोक में न भूम को चलणहार ।
ऐसो हय ताजी वाजी नट जो करतू है ॥
तातो है तुङ्ग रङ्ग शोभित अनेक अङ्ग ।
वाजित्र मृदङ्ग खुर मनकूं हरतू है ॥
वण्यो है शृंगार जिम जड़ित जड़ाव जड्यो ।
जाकी अति शोभा दीसे ऊजलू भरतू है ॥
ऐसो हय छूटो रवि रथ केण गाव सेती ।
जैसो एह चंचल महा चपल पवंगू है ॥ १ ॥

—अडियल छन्द—

हय ऊपर तिणवार मुकुट शिर भूपरे, होय गयो असवार, रायते ऊपरे, हय ले चल्यो आकाश. वास तिहां जनक को, आय मुंक्यो तेह ठाम आवास शोभित तीको ॥ १ ॥

ढाल मूलगी

राजा लेही आवीयो रे, किणही न जाणी सार ॥ सीता ॥२७॥
उठी आयो साहमोरे, मिलियो बांह पसार ।
कुशल बात पूछी घणी रे, प्रीती तणे रे प्रकार ॥ सीता ॥ २८ ॥
'जनक' ! तुम्हारी सांभली रे, पुत्री रत्न प्रधान ।
नारी निरूपम जेटली रे, तेहमां तिलक समान ॥ सीता ॥ २९ ॥
अच्छे अनूपम कन्यकारे, जिम तुम भाखी तेम ।
सर्व कलायुत आगली रे. पण देवाये केम ॥ सीता ॥ ३० ॥
दीधी 'दशरथ' नन्दने रे, अवरने केम देवाय ?
मणि माथे छे सापने रे. कहो किम लीधी जाय ॥ सीता ॥३१॥
प्रीती भणी मांगूं अछे रे, नहीं तरतो अपहार[१] ।
करतां वेला छे कीसी रे, राखू छूं व्यवहार ॥ सीता ॥ ३२ ॥
अमने जीती रामजी रे, परणे कन्या एह ।
के 'भामण्डल' परणसे रे, एमां नहीं को संदेह ॥ सीता ॥ ३३ ॥

१ हरीजवू ।

ढाल मूलगी

'वज्रावर्तज' नामथी रे, अने अरणवा वर्त ।
धनुष्य अछे घर माहेरे, मण्डपे आणी धरंत ॥ सीता ॥ ३४ ॥
यक्ष हजारे सेवियां रे, अतिशय वन्त अतीव ।
गौत्रज देवीनी परेरे, सेवीये रे सदीव ॥ सीता ॥ ३५ ॥
धनुष्य नमायां हमनम्यारे, रुकटी[1] करवा नेम ।
समजो सीधी वातमां रे, जेम आपणो रहै प्रेम ॥ सीता ॥ ३६ ॥
एह अचम्भो छे खरो रे, एतो प्रत्यक्ष आज ।
एकहीने[2] चहोडवे रे, सारो वछित काज ॥ सीता ॥ ३७ ॥

ढाल चेपक मूलगी

धनुष्य दोय उहां लाय धरीये, कुलक्रम सेवा ही करीये, साधे सो कुंवरी ने वरीये । 'जनकने' भरियो होंकारो, विद्याधर सर्व हुवा लारो ॥ सत्य ॥ २३ ॥

—ढाल मूलगी—

खेचर 'चन्द्रगति' चालीयोरे, पुत्र अने परिवार ।
धनुष्य दोय साथे भलां रे, राजा लेई लार ॥ सीता ॥ ३८ ॥
'मिथिला' नगरी आवीयो रे, बाहिर डेरा दीध ।
वर्णन तो विद्या धरो रे, पृथिवी मांही प्रसिद्ध ॥ सीता ॥ ३९ ॥
अष्टादशमीं ढाल में रे, वस्तु भलीनी चाय ।
'केशराज' पूणे सही रे, जो होय पूण्य अगाह ॥ सीता ॥ ४० ॥

दोहा (मारु रागे)

'जनक' 'विदेहा' नारि सूं, सम्भलावी सहु वाय ।
सालमृमी साले सहु, कहै राणी विललाय ॥ १ ॥
दैवन तृप्रो तूं हुयो, लीधो पुत्र प्रधान ।
लेवी चाहै पुत्रीका, केम राख सूं प्राण ॥ २ ॥
स्वेच्छाए परणेतनो, हर्ष घणो संसार ।
अण इच्छाए परणेतनो, हर्ष न होय लगार ॥ ३ ॥

१ योग तजवीज, इच्छा (शक्ति) । २ एक धनुष्य ने चढ़ाववाथी ।

दैवयोगे श्री 'रामजी' धनुष्य चढ़ावा आय ।
अवरनेरे चढावतां, अणसर्ज्यूं दुःख थाय ॥ ४ ॥
'जनक' कहै जाणे नहीं, 'राम' महा बलवंत ।
मैं दीठो संग्राम में, पौरस नो नहीं अन्त ॥ ५ ॥
समजावीसा सुन्दरी, पूजी धनुष्य उदार ।
मण्डप मांही तेड़ीया, राजा राज कुंवार ॥ ६ ॥

ढाल चेदक मूलगी

सहुको मिथिला ही आया, स्वयम्वर मण्डप मण्डवाया, अयोध्या दूत पठवाया । सबल बल 'रामचन्द्र' धायो, भ्रात ले मिथिलापुर आयो ॥ सत्य व्रत पालो ॥ २४ ॥ 'जानकी' स्वयम्वर आवे, साथ सहु सखियन सोहावे, मनमें 'रामचन्द्र' ध्यावे । दैव से अर्जी ही कीजे, क मुजने 'रघुवर' वर दीजे ॥ सत्य व्रत ॥२५॥

धूलचन्दजी कृत त्तेपक तर्ज-माली थारा बाग में दोय नारङ्गीयां पाकीरेलो

फाबे अम्बर फूटरा पहिरण पञ्चरङ्गारे लो, अहो, पहि० ॥
अंजन-मंजन आंजीया, शिर आड सुचंगारे लो. अहो. शिर०॥१॥
झलके कुण्डल जोडला, तीखा तम्बोलोरे लो. अहो. तीखा० ॥
अधर रंग्या आछीतरे, राता रङ्गरोलोरे लो. अहो. राता० ॥ २ ॥
हार-धरिया हीयापरे, नीका नवसरियारे लो. अहो. नीका० ॥
करमें कंकण-कन्यका, भली परवरीयारे लो. अहो. भली०॥ ३ ॥
बम्भल नयनी भामिनी वर रूप विराजेरे लो. अहो. वर० ॥
इन्द्राणीरती अप्सरा, लक्ष्मीपिन लाजेरे लो. अहो. ल० ॥ ४ ॥
इन्द्राणी जिम ओपती. सब वेष मनूरीरे लो. अहो. सब० ॥
शील सुरंगी सुन्दरी, पतिभक्ता पूरीरे लो. अहो. पति० ॥ ५ ॥

स्वामी श्री रावतमलजी म० कृत त्तेपक तर्ज-माता सीता की गोदी में

आई-जनक-सुता सखि साथ. हाथ वर मालिकारे ।
दीसे इन्द्राणी अवतार अनोपम बालिकारे ॥ टेर ॥
सजकर सोले तन सिणगार, धार पति राम नेरे ।

आवे स्वयम्वर मण्डप मांय, विलोके भूप-रूप-तन तांय ।
इणपर बोले विस्मय पाय ॥ आई० ॥ १ ॥
अहो यह कन्याने करतार रूप किम आपीयोरे ।
पूर्व पुण्य किया जिन प्राणी, जिन्हकी होसी यह पटराणी ।
ऐसी मुख २ होरही वाणी ॥ आई० ॥ २ ॥

दोहा—दिव्या भूषण धारीने, सखियो ने परिवार ।
मण्डपे आवी जानकी, ईन्द्राणी अवतार ॥ ७ ॥
धनुष्य तणी पूजा करी, मनमें समरे राम ।
मनसा वाचा कर्मणा, अवरां सूं नहीं काम ॥ ८ ॥

स्वामी श्रीनथमलजी म. कृत-ढाल क्षेपक तर्ज-परभव की खर्ची लेलो

'रामचन्द्र' मुजवर भावे, दूजो दाय नहीं आवे ॥ टेर ॥
'रघुवर' टाली ने वर दूजो, जनक भ्रात सम दिखलावे ।राम १।
सोहिनी सूरत मोहनी मूरत, सूरत ही अहो निशी जावे । राम २।
चाप चढे तो कहा न चढे तो, हम दिल अवर नहीं खावे । राम ३।

—सवैया—

धेनु भरी निहचे सजनी पुनि, तात हितेपन मेरो महा है ।
सुन्दर रूप सुरूप सखी, पन मोमन में रमराम रहा है ॥
मोतिन मार नो डार चूकी, उरधार चूकी अपनो दुलहा है ॥
चाप निगोडो अबे जरजाह, 'चढ्यो तो कहा न चड़े तो कहा है॥ १॥

ढाल क्षेपक तर्ज-पूर्ववत्

काच पाचके अन्तर बहुलो, अमृत तज विष कुण खावे ॥राम॥४॥
मुझ मनमें तो निश्चय करीयो, नाथ अयोध्या दिलचावे॥राम॥५॥

ढाल मूलगी क्षेपक

धनुष्य की पूजाही करती, राम को नाम अनुसरती, दिल बिच ध्यान ही धरती, श्रोतां जन सुणजो अब सारा, पहिरे कुण सिय की वरमाला ॥ सत्य० ॥ २६ ॥

ढाल उगणीशवीं तर्ज-काना प्रीत लागी हो ॥

'सीता' 'रामे' राचीहो, जेम चकोरी चंदसूं ए प्रीतज साची हो ।१।

भूचर खेचर राजवी, भरमाणा भारी हो।
भाग्य वडो ते भूपनो, जे ए पावे नारी हो ॥ सीता ॥ २ ॥
नारदे भाखी जेहवी, सा तेहवी जोई हो।
'भामण्डल' भूंई पड्यो, अति परवस्य होई हो ॥ सीता ॥ ३ ॥
'जनक' राम तिहां आयके, ए साच कहावे हो।
धनुष्य चढावे जे सही, ते ए कन्या पावे हो ॥ सीता ॥ ४ ॥
ऊठ्या केड काठीकरी, जे राय सनूरा हो।
धनुष्य चढावण करणे, शूरामां शूरा हो ॥ सीता ॥ ५ ॥
सापां साथे वींटोया, नावे गहता ऊंहो।
फरसी हो कोई नासके, जे गाढा ताऊंहो ॥ सीता ॥ ६ ॥
ज्वाला मूके छे घणी, दाजन्ता भाजी हो।
अधो[1] मुख अलगा रह्या, मन मांही लाजी हो ॥ सीता ॥ ७ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी

विद्याधर चाप पास आवे, अहि अरु अगनी दीखावे, भाग्य विन ऐसा ही थावे। कहो कुण चाप पास जावे, जावे सो शर्म रहित आवे ॥ सत्य० ॥ २७। सहुको अलगा ही नाठा, धनुष्य के आगे ही त्राठा, पूर्वभव पाप कीया माठा। रोस कर रघुवरजी ऊठे, सुमित्रा नन्द है पूठे। सत्य व्रत पालो ॥ २८।

—ढाल मूलगी—

इण अवसर श्री 'रामजी', लीला गति कारी हो।
धनुष्य समीपे आवीयो, आछो अवतारी हो ॥ सीता ॥ ८ ॥
'चन्द्र गत्यादिक' राजवी, करता अति हासोहो।
खेचर खेंचीनठहेयों, एहनी शो आशोहो ॥ सीता ॥ ९ ॥
वज्र[2] पाणी जिम वज्र ने, राघवजी' हरसे हो।
शान्त करी अहि अग्नी ने, कर साथे फरसे हो ॥ सीता ॥ १० ॥

—ढाल क्षेपक तर्ज—खड़का—

प्रबलबली आवीयो धावीयो रघुपति',(टेर)धनुष्य सहामो तिणवार आवे

१ नीचूं। २ इन्द्र।

पूण्यके सन्मुख पाप अलगो हुवे, तेम सगला उपद्रव पुलावे । प्र० । १ ।
वज्रावर्त नामथी धनुष्य सूर सेवना, सहश्र गमे सानिधि देवा ।
मोरका शोर सुन सर्प अलगा हुवे, तेमने निकट कोईयन रहेवा ।प्र. २।
पूजी अर्ची करी आप सम्भावीयो, ऐंचोयो खांच कर्णान्त तांई ।

ढाल मूलगी

नेत्र१ तणी पर वालीने, प्रभु पणछ चढावे हो ।
आंख कर्णान्तिक खेंचीने, टंकारव सुणावे हो ॥ सीता ॥ ११ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज-पूर्ववत्

धनुष्य टंकारथी शब्द उठ्यो इसो, जाणेके प्रलयसमो दिखाई ।प्र. ।३।
पर्वत शृङ्ग तूटी परे धरणपे, समुद्र ना जलजिहां क्षोभपावे ।
शेषपिण खलबल्या, देवपिण टलवल्या हयगय बंधन तोड़ जावे ।प्र.४।

ढाल क्षेपक पूर्ववत्

शब्द यह 'चन्द्रगति' सुनिया. शोच से मस्तक ही धुनिया, अरे हम होगये हित पुनीया । धनुष्य निज खोय दीया दोई, आये निज स्थान मान खोई ॥ सत्य व्रत पालो ॥ २९ ॥

ढाल मूलगी

'राम' गले वरमालिका. 'सीता' पहिरावे हो ।
काज सर्यू चित्त चिन्तव्यू. अधिकूं सुख पावे हो ॥ सीता ॥१२॥

क्षेपक ढाल मूलगी

जानिकी अधिकी हरखावे, माल गल रघुवर के ठावे, स्त्रियां मिल मङ्गल ही गावे । व्याव का बाजा वजवावे, अपर नृप निज निज पुर जावे ॥ सत्य ॥ ३० ॥

ढाल मूलगी

वीजोर 'लक्ष्मण' चढावीयो. एह विधी कीधी हो ।
अष्टा दश वर कन्य का, खग रायों दीधी हो ॥ सीता ॥ १३ ॥
विलखाणो विद्याधरु, 'भामण्डल' लेई हो ।
निज नगरे चलि आवीयो, भूमण्डले केई हो ॥ सीता ॥ १४ ॥
तेड़्या दशरथ राजवी, सहु सज्जन साथे हो ॥

१ नेतरनी सोटी । २ अर्णवा वर्त ।

—ढाल मूलगी—

रायतिहां 'दशरथ' बोलावे, हर्ष दिल मिथिला में आवे, जनक नृप सामो ही जावे। महिपति दोनों ही मिलीया, दूध में शाकर ही भिलीया ॥ सत्य ॥ ३१ ॥ बनड़ा की खूब करी त्यारी, शहर में आई असवारी, निरखवा आया नरनारी। मूर्ती देखी नहीं आगे, लोक कहै बनड़ो ओ सागे ॥ सत्य व्रत ॥ ३२ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज—ख्याल की

तूं चाल चंपली, बनडो आयो है माणक चौक में ॥ टेर ॥
झमकू चाली जोर से सरे, दोली आई दौड़।
हुलासीरो हार सहैल्यां, तटके नाक्यो तोड़ रे ॥ तूं चाल ॥ १ ॥
हंजा हेलो पाडीयो सरे, आव ऊरी उमराव।
जमनी तो झाला करे सरे, अणची वेगी आवरे ॥ तूं चाल ॥ २ ॥
पानी रो तो पतो न लागो, वाली गमायो बोर।
चांदा चाली कर-चतुराई, सुंजी मचायो शौर रे ॥ तूं चाल ॥ ३ ॥
लाली लागी देखवा सरे, भंवरी भांगी भीड़।
चुतरी तो चूडो फूटगीयो, चुनी फाड्यो चीर रे ॥ तूं चाल ॥ ४ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज-पदरी—धूलचन्दजी कृत

बनड़ो घूमरयो छे जी, राजा 'जनकजी' रे द्वार ॥ टेर ॥ विद्याधर को मान मारीयो, असुर मनाई हार, बड़े २ भूपती ए सेवित, इण सम नहीं संसार ॥ ब० ॥ १ ॥ सुरपति सरिसो एहनो, मोह रया नरनार। धन्य २ जानि की कूवरी, भल पायो भरतार। ब.२।

ढाल मूलगी

विवाह भलो सीता तणो कीधो नरनाथे हो ॥ सीता ॥ ३५ ॥

ढाल क्षेपकतर्ज—नखरो जोर बण्योरे छिन्दगारी को
स्वामी श्रीमगलमलजी म. कृत (स्वामीजी श्रीरावतमलजी म. से उपलब्ध)

सखरो भाग्य भलो रे सीया नारी को, जग जश छायो रे जनक कुँवारी को ॥ टेर ॥ धन्य २ सती सीया, पूर्व पूण्य कीया, पायो पति अवतारी को ॥ सखरो ॥ १ ॥ धनुष्य नमायो भारी, प्रबल प्रताप कारी, मान मिटायो अहंकारी को ॥ सखरो ॥ २ ॥ जुग

जुग चिरंजीवो, दशरथ कुल दीवो, मन मोह्योरे त्रिय मिथिलारी रो ॥ सखरो ॥ ३ ॥ 'मगन' मुनि कहै, पूण्य सेथी जश लहै, पूण्य आधार संसारी को ॥ सखरो ॥ ४ ॥

ढाल मूलगी

जनकराय नो भाईजी, भलो 'कनक' कहावे हो ।
'भरत' भणी 'भद्रावली' पुत्री परणावे हो ॥ सीता ॥ १६ ॥
पुत्रो ने परणावी ने, बहु ने लेई आया हो ।
'दशरथ' राजा दायजो, अधिकोरे लाया हो ॥ सीता ॥ १७ ॥
पुरी 'अयोध्या' आवीया, आनन्द करीजे हो ।
घर घर रङ्ग वधामणा, अति ओच्छव कीजे हो ॥ सीता ॥१८॥
अनेरे दिन रायजी, ओछव मण्डावे हो ।
मंगलीक शुभ कारणे, जल कलशभरावे हो ॥ सीता ॥ १९ ॥
खोजा१ साथे मोकल्यू, पहेलू जल राये हो ।
म्होटीने२ मन रङ्ग सूं, अधिको उच्छाये हो ॥ सीता ॥ २० ॥
दासी साथे मोकल्यू, अवर स्त्रियों ने पाणी हो ।
आणी दीधू उतावलू, हर्षी ते राणी हो ॥ सीता ॥ २१ ॥
वृद्ध भणी ते वेग सूं, नाजर न लाव्यो पाणी हो ।
पटराणी उतावली, मनमांहै अकुलाणी हो ॥ सीता ॥ २२ ॥
सघली मांहै हूंवडी, मुजने जल नाप्यू हो ।
मान बिना शूंजी ववूं, मरवा मन थाप्यू हो ॥ सीता ॥ २३ ॥
एम विमासी३ मांडीयो, राणी गल पासो४ हो ।
सोच५ नहीं नारी उन्है, ए देखो तमासो हो ॥ सीता ॥ २४ ॥
एटले राजा आवीयो, ते पासो कापे हो ।
बांहै ग्रही सा सुन्दरी, उत्संगे६ थापे हो ॥ सीता ॥ २५ ॥
कांई मरे तूं मानवी, कहै कोणे अपमानो हो ?

---

१ अन्तःपुरमा रहनार नपुंसक, जेने नाजर कहै छे, तेरा फारसी भाषा नो शब्द छे, । (ख्वाजह) । २ कौशल्याने । ३ विमासवूं । म्होटा विचारमां अन्देशामां पडवूंते । ४ फांसो (पाश) । ५ अफशोश । ६ खोले ।

आंसू न्हांखी भारवती, सा गद् गद् वाणी हो ॥ सीता ॥ २६ ॥
अवरोने जल मोकल्यू, हूं क्यूं चित न आणी हो ? ।
एटले नाजर आवीयूं, ते आयो पाणी हो ॥ सीता ॥ २७ ॥
पाणी मस्तक मूकीयू, राणी सुख मान्यू हो ।
धन्य जमारो माहरो, मैं आजज जाण्यू हो ॥ सीता ॥ २८ ॥
राजाए नाजर ने पूछीयू, केम वार लगाई हो ।
वृद्ध भणी प्रभु वेग सूं, हूं नहीं शक्यू आई हो ॥ सीता ॥ २९ ॥
शुद्धा पांव पड़े नहीं, चालन्ता पग घासूं हो ।
खूं २ करतो खांसतो, सुगालो दीसूं हो ॥ सीता ॥ ३० ॥
दांत पड्या खोखो थयो, मुख लाल पडन्ती हो ।
नारी न आवे आसनी, नचिसार करन्ती हो ॥ सीता ॥ ३१ ॥
जोर घटे तन लीलरी, काने न सुणाय हो ।
कर कम्पे शिर धूजणी, बूढापाये थाय हो ॥ सीता ॥ ३२ ।

ढाल देहक तर्ज-धमाल-स्वामी श्री रतनचन्दजी म० कृत.

मात पिता सुत बांधवा हो, सगा सनेही मित्त ।
परणी हाथरी पदमणी हो, ते पिण न देवे चित्त ॥ १ ॥
बूढापो वैरी आवीयो हो ॥ टेर ॥
बोलन्ता जीभ थडथडू हो, कांनां सुणे नहीं वेण ।
नाकन आवे वासना हो, झररह्या दोनों नेण ॥ बूढापो ॥ २ ॥
काया पड़ गई जोजरी हो, पग पड़े नहीं ठाय ।
डांग पकड ऊभो रहे हो, अठी उठी पड जाय । बूढापो ॥ ३ ॥
दांत श्रेणी खोली पडी हो, टिर रह्या दोनों होट ।
लालां ललकी मुख थकी हो, आय पड़ी जरातणो पोट ॥ बू. ४ ॥
साथल बलखीणो पड्यो हो, सल पड़ गया शरीर ।
निकली हाडरी पासली हो, हुय गयो धोलो पीर ॥ बूढापो ५ ॥
सास खास वधियो घणो हो, आवे मींट अपार ।
डेहली होगई डूङ्गरी हो, सो कोशथयोरे बाजार ॥ बूढापो ॥ ६ ॥

वात कहै जो हिततणी हो, तो नवि माने कोय ।
साठी बुद्ध नाठी कहै हो, सुणने सोमां रह्यो जोय ॥ बूढापो ७

ढाल मूलगी

बूढापना दोषए, राजाजी, जाणे हो ।
विषय थकी मन वाली ने, वैरागे आणे हो ॥ सीता ॥ ३३ ॥
'सत्यभूती' नामे भला,मुनिवर चउनाणी हो ।
वनमें आवी समोसर्या, गुरु आगम जाणो हो ॥ सीता ॥३४॥
पुत्रों सूं तव रायजी, बहुयरने साथ हो ।
वन्दन काजे आवीया, पुरलोक उल्लास हो ॥ सीता ॥ ३५ ॥
देई प्रदिक्षणा साधुने, पद पंकज वन्दे हो ।
सन्मुख सेवा साचवे, भव पाप निकन्दे हो ॥ सीता ॥ ३६ ॥
'चन्द्रगति' सुत नारी सूं, खेचर परिवारे हो ।
'रथ[१] आवर्त' जपरवते, जई क्रीड़ा कारे हो ॥ सीता ॥ ३७ ॥
बाहुड़तां[२] निजरे पड्या, ऋषि राय विराजे हो ।
आवीने सेवा करे, ऋषि देशना साजे हो ॥ सीता ॥ ३८ ॥
अभिलाषी 'सीता' तणो, 'भामण्डल' दीठो हो ॥
मात पिता सुत नारीनो, भव भाख्यो मीठो हो ॥ सीता० ॥३९॥
'भामण्डल' 'सीता' सही युगलपणे जायां हो ॥
मात विदेहा जाणवी, कहीने समजाया हो ॥ सीता० ॥ ४० ॥
'पिंगल' देवे तूं हर्यो, निज वैर विचारी हो ॥
तूं वाध्यो खग मन्दिरे, घरे एह कुंवारी हो ॥ सीता० ॥ ४१ ॥
जाती स्मरण पामीने, 'भामण्डल' देखे हो ॥
साधु वदे साचो सहु, मनमांहै विशेषे हो ॥ सीता० ॥ ४२ ॥
मूर्छाए धरती पड्यो, ऊपाड़ी लीधो हो ॥
पगे लाग्यो सीता तणे, मैं अविनय कीधो हो ॥ सीता० ॥ ४३

१ रथावर्त । २ पाछा फरता ।

दीपक ढाल मूलगी

मुनिपे भेदही पायो, 'भामण्डल' सुनके घबरायो, हाय मैं अनरथ करवायो ॥ बहिन से वंछना कीनी, नरकनी नीव मैं दीनी ॥ सत्य व्रत पालो ॥३३॥ मुनि कहै कर्मगती भारी, टरे नहीं कोई से टारी, सीता तो बेन है थारी ॥ आयने शीष ही नामे, निज कृत दोष ही खामे ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ३४ ॥

ढाल मूलगी—

सीता दे आशीषजी, चिरंजीवो भाई हो ॥
करे घणी पगे लागणी, मावित्र बोलाई हो ॥ सीता० ॥ ४४ ॥
धाय मिलिया 'रामजी' लीये कण्ठ लगाई हो ॥
मिश्रीथी मीठी खरी, जगमें एह सगाई हो ॥ सीता० ॥ ४५ ॥
'भामण्डल' पट थापीयो, आपणपे राजा हो ॥
वैरागे व्रत आदरे, गुरु तारण जाजा हो ॥ सीता० ॥ ४६ ॥
साधु नमी राजा नमी, नमी 'राघव' राया हो ॥
'भामण्डल' सीता नमी निज मन्दिरे आया हो ॥ सीता० ॥४७॥
ढाल भली उगणीसवीं, सीता परणावी हो ॥
'केशराज' श्री रामनी, पटनारी कहावी हो ॥ सीता० ॥ ४८ ॥

दोहा (सबाब रागे)

'सत्यभूती' मुनिवर भलो, सत्यदेव सुविशाल ॥
शाशन सोह[१] वधारणो, षट् कायां प्रतिपाल ॥ १ ॥
विधिसुं देई प्रदक्षिणा, करजोडी नरनाथ ॥
प्रश्न करे प्रगट पणे, निसुणे सघलो साथ ॥ २ ॥

—ढाल वीशवीं तर्ज—वीर नृपती अन्यदास में (हमीरीयारी)—

हमसुं भाखो एहजी, पूर्व भवान्तर वात ॥ साधुजी ॥
सुख दुःखनो अवदातजी, वांदी जमारो जात ॥ साधुजी ॥हम १॥
'सेनापुर' थो सुन्दरूं, 'भावन शाह' सुजाण ॥ साधुजी ॥
पत्नी[२] थी तसु दीपिका, सुता 'उपास्ति' अजाण ॥ सा० ॥हम २॥

१ शोभा वधारनार । २ स्त्रीहती ।

साधु नी निन्दा करी, भव में भमी अपार ॥ साधुजी ॥
जीव तुम्हारो ओअछे, आगे सुणो अधिकार ॥ सा० ॥ हम ३ ॥
'चन्द्रपुरी' रे सुहामणी, 'धनगिरी' सुन्दरी नार ॥ साधुजी ॥
'वरुण' नामे सुत जाईयो, वर्ते शुभ व्यवहार ॥ सा० ॥ हम ४ ॥
साधुनी सेवा करे, श्रद्धालु समभाय ॥ साधुजी ॥
सुख दुःख ना अनुसारथी, मतितो उपजे आय ॥ सा० ॥ हम५॥
धातकी खण्डे जाणीये, उत्तर कुरुवर खेत ॥ साधुजी ॥
युगल पणे तिहां ऊपन्यो, शुभ कर्मो नो हेत ॥ साधुजी ॥हम ६॥
तीन पल्यनो आऊखो, भोगवी सुर सुखसार ॥ साधुजी ॥
'पुख्खला' नामेछे पूरी' 'पुख्खलावती' मजार ॥ सा० ॥ हम ७॥
'नन्दीघोष' राजा भलो, पृथ्वी राणी होय ॥ साधुजी ॥
'नंदी वर्द्धन' नामथी, नन्दन नीको जोय ॥ सा० ॥ हम ॥ ८ ॥
'नंदी वर्द्धन' ने दीयो, राये राज्य तेवार ॥ साधुजी ॥
'यशोधर' गुरु पाखनी[१], आप हुवा अणगार ॥ सा० ॥ हम ९ ॥
श्रावक नां व्रत पालीयां, पंचम कल्पे देव ॥ साधुजी ॥
जय २ कार हुवो घणो, सुरवर मारे सेव ॥ सा० ॥ हम ॥१० ॥
पूर्व विदेहै जाणीये, वैताढ्ये गुवि शेष ॥ साधुजी ॥
उत्तर श्रेणीएछे भलो, 'शशीपुर' नामे देश ॥ सा० ॥ हम ११ ॥
'रत्नमाली' विद्याधरु, 'विद्युतलता' नार ॥ साधुजी ॥
'सूर्य जय' जय कारीयो, पुत्र भलो अवधार ॥ सा० ॥ हम १२॥
'रत्नमाली' नृप चालीयो, 'सिंहपुरी' नो ईश ॥ साधुजी ॥
'वज्र नयन' ने जीतवा, मनमें आणी रीस सा० ॥ हम १३ ॥
सिंहपुरी ने बालतो, बाले अवला बाल ॥ साधुजी ॥
पशु[२] पंखीथी नाटले, होई रह्या विक्राल ॥ सा० ॥ हम १४ ॥
पूर्व जन्म तणो भलो, पुरोहित नो जीव ॥ सा०
'उपमन्यु' ए नामथी, देव दयाल सदीव ॥ सा० ॥ हम १५ ॥
'सहश्रार' सुरलोकथी, आवी बोले एम ॥ सा०

१ पासे (पाछलयरण पासे) । २ पशु पंखीथी नहीं डरतां विक्राल थई रह्योछे

उत्कृष्ट पातिक एहवूं, तुमने सूजे केम ? ॥ सा० ॥ इम १६ ॥
'भूरीसुनन्दन' तू हतो, पूर्व जन्मांरे राय ॥ सा०
मांस तज्यो तो थें सही, विप्र खवाड़यो आय ॥ सा० ॥इम १७॥
सोही पुरोहित[१] एकदा, स्कंद हण्यो गजथाय ॥ सा०
'भूरी सुनन्दन' राजीए, घरे आण्यो गहताय ॥ सा० ॥इम १८॥
सो हाथी रण में हण्यो, 'भूरी सुनंदन' थाम ॥ सा०
गंधारी उदरे ऊपन्यों, ,अरि सुदन' तस नाम ॥ सा० ॥इम १९॥
जाति स्मरण पामीयो, लीधो संयमभार ॥ सा०
कल्प आठमें देवता, सोहै देव उदार ॥ सा० ॥ इम ॥ २० ॥
'भूरी सुनन्दन' पामीयो, अजगरनो अवतार ॥ सा०
दावानल मांही बल्यो. कर्म न चूके लार ॥ सा० इम ॥ २१ ॥
नरके पहूंच्यो दूसरे. उहांही में तुज आय ॥ सा०
समजाव्यो ते कारणे, एतूं हुवो राय ॥ सा० ॥ इम ॥ २२ ॥
मांस तलीने वापर्यूं. तेहनो ए फल लाध ॥ सा०
आज होईने आकरो. कांई करे अपराध ॥ सा० ॥ इम ॥ २३ ॥
एम सुणीने ऊवख्यां, 'कुल नन्दन' नृप कीध ॥ सा०
'सूर्यजय' साथे करी, राजा संयम लीध ॥ सा० ॥ इम ॥ २४ ॥
स्वर्ग सातमें भोगवी, सुरसुखनो विस्तार ॥ सा०
'सूर्यजय' चवी तूं हुवो, 'दशरथ' राय उदार ॥ सा० ॥ इम २५॥
'रत्नमाली' आवी हुवा, 'जनक' रायजी एह ॥ सा०
'कनक' 'जनक' भाई भलो. उपमन्यु ससनेह ॥ सा० ॥ इम २६॥
'नंदीघोष' ग्रैव्येकनां, भोगवी सुरसुख भूरी ॥ सा०
'सत्य भूती' ए हूं हुवो, सूरि शिरोमणि सूरी ॥ सा० ॥ इम २७॥
एम सुणी वैरागीया, प्रणमी गुरुना पाय ॥ सा०
राजा मंदिर आवीयो, लोक लीधा बोलाय ॥ सा० ॥ इम ॥२८॥

१ पुरोहित कहे छे के हुं पुरोहितनाभवे स्कन्ध राजाना मारवाथी मरीने हाथी थयो, त्यांथी मरीने भूरीनन्दन राजानी स्त्री गंधारी ना पेटे पुत्र पणे ऊपन्यो ।

पुत्र पनोता पूछियूं, पूछ्यूं वडा मंत्रीश ॥ सा०
पूछी मघली राणी ने, संयम साधे जगीश ॥ सा० ॥ हम २९ ॥
एह वीशमीं ढाल में, पूर्व भवान्तर भेद ॥ सा०
'केशराज' गुरु भाखीयो, टल्यो सघलो खेद ॥ सा० ॥ हम ३०॥

—दोहा गौडी रागे—

'भरत' भणे प्रभुजी सुणो, हूं व्रत लेसूं लार ।
हेत न जाणो आपणो, ते साचो लोक गँवार ॥१॥
पहेलूं दुःख तो एक है, विरह तुम्हारो होय ।
अरु संसार वधारणो, कौण देखे दुःख दोय ॥२॥

—ढाल इकवीशवीं—तर्ज-कदी मिलसे मुनिवर एहवा—

'कैकेयी' राणी रे, चित्तसूं चिंतवे, पति सुत दोई जायरे ।
कीस्यूं करसूं पछे एकली, वासर[1] दुःख[2] भर थायरे ॥ १ ॥
एविधि[3] विलखित जाण्यो नविपड़े ॥ टेर ॥ जुवो अति मति साजीरे । अण घड़ीयोरे घाट घड़े घणू, वडीयो म्हांखे भांजीरे ।२।
प्रभुजी तो राख्या नवि रहे, तो हूं सुतने राखूंरे ।
वर भण्डारे जेछे माहरो, ते हूं आजज भाखूंरे ॥ एविधि ॥३॥
विनय करीने वनिता वीनवे, प्रभुजी करी परसादोरे[4] ।
आपो मुजवर जे तुमे भाखीयो, जेमपावूं अल्हादोरे ।एविधि ।४।
भूपति भाखे भामिनी सांभलो, जे चाहे ते मांगोरे ।
चारित्र निषेधक टालीने सहु, मांगी मारग लागोरे । एविधि ।५।
प्रभुजी तुमतो संयम आदरो, भरत भणी दीयो राजोरे ।
बोली वाचा पालो आपणी, ऊरण थाओ आजोरे ॥ एविधि ॥६॥
एम सुणीने स्वामी कहै सही, अवही न विले कांयरे ।
एटले 'लक्ष्मण' 'राम' पधारिया, बतलाव्या तबरायरं ।एविधि ।७।
'कैकेयी' ने स्वयम्बर मण्डपे, मांड्योथो संग्रामोरे ।
'कैकेयी' रे तिहां हुई स्वारथी, हूं जीत्यो थो तामोरे ॥एविधि ८॥

१ दिवस । २ दुःखथी भरेलो । ३ विधिना लेखनी जाण (खबर) पड़े नहीं । ४ कृपा ।

मैं वर दीधो थो ते अवसरे, सो तो अबहूं आपूंरे।
देश विलायती१ पदवी आंपणी, 'भरत' भणी अब थापूंरे।एविधि ९।
'राम' कहैरे अति अभिरामजी, एतो आछो कामोरे।
'राम' अछेरे सोई 'भरतजी' 'भरत' अछे सोई रामोरे॥ एविधि १०॥
आंखज वामिनी२ ने दाहीणी, एक सरीखी होईरे।
प्रभुजीने छै ये सारीखा, 'भरत' अने हूं दोईरे॥ एविधि ॥११॥
एम निसुणीरे अमिय समानडां, राम वचन अभिरामोरे।
मंत्री शरनेरे तेड़े एटले, भरत भणेछे तामोरे॥ एविधि ॥१२॥
हूं प्रभु साथे थाइश संजमी, अवर न बीजी वातोरे।
म्होटो बंधव पदवीनो धणी, वसुधामांहे विख्यातोरे॥एविधि १३॥
कही सुणीरे मनमें नाणीए, आप विचारी कामोरे।
करतां दुर्जन लोक हसे नहीं, अरु वधे बहु मामोरे॥एविधि १४॥
भूपति भाखे वत्स ! कहा करे, मुज प्रतिज्ञा भङ्गोरे।
मैं वर दीधो थो तुज माभणी, जब जीत्यो थो जङ्गोरे॥एविधि १५॥
सो वर ताहरी माये मांगीयो, मैं पिण दीधो देखोरे।
मात पितानी आज्ञा पालवी, तुम शाने सुविशेषोरे॥एविधि॥ १६॥
राम कहैरे तुज राजनी, नविछे वांछा कोईरे।
ताततणोरे बोल न लोपणो, हिये विमासी जोईरे॥ एविधि ॥१७॥
आंखे पाणी न्हांखतो घणां, बोले गदगद वाणीरे।
चरण कमल श्री 'राम' तणा नमी, दो कर मस्तके आणीरे।एवि, १८।

ढाल क्षेपक स्वामी श्री नथमलजी म० कृत.

तर्ज–जल्लारे आंबा पाकाने आंबलियां भलपाकी हो म्हारी जोड़ीरा जल्ला.

भर्त कहै कर जोड सुणो महाराजा हो,एम्हारी केण, भर्त कहै. राजिंद।
सब विधि लायक शोभे राम महाराजा हो, एम्हारी. सब. रा. ॥१॥
नारी कथने प्रभुजी केम विचारो हो ए म्हा० नारी० रा०।
इहभव परभव अपयश आप निहारो ए म्हा० इह० रा० ॥ २ ॥

१ ए अरबी शब्द छे तेनो अर्थ स्वदेश जन्म भूमी एवो थाय छे। २ डावी अने जमणी।

पाछल बुद्धि नारी केरी जाणो हो, एम्हा० पाछल० रा ।
केणी सुणवी प्रभुजी दिलमें नाणोहो, एम्हा० के० रा० ॥ ३ ॥
नारी कथने बहुत अकारज हुवो हो, एम्हा० नारी० रा० ।
शास्तर गावे केता देवूं दुहा हो, एम्हा० शा० रा० ॥ ४ ॥
हरगिज राज प्रभुजी मैं नहीं लेवूं हो, एम्हा० हर० रा० ।
छाने नहीं हूं षवड़े २ केवूं हो, एम्हा० छा० रा० ॥ ५ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी

राय कहै परतिज्ञा पालो, म्हारो ए ऋण ही तुम टालो, राम कहै मुजस्हामों भालो । चाय नहीं राजा की थारे, लोक सहु बैठा झक मारे ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ३५ ॥ विनयए बापनो करवो, भ्रात को बचन दिल धरवो, मात को विखादही हरवो । 'भरत' जल नैत्र ही न्हांखे, वचन मुख दीन ही भाखे ॥ सत्य व्रत ॥ ३६ ॥ राम का चरण ही ग्रहीया, आपके शरणे ही रहीया, बात ए मन की जे कहीया । हरगिज नहीं राज लू मैं तो, व्यर्थ ही झोड़ करो थे तो ॥ सत्य व्रत ॥ ३७ ॥

—सवैया—क्षेपक

भरत ! पिता की आण मानीये धर्म जाण—
मानीये न आण एतो लोक मांहीं लज्जिये ॥
भर्त कहै 'राम' सुनो नहीं मेरो काज एनो—
तुमहु अनीत करो सोही नाह रजिये ॥
राम ! तुमे करो राज सब ही की बहो लाज,
तुम बैठे अवर करे एतो वडी कजिये ।
कीजिये विनय जाको, मानिये हुकम ताको—
'राम' कहै कह्यो करे सोई दुनियां में वड़ो जश लीजिये ॥

सोरठ—जननी जणे अनेक, सो कायर किस काम का ।
पिता वचन शिर टेक, पूतवहै परमाण यह ॥ १ ॥
दोहा—पिता कहै सुण भर्त ! अब, लेहु शीघ्र तुम राज ।
पालो परजा आपणो, घणी वधारो लाज ॥ १ ॥

राज लाज मुज काम नहीं, मेरे परम सन्तोष।
हूं त्यागी संसारनो, साधू मार्ग मोक्ष ॥ २ ॥
रामोवाच—पिता वचन नहीं लोपीये, लीजे शीष चढाय।
कालपाय संयमग्रहो, वधे धर्म सुखदाय ॥ ३ ॥
रामकहै भाई भरत ! तात वचन परणाम।
सो सुबुद्धिविनीतनर, धर्मी परम सुजाण ॥ ४ ॥
भर्तोवाच—'भर्त' कहै सुण रामजी, एअनीत नहीं नीत।
पूज्यनीक तुम जगत में, करो सबन की चित्त ॥५॥

ढाल मूलगी

घणी किसीए केलवणी करो, सो वातां की एकोरे।
राम छतां हूं राजा न थाऊं, म्हारी एहिज टेकोरे ॥ एविधि १९॥
राजाजी सूं 'राम' तदाकहै, 'भरत' वचन ए साचोरे।
हूं वनवासे जावूं छूं सही, पालो तुमए वाचोरे ॥ एविधि २० ॥
आज्ञा लेईने पगे लागोयो, मूर्छाणो तब बापोरे।
भरत सुभाई रोवे छे घणूं, हाथे ग्रही शर[1] चापोरे ॥एविधि २१॥

—ढाल मूलगी क्षेपक—

वज्रसम वचन उच्चरियो, खाय नृप मूर्छा ही परीयो, धरण को शरणो ही वरियो। थयो नृप सचेतन त्यारे, कहै कित चले पुत्र प्यारे ॥ सत्य० ॥ ३८ ॥ नमनकर वनवासे चाल्यो, राज्य यह भर्त ने आल्यो, किणी रो नहीं रेवे पाल्यो। 'भर्तजी' सरल साद रोवे कहै जिन होनहार होवे ॥ सत्य० ॥ ३९ ॥

—ढाल मूलगी—

पद पंकज प्रणमी माताना, वचन वदे ससनेहोरे।
तारे नन्दन हूं छूं जेहवो, तेहवो भरतज एहोरे ॥ एविधि २२ ॥
वाचा पालवा तणे कारणे, राज्य भरतने आल्योरे।
मुज बैठो तो राज्य करे नहीं, हूं वनवासे चाल्योरे ॥एविधि २३॥
माजी साहस आणजो खरो, कायरतो मत होवोरे।

[1] बाण।

योग वियोग जग करतानो कीयो, जललेई मुख धोयोरे ।एविधि २४।
एम सुणन्तां धरतीए गीरी पड़ी. फरि २ मूर्छा पावेरे ।
शीतल ताए करावे चेतना, हैयुं धणूं भरी आवेरे ।। एविधि २५।।
हूं जीवाड़ी केही पापीये, मूर्छा थी मरी जातीरे ।
पुत्र वियोगथकी मरवू भलू काती कापे छातीरे ।। एविधि २६ ।।
प्रभुजी संयम मार्ग आदरे. सुत होवे वनवासीरे ।
वज्रमहीछे सही तूं कौशल्या, जीवे कांई विमासीरे ।।एविधि २७।।
'राम' तदारे माताद्यं कहे, एम करे केम शाणीरे ।
कायर नारीनो एकामछे, तूं वडरायां राणीरे ।। एविधि २८ ।।
सिंह एकाकी वनमांहे फरे, वे परवाही वीरोरे ।
निज जननी तो घर बैठी रहे. नाणे कोई अधीरोरे ।। एविधि २९।।
बापतणे रे शिर ऋण जो रहे, तेतो सुतनो दोषो रे ।
मुज घर रहेतां ऋण नवी उतरे, आणोए संतोषो रे ।।एविधि ३०।।
एमसमजावीने पगे लागीयो, अवर माय शिर नामी रे ।
प्रभुजी वन वसवाने चालिया, हर्षधणेरो पामी रे ।।एविधि ३१।।
इकवीशमीरे ढाले रामजी, चाल्याछे वनवासेरे ।
'केशराज' 'कैकेयी' राणीने, वचने करी सहु त्रासेरे ।। एविधि ३२।।

ढाल क्षेपक मूलली

आश्वासन देई 'रघुवरजी'. हर्ष दिल चाल्यो हितधरजी, माता अन्य नमस्कार करजी । जानकी खबर लही जामो, चले अब पियु पूठे तामो ।। सत्य० ।। ४० ।।

दोहा (गोडी रागे)

पतिव्रता व्रत साचवे, पतिसूं प्रेम अपार ।
ते सुन्दरी संसार में, दीसे छे दो चार ।। १ ।।
खावे पीवे पहिरवे, करवे भोग विलास ।
सुन्दरीनो मन सादरो, जबलग पूरे आस ।। २ ।
सुख में आवे आसनी, दुःख में अलगो जाय ।

स्वार्थणी सा सुन्दरी, सखरा[1] में न गणाय ॥ ३ ॥
सुसराने सादरपणे, सीताजी पगे लागि।
कौशल्या प्रणमी करी, चाली अनुमति मागि ॥ ४ ॥

—ढाल बावीशमीं तर्ज-विमला चल बन्दी—

खोले लीधी खांचीने, बालक नी परे तेहहो।
न्हवरावी नयनोदके[2], वाणी वदे सस नेहहो ॥ १ ॥
'राम' रसे राची घणूं, माची प्रियने प्यारहो।
साची शील शिरोमणि, सत्यवन्ती संसार हो ॥ राम० ॥ २ ॥
बहुअर ! वीराने जावादे, तूं मत जावे आप हो।
व्हालो नहींय विदेशड़ो, सहवो अति सन्ताप हो ॥ राम० ३ ॥
वाहन विविध प्रकारनां, तूं बयठी चालन्त हो।
दोहिलो पाये चालवो, कयूं हर्षे हालन्त हो ॥ राम० ॥ ४ ॥
दोहिलो तृषाअरु भूखड़ी, दोहिलो लेवो वास हो।
दोहिलो टाढने तावड़ो, रहवो नित्य उदास हो ॥ राम० ॥ ५ ॥
कोमल काया ताहरी, दोहिलो धरतीए शयन[3] हो।
पीछे ही पछतावसो, पाम्याथी कुचैन हो ॥ राम० ॥ ६ ॥
प्रियने पग बंधन कही, परदेशो में नार हो।
नारी तो घरमें भली, बाहिर पड़ी विकार हो ॥ राम० ॥ ७ ॥
फलने पेखी पंखीया, तूटी पड़े ततकाल हो।
नारी नयने निरखतां, उपजे अति जंजाल हो ॥ राम० ॥ ८ ॥
मानी हमारी सीखड़ी मति जा प्रियने लार हो।
सासुनी सेवा कर्या प्रिय सेव्यो सो वार हो ॥ राम० ॥ ९ ॥
आई ! एहवूकां कहो, मैं अलगी न रहाय हो।
नारी कही तनु छांहड़ी, साथे रही सुख पाय हो ॥ राम० १०॥
वाला सुख संसारनूं, जेको प्रिय विण होय हो।
प्रिय साथे दुःख ही भलूं, एम भाखे सहु कोय हो ॥राम० ११॥

---

१ सखा-स्नेही। २ नयन—उदक आंखनू पाणी। ३ सुई रहवूं।

पुरुषतणी अर्धाङ्गना, नारीनू तो नाम हो ।
ते कहो अगली किम पड़े, प्रिय नामे विश्राम हो ॥ राम० १२॥
जेह नारी प्रिय मानीयो, तेणे मान्यो जगदीश हो ।
नारीनूं परमेश्वरु, नाथ नमूं निसदीश हो ॥ राम० ॥ १३ ॥
पियुड़ो आगे संचरे, नारी पूठे जाय हो ।
चरण कमल नी रेणुका[1], तन लागे सुख थाय हो ॥ राम० १४॥
प्रियनूं मुख अवि लोकतां, नयणे अमिय भराय हो ।
दुःख तो सो वर्षा तणूं एक क्षणमांहे पुलाय हो ॥ राम० १५ ॥
जलहरणे[2] पूंठे थकी, विद्युत् जेम शोभाय हो ।
तेम पियुजीनो पाखती, नारी रहै सो न्याय हो ॥ राम० १६ ॥
एम कहीने नीकली, लही सासु आशीष हो ।
आतम रामज रामजी, मनमें एह जगीश हो ॥ राम० ॥ १७ ॥
हुई छे होसे वलि, जे पति भक्ति नारी हो ।
तिणमें आदि उदाहरणे, सत्यवती[3] अवधारी हो ॥ राम० ॥ १८ ॥
नगर तणी नारी मिली, रोवन्ती असराल हो ।
पति व्रता मांहे घणू, सरा[4] है सुविशाल हो ॥ राम० ॥ १९ ॥
कष्ट पड़े वनवास तो, भय नत्रि माने जेह हो ।
उभय कुल उजवालणी, आज अछे त्रियै[5] एह हो ॥ राम० ॥ २० ॥
हर्ष जिम्यो थयो स्वयम्वरे, तैसो ही वनगाम हो ।
कोईन दीसे आंतरो, साहसी[6] तने शाबाश[7] हो ॥ राम० ॥ २१ ॥
आननतो[8] अति उजलूं, आरती नहीं लव लेस हो ।
भाग्यवतीए भामिनी, प्रिय माथे परदेश हो ॥ राम० ॥ २२ ॥

—मूलगी ढाल क्षेपक—

रामजी वनवासे जावे, बात सुन परजा दुःख पावे, सभी को जियडो घबरावे ॥ 'राम' से प्रेम हो घरता परस्पर वात यूं करता ॥

१ रज । २ वरसाद । ३ अवधारवूं-ध्यानमां लेवूं । ४ सराहवूं-प्रशंसा करवी । ५ त्रिया-स्त्री । ६ साहसीक-साहस करनार । ७ ए फारसी शब्द छे तेनो अर्थ धन्य एवो थाय छे । ८ मुख ।

सत्य व्रत पालो ॥ ४१ ॥

स्वामी श्रीनथमलजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज–तावड़ा धीमो सो पड़जा–

अकल कित गई दशरथ नृपनी २, 'राम' भणी वनवास देईने करे पूरी अपनी ॥ टेर ॥

'राम' सरीसा पूत जगत में, जननी नहीं जाया ।
जिनको दूर छांड वन भीतर, 'भरत' तखत ठाया ॥ अकल १ ॥
नहीं सीख निज मतनी पतनी, भूपति भरमायो ।
नहीं लायक हे तखत 'भरत' शिशु, सब जग दरसायो ॥ अकल २॥
जासी राज 'अयोध्या' केरो, फेरो फिर देसी ।
निर्बलजानी खटपट कर कोऊ, हरसी परदेशी ॥ अकल ॥ ३ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी

खबर तब 'लक्ष्मण' ने पाई, अवर वर हेरयो नहीं माई, भरत की दशा केम आई । किसी का जोर नहीं धारूं, चिन्तित निज काज ही सारूं ॥ सत्य० ॥ ४२ ॥

ढाल मूलगी

'लक्ष्मण' कोपे कलकल्यो, कालो पीलो थाय हो ।
जाणे अब करिये किस्यू, मतियन को ठहराय हो ॥ राम० २३ ॥
वर भण्डारे ए राखीने, क्यूं मांगे दुःख दाय हो ।
ताततो सरल स्वभावीया, कपट कारी ए माय हो ॥ राम० २४॥
ऋण उतारण शिर तणूं, तात कियो सुविचार हो ।
'भरत' भलो थो भाईयो, कां झाल्यो थो भार हो ॥ राम० २५॥
'भरत' थकी उदालीने, नृप पदवी लहूं आज हो ।
'राम' रायने आपीने, सारूं वंछित काज हो ॥ राम० ॥ २६ ॥
'राम' न लेशे राज्य ने, दुःख पाम से तात हो ।
ए उतपात उठाववा, करे विमामी बात हो ॥ राम० ॥ २७ ॥
दुःख मत पावो तातजी, भरत करो ए राज्य हो ।
राम चाल्या हूं घर रहूं, तोते पामूं लाज हो ॥ राम० ॥ २८ ॥

१ ए अरबी भाषानो शब्दछे तेनो अर्थ 'चाकरी' एवो थायछे । २ माता.

सेवक रूपी होई ने, रहिसूं प्रभुने साथ हो ।
खिजमत१ तो करसूं सही, सुजश दीयो जगनाथ हो ॥राम. २९॥
ताततणे पगे लागीने, माजीने परणाम हो ।
फरीने लाग्यो चालवा, माय शीख दे ताम हो ॥ राम० ३० ॥
वत्स ! स्वस्थ मतिताहरी, खरूमतू तुजमांहै हो ।
साथ न तजवो भाईनो, लोक वचन ए ग्राहै हो ॥ राम० ३१ ॥
जाई मिलो उतावला, कांई करो विलम्ब हो ।
राम तात करी मानजो, कहै सुमित्रा अम्ब२ हो ॥ राम० ३२ ॥
'कौशल्या' पगे लागीने, चालण लाग्यो जाम हो ।
'कौशल्या' कहै मायजी, लक्ष्मण सामे ताम हो ॥ राम० ३३ ॥
'राम' गयो तूं जाय छे, म्हारा कवण हवाल हो ।
'लक्ष्मण' कहै माता सुणो, न तजूं 'राम' दुमाल हो ॥राम. ३४॥
वनवासे एकाकीयो, आप 'राम' जी जात हो ।
हूं न करूं सेवकणू, तो लाजत मुझ मात हो राम० ॥ ३५ ॥

ढाल मूलगी क्षेपक

माता कहै सुखे २ जावो, रामकी सेवा करवावो, जिणी से वंछित ही पावो । नाय शिर सौमित्रा नन्दा, कौशल्या प्रणमें आनन्दा ॥ सत्य० ॥ ४३ ॥ सा कहै सुणो पुत्र वाणी, अनुज तूं भक्ती दिल आणी, अछे तू गुणां तणी खाणो । पुत्र ! तब ओलूं ही आसी, दुकर यह दिवस कैसे जासी ॥ सत्य० ॥ ४४ ॥ वीर कहै सुणिये तूं माता, काया त्यां छाया विख्याता, राम ज्यां लक्ष्मण शोभाता । जरा जब ढील नहीं कीधी, आशीस तब माताने दीधी ॥ सत्य० ॥ ४५ ॥

ढाल मूलगी

त्रणे माणस चालियां, आणन्तो आनन्द हो ।
सायरनी परे देखवो, रत्न गयां नहीं मंद हो ॥ राम० ॥ ३६ ॥
राजा राणी आवीया, आवीयो परिवार हो ।
बाल अने गोपालजी, मिलियां लोक अपार हो ॥ राम० ॥३७ ॥

—ढाल मूलगी क्षेपक—

पुरुष दोय नारी इक जावे. राजादिक पहोंचावण आवे, सखी मिल ओलूं ही गावे। राम के सन्मुख ही जोवे, आंसू सूं मुखड़ा ही धोवे ॥ सत्य० ॥ ४६ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज—बन्धव बोल

सहियांमांने ओलूं आवे, हो ओलूं-राघवजीनी ओलूं आवे ॥टेर॥
रात न आसी नींदड़ी, दिन धान न भावे हो।
पल २ माहै सांभरे, हीयो भरि जावे हो ॥ सहियां ॥ १ ॥
प्रभुजी ज्यां त्यां संचरे, सोही हरखावे हो।
नेत्र विना मुख ज्यू सही, प्रभु विन हम दरसावे हो ॥ सहियां २॥
धन्य भाई 'लक्ष्मण' अछे, प्रभु सङ्ग सिधावे हो।
पति भक्ता 'सीता' सती, शोभा अधिकी पावे हो ॥ सहियां ३ ॥
समाचार प्रभु मुज भणी, वेगा चकसावे हो।
वहिला राज पधारजो, दुनि दर्शन चावे हो ॥ सहियां ४ ॥

श्री समयसुन्दरवी कृत.

ढाल क्षेपक तर्ज—चान्दलीया सन्देशो रे कहीजे म्हारा कन्तनेरे

राजेश्वर वालेसर हो वेग पधारजोरे, थांरी जोवे बहुला वाट।
पल अंतरथी अलगा नवि करूंरे, हिवड़े घणूंरे उचाट ॥ राजे १ ॥
सुख सातामें पामी अत घणीरे, याद करां नित मेव।
सफल दिहाडो सो मैं जाणसोरे, सो दिन करसां सेव ॥ राजे २॥
सुरभी जावे वन क्रीड़ा भणीरे, वछा करंरे पुकार।
तिम तुम दरशन विन हिव साहिबारे, अम्हे थावां छे निरधार ॥ राजे ३॥
मातपिता वले भ्रातजीरे, वलि वरजे बहु नरनार।
दया आणीने दिलमें साहिबारे, पाछा घिरो इणवार ॥ राजे ४ ॥
पपैयो पिऊ २ करंरे, पिण घनरे नहीं चाय।
जिम तुम ऊभा ओलगेजी, मानो वचन न काय ॥ राजे ५ ॥
वारम्वारे कीधी वीनतीरे, पिण रामन माने एक।
मो जिम सेवा कीजो भरतकीरे, धारी घणा विवेक ॥ राजे ६ ॥

दोहा—गद गद कण्ठी होगये. जलभर आयो नैन ।
रोते रोते नागरीक, वदे राम से वैन ॥ १ ॥

मुनि श्री रूपचन्दजी कृत. ढाल चेपक तर्ज–अहमद भूल न जाना

रघुवर ! भूल न जाना, विनती ध्यान में लाना ॥ टेर ॥
मायत वचन मानकर तुमने, निराधार इत छोडो हमने ।
वन को किया प्रयाना ॥ रघुवर ! भूल न जाना ॥ १ ॥
यद्यपि नहीं रहना था पुरमें, तो क्यों प्रेम लगाया धुर में ।
अधविच में छिटकाना, रघुवर ! भूल न जाना ॥ २ ॥
प्रतिपल याद आवेगी तोरी, हार्दिक विनती स्वामिन् मोरी ।
जल्दी दर्श दिलाना ॥ रघुवर० ॥ ३ ॥
हंस मुख आप वडे गुणधारी, शशी सम सौम्य सदा सुखकारी ।
मधुमय मीठी वाना ॥ रघुवर ! ॥ ४ ॥
सींच २ कर प्रेम सलिल को. हराभरा किया इस उपवन को ।
आकर फिर विकसाना ॥ रघुवर ! ॥ ५ ॥
जनगण तव दर्शन का प्यासा, एक आपकी लग रही आशा ।
चित्त चरणां में लुभाना ॥ रघुवर ! ॥ ६ ।
विरह तुम्हारा सहा न जासी, वार २ उर ओलूं आसी ।
दया भाव दिखलाना ॥ रघुवर ! ॥ ७ ॥
अवध निवासी अर्ज गुजारी, भूल हुई हो जोभी हमारी ।
भूल उन्हें तुम जाना, पर भूल हमें मत जाना ॥ ८ ॥
'रूप' कहै जनता के मनमें, राम रहै इत जावे न वन में–
यही आश मन लाना ॥ रघुवर ! ॥ ९ ॥
शार्दूल गुरुपद कज शिर नाई, 'जयतारण' में ढाल बनाई ।
रामायण में गाना ॥ रघुवर ! ॥ १० ॥

दोहा—सुनकर प्यारी प्रेम मय, परजा की अरदास ।
मधुमय मीठे वयन से, देन लगे आश्वास ॥ १ ॥

ढाल चेपक तर्ज–खेलण दो गिणगोर भँवर म्हाने

जावणदो एक वार विपनमें जावन दो इक वार. हो म्हांरी अवध

निवासी जनता जादा मत तानों इनवार ॥ टेर ॥
वचन निभास्यां मनमें जास्यां, वहां पास्यां सुख साज ।
फिर चल आस्यां वास बसास्यां, पिण जावणदो मोय आज ॥ जा.१॥

ढाल क्षेपक तर्ज–नवीन रसिया मुनि श्री रूपचन्दजी म० कृत.

रहीजो २ हो आनन्द में प्यारे सारे ही नरनार ॥ टेर ॥
हिलमिल प्यारे पुरजन रहीजो वहीजो कुल–आचार ।
परधण परधन को तज करके कीजो प्रेम प्रचार ॥ रहिजो ॥१॥
निर्मल न्याय नीति पथ वहीजो लहीजो सुजश अपार ।
चिन्तामणि सम धर्म जैन को, तजदो मतना यार ॥ रहीजो २ ॥
मम सम भर्त भणी समजीने हुकम वहो हरवार ।
करसी साल सम्भाल निहाली नीति न्याय विचार ॥ रहिजो ३ ॥
सप्तव्यसन मद मच्छर ईर्षा कर दीजो परिहार ।
रूप मुनि कहे रघुवर की या शीक्षा लो उरधार ॥ रहिजो ४ ॥

दोहा—रघुवरमायत चरण में,नमन कीयो तिणवार ।
हम लायक शाक्षा जनक, वात कहो धर प्यार ॥ १ ॥

मुनि श्री रूपचन्दजी म० कृत.
ढाल क्षेपक तर्ज–काली कमली वाले तुमको

प्राण पियारे पुत्र हमारे क्रोडां स्यावास. तुमको क्रोडां० ॥ टेर ॥
सारा प्यारा परिकर तजकर, मानव गणका हृदय चुराकर ।
तुमतो वनकी ओर पधारे, क्रोडां स्यावास ॥ प्राण० ॥ १ ॥
क्षत्रिय धर्म को पूर्ण निभाया, नहीं लालचमें मन ललचाया ।
तुमहो वीर प्रतिज्ञा धारे, क्रोडां स्यावास ॥ प्राण ॥ २ ॥
दोनों भाई हिल मिल रहीजो, भ्रातृ वच्छल गुण हियमें गहीजो ।
सप्त व्यसन तज देना प्यारे, क्रोडां स्यावास ॥ प्राण ३ ॥
जैन धर्म निज जीवन समजो, नीच तणी थे संगति तजजो ।
दोनों ही मत होना न्यारे, क्रोडों स्यावास ॥ प्राण ॥ ४ ॥
मैंतो कार्य उचित नहीं कीना, प्यारे पुत्रों को दुःख दीना ।
'रूप' मुनि कहे है गुण वारे, क्रोडों स्यावास ॥ प्राण ॥ ५ ॥

दोहा—राम कहै प्रभुजी सुणो, तुमचा वचन स्वीकार।
सुखसं संयम आदरो, निज आतम उजवाल ॥१॥

ढाल चेपक तर्ज-मैं अंग्रेजी पढ़ गई हूं मुनि श्री रूपचंदजी कृत.

अब हम वनको सिधाते, सुनले मेरी मैया ॥ टेर ॥
लाड प्यार कर तुमने पाले, आज आपसे हो रहे न्यारे।
पितु वर वचन निभाते ॥ सुनले मेरी मैया ॥ १ ॥
दर्शन से हम परसन होते, तेरी गोद में आकर सोते।
चरणां शीष झुकाते ॥ सुनले मेरी मैया ॥ २ ॥
ऐसा हम स्वपने नहीं जाना, तुम दर्शन का विरह होजाना।
भावी प्रवल कह्यो नाथे ॥ सुनले मेरी मैया ॥ अ० ॥ ३ ॥
खैर हुवा सो होगया माता, होनहार नहीं टले टलाता।
हितकारी कहो वातें॥ सुनले मेरी मैया ॥ अ० ॥ ४ ॥
नीति निपुण तुम तात प्रवीना, कह नाथा सो सव कह दीना।
एक वात कहूं भ्राते ? सुनले मेरी मैया ॥ अ० ॥ ५ ॥

—सवैया—

घणा घाट लंघणा, नदी परवतने नाला। वन है वेटा विषम, पंथ चलणा है पाला। जहर भूख काटणी, गुणे दिन किसा गिणीजे, कहै मात 'कौशल्या' श्रवण दो भ्रात सुणीजे ॥ दन्ती वाराह नाहर रहोजो तिण ठौर सावता, रे पुत्र ? घणी मिल राखजो इण जनक सुतारा जावता ॥ १ ॥

ढाल चेपक पूर्ववत्

जनक सुता की रक्षा कीजे, राम कहै मम कथन करीजे, सियको मम सङ्ग मत भेजीजे, नारी सङ्ग दुःख पाते ॥ सुनले मेरी मैया ॥ अ० ॥ ६ ॥ 'शार्दूल' शिष्य मुनि 'रूप' सुनावे, रघुपतिजी सिय को समजावे, सो आगे जतलाते ॥ सुनले ॥ ७ ॥

(गो स्वामी तुलसीदासजी कृत. रामायण में से)

दोह– * कहि प्रिय वचन विवेक मय, कीन्ह मातु परितोष।

* दोहे का अर्थ—विवेकमय प्रिय वचन कहकर माताको रामचन्द्र ने समझाया। पुनः जानकी को समझाने और वनमें रहने के गुण दोष प्रगट में कहने लगे।

लगे प्रबोधन जानकिही, प्रगट विपिन गुण दोष ॥१॥

? चौपाई–आपन मोर नीक जो चहहु. वचन हमार मान घर रहहु।
आयसु मोरि सासु सेवकाई.सवविधि भामिनी भवन भलाई।

—(चोपाई)—

? मैं पुनि करी प्रणाम पितुबानी, वेगि फिरब सुन सुमुखी सयानी ॥१॥
दिवस जात नहीं लागहु बारा, सुन्दरी ? सिखवन सुनहु हमारा ॥२॥
जो हठ करहु प्रेम वश वामा, तो तुम दुःख पावहु परिणामा ॥ ३ ॥
कानन कठिन भयंकर भारी, घोर घाम हिम वारी बयारी ॥ ४ ॥

? जो अपना और हमारा भला चाहो तौ हमारा वचन मानिके घर रहो। मेरी आज्ञा है सासु की सेवा करनी चाहिये, हे प्यारी! सब प्रकार से घर में रहने से भलाई होगी।

? और में पिताकी आज्ञा प्रमाण करके हे सुमुखी ? सयानी जल्दी लोट के आवूगा ॥ १ ॥ दिन जाते देर नहीं लगती हे सुन्दरी ? हमारा सिखाना सुनो ॥ २ ॥ जो तुम प्रेम से इस समय हठ करोगी तो परिणाम में दुःख पाओगी ॥ ३ ॥ वन कठिन और भयंकर होता है। मार्ग में कठिन धूप जाड़ा पानी वायु से कष्ट होता है ॥ ४ ॥ मार्ग में कुश कांटे कंकर होते है, सवारी पर चले तोभी वनता पर सो भी नहीं, पांव २ चलना होगा, सोभी बिना जूते के ॥ ५ ॥ तुम्हारे चरण कमल उज्वल और कौमल है, और मार्ग भी समान नहीं किन्तु अगम है, और बड़े २ पर्वत हैं एक तो राह कठिन दूसरा चढाव उतार ॥ ६ ॥ कन्दर पर्वत की गुफा नदी नद नाले बड़े अगाध हैं। जो निहारे नहीं जाते, पर्वत अगम है वहां जाना कठिन है ॥ ७ ॥ रीछ चीता भेडिया सिंहो के नाद सुनके धीरज नहीं रहता ॥ ८ ॥ भूमि में सोना वृक्ष की त्वचा भोज पत्रादिक का पहरना, भोजन मूल फलकंद, कंद वर्तुलाकार मूल लम्बा सोभी क्या सदा सब दिन मिलते है ? किन्तु जब जिसका समय होगा तब मिलेंगे ॥ ९ ॥ राक्षस मनुष्यों का भक्षण करते हैं, कोटी प्रकार से कपट वेष धरते हैं ॥ १ ॥ पहाड़ का पानी बहुत लगता है, है प्यारी बन की विपती वखानी नहीं जानी ॥ २ ॥ विकराल सर्प घोर भयानक पक्षी और राक्षस बहुत से नर नारीयों को चुराने हारे होते हैं ॥ ३ ॥ धीर पुरुष भी वन की सुधि आने से डरजाते हैं, है मृग नयनी ? तुमतो स्वाभाविक डरने हारी हो ॥ ४ ॥ है हंसमगनी ? तुम बन के योग्य नहीं हो, सुनके लोग मुझे अपयश देंगे ॥ ५ ॥

कंटक मग कंकर नाना, चलब पयादे विनु पद त्राना ॥ ५ ॥
कमल मृदु मंजु तुम्हारे, मारग अगम भूमिधर भारे ॥ ६ ॥
कन्दर खोह नदी नद नारे, अगम अगाध नजाहिं निहारे ॥ ७ ॥
भालु वाघ वृक केहरी नागा, करहि नाद सुनि धीरज भागा ॥ ८ ॥
दोहा—भूमि शयन वल्कल वसन, अशन कन्द फल मूल ॥
तेकि सदा सब दिन मिल हीं समय समय अनुकूल ॥१॥

—(चोपाई)—

नर आहार रजनी चर करहीं, कपट वेष विधि कोटिक धरहीं ॥१॥
लागई अति पहाड़ कर पानी, विपिन विपत्ति नहीं जाय वरवानी ॥२॥
व्याल कराल विहंग वन घोरा, निश्चिर निकर नारि नर चोरा ॥ ३ ॥
डरपहु धीर गहन सुधिआये, मृग लोचनी ! तुम भीरु सुभाये ॥४॥
हंसगमनी तुम नहीं वन योगू, सुनि अपयश मोहिं देहहि लोगू ॥५॥
मानस सलिल सुधा प्रतिपाली, जियई कि लवण पयोधी मराली ॥६॥
नवरसाल वन विहरन शीला, सोहकी कोकिल विपन करीला ॥ ७ ॥
रहहु भवन अस हृदय विचारी, चन्द्रवदनी दुःखकानन भारी ॥ ८ ॥

(जानकीरुवाच)

दोहा—प्राण नाथ ! करुणा यतन सुन्दर सुखद सुजान ।
तुम विन रघुकुल कुमुद विधु ! सुरपुर नरक समान ॥१॥

(चौपाई)

भोग रोग सम भूषण भारू, यमयातना सरिस संसारू ।
प्राणनाथ तुम विन जगमांही, मो कहे सुखद कहत हूं कोई नांहीं ॥१॥
जिय विनु देह नदी विन वारी, तैसिय नाथ पुरुष विन नारी ।
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे, शरद विमल विधु वदन निहारे ॥२॥

दोहा—खग मृग परिजन नगर वन, वलकल विमल दुकूल ।
नाथ साथ सुर सदनसव, पर्ण शाल सुखमूल । १ ॥

—तर्ज—लावणी—

कृपा निधान सुजान-प्राण पति, सङ्ग विपिन हो आऊंगी ।
गृहते कोटी भांतो सुख मारग, चलत साथ सुख पाऊंगी ॥

थाके चरण कमल चापूंगी, श्रमभये पवन डुलाऊंगी।
नयन चकोर निमुख मयंक छवि, सादर पान कराऊंगी॥
जो हठि नाथ साथ नहीं लेहो तो सङ्ग प्राण पठाऊंगी।
तुलसीदास प्रभु विन जीवन, रहै क्यों वदन दिखाऊंगी॥१॥

मेवाड़ी मुनि चौथमलजी कृत.

ढाल क्षेपक तर्ज—बीड़ो मत झेलो तथा तजदीये प्राण काय०

मेरे सङ्ग मत आ, सीता बहु दुःख पावोगी॥ टेर॥

वनमें कष्ट घणो है प्यारी, फिर पाछे पछताओगी। रात अंधेरी होगी वहां पे, कौनसे जतन का प्यारी दिवला-जलाओगी॥ मेरे॥ १॥ खट्टे कडुवे वनफल मिलसी. सो कैसे तुम खाओगी। दूध दही मावा मन गमता, ये चीजां वनमें प्यारी कहो कहां से लाओगी॥ मेरे॥ २॥ यहां फूलां की सेज सुहाली, वहां पर घास बिछाओगी। शेर रिच्छ क्षुद्रिक जीवो को, जो तुम देखोगी सीता अती डरपाओगी॥ मेरे॥ ३॥ वहां नहीं म्याना और पालखी. पैदल पन्थ कटाओगी। कुश कङ्कर से पग फूटेंगे, क्षिण क्षिण त्रासित हो प्यारी रुदन मचाओगी॥ मेरे॥ ४॥ रतन जड़ित गहना विस्तर यहां, जो चाहो सो मंगवाओगी। भोजपत्र वहां धारण करके, कैसे इस दिलको प्यारी धीरज बंधाओगी॥ मेरे॥ ५॥ ना कोई संगमें दासी दास है, किनपे हुकम चलाओगी। चक्की चूला जल झाड़न की, ऐसी मुशीबत कैसे शिरपे उठाओगी॥ मेरे॥ ६॥ यहां पर बहुत सहेलियो बिचमें, बैठी मोज उडाओगी। वहां टपरी में सदा अकेली, कैसे रह करके प्यारी दिवस विताओगी॥ मेरे॥ ७॥ माता कौशल्या संग नहीं प्यारी, किनको कष्ट सुनाओगी। यो सोची घर रहो सलूणी थोड़े ही दिन में पीछी मुझे मिल जाओगी॥ मेरे॥ ७॥

(जवाब श्रीमती सीताजी का—ढाल क्षेपक तर्ज—पूर्वोक्त)

मुझे संग लेलो, प्रभुजी पीछे मरजाऊंगो॥ टेर॥

जो जो आज्ञा आप करोगे, सो सब शीश चढाऊंगी।

किसी तरह का कष्ट पड़ेगा, मैं नहीं घबराऊं सब ही शिरपे उठाऊंगी ॥ मुझे ॥ १ ॥ प्रभु प्रसादे वनफल भी, खादिम कर खा जाऊंगी । किसी बात की हठ करके मैं, सुनीये प्राणेश्वर तुम्हको कभी न सताऊंगी ॥ मुझे ॥ २ ॥ मैं सखियन में सुख नहीं पाऊं, निश्चय कर संग आऊंगी । नाथ आपका दर्शन देखी, स्वर्ग भवनसी साता हिरदे वसाऊंगी ॥ मुझे ॥ ३ ॥ शीत ताप की सहन करूंगी, मैं विस्तर नहीं चाऊंगी । सदा हर्ष दिल होकर रहूंगी, क्षण भर भी प्रभुजी तुमसे कभी न रीसाऊंगी । मु० ४॥ तीन लोक की सम्पत समझूं, जो पति देव रीझाऊंगी । मैं दुर्लक्षणी नारी नहीं हूं, जो के पल पल में पियु का कलेजा जलाऊंगी ॥ मु० ॥ ५ ॥ पल्ले लागी प्रभु ! आपके, सङ्गमें शोभा पाऊंगी । दया दृष्टि करीये चेरी पे, मेरी व्यथा की चिन्ता कभी न जताऊंगी ॥ मु० ॥ ६ ॥ प्राणनाथ के पदपंकज में, सुख से दिवस बिताऊंगी । वनही नन्दन वनसा मेरे, वस्ती क्या सुर नगरी की परवा न लाऊंगी ॥ मु० ॥ ७ ॥ उभय वंश विख्यात करन को, पतिव्रत पूर्ण निभाऊंगी । तन छाया के तीर्थ करके जग महिलाओं का सच्चा स्वरूप दिखाऊंगी ॥ मु० ॥ ८ ॥ चरण शरण की दाश होयके, सदैव सेव बजाऊंगी । चौथमल्ल कहे सीता बोली, सदाही चरणमें प्रभुजी शिरको झुकाऊंगी ॥ मु० ९॥

ढाल मूलगी

पगे लागी वहो लाविया, माताजी ने राय हो ।
देई दिलासा लोकने, 'राघवजी' वन जाय हो ॥ राम ३८ ॥
ढाल भली बावीशमीं, 'राम' हुवा वनवास हो ।
'केशराज' शुभ कर्म थी, होसे लील विलास हो ॥ राम ॥ ३९ ॥

मुनि श्री रूपचंदजी कृत. ढाल क्षेपक तर्ज–पपैया काहे मचावत शोर.

अवध की जनता मचावत शोर, 'राम' गये हमें छोर ॥ टेर ॥
हाय विहाय गये रघुवरजी, मानी नहीं प्रभु तनिक भी अरजी ।
करके हृदय कठोर, अवध की जनता मचावत शोर ॥ १ ॥

भ्राता भक्त लिछमनजी भारी, राज्य वैभव तज महिल अटारी।
चाले वनकी ओर ॥ अवध की जनता मचावत शौर ॥ २ ॥
सुन्दर कोमल काया वाली, सापिण सीता पियु संग चाली।
शीलवती शिरमोर ॥ अवध की जनता मचावत शौर ॥ ३ ॥
मानवत्रय सहर्ष सिधाये, मनमें सोच जरा नहीं लाये।
क्षत्रिय कुल के तौर ॥ अवध की जनता मचावत शौर ॥ ४ ॥
अटवी कंकर कण्टक चारी, तीनों मानव पाय विहारी।
कैसे सहेंगे दुख घौर ॥ अवध की जनता मचावत शौर ॥ ५ ॥
कहो हमें गुन्हा क्या कीना, वतन प्रेम युगपत् तज दीना।
तीनों गये चित्त चौर ॥ अवध की जनता मचावत शौर ॥ ६ ॥
निर्भय निडर 'शार्दूलसिंह' जैसा, वनकर वन गये मिलना ऐसा।
होगा कब करो गौर ॥ अवध में जनता मचावत शौर ॥ ७ ॥
पाछा रघुवर जल्दी आसे, तजदो सोच 'रूप' मुनि भासे।
जाप जपो निज भौर ॥ अवध की जनता मचावत शौर ॥ ८ ॥

—क्षेपक ढाल मूलगी—

सकल मिल पाछा ही जावे, 'राम' का गुण मुख सब गावे, नर सब 'अयोध्या आवे, चित्त तो प्रभुजी ने आल्या, 'रघुपति' वन वासे चाल्या ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ४६ ॥

दोहा (जयतशी रागे)

गांव गांव ना ग्रामपती, करे घणी अरदास।
देव ! इहां थानक करो, एछे तुम्हारो वास ॥ १ ॥
'राम' न माने वातए, चाल्या ही वन जाय।
गांव नगर पुर पाटणा, किहां ही न रहाय ॥ २ ॥
राज्यन झाले भरतजो, आक्रोशी निजमाय ॥
'राम' अने लक्ष्मण तणो, विरह खम्यो नविजाय ॥ ३ ॥
चारित्र ने उतावलो, राजा 'दशरथ' ताम ॥
'सामन्त मंत्री' मोकले, बोलावण श्री राम ॥ ४ ॥
पश्चिम दीसे जातां थको, आवी पहोंच्यो एह ॥

करी घणी अरदास पिण, 'राम' नमाने तेह ॥ ५ ॥
पाछा वाले रामजी', ओ पाछा नवलन्त ॥
जाणे कदीही बावडे, तेहथी साथ चलन्त ॥ ६ ॥

—ढाल–तेवीशवीं–तर्ज–झकड़ीनी—

आगे जातां रे अटवी आवही, नरनवी दीसे अधिक डरावही, डरामणी अटवीए मांहै चाले नई छेरे विहामणी, उहां ऊभो होई भाखे अयोध्या पुरनो धणी, 'सामन्त मन्त्री' घरे जावो कष्ठ छे आगे घणो, कुशल केजो माय बाप ही आजतांहीं अमतणो ॥ १ ॥ भाई 'भरतने' हम करी मानजो, तातसरीसोरे सही करी जाणजो ॥ जाणजो भाई भरतजीने, आंतरो कोई मत करो बाप जाया सहु सरिसा पाट पतीतो ए खरो ॥ सामन्त मंत्री ऊहां रहीया आंखे आंसू ढालवे, धिक् जमारो माहरोरे राम तजी घर चालवे ॥ २ ॥ तीने माणस तेही तरंगिणी, ऊतरियों रे ऊंडीथी घणी ॥ घणी ऊंडी नदी हूंती तरीने कांठो ग्रहै ॥ 'सामन्त मन्त्री' दृष्टि मांडी सामां देखीने रहे ॥ 'रामजी' आगे पधारीया दृष्टि थी अलगाटल्या, सामन्त मंत्री घरे आव्या, राय दशरथ ने मिल्या ॥ ३ ॥ 'राम' न आवे भरत बोलावीयो' राजा 'दशरथ' शिर डोलावियो ॥ डोलावीयो दशरथे मस्तक, 'भरत' सूं भाखे भलू, राज्य पालो आरति टालो, कहै नृप उतावलूं ॥ 'भरत' भाखे राज्य न करूं, कोड़ी वाते एक है, 'राम' आणूं प्रेम ठाणूं करूं विनय विविकए ॥ ४ ॥ राणी 'कैकेयी' आवी भाखेए, राज्य न चाले रे 'राघव' पाखेए ॥ पाखेए 'राघव' राज्य न चाले, राय सूं आवी कहै, भरत ने तो राज्य देतां वाच वरनी निरव है ॥ राज्य अर्थी भरत नहुने, राम ने तेड़ी करी, राज्य आपी सुदृढ थापी आप ग्रहो संयम सिरी ॥ ५ ॥ अणरं विमास्यो मैं कीयो खरो, अपयश लीधो जग अति आकरो ॥ आकरो मैं लीयो अपयश काजको सिरीयो नहीं, तीनही त्रिय रोज सुणतां हैयु फाटे छे सही ॥ भरत सूं हूं आज जाई करूं वीनती कोडए, 'राम' लक्ष्मण सती सीता आणी सूंरे वहोडए ॥ ६ ॥

क्षेपक तर्ज—चन्द्रायण (भरतोवाच)

बुद्धि तुम्हारी मात बात में कहा करूं, कर्म उदे बलवान राज्यकूं में गहूं।
चली आवी ततकाल राम हर लेनकूं कीधो माय परमाण भरत के चैनकूं।१

ढाल क्षेपक तर्ज—आसावरी—श्री विनयचन्दजी कृत

तेरी मत कहां गई कैकेयीमात ? हिता हित ज्ञान नहीं तिल मात ।।टेर।।
भरत रीसाय कहै सुन मैया, निपट विगारी ते बात ।
कुजस होय रहो जग सारे, कानों सुणीयो नहीं जात ।। तेरी १ ।।
कहा कहूं तोय दोष नहीं तेरो, निठुर त्रियानी जात ।
तुं जाणे नृप करूं भर्त ने, सो हमकूं न सुहात ।। तेरी २ ।।
राज्य धुरन्धर श्री रघुनायक, ताविन मैं अकुलात ।
उनकूं तें वनवासे पठायो, दहन हमारो गात ।। तेरी ३ ।।
विनय करी ल्यावू रघुपति ने, अब ही चलो हम साथ ।
विनय चन्द कहै हेतु भरत को, अजहूं लोक सरात ।। तेरी ४ ।।

ढाल मूलगी

अनुमत दीजे मुजने आजए, अबही चालूं करवा काजए ।
काज करवा अबही चालूं, भरत ने मंत्री सरू,
साथ लेई वेग चाली जोत रावी रथ वरू ।
दिवस छठे जाई पहोंच्या देखो हो तरुवर तले,
राम लक्ष्मण सती सीता दूरहिथी अटकले ।। ७ ।।

क्षेपक (चंद्रायण)

रामचन्द्र हरि पास चले है कैकई, भरतभणी लई संग खोज उनको वही। उडती देखी गोरद जानकी कहै तबे, भय ऊपज्यां मनमांय 'राम' 'हरि' सू लवे ।। १ ।।

दोहा—कहै राम सू जानकी, सावधान होय धीर ।
क्यों नवि चिन्ता आपको, आई फौज गम्भीर ।।१।।
राम उठ्यो दग मण्डले, ले हाथे हथियार ।
देख पता का भर्त की, उरमें उपज्यो प्यार ।।२।।
आई सवारी भरत की, तुरत ही वेग सताब ।
घणी चूंप मिल बातणी, आनन्द अंग न माय ।।३।।

ढाल मूलगी

रथथी उतरी रे आगे आवए, वत्स वत्स करती अति सुख पावए। पावही अति सुख आवी सन्मुख, 'राम' जी पगे लागीयो, चूंबी शिर छाती लगायो, प्रेम अधिको जागीयो सुमित्रा सुत सती सीता, करे तब परणामए, हैये धरिया नेह भरिया पूछियो सुख-तामए ॥ ८ ॥ भरत भली पर पगे लागी रह्यो, श्री 'राघवजी' सुख अधिको लह्यो । सुख लह्यो अधिको बांह गलेमें, घालवे आप आपणी, आंख आली वहै चाली भरतजी भाई तणी ॥ कुशल वात विशेष विवरी पूछि ही परगट पणे, आज छे अति स्वामिजी ने सो मन निजरे निरखणे ॥ ९ ॥ अभक्तनी परे रे मुजछां डीकरो, क्यूं रे पधार्या वन में संचरी । संचरी आया वन मांहै, वेग ल्यूं तुम रघुपति, कपट केल वणी रे मांही हूं न समझूं छूं रती ॥ गाय ब्राह्मण बाल अबला मारवानो पापए, अब मोही लागो झूठ कहूं तो भरत भाखे आपए ॥ १० ॥

ढाल क्षेपक मूलगी

'भतर' पिन आग्रह अति करतों, चरण बिच शीप ही धरतो, विनय को भाव अनुसरतो । पतिन की वीनती मानों, प्रभु थे बात सर्व जानो ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ४७ ॥

स्वामी श्री नथमल्लजी म० कृत ढाल क्षेपक तर्ज—आसावरी पद

प्रभु किम जावो छिटकाई, हाथ जोड़ने अर्ज करूं एसी किन कहो दीनी साई ॥ टेर ॥

तुम बिन सूनी सर्व अयोध्या, बोले भरत भाई ॥
अबतो मांनों हमारो केणो, केम आये छो रिसाई ॥ प्रभु ॥ १ ॥
रोवत दासी दास सखीजन, रोवत निज माई ॥
रोवत सगरी नगरी देखो, भाखूं कर नरमाई ॥ प्रभु ॥ २ ॥

प्रभुजी पाछा ही चालो, क्यों रीसायने वनमें पधार्या सो पछे मुझ घालो ॥ टेर ॥

प्रभु दर्शन बिन घड़ी षट्मासा, तुम दर्शन मुझ व्हालो ॥

विरह व्यथा में साच कहूं मैं, होगयो हूं कालो ॥ प्रभु ॥ ३ ॥
राजगादी तुम विन नवि शोभे, परतज्ञा मति झालो ॥
हमको कारागृह में देकर, पादो विषको प्यालो ॥ प्रभु ॥ ४ ॥
क्यूं प्रभुजी तुम हमको छोड़ो, मैं तुमचो व्हालो ॥
जम्पे भरत नरेश्वर इणपर, मुजरो म्हारो झालो ॥ प्रभु ॥ ५ ॥

—(ढाल मूलगी)—

आय अपूठोरे राज्य करीजीए, लोका केरी आरती हरीजीए । हरीजीए आरती लोककेरी, राज्य बापही परिहर्यो, तुम छतां पुत्रे राज्य सूनूं भरत भाखे गह गह्यो ॥ मंत्रीश[1] लक्ष्मण–पोलिओ हूं छत्रधारक तोल हूं, राजाधिराज 'राम' राजा भोगवो पृथ्वी सहु ॥ ११ ॥ कैकेयी कहैरे राघवजी सुणो, भाई भक्तों रे भरत अछे घणो । अछे भक्तो भरतकेरो बोलतो अब मानीये, मायनी मनुहार म्होटी जाणी अधिक न ताणीए ॥ जनक दोष न दोष भरत ही दोष ए छे माहरो, त्रिया स्वभावेमें कुभावे कीधो अविनय ताहरो ॥ १२ ॥ नारी सहेजे क्लेश करी कही, परघर भंजवाने रे ऊमही । ऊमही अधिकी करण भूण्डूं, दीयो दुःख राजा भणी, अपराजीता ने सुमित्रा ने करी अति खीजामणी ॥ कुल रीति लोपी घणूं कोपी एह अवगुण मायना, होई सायर सहो सघला सुणो नन्द सुरायना ॥ १३ ॥

ढाल दीपक मूलगी

राणी कहै अवगुण है मेरो, विचारो विरुध अब तेरो, अयोध्या नगर है नेरो । भर्त ए राज नहीं लेवे, लोक मुज धुरकारा देवे, ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ४८ ॥

—ढाल दीपक तर्ज–आसावरी पद—

नंदन थे मांनो वात म्हारी, अरज करूं अति गरज दीन है स्यो चित्त में धारी ॥ टेर ॥

---

१ भरत कहे छे के:–लक्ष्मण तमारो प्रधान हूं पोलीयों (द्वारपाल) अने शत्रुघ्न छत्र धारण करनारो थसे । (लहु शत्रुघ्न) ।

कैकेयी कहै सुन पुत्र हमारे, काम कियो अविचारी।
तुच्छ बुद्धि कामन की दाखी, थे छो बडे अवतारी॥ नंदन १॥
राज भार तो भरत न झेले, छे आज्ञाकारी।
फिट फिट लोक कहै सब हमने, आप जीते हूं हारी॥ नंदन २॥

ढाल मूलगी

एम कहैतीरे आंसू नाखेए, वली वलीरे वारु भाखेए।
भाखेए वारु वचन चारु कोन माने रामजी, तात दीधूं राज्य भरत ही साखे मुज अभिरामजी, तात जीवे हूंहीं जीवूं बोल क्यूं लोपायजी, बाप भाई कह्यो करवो सही सूं सुण मायजी॥१४॥

स्वामीजी श्री नथमलजी कृत, ढाल क्षेपक तर्ज—जातरी गूजरणी

राम कहै सुण भाई एम, तूं राज्य न लेवे केम, मैं तुझने दीधो,
राज अयोध्यानो एहटीको तो कीधो॥ टेर॥
प्रथम तातनो वचन लोपाय, मुझने वेला थाय॥ मैं॥ १॥
लक्ष्मणजी पिण इमही भाखे, आ तात मातनो साखे॥ मैं॥२॥
सीता पास मंगावे नोर, टीको करयो है वडवीर॥ मैं॥ ३॥

ढाल मूलगी

सीता आण्योरे जल सुविवेक ही, राम कररे भलो अभिषेकही।
अभिषेक कीधो नाम दीधो भरत भलो भूपालए, सामन्त मंत्री साख राखी मेटीयो जंजालए। पाय प्रमणी भरत भूपति भलामण परजा भणी,

ढाल क्षेपक तर्ज—कव्वाली

कहै श्री 'राम' भरत तांई, भैया वात सुन लीजे।
बैठ के अवध की गादी, अदल इन्साफ ही कीजे॥ १॥

यतः शिखरणी छन्दम्—क्षेपक

पर स्त्री मातेव, क्वचिदपिन लोभो परधने।
न मर्यादा भङ्गः, क्षणमपिन नीचे स्वभि रुचिः॥
रिपौ शौर्यं धैर्यं, विपदि विनयं सङ्गति सता-
मिमां पूज्यां पृथ्वीं, भरत! नितरां पालय सदा॥१॥

ढाल मूलगी

देई दक्षिण दीशे चाल्या, नहीं हाजत अरजनी ॥ १५ ॥
पूरी अयोध्यारे आयो भरतए, रामादेशेए[1] राज्य करन्तए।
राज्य करवे लोक सुखीया, नहीं असुख लिगारए, धर्म कर्म चलन्त अधिका राज्य तेज अपारए। देव हरिहन्त सुगुरु सेवा दयाने प्रतिपालवे, सूर्य वंशी सुजश पायो कुल तणे अजवालवे।१६
राजा दशरथ बहु परिवार सूं, मनमां हर्ष्यों कारज सारसूं।
सारसूं कारज हवे महारूं राज्य बैठू ठामए, 'सत्यभूति' मुनिन्द आगे कहै मस्तक नामिए॥ लेई संयम कारज सार्या ढालए तेवी श्रमीं, 'केशराज' कहे शुद्ध नरने सुधर्म सूं मनसारमी ॥ १७ ॥

दोहा (धोरणी रागे)

चालन्तां चित्त चावसूं, आणन्ता उल्लास।
चित्रकूट दिन केटला, रहिया करीय निवास ॥ १ ॥
आगे जातां आवीयो, 'अयवन्ती' वर देश।
निर्व्यंजन थानक जई, लिये विश्राम नरेश ॥ २ ॥
सत्यवती[2] थाकी खरी, चड़तले विश्राम।
लक्ष्मण साथे बोलीया, ए अवसर श्रीराम ॥ ३ ॥
उज्जड़ थयो देखीए, अबही क्यूं ए देश।
कोई मिलेतो पूछिये, संसय छे सुविशेष ॥ ४ ॥
पंथी परगट नामथी, वातों में वाचाल।
आवी आगे नीकलीयो, पूछे तब भूपाल ॥ ५ ॥

ढाल चौवीसमीं तर्ज–धोबीड़ा तूं धोजे मेलां लूगड़ां रे ॥

पन्थीड़ा! वात कहो धुर छेहथीरे, केमए उज्जड़ देश रे।
दीसेरे दीसे छे सुहामणो[3], वारु मांहि विशेष रे। पंथी ॥ १ ॥
देशारे देशा 'उजेणी' नगरीभली रे, सिंहोदर तिहां राय रे।
रूडोरे रूड़ो ने रलियामणों रे, कोईयन सामो थायरे ॥ पंथी ॥२॥
वज्रजरे 'वज्रकर्ण' नामे भलो रे, तेहने छे सामन्तरे।

१ रामना आदेशथी। २ सीताजी। ३ शीकार।

दशांगरे 'दशांगपुर' नो राजीयो रे, गिरवोने गुणवन्त रे॥पंथी॥३॥
हिंडेरे हिंडे आहीडे घणूं रे, नगणे पाप लगार रे ।
प्रीतज 'प्रीतिवर्द्धन' नामथीरे, दीठो तब अणगार रे ॥ पंथी ॥४॥
ऊभोरे ऊभो कायोत्सर्ग में रे, पूछे सामन्त नाम रे ।
किस्यूंरे किस्यूं करो ऊभारह्यारे,! करूं आपणो काम रे ॥पंथी॥५॥
वन में रे वन में काम किस्यो करोरे, । करूं तप उपवासरे ।
जेहथीरे कर्म पड़े छे पातलारे, साधीजे शिव वासरे ॥ पंथी ॥६॥
हिंसारे हिंसा दोष बतावीयारे, समज्यो तब भूपाल रे ।
श्रावकरे श्रावक हुवो सुन्दरुरे, जीव दया प्रतिपाल रे ॥पंथी॥७॥
देवजरे देव नमूं अरिहन्तजीरे. गुरु तो श्री सुधा साधरे ।
अवररे अवरने शिर नामूं नहीं रे. धर्म रतन में लाधरे ॥ पंथी. ८॥
नरवररे ऋषि वांदी घर आवीयोरे, चित्त सूं चिन्ते एमरे ॥
कीधोरे कीधो अभिग्रह आकरोरे. नर नमवानो नेमरे ॥पंथी. ९॥
राजारे सिंहोदर दुःख पामसेरे. कीजे कांई उपायरे ।
नियमजरे नियम पले जिम आपणोरे. दुःख नवि पामे रायरे।पं.१०।
मणीनी रे मणिनी कीधी मूदड़ी रे. मांहि लिखीयो नाम रे ।
अरिहन्तरे अरिहन्त देवनो सहीरे, ए नियम पलवानो ठाम रे ।पं.११।
माथे रे माथे चहुड़ी हाथने रे भलो मनावे राय रे ।
मनसूं रे पग वांदे अरिहन्तनारे, आघू काढ्यां जाय रे ॥ पं. १२ ॥
राजारे राजा रीसाणूं घणूं रे. जाण्यो जवए मर्म रे ।
व्हालोरे व्हालो एहने हूं नहीं रे, व्हालो श्री जिन धर्मरे ।पं. १३।
कोई रे कोई नर उपगारीयोरे, आवी भाखे एहरे ।
भूपति पूछे तें किम ए लहीरे. तो फिरी भाखेतेहरे ॥पंथी. १४॥

ढाल चेपक मूलगी—

राय कहै खवर केम पामी. सो कहै सुणीये हो स्वामी. साधर्मी भाई शिरनामी । वात प्रभो ! आगल मैं दाखूं, झूंठ नहीं साच ही भाखूं सत्यव्रत पालो ॥ ४९ ॥

ढाल मूलगी—

नगरीरे कुन्दनपुरी रलियामणीरे, तिहां वसे छे शाह रे।
यमुनारे उदरे हूं सुत ऊपन्यो रे विद्युत् अंग उच्छाहरे ॥पं. १५॥
अनुक्र मेरे यौवननी वय पामीयो रे ,लेई किराणो सार रे।
नगरीरे 'उज्जयणी' चली आवीयो रे, करवाने व्यापार रे ।पं. १६।
वेश्या रे वेश्या कामलता अछे रे, तिणसूं राच्यो सोयरे।
खाधोरे खाधो धन सघलो सहीरे, ह्यो निर्धन होयरे॥पंथी॥१७॥

ढाल क्षेपक तर्ज—जल्लो म्हारी जोड़ रो, उदीयापुर म्हाले रे॥

स्वजन मने वर्ज्यो घणो रे. मतजा वैश्या द्वार।
मूलन मांनी वातडी, अब भुगतूं दुःख अपार॥
कहै विद्युत वाणीयो. कुण्डनपुर वासी रे॥ टेर॥ १॥
निर्धनने आदर कुणदहै रे. जिणमें वैश्या जात।
कूड़ कपट.री कोतली रे, सङ्ग कियां दुःख पात॥ कहै॥ २॥
वेश्या काढ्यो घर थकी रे, हूँ कह्यो जाऊँ नांय।
तिण कयो म्हारो धन विनारे, काज न चाले काय॥ कहै॥ ३॥
मैं कयो म्हारे धन नहीं रे. होसे तुझने दीध।
कामान्ध हो तब वश पड्यो. मैंतो जहर हलाहल पीध॥कहै॥४॥

— ढाल मूलगी —

राजारे राजानी पटरागीनी रे, श्रीधरा ने कान रे।
कुण्डल रे कुण्डल छे तेहवां रे, दे मुझने तूं आणरे॥ पंथी॥ १८॥
तबही रे तब भाखे भामिनी रे, कुण्डल आवे दाम रे।
चोरी रे चोरी करवा चालियो रे, कुण्डल लेवा काम रे॥पंथी॥१९॥
राणी रे राणी राजसूं कहै रे क्यूं हो उदासी आजरे।?
दशांगरे 'दशांगपुर' नो नायकूरे, मारण केरे काजरे॥पंथी॥२०॥
रजनी रे रजनी वैरण हुयरही रे, कदी पासूं परभातरे।
भाई रे भाई सुतने सहु भलारे, करे सहुनो घातरे॥ पंथी॥२१॥
एहिजरे एह मतु मैं सांभल्यो रे, कुण्डल चोरी त्याजरे।
आव्यो रे आव्यो मैं कहवा भणी रे, साधर्मी निमित्ते साजरे।२२।

निसुणीरे निसुणी ए पुर राजीयो रे, कणतृण अधिक अपाररे ।
वातजरे वात कहंता आवीयारे, दल वलनो नहीं पाररे ।।पंथी।।२३।
वींट्योरे वींट्यो पुर चर चिहूं दिशेरे, चन्दनने जिम सापरे ।
आवणरे आवण जावण नकोल है रे, लोकों लाग्यो पापरे ।।२४।।
राजारे राजा दूतज मोकल्योरे, भूपति पासे तामरे ।
मुद्रारे मुद्रा मूकी मन्दिररेरें, आवी करो प्रणाम रे ।। पंथी ।।२५।।
भूपतिरे भूपति भाखे एटलू रे, देवगुरु विण देखरे ।
मानसरे मानसने नमवो नहींरे. नियम अछे सुविशेषरे ।पंथी।२६।

ढाल क्षेपक मूलगी

राय कहै देवगुरु टाली, नमें नहीं मस्तक मुज म्हारी. प्रतिज्ञा ऐसी है म्हारो । अवरको वात मुझ भाखो, किसी विध शङ्का मत राखो ।। सत्यव्रत पालो ।। ५१ ।। धर्म की दृढ़ता मन म्हारे, धर्म मुझ वंछित ही सारे, सुरासुर सब इनके लारे । प्रतिज्ञा लीधी सो साची , कदेही होवे नहीं काची ।। सत्य० ।। ५२ ।।

ढाल मूलगी

पौरुषरे पौरुष तो ए कोनहीं रे, धर्म तणो दृढावरे ।
बाकी रे बाकी कहो तिमही करूंरे, अवरन कोई कहावरे ।। २७ ।।
धर्मज रे धर्म द्वारदे मुज भणीरे, धर्म करेवा जाऊंरे ।
म्हारे रें म्हारे धर्म सखाईयोरे, धर्म थकी सुखपाऊंरे ।।पंथी।।२८।।
एकहीरे एकनमाने राजवीरे, आणे अति अभिमान रे ।
रोकीरे रोकी रह्यो सहु लोकनेरे, आरतितो असमानरे ।। २९ ।।
लूंटेरे लूंटे देश दयामणोरे, रखवालो नहीं कोई रे ।
तेहथीरे तेहथी देश दयालजीरे, गयो सब उजड़ होईरे ।। ३० ।।
हूंपणरे हूंपण लेई कुटुम्बो आपणोरे, अलगो थयो अपाररे ।
बाल्यारे बाल्या मन्दिर मालीयारे, नाणे दया लगाररे ।। ३१ ।।
म्हारीरे म्हारी तृणनी छापरीरे, लोके न्हांकी पहाडीरे ।
जावूंरे जावूं लेवाने लाकड़ीरे, घरमें नार कुहाड़ीरे ।।पंथी।।३२।।

भूंडूरे भूंडूए मलामणी रे, दीठो दर्शन आजरे।
देवजरे देवतरुसम देवनुंरे, सरियु वंछित काजरे ॥ पंथी ॥ ३३ ॥
तेहनांरे एह वचन श्रवणे सुणीरे, आणी दया दिल मांहीरे।
दीधूंरे रत्न सुवर्णमय सूत्रजीरे, दारिद्र हरे नृप ग्राहिरे ॥ ३४ ॥
लक्ष्मणरे लक्ष्मण पुरमें मोकल्योरे, तेह भूपतीनी पासरे।
उत्तमरे उत्तम नर अवलोकवेरे, पाम्यो अति उल्लासरे ॥ ३५ ॥
सेवारे सेवकरूपी साचवेरे, लक्ष्मण भाखे तामरे।
वनमेंरे वन में बयठो अछेरे, 'सीता' शू श्री रामरे ॥पंथी॥३६॥
भूपतिरे 'लक्ष्मण' जी तिहां आवीयारे, आण्या घर बोलायरे।
भोजनरे, भोजन भक्ती करी भलीरे, 'राम' तदा सुखपायरे॥३७॥
लक्ष्मणरे 'लक्ष्मण' जीने मोकल्योरे, राजा पासे तेवार रे।
जाणेरे, एह उपद्रव टालीयेरे, जग म्होटो उपकाररे ॥पंथी॥३८॥

ढाल मूलगी क्षेपक

सिंहोदर पास ही आवे, भरत का दूत ही थावे. भरत का वचन सुनवावे, सुनो तुम सिंहोदर राजा, करो तुम मेरा यह काजा ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ५२ ॥

ढाल मूलगी

राजारे राजा आण मनावीयारे, 'भरत' भलो भूपालरे।
एहजरे एह उपद्रव सोंभलीरे, टालसे तत काल रे ॥ पंथी ॥३९॥
सेवकरे सेवक सूं अनुशासनारे, राजाजीनी जोई रे।
परण्योरे परण्या पछे लाते मारवूंरे, अण परण्या सूं होई रे ॥४०॥
एहिजरे सामन्तछे धुर माहरोरे, मुझ साथे गुमानरे।
चांकजरे काढीने संधू जोकररे, तो किस्यो राजानरे ॥पंथी॥४१॥
पुनरपिरे पुनरपि 'लक्ष्मण' जी कहेरे, दीसे कवण अन्यायरे।
पालेरे पाले निश्चय धर्मने रे, कहै तुम्हारो शूं जायरे॥पंथी॥४२॥
आधूंरे आधूं तो नवि खींचियेरे, चित्तमां आण सयाण१ रे।
सायररे सायर अंते जाणीयेरे, 'भरत' भूपनी आणरे ॥पंथी॥४३॥

---

१ सज्जनपणो।

खीज्योरे खीज्यो राजा अतिघणूंरे, निसुणी भरत वखाणरे ।
लेईरे क्यूं नहीं जावे एहनेरे, पुरुषो वचन प्रमाणरे ।।पंथी।।४४।।

ढाल क्षेपक मूलगी

दूत है तुझने नहीं मारू, और का जोर नहीं धारूं, इसीका कुल ने संहारूं, धूरां लग चाक रहै म्हारो, विगारचो नहीं कारज थारो ।। सत्यव्रत पालो ।। ५४ ।।

ढाल मूलगी

'लक्ष्मण' रे भाखे, भूपालने रे, भोलामांही भोलरे ।
ऊठीरे उठी आव उतावलोरे, जोऊं थारो जोर रे ।। पंथी ।।४५।।

स्वामी नथमलजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज–अरजी सुन नेम हमारी

बोले तब 'लक्ष्मण' प्यारो, देखूं अब जोर मैं थारो ।। टेर ।। वज्रकीर्ण यह धर्म धुरन्धर, दृढतारो अधिकारो । जिणहूं कोप कियां सुण राजा, होस्ये तुझ मुख कारो ।। धिक् २ तुझ जमवारो ।। बोले ।। १ ।। स्वधर्मी यह ' भरत ' के कहीये, तिण सूं मदत विचारो । तिहूं खण्डाधिप 'भर्त' कहीजे, सहुको जानन हारो ।। छाने नहीं चवड़े नीहारो ।। बोले ।। २ ।। कोप्यो राय 'सिंहोदर' तब कड़े, बोले दूत ए खारो । अहो २ ए दुर्बुद्धि ने, गल हत्थो दे मारो ।। लक्ष्मण कहै को हूंसियारो ।।बोले।।३।। ' लक्ष्मण ' कहै रे ढोर शिरोमण, क्यों आयो अन्त थारो । एम कहन्ता सुभटज धाया, ग्रहि २ निज हथियारो ।। दलबल अतुल अपारो ।बोले।४।

ढाल मूलगी क्षेपक

लक्ष्मणजी कोपे परजलीयो, कोप से दल सब खलबलीयो, सिंहोदर कहै दूत ओ अकलियो, इसो नहीं देख्यो मैं आगे, जाणे कोई जमराजा सागे ।। सत्य० ।। ५५ ।। समरना सौंकी मतवारा, उठे तब सुभट झुंझारा, पश्चायुध हाथ में न्यारा, लेवे वे ढालों का ओटा, अठे अबे करदेसी पोठा ।। सत्य० ।। ५६ ।। दूत हो वचन कटुक भाखे, कायदो जरा नहीं राखे, बोलीरा फल वो अब चाखे कोई कहै धक्का दे काढो, कोई कहै जमी मांच गाडो ।।सत्य।५७।

ढाल मूलगी

आयोरे कर आडम्बर आकरोरे, आपणपे अयाणरे ।
लक्ष्मणरे ऊपाड़ी लीधो सहीरे, हाथीनो आलानरे ॥ पंथी ॥४६॥
त्रास्यारे त्रास्या विविध त्रासडूं रे, नाठा जावे दूर रे ।
उछलिरे गज ऊपरथी बांधीयोरे, आण्यो राम हजूर रे ॥ ४७ ॥

क्षेपक चन्द्रायण

सुनहूं सिंहोदर बात सेवकर करणकी, मन तजीये अभिमान मेट मति मरणकी । जाणो एह विचार और कछु नावने, सुख से बीते काल पाय पड़ इणतने ॥ १ ॥ बचन तुम्हारो शीश हुकम परवांन है, आज्ञा है अखण्ड रामकी आण है । मोकू अपनो जाण. दया चित्त दीजीये, मन मोंने सी आप भोलावण कीजीये ॥ २ ॥

ढाल मूलगी

राजारे 'सिंहोदर' पगे लागीनेरे, राजन सूं भाखन्तरे ।
जाण्योरे मैं नवि प्रभुजी तुम्ह अछोरे, कां ए फल चाखन्तरे।४८।

ढाल मूलगी क्षेपक

मनें नहीं आपरी खबर, हुतीतो लेलेतो सबर, जोरहै 'लिछमण' को जबर ॥ प्रभुके दया दिल आवे, जानकी बन्धन छुड़वावे ॥ सत्य० ॥ ५८ ॥

ढाल मूलगी

महारोरे खमजो ए अपराधजीरे, आपो अब आदेश रे ।
मांहीरे मांहां मांहे, मन मेलव्योरे, भाखे ताम नरेश रे॥पंथी॥४९॥
बन्धनरे बन्धन खोल्या हाथसूंरे, मेलवीया नृप दोई रे ।
घरघररे घरघर वार बधामणांरे, आनन्द वर्त्यो जोईरे॥पथी॥५०॥
आधोरे राज्य दीयो सिंहोदरेरे, राघवजीनी साखरे ।
मिटिओरे मिटियो तस सेवक पणूंरे सन्मुख जाई भाखरे॥ ५१ ॥
कुण्डलरे मांगीलीया राणीकनेरे, विद्युत अङ्गने दीधरे ।
कीधोरे नगरीनो अधिकारीयोरे. पंचोंमें परसिद्धरे॥ ५२ ॥
कन्यारे 'सिंहोदर' राजातणीरे, तीन सयां परिमाणरे ।

आठज रे आठ अछे भूपालने रे, विवाह तणो मण्डाण रे।।पंथी५३॥
लक्ष्मण रे 'लक्ष्मण' कहै परणूं नहीं रे, वनवासो जवतांय रे।
पछी रे पछी परणीसूं सही रे, राजा निज घर जाय रे ॥पंथी॥५४॥
ढालज रे ढाल भली चौवीशमीं रे, राजा राखी टेक रे।
धर्मथीरे 'केशराज' प्रत्यक्षपणे, सरिया काज अनेकरे ।।पंथी॥५५॥

दोहा (आशावरी रागे)

रात रही श्री रामजी, भलया चलने जाम।
जातां विचे आवीयो, देश सु 'निर्जल' नाम ॥ १ ॥
तृषा व्यापी सीता भणी, तरुतले ले विश्राम।
जल लेवाने कारणे, ' लक्ष्मण ' धायो ताम ॥ २ ॥
आगे एक सरोवरू, दीठूं अधिक अनूप।
जलक्रीड़ा करवा भणी, आव्यो छे इक भूप ॥ ३ ॥
'कूबेरपुर' नो राजीयो, नाम 'कल्याण' सुकुमाल।
'लक्ष्मण' ने देख्यों थकां, राच्यो रूप रसाल ॥ ४ ॥
आकारे करी ओलखी, ए छे कोई नार।
आमंत्रण भोजन तणो. वडो प्राहूणो विचार ॥ ५ ॥
सो रे कहुं जिमसूं नहीं. भाई छे वनमांहि।
मंत्रीश्वर सामन्तजे, लाया लेई उच्छाहि ॥ ६॥
स्नान करी भोजन भलूं. आरोगी रघुराय।
बतलावे ते भूपने, सहज पणूं न छुपाय ॥ ७ ॥

ढाल पच्चीशमीं

तर्ज—देखी सखी प्रभु कण्ठ विराजे।

आभलो रे सीतापति केरो, जिहां जिहां संचार रे।
तिहां तिहां ना काज समारे, करी करी उपकाररे॥ आभलो ॥१॥
'.कुबेरपुर ' पति बोलीयोरे. स्वामी सुणो सुविचार रे।
'बालिखिल्य' राजाभलोरे, पृथिवी नो भरतार रे ॥ आभलो ॥२॥
गर्भवती राणी हुई रे, एटले असुर आयरे।
बांधी लीधो ते रायजीरे, छोड़ावीयो नविजाय रे ॥आभलो॥३॥

राणीए जाई पुत्रीकारे, मंत्रीए भाख्यो पुत्ररे।
पुत्र पनोताथी रह्यो रे, आगेही घर सूत्र रे ॥ आभलो ॥ ४ ॥
'सिंहोदर' सुत सांभलीरे, थापी वात प्रधान रे।
वालिखिल्य' घरे न आ रे, तिहां लगे ए राजानरे ॥आभलो॥५॥
पुरुषवेष धारी रही रे, बालपणाथी जोई रे।
माता मंत्री बाहिरो रे, भेदन जाणे कोई रे ॥ आभलो ॥ ६ ॥
वसुधा मांहै विख्यातजीरे, भूप 'कल्याण' सुकुमालरे।
मंत्री महोटो तो कयोरे, राज्यतणो रखवालरे ॥ आभलो ॥ ७ ॥
अर्थ घणों असुरां भणीरे, आपूं छूं हूं आप रे।
अर्थ तणा अर्थी नहीं रे, असुर न छोड़े बाप रे ॥ आभलो ॥८॥
'सिंहोदर' थी राखीयोरे, 'वज्रकर्ण' नृप जेमरे।
असुरांथी ऊबारीये रे, बाप अमारो तेम रे ॥ आभलो ॥ ९ ॥
'राम' कहै तूं तुरत में रे, पर हो मत करिश वेषरे।
तात छोड़ावी ताहरो रे, आवेज्यों सुविशेषरे ॥ आभलो ॥ १० ॥
महाप्रासाद करी लियो रे, कन्या राजा रूपरे।
लक्ष्मणजी ने परणावीये रे, मंत्री कहै अनूपरे ॥आभलो ॥ ११ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी

कामए प्रभुजी मुज करणो, हमांने आपको शरणो, ब्याहको हांकारो भरणो ॥ प्रभो मत नाकारो दीजे, भेट आ चरणां में लीजे ॥ सत्य० ॥ ५९ ॥

ढाल मूलगी

'राम' कहै वनवास में रे, होई आवूं जाम रे।
तब लग घर बैठी रहो रे, पछे सरसी काम रे ॥आभलो ॥१२॥
तहति कही दिन तीसरे रे, प्रभुजी पाछली रातरे।
आगाने ऊठी चल्यारे, नृपे जाण्यो परभात रे ॥ आभलो ॥१३॥
नदी नर्मदा आवीया रे, विन्ध्या अटवी जाई रे।
लोके ते वर्ज्या घणूंरे, जाये बेपरवाई रे ॥ आभलो ॥ १४ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी

कहन प्रभु किनकी नहीं माने, चालन की वातही ठाने, सिंह कहो किस का भय माने, निडर हो तिनोंही चाल्या, रह्या नहीं किणराही पाल्या ॥ सत्य० ॥ ६० ॥

—: ढाल मूलगी :—

दक्षिण नी दिशे अनुसरीरे, कण्ट की तरु भूरीरे ॥
माठो को दीसे नहींरे, जावे मार्ग रज चूरीरे ॥ आभलो ॥१५॥
शुकना शुकन नागणेरे, नागणे घाट विघाटरे ॥
दुर्बल ने एसोचनारे, वलियों उज्जड़ वाटरे ॥ आभलो ॥ १६॥
असुरोंनी सेनाधणीरे, दल वल नो नहीं पाररे ॥
देश घातने नीकल्यारे मिल गया तेणी वाररे ॥ आभलो ॥१७॥
सेनामें सेनापतिरे, तरुण पणो छे तासरे ॥
सत्य वती अविलोक तांरे, पायो अति उल्लासरे ॥ आभलो ॥१८॥
असु रोने तेड़ी कहैरे, उदालो ए वालरे ॥
धस मस करता धाईयारे, राम प्रत्ये तत कालरे ॥ आभलो ॥१९॥
लक्ष्मण भारवे राम सूंरे, तुम रहो सीता पासरे ॥
धनुष्यनाटंकारथीरे, असुर गया सब नाशरे ॥ आभलो ॥ २० ॥
सेना पति सामन्त सूंरे, लागो राघव पायरे ॥
चरित्र सुणावे आपणोरे, आगे ऊभो आयरे ॥ आभलो ॥ २१ ॥
"कौशाम्बी" नगरी भलीरे, "वैश्वानर" अभिधानरे ॥
ब्राह्मण 'सावित्री' धणीरे, जायो सुत अज्ञानरे ॥ आभलो ॥२२॥
'रुद्र देव' अति रुद्रजीरे, करतो करम क्रूररे ॥
चौर अन्यायीने शीरेरे, वाजे अपजश तूररे ॥ आभलो ॥ २३ ॥
चौरी करतां साहीयोरे, शूलीनो आदेशरे ॥
नृपे दीधो तब श्रावकेरे, छोडाव्यो सुविशेषरे ॥ आभलो ॥२४॥
शिखामण दीधी मुज भणीरे, मतकरे एहवो कामरे ॥
पल्ली मांहै आवतांरे, मैं पायो विश्रामरे ॥ आभलो ॥ २५ ॥
पल्ली पति एहूं हुवोरे, तेज प्रताप प्रचण्डरे ॥

कोई यन होवे सामु होरे, वर्ते आण अखण्डरे ॥ आभलो ॥२६॥
बांधू राणा राजीयारे, पाडूं सघले त्रासरे ॥
आज हुवो मुज जाणजोरे, देव ! तुम्हारो दासरे ॥ आभलो ॥२७॥
अविनय कीधो आकरोरे, खमजो मुझ अपराधरे ॥
भाग्य वडूं जे माहरुंरे, प्रभु तुम दर्शण लाधरे ॥ आभलो॥२८॥
कामतणो आदेशथी रे, द्यो मुझ प्रत्ये आजरे।
'बालिखिल्य' ने छोडीदे रे, पहलो करए काजरे ॥आभलो॥२९॥
'बाली खिल्य' ने छोडी नेरे, असुरें कर्यों प्रणामरे ॥
'बालि खिल्य' करजोडीनेरे, प्रणम्यो प्रभुजी रामरे॥ आभलो ॥३०॥
'राम' तणा आदेशथीरे, दीधो पूरी प्होंचायरे ॥
'कल्याणमाला' कुंवरीरे, देख्योंथी सुख थायरे ॥ आभलो ॥३१॥
ढाल भली पचीसमीं रे, बन्दी मोचन नाम रे ॥
'केशराज' श्री रामजी रे, काम करे अभिरामरे ॥ आभलो ॥३२॥

दोहा (सारंगरागे)

वींध्या अटवी अतिक्रमी१, मेलतां बहुग्राम ॥
महानदी तापी तरी, उरहा आया ताम ॥ १ ॥
प्रान्त ग्राम ग्रामों विषे, 'अरुण' एहवो ग्राम ॥
निर्लज ने निर्धन घणा, लोक वसे निर्मामर२ ॥ २ ॥
'कपिल' नामे अति क्रोधियो, ब्राह्मण महा कुपात्र ॥
अग्नीहोत्र-कर्माचरे, गर्वे पूरित गात्र ॥ ३ ॥
'सुशर्मा' सुखंदायीनी, ब्राह्मण गुणनी जाम ॥
मीठी बोली माननी, वसुधा मांहे बखाण ॥ ४ ॥
'सीता' ने तृष्णा व्यापथी, पाणी पीवा काज ॥
आवी गयाते गांवमां, वेश पन्थीनो साज ॥ ५ ॥

-(ढाल छावी शमीं)-
तर्ज-धन्य धन्य सतीजी आपश्री राखे राम ॥

'राम' पधारीयाजी, ब्राह्मण केरे गेह ॥

१ ओलंगी-हद बहार जई २ आबरु विनाना-निशर्मा-

आदर दे अति ब्राह्मणीजी, आणी धर्म सनेह ॥ राम० ॥ १ ॥
आसन मांड्या जु जु आंजी, देती अति सन्मान ॥
शीतल पाणी पाईयोजी, जाणे अमृत पान ॥ राम० ॥ २ ॥

—ढाल चेपक मूलगो—

'सुशर्मा' करती है अर्जी, कीजिये मोपर शुभ मरजी, विराजो रात रघुवरजी ॥ रामजी भर्यो होंकारो, सीता तब देवे नाकारो॥सत्य.॥६१॥

समयसुन्दरजी कृत–ढाल चेपक तर्ज अरणक मुनिवर चाल्या गौचरी—

पियुड़ा ! न रहीये रे मन्दिर पारके, (टेर) रहियों होत विखादो रे॥
आपांतो वन वासो आदर्यो, छोड्या रसना स्वादो रे॥ पियुड़ा ॥ १ ॥
निज इच्छाए रहिवो अतिभलो, इण सम सुख जग नाहीं रे ॥
स्व इच्छाए सुख दुःख देखीये, शास्त्र वदेए माही रे ॥ पियुड़ा ॥ २ ॥
राम कहै दिन थोड़ो अछे, ब्राह्मणी भक्ती अपारो रे ।
रात रहीने प्राते चालस्यों, जब उदे दिनकारो रे ॥ पियुड़ा ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी

एटले ब्राह्मण आवीयोजी, प्रगट पणे रे पिशाच ।
कोप करे अति क्रोधीयोजी, ताम विखेरे वाच ॥ राम ॥ ३ ॥
एकोण मेले लूगड़ेजी, घर में घाल्या आज ।
अग्नीहोत्र अपवित्रियोजी, कीधूं काज अकाज ॥ राम ॥ ४ ॥
नीकल म्हारा घर थकीजी, नहीं तर तोडूं हाड़ ।
भामिनीनो[1] मुख भांजवाजी, आयो लेई मुराड़ ॥ राम ॥ ५ ॥
शरणे आवी सुन्दरीजी, 'सीता' राखी पूठ ।
तो पण नटले पापीयोजी, 'लक्ष्मण' आयो ऊठ ॥ राम ॥ ६ ॥

ढाल चेपक तर्ज–अरणक मुनिवर०

'सीता' भाखेरे रघुवर में कह्यो, नहीं रहीये इण गेहोरे ।
वनमां सुखसूंरे रहितां आपणे, वूठता अमृत मेहो रे ॥पियुड़ा॥४॥

ढाल मूलगी

पग साहीनो फेरीयोजी, उच्छालीयो आकाश ।

---

१ चिल्ली ।

म्हांखण लाग्यो तेटलेजी, ब्राह्मण पायो त्रास ॥ ७ ॥
पाड़े अधिकी पीपड़ीजी, मिल्या लोक अपार।
भेद लहीने भाखहीजी, फिट रे फिट गिमार ॥ राम ॥ ८ ॥
कीटी पर कटक एजी, करतां शोभान कोई।
करुणा आणी रामजीजी, दीधो छोड़ावी सोई ॥ राम ॥ ९ ॥
तिहां थकी चाली गयाजी, बीजी अटवी मां है।
काजल वरणी शामलीजी, परम भयंकर आहे ॥ राम ॥ १० ॥
जलधर[1] लाग्यो बरसवाजी, आवी गयो चौमास।
बड़ला तले वासो बस्योजी, आणी अति उल्लास ॥ राम ॥ ११ ॥
अधिष्टायक देवताजी, प्रभु थी पामे त्रास।
ए तेहने सारे नहीं जी, हुवो अधिक उदास ॥ राम ॥ १२ ॥
'ईभकर्ण' नामे भलोजी, जक्ष जक्ष सिरदार।
जाई पुकार्यो देवनेजी, तब ते करे सुविचार ॥ राम ॥ १३ ॥
भाग्य हीन सुर पापियाजी, अवसर चूक्यो एह।
एतो म्होटा प्राहुणाजी[2], आया छे तुम्ह गेह ॥ राम ॥ १४ ॥
वासुदेव अष्टमाजी, ए अष्टमा बलदेव।
महापुरुष पृथिवी विशेजी, क्यूं न करो ते सेव ॥ राम ॥१५॥
नव जोनन चहुड़ा पणेजी, लांबी जोजन बार।
कोट अने वर कांगुराजी, ऊंचा मन्दिर सार। राम ॥ १६ ॥
हाट भर्या बहु वस्तु सूंजी, थयों न धन नो पार।
कूप वापि बारी सूजी, शोभा विविध प्रकार ॥ राम ॥ १७ ॥
पुरी 'अयोध्या' सारिखीजी, 'राम पुरी' अभिराम।
रात्री विषे रचना करीजी, देव तणा ए काम ॥ राम ॥ १८ ॥

स्वामी नथमलजी कृत–ढाल क्षेपक तर्ज वेसर सोना की

नगरी राम की आतो तत क्षिण कीधी तैयार ॥ टेर ॥
देवतणी ऋद्धि नो विस्तार, कहतां नावे पार॥ नगरी ॥ १ ॥
अभिनय अलकापुर अनुमांन, मानूं धरी है स्वर्ग की आन ॥ २ ॥

१ वर्षा। २ महमान।

महिल मनोहर अभिनव गोष, कर नूतन मनरी जोष ॥ ३ ॥
चहूं दिश चोहटा भरचा भंडार, माल किराणा अति व्योपार ॥४॥
पोढया 'लिछमन' 'सीता' 'राम', सेज सुकोमल ठाम ॥नगरी॥५॥

ढाल मूलगी

मङ्गल शब्द सुहामणाजी, जाण्यो 'राम' नरेश ।
नगरी नयणे निरखतांजी, पायो सुख सुविशेष ॥ राम ॥ १९ ॥
विणा धार विशेषस्यूंजी, 'ईभकर्ण' वर यक्ष ।
दीठो ऊभो आगलेजी, सुरतरु तो प्रत्यक्ष ॥ राम ॥ २० ॥
विस्मयवंत विचारीयोजी, राजा 'राम' जेवार ।
यक्ष कहै यो मैं कियोजी, वासतणो विस्तार ॥ राम ॥ २१ ॥

स्वामी श्री नथमलजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज—हरखी २ रे

दिन ऊगेने लोग लुगाई, नगरी सोवनी देखे ।
मन्दिर माला अधिक रसाला, हर्ष घणो सुविशेषेजी ॥
नगरी खूब बनीछेजी, योंका राम धणीछेजी ॥ टेर ॥ १ ॥

श्री रामचन्दजी महाराज कृत ढाल क्षेपक तर्ज—वेसर सोनाकी

नगरी 'राम' की, आतो देवता कीधी तैयार ॥ टेर ॥
पग पग प्रगटे नवे निधान, सुरनर किंकर समान ॥ नगरी ॥६॥
जहां जावे वहां हुवे आनन्द, काटे पराया फन्द ॥ नगरी ॥ ७ ॥
सोवन कोट विराजे एन, पुन्यवन्त करता चैन ॥ नगरी ॥ ८ ॥
धर्म जैन परम दयाल, गउ ब्राह्मण प्रतिपाल ॥ नगरी ॥ ९ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज—हरखी २ रे

कूवा वावी अधिक सरोवर, मन्दिर मोहन गाराजी ।
मुक्ता द्रव्य भर्या निज घरमें, वरसे कञ्चन धाराजी ॥नगरी॥ २ ॥
देवता भाखे सुणो सहुजन, चिन्तामकरो कांइजी ।
वर्षाकाल जाण प्रभुजीके, नगरी एह बनाईजी ॥ नगरी ॥ ३ ॥
रागरङ्ग नाटिक कर शोभे, कहितां पार न आवेजी ।
स्वर्ग लोक सा सुख भोगवतां, सुखसूं काल गमावेजी नगरी॥४॥

ढाल मूलगी

देव विशेष सेवा करेजी, आछो अवसर पामि।
हूंछूं सेवक ताहरोजी, तुम्हे छो महारा स्वामी ॥ राम ॥ २२ ॥
यक्ष पुरुष सेवा करेजी, पोषे परिगल प्रेम।
राम रहै सुखमें सहीजी, पुण्य तणा फल एम ॥ राम ॥ २३ ॥
'कपिल' विप्र इन्धन भणीजी, अटवी में आवन्त।
नूतन नगरी देखतोंजी, 'इजरज' अति पावन्त ॥ राम ॥ २४ ॥
नारी रूपे यक्षणीजी, विप्रे पूछ्यूं ताम।
नीपावी नूतन पुरीजी, वास बसे श्री राम ॥ राम ॥ २५ ॥
याचक ने जलधर परेजी, वरसे कंचन धार।
एम सुणन्तां खलवल्योजी. ब्राह्मण लाग्यो लार ॥ राम ॥ २६ ॥
जन्म दारीद्री हूं अछूजी, एले जमारो जाय।
जेम हूं पामू दक्षिणाजी, भाखो सोई उपाय ॥ राम ॥ २७ ॥
सा भाखे नगरी तणाजी, द्वार अछे वर चार।
रखवाला यक्ष ही रहैजी, कौन लिये पइसार ॥ राम ॥ २८ ॥
नवकार§ भणेजे मुख थकीजी, धारे नियमजे चार।
श्रावक होई जानतांजी. कोन करे क्षणवार ॥ राम ॥ २९ ॥
साधु समीपे आवीयोजी. आपण श्रावक होई।
घरणी कीधी श्रावीकाजी, तब चाल्यां ते दोई ॥ राम ॥ ३० ॥
पूर्व कथित विधि साचवीजी, राम समिपे आय।
उभा ब्राह्मण ब्राह्मणीजी, कोई य न कहीणो जाय ॥ राम ॥ ३१ ॥

---

§ तर्ज लंगड़ी—
मंत्रों का मंत्र नवकार मंत्र तंत्रों का तंत्र हरे दुःख तन का।
जो लेवे धार हुवे पल में पार, करदे उद्धार पापी जनका ॥ टेर
पूर्वो का सार शरणा आधार है गुण अपार तारण तिरण।
मंगलीक आप, जयवन्त जप, दे सुख अमाप कल्याण करन ॥
मनोरथ के पूर चिन्ता के चूर कटे कर्म करूर भय दुःख भंजन।
है यही रसाण नागदमण जाण पारस प्रधान करदे कंचन ॥
भाखे जिनेश रटते हमेश, टल जावे कलेश उसके मनका ॥जो लेवे १॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

'लिछमण' ने देखने आठो, ब्राह्मण तव पाछो ही नाठो, एणे मुझ कूटयो तो काठो । 'राम' कहै स्वाधर्मी भाई, बोलावो अभयदान दाई ॥ सत्य ॥ ६२ ॥

ढाल मूलगी—

लक्ष्मण बोलावी लियोजी, तव ते देय आशीस ।
दीधी वंछित दक्षिणाजी, सफली करीय जगीश ॥ राम ॥ ३२ ॥
घरे आवी धन खरचीयूंजी, लीधो संयम भार ।
कारज सार्यो आपणोजी, ए प्रभु नो उपकार ॥ राम ॥ ३३ ॥
अब चौमासो ऊतर्योजी प्रभुजी चालण हार ।
यक्षे दीधो रामनेजी, 'स्वयम्प्रभ' वर हार ॥ राम ॥ ३४ ॥
लक्ष्मणने तो कुण्डलेजी, ते जड़िया मणि रयण ।
चूड़ामणी* सीता भणीजी, आपी उपजाव्यो चयण ॥राम॥३५॥
मनना वांछित रागनेजी, सम्भलावाने हेत ।
वीणा दीधी वेगसूंजी, सघला साज समेत ॥ राम ॥ ३६ ॥
पहोंचाड़ी पाछा वल्याजी, देव महा सुखदाय ।
प्रभुजी आगे चालियाजी, नगरी गई विलाय ॥ राम ॥ ३७ ॥
ढाल भली छावीशमींजी, देवकियो अनुराग ।
'केशराज' मुनि भाखीयोजी, राम तणो सोभाग ॥ राम ॥ ३८ ॥

दोहा (सिंधुड़ा रागे)

सांचरतां सुखमें सही, सांज समे सहु कोई ।
'विजय' पुरी चलि आवीया, वासो सोधे सोई ॥ १ ॥
नगरीना उद्यान में, वड़लो अछे विशेष ।
मन्दिरना आकार सूं, वासो वसे नरेश ॥ २ ॥
'महिधर' महिमा नीलो, राजा पाले राज ।
'ईन्द्राणी' राणी तणो, कहीये कन्थ सकाज ॥ ३ ॥
'वनमाला' पुत्री भली, बालपणाथी एम ।

*मस्तकना गहना अर्थात् बोर

टेक ग्रही ' लक्ष्मण ' वरूं, अवर वरूं तो नेम ॥ ४ ॥
वनवासो श्रवणे सुणी, राजा करे विचार ।
कदी घर आवी परणसे, विवाह तणी एवार ॥ ५ ॥
प्रौढी पुत्री जाणिने, माय बाप परिवार ।
परणावे उतावली, राखी करे विकार ॥ ६ ॥
' ईन्द्रनगर '[1] नो राजीयो, ' वृषभ ' राय मन्हार ।
'सुरेन्द्ररूप' राजा भणी, सादीभी ते वार ॥ ७ ॥

ढाल सत्तावीशमीं
तर्ज–सिंधीकी देशी (गुरोंजी थे मने गोडे न राख्यो)

'वनमाला' ए निसुणी जाम, मनमांहै अकुलणी ताम ।
रात ही में वनमांहै आवे, एकाकी मरवाने दावे ॥ वन ॥ १ ॥
वनदेवीनी कीधी पूजा, लक्ष्मण टालीने वर दूजा ।
जन्मान्तरे पण मुझ मति[2] आपे, एम कहीने मरवू थापे ॥ २ ॥
तेहीज वड़ले आवी चाली, लक्ष्मणजी ए दीठी सावाली ।
रामसु सीता सुखमें सोवे, लक्ष्मण जागे दश दिशे जोवे॥वन॥३॥
ए कोई वनदेवी दीसे, ए वटवसणी[3] विश्वावीशे ।
बड़ आरोही ऊपर आई, 'लक्ष्मण' पूठे चढ्यो धाई ॥ वन ॥ ४ ॥
वनदिग् व्योमतणी सहुदेवी, मनवच काया करीने सेवी ।
सांभलजो ए बोल हमारो, मुझने देजो लक्ष्मण प्यारो ॥ वन ॥५॥
इहभव टाल्यो परभव देओ, तूं ताहरी बलिपूजा लेवो ।
एम कही नांख्यो गल पासो, 'लक्ष्मण' देखे एह तमासो ॥ ६ ॥
अविलम्बे सोचे ते तेंते, लक्ष्मणजी भाखे तस हेते ।
भद्रे ! साहस मकरो काचो, सोहूं 'लक्ष्मण' जाणो साचो ॥ ७ ॥
बांहै साही हैठी आणी, एटले जाग्या राजा राणी ।
'लक्ष्मण' सहु वृत्तान्त सुणावे, सीता राम महा सुख पावे ॥ ८ ॥
लज्जा पामी प्रभुजी निरखी, पण सुन्दरी मनमांहै हरखी ।

१ चन्द्रनगर (जैन रामायणे) २ नहीं । ३ वड़मां वसनारी ।

सीता राम तणे पगे लागी, जाणे भाग्य दशा अब जागी ॥ ९ ॥
पछी 'इन्द्राणी' नृपनी नारी, नवि देखे 'वनमाला' प्यारी ।
करुणास्वरे ऊठी पोकारी, राजाने दुःख हुवो भारी ॥ वन ॥१०॥
'वनमाला' देखण ने राजा, चाल्यो साथे सुभट लै ताजा ।
प्रभुपासे 'वनमाला' देखी, राजाने अति रीस विशेषी ॥वन॥११॥
हणो हणो कही मचायो शोर, एछे मुझ कुंवरीनो चोर ।
सामों उठ्यो लक्ष्मण देवो, राय सुभट त्रास्या ततखेवो ॥ १२ ॥
ओलखीयो लक्ष्मण दामाता, राजाजी पाम्यो सुख साता ।
घरही आवी चाली गङ्गा, कुंवरीनो तो कर्म सुचङ्गा ॥वन॥१३॥
लक्ष्मण को वखाने डाही, बाल पणाथकी, उत्साही ।
अब प्रभुजी ए पुत्री परणो, एहि वाते विलम्बन करणो ॥वन॥१४
आदर अधिके मन्दिर आणे, भोजन भक्ती करी सन्माने ।
वासर[१] हुवाछे वेचारो, वर्ते सुख नहीं असुख लगारो ॥वन॥१५॥
परखद[२] पूरणी अद्भूतो, एटले एक पधार्यो दूतो ।
अति वीर्ये मोकलीयो आयो, ऊपज्यो जाणो अति सन्तापो॥१६॥
'नंद्यावर्त' नगरथी आयो राजाजी ए सो बतलायो ।
भरत संघाते विग्रह[३] वारु, 'अतिवीर्य' सूं आज अपारु ॥ १७ ॥

—ढाल मूलगी क्षेपक—

लक्ष्मण कहै भरतसूं झगड़ो, थयो किन कारण ए रगड़ो; दूत कहै मुझ स्वामी जबरो । भरत की सेवा ही चावे, भरत पिण सन्मुख ही आवे ॥ सत्य० ॥ ६३ ॥

ढाल मूलगी—

'भरत' पक्षे बहु भूपति आया, खड़ियूं खेत झूंझाऊं बजाया ।
'अतिवीर्ये' तुमने बोलाया पक्षथकी बल वधत सवाया ॥ १८ ॥
काम पड्यां जे सारे काम, सोई सगो जगमें अभिराम ।
काम पड्यांथी जे दीये टालो, तेह सगानूं मुख करो कालो ॥१९॥
लक्ष्मण भाखे एरे विरुद्ध, क्यूं ऊपजिओ छेरे अयुद्ध ।

१ दिन । २ परिषद् । ३ सभा ।

दूत कहै मुझ स्वामी बलीयो, ए वातां में मैं अटकलीयो ॥२०॥
'भरत' भूपति वांछे सेवा. विग्रह कारण एह लहेवा।
कोई न हार्या कोई न जीतो, दोई पक्षे छे सुजश विदीतो ॥२१॥
अब ही आयो मुझने जाणो, युद्ध विधि सघली ठाणो।
एम कही मोकलीयो तेहो, पिण राघवसूं आणे नेहो ॥ वन॥ २२॥
मूर्ख मर्म न कांई जाणे, भरत भूपसूं कां अति ताणे।
मुझ सहाय अधिको पामी, जीतण चाहै अयोध्या स्वामी ॥२३॥
सैन्या सघली सूं हूं जावूं, मित्र न जाणे तेम करावूं।
एह हणीने पाछो आवूं, भरत भूपनी आण धरावूं ॥ वन ॥२४॥
राम कहै ए सघलो कूड़ो, तूं ताहरे घर बैठो रुड़ो।
सुत सहुने देतूं मुझ लारे, ज्यूं मुझ कहग्यू काम समारे ॥वन॥२५॥
भली कही भाखी नर नाथे, सुत सगला ए दीधा साथे।
'नंद्यावर्त' नगरना पासे, आवी उतरे अति उल्लासे॥ वन ॥२६॥
देवी खेत्र तणी रखवाली, राम प्रत्ये भाखे सुविशाली।
कारज कोई मुझ फरमावो, जे तुमने छे अधिक सुहावो॥वन॥२७॥
कार्य कोई नहीं मुझ तांई देवी कहै ए साचो सांई।
तो पण कांई करी देखावूं, नाम भणो हूं लाज रहाऊं ॥वन॥२८॥
त्रियरूपे ते सघला होई, त्रियनुं राज्य होवे जेम जोई।
राम अने लक्ष्मण दो भाई, स्त्री रूपे पण सुन्दरताई ॥वन॥२९॥

स्वामी नथमलजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज—कूवड़ाना रूपे रावल० ॥

रामा केरे रूपे राघव, नहीं किणी रे सारे।
नहीं किणीरे सारे, राघव आरती ऊतारे ॥ टेर ॥
मानूं अहि जिम वेणी गूंथी, चूंदड़ी अङ्गे धारे।
भाल बिंदीने चक्षुकज्जल, दीसे अधिक उदारे ॥ रामा ॥ १ ॥
नवरंग साड़ो भारी पेरी, पग घूघर घमकारे।
एम अनूपम धर धरणी छबि, कौन लहै तसु पारे ॥ रामा ॥ २ ॥
हाथे टुकड़ा वलि सरणाई, नौबत वजत नगारे।
वाजा अभिनव नृत्यकरेते, मधुस्वर राग उचारे ॥ रामा ३

पग पग लाख पसावजदेते, पोलपे आप पधारे ।
प्रतिहार्योंनृप आगलआकर, पग लागीने पूकारे ॥ रामा ॥ ४ ॥

ढाल मूलगी,

नारी साथे लीयेरे लड़ाई, राजाजीनी एह लघुताई ॥
तिण हीमे त्रिय आगे हारे, ते अपजश पामे जग सारे ॥ वन ३० ॥
महिधरे एसैंन्याभेजी, संग्रामें ए शूर सतेजी ॥
द्वार पालेजई वातसुणावी, अतिवीर्य नृपनेरीस अणावी ॥ वन. ३१ ॥

दोहा- "महीधर तो मानीजतो, रचिते उलटी रीत ॥
तुझ ऊपर करवा तुरत, मेली नारी अनीत ॥ १ ॥
पोल ऊपर तेपाधरी, आय ऊभीछे अत्र ॥
रीस लाय भूपतिकहै, ताड़ो जाई तत्र ॥ २ ॥

ढाल मुलगी–

भरत' भूपनेहूं साधसूं, सुजश घणो वसुधा वाधसूं ॥
त्रियसैंन्याए पाछीभेजो, मन्दिर नो धूर देख्यो चेजो ॥ वन ३२ ॥
एटळे एक कहै नर फांसो, महीधरेए कीधोहासो ॥
वैश्वानर जेमघी सीचाणो, रोमे रोमे रायतपाणो ॥ वन. ३३ ॥
रामादिक त्रियसैन्या पूरी, आवी गई नृप द्वार सनूरी ॥
राय कहै काढो गलेसाही, आया शूरा सुभट संबाही ॥ वन ३४ ॥

ढाल चंपक तर्ज पूर्व वत्–

सुनत सुभट तव साथ शर आया, बोलत विना विचारे ॥
रे रे रण्डे ! यहांक्यो आई, हट जावो थे बारे ॥ रामा. ॥ ५ ॥
स्त्री वेशी रघु ताम पयम्पे सुणजो सबसिरदारे ॥
तुम नृपने नारी ज्यूं जाणी, 'महीधर' राय हमारे ॥ रामा ॥ ६ ॥
तिणसूं स्त्री सैना कर भेजी, एम कही शरधारे ॥
हम से जो तुम राड़ करोगे, तो पहुंचाऊं जमद्वारे ॥ रामा ॥ ७ ॥

ढाल मूलगी–

नारी लड़े नरनी परनी की, 'अटल' टलीने नहीं पड़े फीकी ।
हाथीतणो थांभो ऊठावे, हलधर हर्षे मार मचावे ॥ वन ॥ ३५ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज पूर्ववत्—

राघव धनु टंकार करीने, सुभटने तामनसारे।
धड २ धूजत जनधवआगे वात कहे विस्तारे॥ रामा॥ ८॥
त्रिव सैना दे मार गजबकी, इण आगे सवहारे।
ज्यूं वर्जे ज्यूं निकटजआवे, तुम ची फौज संहारे। रामा॥ ९॥

ढाल मूलगी—

भाग्या लोकन लागी वारो, राजाजी हुवो असवारो।
आवे खांडोकर सम्भाली, लक्ष्मण' जी ए लीधो उदाली॥वन३६॥
केशग्रही ने बांध्यो गाढो, लक्ष्मण' नो मन हुवो ठाढो।
भरत भूपसूं हींडो आडा, गवरावो ए सुजश पवाड़ा। वन ३७॥

ढाल मूलगी क्षेपक—

घीस कर लावे है वारे, रामके चरणांहीपारे, लक्ष्मणकहे भरत यूंमारे।
भरतसम राजा नहीं दूजो, उन्हींका पगल्या नित पूजो।सत्य६४॥

ढाल मूलगी

सीता ए बांध्यो छोडायो, गहिले बांदी गुमान गमायो।
खेत्र देवी संकोची माया, जे जिमथा तेतिमही कराया॥वन ३८॥
राम रु लक्ष्मण दो ही दीठा, राजा लोयण अमिय पइठा।
पगे लागीने नरवरबोले, अवरन कोई प्रभुजी तुमतोले। वन ३९॥
अष्टापद जेम सुणीयो आगे, उदकी१ उदकीने पग भागे।
तेम मुझ मांही एहिज बीती, श्री वतकार२ ए भाखूं छीती। वन ४०
लाज गई निलज्जि कहाणो, लोको मांहै लुण्ड* कहाणो।
प्रगट पराभव३ एह सहाणो, चौर अन्यायी जेमग्रहाणो।वन४१॥
जलथी अलगो कीधो माछो, पाणी मांहै नाचे पाछो।
तड़प तड़प करतो अति तेचे, पाणी ऊतरियों ते नचिजीचे।वन४२॥
आंगलिये देखायो कुहलो, आपे आप मरे मनदुहलो।
दिन २ प्रत्ये सो जावे गलतो, लेई अपमान नवाधे बलतो॥४३॥
नालेरे जेम राख्योपाणी, एह सहिनाणी मति मन आणी।

१ ऊछली-ऊछलीने। २ वात। ३ हार। * पागल।

१ तोनकरो पाखली राखी, कोन शके तेहनो जलचाखी ।वन४४
मानगया निष्टाईआया, साधु नी सेवा न मजाया ।
भाई पण जेहनाछे दीणा. परियण छे परदेशां खीणा । वन ४५॥
यौवन गयूं बूढ़ापो भराणूं. तेहनो तो संयम नूं सराणूं ।
घणूं घणेरो कांई माखूं. अब हूं म्हारा मननी राखूं ॥ वन ॥४६॥
राज्य तजीने संयम पालूं, जश मेलाणूं फरी अजवालूं ।
राम कहै तुं भरत सरीखो, राज्य करो हम बोल परीखो ॥ ४७ ॥
'अतिवीर्यनी' एह अधिकाई, विजयरथे थापी ठकुराई ।
'सिंहगुरु' पासे संयम लीधो, समता रूप सुधारस पीधो ॥ ४८ ॥
'विजयरथ' भगिनी सुविशाला, लक्ष्मण ने दीधी 'रतिमाला' ॥
'विजयसुन्दरी' बीजी भगिनी, 'भरत' भणी दीधी शुभ लगिनी॥४९।
भरत भूपनी सेवा साधी, निज घर आयो नृप आराधी ।
'राम' 'विजयपुर' चालि आया, वनमालाने अधिक सुहाया॥५०॥
सत्तावीशमीं ढाल सुहाली, भरत भूपनी आरति टाली ।
'केशराज' कहै सारे काम, सोही महोदर जग अभिराम ॥ ५१ ॥

दोहा (धनाश्री रागे)

महीधरने रे पूछके, राम चाल्या उजाम ।
लक्ष्मणजी सूं वीनवे, सावनमाला ताम ॥ १ ॥
प्राणदान दातारतूं, अबकां तजे निराश ।
भाखे पूर्ण विलोचना, करे घणूं अरदास ॥ २ ॥
विवाह करी सुविशेषथी, मुझने लीजे लार ।
वनवासे सरिसं रहू, होई खिजमतदार ॥ ३ ॥
लक्ष्मण भाखे भामिनी, ए अवसर नहीं कोय ।
झूंठो हट नवि कीजीये. हैये विमासी जोय ॥ ४ ॥
जब फिरी मन्दिर आवसूं, सेवीने वनवास ।
बोल हमारो छे सही. पहोंचाविस तुझ आस ॥ ५ ॥

१ छाल, काचली अने गोलो ए त्रण ।

मुनि श्री रूपचन्द्रजी म० कृत ढाल क्षेपक तर्ज-पानीड़ो भरवादे

प्रिय ! मत करना इन्कार, संग में चालण दो ॥ टेर ॥
पिया विना मैं घर नहीं रहसूं, प्राण वल्लभ सङ्ग सुख दुःख सहसूं !
मैं रहसूं प्रियतम लार ॥ सङ्ग में चालण दो ॥ १ ॥
महल अटारी वैभव सारा, तुम बिन परिकर लागत खारा ।
सूना सब संसार ॥ सङ्ग में चालण दो ॥ २ ॥
बड़े कठिन से दर्शन पाया, आजही आपने छेह दिखाया ।
वाहा वाहा आपको प्यार ॥ सङ्गमें चालण दो ॥ ३ ॥
निशदिन मुझको विरह सतासी, ओलूं मोहन मूर्ति की आसी ।
हिय उमटे अनंग अपार ॥ सङ्ग में चालण दो ॥ ४ ॥
रातको नींदन भोजन भावे, तुम बिन जियड़ो अति अकुलावे ।
आवे दुःख अपार ॥ सङ्ग में चालण दो ॥ ५ ॥
नवली सनेही किम छिटकावो, जरान करुणा दिलमे लावो ।
करलो न्याव अबार ॥ सङ्गमें चालण दो ॥ ६ ॥
जो मुझको पियु संगन लेसो, निराधार यहांपर तजदेसो ।
मैं मरसूं खाय कटार ॥ संगमें चालण दो ॥ ७ ॥

(लक्ष्मणोवाच)

ढाल क्षेपक तर्ज-मीठो खरबूजो मुनि श्रीरूपचन्दजी म० कृत

सुनो सुलक्षणी नार प्यार धर यहां ही रहीजो हो, हठ मत कीजो हो ॥ टेर ॥
वनवासे संग चालण कोथे, भूल नाम मत लीजो हो ।
कथन हमारो मान आन, जिनवरकी वहीजो हो ॥ हठ ॥ १ ॥
पाछो वेगो आसूं प्यारी, सोच जरामत कीजो हो ।
रूप कहे शुद्ध न्याय नीतिमग, मत तज दीजो हो ॥ हठ ॥ २ ॥

दोहा-सूस विना जावा न दूं, रयणी भोजन पाप ॥
नाचो तो तुमने अछे, मानी लीयो प्रभु आप ॥ ६ ॥

ढाल अठावीशमी तर्ज-सुधारस मुरली वाजे ।

रामको सुयश घणो, स्वर्ग मृत्यु पाताल, रामको सुजश घणो ॥टेर॥

पाछली राते आगे चाल्या, ओलंघ्यो वन एक।
'खेमाजल' पामी पूरी रे, दीसे शोभा अनेक ॥ राम ॥ १ ॥
ऊतरीया उद्यानमें रे. 'लक्ष्मण' वनमें जाय।
लेई आयो फल शागजी रे, पाणी पात्र भराय ॥ राम ॥ २ ॥
संस्कार सीता कियो रे आरोग्या उत्साहै।
राम तणा आदेश थीरे, 'लक्ष्मण' गयो पुरमां है ॥ राम ॥ ३ ॥
श्रवण सुणी उद्घोषणारे, सहेजे शक्ति प्रहार।
परणे पुत्री रायनीरे, नहीं सन्देह लगार ॥ राम ४ ॥
पुरुष एक तब पूछीयोरे, एछे किस्यों विचार।
शत्रु दमन राजा भलोरे, राजानों सिरदार ॥ राम ५ ॥
'कन्यका देवी' तेहनेरे, पुत्रीतो प्रधान।
'जित पद्मा' छे नामथीरे, प्रत्यक्ष पद्मा थान। राम ॥ ६ ॥
वरनू बल सुविचारथारे, मांड्यो एह उपाय।
आज लगे कोई नावीयोरे, जेहथी काम सराय ॥ राम ७ ॥
एम सुणीने आवीयो रे, परखदा मांही देव।
नृप पूंछे तूं कोण छे रे, ? तब बोले ततखेव ॥ राम ॥ ८ ॥
भरत भूपनूं दूत छूं रे, जावूं करवा काज।
परणूं पुत्री ताहरी रे, इहां हूं आयो आज ॥ राम ॥ ९ ॥

मुनि श्री रूपचन्द्रजी म. कृत. ढाल क्षेपक हां सगीजी पेड़ा भावे—

हां बोले यूं लिछमन प्यारो, अछूं दूत मैं भरत राजारो।
जातो दूजे गांव देखन आयो पुर थारो रे ॥ राम ॥ १ ॥
ढंडे रो सुन इत आयो राजा ! नारी बिन दुःख पाऊं जाजा।
करतां रसवती धूम्र लग्यां तन बन गयो कालो रे ॥ बोले ॥ २ ॥
मेरे काम में हो रही देरी, झट परणा दे कन्या तेरी।
'रूप' देख ले अनुपम मेरो इसो न दूजा रो रे ॥ बोले ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी

शक्ति घात ए माहरो रे, कहे तू सहिस केम ?।
एक नहीं पण पंचजीरे, सहु सही सूं एम ॥ राम ॥ १० ॥

जितपद्मा अनुरागिणी रे, होई गई ततकाल।
लक्ष्मण ने अविलोक तां रे, राची रूप रसाल ॥ राम ॥ ११ ॥
पुत्री वरजे बापने रे, कह्यूं न माने रंच।
ख्याल रोष दो साचवे रे, मूके शक्ति सु पंच ॥ राम ॥ १२ ॥
दो हाथों दो बांह मे रे, एक सुदन्तों जोय।
साही लीधी शक्तिजी रे, अजब तमासो होय ॥ राम ॥ १३ ॥
जित पद्मा हरखी खरी रे, पहिरावे वरमाल।
राय कहै परणो सही रे, ए कुंवरी सुविशाल ॥ राम ॥ १४ ॥
लक्ष्मण कहै उद्यान में रे, बैठा छे श्री राम।
हूं छूं सेवक तेहनो रे, करूं बताव्यू काम ॥ राम ॥ १५ ॥
'राम' 'सुलक्ष्मण' जाणीया रे, धसि गयो तिहां राय।
लेई आयो रामने रे, परम महा सुख थाय ॥ राम ॥ १६ ॥
भक्ति भाव पोषे घणूं रे, पूज्या प्रभुना पाय।
तो पण आगे चालीया रे, राजा ने समझाय ॥ राम ॥ १७ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

भूपति करता है अरजी, कन्या को व्याहो हित धरजी, उत्तर में बोल्या रघुवरजी। पाछा मैं अयोध्या जासां, व्याव कर कन्या ले जासां ॥ सत्यव्रत पालो ॥ ६५ ॥

ढाल मूलगी—

वंशस्थल गिरि ऊपरे रे, 'वंशस्थल' पुरी देखी।
लोक भयानक देखने रे, पूछ्यू पुरुष विशेषी ॥ राम ॥ १८ ॥
सो भाखे प्रभुजी सुणो रे, रात्रे अचम्भो थाय।
ध्वनी ऊठे छे आकरी रे, ते लोको न खमाय ॥ राम ॥ १९ ॥
रात्रे अनेरी जायगे रे, नासी जाए लोक।
प्रातः हुवां घर आवही रे, कष्ट तणो ए जोग ॥ राम ॥ २० ॥
रामे लक्ष्मण मोकल्यो रे, जोई आवो एह।
काउसग्गमां है मुनि रे, दीठा दो गुण गेह ॥ राम ॥ २१ ॥
देई प्रदक्षिणा वांदिया रे, सगली ही विधि साधी।

वीणा बजावे रामजी रे, यक्ष थकी जे लाधी ॥ राम ॥ २२ ॥
तान मान अनुमान सूं रे, राग तणू आलाप ।
लक्ष्मण लीलाए करे रे, अवसर जणी आप ॥ राम ॥ २३ ॥
रात जगावे रंग सूं रे, होई रह्यो विनोद ।
साधु तणी सेवा करे रे, पामे अधिक प्रमोद ॥ राम ॥ २४ ॥
'अनलप्रभ' सुर आवीयो रे, विकूर्वी वैताल ।
साधु ने संतापवारे. जाणे कोप्यो काल ॥ राम ॥ २५ ॥
'सीता' ऋषि पारवती रे, 'राम' सु लक्ष्मण दोई ।
जेटले आवे सामुहारे, नासी गयो सुरसोई ॥ राम ॥ २६ ॥
मुनिवर हुआ केवलीरे, आवे सुरवर कोडी ।
केवल महिमा साचवे रे, पायनमे कर जोड़ी ॥ राम ॥ २७ ॥
राम भणे प्रभुजी कहो रे, उपद्रव नूं ए हेत ।
'कुल भूषण' कहै केवली रे, निसुणो सहु सचेत ॥ राम ॥ २८ ॥
नगरी नामे पद्मनी रे, विजय पर्वत भूप ।
'अमृत स्वर' मति वन्तजीरे, एक सुदूत अनूप ॥ राम ॥ २९ ॥
'उपयोगा' तस कमिनीरे, नन्दन दोई उदार ।
उदित मुदित गुण आगलारे, कुल केरा साधार ॥ राम ॥ ३० ॥
दूत तणो इक मंत्रजी रे, ब्राह्मण छे वसुभूति ।
आशक उपयोगातणोरे, वात लिखी ए दूत ॥ राम ॥ ३१ ॥
साची ते व्यभिचारिणीरे, 'अमृत स्वर' ने मारि ।
निष्कण्टक होई खरी रे, मान्यू सुख संसारि ॥ राम ॥ ३२ ॥
नृप आदेशे दूत विवेरे, चाल्यो मारग दूर ।
ब्राह्मण पण साथे लाग्यो रे, दूत हण्यो बलपूर ॥ राम ॥ ३३ ॥
ब्राह्मण घर आवीने भाखे रे, मुझने पाछो वाली ।
कारज करवा वेगसूंजी, आप गयो सो चाली ॥ राम ॥ ३४ ॥
'उपयोगाने' वात जणावी, भलू कर्यूं ते सोई ।
पुत्र हण्या थी राग आपणो, कीजे तो सुख होई ॥ राम ॥ ३५ ॥

एह मतो तो ब्राह्मण केरो, रहस्य पणा थी जाणी ।
'उदित' 'मुदित' दो भाईया रे, अमरख अधिको आणि ॥राम॥३६॥
'उदिते' ब्राह्मण मारियो रे. आयो उदय कुशील ।
इषत 'नलपल्ली' विषेरे, सोमरी हुवो भील ॥ राम ॥ ३७ ॥
चारित्र लीधो रायजी रे, उदित मुदित पण संग ।
अप्रति बंध पणे तिहां रे, चाल्या ऋषि उच्छ रंग ॥ राम ॥ ३८ ॥
विच मिल्यो सो भीलड़ो रे, मारे तव अणगार ।
छोडाव्या पल्ली पती रे. मान लीयो उपकार ॥ राम ॥ ३९ ॥
पल्लीपति हु तो पंखीयो रे, ए हता करसण कार ।
पारधीए पंखी ग्रह्यो रे. हुओ मारण हार ॥ राम ॥ ४० ॥
इणे तब छोड़ावीयो रे, पंखी थयो पल्लीश ।
कीधो लाभे आपणडो रे, एतो वीश्वावीश ॥ राम ॥ ४१ ॥
उदित मुदित दो साधुजी रे, आराधी संथार ।
महाशुक्रना देवता रे, पाम्या जय जय कार ॥ राम ॥ ४२ ॥
ढाल भली अठावीशमीरे, प्रश्नतणो अधिकार ।
'केशराज' पूर्वतणो रे, साधु वदे ते सार ॥ राम ॥ ४३ ॥

दोहा—(मल्हार रागे)

ब्राह्मण तो वसुभूतिनो, जीव भमी भवमां है ।
माणस थई तापस तणू, पामी मुओ ते ग्रा है ॥ १ ॥
देव हुवो पण ज्योतिषी, 'धूमकेतु' अभिधान ।
मिथ्या मतिनो वाहिओ, आणे अति अभिमान ॥ २ ॥
'उदित' 'मुदित' ना जीवते, सुरपद तजी आवन्त ।
शेष पुण्यना प्रेरिया, मनुष्य गति पावन्त ॥ ३ ॥
'अरिष्ठ' पुरीनो राजीयो, 'प्रियचंद' भूपाल ।
'पौमावे' राणी उदरे, ऊपन्या सुत सुविशाल ॥ ४ ॥
'रत्नसुरथ' रलियामणो, 'चित्रसुरथ' सुविशाल ।
नामथकी अति पर वड़ा, सुन्दरने सुकुमाल ॥ ५ ॥

'धूमकेतु' ना जीवनो, उणही घरे अवतार ।
अपर त्रिया उदर ऊपन्यो, नामे 'अनुरुद्ध' सार ॥ ६ ॥

ढाल गुणतीशवीं तर्ज–जगन्नाथजी रावलो आशपूरे ॥

उद्धत अधिक सो नन्द हुओ, वडा बंधवथीरे चालन्त जुओ ।
पूर्वभव वैर नयणां जणावे, महारीसनो हेतु आणी पावे ॥ १ ॥
'रत्नसुरथ' नंदने राज्य दीधो, दोई अपर लघुनंद युवराज कीधो ॥
षट् दिवसनो अणशण साधी सारो, नृपदेव हुवो कियो धन्य जन्मारो ॥ २ ॥ एक भूपने 'श्रीप्रभा' थी कुंवरी, दीधी रायने रंगसूं जाणी प्यारी ॥ 'अनुद्धर' युवरायथी बेटी मांगी, गई और ने तेहनें कर न लागी ॥ ३ ॥ तब रीससूं रायना गाम मारे, करी मूक्यो सोर तो देशमारे ॥ चढ्यो रायजी रावलो लेई रूडो, सोतो बांधी आण्यो कलिकाल कूडो ॥ ४ ॥ विडम्बीपने बंधवा मेली दीधो, जई तापसां पासे व्रत नियम लीधो ॥ त्रिय संगते निष्फल योग कीधो, विषया विष अमृत जाणी पीधो ॥ ५ ॥ भवमांहे भम्यो चिरंकाल सोई, लेई नर गति तापस फेरी होई ॥ करी बाल[1] तप ज्योतीषीने गणेत्रो, सोनो एह ' अनूलप्रभ ' नामदेवो ॥ ६ ॥ ' रत्नसुरथ ' ' चित्रसुरथ ' दोई भाई, ग्रही संजम बारमें स्वर्ग जाई ॥ 'महाबल' नै अतिबल नाम पाया, हलुकर्मी या भव तणे छेह आया ॥ ७ ॥ हिवे नारी ' विमला ' तणे उदरे आवी, तेणे सुस्वरे सोहतो अधिक पावी ॥ 'कुलभूषण' ए कुल कुंवर एहो, एछे 'देशभूषण' शुभवान देहो ॥ ८ ॥ उपाध्याय 'वरघोष' पासे पढाया, अमे बरस तो बार तसघरे रहाया ॥ जब तेरमो वर्ष आवी सुहावे, नृप पाखती पण्डित लेई आवे ॥ ९ ॥ तब गौरव बैठी थकी इक कुंवरी. अविलोकतां जाणीऊं एह अमरी ॥ तब दोई भाई तणो राग होवे, मुखसाहमू बारहीं वार जोवे ॥ १० ॥ तब चालीके आवीया राय पासे, कला देखतां राय पाम्यो हुल्लासे ॥

१ अज्ञान तप

तब पण्डित पूजीया शीपनामी, निजमन्दिरे आवीया हर्ष पामी॥११॥ पगेलागीने माय सेवा विशेषो, ते कुंवरी मायने पास देखी ॥ तब पूछीयूं मायने कौन कुंवारी !, तब मांय भाखे तुम बहिन प्यारी ॥१२॥ गुरु मन्दिरे वास हूतो तुम्हारो, तब ऊपजी एह ए साच धारो॥ चित्त चितवे वंछीयो वहिनभोग, एम जाणी हम आदर्यो जोग ॥१३॥ तप तीव्र करन्तां एह गिरिही आया, इमे काउसग्गे रह्या तजीयकाया ॥ नहीं आशज जीववे डर न मरणे, दिनरात रहेवूं अरिहन्त शरणे ॥ १४ ॥ पिता हम तणो आणीयो दुःख गाढो, समजावतां किणही नविथाय ठाढो ॥ मुओ अण शण ग्रहीय सो गरुड़ इसो, 'महालोचन' सुरथयो, अति जगीसो॥१५॥ उपसर्ग हमारो तेणे ज्ञान लखीयो, इहां आवीयो सोह तो प्रेम पखायो ॥ मुनि 'अनन्तवीर्य' ने शुद्ध ज्ञानो, करण ओच्छव देव जाये प्रधानो ॥ १६ ॥ 'अनलप्रभ' देव गुरु देव सोही, सुरसाथे चाली गया ख्याल मोही॥ सुर मानव परखदा मांहे भाखे, दया धर्मज केवली कहिय दाखे ॥ १७ ॥ तब 'मुनिसुव्रत' मुनि पुछन्त शीष्ये, तुम पाछे केवली कौण दीसे? ॥ 'कुलभूषण' 'देशभूषण' दोई भाई. होसे केवली एह दीधा बताई ॥१८॥ 'अनलप्रभ' एह निसुणीय सारी, तबही थकी पूठ लाग्यो हमारी ॥ कांई एक मिथ्यात्वनो अधिक वाहीयो, कांई एक पूर्व वैरे उमाहियो॥१९॥ दिन चार हुवा उपसर्ग करतां, एतो पाप भण्डार भरपूर भरतां ॥ तुम आवीया सो गयो देव नासी, हम ऊपज्यो ज्ञान सब जग प्रकाशी ॥ २० ॥ 'महालोचन' पाम्यो अधिक तोषो, श्री 'राम' जी सूं करे प्रेम पोषो ॥ सुर वांछही अत्युपकार करणो, प्रभु भाखे तुरत भण्डार धरणो ॥ २१ ॥ 'वंशस्थल' पुर पति खबर पामे, श्री 'राम' लक्ष्मण प्रत्ये शीष नामे ॥ ध्वनि रुद्र उपद्रव एह अलगो, कियो भय नवि आवसे फेरी वलगो ॥ २२ ॥ श्री राम आदेशे कियो प्रसादे, ध्वज जलहले गगनसूं करेय वादे ॥ श्री 'राम–

गिरि' गिरि तणो नाम थाप्यू. कीयो उच्छव अथिया अर्थ आप्यू ॥ २३ ॥ सुरपतिने पूछिने देव आगे. जव चलीया लोक बहु पूठे लागे ॥ बोलावीया लोक सन्मानदेई, प्रभु चालिया लोक चित्त साथ लेई ॥ २४ ॥ उद्दण्ड अति 'दण्डकारण्य' भाखी, तिहां आवीया चित्त अडर राखी ॥ गिरिगुफा गेह समतोल लेखी, तिहां वास कीधो कई दिन विशेषी ॥ २५ ॥ अनेरे दहाड़े जब जिमण वेला, दोय चारण साधुजी पुण्य मेला ॥ 'त्रिगुप्त' 'सुगुप्त' नामे विराजे, आया आंगणे सूजता अन्न काजे ॥ २६ ॥ द्वी मास उपवासीया दोई साधो, घणे पुण्यने प्रेरणे दर्श लाधो ॥ श्री राम' जी 'लक्ष्मण' सतीय सीता, भला श्रावक विश्व मांहै विदिता ॥२७॥ भलि भक्ति सूं साधुना चरण वन्दे. भव सन्तति सयलना दुःख निकन्दे ॥ सतीए निज हाथसूं हर्ष आणी, प्रति लाभीयो प्रासुक भात पाणी ॥ २८ ॥ दुःखवारणो पारणो. कीध जामो, भलां पुष्प अरु वस्त्र वरसंततामो ॥ रत्न गंधाम्बुनी वृष्टि हुई, उद्घोषणा देवनी हुई जुई ॥ २९ ॥ पांच सुदिव्य हुवा वखाण्या भला दायका आज दिन सफल जाण्या ॥ एतो ढाल गुणतीशवीं जगत साची, 'केशराज' भाखे सदा वात साची ॥ ३० ॥

दोहा (रामग्री रागे)

रत्नजटी रलियामणो, 'कम्बूद्वीप' दयाल ।
खेचर सुररथ अश्वसूं, आप्योते[1] सुविशाल ॥ १ ॥
गन्धाम्बूनी वृष्टिनो, गन्धवणो विस्तार ।
विस्तरीयो छे दश दिशे, सुरभि[2] महासुखकार ॥ २ ॥
'गन्धाभिध' इक पंखीयो रोगी एहवूं नाम ।
तरुथी उतरी आवीयो, गन्ध वासना पाम ॥ ३ ॥
दर्शन दीठो साधुनो, जाति स्मरण लाध ।
मूर्छाथी धरणी पड्यो. ते पंखी साबाध ॥ ४ ॥
सीताए सुसतो कीयो, वन्दे ऋषिना पाय ।

१ रत्नजटी अने बे देवो ए राम ने अश्व सहित रथ आप्यो। २ सुवास ।

ऋषिजी चरणे स्फर्शियों, ताम निरोगी थाय ॥ ५ ॥

ढाल च्षेपक तर्ज–कव्वाली–कर्ता धूलचन्दजी सुराणा

लगे जो रंज चरणों की, अगर तन वाय भी फरसे।
हुवे निरोगही काया, मुनिश्वर होतो ऐसा हो ॥ १ ॥ टेर ॥
मल–मूत्र–लगेजो मेल, रोम–नख–केश ही लगते।
मिटे सब जीवकी व्याधी, मुनिश्वर हो तो ऐसा हो ॥ २ ॥
ज्ञान–का दान ही देकर, मिटाओ तप्त दुनियों की।
हटावे कर्म–वैरो को ॥ मुनि० ॥ ३ ॥
काम–रु क्रोध–नहीं तनमें, राग–रु द्वेप–नहीं मन में।
मगन रहै सदा ही वनमें ॥ मुनि० ॥ ४ ॥

— दोहा —

पांख हुई सोना समी, चंचू विद्रुम भाव१।
नाना रत्न सुमय तनु, पद्मराग२ सम पाव ॥ ६ ॥
रत्नांकुरनी श्रेणीसम, माथे जटा सुहाय।
नाम 'जटायु' पंखीयो, ते दिन थी कहीवाय ॥ ७ ॥

—(ढाल तीशवीं)—

—तर्ज धन्य २ शीलवन्त नर नारी—

रे भाई ! सेवो साधु सयाणा, हेत युक्ति भल भाव बतावी,
तार्या जीव अयाणारे ॥ टेर ॥
'दृट प्रहारी' दृढ पणेरे, मेले आय प्रहारो।
परमारथ पदपाम्या प्रत्यक्ष, साधु तणा उपकारोरे ॥ भाई० ॥१॥
'चिलायती' बांदीनो बेटो, नाम 'चिलायती पूतो।
साधु संगत कारज सार्यों, कीधी दूर कुसूतोरे ॥ भाई० ॥ २ ॥
'अर्जुन माली' गारी मांरे, नर षट् एकज नारी ॥
खट्मांसा लग एमकरन्ता, लीधो कारज सारीरे ॥ भाई० ॥ ३ ॥
'परदेशी' परभव नहीं माने, पाप करे अति पापी ॥
'केशी' गुरु समजावी लीधो, सुमति सदा स्थिर थापीरे ॥भाई० ॥४॥

---

१ पखालां। ४ ए नामनो मणी।

'राघव' पूछे साधु संघाते, ए गृद्ध पंखी देखो ॥
शान्त होई तुम सेवा साधे, इचरज एह विशेषोरे ॥ भाई० ॥५॥
भगवन् ! भारी देह विकारी, रोगी में सिरदारो ॥
कंचन वर्णी काया होई, एछै कवण विचारोरे ॥ भाई० ॥६॥
साधु 'सु गुप्त' कहे सुण राजा, चरित्र तणो विस्तारो ॥
'कुम्भकारकट' पुरए हुतो, 'दण्डक राय उदारोरे ॥ भाई० ॥७॥
'सावत्थी' नगरीनो राजा, 'जितशत्रु' सुखकारो ॥
राणी धारणी ए सुतजायो, 'स्कन्दक' नाम कुंवारोरे ॥भाई० ॥८॥
पुत्री 'पुरन्दरयशा' ते, 'दण्डक' ने परणावे ॥
'पालक' ब्राह्मण दूत पणेरे, सावत्थीए आवेरे ॥ भाई० ॥९॥
'जितशत्रु' राजा धर्म परायण, गोष्टी धर्म की भावे ।
नास्तिक वादी पालक नेरे, धर्म कथान सुहावेरे ॥ भाई० ॥१०॥
'स्कन्दक' कुंवरे युक्ते जीत्यो जावे अपूठो नावे ॥
होई खीसाणो निज घर आयो, रहै कुंवरसुं दावेरे ॥ भाई० ॥११॥
'स्कन्दक' कुंवर पांच सयांसूं, 'श्री मुनि सुव्रत' पासे॥
संजम लेई शुद्धोपाले, धर्म मार्ग प्रकाशेरे ॥ भाई० ॥१२॥
बहिन वन्दावू पुर समझावू, एह मतो चित्त ठाणी ॥
'कुम्भकार' 'कट' नगरे जावा, पूछ्यू प्रभुने आणीरे ॥ भाई०॥१३॥
प्रभुजी भाखे कांई न राखे, मरणान्तक ए नामो ॥
उपसर्ग उपजतो दीसे, 'स्कन्दक' भाखे तामो रे ॥ भाई० ॥१४॥
हम अराधक हुवा के नाहीं, पुनरपि स्वामी भाखे ॥
तुझ विण सघलाही आराधक, जेमदेखे तेम दाखे ॥ भाई० ॥१५॥
आप विराधक होतां सघला, केरो सीजे कामो ॥
एह विचारी चाल्यो स्कन्दक, पहुंतो तेणे ठामो रे ॥भाई.॥१६॥
'पालक' पापी सुमरि पराभव, आणे ए अविचारो ॥
साधु समो सह्या छे जिहां, गाडे बहु हथियारोरे ॥ भाई ॥ १७ ॥
राजा पामी खबर जे वारे, आवी मुनिवर वन्दे ॥

देशना सांभली निजघर आवे, मन में अति आनन्दे रे ॥ १८ ॥
'पालक' पाप घणेरो पोखे, राजाने सम्भलावे ॥
शालो तुझ मारेवा आयो, ते हथियार देखावेरे ॥ भाई ॥ १९ ॥
राजा वात न कोई विचारी, एकान्ते रीसाणो ॥
'पालक' मंत्रीने मुनिसूंप्या, करजो जेम तुम जाणोरे ॥भाई॥२०॥
पालक शीघ्र पणाथी ते म्होटो, मांडे यंत्रे[1] जेवारे ॥
'स्कन्दक' दृष्ठे साधु एके को. पीले तेह तेवारे रे ॥ भाई ॥२१॥
निर्यामक तब होई स्कन्दक, आचारजजी आपे ॥
आराधन विधि शुद्ध करावे, अप्पा[2] में मन थापे रे ॥ भाई॥२२॥
श्रेणी क्षपकनी वाटे चढतां, पामी केवल नाणो ॥
अष्ट महागुण केरा नायक, पहूंता अविचल ठाणोरे ॥ भाई ॥२३॥
चार सयां नवाणुं पील्या, एक सुचेलो वालो[3] ॥
एहनूं दुःख मने मत देखाड़े, माने नहीं चाण्डालो रे ॥भाई॥२४॥
बालकने पीलन्तां देखी, नयणे नीर प्रवाहो ॥
सहुनो काज समर्या पाछे, ऊपज्यो रोष अगाहोरे ॥ भाई ॥२५॥
'दण्डक' 'पालक' देश सहुनो, होजो हूं क्षयकारी ॥
पोते छे भवसन्तती तेहथी, कीधूं नियाणूं भारीरे॥ भाई ॥ २६ ॥
एह नीयाणू कीधां पाछे, पीली नांख्यो सोई ॥
पावईयाने[4] पानो न चढे, एह उखाणो जोई रे ॥ भाई ॥ २७ ॥
वन्हि कुवारो[5] मांही विदितो, देव हुवो ततकालो ॥
पापी पन्थे सहु तिणहीमें, पाप महा असरालो रे ॥ भाई ॥२८॥
दण्डकी राजा वात सांभली, सोचे तेह अपारो ॥
फिटरे कूड़ा पालक पापी, कीधो साधु संहारोरे ॥ भाई ॥ २९ ॥
'पुरन्दरयशा' राणी ए, मुझ सालो सुखदाई ॥
साधु तणी पदवी थी म्होटी, पाप कियो ते अथाई रे ॥भाई॥३०॥
राजा चिन्ते संयम लेऊं, मुनिसुव्रत पे जाई ॥

---

१ घाणी। २ आत्मामें। ३ छोटो। ४ नपुंसक। ५ अग्नीकुंवार।

एटला मांही अग्नी प्रज्वली, वेला पूगी आई रे ॥ भाई ॥ ३१ ॥
रत्न कम्बल तंतुज पुरन्दर, यशा ए दीधोथो ॥
धहिन तणो मन राखण सारूं, बंधवजी लीधोथो रे ॥भाई॥३२॥
ओ तंतुज रजोहरणो रे, लोही खरड्यो देखी ॥
शकुन१ एकन्ते लेई चाली, ए आहार विशेषी रे ॥ भाई ॥ ३३ ॥
भार घणे पंखीनी अकुलाणी, चांच थकी अड़वड़ीओ ॥
दैव योगे तव देवी आगे, ओघो तंतुज पड़ियो रे ॥भाई ॥ ३४ ॥
देवी भाई मार्या केरी, जाणो ए सहिनाणो ॥
कन्ता ? कांई म्होटा मुनिवर, पील्या घाली घाणी रे । ३५ ॥
शोक करन्तां शासन देवी ए, पापी पुरथी लीधी ।
श्री मुनि सुव्रत पासे मूकी, स्वामी दीक्षा दीधी रे ॥ भाई ॥३६॥
'अग्नीकुंवारे' अग्नी विकूर्वी, बाल्या पुरना लोको ।
'दण्डक' राजा 'पालक' पापी, ए कृत कर्मा जोगो रे॥भाई॥३७॥
'दण्डकारण्य' तेहिज दिनथी, पुर नवो फरि वसाणो ॥
भूंड़ करतां भूंडूं हुवे, रूड़े रूडूं जाणो रे ॥ भाई ॥ ३८ ॥
दण्डक राजा भवमां भमीयो, दुःख तणों संयोगी ॥
'गंधाभिध' ए पंखी हुयो तोही महातन रोगी रे ॥ भाई ॥ ३९ ॥
जाती स्मरण मुझ दर्शन थी, ऊपन्यू एहने आजो ॥
स्पर्शोपधि लब्धी थकी रे, जाणो ए सहु साचो रे ॥ भाई ॥ ४० ॥
रोग गयो निरोगीयोगे, रत्नमयीरे शरीरो ॥
श्रावक हुवो माचलोरे, धर्म करे वा धीरोरे ॥ भाई ॥ ४१ ॥
जीवनी घाते फल नवि खाए, रात्री भोजन त्यागे ॥
चालन्ता पचक्खाण कराया, जाण्यो जेहवो रागेरे ॥ भाई० ॥४२॥
'राघवने' रे भोलामणी दीधी, रहेजो सेवा मांहीं ॥
स्वामी ने वात्सल्य पणेरे, पुण्य घणेरो प्राहैरे ॥ भाई० ॥४३॥
राम क ए भाई छेरे, तुम वचन थी वारु ॥

१ पक्षीणी पाठान्तरे संवली ।

सत्य वतीनी पासे रहैरे, चातुर पणेछे चारुरे ॥ भाई० ॥४४॥
एम कहीने ऋषि पांगरीया, उपकारी अणगार ॥
संजम तप करी शोभ तारे, ज्ञान तणा भण्डाररे ॥ भाई० ॥४५॥
देवदीयो रथ जोतरीरे. बैसे 'सीता' 'रामो' ॥
लक्ष्मण होवे सारथी रे, पंखी आगे तामोरे ॥ भाई० ॥४६॥
क्रिडा करतां संचरेरे, प्रबल पुण्य प्रभावो ॥
राम तिहांहीं अयोध्यारे. मिलीयो एह कहावोरे ॥ भाई० ॥४७॥
ढाल त्रीसमीं में कह्यो रे, पंखी प्रश्न प्रकारोरे ॥
'केशराज' ऋषि वायकमेरे, नहीं सन्देह लगारोरे ॥ भाई० ॥४८॥

दोहा केदारा गोडी रागे—

लंक पयालां राजीयो, खर नामे भूपाल ।
शूर्पनखा[1] घर सुन्दरी, सुन्दर रूप रसाल ॥ १ ॥
शुभ वेला सुखकारीया, जाया नन्दन दोय ॥
शम्बुक 'सुन्द' सोहामणा, पाम्या यौवन सोय ॥ २ ॥
मांय बाप ने वरजतां, 'दण्डकारण्ये' मांहै ॥
'सूर्यहास' असिसाधवा, 'शम्बुक' थयो उच्छा है ॥ ३ ॥
हणसूं वर्जन हारने. वचन वदे विकराल ।
अभिमानी माने चढ्यो आय पहूंतो काल ॥ ४ ॥
'कौंचरवा' तीरे अछे, गन्धर्व वंश विशेष ॥
तिहांरही साधन करे, एक मने अकलेश ॥ ५ ॥
एकान्त भूमि शुद्धात्मा, जीतेन्द्रिय ब्रह्मचार ॥
पग बांधी वड़ साखसूं, अधो मुखो सुविचार ॥ ६ ॥
वर्ष बार दिन सातमूं. विद्या साधन सार ॥
प्रारंभ्यो परगटपणे, किस्यूं करे करतार ॥ ७ ॥
बरस बार बोली गयां, ऊपरतो दिन चार ॥
सिद्धि की सिद्धि हुवे, बरते विद्याबार ॥ ८ ॥

[1] चन्द्रनखा इति पाठान्तरे ।

तेजमहा सूरज तणो, गन्धर्व मांहीं ताम ॥
विस्तर्यो दीसे घणूं, कुंवर हरप्यो जाम ॥ ९ ॥
क्रीडा कारण आवीयो, 'लक्ष्मण' मन उल्हास ॥
'सूर्यहास' असि देखीयो, जाणे सूर्य प्रकाश ॥ १० ॥
खांडो लीधो हाथ में, काढी समें सोई ॥
अपूर्व शस्त्र विलोकतां, क्षत्री ने सुखहोई ॥ ११ ॥
तास परीक्षा कारणे, आतुर हुवो ईश ॥
वंशजाल में वाहीयो,[१] शम्बुक केरो शीष ॥ १२ ॥
उतरि पड़ीयो आगले, चित्त सूं चिन्तवेराय ॥
निष्कारण ए मारीयो, फरी फरी ने पछताय ॥ १३ ॥

क्षेपक-दोहा

लक्ष्मण मन विलखोथयो, लखीयो नहीं लिगार ॥
पकियो फल पूरो पड्यो, रखियो नहीं रखवाल ॥ १४ ॥

स्वामीजी श्री रामचन्द्रजी कृत-ढाल क्षेपक तर्ज असी रुपैया लो कलदार

कोई नर मारियो, शिर धर परियो, करीयो लछमन हाहाकार ।
भावीने कुण टालणहार टाली नहीं टले लाख प्रकार ॥ टेर ॥ १ ॥
शरीर सुगन्धो तेज दिनंदो, चन्दो लज्जित हुवे वदन नीहार ॥२॥
राजकुंवर वर, उत्तम नरवर, दिनकर कर सम तेज अपार॥भावी॥३॥
क्यूं इहां आऊं, खड्ग उठाऊं, क्यूं वाऊं मैं विना विचार ॥ ४ ॥
आयोहूं भटक्यो, क्यों इहां अटक्यो, झटक्यो खड्‌ लग्यो अनाचार॥५॥
विन अपराधन विद्या साधन, आराधन करतो लियो मार॥भावी॥६॥
इम पिछनावे शीश धुनावे, आवे न पाछो फल तरु डार ॥भावी॥७॥

दोहा—गुव्हर में जोवे जई, वड़ला केरी डाल ।
दीठो धड़ अविलम्बियो, ताम चल्यो ततकाल ॥१५॥
गाम समीपे आवीयो, संभलाव्यो विरतन्त ।

---

१ वाह्यो-(काप्यो) वंशजालने कापतां शम्बुक नूं मस्तक कपाई गयूं अने ते लक्ष्मणजी ने आगल आवीने पड्यूं ते थी गव्हरमां जईने जातां वड़नी शाखाए धड़ लटकतां जोयूं ।

खांडो मूक्यो आगले, भाखे राम तुरन्त ॥ १५ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–पूर्ववत्

सियकहै देवर वहै बीज तरुवर, फर लगेगे म्हो हुंसियार॥भाबी॥८॥
एह सोचन काई, सुन भोजाई, लक्ष्मण कहै मुझ एक विगार। ९ ॥
मुनि 'राम' कहै भाई, टरे नहीं राई पिछताई रहै उत्तम आचार॥१०॥

ढाल इकतीशवी तर्ज–राजवीयांने राज पीयारो।

हो भाई! ते उपद्‌ उठायो, जस ए खांडो सो नर चांडो,
आयो के हित्र आयो ॥ टेर ॥
रावण भगिनी शूर्पनखाजी, विद्या सिद्धि जाणी।
पूजा पाणी अन्न अनूपम, आणे सा खर राणी ॥ हो भाई ॥ १ ॥

श्रावक वैद्य धूलचंदजी ढालक्षेपक तर्ज अहो २ पासजी मुझ मिलीयाहो।

कहो! ए सखी आज पियुघरआसी ए, आसी आसीने आनन्द थासी टेर ॥ लारे शम्बुक नीनारीरे, करे विध २ महिलनी त्यारीरे तन सकल सज्या सिणगारी ॥ कहो १ ॥ करीविकटतपस्या वनमेरे, पियु दुर्बलहोगया तनमेरे, उनकी लगन लगी मेरामनमें ॥ क २ ॥ बारे बरस नी आशाफलसीरे, म्हांरी विरहव्यथा सहुटरसीरे म्हारा वंछित कारज सरसी ॥ कहो ॥ ३ ॥ नारी वन रही झाकझमालारे, इमगूंथी मनोरथ मालारे, इमहर्ष मनावे बाला ॥ कहो ॥ ४ ॥ इतने दक्षिण अङ्ग फरकेरे, तव धड़ धड़ छतियों धड़केरे, कामण को कलेजो कलके ॥ कहो ॥ ५ ॥ पियु आयां आनन्द वरसेरे, मिलनाने तनमन तरसेरे, पिण विधना कहो शुं करसे ॥ कहो ॥ ६ ॥

ढाल मूलगी

दीठो धड़ मस्तक जब जूवो, अयि अयि दैव एकामो ॥
कीधोथो अणसोच्यो अधिको, मूर्छाणी सा तामो ॥ हो भाई ॥२॥
हुई सचेतन हा वत्स! हा वत्स!, शम्बूक शम्बूक सोई ॥
करती पड़ती अति आरड़ती, मरोडे कर दोई ॥ हो भाई ॥ ३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–धन्तुरो राचणो ॥

आतो आई वन्न मझार, निरख्यो नन्दनजी इांजी ।
आतो धरण पड़ी धसकाय, कुंवर तूं गयो कीहांजी ॥
थारी मायड़ी कूके वन मांय, कुँवर वेगो आवजे रे ॥ टेर ॥ १ ॥
धड़ मस्तक न्यारा दोय, कुण्डल झिग मिग करेजी ॥
काया कञ्चन रूप रसाल, पड्यो धरणी तलेजी ॥ थारी ॥ २ ॥
हा हा होगई अचिरज बात, महा दुःख कारीणीजी ।
आता बाल्हां खाणी भोम के, महा डरावणोजी ॥ थारी ॥ ३ ॥
थने वर्ज्यो मैं पूत ! अपार, मूल मान्यो नहींजी ।
मेतो आश अलुद्धि नार, आय इमहीज रहीजी ॥ थारी ॥ ४ ॥
ए अरोगो पय पान, लाई तुम कारणेजी ।
सामो जोवो नयन उवाड़, जावूं तुम्ह वारणेजी ॥ थारी ॥ ५ ॥
थारो किहां गयो खड्ग रतन्न क, विश्व वीहामणोजी ।
कुण पापी कियो यह काम क, दुःख लागे घणोजी ॥ थारी ॥६॥
थे तपस्या करी रे अपार, जीती बाजी हारीयोजी ।
कोई पापी नीच कुजात, चिन्तव इम मारीयोजी ॥ थारी ॥ ७ ॥
किहां जो ऊरे पुत्र दीदार, थारो नयने करीजी ।
थारो झुरसी सब परिवार के, बाल अन्ते ऊरीजी ॥ थारी ॥ ८ ॥
म्हारो फाटे हियड़ो हीरक छाती पर जलेजी ।
फिर २ मूर्च्छा खाय, क अति ही टलवलेजी ॥ थारी ॥ ९ ॥

ढाल मूलगी क्षेपक—

सरले सादही रोवे, पुत्र ! क्युं धरणी पर सोवे, दशोदिश वैरीने जोवे ॥ नन्दन की विरह व्यथा जागी, वैरी की निगह करन लागी ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ६६ ॥

ढाल मूलगी

लक्षणवन्ती लक्ष्मण केरी, पगनी[1] पंक्ती देखे ।
मुझ सुत हंतार[2] ए रे जाणेचो, रीस घणी सुविशेषे ॥ होभाई ॥ ४ ॥

१ पृथिवीपर मंडे हुवे खोज । २ मारने वाला ।

पगने खोजे चाली आवी, 'सीता' 'लक्ष्मण' रामो ।
निरखी हरखी परखे पदमनी, 'राम' रूप अभिरामो ।। हो ।। ५ ।।
काम बाणड़ं वींधी लीधी, न रही शुद्ध लगारो ।
भूली नन्दन आनन्द ऊपन्यो, करवाने भरतारो ।। हो भाई ।। ६ ।।
मुनि श्री प्रसन्नचन्दजी कृत ढाल चेपक तर्ज-म्होटी जगमें मोहिणी
विह्वल थईसा भामिनी, कांई हुई अपच्छर उणिहार ।
कनक वरण द्युती सोहनी, कांई मोहनी हो सवही संसार ।। १ ।।
धिक् धिक् विषय विकारने ।। टेर ।।
मांग भरी गजमोतीयों, मुख चावेहो सा बीड़ा पान ।।
नखराली चित्त चोरती. कांई राखे हो दिल अधिकी आन ।।२।।
नाके नकवेसर सजी, गल पहरीयो मोतियन को हार ।।
चोली पहरी चूंपड़ं, पग बाजे हो झांझर झणकार ।। धिक् ।। ३ ।।
ठमक ठमक पगल्या ठवे, कांई चाली हो मानूं जेम मराल ।।
काणां घूंघट पट धरी, वणि षोडसहो वर्षां री बाल ।। धिक् ।।४।।
हाव भाव करती थकी. मन धरती हो सा अधिको प्रेम ।
वचन सुधा सम दाखती, चित्त लागो हो चकवीने जेम ।। ५ ।।
ढाल मूलगी
कुंवरी अमरीने अनुसरती. धरती रूप रसालो ।
रामचंद्रने पासे आवी, ऊभी सा ततकालो ।। हो भाई ।। ७ ।।
पूछे प्रभुजी पद्मणि सेथी, कोण अछो तुम्ह भाखो ।।
अटवीमां एकाकी दीसो, शंका कोई मति राखो ।। होभाई० ८ ।।
सा भाखे हूं राज कुंवारी. ऊपरी भोमे सोऊं ।।
निद्रा गत नर मुआ सरिसो, अधिक अचे तन होऊं ।। होभाई० ९ ।।
एक विद्याधर रूपे मोयो, इहां लेई मुझ आयो ।।
एटले अपर खेचर चल आयो चाहै मुझ छीनायो ।। होभाई० १० ।।
मुझने हेठी मूकी आपण. लड़वा लागा दोई ।।
लड़ता लड़ता दोई मुआ, कुव्यसन थी एम होई ।। होभाई० ११ ।।
एकाकी हूं अवला बाला, बन में फिरू उदासी ।।

अबमें प्रभुजीना पग पाम्या, आरती गई सब नासी ।।होभाई।।१२।।

जैनोपदेशक वैद्य सुराणा धूलचन्दजी कृत—
ढाल क्षेपक तर्ज हां सखीजी ने पेढा भावे ।।

हां प्रभो ! सुन अरज हमारी, शरणे आई अबला नारी ।।
वेगी कीजो व्याव करोमति, ढील लिगारोरे ।। प्रभो० ।। १ ।।
धिन २ दर्शन आज में निरख्यो, म्हारोतो मन अति ही हर्ष्यो ।।
परख्यो पुरुष प्रधान, जोड मिल गई मझारी रे ।। प्रभो० ।। २ ।।
एह अवस्था म्हारी नीकी, आप तणीतो मुझसे अधिकी ।।
बाल पणाको भोग जोग ओ, मिलीयो भारी रे ।। प्रभो० ।। ३ ।।
ललितांगी करती बहु लटका, कर गूंघट से करती मटका ।।
झटका देवे काम राम मन, प्रीत तुम्हारीरे ।। प्रभो० ।। ४ ।।
तुम दर्शण की हो रही प्यासी, निरखत मिट गई सर्व उदासी ।।
दासी की अरदास पाम कर, रखलो प्यारीरे ।। प्रभो० ।। ५ ।।
विरह आग थकी अकुलाणी, जिणसूं बोल रही छूं वाणी ।।
राणी कर महाराज लाज में, तजदी सारीरे ।। प्रभो० ।। ६ ।।
इणपर नार अरज बहु करती, हर्षित हिये नेण जल भरती ।।
करती नखरा खूब लाज मन, नहीं लिगारोरे ।। प्रभो० ।। ७ ।।
लाल पाल करती बहु नारी, म्हे छूं प्रभु तुमची नारी ।।
बात कही में सारी आप, अब करदो जहारीरे ।। प्रभो० ।। ८ ।।
मैं शरणे लीधो सुखकारी, कंवारी छूं राज दुलारी ।।
सोबातां की एक व्याव की, करलो त्यारी रे ।। प्रभो० ।। ९ ।।
धिक् धिक् धिक् धिक् काम विकारा, 'धूलचन्द' कहै सुणजो सारा
प्यारा मत कर प्यार नार एह, नागण कारीरे ।। प्रभो० ।। १० ।।

दोहा—बोली मुझसी सुन्दरी, ओर न जग में कोय ।।
तुम साभो सुन्दर युवा, कहीं न दूजा होय ।। १ ।।

क्षेपक तर्ज—राधेश्याम (राधेश्याम रामायण में से)

मानों हम दोनों का स्वरूप, विधिने विचार कर रक्खा है ।
चन्द्रमा बनाने वाले ने, सूरज तैयार कर रक्खा है ।।

संकोच छोड़कर बनवासी, पूरा विधिका उत्साह करो।
मैं तुमको आज्ञा देती हूं, मुझसे गन्धर्व विवाह करो॥

ढाल मूलगी

अबे मुझ व्याहो वार न लाहो, बाल पणानो भोगो।
भोगवतां सुखदाई पिछे, दोहीलो ए संयोगो॥ हो भाई॥ १३॥
प्रभुजी ए प्रपंच विचार्यो, महोटानी मति महोटी॥
कपट कुटी कलह कारी कामनी, ए सब वातां खोटी॥ होभाई॥ १४॥
धूता का धूताए धुरत, धूती ने पकड़ाई॥
तबदीये नयणां सयण बताडे, मांहो मांही भाई॥ होभाई॥ १५॥
राम कहै म्हारे एक छे नारी, बीजी केम वराये॥
बेचो निद्रा उजागर लेवे, सांसा में दिन जाये॥ होभाई॥ १६॥
पेला छडो छटक दिखावे, करसे थारो विवाहो॥
जेहने नहीं तेने आतुरता, मनमें अति उमाहो॥ होमाई॥ १७॥
प्रार्थना लक्ष्मण सूं कीनी, लक्ष्मण कहै भलेरी॥
माय हमारी प्रभु प्राथियो, भाभी? मकहीसो फेरी॥ होभाई॥ १८॥

जै. वै. सु. धूलचन्दजी कृतः—

ढाल चेपक-तर्ज गवरल ईसरजी केवेतो हंसकर बोलणाजी॥

लक्ष्मण भाखे है भाभी, सुन वातां मायरी ए.॥ टेर॥
अवसर चूक गई तू स्याणी, होकर आई रघुवर राणी। तूंतो हाथां वात गमाणी। अबतो स्यूं होवे पिछताणी, पेला आतीतो वातां माने तो तायरीए॥ ल०॥ १॥

—(तर्ज-राधेश्याम रामायण में से)—

लक्ष्मण से बोली-मुझे देख तुम क्यों इतने मुसकाते हो।
वेतो व्याहै हैं लेकिन तुम नारी विहीन दिखलाते हो॥

(कवित्त) निरखे अवरां नयण, वयण अवरां बतलावे, अवरासूं अनुराग चित्त अवरां ललचावे॥ दे अवरां शिर दोष, रोष अवरां शिर राखे॥ अवरां सूं अभिलाख भाख अवरां मुख भाखे। रति मेल केल अवरां करे ध्यान अवरां मन धारीणी चित्तमांही दीप समजो चतुर, चरित्र एह व्यभिचारीणी॥ १॥

अच्छा तुम उनकी तरह, मुझे उत्तर देना खुर-खुरा नहीं ।
तुम बने बनों मैं बनी बनूं, यह जोड़ा भी कुछ बुरा नहीं ॥
दोहा—लक्ष्मण का तो प्रकृती से, था स्वभाव ही गर्म ।
गर्मा कर कहने लगे, चलु दुष्टा वे शर्म्म ॥ ० ॥
॥ राधेश्याम ॥
एसी बाते करने में तुझे, ओ कुलटा! लाज न आती है ।
मुखसे यह कहने के पहीले, पापीनी मर नहीं जाती है ॥
पहली ही वार जिन्दगी में, एसी निर्लज्ज देखी हमने ।
है आज का दिन मनहूस बड़ा, इतनी निर्लज्ज देखो हमने ॥
ओ कुल कलङ्किनी पिशाचिनी, यदि हुआ विवाह नहीं तेरा ।
तो अपने संरक्षक से कह, वह करदे ठौर कहीं तेरा ॥
है आर्य्य-विवाह योग साधन, सौदान समझ बाजार का यह ।
आराम ऐस इसका न लक्ष्य बंधन कर्तव्य-भारका यह ॥
और अगर विवाह होचुका हो, तो जा निजपति की सेवाकर ।
वहही आराध्य देव तेरा, उससे ही सुख की आशाकर ॥
यदि हो वैधव्य अवस्था तो, पति नामकी वैरागिनी बनजा ।
देश और जाति की सेवाको, बस सच्ची सन्यासिनी बनजा ॥
बहनों का अपनी कर सुधार, यह राह है तेरी शुभ गति की ।
संसार में बस कायम करदे, यों यादगार अपने पति की ॥
वरना यों वाही फिरने में, क्यों अपना जन्म लजाती है ।
कुलको-समाजको-देशको भी, व्यभिचाराणी दाग लगाती है ॥
ढाल क्षेपक तर्ज—पूर्वोक्त
मैं तो लाज गमाई म्हारी वातां करदी सगली जहारी, म्हारी

यतः नृपस्य चित्तं कृपणस्य वित्तं, न ज्ञायते दुष्ट मनोरथाश्च ।
स्त्रियाश्चरित्रं, पुरुषस्य भाग्यं, देवो न जानाति कुतोमनुष्यः ॥
ऊंदर सूं उदरके पकड़ केहर वश आणे, डोरो देखी डरे, सापदे सूवे सिरांणे ॥ आंगण घर अडवडे, चढे डूङ्गर शिर चड़हड़, पूछ्यां पकड़े मून हसे स्वेच्छाए हड़हड़ ॥ कारसूं प्यार मांडे जुगत कन्त हुथी कलह कारिणी, चित्तमांही 'दीप' समजो चतुर चरित्र एह व्यभिचारिणी ॥२॥

नसिरी गरज लिगारी ॥ अब तो कोईयन लागे कारी, इनपर गाढो तो पिछतावो नारी खायरहीए ॥ लक्ष्मण ॥ २ ॥

दोहा–शिक्षा सुन बन पति की. जली जलगई और।
मिली शुद्ध जलको–नहीं. चिकने घटपरटौर ॥

राधेश्याम

राक्षसीने सोचा-इससे तो, गल सकती दाल नहीं अपनी।
यह तो पूरा उपदेशक है, बदलेगा चाल नहीं अपनी ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–पूर्ववत्

आतो भिडकी गई आकाशे. थे मुझ कीधो कुंवर विणासे. आई खररायने पासे. आंसूं न्हांखे अधिक उदासे, इसका खाती करे अरदासे, मैं तो नीठ लाज राखी कर आई मायरी है ॥लक्ष्मण॥३

ढाल मूलगी

याचना भङ्ग थकी रीसाणी, रीसाणी सुतमार्यो,
खरसूं खरी आय पुकारी, रीसघणी विस्तार्यो ॥ होभाई ॥ १९ ॥
चउदहजार खराही खेचर, संबाहा ते वारो।
आई गया ते वात करन्ता, ऊठे ' राम ' जे वारो होभाई॥२०॥
'लक्ष्मण' भाखे देव दयाकरी, बैठा रहो तुम आपो।
मुझ ऊठ्यां ए नाठा देखो, पुण्य थकी जिम पापो ॥होभाई॥२१॥

ढाल क्षेपक तर्ज–हमीरीयारी

मंत्री कहै नृप खर भणी, भेजीजे एक दूत राजेश्वर।
आण लगे तुम चरणवे, छोड़ो अपनी आकूत राजेश्वर ॥ १ ॥
काम विचारी कीजीये ॥ टेर ॥
मूवो सुत जीवे नहीं, गई वात न होय ॥ राजेश्वर।
खड्ग मेल कर धोकदे. सावन्त हुवे सोय ॥ राजेश्वर ॥काम॥२॥
दूत भेज्यो खर दूषणे, लेख देई ने हाथ ॥ राजेश्वर।
सुतम्हारी खांडो लीयो, ऊठो हमारी साथ ॥ राजेश्वर ॥काम॥३॥
के पगे लागो खर तणे, लेई खांडों हाथ ॥ राजेश्वर।
के संग्राम सम्भारीये, अवरन तीजी बात ॥ राजेश्वर ॥काम॥ ४ ॥

लक्ष्मण कहै श्री रामसूं, ए खर बोली गर्व ॥ राजेश्वर ।
हुकम करो तुम देवजी, तो ए म्हारुं सर्व ॥ राजेश्वर ॥काम॥ ५ ॥

ढाल मूलगी

जाओ वेगा वैरी जीतो, जो जाणो ए त्रासो ।
'सिंहनाद' निज मुखती कीजो. हूं छूं थारे पासो ॥होभाई॥२२॥
धनुष बाण लई पाये लागी, 'लक्ष्मण' चाल्यो जामो ।
खेचर खेते खराही शूरा, मांड्यो अति संग्रामो ॥ हो भाई ॥ २३ ॥
गरुड़ तणे आगे जिम अहिवर, तेमते खेचर भाजे ।
अरण्य मांहीं अटल एकलो. लक्ष्मण वीर विराजे ॥हो भाई॥२४।
पूठ राखवा रावण आगे, भगनी जाय पुकारी ॥
'राम' सु 'लक्ष्मण' दण्ड कारण्ये, आयाछे अधिकारी ॥ होभाई ॥२५॥
विद्या साधन करतो वीरो, मारी लीयो वेकाजो ॥
लक्ष्मण सूं खरदूषण अडिया, जुडियाछे जई आजो ॥ होभाई ॥२६॥
लघुभाई ना बलसूं बलियो, बलियो आप अपारो ॥
बेपरवाई करतो अडरतो, नाणे मनही मझारो ॥ होभाई ॥ २७ ॥
सीता सूं सुखमाणे स्वामी सीतानो अति रूपो ॥
नारी सघली ही सोधन्ता, सीता रूप अनूपो ॥ होभाई ॥ २८ ॥
तीन लोकनी नारी जेती, तेतो जोई विमासी ॥
एक एक थी ओप अतिपण, सीता आगल दासी ॥ होभाई ॥२९॥
पग नखथी लई शिखा वणाखत, सुर गुरु पाग्न पावे ॥
वाणी एक वखाण घणेरो, मांपे किम कहिवावे ॥ होभाई ॥३०॥

सवैया-पूज्यश्री रेखराजजी म० के शिष्य नथमलजी म० कृत

ईन्द्र की परी है घरि है विधाता आप,
चन्द्रमां सू वीर काढी सीर अमीपान की ।
कंचन वर्ण तन रंच न दिखाता खोड़,
सावण की तीजमानूं वीज आसमान की ॥
गात केरो घाट एसो अनूपम ओपे एसो ।
करत प्रंशसा मेघा भूमत सुरान की ॥

स्वर्ग लोक मृत्यु लोक पाताल मांहीं।
जायदेखी नारीहून दूजी एसीजैसी नाथ जानकी ॥

—(ढाल क्षेपक तर्ज वीरारी)—

वीरा सीता २ रूप अपार हो, वीरा ईन्द्राणी ने रद करेजी।
वीरा कहतां २ नावे पारहो, वीरा ईन्द्रादीक आशा धरेजी ॥ १ ॥
वीरा थारी २ राणीयो पोई सहो, वीरा सीताने आगे पाणी भरेजीं॥
वीरा थांने २ भेजी जगदीशहो, वीरा इणसूं केल क्यूं नहीं करेजी ॥२॥
वीरा राम २ सु लिछमन मील हो, वीरा वांने जाय मारो सहीजी ॥
वीरा सीता २ सूं कीजे लीलहो, वीरा मानोंनी म्हारी कहीजी ॥३॥

ढाल मूलगीं—

सायर अन्ते ५ पृथिवी मांहीं, रत्न जीके छे जाचा ॥
तेतो बन्धव सघला थारा, स्वामी पणाथी साचा ॥ होभाई ॥३१॥
पुष्पक नामे वेसी विमाणे, आणो आणी आशो ॥
वदन विलोकी ने तब मुझने, देसो सही शाबासो ॥ होभाई ॥३२॥
ढाल भली ए इकतीशवीं, रावण मांड्या कानो।
केशराज होतारथ बलीयो, आयो तस अवमानी ॥ हो भाई ॥३३॥

दोहा (कल्याण रागे)

वीतराग उपदेश में, चार प्रकारे धर्म।
दान शीयल तप भावना, साधे वां शिव शर्म ॥ १ ॥
चित्त वित अनुसारथी, दया दान कहिवाय।
तपतो काया सोसवी, भावे भावना भाय ॥ २ ॥
शील पालवो दोहीलो, नहीं सोहिलोलिगार।
चंचल चित्त स्थिर राखिवो, चालवो खांडा धार ॥ ३ ॥
वाये भरवो कोथलो, तरवा उदधि अपार।
साचो साप खिलावणो, पालवो शीलाचार ॥ ४ ॥

ढाल बत्तीशवीं तर्ज पदनी—

जीवरे तूं शील तणो कर संग, अवर रंग सहुकारमोरे, एह करारो रंग ॥ टेर ॥

आग थकी जल ऊपजे रे, साप थकी वरमाल।
वाघ फिटी होय हरणलोरे, अंधे पणूं लहै व्याल२ ॥ जीव ॥ १ ॥
पर्वत होवे पाव हीयो रे. विष थी अमृत होय।
विघ्न थाने ओच्छव घणो रे, दुर्जन सज्जन होय ॥ जीव ॥ २ ॥
सायर गांव तलावड़ी रे, अटवी निजघर वार।
बूरा तिके भलपण भजे रे, शील तणा उपकार ॥ जीव ॥ ३ ॥
पड़हो जगे अपयश तणो रे, गुणवने देवी आग।
चारित्रने तीलांजली रे, तप जप जाये भाग ॥ जीव ॥ ४ ॥
साई सर्वापद तणी रे, कालो करवो गोत।
द्वार देखाड़े नर्कनों रे. शील विना इम होत ॥ जीव ॥ ५ ॥
पग भरे नर जेटला रे, परनारी ने हेत।
ब्राह्मण मारे तेटलारे, साख अपर मत देत ॥ जीव ॥ ६ ॥
नजर मेलो नजरनो रे, होवे जेती वार।
पलके पलके पल्योपमें रे, वसवो नरक मझार ॥ जीव ॥ ७ ॥
कुसमे नारी निरखतांरे, ब्रह्म हत्यानो दोष।
लागे लम्पटने घणो रे. पाप तणो ए पोष ॥ जीव ॥ ८ ॥
राजदण्ड अति आकरोरे, और करे नुकसान।
आयु बिन मरणो सही रे, न वधे कोई मान ॥ जीव ॥ ९ ॥
आंख ऊंडी दोनिंदक्षये रे, क्षण २ खीणो देह।
चन्द्र रहै नित्य बारमो रे, जेहनो परघर नेह ॥ जीव ॥ १० ॥
लाज गयां निर्लज पणूं रे, कुकर केरु नाम।
पग पग माथे ढांकणारे. शील विना ए काम ॥ जीव ॥ ११ ॥
शीलवती सीता सती रे वसुधा मां विख्यात।
शीलन लोप्यो सुन्दरी रे, निसुणो ए अवदात ॥ जीव ॥ १२ ॥
पुष्पक नाम विमान में रे, बैठी रावण ताम।
दण्डकारण्ये आवीयो रे, बैठा दीठा श्री राम ॥ जीव ॥ १३ ॥

१ अश्वपणूं पाठान्तरे। २ साप। ३ गाम-तलावड़ी-गामनी तलावड़ी गामनी जगोए ठाम पण मूकी शकाय।

आघा पांव पड़े नहीं रे, नवि लोपाये कार ।
सिंह न आवे आसनो रे, देखी आग अपार ॥ जीव ॥ १४ ॥
सीता तो लेवी सही रे, राम छतां न लेवाय ।
आगे हरी पाछे तटी रे, सोच घणो तब थाय ॥ जीव ॥ १५ ॥
विद्यातो अवलोकनी रे, समरी तब आवन्त ।
करजोड़ी ऊभी रही रे, प्रभुजी सुख पावन्त ॥ जीव ॥ १६ ॥
सहाय करो तुम मायरी रे, पामूं सीता आज ।
फिरी गया पंचो मध्ये रे, हूं पामूं अति लाज ॥ जीव ॥ १७ ॥
शिरधूणी विद्याकहै रे, ए तो भूंडू काम ।
सीता हरतां तुमतणूं रे, थासे जगमें कुनाम ॥ जीव ॥ १८ ॥
सतियों मांही शिरोमणी रे, 'रामचन्द्र' की नार ।
शीलथकी चूके नहीं रे, जो होवे क्रोड़ प्रकार ॥ जीव ॥ १९ ॥
'रावण' तो माने नहीं रे, देवी केरी वाय ।
म्हारे मन सीता वसी रे, एही करो उपाय ॥ जीव ॥ २० ॥
विद्या कहै रघुजी छतां रे, कीधां कोडी कलाप ।
हाथ न आवे जानकी रे, सुरपति आयां आप ॥ जीव ॥ २१ ॥
'लक्ष्मण' लड़वाने गयो रे, राम कियो संकेत ।
सिंहनाद तुझ सांभल्यां रे, आयां देखे खेत ॥जीव॥ २२ ॥
सिंहनादने हूं करूं रे, राघव ऊठी जाय ।
सीता लेनां सोहली रे, भाख्यो एह उपाय ॥ जीव ॥ २३ ॥
लड़ता था तिण दिश जई रे. विद्या कियो सिंहनाद ।
रामचंद्रजी सांभल्यो रे. आणे मन विखवाद ॥ जीव ॥ २४ ॥
नाद सुणी प्रभु चिन्तवेरे, एछे को परपंच ।
लक्ष्मण तो हारे नहींरे, संकट नो स्यूं संच ॥ जीव ॥ २५ ॥
मायन जायो एह वीरे, जीते लक्ष्मण साथ ।
खरतो कुटेचो खरोरे, एमकही रघु नाथ ॥ जीव ॥ २६ ॥
वारम्वार वदेखरीरे, सीता आणी सनेह ।

लक्ष्मण संकटमे पडयोरे, नाद करे छे एह ॥ जीव ॥ २७ ॥
कन्त कहै सुण कामनीरे, हमने थारो सोच।
अटवीमांही एकलीरे, आप गयां आलोच ॥ जीव ॥ २८ ॥
अबही जई फरी आवजोरे, करी बन्धवनी सार।
आयो छूं इम सांभलीरे, झूझे अति झूंझार ॥ जीव ॥२९ ॥

जैनोपदेशक वैद्य सुराणा धूलचंदजी कृत
ढाल क्षेपक तर्ज— वेगा आवो जिनवरजी—

वेगा जावो वालमजी म्हारो देवरीयो दुःखपाय ॥ टेर।
वास ए विद्योधग्तणो, भट प्रबलबली कहिवाय ॥ वेगा १ ॥
भोम पराई भयघणो, जीतवो मुसकिल थाय ॥ वेगा २ ॥
वेगा जावो वेगासूं, बंधवनी करोमहाय। वेगा ३ ॥
राज्य ऋद्धि सबछोरने, संग आयो लक्ष्मण भाय। वेगा ४ ॥
नेह निभावो प्रभु आपही, वारम लावोकाय ॥ वेगा ५ ॥
सोचकरो मतमायरो, इहां कहो कुण आय। वेगा ६ ॥
काठी कींवाड़ो देयने, मैंबैठूंला मांय। वेगा ७ ॥
प्रबल जोर भावी तणो, पुग्ष करे कहो काय। वेगा ८ ॥

ढाल मूलगी—

कांइयक सीता प्रेरणारे, कांइक निसुण्योनाद।
धनुष्य बाण सम्बाही करे, ऊठ्यो धरी अल्हाद। जीव ३० ॥
शकुन नेनो बार्योघणोरे, चाल्यो जाय सरोप।
नमिटेछे भवितव्यतारे, देवन देवो दोप। जीव ३१ ॥
पछे रावण आवीयोरे, रोवन्ती असराल।
सीताने लेई चल्योरे, दीठूं रूप रसाल। जीव ३२ ॥
ताम जटायु पंखीयोरे, जाई मिलीयो धाय।
रोष भरीनख–अंकुशेरे, तास विलुरे काय। जीव ३३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज पदरी जैनोपदेशक वैद्य सुराणा धूलचंदजी कृत

ततखिण आडो फिरीयोरे जटाई। टेर ॥
सुना घरमें चौर ज्यूं धसीयो रे रे दुष्ट अन्याई।

रामचद्र की सीता राणी, लेई किहां तूंजाई ॥ तत् १ ॥
देख पराक्रम अवतू मेरो, में तुझ छोडूं नांई।
जाय आकाशे ऊपर पडतां, खगसे खगकी लड़ाई ॥ तत्० २ ॥
रावण वर्जे पिण नहीं माने, दीनो मुकट गिराई ॥
तिम २ रोष करे पंखीडो, जीवत जावा धूं नांई ॥ तत्० ३ ॥

ढाल मूलगी—

वर्ज्यो तो माने नहीं रे, ताम रिसाणो राय ॥
कापी नांखी पांखडोरे, पडीयो धरती आय ॥ जीव० ३४ ॥
शंकन माने कोइ नोरे, वैठो जाय विमान।
एह मनोरथ मायरोरे, पूर्यो श्रीभगवान् ॥ जीव० ३५ ॥

क्षेपक राधेश्याम—

अब रावण के हृदयको, हुआ पूर्ण विश्राम।
मनही मन मनमें सीयाको, उसने किया प्रणाम ॥
फिर इकके बादहु आवहही जो होनहार दिखलाता था।
रावण के विमान में सीता थी, और वह लंका को जाता था ॥
विमान ज्यों ज्यों आगे बढता था, त्यों त्यों सीता चिल्लाती थी।
हा ! राम राम ! हा ! राम राम बस, यह आवाजें आती थी ॥
विरहाग्नी के सन्तापित तन को उस नाम के तापसे सेकती थी।
हा ! राम यह कहती जाती थीं और भूषण वस्त्र फेंकती थी ॥

ढाल मूलगी—

हा सुसग दशरथजी रे, जनक जनक हा तात।
हा लक्ष्मण हा रामजी रे, हा भामण्डल भ्रात ॥ जीव ॥ ३६ ॥
सिंचाणो जिम चिरकली रे, वायस बलीने जेम।
ए कोई मुझने ग्रहीरे, लेई जावे एम ॥ जीव ॥ ३७ ॥
आवो कोई उनावलो रे, शूरो जे संसार।
राक्षस थी राखी लीयो रे, करती जाय पुकार ॥ जीव ॥ ३८ ॥

धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज–कांटो लागो रे देवरीया।

वेगो आजेरे देवरीया म्हांने, राक्षस लीयो जाय ॥ रा० ॥
म्हांने लम्पट लीयो जाय ॥ टेर ॥

प्राण वल्लभ मेरे दिलजानी, आप कही सो मैं नहीं मानी ।
जिणरा ए फल पाय ॥ म्हांने राक्षस० ॥ १ ॥
धावो धावो लक्ष्मण देवर, एम कही नांख्यो पगनेवर ।
ए सेलाणी थाय ॥ म्हांने राक्षस० ॥ २ ॥
हा हा देव ! अबे स्यूं करसूं, आप घात करने मैं मरसूं ।
एम कही विललाय ॥ म्हांने राक्षस० ॥ ३ ॥
हृदय विदारक सीता रोवे, गगन विहारी पंखी जोवे ।
ग्या सारा ही कुरलाय ॥ म्हांने राक्षस० ॥ ४ ॥

ढाल मूलगी

अर्क जटीनो जाईयो रे. 'रत्नजटी' खग एक ।
रोज सुणी सीता तणो रे, मन में करीय विवेक ॥ जीव ॥ ३९ ॥
भगिनी 'भामण्डल' तणो रे. 'रामचन्द्र' नी नार ।
'रावण' जी छलके लवी रे, लेई चाल्यो अपहार ॥ जीव ॥ ४० ॥
'भामण्डलना' पक्षथी रे, रत्नजटी तलवार ।
सम्बाही सांमो हुवो रे, रावणजी तिणवार ॥ जीव ॥ ४१ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज—चन्द्रायणा

भामण्डल की बहिन राम की नार है, रे लेजावे केमके मूढ गींवार है । देतो इणने छोड़ केण तूं मानले, नहींतर देवूं मार निश्चय ए जानले ॥ १ ॥ रावण भाखे रङ्क ! भक्त थारी थई, जा तूं थारे पन्थ मान म्हारी कही । तो पण कर करवाल के ले सामो थयो, वर्ज्यों रावण वहोतक मानत नहीं कयो ॥ १ ॥

ढाल मूलगी

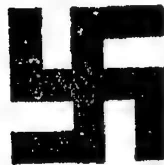
मुलकाणो मनमें घणूं रे, किस्यूं करे ए रङ्क ।
विद्या सघली अपहरी रे, लीधी राय निशङ्क ॥ जीव ॥ ४२ ॥
पांख विहुणो पंखीयो रे, होवे तेमए देख ।
छोटा म्होटा सूं अडे रे, पावे दुःख विशेष ॥ जीव ॥ ४३ ॥
कम्बू द्वीप कम्बू गीरी रे, गिरतो गिरतो तेह ।
करतो अधिका औरता रे, आयो धरती छेह ॥ जीव ॥ ४४ ॥

आपणपे आलोच में रे, सायर ऊपर सोई।
करे घणी समझावणी रे, समझावाने तोई ॥ जीव ॥ ४५ ॥
भूचर खेचर राजवी रे, सयल नमें हम पाय।
अछूं त्रिखण्डनो धणी रे, ईन्द्र आप गुण गाय ॥ जीव ॥ ४६ ॥
करी थापूं पटरागीनो रे, महिमा अधिक वधाय।
रोवे मति रहै रङ्ग में रे, सुख में दुःख न खमाय ॥ जीव ॥४७॥
कर्ता कोप्यो थो घणो रे, हेत किसे खुणसाण।
भाग्यहीण इण रामने रे, दीधी गले लगाय ॥ जीव ॥ ४८ ॥
काग गले कञ्चन तणी रे. माल भली न देखाय।
सरिखासूं सरिखो मले रे, आवे सहुने दाय ॥ जीव ॥ ४९ ॥
मानो मुझने पति पणे रे, होई रहूं तुम दास।
मुझ मान्या सहु मानसे रे, आणो तुम्हारी आश ॥ जीव॥ ५० ॥
निजर न ऊंची सा करे रे, दीन ए अपूठो जवाब।
अक्षर[१] दोना ध्यानथी रे, आणी रही अति आब ॥ जीव ॥५१॥
विंध्यो मन्मथ[२] बाणसुं रे, आरति अति मनमांहै।
ऊठीने पग लागीयो रे. विषय विह्वल ग्राहै ॥ जीव ॥ ५२ ॥
लम्पट ललचाणो घणूं रे, तूं क्यों न करे परवाण।
अण इच्छन्ति नारनोरे, पहिलां छे पच्चक्खाण ॥ जीव ॥ ५३ ॥
सीता पग खेंची लीयो रे, छिव्यो नहीं शिर तास।
परपुरुषांने आ भख्यांरे, थाये शीयल विणास ॥ जीव ॥ ५४ ॥
देवलनी ध्वज सारखीरे, पतिव्रता कहिवाय।
होय अपूठी वायथीरे, आपही अलगी पुलाय ॥ जीव ॥ ५५ ॥
सीता आक्रोशे घणूरे, रे रे निर्लज्ज ! नरेश।
मुझ आण्यां थी ताहरीरे, विणठी वात विशेष ॥ जीव ॥ ५६ ॥
सारणादिक तो घणारे, मंत्रीने सामन्त।
साम्हा आवी सादरारे. प्रभुने शीष नामन्त ॥ जीव ॥ ५७ ॥

---
१ राम। २ कामदेव।

नगरीनी शोभा करी रे, ओछवनो अधिकार ।
नारी निरूपम लावीया रे, मुख मुख जय जय कार ॥ जीव ॥५८॥
लंकाथी दिशी पूरवे रे, देव रमण उद्यान ।
रक्ता शोक तले जई रे. वेसाड़ी सा आण ॥ जीव ॥ ५९ ॥
'राम' अने 'लक्ष्मण' तणो रे, जब लगन लहुं खेम ।
तबलग मुझनेछे सही रे, भोजन के रो नेम ॥ जीव ॥ ६० ॥
रखवाली तो 'त्रिजटा' रे. आरक्षक परिवार ।
मूकी मन्दिर आवीयो रे, लोक घणाछे लार ॥ जीव ॥ ६१ ॥
ढाल भली बतीश मी रे, रावणने चित्त चाव ।
केशराज ऋषिजी कहै रे, आगे लावन साव ॥ जीव ॥ ६२ ॥

इति श्री "जैन पद्य रामायणे," भामण्डलं सीतायाः पूर्व जननंच । सीतया सह रामस्य सम्बन्धः विद्या धर द्वारा जनकस्याऽपहरणम् । सीतास्वयम्बरः । रामस्यवनवासः । अरण्यानन्तरेऽनेके उपकाराः । दण्डकारण्ये निवासः । सम्बूकस्य विद्यासाधनम् । शूर्पनखाद्वाराखरस्य युद्धम् । सीता हरणम् । इत्यादि विविध विपयकं द्वितीय खण्डमिति—



॥ श्रीमच्छार्दूलसिंह जित्-गुरवे नमः ॥

अथ तृतीय खण्डं प्रारभ्यते।

दोहा (सोरठी रागे)

वाग् देवी वरदायनी, कविजन केरी माय ।
मया करीने आपजो, शुद्ध मति सुखदाय ॥ १ ॥
राम चली ऊतावला, आया 'लक्ष्मण' पास ।
रण रङ्गे रमतो खरो. दीठो सो उल्लास ॥ २ ॥
'राम' प्रत्ये 'लक्ष्मण' कहै, तुमतो कियो अकाज ।
अटवी मांहीं एकली, 'सीता' मूकी आज ॥ ३ ॥

मुनि श्री रूपचन्दजी म० कृत क्षेपक तर्ज-सरोता कहां भूल आये ।

सीता को क्यों छोड़ आये, प्यारे मेरे भैया ॥ टेर ॥
दिवी भोलामण इतनी तुम्हको, सीयका जतन करैया ।
विकट भयङ्कर अटवी इसमें, निशिचर खूब फरैया ॥ सीता ॥१॥
पर्ण कूटी में सीताजी को, एकाकी छोडैया ।
विना बुलाये आये यहां क्यों, वनमें तजी भोजैया ॥ सीता ॥२॥
वार २ सिंहनाद सुनीकर, चित्त में मैं चमकैया ।
जङ्गमें जीते लक्ष्मणजी को, ऐसा कुण मा जैया ॥ सीता ॥ ३ ॥
तोरी भावज जबरन मुझको, तोके पास पठैया ।
रूप मुनि कहै रामायण में, गावो खूब गवैया ॥ सीताको ॥ ४ ॥

दोहा--राम कहै तें तेड़ीयो, हूं आव्यो अवधार ।
सो कहै मैं नवि तेड़ीयो, ए प्रपञ्च विचार ॥ ४ ॥
फरी जावो ऊतावला, मति को विणसे काम ।
पाछल थी आवीश हूं, जीतिने संग्राम ॥ ५ ॥
वेगा[1] २ वाटे वही, राम पधार्या जाम ।
नजर न देखे जानकी, मूर्छाणा प्रभु ताम ॥ ६ ॥

यतः

[1] ऊतावलसूं आवीयो, दारुण भरतो डग्ग ।
वर्ष एक नहीं वीसरे, पद्म रायरा पग्ग ॥

ढाल तेतीशमीं तर्ज–घड़ीदे लाल तम्बाखू

श्री रामजी ए वनमें मेली, सीता शुद्ध न पाई हो ।
इत उत ढूंढत डोलत वनमें, सा नवि दीये दिखाई हो ॥ १ ॥
श्री रामे नार गमाई हो ॥ टेर ॥
संज्ञा पामी अन्तर्यामी, आगे आई धाई हो ।
पंख विहूणो पंखी पड़ीयो, दीठो ऊपर आई हो ॥ श्री रामे ॥ २ ॥
पंखीड़े दीठो नर कोई, नारी लीधां जाई हो ।
पूठ हुवां थी पापी पुरुषे, नांख्यो छे ए घाई हो ॥ श्री रामे ॥३॥

क्षेपक राधेश्याम

चलते २ उस जगह, पहूंच गये सुख धाम ।
जहां अधमरा गीध वह, कहता था हे राम ! ॥
उन मुंदती आंखों के आगे, वे दया भरी आंखे पहूंची ।
अध मरे गीध के कंधों पर, वे बड़ी २ बाहें पहूंची ॥
मरने वाले के कानों में, पहूंची यह वाणी प्रेम–भरी ।
हे ! परोपकारी बोल २, किसने तेरी दुर्दशा करी ॥
आंखें खोली सामने, देखे, शोभा धाम ।
लेकर आंखों में किया, आंखों से ही प्रणाम ॥
फिर आंख मूंद कर बोल उठा, है कौन जो मुझे सम्हालता है ?
हा राम यह जाप मैं जपता हूं, उस जाप में विघ्न डालता है ॥
कोई भी हो मैं कहता हूं, हट जाओ मुझको मरने दो ।
हा राम ! मंत्र है माता का, आराधना उसकी करने दो ॥
गद् २ हो बोले प्रभु, मैं ही हूं वह राम ।
भक्तराज ! देखो तुम्हे, करता राम प्रणाम ॥
यह सुनते ही फिर खुले, गीधराज के नैन ।
टूटी फूटी जुबान से, लगा बोलने बैन ॥
(हा राम !) सिया को एक दुष्ट, (हा राम !) लेगया दक्षिण को ।
(हा राम !) लड़ता था मैं उससे, (हा राम !) छुड़ा न सका उनको॥
(हा राम !) न बोला जाता है, (हा राम) मुझे अब मरने दो ।

(हा राम !) सामने आजावो, (हा राम !) यह स्वरूप देखने दो॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

अगाड़ो पंखी ही पायो, जिणीने पूछे रघुरायो. पंखी कहे नारी ले जायो, संज्ञा से वात चेतायो, धनुष्य ले तिण दिश ही जावे, लाधी नहीं फिर पाछा आवे ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ६७ ॥ पंखीने देखी दुःख पावे, सोचतच मनमांही लावे, तथापि तसु तिरणो चावे। प्रभुजी करुणा दिल लाई, वक्त फिर यह आवे नांई ॥ ॥ सत्य० ॥ ६८ ॥

ढाल मूलगी—

श्रावक जाणी जाणी सहाई, प्रभु उपकार कराई हो।
श्री नमोकार अपार अनूपम, दीधो तसु सुखदाई हो ॥श्रीरामे॥४॥
मंत्र प्रभावे स्वर्ग चतुर्थे, सुरनी पदवी पाई हो।
संगत थी पंखीउद्धरियो, संगत थी सुख थाई हो ॥ श्री रामे ॥५॥
ऊंचो देखे नीचो देखे, पास न कोई सखाई हो।
संचर जाणे आशा आणी, ताम रहे पस्ताई हो* ॥ श्री रामे ॥६॥

सवैया—

वनके कुरंग ते कहा कुरंग कीनो,
अब कहूं मृग नेनी सीय ताकी सोध लायदे।
कोकिल सो कण्ठ जाको,
मधुर आनन्दकारी, कोकिल कूं वेग जाई इतही कूं आयदे॥
ताही के शरीर की सुगंध अगर रूप अरे,
पवन वीर वास इतकूं पठाय दे।
अहो हंसराज हंस गामीनी गमन कीनो,
मेरी दया देख अब सीय कू मिलाय दे॥

---

* अरे लम्बे २ वट, तेरे माथे मोटी भट, मेरी सीया वतादे सट॥ अरे मौर, दई दिश दौर, बतादे मेरी सीय को चौर॥ अरे काग सूता क्यूं है जांग, सीता गई किण माग ॥ अरे सूवा जोतां घणी वार हुवा, बतादे सीता का दूहा—

स्वामी श्री नथमलजी म. कृत ढाल क्षेपक तर्ज नणदल री—
अबे री मने नहीं आवड़े, सीता केरे राग हो रघुपति ।
अवर बात गमे नहीं, एक सीता री लाग हो ॥रघु०॥ अबे. ॥१॥
सूना झूपा सहुदीसे, राम पावे दुःख रास हो । रघु० ।
सूनी सेज छे रावली, प्रीतवती नहीं पास हो ॥रघु०॥ अबे ।२॥
आसन शयन विलोकतां, वेदनतो असमान हो रघुपति० ।
साजनीया१ साले नहीं, साले आई ठाण हो । रघु० ॥ अबे॥ ३ ॥
दोहा—इमगहन२ सोच करता फिरे, मारे वन मझार ।
मोह गहला थया रामजी, रुदन करे अनपार ॥ १ ॥
धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज—जल्लो मेरी जोड़ को
सती मेरी 'जानकी' कुण लेगयो पापी रे ॥ टेर ॥
पतिव्रतार्धा पदमणी रे, रहती सदा इक रङ्ग ।
वन दुःख साथे सहे रे, कुण कीयो रङ्ग में भङ्ग ॥ सीता ॥ १ ॥
दुःख दीनो मोय पापीयो रे, लेगयो सीता नार ।
'लक्ष्मण' पिण हाजर नहीं रे, कुण करसी तसवार ॥सती॥ २ ॥
क्षिण इक मूर्छा पामतो रे, क्षिण इक होय सचेत ।
अटवी मांही टलवले रे, सीता केरे हेत ॥ सीता ॥ ३ ॥
ढाल मूलगी—
लक्ष्मण साथे, खर खेचर सो, मांडे ताम लड़ाई हो ।
'त्रिशिरा' लघु भाई खर गर्वी, आप करे अधिकाई हो ॥श्री॥७॥
रथ बेसी ने लक्ष्मण साथे, झूंझतणी चित्रि ठाई हो ।
'लक्ष्मण' वीरे मारी नांख्यो, पहेली एह बधाई हो ॥ सीता ॥८॥
ढाल क्षेपक तर्ज—लड़का ।
'लक्ष्मण' वीर अति धीर शूरापणे, लड़त चपोट अति चोट वाहे ।

यतः १ सेण गयां साले नहीं, साले आही ठाण ।
ऊंठ गयो साले नहीं, साले पड़ीयो पिलाण ॥
२ लीदी विछरत जगत में, कुण नहीं सोच कीयो ।
सीता हरण हुवो जद सटके, रघुपति रोय दीयो ॥

विकट रणभूमी में भट्ट झट्ट आवीया, सामी आवे जको मृत्यु चाहै ॥ ल० ॥ १ ॥ बाण सणणण वहै चोट कोई ना सहै, कहै मुख खेचरा एम वाणी । वनतणो वासीयो सहुने ए त्रासीयो, नासीया सहु जणा भ्रान्ति आणी ॥ ल० ॥ २ ॥

ढाल मूलगी

लङ्क पयालां केरो स्वामी, 'चन्द्रोदय' सुत सोई हो ।
'वीरविराध' सबल बलसाजी, आवी सहाई होई हो ॥ श्री ॥ ९ ॥
सेवक सोई आडो आवे, काम पड़े नहीं काचो हो ।
'लक्ष्मण' साथे 'विराध' वदेरे, सेवक हूं छूं साचो हो ॥श्री॥१०॥
बाप हणीने लङ्का लीधी, रीस घणी छे आगे हो ।
स्वामी कारज वैर बापको, जगमांही जश जागेहो ॥ श्री रामे११॥
तुम्ह आगेए कीट पतंगा, भृत्य पणूं हूं भाखूं हो ।
द्यो आदेश विशेष बतावूं, रण अखयायति राखूंहो ॥ श्री रामे १२॥
ईषत् हसि लक्ष्मणजी बोले स्योंरे सहायज शूराहो ।
आपोबले बलवन्त कहावे, परबल नित्य अधूराहो ॥ श्री रामे १३ ॥
जेठो बन्धव राम नरेश्वर, दुःखीजन प्रति पालहो ।
देसे तुझने राज्य तुम्हारो, शत्रू कन्द कुदालहो ॥ श्री रामे १४ ॥
देखी विराध विरोधोखर, तो बोल्यो रोष प्रकाशीहो ।
शम्बूक' हणतां सहायज एहने, तूं वरीयो वनवासीहो ॥ श्रीरामे१५॥
लक्ष्मण' भाखे' खर मतभूके, नन्दन त्रिशिरा भाई हो ।
उणही पन्थेतूंही चलावूं तोरे सुमित्रा माईहो ॥ श्री रामे १६ ॥
मार्यो के मार्यो में मूरख, जीभतजी सुभटाईहो ।
करी प्रगट प्रौढा पक्षपाती, लीजे तास बुलाई हो ॥ श्री १७ ॥
एम कहन्तां नट जिम नाचे, बाणे अम्बर छाई हो ।
बाण' क्षुरप्रे१ खर शिरछेद्यूं अवर रया मुख बाईहो ॥श्री रामे१८॥
'दूखण' दल लेईने दोड्यो, तेपिण मारी लीधो हो ।

१ पासणाने आकारे बाण ।

आपण की धो आपसमार्यों, अवरांसु जश नवि दीधो हो ॥ श्री १९
लेई साथे विराध विदीतो, उमग्यो उमग्यो आवेहो ।
एटले वामू नेत्र फरकियू. ताम असाता पावेहो ॥ श्री रामे २० ॥
अलगीथी दीठो अलवेसर१, अटवी मांही भमतो हो ।
नारी वियोगे योगीज हुओ, आरतो मांही रमतो हो ॥ श्री २१ ॥
लई विखवाद विशेष विचारे, ए तो मैंधुर जाणी हो ।.
'अटवीमां एकाकी विशेषे, राम गवेषे२ राणीहो ॥ श्री २२ ॥
लक्ष्मण आगे आवी ऊभो, राम' नसांमो३ देखे हो ।
विरह साल सरीखो साले, नभसूं वात विशेषे हो ॥ श्री रामे २३ ॥
पान पान करी वनमेंसोधो, नारी नयणे न आवीं हो ।
वन देवी तुमछोवन वासिनी, धोछो क्यूंन बतावी हो ॥ श्री २४ ॥
तुम४ भरोसे नारी मूकी. मैंतो काम सीधायो हो ।
कामन की धो नारगमाई, जग अपजश बोलायो हो ॥ श्री २५ ॥
भाई भरोसे थारे मूक्यो. त्रिया रखवाली कामो हो ।
आयोथो सो एकन हुई, ओछो दीठो रामो हो ॥ श्री रामे २६ ॥
राजभार देवा नवि दीधो, धन्य! कैकैयो मात हो ।
नारीन राखी शक्यो नरनिश्चे. तोकिम राज्य रखात हो ॥ श्री २७
एम कहेतो राम नरेश्वर, धरणी पड्यो मूर्च्छाई हो ।
राम दुःखे पशु पंखी दुःखिया, ऊभां आगे आई हो ॥ श्री ॥२८॥
'लक्ष्मणजी' करी ! शीतलताई बोले आवी आगेहो ।
आर्य! करो छे कार्य कि सूंए, सहूं नेभूंड लागेहो ॥ श्री २९ ॥
भाई तुम्हारो जीती आयो, खरनो कन्द निकन्दी हो ।
वचन सुधारससूं सींचाणो, लहै संज्ञा आनन्दी हो ॥ श्री ३० ॥
देखे' लक्ष्मण ऊभोआगे, ऊठी मिलियो धाई हो ।
आपां दोई मिली त्रियान रखाणी, हरखाणी उंमाई हो ॥ श्री ३१ ॥
उदस्तु सौमीत्री इम भाखे, प्रभु ए आरती म आणो हो।

१--राम--२ शोधे--३ आकाशसू-- ४ वनदेवीके भरोसे--

नादभेद करी ने किणईके, सीता लीधी जाणोहो ॥ श्री ३२ ॥

ढाल च्षेपक तर्ज मतकरजो कई प्रीत—

लिछमन मोही कहोरी, कौनहरी है सीत ॥ टेर ॥
लेगयो नार कबहून रहूंगो अबमें हूंगो अतीत ॥ ली ॥ १ ॥
तुमसा वीर प्रबल बलवन्ता, लही खेचरसूंजीत ॥ ली ॥ २ ॥
अब दो बंधव होके सामिल, दुष्टको करो फजीत ॥ लि ॥ ३ ॥

ढाल च्षेपक तर्ज कपिरे प्रीया साथे—

लक्ष्मण भाई' सीता को कौन हरी ॥ टेर ॥
इस मंडीया पर कागऊड़त है, देखो आसूनी परी ॥ लक्ष्मण १ ॥
के कोई विद्या धर लेगयो, के कोई सिंह चरी ॥ ल ॥ २ ॥
झाड़ झाड सब बनकूढूंढे, तोही न खबरपरी ॥ ल ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी—

तेहना प्राण संघाते सीता, वेगे पाछी आणूं हो ।
तो तो लक्ष्मण नाम हमारूं, नहींतो झूठ थपाणूं हो ॥ श्री ३३ ॥
वीर विराध खरोओमिलियो, आपो बोल उदारू हो ।
लंक पयाले प्रभू थिरथायो, वचन पले जिम वारू हो ॥ श्री ३४ ॥
सीता खबर करेवा कारण, भट मोकलिया भारी हो ।
वीर' वीराध घणोजल फलीयो, अवसर सेवाप्यारीहो ॥ श्री ३५ ॥
सुभट सहु पृथिवी फिरआया, सीता खबर न पामी हो ।
अधोमुखा ऊभा प्रभु आगे, बतलावे तब स्वामी हो ॥ श्री ३६ ॥

(शिखरिणी)

सियाजी रागहणा, निरखहरि नेणां जलभरे ।
प्रियाजी राप्यारा, सहज गुण सारा हियधरे ।
हरे चिन्ता सारी, तदपि दुःखभारी मनकरे ।
विजोगीहै जोगी भगती रसभोगी सबपरे ॥ १ ॥

(चौपाई)

राम-लक्ष्मण! देख सियाग गेणां । ओलखलाल? निरख निजनैणां ।
लक्ष्मण- मैं नेणां जगदम्बन जोई । तन-भूषण जाणू नहीं कोई ।

ए नूपर माता राजाणूं । नित पग वन्दनमूं यहीचाणूं ।
दोषन कोई सेवक जननो, उद्यमनो अधिकारी हो ।

ढाल मूलगी

प्रभु कुदिशाए कारज न सरे, सुदिशा कार्य समारी हो ।।श्री।।३७।।
वीर 'विराध' 'प्रभो' पग लागी, अरज करे अनुरागी हो ।
थापी पयालां दोडूं दश दिशे, कारज केडे लागी हो।। श्री ।।३८।।
वीर विराध सबल बल साथे, रामसुं लक्ष्मण दोई हो ।
लंक पयाले चाली आया. खबर लहै सहु कोई हो ।। श्री ।।३९।।
'खर' नो नन्दन 'शम्बूक' भाई, 'सुन्द' नरेश्वर आप हो ।
सामो आवी खेत जड़ावे, हाथग्रही शर चाप हो ।।श्री रामे।।४०।।
वीर विराध विशेषे लड़वे, चारु वैरज वाले हो ।
कांहय हाथी कांहय पायक. लोक वचन सम्भाले हो ।।श्री।।४१।।
'राम' सु लक्ष्मण देखी रण--मुखे, शूर्पनखा सुत लेई हो ।
'रावण' पासे पधारी पापण, घरनो चोड करेई हो ।।श्री।। ४२ ।।
वीर विराध' तीहांस्थिर थाप्यो. आरती सघली टाले हो ।
महोटानी१ मति महोटी होवे, महोटा बोल्यू पाले हो ।। श्री।।४३।।
राम सुलक्ष्मण खर ने महीले, वसिया आप विराजे हो ।
युव राज पदवीरविराधज, सुन्द घरे सुखसाजे हो ।। श्री ४४ ।।
ढाल भली ए तीसुशमी, वीर विराध वधायो है ।
केशराज ऋषिराज कहैरे, राज्य गयो वेहोडायो है ।। श्री ।। ४५ ।।

दोहा (नहरागे)

प्रतारणी विद्यामहा, हेमवंत गिरिजाय ।

नोटः ।। वीर विराध के सुभट सीता की खोज में गयेसो- रास्तेमें विखरेहुवे गहणा लेकर वापिस राम- लछमण को दिखलाये ।।
यथा कुण्डलं नैवजानामि- नैवजानामि कंकणं नूपरमेव जानामि नित्यं पादा भिवन्दनात् ।। १ ।।

१ म्होटां केरी शुभ नजर, लोबो मिले लटाक ।
ज्यों घन उमग्यां धान, घृत, सूंगो होय सटाक ।।

साहसगति, साधीसही, तबही आयो धाय ॥ १ ॥
तारा नो अभिलासियो, आतुर थयो अपार ।
रूपधरे सुग्रीवनो नकरे कांई विचार ॥ २ ॥
पुरी किष्किन्धा आवीयो, करि सरिखो सुविलास ।
गति मति वाणि विचारवे, बीजो रवि अकाश ॥ ३ ॥
वनक्रीड़ा करवाभणी, गयो ताम 'सुग्रीव'।
एघरमें चलि आवियो, अवसर लही अतीव ॥ ४ ॥
तामधणी घर आवियो, रोकाणो दरबार ।
घरमें छे सुग्रीवजी, वातपड़ी सुविचार ॥ ५ ॥
दो 'सुग्रीव' विचारने, वाली तणोते पूत ।
काकीघर ताला जड़े, राखे वा घरसूत ॥ ६ ॥
चन्द्ररस्मि रलियामणो, युवराजा जयवन्त ।
वाली वीरनो जाईयो, बल प्रबल नहींअन्त ॥ ७ ॥
आवीने आडोरह्यो, कोईन आगेजाय ।
कूटी बाहर काढिया, बलियाथी इमथाय ॥ ८ ॥

ढाल चौतीशवीं तर्ज मुरली

'तारा' प्रत्यक्ष मोहनी, तारा अधिक रसाल ।
'तारा' सुग्रीव सोहनी, हो, तारा अति सुविशाल तारा ॥
तारा रूप अनूपम तारा, तारा ए मोह्यो भूप तारा ।
तारा मोहन वेली तारा, तारा कोमल केली ॥ टेर ॥ १ ॥
चौदह अक्षौहणी नो धणी, राजा श्री सुग्रीव ।
पार नहीं प्रभु तातणोहो, साहिब आपसदीव ॥ तारा ॥ २ ॥
एके डांगे मारीया, साचा झूठा दोई ।
ज्ञान विना निश्चय नहीं हो, लोकों थी शूं होई ॥ तारा ॥ ३ ॥
साचो मिलसे साचने, झूंठो झूंठे जोई ।
झूंठ तणी झड़ ऊखलेहो, जोसुसतावे कोई ॥ तारा ॥ ४ ॥
हंस अने बक ऊजला, लोकां एक प्रशंस ।

खीर नीर ने पारखे हो. वग वग हंस ही हंस ॥ तारा ॥ ५ ॥
काच अने मणि सारसी. लोकां एक ही काच ।
पण पारखियों आगलेहो, मणि मणि काच हो काच ॥ तारा॥६॥
काग अने तो कोकिला, वरणे एक सुहाग ।
मास वसन्त विराजियां हो. पिक २ काग ही काग ॥ तारा ॥७॥
मंत्री ने पंचों मिली, निवेड्यो एहवो न्याय ।
सात सात अक्षौहणी हो, दोई पक्षे थाय ॥ तारा ॥ ८ ॥
दोई लड़ो ए आप में, साचे देव सहाय ।
झूठो नासी जाय सहीहो, मह्नु ने आवी दाय ॥ तारा ॥ ९ ॥
खेत बुहार्यो मोकलो, ऊभा दोई आय ।
लोक लब्या आप आपणा हो, झगड़ो तो न मिटाय ॥ तारा ॥१०॥
लोक न चाहे नारी ने. चाहे ए दो भाई ।
कोई मरो को जीवजो हो, लोकां लागे कांई ॥ तारा ॥ ११ ॥
तब दोई सुग्रीवजी, लड़िया शस्त्र ऊपाड़ी ।
खांति न राखी खेद में हो, तोहि न मेटी राड़ी ॥ तारा ॥ १२॥
दोई तो समतोलजी. दोई विद्यावन्त ।
दोई तो खेचर खरा हो, दोई तो मयमन्त ॥ तारा ॥१३॥
हाथी सूं हाथी अड़े, सिंह साथे सिंह ।
सापे साप मिटे नहीं हो, शूरे शूर अबीह ॥ तारा ॥ १४ ॥
सुग्रीवे सम्भारीयो, हनुमन्त आयो चाली ।
झूठो सुग्रीव कूटियो हो, न शके झवड़ो टाली ॥तारा॥१५॥
सुग्रीव चित्तसूं चिन्तवे, साचो एतो सोच ।
कहने तजे कहने भजे हो, लोको ए आलोच[1] ॥तारा॥१६॥
वाली हूतो बलवन्तजी, जग जश साचो जोर ।
सो तो हुओ संजमी हो, भड़ ए रहियो मोर ॥ तारा ॥ १७ ॥
'चन्द्ररस्मी' बलियो भणूं, मरदों में मरदान ।

---
१ पश्चात्ताप ।

खबर न लाभे एटली हो, कोण निज कोण छे आन[1] ॥ १८ ॥
'दशकंधर' छे दीपतो, लम्पट मांही गणाय ।
वातसुण्यों हणी दोयने हो, तारा लिये बुलाय ॥ तारा ॥ १९ ॥
एतादृश[2] संकट पड़े, कामस मारण हार ।
'खर' थो सो रामे हण्यो हो, करतो पर उपकार ॥ तारा ॥ २० ॥
शरण ग्रहूं श्रीरामनो, लक्ष्मण सूं अभिराम ।
जेम 'विराध' निवाजिया हो, मारसे हम काम ॥ तारा ॥ २१ ॥
लंक पयालां छे सही, आज लगे ओ ईश ।
बोलाव्यो जावे सही हो, कारज विश्वा वीश ॥ तारा ॥ २२ ॥
दूतज छानों मोकल्यो, वीर विराध ही पास ।
वात जणावी विस्तरी हो, पायो सो उल्हास ॥ तारा ॥ २३ ॥
वेगा आवो वेगसूं आवो करो अरदास ।
काम तुम्हारो सारसे हो, देसे अरिने त्रास ॥ तारा ॥ २४ ॥
सन्तोषा णो स्वामीजी, निसुणो वचन अमोल ।
बलते छांटो अमितणो हो, आरति मांही सुबोल ॥ तारा ॥ २५ ॥
साहण वाहण सामटे, चाली गयो सुग्रीव ।
आगे धरी विराधने हो, आरती वन्त अतीव ॥ तारा ॥ २६ ॥
चरण कमल प्रभुना नमी, भाखी मननी बात ।
पर दुःख कापण ने सहीहो, विरुद्ध अछे विख्यात ॥ तारा ॥ २७ ॥
हम तुमने छे सारिखा' अबला दुःख अपार ।
हमारो तुम भांजसोहो, थांरो श्रीकरतार ॥ तारा ॥ २८ ॥
एह सुणन्तां वातजी, गहवरियोराजान ।
पर दुःख थी दुःख आपणे हो, साले साल समान ॥ तारा ॥२९॥
दुःख हैया में सांवरी, सुग्रीव ही सन्तोष ।
दीधो देव दया करी हो, कीधो सुख नो पोष ॥ तारा ॥ ३० ॥
वीर विराध कहे सही, आपांने ए काज ।

---

१ दूसरा । २ जैसा कहा तैसा ।

करवो छे ऊतावलो हो, न कियां पावों लाज ॥ तारा ॥ ३१ ॥
कपि पति भाखे कामजी, आपां करशूं एह ।
सुसतो होई सोधशूं हो, जई धरती ने छेह ॥ तारा ॥ ३२ ॥
द्वीप अने परद्वीप नी, सुधो अणावूं आप ।
तो तो साचो जाणजो हो, 'सूररजा' छे बाप ॥ तारा ॥ ३३ ॥
प्रभुजी चाली आविया, पुरी किष्किंधा देख ।
जाणे अलका[1] अभिनवी हो, पायो सुख विशेष ॥ तारा ॥ ३४ ॥
बीजो[2] बोलावी लियो, ऊभो आवी खेत[3] ।
दोई लड़्या नवि जाणिया हो, साच झूंठ ही हेत ॥ तारा ॥ ३५ ॥
'वज्रावर्तज' नामथी, धनुष चढाव्यो देव ।
विद्यागई टकार थी हो, प्रगट थयो ततखेव ॥ तारा ॥ ३६ ॥
लम्पट परनारी तणो, बीठा मांहीं बीठ ।
जग सघलो अवलोकतां हो, तुम सम अवर न दीठ ॥तारा॥३७॥
एक बाणसूं मारियो, 'साहस गति' सयतान[4] ।
एक चपेटे सिंहने हो, हरिण लहे अवसान[5] ॥ तारा ॥ ३८ ॥
वीर विराध तणी परे, थिर थाप्यो कपिनाथ ।
साचो करी सहु देखतां हो, आणो मेल्यो साथ ॥ तारा ॥ ३९ ॥
त्रयोदश[6] कन्या भली, राम प्रत्ये आपन्त ।
प्रीति रीति काठी करी हो, कपिपति तो थापन्त॥ तारा ॥ ४० ॥
राम कहे कपिराजिया, तू वाचा सम्भार[7] ।
परणेवाली पाछली हो, पहीली सीता वार ॥ तारा ॥ ४१ ॥
ढाल भली चौतीशमीं, कपिपति काम समारी ।
केशराज ऋषिजी कहे हो, अब सोधीजे नारी ॥ तारा ॥ ४२ ॥

दोहा (गुजरी रागे)

'रावणने' घरे रोवणो, आज पड़यो अवधारी ।
'खर' नी सुणी सुणावणी, आणी मिली बहु नारी ॥ १ ॥

---
१ कुवेर भण्डारी नी नगरी (मेरु उपर) २ बनावटी सुग्रीव । ३ रणभूमि
४ सेतान (राक्षस के तुल्य) ५ मृत्यु । ६ तेरह । ७ यादगार ।

दिवसवे चारने आंतरे, शूर्पखाने 'सुन्द' ।
लंका नगरी आविया, वरसे आंसू वुन्द ॥ २ ॥
'शूर्पनखा' सुहामणी, करती अधिक विलाप ।
'रावण' ने गले लागीने, दीन वदे अति आप ॥ ३ ॥

धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज आईरे पनोती जरासिंधने ।

आंई रेपनोती रावण रायनेरे, पापिणी पाप रो मूलरे ।
सासरीया सघला तणोरे, कर आई उन्मूलरे ॥ आई ॥ १ ॥
रावण नाश करायवारे, आई लंकमझाररे ।
बलती जिहांजावे गाडरीरे, तिहां २ वालण हाररे ॥ आई ॥ २ ॥
आंसुडा लूया निज हाथसूंरे, चांपी चांपी हिरदामझाररे ।
आस्वासन देवेघणोरे, पूछे सकल समाचाररे ॥ आई ॥ ३ ॥

दोहा– कन्त हण्यो कुंवर हण्यो, हणिया देवर दोय ।
खेचर चउद हजारनो, हन्ता एकसूं जोय ॥ ४ ॥
लंक पयाले आवीयारे, हणिया अवर अगाध ।
रांक जेम हम काढीया, वसियो वीर विराध ॥ ५ ॥
बंधव तुम बैठांथकां, वरते ए अन्याय ।
घरती दिन दो चारमें, जातीही देखाय ॥ ६ ॥
एक सुवर्ण सामलो, बीजो पीलेवान ।
वनवासी छेभीलड़ा, पण नहीं केहने मान ॥ ७ ॥
वसवा भाणेजा भणी, देश अनेरो हेर ।
सगो सगे आवे नहीं, कोई दिनों के फेर ॥ ८ ॥
ए सघली श्रवणेसुणी, बोले वीर विवेक ।
घटिना फेराघणा, घटनो तो एक ॥ ९ ॥
पखाली कीड़ीतणो मुआमें दिनजात ।
मारी करसूं पाधरा, अवर चलावो वात ॥ १० ॥
वात नहीं वतकानहीं, नहीं राग नहीं रंग ।
राज काज भावे नहीं, होई रह्यो विरंग ॥ ११ ॥

नींद नहीं लीलानहीं, फूल नहीं तम्बोल ।
भोजन पाणी पण नहीं, सुण्या न भावे बोल ॥ १२ ॥
हांसी नही रामतनहीं, नहीं भोग नहीं योग ।
माणस मुआ सारीसो, होई रह्यो नस सोग ॥ १३ ॥
खातो हुवो खाटले, पड्यो रहै नरनाथ ।
गुंग मुंग बोले नही, आरती करे सहु साथ ॥ १४ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

'मंदोदरी' चिन्ते तिनवारे, नाह दिलवात नहींधारे, पूछ्यो विन नहीं सरेम्हारे आई नव रावण' पे चाली, विनय कर पूछेहै आली सत्य व्रत पालो ॥ ६९ ॥

ढाल पैंतीशवीं— तर्ज मेरे मन एसी आणवनी—

थारा चित्तमे कांई वसी मंदोदरी,
मांदो पति देखी पूछेवात इसी ॥ टेर ॥
पखवाड़े अंधारे आये, घटतो जाय शशी ।
तेज हैज प्रताप प्रक्षीणो, शोभा लाज खसी ॥ थारा ॥ १ ॥

धूलचंदजी कृत, ढाल क्षेपक तर्ज महीलामें बैठी हो राणी कमलावती-

राणीं' मन्दोदरी वाणी इमकहै, सांभलजो नरनाथ ।
तीन खण्डरीहो थांरे सायबी, नहीं कोई दीसे उत्पात ॥
सांभल महाराजा आज कांई लागीहो चिन्ता आपने ॥ टेर ॥ १॥
सहस अठारंहो थांरे सुन्दरी, तेमांहे हूं पटनार ।
अरजी करूंछूं साहिब आपसूं, भाखोनी वात विचार॥सांभल॥ २॥
रंग रागतो दीसेनही, ओर नहीं दीसे विनोद ।
आमण दूमण दीसो अतिघणा, केकोई दीयोरे प्रबोध सांभल ॥३॥
के कोई कामण कीधा आकरा, के कोई देवे कीधो दोस ।
के कोई वैंरी आयो सामुहो, के कोई निजघर रो सोच सांभल ॥४॥

ढाल मूलगी-

सूंस अछे तुझ मुझ गलानी, माखो जिसी तिसी ।
आरतीवन्त उदास थईने, मततू जाय धसी ॥ थारा ॥ २ ॥

रावण भाखे सुण मंन्दोदरी, चित्तमें आण चुभी ।
सीता सूरति भालमलीए हैया मांही खुभी ॥ थारा ३ ॥

सवैया-३१ सा-रावण उवांच

भ्रकुटी तो भलीकवांन नेण तो समारेबांण,
त्रिया तीनलोकमें घडी न घड़ानी है ॥
दाड़िम के दर्स जैसे रसनासे जपतराम,
अधरनकी ललीसो प्रवलीतो पुरानी है ॥
कण्ठनो अतिही झीण वासकसी वनीवीन,
मस्तकमें मोतिन की मांगही भरानी है ।
रावण' कहै मंन्दोदरी' वातमें अनोखी करी,
रघुनाथजी की रानीसो जानकी हर आनी है ॥ १ ॥

(मन्दोदरी)

अरे ! कन्त कुबुद्धि कौन पे सिखायो तो कूं,
एसी कुमति करी तूं करन कुलहान की ।
रघुपति ईश जगदीश बीच जान्यो नहीं,
ताते वैर करी तूं तो विगाडी है लड़कान की ॥
जनकजी की जाया सोतो जोगमाया रूप,
सतीको हरलायो निपट करी है नादान की ।
रावणकी रानी सेणी मण्डोदरी मुख बोले बानी,
पिया जानकी न आनीए निसानी घर जानकी ॥

ढाल मूलगी

घृ मूं छूं दिन रात घणेरो, न मकूं समझ करी ।
जो तूं मुझने चाहै देवी, मेलो प्रीति खरी ॥ थारा ॥ ४ ॥

ढाल चेपक मूलगी

एड़ीसे रीस चड़ी चौटी, करूं किम वात आ खोटी, महारानी बाजूं में म्होटी । पतिव्रत पण को नीभावो, रावण कहै सीता पे जावो ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ७० ॥

ढाल मूलगी

प्रियनी पीड़ाए पीड़ाणी, तबही ऊठी धसी।
देव रमण उद्याने देवी, आवी एक ससी[१] ॥ थारा ॥ ५ ॥
हूं मण्दोदरी छूंरे शुभोदरी, महोटे नाम चड़ी।
'रावण' रानीं मांहीं बखानी, वनिता मांहैं वड़ी ॥ थारा ॥ ६ ॥
भोली क्यूं भरमाणी छे तूं, रावण साथे रमी।
मानस भवनो लाहो लीजे, हूं छूं दासी समी ॥ थारा ॥ ७ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज—चौड़ारी

सीयाजी सूं मिलन मण्दोदरी राणी आई, सङ्ग सहेली लाई। रिम झिम करती आई बागमें, नवलख तारों की ज्योतिने छिपाई॥१॥
किणोरे घरजाई ऊपनी, किणां घर परणाई।
के थारो प्रीतम तुझने छोड़ो, इहांपर नारी तूं कीयूं आई ॥ २ ॥
जनकजीरे घर जाई ऊपनी, दशरथ घर परणाई।
कपट करी तुझ पियुड़ो लायो, तुझने रण्डापो राणी देवन आई ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी—

सीता तूं धन्य तूं धन्य थारे, माथे अधिक रती।
राजा रावण रे चित्त आई, मेली अवर छती ॥ थारा ॥ ८ ॥
भूचर राम तपस्वी तेतो, सेवक मात्र सही।
ओ पति तजी ए पति जो पामे, कर्म वत्तीरे कही ॥ थारा ॥ ९ ॥
मन खेचोने मौन करी थी, नीची सही न रही।
तूं तो सतियों मांही सयाणी, एती हीन लहीं ॥ थारा ॥ १० ॥
किहां जम्बुक किहां सिंह सनूरो, गरूड किहां रे अहीं।
किहां मुझ पति किहां तुझ पति लम्पट, लाजत नहींरे नहीं ॥११॥
तूं नारी धन्य धन्य तुझ ठाकुर, सरखी जोड़ मिली।
पति लम्पट घर निर्लज रानी, दूती मांही भली ॥ थारा ॥ १२ ॥
थारो मुंडो नवि देखवूं, तुझ सूं बात किसी।

१ एक श्वाससां।

अलगी जा आंखों आगे थी, मयली जेम मसी ॥ थारा ॥ १३ ॥
एटले 'रावण' चाली आयो, 'सीता' धमण धमी ।
शीतल वचनां सूं समझावे, आपे उपशमी ॥ थारा ॥ १४ ॥
मन्दोदरी राणी तुझ आगे किंकर मांहै गणी ।
हूं तुम दास सरीसो केतो, भाखूं अवर भणी ॥ थारा ॥ १५ ॥
नजर निहालो उत्तर वालो, टालो घात घणी ।
पालो दोड्यां होंस नवि पूगे, ओ असवार तणी ॥ थारा ॥ १६ ॥
होई अपूठी सीता बोले, सांभल लंक धणी ।
काल दृष्टि सूं हूं देखूं छूं, जावर टाली अणी ॥ थारा ॥ १७ ॥
धिक् धिक् ए तुझ आशा माथे, थारी कौण वणी ।
जीवित 'राम' 'लक्ष्मण' हूं छू, अहि माथे रे मणी ॥ थारा ॥१८॥
वारम्वार वचन आक्रोशे, न त्यजे राय रली ।
हांक लीयोरे हरायो होवे, श्वान न जाये टलो ॥ थारा ॥ १९ ॥
सीता की आरती तन अधि की, न शक्यो सूर्य खमी ।
आथमियो अलगो होवाने, व्यापी आण तमी ॥ थारा ॥ २० ॥
रावण ने ऊपजीये अधिको, कुमति तणीरे मती ।
उपसर्ग करावे अधिका, सीदावे रे सती ॥ थारा ॥ २१ ॥
फेहकार करतां अति फेरूं, घू घू घूक करे ।
वृक[1] विचित्र परे कुदन्ता, नीसत नरे रे डरे ॥ थार ॥ २२ ॥
पूछया स्फोट सूं व्याघ्र[2] विशेषे, ओतू[3] अन्योन्य लड़े ।
फूंफूता फणी[4] करता परगट, मांहो मांही अडे ॥ थारा ॥ २३ ॥
भूत पिशाच वैताल विदीता, हट सूं हास्य हसे ।
डाकणी शाकणी महली देवी, काती हाथ घसे ॥ थारा ॥ २४ ॥
उललंता दूर ललित अति, यम जेम कायधरे ।
'रावण' एह विकूर्वण करिने, आगे आणी सरे ॥ थारा ॥ २५ ॥
परमेष्ठी पंचे मन ध्याती, सीता खेत खरे ।

१ वरु (वृक) । २ बाघ (सिंह) । ३ मिनका । ४ सर्प ।

के जिन के पियू करती, 'रावण' सामो पग न भरे ॥ थारा ॥२६॥
रावण तो पच्चक्खाण न भांगे, 'सीता' सत्य न चले ।
पाकोंने नहीं भूत पराभव, काचां ने रे छले ॥ थारा ॥ २७ ॥
ढाल भली ए पच्चवीशमी, धन्य जे टेक ग्रहे ।
'केशराज' ग्रहीतो साची, सीता ज्यूं नीर वहे ॥ थारा ॥ २८ ॥

दोहा (मालवी गौड़ी रागे)

विभीषण निशिनीचरी, निसुणी लोकां मांहे ।
सीता पासे आवियो, करण दिलासा प्राहे ॥ १ ॥
सहोदर समझावग, वात सुणावे वीर ।
छे परनारी पराङ्मुख, साहसवन्त सधीर ॥ २ ॥
बाईजी तुम कौण छे, किहांथी आव्या चाली ।
कौण तुमे आण्या इहां, भाखो शङ्का टाली ॥ ३ ॥
घूंघट खेंची अधोमुखी, जाणी पुरुष प्रवीण ।
सत्यवती साची सती, वाणी वदे अदीन ॥ ४ ॥

ढाल छत्तीशवीं तर्ज-एक दिवस रुकमण हरि साथे ॥

'सीता' ताम निशंक पणे रे, भाखे चारु वाणी रे ।
'विभीषण' कुलकेरो भूषण, निसुणे अमृत जाणी रे ॥ सीता ॥१॥
'जनक' पिता 'भामण्डल' भाई, राम-त्रिया हूं वखाणी रे ।
'दशरथ' नी कुल वहु वदिती, सतियों में अधिकानी रे ॥ २ ॥
राम नरेश्वर 'लक्ष्मण' देवर, त्रीजी तो हूं राणी रे ।
दण्डकारण्य मांहे आवी, वास तणी स्थिती ठाणी रे ॥सीता ॥३॥
'सूर्यहास' असी तरु-डाले, देख्यो अधिको पाणी रे ।
'लक्ष्मण' जी लीलाए लीधो, ज्योती घणी प्रगटाणी रे ॥ ४ ॥
करण परीक्षा वेगे वाही, वंशजाल कपाणो रे ।
शम्बुकनो तब शिर छेदाणो, मनमें अति पस्ताणो रे ॥सीता ५॥
खांडो देखी राघव भाखे, ते न करी मति शाणीरे ।
विद्या साधन विन अपराधे, मार्यो ते ए प्राणी रे ॥ सीता ॥ ६ ॥
पाछे पूजा भोजन पाणी, आणीने चमकाणी रे ।

धड़ मस्तक दो जूदा दीठा, माताजी अकुलाणी रे ॥ सीता ॥ ७ ॥
पग अनुसारे चाली आवी, राघव सूं रींझाणी रे ।
लम्पटनी लालच नवि पूगी, ताम घणूं खींजाणी रे ॥ सीता ॥८॥
'खर' 'दूषण' त्रिशिर लेई आवी, आग घीथी सिंचाणी रे ।
सिंहनाद संकेत कियोंथी, लक्ष्मण सूं मण्डाणी रे ॥ सीता ॥ ९ ॥
लंका जई 'लंकपति' आण्यो, बात कही अतिताणी रे ।
सिंह नादनो भेद लगावी एहूं ईहां आणीरे ॥ सीता ॥ १० ॥
ए दश मस्तक कापेवाने, हूं तो काती कहाणी रे ।
लंका नगरी बालेवाने, हुं बल बलती छाणी रे ॥ सीता ॥ ११ ॥
तेज प्रताप पराक्रम पीलण, हूं घर मांडी घाणो रे ।
पगे१ आवी छू रावण केरे, एकान्ते दुःख स्वाणीरे ॥ सीता ॥१२॥
श्रवणे सुणे पण रिस न आणे, रागीनी सहिनाणी रे ।
आगे२ सतेजी छे अति अधिकी, जल आगे उल्हाणीरे ॥ सीता ॥१३॥
एम सुणी लघु बन्धव जम्पे, भाई मति भरमाणी रे ।
एको बलती गाडर घर में, घाले कौण अज्ञानी रे ॥ सीता ॥१४॥
परनारी छे काली रे नागिणी, के विषवेली समानी रे ।
जालव तांई जबतब जोवे, किहां ही नहीं ताणी रे ॥ सीता ॥१५॥
संपद तरुनी एह कुहाड़ी, आपद नी नीसाणी रे ।
श्राप सतीनो छे दुःखदाई, मति दीये ए रीसाणी रे ॥सीता ॥१६॥
लाख कहूं के कोड़ी कहूं तुम, ए तो वस्तु वीराणी रे ।
आज कल दिन चारां मांही, एतो वात दिखाणी रे ॥ सीतां ॥१७॥
हूं म्हारो ओलम्भो टालू, राखों कीर्ति पुराणी रे ।
लोक कहैशे कोई न हुतो, 'रावण' आगे वाणो३ रे ॥ सीता १८॥
'राम' सु 'लक्ष्मण' दोई बलीया, अनम्याने ही नमाणी रे ।
सीता ने हूं देई आवूं, जेम रहै प्रीत थपाणी रे ॥ सीता ॥ १९ ॥
ढाल भली ए छत्रीशमीं, राये एक न मानी रे ।

---

१ पनोती । २ आगे-आनी ए तेज घणूं छे पण ते जल आगे-वडे ओलाय छे । ३ वाणीयो, वणिक ।

'केशराज' ऋषि रावण केरी, वेला आवी जणाणी रे ॥ सीता ॥२०॥

दोहा (धन्या श्री रागे)

रावण डोई रातड़ो, वद विभीषण वीर ।
ग्रही वस्तु किम मेलिये, जब लग रहै शरीर ॥ १ ॥
'राम' सु 'लक्ष्मण' भोलड़ा, वन मांही है वास ।
साहण वाहण को नहीं, आप ही फरे उदास ॥ २ ॥
साहण वाहण माहरे, विद्यानो अति जोर ।
ए सूं करसे वापड़ा, कांई मचावे शोर ॥ ३ ॥
आज नहीं तो काल हीं, काल नहीं तो मास ।
मास नहीं तो वरस में, आपही करसे आस ॥ ४ ॥
एटले मांही आसना, ओ आवे से चाली ।
छलबल कोई केलवी, देस्यूं पग्हा टाली ॥ ५ ॥

ढाल सत्तीशमी तर्ज—जगत गुरु त्रशला नन्दन वीर

पहीली थी में सांभली रे, राम–त्रियाथी घात ।
होसे रावणनी सही रे, आण मिलीछे वात ॥
विभीषण वात विचारे एह, सत्य वचन ज्ञानो तणां रे,
कोई नहीं सन्देह ॥ विभीषण ॥ टेर ॥ १ ॥
मैंतो कीधो थो घणो रे, आछो ही उपकर्म ।
दशरथ जीवतो ऊगर्यो रे, धीरो छे जगधर्म ॥ विभीषण ॥ २ ॥
भावीनो बल छे घणो रे, न टले कोडि प्रकार ।
सीताने तजतां थकां रे, पलशे लोकान्यार ॥ विभीषण ॥ ३ ॥
सुणतो हीरे सुणे नहीं रे, विभीषण नो वाच ।
देखी तो देखे नहीं रे, कामी एतो साच ॥ विभीषण ॥ ४ ॥
'पुष्पक' नाम विमानमें रे, 'सीता 'लेई आप ।
क्रीडा करवा चालियोरे, टाल्यो नटले पाप ॥ विभीषण ॥ ५ ॥
देखावे अतिरूयड़ारे, रत्नमयी गिरि राज ।
नन्दन वननी ओपमारे, देखावे वन साज ॥ विभीषण ॥ ६ ॥
तटनी तट करी सोहती रे, हंसां केरा ख्याल ।

केलीहरा[1] कामी तणारे, देखावे सुविशाल ॥ विभीषण ॥ ७ ॥
मन्दिर विविध प्रकारनारे, सेज तणी वर शोभ।
भद्रे! भद्रपणूं भजोरे, आणी विषय सुख लोभ ॥ विभीषण ॥ ८ ॥
लम्पट ललचावे घणीरे, केलवणी ने कोड़।
करी देखावे अति घणीरे, खेत खरे नवि खोड़ ॥ विभीषण ॥ ९ ॥
हंस तजी ने हंसलीरे, कदही न वंछे काग।
राम तजी सीतातणोरे, नहीं अवरां सू राग ॥ विभीषण ॥ १० ॥
ताम अपूठो आवीयोरे, वृक्ष अशो के हेठ।
मूकी रावण मानिनीरे, ए पण काढ़ी वेठ ॥ विभीषण ॥ ११ ॥
विभीषण चित्त चिन्तवेरे, होई रह्यो मयमंत।
शीखन कोई सरदहेरे, आयो दीखे अन्त ॥ विभीषण ॥ १२ ॥
मंत्रीश्वर बोलावियारे, विभीषण ते वार।
करे मिसलत सहु मिलीरे उपज्यो ए अविचार ॥ विभीषण ॥१३॥
मोहतणो मद मातीयोरे, कोई न माने कार।
हुओ हरायो हाथियोरे, केम करीजे सार ॥ विभीषण ॥ १४ ॥
आयो दीसे आसनोरे, रावण काल विनाश।
कोई उपकर्म करीरे, कीजे लील विलास ॥ विभीषण ॥ १५ ॥
मति ऊपावे मनथकीरे ते माटे मंत्रीश।
जोरन चाले माहरोरे, कांन न मांडे ईश ॥ विभीषण ॥ १६ ॥
मिथ्या मतिनो माहियारे जिन मतनो उपदेश।
माने नहीं प्रभु आपणूंरे, कीजे कांई कलेश ॥ विभीषण ॥ १७ ॥
'हनुमन्त' ने कपि राजियारे, आदि मिल्या नृप आय।
धर्म पखे पखिया थयारे, मेल्यो रावण राय ॥ विभीषण ॥ १८ ॥
राम अने लक्ष्मण थकीरे, रावण नो संहार।
ज्ञानी वचन छे सहीरे, चूक न पड़े लिगार ॥ विभिषण ॥ १९ ॥

१ केलीगृह—क्रीड़ा करने का घर।

जितो पहीलो सोचियोरे, तो कांई सुख थाय ।
मन्दिर लागे बारथीरे, काढ्यां कांईयन जाय ॥ विभी० ॥ २० ॥
भयतो ऊपजसे सहीरे, सांसो नहीं है लगार ।
जेहनी आणो कामनीरे, ते तो आवण हार ॥ विभीषण ॥ २१ ॥
जे नूतरीयो प्राहुणोरे, तेतो जोवे वाट ।
खोटूं नाणूं आपनोंरे, कीया कांई उचाट ॥ विभीषण ॥ २२ ॥
लङ्का नगरी अति सजीरे, ढीलन कीधी रंच ।
अन्न पाण लेई घणांरे, मेल्यो बहुलो संच ॥ विभीषण ॥ २३ ॥
कोट ओटना कांगूरारे, पोल अने प्राकार ।
सघलाही समरावियारे, गोला यंत्र अपार ॥ विभीषण ॥ २४ ॥

धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज–भजो तुम सार मंत्र नवकार

करो कोई लाखें चतुराई, टले नहीं होनहार भाई ॥ टेर ॥
मंत्री कहै महारायजी, फिर इक करो उपाय ।
दुस्मण जोर कदे नहीं लागे, लङ्का पतो न पाय ॥
आय के पाछा फिर जाई ॥ करो कोई ॥ १ ॥
यंत्र बड़ो आसालीका, लङ्कागढ के बार ।
जो त्रिकुट निरभे करो, कबहुन होवे हार ॥
बैरी कोई आय सके नांई ॥ करो कोई ॥ २ ॥
यंत्र कीयो गढ पे खड़ो, निर्भय रहण काज ।
वज्र मुखे चौकी रह्यो, सजी आपणो साज ॥
स्वामी को कांम करण तांई ॥ करो कांई ॥ ३ ॥
दुर्जय कोट असालि का, हरगिज टूटे नांय ।
होणहार जो पुरुषहै, भांजेला छिन मांय ।
उद्यमतो चले नहीं काई ॥ करो ॥ ४ ॥

ढाल मूलगी

विद्यातो आसालीकारे, तेहनो प्रबर प्राकार ।
देवही पाछा ऊसरेरे, लंघन्तां दुखकार ॥ विभीषण ॥ २५ ॥

इणविध लंकाने सजी रे, ढीलीन कीधी लीगार ।
अथभवियण तुम्है सांभलो रे, राघवनो अधिकार ॥ विभीषण २६ ॥
(आगाड़ी के पद्य 'भूल्यो मन भंवरा' व 'कन्त तम्बाखूपरहरो'
इस तर्ज मे भी गा सकते है)
राघव विरह विजोगीया रे आरति वन्त उदास ।
अन्न पान भावे नहींरे, लम्बा लीये निस्सास ॥ राघव विरह ॥ २७॥
लक्ष्मण साथे बोलीयो रे, ढील पड़े छे एह ।
आशा दिन दश वीशनी रे, पछीत्यजसे देह ॥ विभीषण ॥ २८ ॥
दुःखियो अधिक ऊतावलो रे, सुखियो सुसतो होई ।
तृषियो जावे सरोवरे रे, सामो न आवे सोई ॥ विभीषण ॥ २९ ॥
ढीलो वानर भाजियोरे, सुखमांही दिन जात ।
पर दुःखे दुःखियो नहीं रे, वात वडी नविथात ॥विभी॥ ३० ॥
एह सुणीने ऊठियो रे, हाथे ग्रही शर चाप ।
धम धमतो अति चालियो रे, होठ डसन्तो आप॥विभी॥ ३१ ॥
कम्पावे धरती घणी रे, कम्पावे गिरि शीश ।
वृक्ष ऊखेड़ी नांखतो रे, कोप्यो विश्वावीश ॥ विभीषण ॥ ३२ ॥
आयो चाली दरबारमें रे, खल भलियो सुग्रीव ।
धूजन्तो पग लागीयो रे, सारे सेव अतीव ॥ विभीषण ॥ ३३ ॥
ओलम्भोदिये अति आकरोरे, शुद्ध नहीं तुझ मांही ।
तूं घरमें सुख भोगवे रे, प्रभु तरु सेवे प्राही ॥ विभीषण ॥ ३४ ॥
वासर जावे वरससो रे, छगुणी रात्री गिणाय ।
तुझमें वीतक वीतियोरे, तोहीन समझे काय ॥विभीषण॥ ३५ ॥
गुंबड फूटां वैधने रे, सम्भारे नवि कोय ।
आरति तो अति आंधली रे, आप थकी तूं जोय ॥विभी॥ ३६ ॥
मेनत ताहरी ए भणीरे, खेचर दोई प्रकार ।
भूमि तणाछो भौमीयारे, सघले तुम पेसार ॥ विभीषण ॥ ३७ ॥
वाचा पालो आपणी रे, काम करो धसिधाय ।
नहीं तो 'साहसगति' परे रे, देऊं परभव पहूंचाय ॥विभी॥३८॥

देव दयाल दया करोरे, हूंतो छूं तुम दास ।
एम कहीने आवीयो रे, श्री 'राघवजी' पास ॥ विभीषण ॥३९॥

ढाल मूलगी क्षेपक

कपिपति चाले है आगे, लक्ष्मणजी पूठही लागे, लोक कहै मिलीयो ओ सागे। वेगारी जिम टोली लायो, प्रभुके पाये लगवायो ॥ सत्यव्रत पालो ॥ ७१ ॥

ढाल मूलगी

पगे लागीने वीनवे रे, वेगे काम कराऊं ।
खूंस[१] कराऊं चामनी रे, ऊरण तोहिन थाऊं ॥ विभीषण ॥४०॥
कामीने तो कामनी रे, कहिये प्राण समान ।
ओवालीने आपतां रे, आप्या तुम मुझ प्राण ॥ विभीषण ॥४१॥
जीतो हूं छूं जीवतो रे, ज्यों तुम कीधो काज ।
शोध करूं सीता तणो रे, तो साचो मुझ नाम ॥विभीषण ॥४२॥

(मूलगी तर्ज में दूसरी तर्ज गानी हो तो ' हांरे कायथड़ा '.की भी गा सकते हैं)

हांरेक ललना महिपति मनमें चिन्तवे, करनो क्रोड़ उपायो रे,
ललना महिपति मन में चिन्तवे ॥ टेर ॥ (यह है)
भट मोकल्या सामटारे, शूरा मांहे शूर ।
'सीता' शोधन चालीयारे, जेम पाणी नूं पूर ॥ विभीषण ॥४३॥
गिरि नदीने सायरु रे, दीपादिक सहु ठाम ।
पुर पुर पाटण सोधिया रे, नगर नगर ने गाम ॥विभीषण॥४४॥
हरण सुणी सीता तणो रे, 'भामण्डल' आवन्त ।
भाई तो भगिनी तणो रे, गाढो दुःख पावन्त ॥विभीषण॥ ४५ ॥
वीर 'वीराध' पधारिया रे, लेई निज परीवार ।
सेवक सेवा साचवे रे, माने अति उपकार ॥ विभीषण ॥ ४६ ॥
कपिपति तो डीले चढ्यो रे, ' कम्बूद्वीप ' पहूंत ।
'रत्नजटी' तस देखवे रे, गाढो दुःख पावन्त ॥ विभीषण ॥ ४७ ॥

---

[१] जूती जोड़ो ।

दशकंधर मुझ मारवारे, मोकलियो कपीराज ।
मुझने मारी आयसे रे, ऊपज्यो अधिक अकाज ॥ विभी ॥ ४८ ॥
कपिराजा तब बोलीयोरे, गाढो होई गर्म ।
तू मुझ देखीन ऊठियोरे, विनय बड़ो जिन धर्म ॥ विभी ॥ ४९ ॥
थाक चढे पग चालवेरे, सो तो बैसे विमान ।
आप इच्छाए करोरे, झूठो कांई गुमान ॥ विभी ॥ ५०
सो भाखे स्वामी सुणोरे, इसो नहीं अभिमान ।
कांई करे नर पाथरोरे, कारण एछे आन ॥ विभी ॥ ५१ ॥
'रावण' सीता अपहरीरे, मैं मांड्यो संग्राम ।
विद्या सघली अपहरीरे पड़ियो होई निकाम१ ॥ विभी ॥ ५२ ॥
पंख विहुणो पंखियोरे, ऊडी नसके जेम ।
विद्या विन विद्या धरू रे, जाणेवो प्रभु एम ॥ विभीषण ॥ ५३ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी

कपिपति सुणके सुखपाया, हुवा अब मेरे मन चाया, खबर तू ठीक दीवी भाया, बैठाई रामपे लाया । अवर सहु विद्याधर आया, रामके चरणे शिर नाया ॥ सत्य० ॥ ७२ ॥

ढाल मूलगी

राम समीपे आणीयोरे, मांडी कहै विरतन्त ।
रावण सीता ने लेई रे, नाठो जाय तुरन्त ॥ विभीषण ॥ ५४ ॥
सीता जावे रोवती रे, करती अधिक विलाप ।
राम राम श्री रामनोरे, एकज जिहां जाप ॥ विभीषण ॥ ५५ ॥
लक्ष्मण लक्षण वंतनूरे, अने भामण्डल भ्रात ।
नाम जपन्ती जायतीरे, में निसुणी ए वात ॥ विभीषण ॥ ५६ ॥

क्षेपक चन्द्रायण—

हूं निज आपण काज गयोथो गगनमें, सीताकरे विलाप रामकी लगन में । तबमें सुणी आवाज दशानन पे गयो, रेरे रावण राय मान मेरो कयो ॥ १ ॥ रामको लक्ष्मण वीर अति रणधीर है,

१ उद्योग विना ।

सबल बली झुंझार सबन को पीर है ।। रावण करडे वयण बहु मुखते कह्यो, नहीं मानी तब बात हाथमें असि ग्रह्यो ।। दोऊं लड्या तिणवार बहुत बल जोर सूं, वेतो अति बलवन्त प्राक्रम कोरसूं ।२।

ढाल मूलगी

हूं हूवो तब वाहरू[1] रे, करतो अति आक्रोश ।
विद्या सघली अपहरीरे, ' रावण ' कीधो रोष ।। विभीषण।।५७।।
समाचार सुहामणारे. सीताजीना पामि ।
परम महासुख ऊपन्योरे, जाणे त्रिभुवन स्वामि ।।विभीषण।।५८।।
रत्नजटी विद्याधरूरे. कण्ठ लगाई लीध ।
तू म्हारे वालेसरूरे, खबर भली ते दीध ।। विभीषण ।। ५९ ।।
जिम जिम पूछे वातड़ीरे, तिम तिम ऊपजे राग ।
वारम्वार विशेषिएरे. रागीनूं ए भाग ।। विभीषण ।। ६० ।।
समाचार सगा तणारे, सांभलतां सन्तोष ।
मिलवामें ओछो नहींरे, प्रेमतणो अति पोष ।। विभीषण ।। ६१ ।।
दोहा—सब सन्नाटा छागया. सुन रावण का नाम ।
सीता पाछी आणवी, करड़ो दीसे काम ।। १ ।।

(इसी ही मूलगी तर्ज के अगाड़ी के पद्य " ईडर आंबा आंबलीरे " इस तर्ज में भी गाये जा सकते हैं)

राजेश्वर लङ्का कितनी दूर ।। टेर ।। (इस मुताबिक है)
पूछे प्रभु सुग्रीवनेरे, लंका कितनी दूर ।
आलसियां अलगी घणीरे, उद्यमवन्त हजूर ।। विभीषण ।। ६२ ।।
लंकानूं स्यूं पूछवोरे, पूछो रावण तेज ।
आज लगे अधिको अछेरे, सूरज तेज सहेज ।। विभीषण ।। ६३ ।।

ढाल च्नेपक तर्ज खड़को—

सुणो श्री 'राम' लंकागढ छे जिहां, वदे विद्याधरां एम वाणी । 'रावण' रायको तेज जग छाइयो, सुर नर असुर सब वात जाणी ।। सु० ।। १ ।। त्रिकूट अति कूंट अखूट जलनिधि भर्यो, चिऊं

1 मदद करने वाला

दिशां राक्षसां छाय लीधो । नाम लेतां थकां प्राण सांसे पड़े, जाणे यमराण आवास कीधो ॥ सु० ॥ २ ॥ जगत जाहर घणों तेज रावण तणो, देव दानव पिण शंक आणे । तेहना घर तणी वात दुर्लभ घणी. अधिक डरावणी सर्व जाणे ॥ सु० ॥ ३ ॥ विषम गढ नालि गोला विषम भूमिका. वलि विषम चऊं दिसे समुद्र खाई । अभङ्ग भट अतुलबली कटक अक्षौहणी, प्रथम थी कुणशके तेथी जाई ॥ सु० ॥ ४ ॥ वीशभुज धारणो शत्रु संहारणो, शीस दश शोभित अति ही रूड़ो । बड़ा बड़ा योध अति क्रोध-कारी जिहां, स्वामी आगे कहां नहीं एक कूड़ो ॥ सु० ॥ ५ ॥ नाम लंका तणो अधिक डरावणो, जावणो आवणो केम थावे । स्वामी सन्तोष करो केण मुझ उरधरो. जीव ए सुजश दो रहावे ॥ सु० ॥ ६ ॥ मांयरे शोष इक दोय भुज देह में. सहश्रबाहू नृप आप हार्यो । इन्द्रने पकड़ दीयो कठ पिंजरे, वरुण कुवेर नो मान मार्यो ॥ सु० ॥ ७ ॥ लंक की शंक मनमांही अति मायरे, तेहसूं और अब वात कीजे । आप तो राम अलवेशर राजवी, माहरे आश दिन दोयजीजे ॥ सु० ॥ ८ ॥

(अन्य ग्रन्थकार रावण की आज्ञा में इतनी ऋद्धि का कथन करते हैं)

सवैया

सूर्य रसोई तपे पवन अंगन बुहारे,
  वीहड़[1] करे दासीपणो चन्द्रमा करे प्रकारे (शे)
'विश्वानर' धोवे वस्त्र झलाझल नैजा झलके ।
  नवग्रह बंधीया खाट पाय पग अति ही खलके ॥
अंगन अहि नांखे छांटा जम भैसो नित्य पाणी भरे ।
  विद्याधर कहै रामने रावण सेथी कुण अरे ॥ १ ॥
असी लाख गज बंध, कोड दशतुरी तुखारा ।
  सोले सहंस सामन्त, पायदल अक्ष्य अठारा ॥
क्षत्री लाख पचास, बावनशत पनरें राजा ।

१ विधाता ।

सबकोऊमाने शंक सुनत अमरापुरी बाजा ॥
बडे बडे वीर पांवे पडे चालतो सूर्य पोते डरं ।
विद्याधर कहे रायजी रावण होड कहो कुण करे ॥ २ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

राम कहै कपि पति ही सुणीये, लम्पटका गुण तो नहीं थुणीये, बात कहो किण विध ही वणीये जोर कर सीताने लावां, जगतमें जश अधिकों पावां ॥ सत्य ॥ ७३ ॥

ढाल मूलगी—

राम .कहै सो जाणीयोरे, तेज पणुं संभार ।
कायर कपट करी घणूं रे, लेई गयू मुझ नार ॥ विभी० ॥ ६४ ॥
लक्ष्मण निजरां ठाहरे रे, तो रायां राजान ।
देखें दिन दो चार में रे ए घोड़ा ए मेदान ॥ विभी० ॥ ६५ ॥
लक्ष्मण भाखे खेचरूरे, रावण तो छे श्वान ।
सूना घरमें पेसियोरे, फिट् एहनुं अभिमान ॥ विभी० ॥ ६६ ॥
क्षत्री ने छल नाकयोरे, क्षत्रीनूं बल खेत ।
सोई साचूं मानवूं रे, देखोजे निज नेत ॥ विभी० ॥ ६७ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

लक्ष्मन तब मारी है फाल, 'रावण' वो कायर कंगाल, नादको करियो उन जाल। प्रभु छतां सीता नहीं लीधी, बात या अयुक्ती कीधी ॥ सत्य ॥ ७४ ॥ मारतसु 'जानकी' लेसां, सुभटांकू जबाब ही देसां, फते श्री राम की कहसां। जाम्बवान करता है अरजी, मानजो है प्रभु की मरजी ॥ सत्य ॥ ७५ ॥

'मुनि रामचन्दजी कृत क्षेपक तर्ज सिलोको—

सुनजो महाराजा वचन हमारो, भलां चावां छां राज तुम्हारो ।
वेना तट पासे म्होटो इक ग्राम, विनयदत्त व्योपारी वसे तिण ठाम ॥
तिण रे तो घर में सुन्दरी नारीं, रूप अनूपम झाके झमाली ।
व्योपार मांड्यो पछी पति साथे, दुगणा चोगणा वधे हाथोजी हाथे ॥
वडें सज्जनने ते पिण नहीं माने, आवे जावे ने खावेजी छाने ।

एम करतां तो वीता बहु मासे, पूंजी तो खबर ही चौरांरे पासे ॥
बोले पल्लीपती सुणजो प्रकाशां, देसां मिजमानी दाम चुकासां ।
करने विभूषा आजो नारीने लीधां, तिमही पालन्तां हुवो छे वीदां।४।
आव्यो पल्लीमें चौरां विचारयो, लीधी नारीने उणनेजी मार्यो ।
एणी तो परे वादन कीजे, एडा माटे तो केम मरीजे ॥ ५ ॥

दोहा–पल्ली समाणी लंक है, पल्लीपति रावण जाण ।
नारी समाणी सीत है, राज हो वणिक समान ॥ १ ॥
विद्याधर कन्या बहु, अपच्छरने उणीहार ।
एक एकथी आगली, परणो केई हजार ॥ २ ॥
रावण लोक डरावणो, लड़तां नहीं रहै लाज ।
इण कारण सीता तणी, गई करो महाराज ॥ ३ ॥
लक्ष्मण सुनके कोपियो, बोले मूंछ मरोड़ ।
लावां वेगी सीतने, दशमस्तक ने तोड़ ॥ ४ ॥

श्री राम मुनि कृत चेपक तर्ज–सिलोका—

सुणतां तो लिछमन सिंहज्यूं गूज्यों, विद्याधरां को हीयोजी धूज्यों ।
सुणजो विद्याधर वात हमारी, सुनने तो चुपका जोवे इतकारी ॥१॥
नगर कुसुमपुर धन्नो व्योपारी, जिणरा घर में जमनाछे नारी ।
पांच पुत्रों में नहीं एक कमाऊं, तनमां तो रोग परदेशां जाऊं ।२।
अटवीमें मिलियो पुरुष इक सिद्धो, किरपाकरीने लोह कड़ो दीधो ।
इणसूं तो रोग मोटका जावे, लेई कड़ोंने रोग गमावे ॥ ३ ॥
चलियो तो आयो निजपुर वार, मूई नृप कन्या हुवो हाहाकार ।
नागनो विष गयो कड़ानो करणी. नृप हुकमसूं कन्या जो परणी।४।
मात पितासूं मिलीयो हुल्लासे, भोगवे सुख लीला वीलासे ।
एक दिन मज्जन मिस गङ्गातट आयो. वड़ विकट तिहां पांनोंजी छायो
॥ ५ ॥ तिणमां तो रहै गोंहज लांठी, कड़ो अम्बर१ में लेईने नांठी ।
वड़तां तो दीठी आतम सेण, शूरा सुभट नहीं कढ़ोजी लेण ॥ ६ ॥

१ वस्त्र ।

आतम सेणतो कीधो ऊपायो, नांखी लकड़ने वड़लो फूंकायो ।
गोह मारीने कडोजी लीधो, आतम सेणरो कारज सीद्धो ॥ ७ ॥
मनमें हर्ष्यो जिम अमृत पीधो एह सिलोको राम मुनि कीधो॥८॥
दोहा–गोह रावण सीताकड़ो, आतम सेण सूं राम ।
लंकागढ़–वड़ चूरने, लेवां रत्न बहु दाम ॥ १ ॥
नभचर अति विस्मय भये, सुन लक्ष्मण की बात ।
कही अनूपम तुम कथा, महा सुभट अवदात ॥ २ ॥
भूचर बेऊं अति जोर है, एनी केहने हाथ ।
कोड शिलाकी बात कहो, ज्यूं शंसय मिट जात ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी—

'जाम्बवान' भाखे भलूं रे, ऊपाडे भुजपाण ।
कोटी शिलाने साहसे रे, रावण हन्ता जाण ॥ विभी० ॥ ६८ ॥
साधु वचन में सांभल्यू रे ए अति रूड़ी रीत ।
सहुने शीला ऊपाड़तां रे ऊपजे अति परतीत ॥ विभी० ॥ ६९ ॥
लक्ष्मण भाखे ए भलूं रे, वैमी विमाने देव ।
विद्याधर विद्या बले रे, आई गया तत खेव ॥ विभी० ॥ ७० ॥

ढाल क्षेपक तर्ज जल्लारी—

जोजन लम्बी पहूली एक कहावे हो. सुणजो महाराज ।
क्रोड़ां मुनि तिण ऊपर मोक्ष सिधावे हो राजिन्द ॥ १ ॥
प्रथम हरि तसु शिर पर छत्र करावे हो सुणजो ।

(जीर्ण पत्रसे कोटी शिलाका अधिकार औरभी पाया गयाहै वह निम्नोक्त है)
कोटी शिला के भरतक्षेत्रीय सिन्धु देवी का भवन है । इस शिला पर इतने तीर्थंकरों के पाटनु पाट मोक्ष में गये हैं ॥ इस चौवीसी में शान्तीनाथजी को वतीश पाट और नव क्रोड़ मुनि । और कुन्थुनाथजी के अठावीश पाट और मुनि सात क्रोड़ ॥ अर्हनाथ के चौवीश पाट और मुनि बारे क्रोड़ । मल्लीनाथ के वीश पाट और मुनि छ क्रोड़ मुनिसुव्रत के पचाश पाट और मुनि तीन क्रोड़ ॥ नमीनाथ के बारे पाट और मुनि एक क्रोड़ । यह सर्व अड़तीश क्रोड़, और एक सो ने छासट पाट आदि ऐसे क्रोड़ों मुनि मोक्ष पधारें हैं ॥

दूजो त्रीजो मस्तक कण्ठ लगावे हो ॥ राज० ॥ २ ॥
चौथो छाती पंचम नाभि प्रमाणे हो सुण।
छठो कटि लग सातमो साथल आणे हो ॥ राज० ॥ ३ ॥
आठमो जानू धरती अधर ऊठावे हो। सुन।
नवमो अंगुल चारज ऊंची लावे हो ॥ राज० ॥ ४ ॥
वामे कर सूं शीला ऊंची करता हो सुन।
वाम चरण सूं पाछी धरती में धरता हो ॥ राज० ॥ ५ ॥
पूजि अर्ची बहु विध भक्ति करावे हो सुन।
हरि इण क्षेत्रे साहि शीला ऊठावे हो ॥ राज० ॥ ६ ॥
तत् क्षिण सुरवर जय जय शब्द करावे हो सुन।
पुष्प नी वृष्टी गंधाम्बू वरसावे हो ॥ राज० ॥ ७ ॥

ढाल मूलगी

जेम लताए तेम ए शीलारे, देखाडी ऊपाड़ी।
पुष्प वृष्टि हुई भलीरे, सुजश चढ्यो निलाड़ी ॥ विभीषण ॥ ७१ ॥
भल्ल भल्ल कहे देवतारे, प्रत्ययर पामी जाम।
सहु कोई आणन्दियारे, पाछा आव्या ताम ॥ विभीषण ॥ ७२ ॥
वृद्ध पुरुष परमारथीरे, वात विचारे एक।
पहिलां दूतज मोकलोरे, जाणणहार विवेक ॥ विभीषण ॥ ७३ ॥
वातां में समजावीयोरे, पाछी आपे वाल।
दोई घरे होय वधामणांरे, वाधे नहीं जंजाल ॥ विभीषण ॥७४॥
दूत 'महाबल' आगलोरे, मोकलिये सुप्रमाण।
लंका तो साजी सुणीरे, कीधो अति मण्डाण ॥ विभीषण ॥ ७५ ॥
ढाल भली सेतीशमीरे, कीधो दूतही थाप।
केशराज ऋषिजी कहैरे, जेहनो प्रबल प्रताप ॥ विभीषण ॥ ७६ ॥

दोहा (केदारा रागे)

राक्षसकुल सायर विचे, अमृत ऊपज्यो एक।
विभीषण मति आगलो, जाणे विनय विवेक ॥ १ ॥
दूत धूत जाए धमी, विभीषणने पास।

भयपामी राक्षस तणो, पाछो नावे नास ॥ २ ॥
सीता छोड़ावण तणी, रावण सूं अरदास ।
करसे लघु भाई भली, मानिस ही प्रभु खास ॥ ३ ॥
देवयोगे माने नहीं, पाछी वात विशेष ।
सर्व जणावे आपने, लीधी मानी नरेश ॥ ४ ॥
सुग्रीवे सुमतो कियो, अब लोई सहु साथ ।
हनुमन्त तब बोलावीयो, जाणी अति समाथ ॥ ५ ॥

स्वामी श्री नथमलजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज वीरा लूम्बो झूम्बो होई आईजो

हनुमन्त थने रामजी बुलावे. सीता की खबर मंगावेजी ॥ टेर ॥
कपि पति भामण्डल राया रघुवर ना सेवे पायाजी ॥ हनु० ॥ १ ॥
बलि वीर विराध विराजे, दल बल नो पार न छाजेजी ॥ हनु. ॥ २ ॥
सुग्रीवनो काम समार्यो, प्रभु साहाश गतीने मार्योजी ॥ हनु. ॥३॥
खर त्रीशर दूषण भारी, लक्ष्मणजी लीधा मारीजी ॥ हनु. ॥४॥
फिर क्रोड शिलाने उठाई, है प्रबल बली दो भाईजी ॥ हनु. ॥५॥

सवैया—

कपिपति लिखी पत्ती दूतको बुलाय कहै,
पौंन सुत जाय पास लेख वेग दीजीये ।
कीजीये न वेर करी देर से विगार होत,
आय इत हरिबल आप देख लीजीये ॥
महा बलवन्त अति सुभट अनूप रूप,
लेखनी से लिखूं क्या देखत पतीजीये ।
आज एक काज भारी, रामहूकी लेगो नारी,
लंकपति ज्योंकी खबर जाय लाय दीजीये ॥

ढाल क्षेपक तर्ज—पूर्ववत्

ले पत्रने दूत सिधायो, चलकर हडुमान पे आयोजी ॥ हनु ६॥
फिर वाची पत्र ए चारु, हडुमान ने हर्ष अपारुजी ॥ हनु ॥ ७ ॥
हनुमन्तकी दोनो राणी, इक हर्षी इक विलखाणीजी॥ हनु ॥ ८ ॥
हनुमन्तने दीलासा दीनी, झट चाल्यो ढील न कीनीजी॥ हनु ॥ ९ ॥

किष्किंधा चालो आयो सुग्रीव आनन्द अति पायोजी ।।हनु।।१०।।
वेऊं मिली राम पे आवे, चरणां विच शीष नमावेजी।।हनु।।११।।
दोहा–पगे लागी ऊभोरयो, प्रभुजी केरे प्रासाद।
तुझ सम बीजो को नहीं, तारो जग जश वाद ॥ ६ ॥
दशकंधर लेई गयो, लंका नगरी मांही।
सीता छे तस शुद्धी तो, तुझथी आवे प्राही ।। ७ ॥
हनुमन्त भाखे रामजी, मया करी कपिराय।
ते माटे हूं तेड़ीयो, वानर घणां कहाय ॥ ८ ॥
'गवगवाक्ष' 'शरभ' ज, 'गवय', 'जाम्बवान' 'नल' 'नील'।
'द्विविद' 'गन्धमादन' भला, 'अङ्गद' 'मेद' 'सलील' ।।९।।
इत्यादिक तो छे भला, वानर अति अभिराम।
छेली संख्या पूरणी, मांहै म्हारूं नाम ।। १० ॥
पण हूं कारज एटला, करूं सांभलो राय।
लङ्का राक्षस द्वीपसं, आणूं इहां ऊठाय ॥ ११ ॥

क्षेपक छप्पय छन्द

कहोतो ईन्द्र गिरि चढूं ईन्द्र इन्द्रासन हारूं,
कहोतो पेठ पाताल शेष को भार ऊतारूं।
कहोतो बांह बल करूं देव दानव सब दट्टूं,
कहोतो मारूं खग शीष दश रावण कट्टूं ।।
हनुमान कहत रघुनाथ से राम प्रताप इतनो करूं,
ऊठाय लंक रावण सहित दच्छिन की ऊत्तर धरूं ।। १ ।।
दोहा–रावण लोक डरावणो, ते भाईयों सं बांध।
आणूं प्रभुने आगले, कोईक वेला सांध ।। १२ ।।
कहो तो हणुं कुटुम्बसं, कुल नो करूं निकन्द।
सत्यवती सीता सती, आणूं धरी आणन्द ।। १३ ।।
राम कहै साचो सहु, तारो वचन विचार।
जेम कहूं तूं तेम करे, नहीं सन्देह लगार ।। १४ ।।

एक वार तो जायने, आणो खबर अवार ।
वश्य पड़ी छे पारके, वरते कवण प्रकार ॥ १५ ॥

ढाल अड़तालीशमीं तर्ज दधि सूत जात ही—

कपि रे ! प्रिया साथे कहै. प्राण प्रभु नो तुम पास ।
देह सूं न्यारो रहै रे, मन में थारी आश ॥ कपि ॥ १ ॥
अन्न तो मोय लागत फीको, स्वाद नहीं जलपान ।
सूवतो तो नींद न आवे, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ २ ॥
राम नो मन नां रमे, नां रमे गुण गान ।
हास्य ख्याल विनोद नां गमे, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ३ ॥
योगने साधियां योगियो रे, भजे ज्यूं भगवान ।
काम रागे राचीयांथी, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ४ ॥
हाथियो रे कुंज वनने, अ णीयो राजान ।
जेह सुमरे तेह वन ने, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ५ ॥
स्वैरणी स्वच्छा ए रमती, वंच्छ ही नर आन ।
अधिक तीव्र परिणाम राखे, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ६ ॥
पपैयो धरा पड्यों पाणी. साथ राखे मान ।
मेहना जल साथे मनसा. एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ७ ॥
मूंदडी मुझ हाथ केरी आगे लेई रे धरे ।
जाणी ए अहिनाणो कारे, लहै कुशल खरे ॥ कपि ॥ ८ ॥
आवतां चूड़ामणी रे, आणीजे रे सही ।
जेम ए सहु साच माने, वात सपल कही ॥ कपि ॥ ९ ॥
मुझ वियोगे मरे मति तुं. आई याही पेख ।
लक्ष्मण तो लंक पति करो, शिर छे दीयो ही देख ॥ कपि ॥१०॥
सबल दल बल साज सखरो, सखरहीरे नरेश ।
मिलिया छे मोकलीयो हुं. खबर करवा सुविशेष ॥ कपि ॥११॥

---

१ श्री राम हनुमन्त ने कहै छे के तूं म्हारी प्रीया (सीता) ने आप्रमाणे कहजे (गाथा ११ सूधी) २ व्यभिचारीणी ।

जब लगे हूं फिर न आवूं, तब लगे ए ठाम ।
छोड़वूं नहीं वीनती ए, मानजो श्री राम ॥ कपि ॥ १२ ॥
राम 'लक्ष्मण' चरण प्रणमी, लेई निज परिवार ।
वीर विमाने बैसी चाल्यो, पामी हर्ष अपार ॥ कपि ॥ १३ ॥
वाट जातां गिरी महेन्द्र, पुर माहेन्द्र उदार ।
देखीयो थी रोष ऊपन्यो. आणी ए विचार ॥ कपि ॥ १४ ॥
माय माहरी बे गुन्हा थी, काढी दीधी ताम ।
रीस ए मुझ अछे अधिकी, आजे फेडूं ठाम ॥ कपि ॥ १५ ॥
एम कहतां तूर रणना, लीया राय बजाय ।
शब्द सुणी ब्रह्माण्ड फाटे, नगर नाठो जाय ॥ कपि ॥ १६ ॥

दोहा क्षेपक—

दूत भेजीयो नांनाजी ने मांने म्हारी आन ।
नहीं तर तब रहसी नहीं, थोड़ीसी भी शान ॥ १ ॥

१ क्षेपय तर्ज राधेश्याम—

सुन दूत वचन ज्यों भूत लगा, त्यों 'महेन्द्र' राय रीसाया है ।
काला मुख कर मार जूत शर, दूत भणी निकलाया है ॥
बस कह देना तेरे मालिक को, मैं फौरन ही आ जाता हूं ॥
मुझ को आन मनाने का मैं उसको मजा चखता हूं ।
मी पुत्रों को साथ वीर वे दल बल ले तैयार हुवे ।
कायर नर को छोड़ और सब वीर पुरुष हूंसीयार हुवे ॥
रण भैरी जो वहां बजती थी, और घाव निशान लगाया है ।
महिन्द भूप निज सेना ले कर, नगरी बाहर आया है ॥
नानाजी के निकट आयकर, खड़ा वीर हनुमान हुआ ।
मानों आया सूर्य ऊतर कर, एसा ही अनुमान हुआ ॥
महेन्द्र भूप यों बोला उस को तू तो अब तक बच्चा है ।
तूं मेरे से नहीं जीतेगा, यह कहन हमारा सच्चा है ॥

१ सती अंजना से ।

दोहा (क्षेपक)

नानासाकी नीति को, सुनकर म्हारी फाल ।
वजरंगी अंगोकुंवर, बोला शीघ्र सवाल ॥ १ ॥

क्षेपक तर्ज राधेश्याम—

मत करीये मगरूरी इतनी, धूल मांय मिल जायेगो ।
जब तीर हमारे चालेंगे, तब मनकी मनमें रह जायेगी ॥
में छोटा हूं या मोटा, यह भी मालूम पड जायेगी ।
अब जोश हमारा देख आपकी, होस हवा उडजायेगी ॥

ढाल मूलगी—

नृप महेन्द्र 'सुरेन्द्र' नी परे, चढ्यो पुत्र समेत ।
मांहो मांही युद्ध मच्यो, वान में विण हेत ॥ कपि० ॥ १७ ॥
अंजना सुत आकरोरे, सुभट दीधा मोड ।
प्रचंड वाए उडी जाए, तृण तणीतो कोड ॥ कपि० ॥ १८ ॥
प्रसन कीर्ति आवी लडीयो, लडे चित्त ने चाय ।
दोई वीर विशेष बलीया, आपसमें न टलाय ॥ कपि० ॥ १९ ॥
हनुमन्ते सुविचार कीधो, आज मुझे धिक्कार ।
स्वामीनातो काम विचमें, एह लगावी वार ॥ कपि० ॥ २० ॥
मारी लेऊं में एक क्षणमें, मायकुल-क्षयथाय ।
काम प्रारम्भ्यो करवूं, सोच उपज्यो आय ॥ कपि० ॥ २१ ॥
भांजी रथ सारथी भुजबले, बांधी लीधा सोय ।
ऊरु महेन्द्र नरेन्द्र साहीयो, शूरथी एम होय ॥ कपि० ॥ २२ ॥
चरण लागी छोड दीधा, आप प्रगटी नाम ।
मायने दुःख दीयो थो तुम्ह, तेहना ए काम ॥ कपि० ॥ २३ ॥
स्वामी कामे जाऊं लंका, तुम्हे प्रभुने पास ।
जाओ अवसर साधीयाथी, पामसो बहु ग्रास ॥ कपि० ॥ २४ ॥
लीयो कण्ठ लगाय नाने, दोहीत्रो शिर चूंबो ।
माय-माता मायला सहु, सज्जन रह्या लूंब ॥ कपि० ॥ २५ ॥
कानेतो तुझ सुजश सुणीयो, आंखे दीठो आज ।

आपणो आप थकी शंकी, आप पावे लाज ॥ कपि० ॥ २६ ॥
स्वामी काम प्रयाण कीजे, पन्थ में कल्याण ।
होईजो कही आप प्रभुने, चल्यो करी मण्डाण ॥ कपि० ॥ २७ ॥
वाटमें पर सिद्ध 'दधिमुख', आईयो इक द्वीप ।
साधु दो काउसग्ग दीठा, ध्याने लीन अतिव ॥ कपि० ॥ २८ ॥
पाखतीही तीन कन्या, राखो मन एकन्त ।
करे विद्या तणो साधन, दैवगति न लहन्त ॥ कपि० ॥ २९ ॥
लागीयो दवझाल पसरी, आवीयो प्रभु[१] धाय ।
उदधीनूं जल आणी अधिकूं, लीयो तेह बुझाय ॥ कपि० ॥ ३० ॥
साधुवन्दी कहै कुंवरी, स्वामी सांभलो वात ।
साधु उपद्रव टालीयोए, नहीं तो बलिजात ॥ कपि० ॥ ३१ ॥
तुम साह्यने लीये सिद्ध विद्या, एह हमारी जोय ।
विणही काले फले तरुवर, एह अतिशय कोय ॥ कपि० ॥ ३२ ॥
पूछही प्रभु आप कौन तुम ? ताम दीये जवाब ।
नगर 'दधिमुख' अछे नीको, अवर पुर में आब[२] ॥कपि०॥ ३३ ॥
रायनो गन्धर्व रूड़ा, कुसुम माला नार ।
ए अमे छऊं तस कुंवरी, रतितणे अवतार ॥ कपि० ॥ ३४ ॥
खेचरा बहुतरे वांछा, करी त्रिविध प्रकार ।
तात नापे वेसी रह्या, मन अपूठे मार ॥ कपि० ॥ ३५ ॥
एक 'अंगारक' ज खेचर, धरे आशा अगाह ।
कामवस्ये उन्मत्त हुओ, तात न करे विवाह ॥ कपि० ॥ ३६ ॥
ताते पूछ्यूं निमित्त ज्ञानी, पुत्रीनो वर कूण ! ।
थायसे ए साच भाखो, हूं अछूं[३] भल सूण ॥ कपि० ॥ ३७ ॥
मारसे जो साहसगति नें, सोई भलो भरतार ।
रूपे रूड़ो नहीं कूड़ो, तुम्ह हुसे किरतार ॥ कपि० ॥ ३८ ॥
केम जाण्यो जाय प्रभुजी, तेहथीए काज ।

---

१ प्रभुतावालो (हनुमन्त) २ ए फारसी भाषानो शब्द छे। तेनो अर्थ पाणी थाय छे ते ऊपरथी वखाणवा लायक। ३ भलो कपट रहित।

कर्यो थी एटले पापी, मेलव्यो दव साज ॥ कपि० ॥ ३९ ॥
तुम समाधीये शान्ती हुई, हुई विद्या सिद्धि।
मास छट्टे सीजती, तुम दर्शन आज प्रसिद्धि ॥ कपि० ॥ ४० ॥
चरी४ सघली कही भाखी, जाणीयो पति देव।
कुंवरी हरखी नाम प्रभुजी, चालीयो तत खेव ॥ कपि० ॥ ४१ ॥
कुंवरीए मुख एह सांभली, सोहतो भूपाल।
लेई दल बल रामपासे, आवीया ततकाल ॥ कपि० ॥ ४२ ॥
ढालए अड़तीशमींरे, करण काज वीराज।
केशराज मुनिंद भाखे, आवीयो अति गाज ॥ कपि० ॥ ४३ ॥

दोहा (गुड़ मल्हार रागे)

ऊतपतिने आवीयो, लंका समीपे जाम।
विद्याते आशालीका, दीठो 'हनुमन्त' ताम ॥ १ ॥
काली निशा होय जेहवी, तेहवा तस आकार।
घोर महारं डरामणी, बोले 'हनुमन्त' लार ॥ २ ॥
मति हीण ? कपी ? किहां चल्यो, करू आज आहार।
थाराही ए तनु तणूं, तो तूं जाणे मार ॥ ३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज खडका—

हाथ झाली गदा वायु नन्दन तदा, चालीओ आवीयो दुरग पासे। ताम अतिश्याम डरावणी छे घणी, विद्या आशा लीका एम भासे ॥ हाथ ॥ १ ॥ रे मति हीण कपि तूं किहां चालीयो, सीरामणी करूं आज तेरो। तुहीं जिम सार जाणे भली अटकली, जेम इहां और नहीं आवे फेरी ॥ हाथ ॥ २ ॥

दोहा मूलगा—

ताम सुमुख पसारीयो, हनुमन्त पेठो मांय।
भींचे तब मारी गदा, मुकलाणो मुख प्राय ॥ ४ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी

तिणीके मांयही पेठो, उणीसे युद्ध करन सेंठो, गदाले सिंहसमां

१ एकल खेली।

बेठो। तोड़ तसु उच्छाली तबही, नाम निज सुनाय दीयो जब
ही ॥ सत्य० ॥ ७४ ॥

दोहा मूलगा—

अभ्र[1] थकी आदित्य[2] ज्यूं, नीकलीयो बडवीर।
आलन आवे रंचही, साऐ रह्यो शरीर ॥ ५ ॥
तास कीयो प्राकारवर, नगरी लंका पास।
कर्पूरनी परे तोडके, नांखी दीयो आकाश ॥ ६ ॥
रखवालो प्राकारनो[3], वज्रमुखो तसुनाम।
मारी लीधो झूझतो, शूर समारे काम ॥ ७ ॥

ढाल गुनचालीशमी

तर्ज—श्री महावीर स्वामी आया—(गजराकी)

हनुमन्त वीर आयो, असगाय[4] असुहायो,
सयण जने मन भायो, आग्यो जेम बुलायो ॥ टेर ॥ १ ॥
पवननो वंश कहायो, सुरतरु[5] सुहायो।
गय रायों कहायो, कुले कलश चढायो ॥ हनु० ॥ २ ॥
कदहीन थाये कायो, खले[6] जाय न खायो।
गुणी आले गीत गायो, किणही नवि छायो ॥ हनु० ॥ ३ ॥
जगत में सुजश छायो, अंजनीनो रे जायो।
थिर करी पावठायो, न चले रे चलायो ॥ हनु० ॥ ४ ॥
रामने काम धायो, भलो बोल पायो।
भूपने चित्त भायो, खरी खबर लेई आयो ॥ हनु० ॥ ५ ॥
'वज्रमुखनी' कुंवारी, सा करे रोष भारी।
हनुमन्त साथे आई, मांडेरे लडाई ॥ हनु० ॥ ६ ॥
तेहना शस्त्र कापी, मूलगे रूप थापी।
जोर न कोई होवे, तब सम्मुख जोवे ॥ हनु० ॥ ७ ॥
मन्मथ बाणे बींधी, कहे वात सीधी।

---

१ बादला। २ सूर्य। ३ कोट। ४ शत्रु। ५ कल्पवृक्ष। ६ खल (कपटी) थी ठगाय नहीं।

हूं तुम रूपे राची. करूं सेव साची ॥ हनु० ॥ ८ ॥
बापनो वैर लेवा, कीया एह केवा ।
अब तुम पाय लागो, सुदशा मुझ जागी ॥ हनु० ॥ ९ ॥
हनुमन्ते ताम परणी, करी आप घरणी ।
रात्री रही जाय आगे, प्रभुने काम लागे ॥ हनु० ॥ १० ॥
लहुतणे[१] गेहे आवे, बहु सन्मान पावे ।
पाय प्रणमन्त पूरो, सहु वात में शूरो ॥ हनु० ॥ ११ ॥
आवीयो केणे कामो, कहतो अभिरामो ।
रायनी राणी आणी, करी सर्व दिशाकाणी ॥ हनु० ॥ १२ ॥
आपीये सोरे पाछो, थाए सर्व दिशा आछी ।
कीजीये रायराजो, नहीं विणससे काजो ॥ हनु० ॥ १३ ॥
लहु कहेरे जमाई[२] !, समजाव्यो रे भाई ।
पारकी नारी दीजे नहीं जीव रखीजे ॥ हनु० ॥ १४ ॥
बात सुणी रीस लागी. झगड़ बेऊं मेरे जागी ।
म्हारूं कवण चलसे, मूंगों[३] में घीय ठलसे ॥ हनु० ॥ १५ ॥

क्षेपक तर्ज मूलगी

जानकी कहां है फरमावो, बगीचे देवरमण जावो, कोई मत कुबुद्ध करवावो । लहुका वचन मान लीधा, कपि का कारज सब सीधा ॥ सत्य० । ७५ ॥

ढाल मूलगी

लहु आदेश पामी, चले वनमां है धामी ।
आवीयो देखी सीता. वसुधा मांही विदिता ॥ हनु० ॥ १६ ॥
रामतो न्याय रोवे, न्याय नींद में न सोवे ।
जेहनी ए राणी, तिहूं लोके बखाणी ॥ हनु० ॥ १७ ॥
तरुवर अशोके[४], शोभतो जग विलोके ।
तेहने मूले बैठी, हनुमन्ते ए दीठी ॥ हनु० ॥ १८ ॥

१ विभीशण २ भाणेजी जमाई ३ म्हारा कहण प्रमाणे रावण चालसेतो मूंगमें अर्थात् रामसे स्नेह होसी ।

अलक[1] तो गाल फरसे, नयणे तो नीर वरसे ।
आगले कीच मातो, जाय अधिक ही थातो ॥ हनु० ॥ १९ ॥
वदन विलखो देखाय, हीमे जेम कमलनी थाय ।
प्रतिपदा[2] चंद्र जेहवो, तनु देखीजे एहवो ॥ हनु० ॥ २० ॥
उष्णना[3] श्वास बाले, अधरनं[4] शोहटाले ।
ध्यायती राम नाम, नहीं अवरों सूं काम ॥ हनु० ॥ २१ ॥
मलिनछे वस्त्र वेपे, मलिन काया विशेषे ।
देवी विदेही माता, देखतां लहीये साता ॥ हनु० ॥ २२ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज-गवरल ईसरजी

वातां सुनके पतो लगायो. हनुमन्त नवल वागमें आयो. सीता माता की शुद्ध पायो । सीता झूले विछाके मांही कपि छिटकावे मूंदड़ी ॥ सीता माता का खोला में हनुमत डारी मूंदड़ी॥टेर॥१॥

ढाल मूलगी

विद्याए गुप्त होई, मूंदडी आणे सोई ।
मायनी गोद मूके, प्रभुनी शीख न चूके ॥ हनु० ॥ २३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज-गवरल ईशरजी

सीता देखत ही पहीचानी, याहै रघुवर की सहीलाणी । यहां पर कौन जिनावर आणी । मनमें करी कल्पना लेकर कण्ठ लगाई मूंदड़ी ॥ सीता माता की ॥ २ ॥

पू० रेख-श्री नथमलजी म० कृत क्षेपक तर्ज-पपैया काहे मचावत शोर ।
मुंदरीया कैसे आवे इण ठाय ॥ टेर ॥
मुन्दरिया या प्रभुजी के करकी, खिण भर अलगी न थाय॥मु. ।१॥
देख मुन्दरी प्रति सिय इनपर, बोलन मुख से वाय ॥ मु० ॥ २ ॥
अरि मुन्दरी तूंभी विछुरी, प्रभु की सगी हुई नाय ॥ मु० ॥ ३ ॥
आज थकि ए तिय जातकी, सहु परतीत न साय ॥ मु० ॥ ४ ॥
एह मुन्दरी अलग हुई सो, प्रभु विपत के मांय ॥ मु० ॥ ५ ॥
एम कहत चित अति अकुलानी, नयनों में नीर चलाय ॥मु०॥६॥

---

१ चोटलो । २ एकमरो चन्द्रमा । ३ ऊना । ४ होठनी शोभा ।

ढाल क्षेपक मूलगी

वियोगे प्रभुजी तो मरीया, हाय यह काम क्या करीया, वचन मुख दीन ऊचरीया। लायो कुण नर सुर या पंखी, जानकी दिल मांहै शंकी ॥ सत्य० ॥ ७६ ॥

जानकी मनमें बिलखानी, आपद ए आई अनजानी, करें दुःख रघुवर की रानी। वामाङ्ग फुरक्यो तिनवारी, शकुन तब थापे सुखकारी ॥ सत्य० ॥ ७७ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज मल्ली जिन बाल ब्रह्मचारी ॥

काग तुम यहांसे उडजाना।
राम बसे वनवास जिन्हीकी खबर तुरत लाना ॥ टेर ॥
आगम निगम की वात जगतमें, तुमसे नहीं छांना।
काल दुकालरु जोग विजोगन, वरते जे वांना ॥ काग० ॥ १ ॥
काग ऋषीश्वर शिवमत मांही, गावे पूराणा।
तिणसूं भावधरीने ध्याऊ, वंछित फल पाना ॥ काग० ॥ २ ॥
आसोज मासमें आदर देवे, अधिका सन्माना।
भक्ती भावसूं तुम सन्तोषे, पीछे खाय खाना ॥ काग० ॥ ३ ॥
राम रु लिछमन कुशल हुवेतो, तजदो ठीकाण।
दूजी जायगा जाय वीराजो, तुम्ह सम कुण श्याणा ॥ काग ॥ ४ ॥
एती वातकही सीताजी, हियमे हर्षाना।
एतले काग ऊड्योनभपन्थे, सीता मान भांना ॥ काग ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी—

मूंदडी नयननिरखी, सीतामनमांहै हरखी।
हैजेहीये लगाई, मिल्या नाथजी आई ॥ हनु ॥ २४ ॥
'त्रिजये'१ आवी सुणावे, लंकपति हरषावे।
सीता आज खुशाली, रंगमांछे रसाली ॥ हनु ॥ २५ ॥
वावीसरी राम नाहै, तुझशूं ऊमाहै।

१-रावणने त्रिजटा नामक राक्षसणी को सीता के पास रखी थी। इस लिये यहां विजय शब्द के बदले त्रिजटा को समझें।

मोकली फेरनारी, मानसे वात थारी ॥ हनु ॥ २६ ॥
स्वामीं नूं काम करवा, पापसूं पिण्ड भरवा ।
वनविषे पांवधारे, सुख किस्यु इन्कारे ॥ हनु ॥ २७ ॥
राजियां राय राजे, रावण राय विराजे ।
राणियां तूं ही रूड़ी मेलवे वात कूडी ॥ हनुमा ॥ २८ ॥
नग जड्या हेमनीका पीतले थाय फीका ।
असरखे पुरुष तीका, न लहे शोभजीका हनु ॥ २९ ॥
दैव गयो थो वगंसी जाम जोवे विमासी ।
आणी लंकेश मेली, थाय अब क्यूं न भेली ॥ हनु ॥ ३० ॥
हूं अने अवर रमणी, अछां हंसगमणी ।
ताहरी दासी थासां, ताहरूं दीधूं खासां ॥ हनु ॥ ३१ ॥
काने साही रे छाली, तेहवी एहवी वाली ।
पुरुष थी न हीय अलगी, विषय आग जब सलगी ॥ हनु ॥ ३२ ॥
स्वामीजी नियम लीधा, साधुजी ए रे दीधा ।
अण इच्छन्ती दारा कीया तस परिहारा ॥ हनु ॥ ३३ ॥
तेहथी वार वारे, आवूं हूं पास थारे ।
स्वामी ने स्वामी जाणे, आवे वात सहु ठाणे ॥ हनु ॥ ३४ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

'रावण' ने पति पणे कीजे, काज ज्यूं वंछित ही सीजे, नर भव को लाहो ही लीजे । सती कहै बोले किण दावे, निलर्ज तुझ लाज नहीं आवे ॥ सत्य ॥ ७८ ॥

ढाल मूलगी—

आड़ीयो भाली देसूं, एहना प्राण लेसूं ।
एहवी वात कही वे, जाणसे शीख लहे वे ॥ हनु ॥ ३५ ॥
आवीयो राम स्वामी, अन्तरनोरे जामी ।
लक्ष्मण वीर भणीयो, नणद पति जेणे हणीयो ॥ हनु ॥ ३६ ॥
मारीयो कन्त देखे, प्रत्यक्ष एह पेखे ।
माहरो बोल ए साचो, जाणीजे जग में जाचो ॥ हनु ॥ ३७ ॥

धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज अलगी रहनी—

होय निशंक सीता इम बोले, सुन मन्दोदरी वाणी।
चूड़ारी चटकां करवाऊं, तो जाणे रघुवंश राणी॥
अलगी रहनी, तुझ दूती ने कुण छेडे।
तूं केम पड़ी मुझ केडे॥ अलगी रहनी॥ १॥
रे पापण कुल हीणी कूड़ी, रूड़ी बात न सूजे।
दूरे रह तूं क्यूं सन्तावे, सीता इण पर गूंजे॥ अलगी॥ २॥
रीसाणी राणी अकुलाणी, किम जाणी थे पोले।
मुष्टी ऊपाड़ी सीता ऊपर, हनुमन्तजी तव बोले॥ अलगी॥३॥

स्वामी श्री नथमलजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज सखि पनीया भरन कैसेजाना।

इम बोले हनुमन्त वानी, तूं सुनले मन्दोदरी रानी॥ टेर॥
'रावन' यह अकारज कीनो, विष घोल हलाहल पीनोजी।
आखिर में होसी हानी॥ इम बोले॥ १॥
सती सीता ने हर लायो, यह कुजश मुलक में छायोजी।
सेवट में वस्तु वीरानी॥ इम॥ २॥
तुम घर में यह नहीं रहसी, फिट फिट सघला केसोजी।
है प्रान हरनकी नीसानी, इम॥ ३॥
राम प्रबल बलधारी, लक्ष्मन की छवि है न्यारीजी।
नहीं रावन घर अगवानी॥ इम॥ ४॥

(दोहा क्षेपक)

प्रगटाणो निज रूपसूं, दीठो हनुमन्त नैण।
मन्दोदरी पुलकितक है, कड़वा आकशा वैण॥ १॥

राम मुनि कृत ढाल क्षेपक तर्ज—मनवा समझलेरे कीर—

'मण्डोदरी' कहै सुणो जमाई, आकांई भूंडो कीधी।
सायर सूं तोड़ी बेकाजे, भली गलामें लीधी॥ म्हाने भूंडोलागेजी
रांक तणी तो सेवा करतां, भूखन भागेजी॥ टेर॥ १॥
सहु राजा कीयो शिरोमनी, कोई बिगाड्यो मेंतो।
मांने छोडी भूचर सेवो, दूत पणा रेतो॥ म्हांने०॥ २॥

नीच कामतो दूत पणा को, करतां लाज न आवे।
सात पीडीमें कलंक लगायो, थो समपूत ज्यं थावे ॥ म्हांने० ॥३॥
हनुमन्त भाखे सुणो सासुजी, मेंतो आछो कीधो ॥
छोड़ अन्यायी न्यायी झेल्यो, 'राघव' शरणो लीधो ॥
मेंतो साचू बोलूंजी, झूंठ तणो पखपात तजीने रामने झेलूंजी ॥टेर॥४॥
दूत पणा करता रयूं मेंणी, भडवा पणेछे म्हेणी ॥
तुझे भड़वी कहूंके दूती, देखलीवी तुझ रेंणी ॥ मेंतो० ॥ ५ ॥

स्वा० नेमीचंदजी म० कृत चेपक-ढाल तर्ज-लावणी—

पाछी जावण लागी बोल सुण अवको, उभी रहे मन्दोदर नार लेती जा लवको ॥ टेर ॥ अपर सुणो मेरी बात राम जोरूठो, थने लांबी पहिरासी हाथ हियो क्यों फूटो। थांरो अल्प दिनोकों सुख जाणजे खूटो २ ओ सतियों केरो मुख वचन नहीं हुवे झूठो ॥ जोवचनज झूठो होय जगत होय डबको ॥ उभी० ॥ १ ॥ तूं इणपे आई चलाय वचन इम बोली २ कुलनी आब गमाय लाजते खोली, तुझमें नहीं गुणसार फली ज्यो फोली ॥ सज आई सिणगार जगत की गोली जो होय सती का लछ वचन कहे ढबको ॥ उभी० ॥ २ ॥ भोग दलाली काज बनी तूं दूती, लम्पट का सुन बोल चढी किम भूति लागी इणके केड़ हड़कणी कुती, इण लखणो के न्याय पडे शिर झूती, कुलखणी बगडाल उठ्यो क्यों भभको ॥ उभी० ॥ ३ ॥ अब आवे छे रघुनाथ रावणना जमजे, पहरी लम्बी नणदल हाथ अबे नहीं समझे। मैं करडा कया बोल दोषतूं खमजे, सेठा राखो नेम पियु नेदमजे, सुर्योदय की आश पडे ज़द झबको ॥ उभी० ॥ ४ ॥

ढाल मूलगी—

लाजनां बीज खोई, धीठी में धीठी होई।
कां मुझने खीजावे, ताम परही पुलावे ॥ ह० ॥ ३८ ॥
भूपने आवी भाखे, पेली पाणी न्हाखे।
बोलत कांईन राखे, ए फल तुंन चाखे ॥ ह० ॥ ३९ ॥

(दोहा क्षेपक)

रानी कहै रावन भणी, हा हा थयो अकाज ।
हनुमन्त मुझ फिट फिट करी; बहु लाजी में आज ॥ १ ॥

धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक–तर्ज कन्दोरे कूंची लटके सखी ताराचलके

कहै मन्दोदरी सांभलोरे मतकीजो, ए कारजमहा दुःखदाय आप मानीलीजो परनारी की संगतमतकीजो, या सतियों मांयशिरोमणी रे मतकीजो ॥ में देखी- ताय तपाय मानमेरी लीजो परनारी की संगतिमतकीजो ॥ १ ॥ त्राणी वदे वाआकसीरे मतकीजो, उण परवाह नहीं तिलमात नाथमानीलीजो परनारी, कोडं ऊपाव कियां थकोरे मतकीजो, वा हरगिज नावेहाथ वातमानी ॥ पर ॥ २ ॥ शठ जिमहटकरजो मति मानीलीजो, रयो जगमे अपयश छाय मान मेरीलोजो ॥ पर ॥ एमसुणी रावन कहै रे मत कीजो । तूं महिलां में जाय । मानमेरी पर ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी-

दोई दो दिशे ताणो, दोई में कौन शाणो ।
शक्ती नारे सनेह, शोला ऊपरे त्रेण ॥ हनु ॥ ४० ॥
फूटी नावने खेड़ो, खोट मां है रे खेड़ो ।
जीतशे अति भावी, सा कहै सोई आवो ॥ हनु ॥ ४१ ॥
ढाल तो ए कहावी, त्रीस नवमी सुहावी ।
देवी रही शील दावे, केशराजजी गावे ॥ हनु ॥ ४२ ॥

(दोहा आसावरी रागे)

हनुमन्त तब प्रगट भयो, प्रण में सीता पाय ।
राम सु लक्ष्मण कुशल छे, सुख मानो तुम माय ॥ १ ॥
आप तुम्है कौण छे कहो, उदधि तर्यो क्यूं एह ?
आज अछे केई थान के. किस्यूं करे छे तेह ॥ २ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज गवरल ईशरजी कहेतो—

जब तो बोले हनुमन्त वाणी, माता तूं क्यां चिन्ता आणी, रघुवर भेजी है सेनाणी । मुझ को भेजा श्री रघुवर जाय तुम देदो मूंदड़ी ॥

सीता माता की गोदी में हनुमन्त डाली मूंदड़ो ॥ ३ ॥ मैं तो नहीं जानूं तोहि वीर, तूं तो है कोई छलगीर, मुझको कैसे आवे धीर । तूं तो करी राक्षसी माया छलकर लायो मूंदड़ी ॥ ॥ सीता ॥ ४ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज पदरी—श्री राममुनि कृत

हूं तने नहीं पिछाणूं रे वीरा, तू दीसे अमोलक हीरा ॥ टेर ॥
ना देख्यो थने पुरी अयोध्या, नहीं देख्यो मुझ पीरा ।
ना देख्यो थने वनवासा में, तूं कदको हनुमन्त वीरा ॥ हूं ॥१॥
लघु वय थारी सूरत प्यारी, बल धारी तूं धीरा ।
कुण तुझ तात मात कुण जाना, किम आयो लंघी नीरा ॥ हूं ॥२॥
दुर्लंघ्य लंका उलंघ किम आयो, नहीं आई तुझ तन पीरा ।
अंजनी मात पवनंजय ताता, हनुमन्त नाम हमीरा ॥ हूं ॥ ३ ॥
राम लक्ष्मण के तेज प्रतापे, हूं आयो लंघी नीरा ।
आसालीका यंत्र तोड दीयो है, जैसे जीरण लीरा ॥ हूं ॥ ४ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज मूंदड़ी—

मैं तो 'रामचन्द्र' को पायक मेरे राम सदा है सहायक, उनका नाम अति सुख दायक । मत कर सोच फिकर तूं माता या नहीं छल की मूंदड़ी ॥ सीता माता ॥ ५ ॥ वनचर देख सिया मुस कानी, मुख से बोली एसी वानी । तेरी छोटी सी जिन्दगानी । किस विध कूद गया तूं सागर लंक में लायो मूंदड़ी ॥ सीता माता ॥ ६ ॥ मैया छोटा सा मत जान, मैं बहुत अति बलवान बल मोही दियो श्री भगवान । रघुवर कृपा मोपे कीनी तब मैं लायो मूंदड़ी ॥ सीता माता ॥ ७ ॥ ऐसी सुन के सीता बात, धीरज अपने मन में लात, इस को भेजा है श्री रघु नाथ । मन मे बहुत खुशी होय सीता पल २ निरखे मूंदड़ी ॥ सीता माता ॥८॥

—: दोहा— मूलगा :—

पवन रायनो पुत्रछूं, हनु मन्त म्हारो नाम ।
विद्या बलेसुं विमानसुं, उदधि तर्यो अभिराम ॥ ३ ॥

साहस गति नृप मारीयो, वा नर पतिने काज ।
कीधो किष्किंधा पुरी, उस्वामी विराजे आज ॥ ४ ॥

क्षेपकः— राधे श्याम रामायण में से

हनुमान के वचन सुन, मिटा सभी सन्देह ।
दूत जान रघुराज का, हुआ हृदय से नेह ॥
बोली-हनुमान ! कुशल सब है, प्राणों के नाथ अच्छेतो हैं ।
लक्ष्मण जी की क्या हालत, ? भाई के साथ नीकेतो हैं ॥
किस तरह अंगूठी आई यहां, यह बात मुझे समजा ओतो ।
किस तरह तुम्हारा साथ हुआ, यह बात मुझे बतला ओतो ॥
फिर यह बतलाओ, महाराज रहते हैं शाद भी कभी कभी ।
मुज दुःखिया को वे दुःख-भंजन, करते हैं याद भी कभी कभी ॥
प्यारे को प्यारी मुन्दरी यह, लायाहूं बतौर निशानी के ।
हां, अच्छे हैं दोनों भाई, ज्यों शान रहे वे पानी के ॥
लंका पर डङ्का बाजेगा अब समय वह आने वाला है ।
विश्वास प्रेम दिल में धरिये, फिर राम बचाने वाला है ॥
सूरज के होते ताब है क्या, जो जरा अंधारी रह जावे ।
जब अहला आवे गंगा में तब भला बुरा सब बह जावे ॥

दोहा मूलगा—

देवी वियोग तुम्हारड़े, राम तपे दिनरात ।
दावानल परबत तपे, तपे जेम तरु जात ॥ ५ ॥
गाय विछो हो वाछड़ो, हिसंतोही फिरन्त ।
लक्ष्मण तुमविछो हीयो, आरति अधिक करन्त ॥ ६ ॥
कदीही क्रोधे धमधमे, कदी ही शोगे सोच ।
करता वरते स्वामीजी, आरती अति आलोच ॥ ७ ॥
वानरं प्रति समझावणी, करे धणी निश दीश ।
आधा दिन लीये तेहथी, पण आरतीय ईश ॥ ८ ॥
कटक मिल्यो छे एकठो, आदि नृप सुग्रीव ।
भाई भामण्डल मलो, आरति वन्त अतीव ॥ ९ ॥

वीर विराध वीराजीयो, सुभट पणे सुविशेष ।
महेन्द्रादिक मोटका, खेचर अवर अशेष ॥ १० ॥
एक एक थी आगला, सुभट महा झझार ।
शूर वीरने साहसी, अम्बर थम्भन हार ॥ ११ ॥
पंचमिली मिसलितकरी, पहेलो मोकलो दूत ।
खबर करे सीतातणी, तिहां किस्यूं छे सूत ॥ १२ ॥
वानर सहु अवलोकीया, वानर पतिने दाय ।
कोईन आव्यो तामहूं, लीयो बुलाई माय ॥ १३ ॥

ढाल चालीशमीं— तर्ज राजवियोंने राज पीयारो—

राजा राघव रायाँ राय कहायो, दल बल सबल मिलायो ।
खबर करेवा हूं मोकलीयो, आयो के प्रभु आयो ॥ राजा ॥ १ ॥
मुद्रिका प्रभु करनी आणी, तेहथी जाण्यो साचो ।
अहिनाणी विण कौन पतिजे, एरे वडांकी वाचो ॥ राजा ॥ २ ॥
देवो चूडोमणी१ मुझने वेगी, वेगे अपूठो जाऊं ।
अवसर साध्यां आदर पामूं, नहींतर भोर २ कहाऊं ॥ राजा ३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज ख्याल की, मुनि श्री किशनलालजी कृत•

बात पूर्वली सुनी जानकी, हर्ष हिये न समाय ।
हनुमन्त भाखे करो पारणो, वनफल लाऊं जायजी ॥
इकवीश दिनोंसूं, सीता सतवन्ती कीनो पारणो ॥ टेर ॥ १ ॥
देव रमन उद्यान में सकोई, अमृत फल सुखदाय ।
सीता भाखेतोड़ मतलाजे, लाजे पड्या ऊठायजी ॥ इक ॥ २ ॥
लेवनगयो रसाल बाग में, बुद्ध करी वल पूर ।
वृक्ष ऊपाड़ी किया अधोमुख, पकड उच्छाले दूरजी ॥ इक ॥ ३ ॥
सीता भाखे सुनरे बन्धव, करे किस्यूं ए काम ।
भूमी पड्या लाजेतुम भाख्यो, राक्षसनो भय पाम ॥ इक ॥ ४ ॥
क्रीड़ा रंगकरी फल लायो, पुंज कीयो तिण ठाम ।
कहै सीता इतना कुण खासी, कीनो पाप निकामजी ॥ इक ॥५॥

१ माथ रो बोर ~ २मूर्ख

भावे जितना आप अरोगे, में खाऊं अपर तमाम ।
परम मोदसे कियो पारणो, भूख गमाई ताम जी ॥ इक ॥ ६ ॥
संकट टलियो धर्म प्रसादे, फली मनोंरथ माल ।
देख पराक्रम राम दूतका, बोले सीता बालजी ॥ इक ॥ ७ ॥
धन्य मात जिन उदेर धरीयो, राखन सगला सूत ।
चिंरजीव तुं आनन्द मांही. वाह रे अंजनी पूतजी ॥ इक ॥ ८ ॥

ढाल मूलगी

खवर प्रभुनी पामी सीता, अभिग्रह पूराणो ।
हनुमन्त हाथे दिन इक वीशमें, भोजन तो लेवाणो ॥ राजा ॥४॥
सीता भाखे चूडामणी लेओ, वेगही वेग सिधावो ।
खवर लह्यां थी ए पापीथी, मतिरे असाता पावो ॥ राजा ॥ ५ ॥

चेपक ढाल तर्ज मूंदडीकी—

मैया भूखो भोजन पाऊं, देवो हुक्म तोड़ फल खाऊं, दरखत तोड़ २ फल खाऊं ॥ अबमैं अपना बल दिखलाऊं, इस विध लायो मूंदडो ॥ सीता माता० ॥ ९ ॥ केहवे सीता सुन हनुमान, यहां है निशिचर अति बलवान, तोकू मार गिरावे आन ॥ फिर में झुरझुर के मर जाऊं, यहीं रह जावे मूंदडो ॥ सीतामाता ॥१०॥

ढाल मूलगी—

हनुमन्त ताम हसीने बोले, मांते वातन जाणी ।
प्रभु परसादे करूंजो देखो, बोले अधिकूं ताणी ॥ राजा० ॥ ६ ॥

चेपक तर्ज राधेश्याम (राधेश्याम रामायणमें से)

बोली सीता तुम्ह छोटे से. पर्वता कार है निशिचारी ।
कैसे जीतोगे लड़कर के. आश्चर्य है यह मुजको भारी ॥
इतना सुनतेही हनुमतने, पर्वत सुमेरु सा अंग करा ।
दिखलाकर जनक दुलारी को, मनका समस्त सन्देह हरा ॥
बोले बजरंगी बली इसमें, कुछ नही तारीफ हमारी है ।
यहतो है राम प्रताप प्रबल. और पूरी कृपा तुम्हारी है ॥
बल भक्ती प्रताप भरी वाणी, सुन सीता ने सन्तोष किया ।
धीमान गुणी बल सागर हो, हर्षित यह आशिर्वाद दिया ॥

ढाल मूलगी

तुझने तो खांधे वेसाड़ी, लेई जाऊं आजो ।
रावन राक्षकनां दल मोड़, तो जाणो शिर ताजो ॥ राजा ॥ ७ ॥
सीता भारवे एसब साचो, जेय कहो तेम करस्यो ।
सीता नाम धर्यों थी तो, पर पुरुष न जावे फरस्यो ॥ राजा ॥ ८ ॥
जेती ढील करो छो तेती, प्रभुने आरती थासे ।
धर्म नहीं हमने तुम कहवो, स्वामी वसे दुःख वासे ॥ राजा ॥ ९ ॥
वानर जात तणी चपलाई, रावण राक्षस देखे ।
रामचंद्र ना सेवक एहवा, मनमें भय सुविशेषे ॥ राजा ॥ १० ॥
सत्य वती कहे प्रभु सूं कहजो, नाम तणे आधारे ।
जीवी छूं हूं के मरी जाती, विरह देव तुम्हारे ॥ राजा ॥ ११ ॥

क्षेपकः— राधेश्याम

इन वृक्षांपर माता देखो, फल कैसे शोभा देते हैं ।
सुन्दरता अन्त भई सुन्दर, सुन्दर मन को हर लेते हैं ॥
दोचार तोड़ फल खाल्हूं में, एसी तबियत में आय रही ।
आज्ञा देदो माता मुझको, तबियत मेरी लल चाय रही ॥
सीता बोली इन वृक्षांपर के, बेटा अनेक भट रखवाले हैं ।
तोड़ना फलों का दूर रहा, मारे जाते आने वाले हैं ॥

(दोहाः— क्षेपक)

खाने फल इस बागके, बेटा ! टेडी खीर ।
देख लेंय यदि निशाचर, तोडा लेंगे चीर ॥

क्षेपक राधेश्याम

इस तुच्छ निशाचर दलका क्या, मनसोच क्रिया तुमने भारी ।
कुछ दुःख नहोवे तुमकोनो, आज्ञा दे दीजे महतारी ॥
परवाह न कुछ रखवालों की, परवांह द्वन्द मचाने की ।
परवाह फक्त मोय माता है, श्री मुखसे आज्ञा पाने की ॥
मन मुदित आज्ञा देदीजे, देखो क्या रंग दिखा ऊंगा ।
इस लंक पुरी की सैनाको, रणविद्या आज दिखा ऊंगा ॥

परताप तुम्हारे से जननी, रामादल आज उजागर हो ।
विजयीहो पवन पुत्र रणमें, भयभीत दुष्ट दशकन्धरहो ॥
बल बुद्धि देखकर हनुमन्त की, सीयको कुछ २ विश्वास हुवा ।
असमंजस दूर हुवा मनका, चिन्ता का तनक विनाश हुवा ॥
बोली मीठे फल खावो सुत, फल मीठे रहे नसीब तुम्हे ॥
आशिर्वाद विजयी होवे, मीठेफल हो बखसीब तुम्हे ॥

ढाल मूलगी–

लेई चूडामणीने चाल्यो, 'सीता' ने पगे लागी ।
देव रमण ये वनने भांजवा, हनुमन्तनी मति जागी ॥राजा॥ १२
'रक्ताशोक' विपये रे निसुगो, वकुल विपय अकुलाणो ।
अकरुणा अति आम्र भांजवा, अमर्प तो अधिकाणो ॥ राजा ॥१३॥
'चम्पक' साथे कम्पन आणे, मंद अति मन्दोर ।
निर्दय 'कदली' दलकापेवा, फैली रह्यो वन सोर ॥ राजा ॥१४॥

क्षेपक राधेश्यामः—

आंखों भरजो देखी डाली, उस तरु में वह डाली न रहीं ।
दे नजर डाल जिस डालपे, कपि वह डाल गिरी लाली न रहीं ॥
फल लाल २ चुन २ खाये, कच्चे २ नीचे डाले ।
छोडा न एक फल वृक्षोंपर. जो पड़ा पवन सुतके पाले ॥
इस डाली से उस डाली पर, कपि कूद २ कर जाता था ।
फल तोड़ तोड़ कुछ खाता था, कुछ सागर बीच बहाता था ॥
फल रहित अशोक वाटिका की, फिर सारे वृक्ष हिला डाले ।
कुछ तोड़ जमीं पर डाल दिये, कुछ सागर बीच बहा डाले ॥

—: ढाल मूलगी :—

अवर अनेरां जेतां तरुवर. नांख्योते उखाली ।
पांन फूल फल कोई न दीसे, बूम करे तब माली ॥ राजा ॥ १५ ॥
चाले पोल तणा रखवाला, राक्षस अति संबाही ।
वानर ने मारेवा धाया, हाथां मुदगर साही ॥ राजा ॥ १६ ॥

घुरको करी कपि सामी अयो, जाये ताम पुलाया ।
एक एक थी आगे नासे, खायारे यहां खाया ॥ राजा ॥ १७ ॥
जाई पुकार्यो राजा रावण, वानर भांजी वाडी ।
सखरा तरु तो कांई न राख्यूं. वाड़ो सर्व ऊजाड़ी ॥ राजा ॥१८॥
कोई ना हथियार छिनाया, कोई खाधा फाड़ी ।
कोई ना मुख कान विलूर्या, इज्जत तो अति पाड़ी ॥ राजा ॥ १९ ॥
सुभट लेई नृप-नन्दन आयो, दोई लढिया भारी ।
वानर तो बल वन्त विशेषे, सोई लीधा मारी ॥ राजा ॥ २० ॥

क्षेपकः— राधेश्याम

फुर्ति से कपि मारी छलांग, दिल पर था लेश नहीं भयका ।
मारी इक लात घुमा कपिने, दिया तोड़ कलेजा अक्षयका ॥
अक्षयगिरते सब सैन भगी, दौड़ लंका में आई है ।
भय भीत पुकार करें भारी, लंका पति तेरी दुहाई है ॥
कुछ अंग भंग निशिचर कीने, कुछ पकड़ जमीं से मार दिये ।
अध मरे भाग कुछ असुर गये, कुछ पैरों नीचे कुचल दिये ॥
मर्दन सब असुर किये पल में, थर थर थर सब थर्रा तेथे ।
अब नहीं भूल यहां आवेंगे, कहते यों भागे जाते थे ॥
वा अमन पहुंच जावें गढमें, ईश्वर का ध्यान लगावेंगे ।
जिन्दे जब तक रहे दुनियों में, इससे लड़ने नहीं आवेंगे ॥
उस कपि बलकारी भटने, फुलवाड़ी तोड़ २ डाली ।
विध्वंस अशोक वाटिका की, मुतलक न रही वहां हरियाली ॥
जहां सघन लगाये भारी थे, तहां नाथ हो गया उजियाला ।
क्या बयान करें हम वानर का महाराज मार हमको डाला ॥
करतूत याद कर २ उस की, दिल दहसत भारी खाता है ।
गात कीट पतंग सम नाथ भई, हरजां वोही दिखलता है ॥
कर अंग भंग छोड़ा हमको, दुर्गति भी कीनी भारी है ।
हम जय अशोक वाटि कामें, अब ताकत नहीं हमारी है ॥
सूरत जब यादकरें उसकी, दिल बीच उठे प्रभु हौलाहै ।

यह काल कराल प्रलय आया, या अजल कालका शौला है।
यह वानरहै या आफतहै, बनवीर वीर बलवां काहै ।
हिम्मत नहीं सन्मुख जानेकी, छुप २ पेडांसे झांका है ॥
अक्षय कुमार के मरतेही फिर पैर हमारे ऊखड़ गये।
लेजान लंक को भागदीये, भयभीत हुवे सबपछाड़ गये ॥
अक्षय कुमार का मरनासुन, दशकंधर शौचमें छाया है।
क्या कूलता बड़ी बडी मनको, फिर धीर हृदयमें लाया है ॥

दोहा क्षेपक—

प्रबल बली दश कन्धने, सबै बंधाया धीर।
बुलवाया दरबार में, इन्द्रजीत बलवीर ॥
बेटा अशोक वटिकावीच, एक महाबली कपि आया है।
अक्षय कुं वार को लातमार, जिसने सुर धाम पठाया है ॥
कुछ सुभट साथमें लेजाओ, सीधे अशोक उपवन जाओ।
जिस तौर बने उसतौर पुत्र, केदी कर कपि को ले आओ ॥

सवैया—

वन्दि के विदेह नन्दनी के पद कज द्वंद, पेठचो वाठिका में द्वार पालन संहार के। खाये फल भार डार तोरि के उखारे तरु, बाग को उजार्यो राम-जश को उचार केयूथप समेत भट किंकर हजारन को बांधि के विपच्छ रच्छ अच्छ को पछार के। कालसो कराल धन नादको बेहाल किनो, केशरी कुंवार वीर मुकनको मारके ॥१॥
दूर हिते देख घननाद को निनाद किनो, मार के समग्र सैन्य सट सट क्यों सटाकदे। लातन की चौट से महान रथ घोडे चार, सारथी संहार भट २ क्यों भटाकदे ॥ विरथ बिलोकी बर बेरि को विवेकी कोप करी कूदी छोक छट क्यों छटाकदे। केसरी किसोरी वीर बांकुरो लपकी लोल लूल में लपेटी पट २ क्यों पटाकदे ॥२॥

ढाल मूलगी—

भाई मूओ कोपे चढ्यो अति, इन्द्र जीत आवे।
निरखीने ईर्ष्यो मन माहि, लड़िसूं सरखे दावे ॥ राजा ॥ २१ ॥

क्षेपक राधे श्याम—

गर्जना नई अन्दाज नया, सामान नया सब साज नया ।
दिन आजनया रण रागनया, रणको आया रणवाज नया ॥

ढाल मूलगी—

पहिलातो बाणांसूं लडिया, विविध परे बलवन्ता ।
खड्‌ग आदे आयुद्ध छतीसे, सम्बाहे मति मंता ॥ राजा ॥ २२ ॥
इन्द्र जीतजी जेजे मूके शस्त्र महा दुःखदाई ।
विचेहीथी छेदी नांखे, वानर एह चढाई ॥ राजा ॥ २३ ॥
इन्द्र जीतना भट तवघाया, जाये सघला नाठा, ।
वारे अगज ! अनेरा आगे, वानर थी अति त्राठा ॥ राजा ॥२४॥
भट भागा शस्त्र बल भागो, इन्द्रजीत नवी नाठा ।
नाग पास बाणेकर वानर, बांध लीयो अति काठो ॥ राजा ॥२५॥
आणी मेल्यो रावण आगे, रावण हर्ष नमावे ।
सेवक तूं आजन्म तणो मुझ, आज रामे चिन्त दीधो ॥राजा॥२७॥
वनवासी फल शाकाहारी, मेला लूगडां लासो ।
भील किस्यूं तुंशो पूरसे, थारा मननी आसो ॥ राजा ॥ २८ ॥
अबर कामनी नीठपड़ी थी, इहां कोई आवे ।
अबतो प्राण पड्याछे सांसे, छूटेवा नविपावे ॥ राजा ॥ २९ ॥
पहीलो थो भाणेज जमाई, प्राण थकी ही प्यारो ।
बन्दी वान हुवो अबवेगे, सीता लेई पधारो ॥ राजा ॥ ३० ॥
ओतो धूता धूर्त शिरोमणी, आप चली क्यूं नाया ।
अंगा रातो अति धग धगता, भलिपरे हाथ गहाया ॥ राजा ॥ ३१ ॥
सेवक वर महाराछो थोरी, अवरे दूत कहायो ।
ते माटे रे अवध्य अछेयण, एह विटम्ब करायो ॥ राजा ॥ ३२ ॥
हूंतो सेवक कदको थारो, कदका तुम मुझ स्वामी ।
लाजन पामो झूठ कहेतां, साच न भाखे कामी ॥ राजा ॥ ३३ ॥
एक वार पवनं जय राजा, आयो थो बोलायो ।
वरुण तणा बन्दी खाना थी, खर खेचर छोडायो ॥ राजा ॥ ३४ ॥

एक वार हूं पण आयो थो, स्वामी नो तेड़ायो ।
वरुण सुते रणमें घेर्यो थो, तब तुम्हाने मेल्हायो ॥ राजा ॥ ३५ ।
धर्म पक्षनो साह्य कराणो, पाप पक्षे नविरेणो ।
लम्पट नरसूं वात करन्तां, पापे पिण्ड भरेणो ॥ राजा ॥ ३६ ॥
एहवो हूंतो कोई न देखूं, अनुज[१] एकने जीती ।
रणमो है जे तुझने राखे, वसुधा व्रात विदीती ॥ राजा ॥३७॥

ढाल क्षेपक तर्ज चौकनी-स्वामी श्री नथमलजी कृत—

सुन महाराजा कटुक वचन मुखसे थी कबहुन वोलीये ।
कहे कपिराजा इण वचनों सूंतो, अगल मूरख मनतो लीये ॥टेर॥
रघुवर की नारी हरलायो, जगमें तुझ अपजश छायो ।
थे कुलने कालो लगायो, सुन महाराजा ॥ १ ॥
है सीता सत्यवन्ती नारी, तिनकूं तूंजाणे करूं प्यारी ।
क्यूं मोत आईरे, खर थारी ॥ सुन ॥ २ ॥
सुग्रीव भामण्डल साराजा, जसु सेवे आणा शिरताजा ।
वेयी फते करसी काजा ॥ सुन ॥ ३ ॥
लक्ष्मण रणमें जब अरसी, क्रोडों ही सुभट तिहां मरसी ।
कहो उनरी होड जकुण करसी ॥ सुन ॥ ४ ॥
है कोड शिलाने ऊठाई, सुरनर मिलने सुजश गाई ।
तसु कीर्ति त्रय भुवने छाई ॥ सुन ॥ ५ ॥
पिण एतो वात वणी आणी, जे भाखोथी केवल नाणी ।
फिरनिमिन्तियानी छे वाणी ॥ सुन ॥ ६ ॥

ढाल मूलगी—

एम सुणी रीसाणो राणो, वचन तीर बहु वाहै ।
वयरीनोरे वखाण करन्तां, मुओही तूं चाहै ॥ राजा ॥ ३८ ॥
रासभ चढावी माथूं मूंडी, पंच शिखा शिर राखी ।
जिसो करे सो तिसो पावे, फेरूंरे एक भाखी ॥ राजा ॥ ३९ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

कोप कर हनुमन्त ही बोले. फेंके वच अणघड़ीये टोले, गधा ! क्यूं

१ रामनो नांनो भाई लछमण—

छाती मुझ छोले। मुझे कुण मार लेवे मूंडो, ऊंणीको दीसे छे भूंडो ॥ सत्य व्रत ॥ ७९ ॥

ढाल मूलगी—

एम सुणी कोप्यो अति वानर, नाग पास ने तोड़े।
कमल नाल सूं कुंजर बांध्यो, कहो कवण नर छोड़े ॥ राजा ॥ ४० ॥
विद्युत पात तणी परे पड़ियो, रायनो मुकुट पाड़ी।
खण्डो खण्ड करीने नांखे, कौण विचारी वाड़ी ॥ राजा ॥ ४१ ॥
ग्रहो ग्रहो रावण भारवे, रीसघणी विस्तारी।
ताम सुलंक निशंक पणेरे, विध्वंसी निरधारी ॥ राजा ॥ ४२ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

सहश्र थम्भ मेलही पारे, लंकाको विध्वंसे उयारे, कोलाहल मचिहो है सारे। राम को दूत ही आयो, प्रलय सो करने देखायो ॥ सत्य० ॥ ८ ॥

(वैष्णव मत की रामायण में हनुमानजी से लंका दहन काकथन इस प्रकार है) व्याख्यान में कहना या न कहना वक्ता की इच्छा पर निर्भ रहै (नागफास में बंधे हुवे हनुमानजी को मारने के लिये रावण सुत के भट: पवन सुत के पास आये)

वर्ज मूंदड़ी की—

जबतो मारन उसको लागे, वसनहीं चलता हनुमंत आगे, निशिचर देख २ कर भागे। यूं नहीं मरु मैं हरगिज मेरे पास संजीवन मूंदड़ी ॥ सीतामाता० ॥ ११ ॥ मैं तो मौत वताऊं मेरी, लावो तेल रुई तुम गहरी, अबतो मत कर रावन देरी। पूंछको बांधके आग लगावो जल्दी बचावे मूंदड़ी ॥ सीतामाता० ॥ १२ ॥ सब लंका की रुई मंगाई उससे पूंछ बांध लपटाई, दीना ऊपर तेल गिराई। उसमें आग लगाई देख याद कर लीनी मूंदड़ी ॥ सीतामाता० ॥ १३ ॥ पहिले रावन सन्मुख जाई, वांकी दाड़ी मूछ जलाई, पीछे लंका में फिरवाई। लंका जला दीवी हनुमान हिया विचराखी मूंदड़ी ॥ सीतामाता ॥ १४ ॥ लंका फिर २ के जलवाई, घर एक विभीषण का नाहीं, बाकी सब घर आग लगाई।

समुद्रमें जाय बूजाई पूंछ कारज कर लीनो मूंदड़ी ॥ सीता माता० ॥ १५ ॥

दोहा क्षेपक—

सीता पासे आवीयो, अब जाऊं छूं मात ।
चरी सुनाईने चल्यो, ले नारी ने साथ ॥ १ ॥

ढाल मूलगी-

क्रीडा रंग करीने रगोलो, आयो वारम लाई ।
राम नमी चूड़ामणि आप्यू, लीधो कण्ठ लगाई ॥ राजा ॥ ४३ ॥
चूड़ामणि छातीसूं चांप्यो, जाणे सीता आनी ।
आज मिली वारुं वारुं, फरसे हैये लगावी ॥ राजा ॥ ४४ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज पन्नजी मूडेवोल—

अरज रघुवरसेरे, कही हकिकत नाथ जानकी वड़ी जिगरसेरे ।टेर।
सिंहनाद कर कपट दशानन, सीता हरी कदरसेरे ।
लेआयो गढ लंक मांय, रथ बैठ अधरसेरे ॥ अरज ॥ १ ॥
बाग अशोकमें जाय ऊतारो, वहुत डरे निशि चरसेरे ।
राक्षसणी सहु रात कष्टदे, वडी फजरसेरे ॥ अरज ॥ २ ॥
हाथ जोड हनुमन्त सीया सुध, कही हकीकत हरसेरे ।
जपे निरन्तर राम आंखसे, आंसू त्रसेरे ॥ अरज ॥
वात पूर्वली सुणी प्रभुका, व्याकुल चिन्त अन्दरसेरे ।
प्राणप्रिया सीता सत्यवन्ती, विपतमें तरसेरे ॥ अरज ॥ ४ ॥

क्षेपक सवैया—

कहै श्री राम सुनो हनुमान, कछु शुद्ध अछे सियके जिय मांही ।
है प्रभु लंक विनाही कलंक रावन की वन ही वन छांही ॥
जीवत है अजु सीता सती, मरक्योन गई हमते विछुरांही ।
प्राणत्रसे पद पंकजमें, यम आवत खोजत पावत नांही ॥ १ ॥

ढाल मूलगीं—

विदा हुवोथो मिलीयो आवी, वीचे हुवाजे कामो ।
तेसघलां प्रभुनेरे सुणाया, भलो भलो कहै रामो ॥ राजा ॥ ४५ ॥
ढाल भलीए चालीशमी, सीता शुद्ध लहाणी ।

केशराज' राघव सुखपायो, सभा सहुहर खाणी ॥ राजा ॥ ४६ ॥

दोहा रामग्री रागे

'राम नाम रलियामणो, राम नाम थो एक ।
सीता शुद्ध लही इहां, राम स्वरूपअनेक ॥ १ ॥
राम अने लक्ष्मण भला, सुग्रीवादिकदेख ।
सुभट महा शूरापणे, कटक मिल्यो सुविशेष ॥ २ ॥
भामण्डल मण्डलपति, वड़ वानर नल नीर ।
जम्बवान अंगज भला, कपिपति नन्द सलील ॥ ३ ॥
श्री महेन्द्र महिमानीलो, पवनंजय नो पूत ।
प्रबल महाबलि आगलो, रावण सघलाभूत ॥ ४ ॥
वीर विराध विशेषीयो, राम सुपेण उदार ।
इत्या दिक नामे भला, अवर लहै कुण पार ॥ ५ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज जगतगुरु त्रिशला नन्दन वीर ॥

रामहुकम तिण अवसरेरे, वानर लाखों कोड ।
आवी मिलीया एकठारे, दोड़े होड़ा होड़ ।
सती की वार चढे रघुविर टेर ॥ १ ॥
आयुध छतीसे करधरंरे, बकतर टोपनी आव ।
हय गय रथ भट दीयतारे, पायक रयाछे फाव ॥ सतीकी ॥ २ ॥
निज २ रा परिवारसूंरे, जाई मिलीयो साथ ।
शूर रण रसमें रमेरे, मिलीया घाली बाथ ॥ सतीकी ॥ ३ ॥
सिधों सिधावो सिद्ध करोरे, करजो स्वामनो काम ।
मतना पूठ देखाल जोरे, ज्यूं बधसी तुम्ह मान ॥ सतीकी ॥ ४ ॥
विविधा युध भलके तिहांरे, हर्ष वदन हूंसीयार ।
किष्किं धाथी चालीयारे, श्री रघु वर तिणवार ॥ सतीकी ॥ ५ ॥

दोहा मूलगा—

विद्याधर विद्याभली, मिलीया केई कोड़ी ।
वाहर ए सीता तणी, आणी सही बहोड़ी ॥ ६ ॥
आप आपणे साथमें, नौबत केरोनाद ।

अम्बर तो गाजीरयो, सुण्यो न जाये साद ॥ ७ ॥
शुभ[१] वेला शुभ मूहूर्ते, शुभही शकुन विचार ।
गगन पन्थ चाल्या सहु, राघवजीनी लार ॥ ८ ॥

ढाल इकताली शमीं—तर्ज भूली मालण है सत्यगुरु—

'राघव' आवीयोहो, सुभट सघला शूर ।
उदधी नीकलोल, जेम दलनो पूर ॥ राघव० ॥ १ ॥
विविध वाहन विविध वान, विविध वेश विशेष ।
विविध फरहरे विविध नेजा, विविध रथ नरेश ॥ राघव ॥ २ ॥
विविध घोड़ा विविध हाथी, विविध रथ नर होई ।
विविध तो हथियार हाथे, विविध वाजा जोई ॥ राघव० ॥ ३ ॥
विविध डेरा विविध तम्बू, वाडीतो अभिराम ।
विविध भांते सराय चारे, विविध परिवार राम ॥ राघव० ॥ ४ ॥
हाथीया गुल गुले गिरुआ, हयांनो हिंसार ।
शोर तो माचीयो अधिको, रथतणा चित्कार ॥ राघव० ॥ ५ ॥
सिंह नाद सुभट केरा, पड़े कायर प्राण ।
शूर बल सोगुणो वाधे, शब्द नो सुं प्रणाम ॥ राघव० ॥ ६ ॥
कोई तो बैठा विमाने, कोई तो गजराज ।
कोई तो रथ कोई अश्वे, गगने चलिया गाज ॥ राघव० ॥ ७ ॥
उदधि ऊपर अधर चालन्त. वेलधर गिरिपामी ।
वेलंधर पुर पामीयो, तिहां 'समुद्र सेतु स्वामी ॥ राघव० ॥ ८ ॥
समुद्रनी परे दोई दुर्द्धर, दोई शूर सकाम ।
'रामदल' आगले लागे. मांडीया संग्राम ॥ राघव० ॥ ९ ॥
'समुद्र' ने नल बांधीलीयो, 'सेतु' बांध्यो 'नील' ।
'राम' आगे आणी मूक्या. कोई न करी ढील ॥ राघव० ॥ १० ॥
दया करीने देवजी, ते थापीया तिहां थान ।
पहीली थीज जीत मंडी, पुण्यने परमाण ॥ राघव० ॥ ११ ॥
'समुद्रे' सुन्दरा कारे, डीकरी तीन प्रधान ।

१ इस फौजकी चढ़ाई मिगसर वद पंचमी पुष्य नक्षत्रने रविवार की हुई ।

आणी 'लक्ष्मण' भणी दीधी, पामीने सन्मान ॥ राघव० ॥ १२ ॥
रात रही ने प्रातः चाल्या, राय 'सेतु' 'समुद्र'।
साथ लाग्या भर्म भाग्या. हुवा अधिक अक्षुद्र ॥ राघव० ॥ १३ ॥
सुवेलाद्री चाली आया, तिहां राय 'सुवेल'।
जीती लीधो साथ किधो, कान लागी वेल ॥ राघव० ॥ १४ ॥
लंका नगरी प्रत्ये चाल्या, हंस द्वीपे जाय।
'हंस रथ नृप जीतने तिहां, रह्या राघव राय ॥ राघव ॥ १५ ॥
आशनो आवीयो राघव, मोन राशे मन्द।
संचर्यो सबलोही जाण्यो, राय रवीनो नन्द ॥ राघव ॥ १६ ॥
लंकाने ए ग्रह लाग्यो, लंकनो रे विणास।
होय शे एसही जाणो, लोक पाम्या त्रास ॥ राघव ॥ १७ ॥
युद्धने सम्बाहीये अति, होई अति हूंसीयार।
लंकपति सामन्त शूरा, महा झूंझणहार ॥ राघव ॥ १८ ॥
नामथी 'मारित्व' मोटो, 'हस्त' राय 'प्रहस्त'।
सारणादिक सहस केई, निशाचर मदमस्त ॥ राघव ॥ १९ ॥
लंकपति रणतूर ताजा, केई कोडी तेवार।
ताडिवा आदेश आये, शोरनो नहीं पार ॥ राघव ॥ २० ॥
लंकपति सूं लहु आवी, करे ए अरदास।
कांई ऊतावला थाओ, शीचमे सुखवास राघव ॥ २१ ॥
अणविमास्यो काम कीधो, ते पाड़ो कुल लाज।
अजहुं आतुर होईयांथी, नहीं सुधरे काज ॥ राघव ॥ २२ ॥
मुनि श्री रूपचन्दजी कृत, ढाल क्षेपक तर्ज असी रुपये लो कलदार-
अरज करूं मैं वारम्वार, सुनो वीर! थे करो विचार ॥टेर॥
कहै विभीषण सुनहु रावण पाछी देदो थे परनार ॥ अरज ॥ १॥
या नहीं माने तूं क्यूं ताने, जाने सब जग सति सिरदार ॥अरज॥२
प्राण गमासी जात लजासी, गासी तोने सब संसार ॥अरज ॥ ३ ॥

१ मन्द-यानि शनैश्वर मीनराशी का, लंका मेष राशी पर लागा है।

म्हारी आंत तपावे, जिय दुखपावे, जिणसूं कहूं छूं धरकरप्यार ४
इतनी बातां थई है अख्यातां, जातां लंक ने कीधी खुवार ।।५।।
कोड शिला ऊठाई बडी है पुण्याई, न्याई करता पर उपकार ।।६।।
लोक हसासो फिर पछतासो, पासो परभव दुःख अपार।।अरज७।।
थे नहीं जीतो होसी फजीतो, वांका पुण्य है अपरम्पार ।।अरज८।।

(रावणो वाच) क्षेपक तर्ज लावणी की—

कहै दशकन्धर सुनो विभीषण, बात सुणोनी इकम्हारी,
राम रु लिछमन दोय भीलडा म्हारे ऋद्धिनो नहीं पारी ।।कहै।।१।।
कुम्भ कर्ण सा वीर हमारे, प्रबल बली कहो कुन पाले ।
इन्द्रजीत सोजीते इन्द्रने, रणमे त्राण कहो कुणझाले ।। कहै २ ।।
कनक कोट समुद्रसी खाई, भाई विभीषण सुण लीजे ।
सहश्र चार अक्षौहणी म्हारे, नाहक वाद नहीं कीजे ।।कहै ।। ३ ।।
सूरज देव तो तपे रसोई, पवन देवतो अंगन झारे ।
इन्द्र भरेहै उदक हमारे, कहो अबहुं किणरे सारे ।। कहै ।। ४ ।।
वेमाता मुझ दले कोद्रवा, ऋद्धि देख सुरपति लाजे ।
किसं चांदरा करीम म्हारो, तीन खण्ड मैंने साजे ।। कहै ।। ५ ।।
कंचन गिरि सम करीवर राजे, वाजी शोभ अपार लहै ।
रथनी शोभा वर्णीन जावे, पायकनो कुणपार कहै ।। कहै ।। ६ ।।
मारूं राम अने लक्ष्मण दोई, सीता ने करसूं प्यारी ।
विना पूछियां वात करेसो, मूर्ख मांही अधि कारी ।। कहै ।।७।।

ढाल मूलगी—

नारीतो आपणी लेवा, आवीयाछे एह ।
दीयां पाछी वले पाछां, दूधे वरसे मेह ।। राघव ।। २३ ।।
आवीयाछे डिम्भ एतो, सोतो करसे काम ।
नारी लेसे चोट देसे, फेरसे ए ठाम ।। राघव २४ ।।
राम लक्ष्मण रया अलगा, देखीयो ओदूत ।
स्वामी यानी किसी कहेवी, अछे अति आकूत ।। राघव ।। २५ ।।

इन्द्रकी श्री थकी अधिकी, ताहरी छे देव।
कांई-खोवे रंक होवे, एक करी अह मेव ॥ राघव ॥ २६ ॥
इन्द्र जीत कहन्त काका, जन्म डरपण आहि।
दूषित कीधूं तातनूं कुल, तात सहोदर नाही ॥ राघव ॥ २७ ॥
इन्द्र जीत ए नाम म्हारो. इन्द्र जीतूं जंग।
कौण लक्ष्मण राम.राजा, रहै तुं रसरंग ॥ राघव ॥ २८ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज- होरी की-सुराणा धूलचन्दजी कृत—

इन्द्रजीत कहै सुण काका, थे दूध लजाया माका ॥ टेर ॥
रावण राय नरांसुर नायक, खण्डत्रय जश जांका।
पकड़ी टेक कवहु न छोडे, थे क्यों करो निकमा हाका ॥
जानो नहीं पराक्रम म्हांका ॥ इन्द्रजीत० ॥ १ ॥
राम रु लिछमन दोय भीलड़ा, बनमांही वास उनोंका ॥
दल बलको कछु जोर न जिनों के, निकमा बतावो श्राका ॥
जानों नहीं तेज लंकाका ॥ इन्द्रजीत० ॥ २ ॥
चक्र पड्यां देवेला वारो, ए लक्षण हैं थांका।
निर्वल शीख देवे क्षत्री कूं, धिक् २ जन्म जिनांका ॥
लेवां सही जीत पताका ॥ इन्द्रजीत० ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी—

पेला थे छेतर्यो रावण, भाखी झूठी बात।
मारीयो मैं राय दशरथ, एह तुझ अवदात ॥ राघव० ॥ २९ ॥
इहां माहरी दाढ मांहै, आवीया छे दोय।
चाहै छो ऊवारीयां तूं, सगो नहीं अरिहोय ॥ राघव० ॥ ३० ॥
जाणीये छे राम मिलीयो, वात मांहीं विचार।
कूप पाणी जिस्यो होवे, तिस्यो चढस मझार ॥ राघव० ॥ ३१ ॥
लहु भाखे पुत्र सांभल, नहीं अरिसूं नेह।
जिसो देखूं तिसो भाखू आवीयो तुम छेह ॥ राघव० ॥ ३२ ॥
पुत्र नहीं तूं शत्रु सरिसो, करण कुलनो छेद।
दूधनो मूंडो थारो, कांई जाणे भेद ॥ राघव० ॥ ३३ ॥

स्वामी कामी पणे पिता तब, अंध मांही गिणाय।
जन्म अंध समान तूंतो, आज थकी कहिवाय ॥ राघव० ॥ ३४॥
पुत्र अने चारित्र ताहरे, भलो पणो न देखाय।
भाईजी हूं किसूं भाखे, लंक तो न रहाय ॥ राघव० ॥ ३५ ॥

क्षेपक सवैया

लंकसे दुरग तेरे, संग कुम्भकर्ण जैसे।
बडे बडे बांके योध कहीये कृपानकी ॥
पाणीसे फरास कीनो,, चन्द्रनिशा निवास लीनो।
रवि है रसोया और, कहा करी है वखान की ॥
रानी है मन्दोदरी निधानी, रूप रम्भा जैसी।
गाजे गज राज द्वार, टोटणा खजान की ॥
कहत विभीषण तूं तो, जानकी फेर देवो।
जानकी न लायो है, निशानी घर जानकी ॥
एकही जो सुभट भट, विकट बजरंग जैसे।
कैसे २ कीना काम, थांसूं कहा छानकी ॥
बाग कूं उखार्यों, इन्द्रजीत कूं पछार्यों।
लंकक्रूं प्रजाल्यो है, भग सिकान की ॥
आयो अब राव तुम भागके, छिपोगे कहां।
पागह्रपे आंण काल, लागो तप वानकी ॥
कहत विभीषण तूंतो, जानकीको फेर देवो।
जानकी न लायो है निशानी घर जानकी ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

वचन सुन कोपही धरतो, अरिकी प्रशंसा करतो, बोले यूं मुझ सेती लरतो। खड्‌ग ग्रही विभीषण ने मारूं, पछे हूं वंछित ही सारूं ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ८१ ॥

ढाल मूलगी—

एम सुणतां राय रावण कोपीयो असराल।
खड्ग काढी मारवाने, उठीयो ततकाल ॥ राघव० ॥ ३६ ॥

विभीषण ऊठीयो सामो, सामो लाग्या चीर ।
कुम्भकर्ण ने 'इन्द्रजीत' ज, धाई आया धीर ॥ राघव० ॥ ३७ ॥
विचे पड़ीने कीया अलगा, हाथीया जेम सोई ।
चित्त फाट्यो रायजीनो, मेलवे नहीं कोई ॥ राघव० ॥ ३८ ॥
मत रहो मुझ नगरमांहै, अलग जाजे दूर ।
उणही ने भेलो होई, रहै राम हजूर ॥ राघव० ॥ ३९ ॥
मारीये छे सांच बोलो, झूठे जगपती आय ।
विभीषण सो भलो भाई, नावीयो नृपदाय ॥ राघव० ॥ ४० ॥
रायने पगे लागी चाल्यो, लेई निज परिवार ।
तीश अक्षौहणी लसकर, लागीयो तसु लार ॥ राघव० ॥ ४१ ॥
हंस द्वीपे चाली आयो, रामने दरबार ।
सुग्रीवादिक ताम राजा, करे शौच अपार ॥ राघव० ॥ ४२ ॥
वैरियों विश्वास न होवे, तेहीमें ए रक्ष ।
स्वामीजीना अति जतन करवा, कहै प्रभु प्रत्यक्ष ॥ राघव० ॥४३॥
मोकल्यो जन राम पासेः खबर करवा हेत ।
रामजी 'सुग्रीव' सामा, मांडीरया नेत ॥ राघव० ॥ ४४ ॥
कहै कपिपती राक्षसानो, न ऊपजे विश्वाश ।
भेद लेही मांहीलो हूं, भाखिससो उल्लास ॥ राघव० ॥ ४५ ॥
ताम एक 'विशाल' खेचर, भाखही सुविशाल ।
धर्मपक्षे धर्मात्माए, धर्मनो प्रतिपाल ॥ राघव० ॥ ४६ ॥
सती सीता तणी करतां, वीनती नृप साथ ।
खीजीयो अति राय रावण, काढियो ग्रही हाथ ॥ रावण० ॥४७॥
चौरने चांनणो ना गमे, झूठ न गमे साच ।
लम्पटांने शील न गमे, एह साची वाच ॥ राघव० ॥४८॥
जाई आगे हाथ साही, राम आणे मांहीं ।
पाय पड़तां लेई ऊंचो, मिल्या प्रभु गले बांही ॥ राघव० ॥४९॥

क्षेपक तुलसीकृत रामायण में से

बहुरी रामछ विधाम विलोकी, रह्यो ठठकि इकटक पग रोकी ।

भुज प्रलम्ब कंजारुण लोचन, श्याम लगात प्रणत भय मोचन ॥
सिंह कन्ध आयत उर सोहा, आनन अमित मदन मनमोहा ॥
नयन नीर पुलकित अति गाता, मनधरि धीर कही मृदुवाता ॥

ढाल मूलगी—

कुशल पूछे वार वारही, पूज्य तुम सुपसाय ।
आज धन्य दिन माहरोरे, देव दर्शन पाय ॥ राघव० ॥ ५० ॥

क्षेपक दोहा—

श्रवण सुयश सुनी आवऊ, प्रभु भंजन भयभीर ।
त्राहि २ आरति हरण, शरण सुखद रघुबीर ॥

अनुज सहित मिल ढिग बैठारी, बोले वचन भक्त भयभारी ।
कह लंकेश सहित परिवारा, कुशल कुठाहर वास तुम्हारा ॥

ढाल मूलगी

आवो इहां आघा बेसो, आज ऊपज्यो प्रेम ।
वात पूछे हीयो खोली, दूबलाछो केम ॥ राघव० ॥ ५१ ॥
आवीयो ते घणा दिवसे, एहवा भला बोल ।
जिहां लाभे तिहां जाता, मानवी निर्मोल ॥ राघव० ॥ ५२ ॥
वचन ना रस पके छूटो, भाईजी भल भूप ।
वचन से रस राम सेव्यो, वचन रूप विरूप ॥ राघव० ॥ ५३ ॥
विभीषण कहे रामजीसुं, भाईजी ने छोडि ।
आवीयो सुग्रीव जेम तेम, जाणीयो समजोडी ॥ राघव० ॥ ५४ ॥
राम लक्ष्मण ताम भाखे, करो ए तसलीम ।
लंकनी वखसीस तुमने, हियुं हुवो हीम ॥ राघव० ॥ ५५ ॥
ढाल इकतालीशमींए, लंक आपी ईश ।
'केशराज' कहत अवसर, आवीया वखसीस राघव० ॥ ५६ ॥

दोहा (केदार रागे)

'हंसद्वीप' दिन आठ रही, आगे आवे जाम ।
धरती दीठी मोकली, खेत जड़ावे ताम ॥ १ ॥
ऊंची नींची समाचरे, धरती थाल समान ।

लांब पणे चवड़ा पणे, जोजन बीश प्रमाण ॥ २ ॥
वेला साधी वेगधं, कीधो कटक पड़ाव ।
राक्षस दल देखण तणो, आणे चित में चाव ॥ ३ ॥
ध्वनी शब्द सायर तणो, राम कटकनो साद ।
लंकातो बहिरी हुई, कोला हलनो नाद ॥ ४ ॥

क्षेपक ढाल मूलगी—

मन्दोदरी 'रावण' समझावे, वार ए पुनरपि नहीं आवे, कन्ता ! क्यूं दिलमें नहीं लावे । रामको तेज है भारी, प्रशंसे सारा नरनारी ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ८२ ॥

क्षेपक सवैया—

जेठ सुरापति जोय, एम आसाढज आणी,
श्रवन न-चले सोस, जन्तु भाद्रवा वस जाणी ।
अममन है आसोज, कन्त कुल काती वेसी,
मिगसिर दीनो माग पोह माह आयां पेसी ॥
नगराज भणे फागुन निकट, चेत २ कहै सावरी,
वैशाख एम वनिता वेद रखो सीत मती रामरी ॥

दोहा क्षेपक—

बर सीया रो आवीयो, ऊनालो घन जान ।
चर सायत में जावसी, राज ऋद्धि सन्मान ॥
वीराणी रहसी नहीं, रहसी सुथारी ।
सोनारी जासी परी, कडै भाभी कुम्भारी ॥

धूलचंदजी कृत,

ढाल क्षेपक तर्ज सावण आयो हो म्हारा सोजतिया सरदार ।

रघु पतिआयो हो म्हारा हठभीना भरतार, लंकेश्वर रघु०
म्हारो जिय दुःख पायोहो, म्हारी अरजी लो अवधार ॥ लं० ॥१॥
थेतो काढ्यो भाई हो, थांरे कांई आई मन मांय ॥ लंके० ॥
थेतो कुबुद्धि कमाई हो, कीधो काम अन्याय ॥ लं० ॥ २ ॥
जो कुशल चावो हो, थेतो सूंपो पाछी सीत ॥ लं० ॥

जरा मन मांही लावो हो. थे क्यों होवे फोगट फजीत लं० ॥३॥
आतो कामन आसी हो, थांरे करतां ही कोड़ उपाय ॥ लं० ॥
थांरी लंका जासीहो, थेतो मांनो म्हारी माय ॥ लं० ॥ ४.॥

मुनि श्री रावतमलजी कृत ढाल क्षेपक–तर्ज–सीता माता की–

भाखे मन्दोदरी महाराज ! सूंपदो सीता सुन्दरी (टेर)
थांरे नारी सहस अठार, प्यारे राखो तिनसे प्यार।
मानो इन्द्राणी अवतार, रूपमें देखो पुरन्दरी ॥ भाखे० ॥ १ ॥
कन्ता अजहुन विगड्यो काज, जो तुम्ह मान लेवो महाराज।
नहींतर जातो दीसे राज, पिछे पिछतासो पिया आप साप ज्यूं ग्रही छुछुन्दरी ॥ भा० ॥ २ ॥ तट के बोल्यो रावण ताम, तेरी नाठी अकल तमाम, अब नहीं रयो बोलण को काम, परी जाय पीहर भीड़ मिटजाय, क्यों लप २ करे लपुन्दरी ॥ भाखे ॥ ३ ॥

श्री राममुनि कृत ढाल क्षेपक तर्ज–सगीजी ने पेड़ा भावे।

थे किम भूला राजवी, आघर जाव्रण रा बात, मन्दोदरी यूं समझावे। मनमें सोचो सायवा, वो गृध लड़ियो तुम साथ ॥ मन्दोदरी ॥ हां पियुने यूं समझावे ॥ टेर ॥ १ ॥
वानहीं वंछे सायबा, थे किम खोवो राज ॥ मन्दो० ॥
बन्दर राजा बदलीयो, और रघुवर आयो गाज ॥ मन्दो० ॥ २ ॥
पद प्रणमीने वीनवूं आप क्यूं कियो सीता लाय ॥ मन्दो० ॥
करणी देखी दूतकी, सब लंका दीवी है धुजाय ॥ मन्दो० ॥ ३ ॥
अब राय आये चमु लेईनें, सो करसी कौन हवाल ॥ मन्दो ॥
सीता लीधां विन नाफिरे, कुण छोडे आपनी नार ॥ मन्दो ॥ ४ ॥
शोत निशा समजानकी, और तब कुल कमल विनास ॥ मन्दो ॥
निज सचिव संग देईने. आमेलो रघुवर पास ॥ मन्दो ॥ ५ ॥
राम बाण अहिगण सारीसा. निकर निशाचर भेक ॥ मन्दो ॥
जां लग ग्रसंतन तालंगे, जतन करो तजटेक ॥ मन्दो ॥ ६ ॥

क्षेपक ढाल मूलंगी–

रावण तो बात नहीं माने, रूढ़ी इक आपरी तांने, मेरात पराक्रम

नहीं जाने । कुणहै राम मुझआगे, देखत शिखी सर्प ही भागे ॥ सत्य ॥ ८३ ॥

दोहा मूलगा—

सम्बाहै शूरातणा, पहिरे वकतर टोप ।
प्रहस्तादिक सामन्ता, ओपे आछे ओप ॥ ५ ॥
कोई तो हाथी चढ्या, कोई हय असवार ।
कोई सिंहां ऊपरे, चढि मिल्या तेवार ॥ ६ ॥
कोई खर रथ बेसीया, कोई पलाणे महीप ।
कोई महिषीये बेसीया, कोई विमान विशेष ॥ ७ ॥
आप आपणा साथसू, आप आपणो जोर ।
महेलो देई स्वामीने, ऊभा बांधी कोर ॥ ८ ॥

क्षेपक ढाल मूलगी

रावण को हुकमहीपावे, मिलण मिस निज २ घरआवे, सुभट सहुमनमे ऊमावे । मात कहैं सुनहु पुत्र प्याग, लजाजे दूधमत म्हारा ॥ सत्य ॥ ८७ ॥ कायर की माता इमभाखे, शूर को मनमें डरराखे, आयां वंग खाल परोताके । आपांणे सुजश नहीं चहीजे सुखे घर आयने रहीजे ॥ सत्य ॥ ८५ ॥

स्वामी श्री चौथमल्लजी कृत क्षेपक ढाल तर्ज हांक मतिकर गर्व दिवाना—

हांपिया१ पांतर मति जाईजो, ज्यूं त्यूं कर थे पाछा आईजो ।
नाहक देणोंजीव नाम थे मति मंडाई जोरे ॥ पिया ॥ १ ॥
मियां बीबी दोनोंही राजी, कांइ करे झकमारे काजी ।
जराक अर्जी मान सवलसे थे गम खाईजोरे ॥ पिया ॥ २ ॥
पटा पुलीरी गर्ज है किनके, दायपडे तो दीजो उनके ।
गुप चुप सेरीताक धणीरी निजर चुराइजो जी ॥ पिया ३ ॥
बाल पणामें टाबर लारे, उनको तुम्ह विन कुण रखवाले ।
होसी कौण हवाल पिया, इम मनमें लाईजोजी ॥ पिया ४ ॥
जबर काम झगडा को कहवे, मुस्किल पाछो आवन देवे ।
जोग मायारी महर पिया थे मत घबराईजोजी ॥ पिया ॥ ५ ॥

कायर की नारी इमबोली, हूछूं लारे वाली भोली।
चौथमल्ल कहै सुभटांने, नथमाल मनाई जोजी ॥ पिया ॥ ६ ॥

(वीराङ्गना का निज पतिसे कथन)

स्वामी श्री चौथमलजी कृत चेपक ढाल तर्ज गांधणजीरी—

ललितांगी वाणी लवेहो नरवरजी. थे राठोडी रजपूत भागमत आ ईजोहो नरवरजी उचक कुम्भ स्थल भान जोहो नर० हाथी इन्दा मजबूत अजस मति लाई जोहो ॥ नर ॥ १ ॥ दपट झपट रिपु ढायजोहो नर० म्हारे लाजो मोतियन कीमाल, भूलमत आईजो हो नर। मगरूरी करजोमति हो नरवरजी अहंकार निगुण आगार। प्रभु गुन गाई जोहो. नर०॥२॥ सामी छतियों झघड़जो हो नर० थांरो नाम असल रणधीर ॥ अरज महाराजसूं हो नर०। कायरता करजो मतिहो नर० ज्यां लगे कलेजेतीर ॥ वीर वधु वाजसूं हो नर ॥ ३॥ मतवजो अपच्छर भणीहो नर० थे जराक कीजो देर ॥ लेर में आसूं हो नर० शीघ्र सिधावो सिद्ध करो हो नर० चौथू कहै हो खेर नाथ गुरु ध्यासूं हो नर० ॥ ४ ॥

दोहा मूलगी—

रोपकरी अति रातड़ो, शूरांनो सुलतान।
विविधायुध करी पूरतो, रथ बेठो राजान ॥ ९ ॥
करण[1] पिता सम तेजकरी, कुम्भकर्ण दुरदन्त[2]।
शूल दण्ड हाथे ग्रहो, आयो अति मय मन्त[3] ॥ १० ॥
कर्मेता[4] कुंवर महा, इन्द्र जीतजी जोय।
'घनवहान[5]' रावण तणा, दोई दण्ड ए होय ॥ ११ ॥
कुंवर अवर संग्राहीया, 'मय' 'सुन्दादि' अनेक।
'शुक्र' 'शारण' मारीचसूं, भट सामन्त सटेक ॥ १२ ॥
अक्षौ[6] हणी ना सहश्रनो, पारन पावे कोई।

---

१ सूर्य— २ बलवान = ३ मदमन्त = ४ कर्मवन्त = ५ मेघवाहन = ६ ॥ अक्षौहणी प्रमाण ॥ इकवीश हजार-आठ सो ने सीतर हाथी, इतना ही रथ। पेंसठ हजार छसो ने दश घोड़ा। एक लाख नव हजार तीनसो पचास योधा।

रावण सामो आवही, हुंसियारी में होई ॥ १३ ॥

धूलचन्दजी कृत. ढाल क्षेपक तर्ज हांरे कायथड़ा रंगरो रसियो महिलां में

हांरेक ललना ' रावण ' लड़वा आवीयो, हां-होईने हुंसीयारो रे
ललना गजरथ ऊपर बेसने हांरेक—धरतो अंग अंहकारोरे ललना ॥
जगत्रय तृण सम जाणतो, हांरे-रावणजी तिणवारोरे ललना ।रा०।१।
हांरे-विविध परे कर वीस में, हां ? आयुध धरतो आपोरे ललना ।
थर हरावे मेदनी, हां-धरतो अति सन्तापोरे ॥ ललना ॥ रा० ।२।
हां-बांका जोध सुभट जीके, हां-पोरुष धरता पूरोरे ललना ।
एक २ थी आगला, हां-शूरां मांही शूरोरे ललना ॥ रावण ॥ ३ ॥
हां-अक्षौहणी चउ सहस ले, हां-चालण लागो जामोरे ललना ॥
लंका बारे नीकलतां, हां-शुकनथया निःकामोरे ॥ ललना ॥ रा० ।४।
हां-विष डावा खर जीमणा, हां-सामो वाजे वायोरे ललना ।
बीली बोवाडा करे, हां-दिशा राती देखायोरे ललना ॥ रावण ॥५॥
हां-शकुन वारन्ता चालीयो, हां- वरजे लोक अपारोरे ललना ।
अभिमानी मांनेनहीं. हां-नहीं मिटे होवण हारोरे ललना ॥ रा० ।६।

ढाल वंया लीशमीं—

तर्ज खड़को— (भूलणा छन्दमेंभी गासकतेहैं)

आवीयो रावण लोक डरावणो, रावण रावलो पार नावे ।
छाईयो अम्बर कटक आडम्बरे, खबर निज परतणी कोन पावे ॥आ॥१
कोई हरिकेतु[१] कोई रे अष्टापद, केतु कोई गजराज केतु ।
मोर मंजार अहि कुर्कुट[२] केतुने, सुभट स्वामीतणा अधिक हेतु ।आ. २।
दण्ड कोई ग्रहे खडग कोई संग्रहे, कोई निज मुष्ठिए सेल[३] साहे ।
कोई मुद्गर परिघाये[४] कुठारीका[५] शूल साही मनमें ऊमाहे ।आ. ३।
बीश योजन लगे राम दल विस्तरे, अपर पचास जोजन प्रमाणे ।
सुभट बोलावता धैर्य डोलावता, एकसं एकतो अधिक ताणे ।आ. ४।
आप स्वामी तणी श्लाघ्यता[६] अति घणी करत निन्दा पर स्वामी केरी ।

१ सिहका चित्रवाली ध्वजा (केतु ध्वजा) । २ कूकड़ा । ३ पत्थर । ४ भोगल । ५ कूहाड़ी । ६ प्रशंसा (तारीफ)

तूं कुणरे अछे तूं कुणरे अछे, आपसमें रे भाखे घणेरी । आ० ५ ।
गच्छरे[1] गच्छरे[2] तिष्ठ रे तिष्ठ रे, मत डरे आयुद्ध अलग नांखी ।
नहीं तर एह आयुद्ध सम्भालीले, आवी उरहो बजाव चोट चाखी ॥६॥
बाण वर्षे घणा विविध भातितणा, चक्र परिधा गदा फरसी खांडा ।
दण्ड मुद्गर करी चोट करवे खरी, राक्षसा वांनर लड़ता चांडा ॥७॥
वानरा राजता जेम तरु भाजता तेम राक्षसा तत्र जाय भागा ।
हस्त प्रहस्त उद्धन्त बलवन्त अति, वानरा साथेतब आयलागा ।आ ।८।

ढाल क्षेपक—तर्ज हांरे कायथडा—

हांरेक ललना 'हस्त' प्रहस्तंज आवीया, हांरे-सामा 'नल' ने 'नीलो' रे ललना विविध प्रकारे युद्ध थयो, हांरे-झुंझे चारुही वीरोरे ललना रावण लडवा आवीयो ॥ टेर ॥ ६ ॥
हांरे-हस्तराय शर अगनीनो, हां-नल ऊपर मेलन्तो रे ललना ।
जलशर करने ठेलीयोरे, हां-मनमें रोष धरन्तोरे ललना रा० ॥७॥
हांरे-रोष भरी रण आफल्या, हां-कसगन राखी कायोरे ललना ।
दिन आथमतां मारीया, हां-राक्षसने दोनूं भायोरे ॥ ललना रा० ।८।

ढाल मूलगी:—

'हस्त' 'नले' मारीयो 'नील' 'प्रहस्त' ने, अम्बर पुष्पनी वृष्टि हुई ।
'रामदल' गाजीयो एह दल लाजीयो, प्रातः नृप मोकले फोज जुई ॥ आ० ॥ ९ ॥ राय[3] 'मारीच' 'शुक्र' 'सारण' 'सिंहरथ' 'अश्वरथ' 'चन्द' 'रवि' ने 'उद्धामा' । 'मकर' 'ज्वर' 'भूप' 'कामाक्ष' 'गम्भीर' 'सिंहजघन्य' 'विभीत्सव' 'शम्भु' सकामा ॥ आ० ॥१०॥
'मदन' 'अंकुर' 'सन्ताप' 'पृथित' नामथी, 'आक्रोश' 'पुष्पास्त्र' 'सुविघ्न' नामा । 'दुरति' 'नन्दन' 'कर प्रीति' 'सुदुर्द्धर' वानरा राजीया एह अक्षामा ॥ आ० ॥ ११ ॥ राय 'मारीच' 'सन्ताप' वानर हण्यो, 'नन्दन' वानरे 'ज्वर' त्रिणास्यो । राक्ष 'उद्दाम' कपि

---

१ जा । २ ठहर । ३ दशमीं गाथा में जितने राजाओं का नाम है वे सब राक्षसों की फौज की तर्फ के हैं ।, २ ग्यारहवीं गाथा में जो राजाओं के नाम अङ्कित किये गये हैं वे सब के सबही राम सेना की तर्फ के सुभट हैं ।

'विघ्न' मारीलीयो, 'दुरिते' 'शुक' मारी जमगेह वास्यो ॥आ० १२॥ 'सिंहजघन्ये' हण्यो 'पृथितवर' वानरे, एटले सूर्य पण अस्तपामे । दोनों दल हव्या जे मुआते घव्या, प्रातः फरी मांडीया सुयश कामे ॥ आ० । १३ ॥ कपि सुभट मध्ये गजरथ वैमी नृप, आवीयो विविध आयुद्ध धारी । रामसैना प्रते प्रवल बल धारके, माचीयो एह संग्राम भारी ॥ आ० ॥१४॥ 'रावण' राय हुंकार करवे करी, राक्षस चरण रण विवय रोपी रहीयो । वानग पग खस्या जाय पाछा धस्या, अवसर ताम 'सुग्रीव' लहीयो ॥ आ० ॥१५॥ सलह सन्नाह करी धनुष्य वर कर धरी, राक्षसांने मुखे जाम आवे । ताम 'हनुमन्त' भाखन्त 'सुग्रीव' सूं, देव ! अब तुम रहो आप दावे ॥ आ० ॥ १६ ॥

क्षेपक सवैया—

वानर ईश चढे रणमेंजद, पौनके पूत पुकार करीहै ।
तिष्ठरहो तुमपृष्ट रखोमुझ सृष्टिको नष्ट करीके करीहै ॥
मावत ना तल त्रानहूमें बलको वचले हमसे अधरीहै ।
यौंकह मान लयो सवपे, रथ पौंनसे वेग सवारी करीहै ॥ १ ॥

ढाल मूलगी—

चढ्यो 'हनुमन्त' दुर्दन्त दलने दले, राक्षसोंनूं मुख आवी रोके । ताम वावो१ धनुष्य वाण सम्भाल के, 'हनुमन्त' वीर ने आवी रोके ॥ आ० ॥ १७ ॥ 'हनुमन्ते' अस्त्रघन छेदी वावा तणां, कहै रे बूढा तुं तो कोंई चाहै । पंच परमेष्ठी गुण परभव साधणो, बापजी लोटवो छेरे लाहै ॥आ०॥१८॥ एम सुणी ताम 'वज्रोदर' आवीयो, कहै रे अज्ञानमें तूं कांई बोले । आव उरहो चलीजेरे अतुलीबली, हम तुम जोड़ छे एक तोले ॥ आ० ॥१९॥ केसरीनी परे शब्द हियड़े धरी, आवीयो वीर 'हनुमन्त' हाकी । सोई मारी लीयो वज्रनो तृण कीयो, पाछले कांई राखीन बाकी ॥आ०॥२०॥ जम्बूमाली२ नृप नन्दन आवीयो, सोई ऊपाड़ी के नांखी दीनो ॥

१ माली राक्षस । २ रावणपुत्र ।

राक्षस 'महोदर' प्रमुख बहुला मीली, अंजना अंगज घेरी लीनो ॥आ०॥२१॥ कोई तो भुज विषे कोई तो मुख विषे, कोई तो पग विषे कोई छाती । कोई तो कूखे कीया सयल मारी लीया, हनुमन्त वीरनी रीस ताती ॥ आ० ॥ २२ ॥

क्षेपक सवैया

बान चले कपिके करते कुलटा चख तामस ना चपलाई।
ना झखरी जवता जल में, मनकी चपलासुत पौंनसीं नांई ॥
बान संधानरु ऐंचिवो छुटिवो ठीकन प्रानकी बाजी जीताई।
बोलत है परवाहनीके रंगहै रंगहै रंगहै इनके पितु माई ॥ १ ॥

ढाल मूलगी—

सायर वीच वडवानल१ शोभतो, राक्षमां वीच ए वीर सोहै । भांजीया सयल ही ऊगतो सूर ज्यूं, जेमरे तिमिरनो खोज खोहै॥ आ० ॥ २३ ॥ राक्षसां भंग देखी अति कोपीयो, 'कुम्भकर्ण' ज तब आप धायो । देव ईशान जिम शूल हाथे ग्रह्यो, कायरां धीरज थर थरायो ॥ आ० ॥ २४ ॥ कोई पाये हण्या कोई कूर्पुर२ हण्या, कोई हाथे हण्या अधिक त्रास्या । कोई मुद्गुर हण्या कोई त्रिशूले हण्या, कोई अन्योन्य कपि एम विणास्या ॥आ०॥ २५ ॥ देखी बलवन्त 'सुग्रीवजी' धाईयो, धाईया 'दधिमुख' ने 'महेन्दो' । धाईया 'कुमुन्द' 'अंगद' 'प्रभु शालक'३, धाईया खटही म्होटा नरेन्दो ॥आ०॥२६॥ ए खट भूपने 'कुम्भकर्ण' ज लड़े, अम्बरे देव देखे तमासो । विविध पर बाणनो मेह वरसावतो, योगिणी आपमें करत हासो ॥ आ० ॥२७॥ नींद बाणे करी नींद विकूर्वणा, राक्षसे नींदवल शयन कीना। जागृत बाण सूं ताम सुग्रीवजी, तेरे सघलाई ऊठाई लीना ॥आ०॥ २८ ॥ 'कुम्भकर्ण' ज तणो रथने स्वारथी, सुग्रीव राये तब भांजी राल्यो । मुद्गर करग्रही कपिपति ऊपरे, आवीयो सो नहीं टलेही टाल्यो ॥आ०॥ २९॥ अंगने वायरे वानरा गिरिपड़े, रायवर स्फर्शथी जेम वृक्षो। मुद्गरे भाजके ताम टुकड़ा

१ समुद्र की अग्नी । २ खूणी । ३ भामण्डल ।

कीया, सुग्रीव रायनो रथ अत्यक्षो ॥ आ० ॥३०॥ 'सुग्रीव' रायजी एक शीला मोटकी। रावणानुज[1] तणे शिरही पाड़े। मुद्गरे तोडी नांखत सो दश दिशे. रजतणी वृष्ठी अधिकी उडाडे ॥आ०॥३१॥ अम्बर छाहीयो कांई सूजेनहीं, लोकना नयन मुख रजही भरीया। ताम, सुग्रीव जल बाणने मूकवे, रजही वैसाडी प्रकाश करीया ॥आ० ॥३२॥ ताम वानरपति राक्षसां ऊपरे, रोषसूं मोलियो तडित घात। तेह ने कोई उपचार लागेनहीं. मूर्च्छियो तवकरे धरणी पात। आ० ॥३३॥ रावण उठीही ताम संग्रामने ताम सुत इन्द्रजीत आई आगे। वीनवे बापने छोड सन्तापने. कवण आगे तूंतो युद्ध मांगे ॥ आ ॥ ॥३४। नहीं यम वरुण नहीं नहींया 'कुबेरजी', 'इन्द्र' सोतो तोसे नांय जीतो। ओघर चाकर ए अछे वनचर, ऊखलो कूटवो छेरे रीतो ॥ ३५ ॥ आपो आदेश मुझ एह संग्रामनो, दूरथी देखजो काम म्हांरो। बापड़ा वानरा पान पाने करुं, जाणजो जाईयो तोरे थांरो ॥ आ ॥ ३६ ॥ होई सन्नद्ध बद्ध ने युद्ध में आवीयो स्वमुखे सहुने ताम प्रचारे। किहांरे सुग्रीव हंनुमन्त किहां लक्ष्मण राम जे चोट म्हारी सहारे ॥ आ ॥ ३७ ॥

स्वामी श्रीरावतमलजी म० कृत क्षेपक ढाल तर्ज—ख्यालकी

सुरपति जित आयो, सैना घबराईरे श्री रघुनाथकी ॥ टेर ॥
इन्द्र जीत को आय देखी, भट सहु भागन लागा।
पड़ी खलबली पेटमेसरे है, प्राण पडन की जागाजी ॥ सुर ॥ १ ॥
लक्ष्मण लुक बैठांकिहां सरे लेकर बिलकी ओट।
बिल बाहीर झट आउरोसरे. चाख हमारी चोटजी ॥ सुर ॥ २ ॥
कपिपति यहां से किहां गयोसरे, रयो कहां रघुनाथ।
रण भूमीमें रंग सूंसरे, वेग बतासू हाथजी ॥ सुर ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी—

त्रासीया वानरा साथ इम बोलीयो, नांखी हथियार तुमअलग होवो। अणरे झ झन्तांने मारवा नियममुझ, थेरे थांरीजई नींद

[1] कुम्भकर्ण।

सोचो ॥ आ ॥ ३८ ॥ जीभ करवे किस्यूं आव मुझ सामुहो, वान राय तब आवी अड़ियो । मेघवाहन संघाते भामण्डलू, अस्त्र करी अधिक लड़ियो ॥ आ ३९ ॥

क्षेपक ढालतर्ज हांरे कायथड़ा—

हांरेक ललना इन्द्रजीत आवी अड़ीयो, हां वन्दर पतिने साथोरे ललना अस्त्र शस्त्र अति चालवे, हां--ह्द दोयों रा हाथों रे ललना रावण लड़वा आवीयो ॥टेर॥ १ ॥ हांरेक ललना इन्द्रजीत मेघवाहनजी हां मूके शस्त्र करारोरे ललना ॥ वन्दर तोड़े तेहने, हां नहुई जीतने हारोरे ॥ रावण ॥ १ ॥

ढाल मूलगी—

दिग दिशीनाहोवे हाथीया जेहवा, तेहवा चारही एह दीसे । हूंसतो कौन राखन्त लड़वेकरी, आपमें ऊछले अधिक रीसे ॥आ॥ ४०

क्षेपक ढाल तर्ज पूर्ववत्—

हांरेक ललना वेहूं बंधव मन चिन्तवे, हां आया अति मण्डाणोरे ललना । काजन सरीयो आपणो, हां कीजे के हितकाणोरे ललना ॥ रावण ॥ ११ ॥ हां-इन्द्रजीत अहि पासनो, हां-मूके बाण तिवारोरे ललना । राय 'सुग्रीव' ने बांधीयो, हां-भामण्डल (ने) मेघ कुंवारोरे ललना ॥ रावण ॥१२॥ हां-ऊठाई रथमोंयने, हां-नांख्या तेह तिवारोरे ललना । लंका सांमी चालीया, हां-जेज न कीधी तिवारोरे ललना ॥ रावण ॥ १३ ॥

ढाल मूलगी—

'इन्द्रजीत' 'मेघवाहन' अहिपासनो, अस्त्र मूके न चूके रे सोई । राय 'सुग्रीव' 'भामण्डल' बांधीया, तामतो जोर न चलन्त कोई ॥ आ० ॥ ४१ ॥ करत उपचार सज्ञा लेई ऊठीयो, रोष करतो अति कुम्भकर्णो । वीर हनुमन्त मार्यो गदा घावशूं, मूर्च्छियो तब ग्रहै धरणी शरणो ॥ आ० ॥ ४२ ॥ ताम ऊठाय के काखमें चांपीयो, कुम्भकर्णें 'हनुमन्त' वीरो । एकथी एक अधिका कही दाखीया,

१ सुग्रीव ।

लटकतो जाय तेहनो शरीरो ॥आ०॥४३॥ लहु कहै रामसूं रावला बलविषे, प्रबल बल धारका एह दोई । आनन१ अधिक ऊपर अछे तोही पण, सोह पावन्त ए नयन दोई ॥ आ० ॥ ४४ ॥ बांधीया एह दो रायने नन्दने, लंक मांही जब लगे न जाई । तब लगे उद्यम कीजीये आकरो, पामीये सुजश अति एह छोड़ाई ॥ आ० ॥४५॥ 'कुम्भकर्णे' 'हनुमन्त' जी काखमें, चांपियो एह विपरीत मांही । विना 'सुग्रीव' 'हनुमन्त' 'भामण्डल', सैन सघलो अछे शून्यग्राही ॥ आ० ॥ ४६ ॥

मुनि श्री रावतमलजी कृत क्षेपक ढाल तर्ज–ख्याल की

कोई अकल उपावोरे, बन्धन छुडवावो जावो वेग सूं ॥ टेर ॥
सुनो श्री 'रघुनाथ' तिहारे, सैना के शिरमोड़ ।
अधिपति अपनी फौजका सरे, ताजा फल लीया तोड़जी ॥कोई॥१॥
तीनों विनां तिहारी सेना, सघली दीसे सूनी ।
रसवती नव २ भांतकीसरे, एक कसर अन्नलूनी ॥ कोई ॥ २ ॥
सुन्दर वर्ण शरीर श्यामजी, जिणमें रयो न जीव ।
काम नगारी कामिनियों का, पहूंतो परभव पीवजी ॥कोई॥ ३ ॥
कहै 'अंगद' कर जोड़ने सरे, राम ! गरीब निवाज !
हुक्म हुवे हनुमन्त वीर को, लाऊं छुड़ाई आजजी ॥ कोई ॥४ ॥
हुकम हुवां सूं 'अंगद' चाल्यो, बालक 'रूप' बनाय ।
कुम्भकर्ण के लारे लारे, रोतो रोतो जायजी ॥ कोई ॥ ५ ॥
बाबा बाबा बापजी सरे, आऊं तुम्हारे साथ ।
रणमांही यहां कुण तुम लायो, यों कही पकड़ीयो हाथजी ॥ ६ ॥
ख्याल करन्तां धोती खोलसे, चालकतो गयो नास ।
धोती पकड़तो है कर ढीला, हनुमन्त उड्यो आकाशजी* ॥कोई॥७

१ विभीषणने कहा कि भामण्डल और सुग्रीव यह दोनों मुख के विषे नेत्र के समान है। * अपर ग्रन्थ में अंगद ने बालक का रूप बनवाकर हनुमान को छुड़ाया एसा लिखा है। और मूल रामायण में कुम्भकर्ण के साथ अङ्गद ने संग्रामकर हनुमान को छुड़ाया ।

ढाल मूलगी

एहज वात करतां थकां अंगद, सुभट झूझत प्रभु साथ काठो। क्रोधवस धनुष्य ग्रही बाण नांखे तिसे, पामी अवकाश हनुमन्त नाठो ॥ आ० ॥ ४७ ॥

क्षेपक सवैया

धनुको नमात नमादीये भूपन को,
पौनपूत तीजे घोस काहून विसारगो ।
माथे पृथ्वि नाथन के केते तोर डारं,
ताकी सुन्दर त्रीयाकी देखो चूंदड़ी ऊतारगो ॥
मूंछपे ठहराते नींबू ऐसे महामानी भूप,
एकना अनेक हूको माजनो बिगाड़गो ॥
पायके ओसान हनुकूद गोफलागमार,
कुम्भकर्णहुते छूट डेरा में पधारगो ॥ १ ॥

ढाल मूलगी

कुम्भकर्णानुज[1] सलह साजी करी, भाई सुत आगले आवी मण्डे । राय सुग्रीव 'भामण्डल' भूपना, बन्धन छोडाववा अधिक तण्डे ॥ आ० ॥ ४८ ॥ इन्द्रजीत 'मेघवाहन' चित्त चिन्तवे, एहतो माहरे तात तोले । युद्ध जुगतो नहीं जाई टलवूं भलूं, एहतो शास्त्र सिद्धान्त बोले ॥ आ० ४९ ॥ नाग पासे करी बांधीया एह छे भूख तरसे रे सहजेही मरसे । मेलीए ए इहां लेई जासूं किहां, परवशे होई नर कांई करसे ॥आ०॥ ५० ॥ मुंह टाली गया पांचौ में परिलह्या, कुम्भकर्णानुज राय पासे । आवीने अटकले कोई बल नविचले, बन्धन छोड़वा मति विमासे ॥ आ० ॥ ५१ ॥ आरती आणेघणी बन्धन छोड़न भणी, राम रु लक्ष्मण दोई भाई । ताम चित्त सांभली देव वाचा करी, सुमरिये आज थाए सहाई ॥ आ० ॥ ५२ ॥ देव महालोचन वचन सुधो घणूं, चिन्तव्यों आवीयो तनखेवा । सिंह निनाद विद्या रथ मूसल, हल देई साचवी राम

[1] विभीषण ।

सेवा ॥ आ० ॥ ५३ ॥ वीजली जेम चले नाश अरिनो करे, समरे साची गदा देवे दीधी । सार विद्यामहा गारुड़ी स्यन्दन१, आपी लक्ष्मण तणी सेव कीधी ॥ आ० ॥ ५४ ॥ वारुणाग्नेय वायव्य आदेकरी, दोई भाई भणी अस्त्र आपे । जाणीयो खिदमत दारछूं सेवक, थिर करी प्रेमनो भाव थापे ॥ आ० ॥ ५५ ॥ लक्ष्मण वाहन भूत गरुड़ तदा, पेखवे पन्नग परहा पुलाया । राय सुग्रीव भामण्डल मोकला, ताम हुवा सहु आवी मिलाया ॥आ०॥ ५६ ॥ ढाल चालीश ने दोयमी एह छे, जय जयकार जग में जणाणो । 'केशराज' पुण्यवन्त श्री रामनो, सुजश साचो सहुमें सुणाणो ॥ ५७ ॥

दोहा क्षेपक—

रावण कटकमें सांभल्यो, छूटा वन्दर वीर ।
दे ओलम्भो आकरो, आछा हुवा अधीर ॥

क्षेपकः— (राधेश्याम)

धिक्कार तुम्हारे शास्त्रों पर, लम्बे चौडे आकारों पर ।
जो दश दश वीश वीश वानर, करजायें काम हजारों पर ॥
आराम पसन्दो ! आलसियों ! क्यो दूध लजातेहो हो अपना ।
लंका विदेशीयों को देकर, अस्तित्व मिटाते हो अपना ॥
जी जान लड़ाकर रखना है, इस जन्म भूमिकी इज्जत को ।
मुझसे भी बढी चढी समझो, लंका नगरी की अजमत को ॥
तुम वह हो जिनसे दुनियों को, इस दश कन्धर ने जीता है ।
तुम वह हो यह लंका धीश्वर, जिनकी ताकत से जीता है ॥
जिसका राजा हो स्वर्ग जीत, कैलाश ऊठाने वाला है ।
जिसके नृपने बन्दी गृहमें यमसी, ताकत को डाला है ॥
उसकी रैयत उसके बच्चे, वनरों से घटे जमाने में, ।
तो सच मुच लाख लाख लानत, मर्दानी कोम कहाने में ॥

दोहा (मारू रागे)

अस्त हुवो रतनीर२ पति, सुभट लहै विश्राम ।

---

१ रथ = २ सूर्य ।

प्रातः हुवां आवी मिल्या, साचविया संग्राम ॥ १ ॥
राक्षस अति क्रोधे चढ्या, वानर सैन्य मथन्त ।
मध्य दहाडे शूकरा[२], जिम सरवर डोलन्त ॥ २ ॥
देखी सेना भांजती, सुग्रीवादिक शरूर ।
करी घणी ऊठावणी, राक्षस नाठा दूर ॥ ३ ॥
राक्षस भंग देखी करी, 'रावण' चढ्यो आप ।
थर हरावे मेदनी, करतो अति सन्ताप ॥ ४ ॥
दावा नल ने आगले, तरुवर जेम दहाय ।
तेम रावण ने आगले, वानरतो न रहाय ॥ ५ ॥
रावण दीठो आवीयो, आप चढन्ता राम ।
'बिभीषण' वर्जी प्रभु, आपण चढियो ताम ॥ ६ ॥

। ढाल तयांलीशमीं तर्ज श्याम कल्याण—

भजो नर राम, राम का दिन रूडा ।
रावण कीरे दशा कुदशाणी, जेही करे सोई कूडा ॥ भजो० ॥१॥
रावण उदधि पूर ज्यूं, आवही दल ठेल ।
सांहामो हुवो वीर धीर, दोई हुवा मुह मेल ॥ भजो० ॥ २ ॥
रे रे मूढ ! वीर देखी, वस्तु केरी वानी ।
अवर राखी तूं दीयोरे, माहरे मुख आनी ॥ भजो० ॥ ३ ॥
जेम आहेडी खेलन्तो, आगे राखे श्वान ।
तेम रामे तूं कीयो, राखवा निज प्राण ॥ भजो० ॥ ४ ॥
नेह न तूटे तुम्ह उपरे, जारे अपूठो होई ।
'राम' 'लक्ष्मण' सैन्य सूं, आज हणीया हूं जोई ॥ भजो० ॥ ५ ॥
एह मांहे आवसे तूं, डररे करूं छू एह ।
आव थानक मूलगे, मूलगो मुझ नेह ॥ भजो० ॥ ६ ॥
कहै भाई असुहाई, शुद्ध सरल होई ।
जैसी कहै करे तैसी, कपट नाहीं कोई ॥ भजो० ॥ ७ ॥
राम आपही चढ्योथो, मेंही वरजीयो राखियो ।

१ भण्डशूरा ।

छते सेवक स्वामी काम, करत ना भल भाखीयो ॥ भजो ॥ ८ ॥
स्वामीजीसूं काम जाणी, युद्ध तणी मिस ठाणी ।
आवीयो छूं देव ! आज, सोई सुणो मुजवाणी ॥ भजो ॥ ९ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज लावणी—मुनि श्री रामचन्द्रजी कृत,

विभीषण की वात सुनो वड़भाई, थे राम थकी करोमेल वखत है आई ॥ टेर ॥ श्री राम दयाल कृपाल साल दुस्मनका, कुनझेले जोर महाराज उसी लिछमनका । महें चढसां महाराज मुझे फुरमायो पिन हटकर अरज मनाय मिलन मिस आयो ॥ हस्त प्रहस्त से, जोधकटे छिनमांई, विभीषण ॥ १ ॥ धर रर धरा धसकाय पाय जब धरसी सर रर चलसी बाण बहुत नर मरसी । अर रर करसी लोक एक नहीं अरसी, थररर हियो थर राय जब परसी । ऐसे लिछमन का जंग होसी रणमांई ॥ विभीषण ॥ २ ॥ मैं हितकी बोलूं वात इसीमें सोचो, माथे पड़ियो पेच बखतछे पोचो । "भामण्डल सुंग्रीव बंधेथेपासे, छिनमें छूटातेह हजून विमासे ॥ उलटी परे सब वात सीता तब आई ॥ विभीषण ॥ ३ ॥ गरुड़ाधिप सुर राय सहाय थयो भारी, वह दीधी अमोलक चीज हुवे नफुत्यारी ॥ दोय बंधव शुद्ध रीत दीसे अवतारी, पर रमणी के भ्रात बडे उपगारी । अजेन विगरी वात देवो फुर माई ॥ विभीषण ॥ ४ ॥ कर विष्ठालो वात ठिकाने लाऊं, थे सर्व वातका जाण कांई समझाऊं । अबके विगरी वात लगे नहीं कारी, सो वातां की बात मानो इक म्हारी ॥ रत्नश्रवाजी तात केकसी माई ॥ विभीषण ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी—

सती आपो रती राखो, वात छेहले आवी ।
मानो बोल एह अमोल, नहीं तर खता खावी ॥ भजो० ॥ १० ॥
मरण थी मैं ना डरूं रे, राज्य तणो नहीं कामी ।
लोक मुखे अपवाद सुनन्तां, मैं दुःख पाऊं स्वामी ॥ भजो० ॥ ११ ॥
एह अपवाद मेटियां थी, सेवक हुं छूं तारो ।
कवण राम कवण हुं, मानो वचन हमारो ॥ भजो० ॥ १२ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज पूर्ववत्—

तड़क भड़कला रीस पीस दाँतों ने, तूं लंकाने धोयो मुख खबर है म्हांने । पिन देख जमीं के छेह काढूं सारांने, वनवासी ने मार सेऊं सीताने ।। मुनि राम कहै सत्य वात ढले नहीं आई ।। विभीषण की ।। ६ ।।

ढाल मूलगी—

खिजीयो अतिशय रावण, अजहूं एहिज वात ।
कोढीया थारो कोढीया पण, न गयो रे रे कुपात ।। भजो० ।। १३ ।।
भाई हत्या थी डरुं, लीयोथो तूंहो बुलाय ।
रावण 'रूप' मूलगेरे, लीधो धनुष्य चढाय ।। भजो० ।। १४ ।।
भाई वडो बाप थानके, तेहथी ए अरदास ।
करूं छूं हूं वेगे आवी, पहूंचाडूं जम पास ।। भजो० ।। १५ ।।
दोई भाई की लड़ाई तब घणी अधिकाणी ।
मांहां मांही ना टलाए शुद्ध मतेरे मण्डाणी ।। भजो० ।। १६ ।।
'कुम्भकर्ण' इन्द्रजीत, अवर राक्षस धाया ।
'राम' 'रामानुज' अपर, रायजी चली आया ।। भजो० ।। १७ ।।

क्षेपक (राधेश्याम)

दोहा—अबतो निशिचर सैन्य सब, आई करके जोर ।
वर्षामें जैसे घिरे, उँमड़ धुँमड़ घन घोर ।।
आंधी की नाई बढे, वानर भी ततकाल ।
एक एक से भीड़ गये, कर किल्कार कराल ।।
डफ ढोल और शंखों के स्वर, धरती दहलाये देते थे ।
बलवानों के गर्जन तर्जन आकाश हिलाये देते थे ।।
'झन-झन' ध्वनियो से एक ओर, खड्गादिक शस्त्र उच्छलते थे ।
दूसरी ओर खट-खट स्वर से गिरी-खण्ड मुष्ठिसे चलते थे ।।
रण-रङ्ग स्थल में मतवाले, रजनीचर कीश नाच उट्ठे ।
लाशों पर लाशों लोट उठी, शीशों पर शीश नाच उट्ठे ।।
आशा से अधिक लडे वानर, उन रजनीचर बलवन्तो से ।

शस्त्रों की धारें हार गई, मुष्टिकों नखों और दन्तोंसे ॥
कट कट कर जब निश्चिर-सेना, उस काल समरमें मरती थी ।
अन्याय न्याय का तब निर्णय, पृथ्वीकी लाली करती थी ।
छोटे २ वनरों द्वारा, होगई पराजय खल-दल की ।
जगने अधर्म की छाती पर, अवलोंकी जीत 'धर्म' बलकी ॥
दोहा-'अबनी-अकम्पन' आदि भट, झूंझ गए जब जाय ।
जोये जब रण भूमि में, 'वज्रदन्त' अतिकाय ॥
तब लंका के नाथसे, ले आज्ञा वरदान ।
चला समरके वास्ते, इन्द्[1] जीत बलवान ॥
लंकामें सचमुच बढी हुई, ताकत इस इन्द्रजीत की थी ।
यह सेनाका सञ्चलकथ, युवराज की इसको पदवी थी ॥
जीता था इसने इन्द्रलोक, यह इन्द्रजीत कहलाताहै ।
यह ही सबसे प्यारा बेटा, दशमुख का समजाता है ॥
दोहा-उसी समय संग्राममें, आ पहूंचा घन नाद ।
वानर सेनामे तभी, व्यापा विषम विषाद ।
छलसे बलसे और कौशलसे, लडताथा वह योद्धा रणमें ।
छुपजाता कभी प्रगट होता, दिन करता कभी निशा रणमें ॥
आकाश मार्ग पर जा जा कर, हड्डियों धूरी वरसाता था ।
तक २ कर वीर वानरों पे, नाना विधि बाण चलाता था ॥
लड़ते २ जब चूर हुई, तब डोल ऊठी वानर सेना ।
'रघुकुल के नाथ दुहाई है,' यह बोल ऊठी वानर सेना ॥
देखा जब रण भूमी में, वानर है लाचार ।
अज्ञा ले 'रघुनाथ' की हुवे 'लक्खण' तैयार ॥
आते ही बलवीरने, रण में किया प्रकाश ।
एक बाण में असुर की, माया करदी नाश ॥
इन्द्रजीत कहने लगा, सन्मुख इन्हें निहार ।

१ अपर नाम मेघनाद ।

ओहो ! बच्चों भी हुए, अब रण को तैयार ॥
यह युद्ध स्थल वीरों का है, बच्चों का है खिल्वाड़ नहीं ।
धारेहैं यहां कृपानों की, मिष्ठान्नों का बाजार नहीं ॥
जिन दांतों का सूखा न दूध, दुःख होता उन्हें तोड़ने में ।
इसलिए लौट जाओ घर को, खुश है घननाद छोड़ने में ॥
लखण लाल कहने लगा, करके कड़ी निगाह ।
बुरा चोर की बात को, नहीं मानते शाह ॥
लका पर रघुकुल की कमान, इसकारण आकर कड़की है ।
सत्यवती सीताजी की विरह ज्वाला, बदला लेने को भिड़की है ॥
इसलिये सम्भलजा इन्द्रजीत, यह इन्द्रिय जीत बढ़ रहा है।
क्षत्री के काल जीत धनुपे, शायक जगजीत चढ़ रहा ॥
वह नहीं कहीं दब सकता है, जो बल रखता है मुट्ठों का ।
रघुवंश आन का पूरा है, कर देगा चूरा दुष्टों का ॥
लखणलाल के वैन सुन, हुआ इन्द्रजीत लाल ।
आपस में अब भिड़ गये, दोनों वीर विशाल ॥
खांडों पर खांडे खड़क ऊठे, बाणों पर बाण बोल ऊठे ।
वीरों का बांका युद्ध देख पृथ्वी आकाश डोल ऊठे ॥
छोडा जब रिपुने मेघ बाण, तब इधर समीर बाण छोडा ।
वह लगा छोडने अग्नि-बाण, लक्ष्मण ने नीर बाण छोडा ॥
नाना प्रकार की चतुराई, दश-कन्धर तनय दिखाता था ।
कौशल-किशोर के कौशल से, बेकार वार होजाता था ॥
हर तरह युद्धमें इन्द्रजीत, जब हार गया बेजान हुआ ।
लक्ष्मण के हाथके बाणों से, गस खा खा के हैरान हुआ ॥
तब लगा सोचने 'क्या करीए' यहतो सामान प्रलय काहै ।
लक्ष्मण साधारण मनुज नहीं, सचमुच अवतार विजय काहै ॥

ढाल मूलगी—

राम 'कुम्भकर्ण' लड़े, इन्द्रजीत'' जाम ।
लक्ष्मण सूरे आवी अड़ियो, एह वडो संग्राम ॥ भजो ॥ १८ ॥

'नील' "सिहजघन्य" "दुर्मुख", ' घटोदर" सूं देख ।
'स्वयम्भू' जई 'दुरमति' सूं, नल 'सम्भू' सुविशेष ॥ भजो ॥ १९ ॥
'अंगद' ने 'मयनेमय' 'वीर विराध' 'सुग्रीव' ।
'स्कन्द' 'चन्द्रनख' निरूपम, माची रही अति रीव ॥ भजो ॥२०॥
'श्रीदत्त' ज, 'जम्बूमाली', 'भामण्डल,' जी 'केतु' ।
'हनुमन्त' 'कुम्भकर्णसुत' लाग्या रोष समेतु ॥ भजो ॥ २१ ॥
'कुन्द' ने 'धूमाक्षी' दाखी, 'किष्किन्धेश' 'सुमाली' ।
'चन्द्ररश्मि' 'सारण' साथे, माचियो युद्ध कराली ॥ भजो ॥२२ ॥
'लक्ष्मण' ऊपरे 'इन्द्रजीत' मेले तमास बाण ।
'लक्ष्मण' टाले प्रगट पणे, शूरों को सुलतान ॥ भजो ॥ २३ ॥
इन्द्रजीत पे अनुज[1] मेले, नाग पास अस्त्र ।
तांतणिये गज तेम बांध्यो, कोई फुरियो नहीं शस्त्र ॥ भजो ॥२४॥
रथ में घाली ततकाल, 'चन्द्रोदर' ले जावे ।
कटक मांही अति उच्छाए, राख्या थानक ठावे ॥ भजो ॥ २५ ॥
'कुम्भकर्ण' ने नाग पासे, रामे बांधी लीयो ।
'भामण्डल' हाथे देई, ते पहोंचाय दीयो ॥ भजो ॥ २६ ॥
अवर राक्षसों सूं आवी अड़ीया, वानरा जई आप ।
ते ते बांधी आंणीया, राम तणे परताप ॥ भजो ॥ २७ ॥
मेघ वाहने' बांधीयों, सांधिया शर नांही ।
दिवस फिरे देखी वैरी, जोर चले नहीं प्राही ॥ भजो ॥ २८ ॥
देखी नयन अति कुचयन, पामीया तब राय ।
वीर ऊपर शूल मेले, किंयू ही ए मरिजाय ॥ भजो ॥ २९ ॥
शूल अन्तराल ताम, छेदीयो जेम केली ।
लक्ष्मण तो लीला मेरे, सुदिन केरी मेली ॥ भजो ३० ॥
श्री धरणेन्द्र दत्त शक्ती, विजय नामे अमोघा ।
विजय हेते रावण राय, ऊपाडी बलोघा ॥ भजो ॥ ३१ ॥

---

१ लक्ष्मण ।

धग धगन्ती जलती चलती, तड़ तडन्ती नादे ।
अन्त मेघ तडित लेखा, फैरवी अल्हादे ॥ भजो ॥ ३२ ॥
देव पाछा ओसरे, लोक न मेले नयन ।
देखतां थिरत मिटे, ऊपजेरे कुचयन ॥ भजो ॥ ३३ ॥
राम कहै सौमित्री ने, विभीषण नी लाज ।
आपने छे राखि ले ओ, मारे राक्षक राज ॥ भजो ॥ ३४ ॥
शरणे आयों राखणो, नहीं सहाय कराय ।
अवाल्ह नदियों तणी देखवा नटी जाय ॥ भजो ॥ ३५ ॥
सौमित्री आगे हुओ, गरुड़ नो असवार ।
रावणानुज पूठ दायो, एह खरो व्यवहार ॥ भजो ॥ ३६ ॥
लक्ष्मण साथे कहै राय, आघो पाछो थाय ।
पर मरणे तूं कांमरे, जो तुझ आवी दाय ॥ भजो ॥ ३७ ॥

क्षेपक राधेश्याम—

अबतक मैं खेल खिलाता था, अब खा जाने की वारी है ।
इस शक्ती बाण की सूरत में आ पहुंची मौत तुम्हारी है ॥
इसका मारा बचता ही नहीं, दिन उगते प्राण गवांता है ।
ज्यों ही यह तन पर पड़ती है तन मृतक तुल्य हो जाता है ॥
इसलिए सम्भल ओ रघुवंशी, तूं आज न बचने पायेगा ।
कहै रावण ललकार अबे हम, लखण जीत कहलायेगा ॥
हंस कर लक्ष्मण ने कहा, इस मद पर धिक्कार ।
बाण गये मुद्गर गये, गई खड्ग तल्वार ॥
जो भी हथीयार तुम्हारे थे, उन सब ने हारी मानी है ।
जब शस्त्र युद्ध में हार गये तो, देव शक्ति को ठानी है ॥

ढाल मूलगी

भ्रमांवी अग्नि ही भ्रमावी, लक्ष्मण ऊपर तेह ।
रावण मूके रोषसूं रे, ताम हुवो अन्देह ॥ भजो ॥ ३८ ॥
सा आवन्ती देखी पेखी, सौमित्री सुग्रीव ।
'भामण्डल' 'नल' ने 'विराध,' हनुमन्त शूर अतीव ॥ भजो ॥ ३९ ॥

अस्त्रों सूं बलवन्त वारे, ताडे ताम अपार ।
अंकुश खोटो हाथीयो, जेम न माने कार ॥ भजो ॥ ४० ॥
उरस्थले आवी पड़ी, मूर्च्छाणो नरनाथ ।
हाहा कार हुओ घणो, शोचकरे सहु साथ ॥ भजो ॥ ४१ ॥
कोपी राम आवे ताम, बैसी रथ रसाल ।
राय तणो रथ रोपसूंरे, तोड़ियो ततकाल ॥ भजो ॥ ४२ ॥
बीजो त्रीजो चऊथो पंचमां रथ देखी ।
तृण तणो पर तोडी नांखे, राघव रोप विशेषी ॥ भजो ॥ ४३ ॥
रावण चिन्तसूं चिन्तवे, भाई तणों दुःख भूरी ।
एतो हुवो आंधलो, रहीये एथी दूरी ॥ भजो ॥ ४४ ॥
लंकामें नृप आवीयो, आथमीयो दिनकार ।
दुःखन जावे देखीयो, आणी एह विचार ॥ भजो ॥ ४५ ॥
रावण भागो जाणीयो, फिरीया राम तेवार ।
लक्ष्मण पडियों देखतोंरे, न रहीं शुद्ध लिगार ॥ भजो ॥ ४६ ॥
मूर्च्छाए धरती पड़्या, करी शीतल उपचार ।
उठाई बैठा किया, बोले लक्ष्मण लार ॥ भजो ॥ ४७ ॥
वत्सा तुमे क्यो कोठीया, क्योन प्रकाशो वयण ।
शक्ती नहींजो वयणनी, कांई वतावो मयन ॥ भजो ॥ ४८ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज कवाली प्रसिद्ध वक्ता श्री चौथमलजी म० कृत—

लगाजो तीर लिछमन के, पड़े गस खाके भूमिपर ।
कहै तब राम आंसू भर, ऊठो लक्ष्मण ऊठो लक्ष्मण ॥ १ ॥
सीया रावण के कबजेमें, अरे तुमने करी ऐसी ।
मेरा इस वनमे बेली कौन, ऊठो लक्ष्मण ऊठो लक्ष्मण ॥ २ ॥
अरे रणवीच सेनाको, सिवा तेरे हटावो कौन ।
गिराया क्यों धनुष्य तेने, ऊठो लक्ष्मण ऊठो लक्ष्मण ॥ ३ ॥
तेरी हिम्मत पेही बन्धु, चढाई कीजो लंकापे ।
बधावो धीर अबहमको, ऊठो लक्ष्मण ऊठो लक्ष्मण ॥ ४ ॥

अगर नफरत हो लड़नेसेतो, फिर वनको चले वापस ।
कुछ भीतो कहो भाई, ऊठो लक्ष्मण ऊठो लक्ष्मण ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी—

ए मुख देखे ताहरो, सुग्रीवादि नरेश ।
बोलन आपो छो तुमें, आणे आरती अशेस ॥ भजो० ॥ ४९ ॥
रावण तो गयो जीवतो, ए थारे चित्त रोष ।
रावण मारे तो सहीं, आणो चित्त सन्तोष ॥ भजो० ॥ ५० ॥
तिष्ट तिष्ट तूं कहां गयो, म्हारो भाई मारी ।
धनुष्य बान लेई चल्या, हनुमन्त कहै हाकारी ॥ भजो० ५१ ॥
किहां चाल्या प्रभुजी तुमें, वैर विशोधन भाई ।
रावण तो लंकामें गयो, ताम करयो पिछताई ॥ भजो० ॥ ५२ ॥
नारी हरी भाई हण्यो, एह अवस्था आपी ।
मैं आयों नासी गयो, फिट्रे रावण पापी ॥ भजो० ॥ ५३ ॥
लक्ष्मण देखी मारीयोरे, प्रभुने वेदन मारी ।
ए कामन होवे कायरों, देखो क्यूंन विचारी ॥ भजो० ॥ ५४ ॥

सुरदासजी कृत क्षेपक ढाल तर्ज पदरी—

छोटारे मेरा भैया बोलना इकवार ॥ टेर ॥
मातारे वचनों नीकस्यारे, पिता केरे उपदेश ।
अयोध्यारे पुरीरा मानवीरे आंपां, आय वस्या परदेश ॥छोटा० ॥१॥
आवन्तड़ा दोयं आवीयोरे, जाऊंगो मैं एक ।
माता सुमित्रा बूजसीरे, कांई बताई देख ॥ छोटा० ॥ २ ॥
जाईजो रे सीता जाई जोतो, लंका जाईजो रावण को राज ।
आंधा केरी लाकडी म्हारी, छिटक पडीछे आज ॥ छोटा० ॥३॥

क्षेपक राधेश्याम—

गिरे लखण की देह पर, मूर्च्छा खाकर राम ।
वानर मण्डल में मचा, मातम और कोह राम ॥
कहते थे बडे २ वानरहा ! विधना क्या उत्पात हुआ,
रघुकुल पर उल्का पात हुआ कपिदल पर वज्राघात हुआ !

जब लखण नहीं तो राम कहां ! जब राम नहीं तो विजय कहां।
जब विजय नहीं तो सीया कहां, जब सीया नहीं शुभ समय कहां॥
उनका तो रण सीता पर था, लंका पर था उद्देश पे था।
अपना रण परमारथ पर था. साहस पर था आदेश पेथा।
था उनसे ज्यादा पक्षहमें लंका पर जय पाजाने का॥
जब सहायता को साथ हुवे, तो पूरा कार्य करानेका॥
संसार कहेगा-वनरोंने, वनमे बहकाये रघु वंशी।
वनरेतो वनको भाग गये, सबकुछ खो बैठेरघु वंशी॥
लानतहै ऐसेजीनेपर, जो नाम धराये अपना हम।
बेहतरहै डूबके सागरमें, अस्तित्व मिटाये अपना हम।

ढाल मूलगी—

जाय घटन्ती जामनी, कीजे कौड उपकर्म॥
प्रभु जीव्यों सहुजीवसे, म्होटो छे ए मर्म॥ भजो०॥ ५५॥
एतो नयां लीशमीं, ढाल भली कहीवाय।
केशराज एह देखो, पुण्ये पाप पुलाय॥ भजो०॥ ५६॥

दोहा (सिन्धु रागे—)

सुन 'सुग्रीव' 'विराध' 'नल', भामण्डल हनुमन्त।
देव करी ए एहवी, तुम घर जावो तुरन्त॥ १॥
नारीहरण बंधव मरण, दुःख रह्यो ए दूरी।
लंका न दीधी विभीषणा, ए दुःख साले भूरी॥ २॥

क्षेपक सवैया

मात को मोहन द्रोह दुमात को सोच न तात को घात दहे को।
राजको लोभन प्राण को थोभन बंधु विछोहन अन्तल हेको॥
नेकन चिन्तमें आवत केशव, सोचन लंकमें सीत रहेको।
तारण भूमिमें राम कहै, मुझ सोच विभीषण भूप कहेको॥

दोहा मूलगी—

प्रातः हुवां रावणहणी, देई विभीषण राज।
लक्ष्मण साथे लागसूं, सीतासूं नहीं काज॥

क्षेपक ढाल तर्ज बाहु बली खड़ा० श्रीराम मुनि कृत—

अबहूं नहीं रहूंरे अटक्को, म्हारो मन लागो लिछमनसूं ॥ टेर॥
क्या जानीथी क्या हुयआई, बंधव घरा पटक्यो ॥ अबहूं ॥ १ ॥
सीयातो दुस्मन घर बैठी, धिक २ जीवत घटक्यो ॥ अबहूं ॥ २ ॥
मुझ संगे मुझ बंधव नीकस्यो, मुझ संगे वनमें भटक्यो ॥अबहूं॥३
राम बंधवनो होतही विरहो, फिट हीयाक्यूं नहीं फटक्यो ॥अबहूं॥४

क्षेपक ढाल तर्ज घूसोवाजेरे—धूलचंदजी कृत,

लक्ष्मण के रे बाणलग्यो शगतो, रे लक्ष्मणके ॥ टेर ॥
रम कहे रे सुनो सब प्यारे, आजकरोरे ऐसो भगती ॥ लक्ष्मण॥१
लक्ष्मण वीरने जोरे जीवाड़े, देऊं म्होटोरराज सवाई धरती ॥ल॥२
पुण्य फले जो दशरथ केरो, केरे जीवाडे सीत सती ॥ ल० ॥४॥
नहीं भूलूंमें ऊपकार तुम्हारो, लक्ष्मण जिवणको कहो जुगती ।ल० ।४

दोहा मूलगा—

कहे विभीषण स्वामीजी, धीरज धरो अपार ।
कायर होईन थरहरो, उद्यम नो अधिकार ॥ ४ ॥
शक्ती हण्यां जीवे सही, ज्योंन ऊगे दिनकार ।
जब लग बरते जामनी, करलीजे उपचार ॥ ५ ॥
तंत्र मंत्र औषध जड़ी, कोईयक दाय उपाय ।
रात्री मांही कीजीये, जिम प्रभु सारो थाय ॥ ६ ॥

ढाल चमालीशमीं तर्ज पंथीड़ा बात कहो—

जीवे हो जीवे वीरो बाल होरे, कोई करो तुम कामरे ।
बीजोरे काज सहु असुहामणोरे, ताम कहै श्रीरामरे ॥ जीवे० ॥१

ढाल क्षेपक मूलगी—

लिछमन को यहां से ले लीजे, लहु कहे अरजी सुन लीजे, इणी में जेज नहीं कीजे । ऊठाई निजकट के लाया, जापता इण विध करवाया ॥ सत्य० ॥ ८६ ॥

ढाल मूलगी—

सातज रे सात कोट किया भलारे, च्यारकिया दरबार रे ।
राजारे राजा रखवाले रह्यारे, होईने हूंसीयार रे ॥ जीवे० ॥ २ ॥

पूरब रे पूरब दिशिने वारणेरे, कपिपति ने हनुमन्त रे ।
'दधिमुख'रे'दधिमुख''स्कन्द''गवाक्ष' सूरं, तार गवय गुणवन्तरे।३
उत्तर रे उत्तर दिशे विहंगमारे, 'अंगद' 'कूरम' अंगरे ।
महेन्द्रजरे महेन्द्र सुषेणजीरे, चन्द्ररश्मि सुचंग रे ॥ जीवे० ॥ ४ ॥
पश्चिम रे पश्चिम दिशे दुर्द्धर जयेरे समर शील मन्मथ रे ।
'नीलजरे' नील विजयने सम्भूवरे ए साते समर थरे ॥ जीवे० ॥५॥
दक्षिण रे दक्षिण दिशे भामण्डलूरे, वीर 'विराधज' मेद रे ॥
गजनलरे गजलनने विभीषणूरे, भुवनजीत सुभेदरे ॥ जीवे० ॥६॥
मांहैरे मांहै राघव राखीयोरे, सुग्रीवादिक ताम रे ।
जागे रे जागे योद्धा महाबलीरे, मति को विणसे कामरे ॥ जीवे० ॥७॥
(वक्ता से व्याख्यान में यदि शक्ति जाने का अधिकार पूर्ण न बच सके तो निम्नोक्त गाथाए कहकर लक्ष्मणजी के शरीर में से शक्ति निकाल देनी चाहीये)

ढाल क्षेपक मूलगी—

प्रातः हुवां शक्ति ही जावे. विसल्या तनने फरमावे, प्रभुजी सुख साता पावे, लक्ष्मणजी पूछे है त्यारं, कोट ए एस्यो रखवारे ॥ सत्य ॥ ८७ ॥ रघु पतिवात केहण लागो. शक्तिदे रावण तो भागो तुमेंयहां आण्या धर रागो । कोटका जापता कीना, रात को सब पौहरा दीना ॥ सत्य० ॥ ८८ ॥

ढाल मूलगी—

सीतारे सीता ए हिज सों भलीरे. लक्ष्मण शक्ति प्रहाररे ।
प्रातः रे प्रातः प्राण प्रभुजी तजेरे. भाईसूं अति प्यार रे ॥जीवे०।८।
मूर्च्छारे मूर्च्छा आची अति घणीरे. धरणी पडी ततकाल रे ।
करी रे करी शीतलता खरीरे, ऊठाई साबालरे ॥ जीवे० ॥ ९ ॥
करुणज रे करुण स्वर रोवे घणी रे, करती अधिक विलाप रे ।
थम्मेरे थम्मे तसु विद्याधरीरे, देह पछाडे आपरे ॥जीवे० ॥१०॥
हावच्छ ! रेहा वच्छ! लक्ष्मण कहां गयोरे प्रभुनी छोडी आजरे ।
तुझ विन रे तुझ विन क्षणजीवे नहींरे, करसे सही अकाज रे ।जीवे।११
हा धिक् रेहा धिक् अधिक अभागणी रे, महा रे कीधे देख रे ।

स्वामी रे स्वामीने देवर भलो रे, पीडाए सुविशेष रे ॥ जीवे०॥१२॥
मुझने रे मुझने विवर वसुधारा रे, दीये अब देवी आप रे ।
मांहे रे मांहे हूं पेसूं सही रे, ऊपरे वाले छाप रे ॥ जीवे० ॥१३॥
एटले रे एटले एक विद्या धरू रे करुणा अति दाखन्त रे ।
विद्या रे विद्या वर अब लोक नी रे, अवलोकी भाखन्त रे ॥जीवे०॥१४॥
वाई रे बाई आरति मतिकरो रे, लक्ष्मण लीला मांहे रे ।
प्रातः रे प्रातः ए उठसे सही रे, मिलसे राम उच्छाहे रे ॥जीवे० ॥१५॥
सुसती रे सुसती हुईसा सुन्दरी रे, कदी होवे परभात रे ।
वारु रे वारु वर्तिका सांभल्यो रे, दुःख देशान्तर जात रे ॥ १६ ॥
रावण रे रावण अति रस रंगमां रे, लक्ष्मण मरियो जाणी रे ।
भाई रे भाई सुत नृप बांधीया रे, सुणी रोवे दुःखी आणी रे ॥१७॥
हा वत्स ! रे हा वत्स ! कुम्भकर्णजी रे, हा वत्स ! नन्द निरूप रे।
इन्द्रज रे इन्द्रजीत घनवाहनू रे, 'जम्बू माली' अनूप रे ॥ १८ ॥
अवरज रे अवर अनेरा राजीया रे, बन्धाणी तुम देह रे ।
मुझने रे मुझने जीवतां थकां रे, अजब तमाशो एह रे ॥ १९ ॥
सुमरी रे सुमरी गुण सुत भाई ना रे, वारम्बार पडन्त रे ।
बैठो रे बैठो कीजे फिरी फिरी रे, रमणी जेम रडन्त रे ॥ २० ॥
एकज रे एकज विद्या धर भलो रे, एटले आवे चाल रे ।
पूर्वज रे पूर्व दिशीने बारणे रे, भामण्डल ने निहाल रे ॥ २१ ॥
भाखे रे भाखे वाणी अमीसमी रे, मेलवो राघव राय रे ।
लक्ष्मण रे लक्ष्मण जी जीवातणो रे, दाखूं हूं उपाय रे ॥ जीवे ॥ २२
भामण्डल रे भामण्डल, कर साहीयो रे, आण्यो प्रभुने पास रे ।
चरणे रे चरणे लागी वीनवे रे, आणीने उल्हास रे ॥ जीवे ॥ २३॥
पुर वर रे पुरवर छे संगीत जी रे, शशि मण्डल भूपाल रे ।
राणी रे राणी राजे सुप्रभा रे, नन्दन हूं सुविशाल रे ॥ जीवे ॥२४
नामे रे नामे छू प्रति चन्द जी रे, बैसी विमाने जाऊं रे ।
क्रीडा रे क्रीडा करवा कारणे रे सुन्दरी सूं शोभाऊं रे ॥ जीवे॥२५

दीठोरे दीठोहूं तवखेचरारे, सहश्र विजय तसनामरे ।
वयरजरे वयरज मैथुनने कारणेरे, मांड्यो नव संग्रामरे ।।जीवे।।२६
शक्तिजरे शक्तिज चन्द्रवा तणीरे, कीधो ताम प्रहाररे।
आव्योरे आव्यो हूं चली भूतलेरे, नलहूं शुद्ध लगाररे ।।जीवे।।२७
कौशल्य१ रे कौशल्य पुर उद्यानमेंरे, पड़ियो पामूं दुःखरे ।
ओछोरे ओछो जले जेम माछलोरे, रंचन पामूं सूखरे ।। २८ ।।
भूपतिरे भूपति श्री भरतेश्वररे आई गयो अभिरामरे ।
करुणारे करुणा अधिकी ऊपनीरे, कोमल छे परिणामरे ।। २९ ।।
आणीरे, आणी गन्धाम्बूतदारे२, सींच्यो अंग सजोररे, ।
नाशीरे नाशी शक्ति गई सहीरे, जेम जाग्यो थीचौररे ।। ३० ।।
हुओरे हुओ ताम समाधीयोरे, अचरीज अधिको पामरे ।
महीमारे महीमा गन्धाम्बू तणीरे, पूछीयो मैं शिर नामरे ।।३१।।
भाईरे भाई तुम्हारो तब भणेरे, सारथ वाहज एकरे ।
'गजपुर' रे गजपुर थी इहां आवीयोरे, साथे महीष३ अनेकरे ।।३२।।
तूटयोरे तूटयो भैंसो एकजीरे, पड़ियो मारग वीचरे ।
माथेरे माथे पग दई चलेरे, लोक जीके छे नीचरे ।। ३३ ।।
म्होटोरे म्होटो उपद्रवे मुओरे, 'सेतंकर' पूरि देखरे ।
पवनजरे 'पवनज पुत्र' नामे भलोरे, देव हुओरे सतेखरे ।। ३४ ।।
अवधजरे अवधि ज्ञान सूं देखीयोरे, पूर्व भवान्तर जामरे ।
व्याधिजरे व्याधि विकूर्वी देशमेंरे, पुर २ गाम ही गामरे ।।३५।।
द्रोणजरे द्रोण मेघना देशमेंरे, नहीं व्याधी पेसाररे ।
मामोरे मामोजी मैं पूछीयुंरे, एछे कवण विचाररे ।। ३६ ।।
पृथ्वीरे पृथ्वी सघली माहरीरे, अन्तर एछे कायरे ।
जिमछेरे जीमछे तिम साचू कहोरे, झूठ कह्यां दुःख थायरे ।।३७।।
बोलेरे बोले सोप्रभु सांभलोरे, प्रियंकरा मुझ नाररे ।
रोगेरे रोगे पीडी थी घणीरे, गर्भ तणो आधाररे ।। ३८ ।।

---

१ अयोध्या । २ सुगन्धी पाणी ।- ३ भैंसा ।-

हुई रे हुई सही निरोगणी रे, पुत्री पण परधान रे।
प्रसवी रे प्रसवी सुख समाधिमें रे, विशल्या अभीधान रे ॥ ३९ ॥
थारो रे थारो जेम तेम माहरो रे, देश हुतो समभाय रे।
पुत्री रे पुत्री स्नानं जले करी रे, सीच्योंथी सुखथाय रे ॥ ४० ॥
पूछयो रे पूछयो मुनिवर एकदा रे, सत्य भूती सुख दाय रे।
एछे रे एछे कौण विशेषथी रे, ज्ञाने भेद लहाय रे ॥ जीवे ॥ ४१
द्राक्ष रे द्रक्ष थकी घणो रे, मीठी वाणी विशेष रे।
पूरव रे पूरव भवना तपतणो रे, एफलछे सुविशेष रे ॥ जीवे ॥ ४२
घाव१जरे घावने सराहणूं रे, शल्य तणो अपाहर रे।
व्याधिज व्याधि सहुनी क्षयकरे रे, लक्ष्मणजी भरतार रे ॥ ४३ ॥
ए गुण रे एगुणनो किरतारछे रे, स्नान तणो जलसार रे।
अमृत रे अमृत हीथी गुण घणा रे, सुर गुरु न लहे पार रे ॥४४॥
मुनिवर रे मुनिवरनी वाणी थकी रे, प्रत्यय लही प्रत्यक्ष रे।
जलनो रे जलनो प्रगट प्रभावजी रे, प्रगट्यो लोक समक्ष रे ॥४५॥
एमज रे एम कहीने मुझ भणी रे, स्नानतणूं जल दीध रे।
छोंटा छोंटा नाख्यो देशमां रे, देश निरोगी कीध रे ॥ ४६ ॥
ओहिज रे ओहिज जलसूं सींचियो रे, मैं तुझ इण ही वार रे।
शक्तिजरे शक्ति शल्य गयो घावही रे, रुझ्यो क्षण ही मझार रे ॥४७॥
भरतजरे भरतजने मैं देखियो रे, जलनो प्रगट प्रभाव रे।
आंणो रे आणों अति ऊतावलू रे, छोडो अवर उपाव रे ॥ ४८ ॥
ढालज रे ढालज चम्मालीशमी रे, राम महा सुख पाय रे।
जेहवी रे जेहवी तो भवतिव्यता रे, तेहवी मिलेही नहाय रे ॥४९॥

दोहा—वेलावल रागे

'भामण्डल' हनुमन्तजी, अंगद सुभट सलील।
राम कहै बोलाय के, कामतणी नहीं ढील ॥ १ ॥
पहेला जाजो भरतपे, भरतभणी लेई लार।

१ विशल्या के स्नान जल से घाव का संरोहण, शल्य का अपहार और व्याधिका क्षय होगा, और इसका पति लक्ष्मण होगा।

स्नानोदक लायोसही, कोई म लावो वार ॥ २ ॥
आज लगे सेवक हुता, आगे तुम मुझ भ्रात।
भाई भिक्षा आपवे, राखो जग आख्यात ॥ ३ ॥
जिहां लगे जग जीवसूं, तिहां लगे उपकार।
विसरसूं नहीं तुम अछो, प्राण तणा दातार ॥ ४ ॥

ढाल पैंतालीशमीं तर्ज चड़ो २ लाडा वार म लावो—

सोई समाणो अवसर साधे, अवसर साधे स्वामी आराधे ॥ टेर ॥
बैसी विमाने ते तब चलिया, विद्याधर विद्या बले बलिया।
पुरी अयोध्या चाली आया, भरत नरेश्वर सोवत पाया ॥ १ ॥
ऊपर भूमि ए सयज[1] सुहाली, गलती राते नींद रसाली।
अम्बरे रह्या राग आलापी, नाद-बले लीयो राय जगावी ॥ २ ॥
जाग्यो भूप हुवो हूंसियारी, दश दिशे जोवे नजर पसारी।
आगे ऊभा दीठा सोई, पूछे प्रभु कहो कारण कोई ॥ ३ ॥
'भामण्डल' भाखे सब वातां, भरत हीयामें दुःख न समातो।
ऊठी तब ही हुओ आगे, बैसी विमाने मारग लागे ॥ ४ ॥
कौतुक मंगल आया चाली, सोवन्ती[2] रे जगावी बाली।
'द्रोण मेघ' नृप पासे जाची, सब गुण लक्षणवन्ती साची ॥ ५ ॥
कन्या सहस्र तणो परिवारो, ते सघली लागी तस लारो।
प्रतिज्ञा छे सहुनी सरखी, एकज पति करवाने हरखी ॥ ६ ॥
'भरत' अयोध्या ए पहोंचायो, भामण्डलजी आयो भायो।
विशल्या सघलीसूं लीधी, चाल्या तब ही ढील न कीधी ॥ ७ ॥
जल दीपे ऊजालो देखी, रविऊग्यांनो भर्म विशेषी।
अतिही वेगे विमान चलावे, वात करांतो प्रभुपे आवे ॥ सोई ॥ ८
सहु कोई आरतीया होता, कद आवे वो वाटज जोता।
सूर्य उदय पंकज विकसावे, देखी विशल्या सहु सुखपावे॥ सोई ९
विशल्या प्रभुनो तन फरसे जाणे दूधे जलधर वरसे।

धूलचंदजी कृत क्षेपक ढाल तर्ज म्हारा गुरुजी गुणवन्ता—(नाटक की)

म्हारा महाराजाको अंग फरस रही रे २ आहर्ष रहीरे ॥ टेर ॥

१ शय्या—२ सोतीहुई—

कर सेथी तन फरसनलागी, जिम जिम साता थावे ।
दावानलके ऊपर जाणे,अमृत मेह वरसावे ॥ म्हारा ॥ १ ॥
इण पापण ने यो कुण लायो, शक्ति एम विचारे ।
इणआगेहूं किमकर ठहरूं, लारे लागी म्हारे ॥ म्हारा ॥ २ ॥
थरहर थरहर धूजन लागी, आतो वेरण म्हारी ।
फिट फिट फिट फिट दुनियोंकरसी, लाज गमासी सारी ॥ ३ ॥
सारंग नाठे सिंहनी आगल, गरुड़ थकी जिम सापो ।
रविना आगे तमतिम नासे, पुण्य थकी जिम पापो ॥ म्हरा ॥ ४ ॥
मन मुरझायो होगई त्रिदुखी, शक्ति परी पुलाई ।
दांत पीसती नाठी देवी, जौर न चाले कोई ॥ म्हारा ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी—

शक्ति मदु देखन्तां नाठी, जेम नागणी मार्याथी लाठी ॥ सोई॥१०
सा जाती हनुमन्ते झाली, तब सान सके हिंडी हाली ।
जेम चीड़ी सिंचाणे साही, पूछन्तां बोलन्त उच्छाही ॥ ११ ॥
प्रज्ञप्तीनी हूं लघु भगिनी, देवी रूपेछू शुभ लगिनी ।
केड़ पडी फेरूं तमठामो, महा शक्तीछे महारूं नामो ॥सोई॥१२
धरणेन्द्रे रावण ने आपी, रावणे पणहूं थिरकरी थापी ।
कामसर्यो थो रावण केरो, पण लक्ष्मणनो भाग भलेरो ॥ १३ ॥
पूर्व भवना तपनो जोरो, विशल्या देखयों मनमोरो ॥
थरहर थरहर करी धूजाणी, तेह भणी प्रभुमें नरहाणी ॥ १४ ॥
फिरी नवि आवूं साथ तुम्हारे, अब ए निश्चे उचित हमारे ।
अबके जो जीवेता लहीसुं, छानी मानी होई रहीसु ॥ १५ ॥
सघले दीधो तब फिटकारो, लज्जा पामी ने हारी जमारो ।
दोतां साथे लीधीजूती, दृष्टि-अगोचर हुई भूती ॥ सोई ॥ १६ ॥
विसल्या तनु फरसेफेरी, तिम तिम साता थाय घणेरी ।
बावना चन्दन लेपकराया, व्रण रुझाणू अति सुखपाया ॥सोई १७
आलस्य मोड़ी ऊठ्यो स्वामी, सर्वप्रकारे साता पामी ।

देखे आंसू न्हांखेरामो, लक्ष्मण पूछे प्रभुने तामो ॥ सोई ॥ १८॥
ए स्यां कोट किसा रखवाला, ऐसी बाला रूपरसाला ।
एस्यों आवे छेरे वधावा, एस्यों लोकों नारे मेलावा ॥ सोई ॥१९॥
रामसहु विरतन्त सुनावे, विशल्या नी वात जणावे ।
कन्या सहश्र साथे सुहावे, विशल्या प्रभु विवाह करावे ॥ सोई ॥२०॥

धूलचन्दजी कृत ढाल चेपक तर्ज धनब्राह्मी धन सुन्दरी

सुखकारी म्हारे आंगणीये ऊगीयोजी सह्यां अविचल सूर्य प्रकाश ॥टेर॥
गावे बधावे गौरड़ीजी कांई, झींणेस्वर सुखकार ।
लक्ष्मण जी जिवित ऊबर्योजी म्हारे हुओहै आनन्द अपार ॥सु १
लिछमन ने वींद बणावीयोजी कांई, सहस बनी परिवार ।
इन्द्राणीसम ओपतीजी कांई, विशल्या पठनार ॥ सु० ॥ २ ॥
दान नेपुण्यकिया घणाजी कांई, कियोहै उच्छव अपार ।
धर्म प्रसादे सहु मिट्योजी कांई, एह म्होटो जंजाल ॥ सु० ॥३॥

ढाल मूलगी

सोलह हजारां नारीमांही, विशल्या पटराणी प्राही ।
जेम राघव ने 'सीता' राणी, तेम 'लक्ष्मण' ने एह बखाणी ॥२१॥
विद्याधर ने वानर मिलीयां, आपण मांही कीजे रलियां ।
जन्मोच्छव जेम ओच्छव होवे, देवी देव तमासो जोवे ॥ २२ ॥
निशाणे तब पड़ियो घावो, आनन्दीयोरे अयोध्या रावो ।
साजन जनने अधिक उल्हासो, दुर्जन जन घरे पड़ीयो त्रासो ॥२३॥
'सौमित्री' जीवन्तो सुणीयो, 'रावण' आरतिवन्तो थुणियो ।
सामन्त मंत्री ने बोलावी, करे मतो उणसारे आवी ॥ सोई ॥२४॥

चेपक सवैया

आनी थी सीत में प्रीत के काज हिवे तिनतो मन दृढ शीलगहा है ।
वन्दर वीरनूं जंग महोदधि देखत ही गढ लंक दहा है ॥
राम रु लिछमन जोर बली मन रावन यूं पिछताय रहा है ।
नेह की नाह कुदाह लगी तब ए रे मल्लाह! सलाह कहा है ॥ १॥

स्वामी श्री नथमलजी कृत ढाल चेपक तर्ज हांक मतिकर गर्व दिवाना
रावण वचन सुनीने भाखे, नीति वचन मंत्री मिल दाखे ।
अरज करां करजोर और दिलमांय विचारोरे ॥
मान प्रभु वचन हमारो(टेर)वचन हमारो मान आन हिरदामें धारोरे १
रामचन्द्र की सीता नारी, जिन्हकूं चाहो करनी प्यारी ।
यह सत्यवन्ती नार प्यार नहीं वंछे थारो रे मान ॥ २ ॥
मानधरी ने सीता लाया, कुलने म्होटा कलंक चढाया ।
अपयश फेल्यो अपार नार कुल करण संहारोरे ॥ मान ॥ ३ ॥
भाई पिण गयो तेहने पासे, प्रभुजी अब तूं क्यूं न विमासे ।
भाई सुत सामन्त तंतु बंधन को धारो रे ॥ मान ॥ ४ ॥
आयो दूत जो लंका धूजाई, रघुवर की है प्रबल पुण्याई ।
शक्ति गई महाराज काज, यह कैसे सारो रे ॥ मान ॥ ५ ॥
सीता दीजे ढील न कीजे, राम राय मनमां ही रीजे ।
सीजे सारो काम जाण ए सूंपां नारोरे ॥ मान० ॥ ६ ॥

ढाल मूलगी—

सौमित्री में शक्ति ए ताड्यो, जाण्यो थो ए मारी पाड्यो ।
रामजी मरसे हुआ प्रातो, नहीं जीवे विण लिछमन भ्रातो ॥सोई०।२५
वानरड़ा सवि जासे भाजि, धणियों विन नवि लडसे पाजी ।
वाए वादल जासे फाटी, विण औषधए व्याधिज काटी ॥सोई०।२६।
भाई सुतसुं सहु छूटसे, नाग फासना बन्धन त्रूट से ।
महेजेही सहु आवी मिलसे, दूध मांहीए शाकर भलसे ॥सोई०।२७।
एती मांहीं कोई न हुई, दैव तणी कारणी छे जूई ।
स्वप्नानो हुवो विवाहो, भाई सुतनी आरती अगाहो ॥सोई० ।२८।
मंत्री भाखे सीता छूटे भाई सुतना बंधन त्रूटे ।
एजो प्रभुजी तुम नहीं करसो, मूआ केडे तुमही मरसो ॥सोई०।२९।
एह अनुनय१ आघो राखो, भूंडूं क्रोधानों फल चाखो ।

१ शर्त ॥ सीता वापिस देने से राम, रावण के भाई व पुत्रों को छोड़ सकते हैं

आप दुःखे परने दुःख जाणो, तुम आगेही आगे ताणो ॥सोई०।३०।
रावण मंत्रीश्वर अब गणिया, दूत बोलावोने इम भणीया ।
राजा राघव पासे जाई, बात कहोजो में कहिवाई ॥ सोई० ॥३१॥
आयोते राघव दरबारे, पोले रोक्यो ते प्रतिहारे ।
प्रभु आदेशे आघो आयो, सभा देखन्तो अचरज पायो ॥सोई०।३२।
इन्द्र सभा तेहवो ए दीसे, प्रभुजी इन्द्रज विश्वा वीसे ।
सामानिक सुरजे नृप पासे, पगे लागीने वचन प्रकाशे ॥सोई० ।३३।

ढाल क्षेपक मूलगी—

प्रभु ने नमस्कार कीधो, वचन यो बोले है सीधो, पत्र कर पद्म के दीधो । रावण जो बात कही मुझने, सुणाऊं बात सोही तुझने ॥ सत्य० ॥ ८९ ॥

ढाल मूलगी—

रावण भाखे तुम्ह गुण सिन्धु, मेलो म्हारा ए सुत बन्धु ।
सीता टाली लियो मुझ राजो, अर्थ लेईने सारो काजो ॥सोई०॥३४॥
कन्या तीन हजारज आपूं, आगे सारी प्रीतिज थापूं ।
इमही करतां नावे दाई, तो तुम सारू नहींछे कांई ॥सोई० ॥३५॥
राम कहे तूं कहजे तेहने, राज्य-अर्थी ते चाहै एहने ।
प्रमदा चाहूंन फेर अनेरी, बात मत कहीजो एहवी फेरी ॥सोई०॥३६
पूजी अर्ची ने ओ सीता, जो तुम द्यो विश्व विदिता ।
तो हूं मेल्लूं एहनो एहो, भाई सुत ने आणी सने हो ॥ सोई ॥३७॥
दूत कहै तुम स्वामी सयाणा, वचन कहो छो अधिक अयाणा ।
त्रिया है ते हारो छो प्राणो, रावण रूठ्यो नहीं को त्राणो ॥सोई॥३८॥
सौमित्री तुम्ह जीवित जाण्यो, तेहथी तो तुम सुदिन पिछाण्यो ।
अबके सौमित्री कपि आपो, तुम्ह मरसोए निश्चय थापो ॥सोई॥३९
एक ही रावण विश्वहीजेता, रावण नो बल भाखूं केता ।
सूर्य उदय थी जाये नाशी, अन्धकार बहु देखी विमासी ॥सोई॥४०
सौमित्री कहै छे तूं दूतो, प्रभु अनुसारे हुई आकूतो ।
फहम विना तूं बोले बोलो, देखाय छे फूट्यो ढोलो ॥ सोई ॥ ४१ ॥

फिट रावण नूं जीव्यूं आजो, बोलन्तों नविपामे लाजो ।
जेहना वाल्हा नन्दन भाई, बंधी थकी न शके छोड़ाई ॥सोई॥४२
जारे कहै तुम्ह स्वामीसाथे, एह कहीछे रघुवर नाथे ।
उन्दर विलतज आवीखेते, साचकरं रे भाखी जेते ॥सोई ॥४३॥
लक्ष्मणनी एतातीवाणी, सांभलता वानरडां जाणी ।
कण्ठे साही बाहीर कीधो, दूतगयो प्रभुपासे सीधो ॥ सोई ॥४४॥
पांच अने एतो चालीशे. ढाल सफली सयस जगीसे ।
'केशराज' ऋषि राय विचारे, साचो जीते झूठ हारे ॥सोई०॥४५॥

दोहा (केदारा रागे)

दूत कही श्रवणे सुणी, फरि तेड्या मंत्रीश ।
कहो मतो कीजे किस्यो, आरति वन्ता ईश ॥ १ ॥
मंत्री दाखे देवजी, सो वातों की एक ।
कही सुणावों स्वामीने, स्वामी तजेजो टेक ॥ २ ॥
सीता दीधां रामने, सरे सहु तुम काम ।
भाई सुत आवे घरे, रहै सहुनी माम ॥ ३ ॥
एह सुणीने भीतरे, आणे अधिकी रीस ।
कोईन सूधो सरदहै, किस्यूं करे मंत्रीश ॥ ४ ॥

ढाल छंमालीसमीं । तर्ज श्रेणिक रायहूंरे अनाथी निग्रन्थ

रावण राय आशा अधिकी थाय. तेतोछोडीरे क्यूं हीन जाय ॥टेर॥
दशकन्धर एमचिन्तवे, हिवकीजे कांई उपाय ।
कवण ऊपाये जीतवू, एतो राम लक्ष्मण राय ॥ रावण ॥ १ ॥
आरती अधिकी ऊपनी भाई सुतनी अगाध ।
वश पड्या छे पारके, ते छूट्या न दीसे आज ॥ रावण० ॥ २ ॥
अमोघ विजय शक्ती थी. कांईयन सर्यो काज ।
लक्ष्मण जीवतो, ऊगर्यो, केम रहेसे म्हारी लाज ॥ रावण० ॥ ३ ॥
अस्त्र शस्त्र बले करी, जीती न सकूं राम ।
कोई उपायथी वश करी, सारु वंछित काम ॥ रावण० ॥ ४ ॥

विद्या सहस्र साधी जीके. ते सहुने अव लोय ।
जेह थकी कारज सरे, तेतो आजन दीसे कोय ॥ रावण० ॥ ५ ॥
एकान्तिक विचारणा, कीधी नृपे ते सोई ।
विद्याजे वहु रूपिणी, ते साध्यों कारज होई ॥ रावण० ॥ ६ ॥
ए विद्या ने साधवारे, उद्यमी थयो ईश ।
एहथी मुझ थायसे, कारज विश्वा वीश ॥ रावण० ॥ ७ ॥
एम विमासी आवीयो, पोषध शाला मांही ।
मणि पीठिका ऊपरे, जाई बैठो रे ज्यांही ॥ रावण० ॥ ८ ॥
मन थिर राखी आपणूं, विद्याने समरन्त ।
प्रकट हुवे त्यों सुखी, लंक पति नियम धरन्त ॥ रावण० ॥ ९ ॥
मिटतो अण मेलतो, आसन पदम ठावन्त ।
जप माला ने कर ग्रही, विधिसूं जाप जपन्त ॥ रावण० ॥ १० ॥
कहै देवी मण्डोदरी, तव पोलीया 'यम दण्ड' ।
दिवसतो, आठों लगे, करोरे धर्म प्रचण्ड ॥ रावण० ॥ ११ ॥
आंविल ने नीवी करो, करो तप उपवास ।
दान द्यो शुद्ध भावसूं, करिये शील अभ्यास ॥ रावण० ॥ १२ ॥
पड़हो दीधो पुर विषे, सहु कोई करजो धर्म ।
नहीं करेतो मारवो, भाखीरे वाणी गर्म ॥ रावण० ॥ १३ ॥
खेचरे आवी सुग्रीवसुं, एह जणावी वात ।
विद्या तो वहु रूपिणी, साधे विश्व विख्यात ॥ रावण० ॥ १४ ॥
कपि पति भाखे रामसूं, कीजे कोई उपाय ।
सिंह अने वलि पांखयों, लीधीरे क्यूं हिन जाय ॥ रावण० ॥१५॥
एह विद्या साधवा, नविजावे जो आज ।
एकही सीधो नविपड़े, बहुलांरे विणसे काज ॥ रावण ॥ १६ ॥
रामकहै थिरतापणे, पूरीयोछे ध्यान ।
अन्तराय कोई मतिकरो, होई रे आतुर अज्ञान ॥ रावण ॥ १७ ॥
थाप ए सुग्रीवनी, करियोरे उपकर्म ।
मूलही थी छेदवा, आतुर होई गर्म ॥ रावण ॥ १८ ॥

अंगदादिक आवीया, पामवा प्रशंस।
गुप्त रावण पारवती, कर वारे विद्या अंस ॥ रावण ॥ १९ ॥
उपसर्ग अति आकरा, कीधा विविध प्रकार।
ध्यान थी दश कंधरु, नहीं चल्यो लगार ॥ रावण ॥ २० ॥
कहै अंगद रायसूं, राम तेज अखण्ड।
जाणीयो ते तेहथी, मांड्यो रे एह पाखण्ड ॥ रावण ॥ २१ ॥
तेहहरी सीता सती, परोक्षे परपंच।
देखतां मण्दोदरी, हूं लई जाऊं रे खेंच ॥ रावण ॥ २२ ॥
साही लीधी सुन्दरी, जेहवी होय अनाथ।
नजर आगे रे रोवती, लेई चाल्यो कपि साथ ॥ रावण ॥ २३ ॥
निर्भ्रे छे वचने करी, अकट विकट अपार।
विल २ शब्द करे घणूं, मण्दोदरी तिण वार ॥ रावण ॥ २४ ॥

धूलचन्दजी कृत क्षेपक ढाल तर्ज धर्म करोरे म्हारा वेलियां—

प्रीतम ! पलने, खोल रे, कपि ए ले जावे कर जोर रे ॥ टेर ॥
रोवे पोटे रानी अनाथज्यूं, सबल करन्ती शौर रे ॥ प्री० ॥ १ ॥
ओ ध्यान कहो कांई आडोरे आसी, प्रीतम पकड़ोंनी योने दौररे ॥२॥
इज्जत गमावे देखो वानर म्हारी, नायक एह निटोलरे ॥ प्री ॥३॥
वार वार विललाट करन्ती, पियु बोल बोल तूं बोल रे ॥ प्री ॥४॥

ढाल मूलगी

एह उपसर्ग आकरा, कीधा रावण पास।
मण्दोदरी राणी तणा राय न देखे नयणे तास ॥ रावण ॥ २५ ॥
ध्यान सूं लग लीनता निहाले नहीं निजनार।
जाणी निश्चक आकरो, विद्या सिधी तिणवार ॥ रावण ॥ २६ ॥
गगन ने उद्योतती, धरे रूप रसाल।
शीघ्र सूं रावण आगे, आवी विद्या ततकाल ॥ रावण ॥ २७ ॥
अन्तरीक्ष रही सन्मुखे, कहै विद्या ताम।
ताहरो मननो वंछियो, मैं करुं सघलो काम ॥ रावण ॥ २८ ॥
विश्वने वश आणवा, अछूं हूं समर्थ।

कोण लक्ष्मण रामजी, अवरसहु छे व्यर्थ ॥ रावण ॥ २९ ॥
विद्या वायक सांभली. पाम्यो हर्ष अपार।
काज सर्यों अब माहरो, गई चिन्ता रे अपार ॥ रावण ॥ ३० ॥
कहे रावण रायजी, तू कहे ते सहु साच।
समय सम्भालेसही, अविचल रहे तुम वाच। रावण ॥ ३१ ॥
विसर्जी विद्यातदा, जाई पहोंची निज ठाम।
वानरा पण रामने, करे आवी परणाम ॥ रावण ॥ ३२ ॥
देवी मण्डोदरी अंगद तणो, निसुणी एह उदन्त।
करतो हू हू कार अधिको, आवेरे घरही तुरन्त ॥ रावण ॥३३॥
स्नान भोजन करी रावण, गर्वं पूरित गात।
विद्यानीतो सहाय पामी, करसूं सहुनो घात ॥ रावण ॥ ३४ ॥

धूलचंदजी कृत–चोपक ढाल तर्ज कांगसीयारी

म्हारा प्राणपति अभिमानी ने समझावण चालोरे ॥ टेर ॥
मण्डोदरी रानी कहै वानी सुनलो बहनों सारीरे।
प्रियतम ने समझावा काजे. चालो मेरी लारीरे।
सोकड़ सहु हालोरे ॥ म्हारा० ॥ १ ॥
सब सिणगार उतार्यो तनको, मनको हर्ष मिटायो रे।
सादा पुराणा वस्तर लेकर, वनिता वेष बनायो रे ॥
देखेसी व्हालोरं ॥ म्हारा० ॥ २ ॥
इणपर रूप विरूप करीने, रावणपे चली आई रे ॥
आंख मांहीसूं आंसू वरसे, करे घणी नरमाई रे ॥
म्हांरी अरजी झालोरे ॥ म्हारा० ॥ ३ ॥

॥ चोपक छंद छप्पय ॥

आज है वार आदित्य वदे इम महिला वानी।
दूजो सोमज देख राज रहसी नहीं रानी ॥
मंगल चाऊंमन्द कन्थ किम बुद्ध कहावो,
विसपतिने करवश जौर सू करने ध्यावो ॥

आज गया थावर इता कहे मन्दोदर कूकवे,
लंक डाण जांण आणीलग्या मानी हट नहीं मूकवे ।१।

क्षेपक ढाल तर्ज लावणी श्री राममुनि कृत—

कहे मन्दोदरी वात नाथ मुझ मांनो छोडो सीता की गैल आधी मत तां नां। रघुवर को महातेज जगत नहीं छांनो, घर फूटो महाराज भाई लियो कांनों ॥ नौकर सब इनठौर दौर गये भाजी ॥ दिन वदले महाराज लड़त है पाजी ॥ तुमकूं को सिखवत नहीं कोई स्यांनो ॥ कहे मण्डोदरी ॥ १ ॥

कुनजानी हस्त ग्रहस्त सभी घटजासी, कुनजानी रणवीच रांक्षस हटजासी । कुनजानी जम्बूमाली नंदकट जासी, कुनजानी सुग्रीव आदि छुटजासी । कुनजानो कपि रींछ जंगे अड़जासी, कुनजानी गढलंक वंक धुड़जासी ।
अठा आगे क्याहोसी जांने भगवांनो, कहे मण्डोदरी ॥ २ ॥

कुन जानीथी शक्ति खाली चलजासी, कुन जानी इन्द्रजीत जोधा बंधजासी । कुनजानी लिछमन वीर सहस परणेसी, कुनजानी वैरी फौज घेरो आय देसी । नन्दन बन्धनवीच देवर पिण जांनो ॥ कोई- कहसी ऐसी वात नहींथो दांनो ॥ कहे मण्डोदरी ॥ ३ ॥

॥ क्षेपक ढाल तर्ज हो पिऊ पंथिड़ा ॥

होपिउ मतवाला हजेयन समझो कांयजो, भाईअरु नन्दन सघला बांधी यारेलो । होपिउ मतवाला सहुथाका समझायजो, शक्तिरे परमुख शस्त्र शरनहीं सांधीयारेलो ॥ १ ॥ होपिउ मतवाला पव न देवगयो आजजो, धूवां फूका पिण कीधा हमे हाथसूंरे लो । होपिउ मतवाला दुर्गापिण गई भाजजो, आरतिनहीं हुईछे आज प्रभातसूंरेलो ॥ २ ॥ होपिउ मतवाला सूर्यदेव गयो रूठजो, वेमाता पिण कोद्रव आज नां दलेरेलो । होपिउ मतवाला पुण्य पिणदीवी पूठजो, दिन२ निजदल राम अरिदलसे मिलेरेलो ॥ ३ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज गैरोजी फूल गुलाबरो

थे मांनोजी सीखसुहामणी थेतो मांनो मांनो नणदीरा वीर म्हारा

साहिबा मैं निरखी परखी इक वातमें शील रखने रखे शरीरा ॥
म्हारा सा-थे मांनो ॥ १ ॥ ए रामचद्र की भारजा आतो सति
योमे शिरताज ॥ म्हारा ॥ केवली आगे भाखीयो, कांई भूलगया
महाराज । म्हारा ॥ थे मांनो ॥ २ ॥ थे जानकी लाया घरजानकी
आतो प्रानकी लेवनहारा ॥ म्हारा थे मांनो ॥ ३ ॥ कुमी नहीं
किणवातरी, थांरे नारी सहस अठारा ॥ म्हारा ॥ वलि जोवोनी
वक्त विचारने, रही थोडीसी घणीगई लारा ॥ म्हारा थेमांनो ॥ ४ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज दलाली लालनकी—

कहे मण्डोदरी सुन पिया रावण, आज सूतीमें महिलां ।
होई उदासी नींद निवारी, मैं भूली सगली सहिलांजी ॥
सीता ने लेई रामसूं मिलो मांनो मांनो पियाजी, म्हारी सीख
सीताने लेने रामसूं मिलो ॥ टेर ॥ १ ॥
इम करतां मुझ निद्रा आई, सुपनो एकज दीठो ।
कांई सुणाऊ तुझने आगे, पिण नांहघणो छे घीटोजी ॥ सीता ॥ २
राम चन्द्रजी की सेनाआई, फिर गई लंका दोली ।
लंकामांही आग लगाई घर २ मांही होलीजी ॥ सीता ॥ ३ ॥
मांही घाल्यो तेल घिरतने, रघु पतिने आई रीसो ।
बीश हाथतो तूटा देख्या, तूटा देख्या दश शीसोजी ॥ सीता ४
ओ सुपनो देखीने जागी, नयनो डार्यो नीर ।
अबहूं आई अरज करणने, मानों नणदीरा वीरजी ॥ सीता ॥ ५ ॥
रत्नश्रवाजी तात तुम्हारा, माता केकसी रानी ।
थे छोपोता सुमाली केरा, सघलोने मत देवो पाणीजी ॥ सीता ६
वैश्रमन थी लंका लीधी, त्रिखण्डाधिप कहावो ।
रामचन्द्र को दुःखदेवतो, क्यूं थे लंक गमवोजी ॥ सीता ॥ ७ ॥
राम राजा छे वह महाबलिया, जिणने थे झेरज कीधा ।
पिण सीताने लाया ऊठाई, छातीमें धमेड़ा लीधाजी ॥ सीता ॥ ८
म्होटी राण्यों सहस अष्टादश, थे छो म्हांरा नाथ ।

जो सीता थे पाछी नसूंपो, तो खालीकरास्यो पिउ म्हांराहाथजी॥९
इतरा दिन तक राज्य करन्तां, दिन२ क्रान्ति सवाई।
सुखसातामें बैठापिऊजी, आकांई कुमति कमाईजी॥ सीता॥१०
भर२ नेणां पाणी न्हांखे, पिन रावन वस नहीं आयो।
थाकी रानीसो इमभाखे, थांरी माता जणनेस्यूं खायोजी॥ ११॥

क्षेपक ढाल तर्ज अरजी सुन नेमहमारी—

पिया मेरी एक नमानी, हरलायोतू नार विरानी॥ टेर॥
रामचन्द्र की सीता लायो, गर्वधरी अधिकानी।
वा नारी तुझ कथन नमांने, क्यों तुम अकल भ्रमानी॥
छोड प्रभु अबतो गुमानी.॥ पिया॥ १॥
इन्द्र सरीसो राज तुम्हारे, समुद्रसी खाई भरानी।
सोवन कोट ओट लंकाके, जिनमेंही लाय लगानी॥
वखत अपनी नपिछानी॥ पिया॥ २॥
थे कहता मुभ सैन्य अपर बली सोतो पास बंधानी।
कुलको कन्दन क्यों करे पियुड़ा, तूटेला अतितानी॥
रामके पुण्य प्रधानी॥ पिया॥ ३॥
दोहा- सुनली वातां नारकी, उत्तर कुछ नहीं देह।
शिक्षा सब खालीगई, ज्यों पत्थर पर मेह॥ १॥

ढाल मूलगी—

आप जणवा कारणे, आवे ते उद्यान।
सती साथे बोलीयो, तब मनसाने अनुमान॥ रावण॥ ३५॥
नियम भंग तणोरे भय अती. भांजी हणवा देख।
मारी देवर स्वामी थारो, सेवूं तुझ सुवि शेष॥ रावण॥ ३६॥
ए अवसरे रायजीनो, व्रत भंज्योरे भाव।
ते अवसरे अधो गतिने, नृप बांध्यो चौथी नो आय॥रावण॥३७
एह सुणन्तां कटुक वाणि, रायनी दुःखदाय।
तास असाता थी धरती, पड़ीरे मूर्च्छाखाय॥ रावण॥ ३८॥

करी शीतलता ऊठाई, अभिग्रह कीधो सार।
राम लक्ष्मण मूवां पीछे, त्यजवा चारे आहार ॥ रावण ॥३९॥

❀ चेपक राधेश्याम. ❀

रावन कहे सुन सुन्दर मुखी, चपल चतुर चित्तचौर।
एक वार अनुराग से देखले मेरी ओर ॥
मँझधार में मेरी नौका है सो पार लगादे ए सीता।
जिसराह में सच्ची राहत है, वह राह बतादे ए सीता ॥
कर कृपा दृष्ठि मेरे ऊपर किञ्चित् मुसका दे ए सीता।
बसयही अर्ज हैं हे सीता, दीदार दिखादे ए सीता ॥
हर तरह प्रार्थना करता था, हर तरह प्रीति दिखलाता था।
फिर साम दाम और दण्ड भेद, चारो प्रकार समझाताथा ॥
देख असुर की ढीठता, लगी हृदयमें चौट।
बोली नीची दृष्टिसे, कर तिनकेकी औट ॥
हे मूर्ख याद रख यहतेरे, पिछले पापोंका साया है।
जो सूने वनसे तूंमुझ को, इसजगह चुराकर लाया है ॥
नो हजार जुगनू रोशनहों, लेकिन न कमलिनी खिलती है।
सूरज जिस समय निकलतेहैं, वह उन्हींको देख चटकती हैं ॥
मेरी यह आंख कमलिनी हैं, सूरज समान श्री रघुवर है।
तेरी यह मदमातीवाते, एक जुगनू सेभी कमतर है ॥
मेरी और उनकी शानकोतू, निशिचर कुछ पहचानता है।
उन खरे करारे बाणोंकी, क्यों नहीं तू ताक़त जानता है ॥
अफ़सोस जो अभि सन्मुख होते, तो अभी तुझे बतलादेते।
दमभर में शानो शोकत को, मट्टी में तेरी मिलादेते ॥
गर आज नहीं तो कल ही सही, जल्दी वो दिन आता है।
हे अभिमानी! हे हठधर्मी! करनी का फल तू पाता है ॥
क्रोधचढा दशशीश को, सुनकर यह गुप्तार।
ऑंखें अपनी लालकी, और खेंची तलवार ॥

बस खबरदार हो ए सीता, चलती है जुबां बहुत तेरी ।
क्या कानसे तूने सुनी नहीं, ताकत मेरी जुरत मेरी ॥
बस जल्द मानले हुक्म मेरा, वर्ना तेरा शर काढूंगा ।
यह गुस्ताखी तेजी तेरी, दमभर में अभी भुला दूंगा ॥

क्षेपक ढाल तर्ज रंगत नाटक—

अरे रावण तूं धमकी दिखताकिसे, मुझे मरनेका खौफ खतरही नहीं। मुझे मारेगा क्या अपनी खेरमना, तुझे होनेकी अपने खबरही नहीं ॥ टेर ॥ १ ॥ क्यातूं सोनेकी लंक कामानकरे, मेरे आगे यह मिट्टी काघर ही नहीं। तेरी हस्तीहै क्या सिवा राम पिया, मेरी नजरीमें कोई बशरही नहीं ॥ २ ॥ क्यूं नहीं जीततू स्वयम्वर लायामुझे, मेरी चाहजो तेरे दिलमेंबसी। थातू कौन शहर मुझे देनी बता, क्या स्वयम्बरकी पहोंची खबरही नहीं ॥ ३ ॥ आवे इन्द्र नरेन्द्र जोमिलके सभी, क्या मजाल जो मेरा शीलहने। मेरे मनका सुमेरु हिलेगानहीं, मेरे मनमें किसीका डरही नहीं ॥ ४॥ चाह चन्द्र गरम हो यदि सूर्यभी शीतल, समुद्र मर्यादा भंगकरे। अनहोनी जोवातहुवे जोकभी, तोमनमेरु हमारा हिलेगानहीं ॥ ५॥ तूंने सहस अठारा जो रानीवरी हाय उन्हपरभी तुझको सबरही नहीं। परतिरिया में तूं ने जो ध्यान किया, क्या निगोद नरक का खतर ही नही ॥ ६ ॥ हुआसोतो हुआ अबमानकहा, मुझे राम पेजल्दी से देतू पठा। कहे न्यामत वगग्ना देखेंगे यह, तोरे शरकी कसम तेरा शरही नहीं ॥ ७॥

क्षेपक राधेश्याम—

बोली चलरे पातकी, क्यों करता बकवाद ।
मैंनेजो पहीले कही, करले उसकूं याद ॥
तू योद्धानहीं चोरहै अब, इसलिए तुझधिकारतीहूं ॥
तेरी सोनेकी लंकापर, नफ़रत की ठोकर मारतीहूं ।
सच्ची सतवन्ती नारीका, सत् आसमान पर रहताहै ॥
व्रत पतिव्रता क्षत्रियाणीका, हरवक्त आन पर रहताहै ।

तूमुझे अकेली देखआज, सीनाजोरी दिखलाताहै ॥
पिंजरेमें फँसी सिंहनीको, नंगी तल्वार दिखाताहै।
तल्वार मुझे मेरे तनको, हरगिज भी काटनहीं सकती ॥
मेरा पवित्र और पाकलहूं, नापाक यह चाट नहीं सकती।
मेंबड़ी खुशीसे कहतीहूं, मुझपर तल्वार चलादे तू ॥
अहसान तेरा होगा मुझपर, जो दुःखसे मुझे छुडादेतू।
परयाद रहे बेकसका खूं, रोयेगा तेरे दामन पर ॥
यह ही तल्वार लालहोकर, आयेगी तेरी गर्दनपर।
हसरत की निगाह है तारोंमें, और आसमान सब तकताहै।
मुझ बेगुनाह मुझ बेकसका, यह खून कहीं छिपसकताहै ॥
सन सना रहीहै हवाजोयह, सोमेरेलिए शहादतहै।
'दोझख की आग भभकतीहै, वह तेरेलिये कयामतहै ॥

ढाल मूलगी—

काया-ममता छोडीने, तजी जीवीतव्य आश।
शील समकित राखवाने, बैठी रे आगले तास ॥ रावण ॥४०॥
धीरज अवलम्बी करी, जाणी कर्म नो दोष।
सती लंक पति ऊपरे, नहीं आण्यो रंचक रोप ॥ रावण ॥४१॥
एह सांभली राय चिन्ते, राम सुं छे अतिप्यार।
हूं विपास करूं शूं बले! न मिले एहनो उतार ॥ रावण ॥४२॥
शक्ति ने हीना होवेरे, थले पंकज जेम।
माछलो तलफीमरं, जलने न उपजे प्रेम ॥ रावण ॥ ४३ ॥
जिन धर्म नो मर्म जाणी काम-अंधो होई।
एह अन्याय अधिक महोटो. मैं कीधो छेरे सोई ॥रावण ॥४४॥
अण जुक्तो मैं कियो, विभीषण नो बोल।
मान्यो नहीं मानने वस्य; साले रे शर सम तोल ॥रावण ॥४५॥

क्षेपक ढाल तर्ज लावणी—राममुनि कृत

नहीं मान्यो विभीषण बोल हिवे पिछतायो, सती भणी दियो दुःख हाथ नहीं आयो ॥ भाई बेटा बंधावाय घरे हूं आयो।

मुझ लगी कुमति की संग यूं ही भरमायो ॥ मैं कियो नहीं जिन धर्म कर्म बंधवायो । नहीं मांन्यो ॥ १ ॥ लंका सो मुझ राज काज नहीं सुधर्यो, गुरु ज्ञानी का वचन जानत हूं विसर्यो ॥ निमित्तीक बोल अमोल जावे किमखाली, सहु संपदा को खोय आपदा घाली ॥ आंख मींच होय अन्ध सती हर लायो ॥ सती हर० ॥ नहीं ॥ २ ॥ अब आवे न पाछी वात हाथसे खोई, २॥ म्हां जैसो कोई नीच भयो नहीं कोई ॥ मण्डोदरी को स्वप्न साच दरसावे. इणपर रावण राय घणो पिछतावे ॥ शूर्पनखा मुझ बहिन मुझ भरमायो ॥ मुझे० ॥ नहीं ॥ ३ ॥

क्षेपक राधेश्याम—

कर लड़ाई रामसे, कटे भटन के शीश ।
लगा सोचने हृदय में, तब लंका के ईश ॥
भाई को वैरी करने का क्या फल है देख लिया मैं ने ।
बद्ला मिलगया मुझे उसका, जो उसपर जुल्म किया मैं ने ॥
मैं भी कैसा मतवाला था, यों भाई को त्यागा मैंने ।
भाई भाई ही था आखिर, क्यों भाई को त्यागा मैंने ॥
उसके मत पर मैं चलता तो. यश मिलता और भलाई थी ।
हा ! मैंने उलटे उसके ही, दर्बार में लात लगाई थी ॥

ढाल मूलगी—

परधानें परगट पणे, हूं वार्यो बहुवार ।
सो न मान्यो आज जाण्यो, मुखे पड़ी मुज छार ॥ रावण ॥४६॥
कुल कलंक्यो मैं आपणो, मैं काज न सार्यो कोय ।
हाथ घसेजे शोच करे वे, न लहेरे वेला सोय ॥ रावण ॥ ४७ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज लावणी—

कछू न विगर्यो हाल सीता जो सौंपूं ॥ सब सुधरे मनका काज झण्ड जश रोपूं ॥ घाल विमान के मांय सेना के बारे । सती जावे राम के पास हुवे जशमारे । रावण एम विमास सती संग आयो ॥ सती० ॥ नहीं मांन्यो ॥ ४ ॥ हे सीता ! चल

लार रामने देऊं । अब अश्लील वचन मुख मांय तुझे नहीं केऊं ॥
इम कही सीता लेई गयो दिल गाढ़े, पिण शूर्पनखा तो वैर
पूर्वलो काढे ॥ मुनि राम कहे संग नीच तणी दुःख दायो ॥
तणी० ॥ नहीं ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी—

मन अपूठो वालीयो, माठी जाणी परनार ।
भोग थकी विरक्त थयो, पाछो देवा कियो विचार ॥ रावण ॥४८॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

भूप तब मनमें आलोची, वातमें एह करी पोची, आखिर
में उमर है ओछी । काम अब करणो है ऐसो, जगतितल जश
फेले जैसो ॥ सत्य० ॥ ९० ॥ लेई तब सीता ने चाले, कहो
कुण होत बने टाले, शूर्पनखा रावण कूं पाले ॥ बालकनो रूप
धर्यो जाम, रुदन को शब्द करे ताम ॥ सत्य० ॥ ९१ ॥

दोहा क्षेपक

रावण आयो गिरिगुहा, देखे मांही बाल ।
क्यो रोवे आक्रन्द करे. कहीये थारो व्हाल ॥

राम मुनि कृत क्षेपक ढाल तर्ज किणमार्यो म्हारो मौर बताय पापी कि०

किम धार्यो विन पोंछ मुझे प्यारारे किम धार्यो रे. तीन लोक
अवलोक करीने मेंतो चरण ग्रह्यां थांरारे ॥ ग्रह्यां थांरारे ॥
ग्रह्या० ॥ किम ॥ १ ॥
मोहमांहि पतितात हमारो, मो मानभणी जाणेसारा जाणे ॥ २ ॥
मुझकुं राखण विरलाजगमें, मोय छोंडसे जातेहै जमवारारे ॥ ३ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज निहालदेरी—

मानी निर्मानी थयाजी कांई, शोभा नहीं सुलतान ।
पणी ऊतर्यो पछेजी, जीवत मत्यु समान ॥
॥ अवमानन छोडो महिपतीजी ॥ टेर ॥ १ ॥
अनम नमावन आपकोजी कांई, विरुध वडो राजान ।
आप पोते परने नमोजी कांई, हारी थयो हेरान ॥ अब ॥ २ ॥

पहिला ए कारज किमकियाजी कांई, पहूंच विना परतीय ।
आणी अनरथ कियाघणाजी, अब मतदो पाछी सीय ॥ अब ॥ ३ ॥
अब देतां ए योषिताजी कांई, शिर रहतां गयो नाक ।
नाक विना स्योंजीव वोजी कांई, दवडूं बलियो ढाक ॥ अ ॥ ४ ॥
मानगयां महातम गयोजी कांई, विनमहातम जीवे सोय ।
दिवटथयां दीवातणोजो कांई, महिमा नकरे कोय ॥ अब ॥ ५ ॥
स्यों जीववो हार्यां तणोंजी कांई, दिनमें चन्दा जेम ।
मूल नमाने महितलेजी कांई अगनी जैसे हेम ॥ अब ॥ ६ ॥
मान राखनो मानलोजी कांई मतद्यो पाछी सीत ।
काने सुनसो सबमुखेजी कांई, रावन थयो फजीत ॥ अब ॥ ७ ॥
सम्भाहो बल आपणोजी कांई देखी नचूकोदाव ।
थांने जीते जंगमेंजी कांई, ऐसो कुणछे राव ॥ अब ॥ ८ ॥
दिनफिरणे मनफिरेजी कांई, गाढो कियो मान ।
मुझ आगे एकवणछेजी कांई, जाने सकल जहान ॥ अब ॥ ९ ॥

क्षेपक सवैया—

परकी तीय आणीघरे सुन, राजन मानकरी दलबलजोरे ।
वीर भिडे नर राजजुडे रुनिशाण घरे, विद्याघन फोरे ॥
रामकी तेग विशेषभई अब हारिके, हासिल देतही लोरे ।
धिकहै नरनाथ निशाचर! टेकग्रही फिर टेककू छोरे ॥ १ ॥

अकज मित्रजेमूढ अकज सुतविनय विहीणो, अकज अंगविन नयण अकज महतो मतिहीणो । अकजमुनि जे अपढ अकजनिस नेही नारी, टेक विना नर अकज अकज गुण गोठ गिमारी ॥ अकज दास उद्यम विना, अकज कुलच्छन भूपना, कविगद कहे हो राय हर अकज कि हांने ऊपना ॥ २ ॥ कर्म प्रमाण नृप तीको सुत मोह महिपति को पुत्र मांन मुझे, मेरी जगमें बडाई है । स्वर्ग लोक इन्द्र तिके मानत हमारी मोज, शुभ्र लोक दानव करे देवों सू लड़ाई है । मृत्यु लोक मांहि कोई नहीं देख्यो आपसो,

ढूंढ़ी सर्व ठौर मैंतो याही ठोर पाई है। अबमो वतावो ठौर ताकी लागूं पीठ दौर मानकी तजत मरोर कोडी जातकूं लजाई है ॥३॥ मान खोयो इन्द्र ज्यों ने दियो तुम्हें काठ मांही, मान खोयो धनद जिनेन्द्र व्रत धारी है। मान खोयो वाली जिन्है चिऊं दिंशि तुम्हें फेर्‍यो, करके तपस्याभये वडे ब्रह्म चारीहै। मानहार्यो चन्द्र सूर्य करत प्रकाश रसवती, मानहारी दुर्गा जिणे आरती ऊतारीहै। मृत्यु लोकमांही मुझे आप एक खरो धार्यो आजहु विसार्यो ताते लानत धिकारीहै ॥ ४ ॥

क्षेपक कुण्डलिया—

मत रोवे मुझ तन बसे सही न देसूं सीत, मान मिटावे माहरो एह कहां की रीत—एह कहां की रीत, ले सीया निज घर आयो, बैठी रहं निश्चिन्त मान बल वध्यो सवायो। छूटे पुत्र ने बंधवा एहवो करूं उपाय, करिये तो सघला घरां सहु आवे सुखदाय ।१।

क्षेपक ढाल मूलगी—

वचन सुन रावन महाराजा, धिक् ए चिन्तवीयो काजा, मानगयां मृत्यु का साजा। सीता ने पाछी ले आवे, मूलगे थानक बिठवावे ॥ सत्य० ॥ ९२ ॥

ढाल मूलगी—

आज देवी नविवने, लोकोंमां अपवाद।
हारी दीधी एम सहु कहसे, मिटियो नृप उन्माद ॥रावण ॥४९॥
सीता ने तो कारणे, मै कीधो संग्राम।
काजन सीधो अपजश लीधो, लोक में कीधो कुनाम ॥रावण ॥५०॥
राम लक्ष्मण इहां आणी, मान सघलो मारि।
धर्म नो जश बोल रावण. देसूं अपूठी नारी ॥ रावण ॥ ५१ ॥
अजश अधोगति बंध थी मति, भली न ऊपजे कोई।
विवेक सघलो वीसरी, गति तेहवी मति होई ॥ रावण ॥ ५२ ॥
रात विषे नृप चिन्तवे, कब होवे पर भात ।

राम लक्ष्मण जीतीने, पाछी आपूं हाथ ॥ रावण ॥ ५३ ॥
एम चिन्तववां चित्त सूं, गई रात विहाय।
प्रातः प्रभुजी सुणी वार्ता, खेतज रे मांडयो आय ॥रावण ॥५४॥
युद्ध सजीने जीपवा, चालण लाग्यो राय।
दर्पण मुख नवि देखीयो, राणी वारे मत जाय ॥ रावण ॥५५॥

क्षेपक ढाल तर्ज नेमकी जानवनी भारी—

रावण कूं समझावत रानी, सीख नहीं मानत अभिमानी—
रामकी नारी ले आयो, करूंगो मेरे दिलचायो ॥
नारि वा कह्यो नहीं मांने, वात दोई आपरी तांने।
रामका पुण्य है भारी, दशा घर नहीं है प्रभु थांरी ॥
दोहा—आयो राम महाबली, लंका लीधी घेर।
वानर गर्जे अतिघणास यह. अबतो कन्था हेर ॥
फेर नहीं वात बने आनी ॥ रावण कूं ॥ १ ॥
रम्भासी रानी है थांरे, सुरा सुर फिरत है लारे।
सबी को कहन ही कीजे, सीता ने पाछी ही दीजे।
जीव अरु राज ही रेवे, लोक सहु धन्य धन्य केवे॥
पीयातूं दिलमें नहीं सोचे. वखत ने क्योंनहीं आलोचे।
दोहा- घर फूटो महाराजजी' नहीं कोई तुमचो सेण ॥
गई वखत फिर नावहीसरे. मान हमारो केण।
चैन यह आखिरकोजानी ॥ रावन ॥ २ ॥
रावण कहे मण्दोदरी सेती, नारीकी तुच्छ बुद्धि एती ॥
विद्या बहु रूपिनी साधी, हमारी शक्ति बहु वाधो।
राम रु लिछमन ने मारूं, वंछित मुझकाज ही सारू ॥
दोहा- लाऊं सबछोडाय ने मारूं, वानर राय।
सीतासूं सुखभोगवूसरे, जब हम तुम सुखथाय।
वाय कहूं प्रगट नहींछांनी, ॥ रावन ॥ ३ ॥
दोहा-- हठी हठसे नाहटे, मूके नहीं निजमान।
समर करनने सज्जथयो, करझाली करपान ॥ १ ॥

ढाल मूलगी—

हाथथी खड़ग पड्यो, मान रह्यो कर सोय।
चालन्तां शिरमुकट पड्यो, शकुन अशुद्धज होय॥ रावण॥ ५६॥
विनाश काले आसनू, आवियोंथी कुचयन।
देखी मंत्री बहु वारे, राय न मांने कयण॥ रावण ५७॥
चालियो अडम्बर घणुं, मत्सर धरन्तो आप।
थर हरावे मेदनी, करतो अति सन्ताप॥ रावण॥ ५८॥
राक्षस अति आनन्दीया, शूरो देखी ईश।
आडम्बर अति आकरो. जीतसे विश्वा वीश॥ रावण॥ ५९॥

चेपक छन्द त्रिभंगी—

रावनकी फोजां वधती मोजां, चलती दरोजां कंकाली।
गयवर गाजन्ता तूरवजन्ता, शूर लजन्ता तब चाली॥
हयवर हणणाटां वहतां घाटां, खुरां संघाटां भूहाली।
रथ चणणटां घणण घणाटां, तूटेचटां मतवाली॥ १॥
राक्षस चलवन्ता जोर वहन्ता, मूह गजन्ता तिहां आवे।
वाजित्र वजन्ता पीसे दन्ता, केई हसन्ता विनभावे॥
मुद्‌गर उछरन्ता हाक करन्ता, होई भय भ्रांता केई गावे।
माने मदमन्ता होयकर तत्ता. माने गत्ता धूजावे॥ २॥
मानी मछराला रणे रसाला, पेट घूधाला मतवाला।
सिन्दूर सुण्डाला हाथीकाला, जशने वाला झूंझाला॥
वकतर माला वडे हताला, विरुध नदाला मछराला।
क्रोधे करकाला लंकावाला. दानवसारा केई पाला॥ ३॥
आपसमें दोड़े होड़ा होड़े,मूछ मरोड़े वलघाले।
कसनाकू तोडे खरासजोरे. लम्बे घोडे चढी चाले।
वानरड़ा दोडे खालीघोडे, गोडा फोडे फिर चाले॥
भूचर मखभोरे शीत बहोरे, एहते तोरे कुनपाले॥ ४॥
राक्षस गण देखीमान विशेषी, वधती सेखी चढिआयो।
रणभूमि धसेसी लातांदेसी, कपिविशेषी वरपायो॥

वानर चढेसी आज्ञालेसी, रामनरेशी मनभायो ।
लक्ष्मन शुभकेशी पीत सुवेशी, फतेकरेसी माजायो ॥ ५ ॥

क्षेपक राधेश्याम—

रावन कहे सुभटांप्रति, हृदय करो बलवांन ।
युद्ध स्थलमेंदो मचा, जाकरके घमसान ॥
तेगे परशे तोमर मुद्गर, शर धन्वा भाले ले लोतुम ।
अस्त्रों शस्त्रों से सज्जितहो, रणमें आगे बढ़ खोलो तुम ॥
मैंभी चलताहूं साथ साथ, धावा आंधीसा करनाहै ।
या विजयी होकर जीनाहै, या वीर भूमि पे मरनाहै ।
इस प्रकार सजकरचला, निशिचर कटक विशाल ॥
पृथ्वि थर्रानेलगी, दहलगए दिगपाल ।
आंधीऔर बादलके समा, उठ उठ कर बढता जाताथा ॥
निशिसी करदी निशिचर दलने, दिनमें दिनकरन दिखाताथा ।
रावण दल साथमें रावणके, जब रामादलमें जापहूंचा ॥
तोजय कोशनाधीश की कहकर, कपि कटक मुकाबिल आपहूंचा ॥
यह कोपा हुआ कटक क्षणमें खलभलकर, खलदल दलने लगा ।
रावण की आंखांके आगे, रावण दल पीछे चलनेलगा ॥
निजदल पीछे भागता, देखाजब दशभाल ।
तब तेवर तिरछेतने, तीर तके ततूकाल ॥
तीखे तीरोंने किया, जातेही यह काम ।
काईसा फटने लगा, वानर कटक तमाम ॥
देखीजब सौमित्रीने, त्रस्त हुई कपि सैन ।
तभी अरुण मार्तण्डके, तुल्य होगये नैन ॥

ढाल मूलगी—

चाली रणमुख आवीयो, जीतिं करवाहेत ।
केशरी नीपरे गाजतो, पुण्य वीत्यो चित्त न देत ॥रावण॥६०॥
ताम नरपति आप भाखे, कियां नृपति चोर ।
राम लक्ष्मण रक्षा करन्त, आवि देखूं बलजोर ॥रावण॥ ६१ ॥

ताम सन्मुख होई भाखे, सुमित्रानो नन्द ।
आव लंकपति गर्व तजी मुख, आंपां लड़सूं आनन्द ॥ रावण ॥६२॥

क्षेपक राधेश्याम

सन्मुख लक्ष्मण को निरख, रावण कहे कर नाद ।
अरे ! आज फिर आगया ! रहीन पिछली याद ॥
उसवार भाग्य ने बचादिया, इसवार बचने न पायेगा ।
पहले मूर्च्छा ही आई थी, पर अबके प्राण गंवायेगा ॥
मैं वह सागर हूं बढ़ा अगर तो प्रलय–काल दिखलायेगा ।
वह ज्वाला मुखी शैल हूं मै, फूटा तो जग जल जायेगा ॥
लक्ष्मण बोले 'गर्वयह', यह घमण्ड दे त्याग ।
मैं मैं का अच्छा नहीं, होता जादा राग ॥
है वही शक्ति शाली जगमें, जो नम्रभाव दिखलाता है ।
फलवाला जब तरु फलता है, नीचे को झुकता जाता है ॥
मैंना जो मैं--मैं कहती है, वह सबके मनको भाती है ।
बकरी जो मैं, मैं, कहती है वह गले छूरी फिरवाती है ॥
बात काट कर बीच में, बोला रावण वाय ।
बच्चे ! यह रणभूमि है, राज--प्रासाद है नांय ।
साहस और स्वाभिमान हीतो, रणवीरों का आभूषण है ।
नाहर सा गर्जन तर्जन ही, सच्चे योद्धा के लक्षण है ॥
मैंना जो मैं–ना कहती हैं, पिंजरें में जन्म बिताती है ।
बकरी गर्दन कटवाती है, लेकिन मैं कभी न जाती है ॥
जाती है बोले लखण, उसकी भी यह टेक ।
मैं वालीके लियेभी, आताहै दिन एक ॥
हड्डी और मांस अलहदाकर, जब आंत निकाली जातीहै ।
उस आंतकी औजारों सेफिर, जब तांत बनाली जातीहै ॥
वह तांत किसी धुनकीवाले, हाथोंमें जिस दिन जातीहै ।
धुनियां जब रूई धुनताहै, तब तूंही तूंही गातीहै ॥

वचन युद्ध किया प्रबल, दोनों युक्तिके जान ।
उत दशशिर इतहै लखण, छोडे निजरबान ॥

ढाल मूलगी—

युद्ध मण्यो राम रावण, लड़े सुभट अपार ।
बाण लक्ष्मण तणा वरसे, जाणे वर्षे जल धार ॥ रावण ॥ ६३ ॥

छेदक छन्द त्रिभंगी--

वानर अतिसोसे, भरियारोसे, होट मसोसे चलिआया ।
सुग्रीव भरोसे सबसन्तोपे, भरियाजोसे वरदाया ॥
राक्षसने खोसे शतीसदोषे, लंक मसोसे रे भया ।
स्वामीने तोपे सदानिदोपे, रावन खोसे रघुजाया ॥ ६ ॥
वानर डेमण्डी वडा उमण्डी, रणना चण्डी आफरिया ।
शिर शिला प्रचण्डी राक्षस खण्डो, मारे अफण्डी लातरिया ॥
गुरजां झुण्डी मण्डो घणाघमण्डी, देखे चण्डी पाखरीया ।
एहवो पाखण्डी करदेमण्डी, देदे क्रण्डी परतिरिया ॥ ७ ॥

ढाल मूलगी—

अस्त्र शस्त्र लड़वेकरी, हूंसन राखी कोई ।
लंकपति सो रामानुज, विविध परे झूंझाणादोई ॥ रावण ॥ ६४ ॥
देखीवल लक्ष्मण तणोरे, शंकियो भूपाल ।
विद्या तब बहूरूपणी, समरे नृप तत् काल ॥ रावण ॥ ६५ ॥
विद्या आई अति ऊमाई, मांगे ए आदेश ।
हुक्म चाहूं स्वामी थारो, करूं कारज अशेप ॥ रावण ॥ ६६ ॥
ताम नृपति देई आदर, विद्या ने भाखन्त ।
एह अवसर विद्या थारो, कारज करी दाखन्त ॥ रावण० ॥ ६७ ॥
राय रावण करे आपण, रूपनो विस्तार ।
भूमी गगने पूठिपासे, दीसे, रौद्र अकार ॥ रावण ॥ ६८ ॥
देखी रावण रूप अधिका, सुग्रीवादिक भूर ।
शौच ऊपनो अधिक मनमें, रायदोसे पाणी नूर ॥ रावण ॥ ६९ ॥
ताम लक्ष्मण अधिक बलियो, गरुड़नो असवार ।
जेमनडुओं फिरे नाचत, रावण केरीरे लार ॥ रावण ॥ ७० ॥

क्षेपक त्रिभंगी—

लक्ष्मन शरवाहे वडे ऊमाहे, चित्तने चाहे रोषभरी।
सणणणसूसावे साम्हांजा, प्रणगमावे चौट करी॥
रावण मनमांहे रोषभराहे, बाणहे जौर करी।
मनमें उच्छाहे कपिदलढाहे, भरता आहे प्राणहरी॥

ढाल मूलगी—

अरुणा वर्तज धनुष्य लीधो, वज्रमुखो तेबाण।
रावणने सन्मुख आवे, लक्ष्मण शूरों रो सुलतान॥ रावण॥ ७१॥
एक बाणेरे सो गुणोधावे, सोमांहीथी सहश्र।
सहश्रथी लखक्रोड प्रगटे, पुण्य प्रभावे अस्त्र॥ रावण॥ ७२॥

❀ क्षेपक राधेश्याम ❀

प्रथिवीपर पड़नेलगे कट कट कट बजवान।
मुर्दोंकी वस्तीबना, लंका का मैदान॥
रघुकुल नायक केबाणों, रघुकल कीशान दिखाहीदी।
उसप्रलय कालके धन्वाने, रणमें एक प्रलय मचाहीदी॥
जोबाण धनुष्यसे चलताथा, उससे लाखोंबन जातेथे।
इसतरह लक्ष्मणके कालबाण, लाखों को क्षणमें खातेथे॥
ज्यों आतिशबाजीका अंगार, लाखोंचिन गारियों काघरहै।
त्यों लक्ष्मणका एक बाण, अगणित बाणोंका सागरहै॥
विज्ञानकी पदवी ऊंचीहै, विज्ञान वेत्ता जानतेहैं।
जोबात असम्भवहो उसको, विज्ञानी सम्भव मानतेहैं॥
अबभी नित नये नयेदेखो, करताहै आविष्कार जगत।
परउस त्रेतावाले युगमेंथा, वैज्ञानिक भण्डार जगत॥
इतनाहीं कि एकतीर, लाखों शरीर धर आताथा।
सुनते तो यह हैं एक तीर लाखों शरीर पर आता था॥
थी यह उन्नत विज्ञान-कला, मन्त्रों की शक्ति थी यह।
जो भी हो प्रभु के बाणों में, ताकत थी यह खूबी थी यह॥
इस प्रकार को दण्ड से, शर जब चले अखण्ड।
युद्ध भूमि में रक्त की, सरिता वहि प्रचण्ड॥
मानों दोनों मदमाते दल, सरिता के तट दिखलाते हैं।

गज अश्व सिपाही–मरे हुए, जल जन्तु समान सुहाते हैं ॥
पड़–रहे भंवर थे पहियों के तैरेथे, कछु ए ढालों के ।
पत्ते थे टुकड़े खालों के, छाये सिंवार थे बालों के ॥
मेदसके झाग दीखते थे, लहरें थी टूटे तीरों की ।
ढायें गिरती थीं आर पार, कट कट कर मृत शरीरों की ॥
बढ़ बढ़ लड़ते थे मुख्य सुभट, क्षण भरभी नहीं बैठते थे ।
वे मानों रणकी सरितामें, अच्छे तैराक तैरते थे ॥

अमुरों का होने लगा, जब ज्यादा संहार ।
तब तो मानों मृत्यु का, गर्महुआ बाजार ॥
लाशों पर लाशें पटीं, रण बनगया मसान ।
दृश्य भयंकर होगया, लंका के दरम्यान ॥

गीधों के झुण्ड 'गोठ' करने, लाशों के पास जुड रहे थे ।
काकों के वृन्द चौंच फैला मुर्दों के निकट उडरहे थे ॥
श्वानोंकी टुकड़ी चीरफाड़ मृतकोंके थकड़े करतीथी ।
मज्जा अस्थियोंके हिस्सेपर, आपुसमें झगड़े करतीथी ॥
वैतालियोंका तीर्थबना, संग्राम भूमिका दरियावह ।
प्रेतनियोंका पकवान हुआ, मुरदार मांस और मज्जावह ॥
योगनियों उसविरियां आकर, खप्पर को खूब सजातीथी ।
चामुण्डाकेलिये खोपरियोंको, उनकी करताल बजातीथी ॥

इस प्रकारसेही हुआ, घोर घना संग्राम ।
लखण बाणसे रावण विद्या, आहत हुई तमाम ॥

ढाल मूलगी—

जिहां देखे तिहां मारे, बाणसूं ते रूप ।
एहि बन्ध कुबन्ध हुओ, चक्रज समेरे भूप ॥ रावण ॥ ७२ ॥

क्षेपक ढाल मूलगी—

लक्ष्मण यह कितराही मारे, रावण तब जोयोहै लारे अदश्येहो विद्यागई त्यारे । रावण जबहुवो बलहीनो, चक्रने याद करलीनो ॥ सत्यं ॥ ९३ ॥

नाम सुदर्शन तेहनूं, आयुधनूं शिरदार ।
आयुद्ध शालाथी नीकली, राय पासे आवे तिणवार ॥रावण ॥७४॥
धसि आयो मन सुहायो, फेरवे ते चक्र ।
हरी लीयो अतिहोड़ मारे, न लिखेरे वेला वक्र ॥रावण ॥७५॥
चक्र लेई फेरियो रे मेलियो तिणवार ।
आकाश मार्गे चालीयो, आयो लक्ष्मणनी लार ॥ रावण ॥ ७६ ॥
राम सुभट कपि अति, चक्र आवन्तो देख ।
शोर मचियो कटके अधिको, शूं कीजे उपकर्म विशेष ॥रावण॥७७॥
आवीया प्रदिक्षिणा देई, वासु[1]देव विनाण ।
तेजे करी रविसारिसो, बैठोरे दक्षिण पाण[2] ॥ रावण ७८॥
राय चिन्तवे वचन मुनिनो, साचही देखाय ।
भाई मंत्री कथन जेतां, ते सहुरे आज मिलाय ॥ रावण ॥७९॥
लक्ष्मण भाखे चक्र बांधव, अवसर तुम परिवार ।
वश्य थया सहु महायरे, राय ज्यूंरे अवर उपचार ॥ रावण ॥८०॥
राम भाखे लंक पतिसूं, नहीं चक्रसूं काज ।
आपो सीता जाऊं पाछो, करो तुम्है सुखे राज ॥ रावण ॥ ८१ ॥
देखी आरतिमांही बंधव, विभीषण बोलन्त ।
आप सीता राखी जीववूं, मेलि ओ तन्तो तन्त ॥ रावण ॥८२॥

धूलचंदजी कृत चेपक ढाल तर्ज काना प्रीत लागीहो ।

लंका सरिसी सायबी, समुद्रसी खाई हो ।
एतो सुखने छोडने, मन जावो भाई हो ॥
बन्धव ! बोलमांनो हो ॥ टेर ॥ १ ॥
आंत नपीजे आखरी, कालेजो कलकेहो ।
अरजी छेली मायरी, नेणां जल ढलकेहो ॥ बन्धव ॥२॥

राम मुनि कृत चेपक ढाल तर्ज चलो सखी कुछ जेजन करीये ।

विभीषण की वात सुनीजे, वखत नहीं छे आनेकी ।
सीतादीजे ढील न कीजे, वात नहीं छे छाने की ॥ वि० ॥१॥

१ लक्ष्मण । २ हाथ ।

शक्तिगई गई सवविद्या, सुत बन्धु बन्ध चानेकी।
पाँच नहीं भई सब जग केसी, म्हेणी देसी नृप रानेकी ॥वि० ॥२॥
राज्य धानी सब रानी हारी, नहीं मानी कोई दानेकी।
चक्र गयो तुझ दुस्मन हाथे, वखत आई जिय जानेकी ॥वि० ॥३॥
वार २ यह अरजी साहिब, किम रहे वस्तु विराने की।
सीता सूपूं वलिसब रखूं, दो आज्ञा पहूंचाने की ॥ वि० ॥४॥
हूं चाकर तू ठाकुर मेरो. मोझ करो लंक थाने की।
श्री रघुवरजी नेक कहत है, वरवत नहीं बहु तानेकी ॥ वि० ॥५॥
गुन्हमाफ कियो सवतांने. मत चूको अवसाने की।
लक्ष्मन भाखे ओछन राखे, राम कहै परमाने की ॥ वि० ॥६॥

क्षेपक ढाल मूलगी—

रावन कहै भोले क्यूं भूले, दीसे है थारो स्यूं सूने, उखारूं सब को जरामूले। जठे तठे आडो तूंही आवे, क नकटा लाज नहीं लावे ॥ सत्य० ॥ ९४ ॥

ढाल मूलगी—

कोपीने तब कहे रावण, कहो किस्यो कहाव।
चक्र लक्ष्मण ने मारूं, मेली मुष्टिनो घाव ॥ रावण ॥ ८३ ॥
एमकहतां राय लक्ष्मण, ऊपन्यो अतिरोष।
फेंकियो तब रावण ऊपर, चक्र सुदर्शन घोष ॥रावण ॥ ८४ ॥

स्वा० नेमीचंदजी कृत क्षेपक तर्ज खड़को—

लक्ष्मण कलकल्यो, कोपसे पर जल्यो कड़ कड़ी भीड ने चक्र वावे। आकाशे भमावीयो सन नन चलावीयो, जारे वैरीनो शीश छेद लावे। हरि को पावीयो चक्र-वलावीयो ॥ टेर ॥ १ ॥ रघु-सेना में जावतो, सुख वरतावतो, रत्न-सुवर्ण ने पुष्प जुई। महीमावस्तर तणी केसर सुगन्ध घणी, ए पंच प्रकारनी वृष्ठि हुई ॥ ह०॥ २ ॥ राक्षस सेना मेंही चक्र आयो वही, तामघोर तो अन्ध कार हुवो। बावल विहामणी महा डरावणी, खार थकी अधिकोरे धूंवो ॥ ह० ॥ ३ ॥ वर्षा हुई अगन प्रत्थर तणी, धूल

कांकर ने फूंस कांटो । रंज उठीजती आंख बूरीजती उल्का-
पातने शाल कांटो ॥ ह० ॥४॥ हड़ड़ड़ ताम हड़डाट हुवो घणो,
सड़ड़ड़ सो अगन रा बाण छूटे । घडडड़ धरती सहु धूजे घणी,
तड़ड़ड करती नाडतूटे ॥ ह० ॥ ५ ॥ झणणण ताम झणणाट
हुवो घणो, घणणणजिम मृग राज गाजे । फणणण जेम फुंकार
करत है अति, सणणण चक्र नो शब्द वाजे ॥ ह० ॥ ६ ॥

ढाल मूलगी

आवन्तां चक्र देखीयो तव, वीर रस भूपाल ।
चक्र मुष्ठि प्रहार दीधो, एहथीरे बहु विशाल ॥ रावण ॥ ८५ ॥
बेहूं ने वे हाथे हणतां, हुआं बेनो चार ।
पुण्य विना रायजी ए, नहीं कर्यो कांई विचार ॥ रावण ॥ ८६ ॥
चक्रमांहिथी चक्र निकली, मस्तक छेद्योताम ।
जेष्ठ कृष्णा एकादशी, दिवसे पश्चिम जाम ॥ रावण ॥ ८७ ॥
सहस चतुर्दश आयु भोगवी, अशुभ कर्म उपाय ।
ठामे चौथे जई ऊपन्यो. कियांना फलपाय ॥ रावण ॥ ८८ ॥
कुसुम केरी वृष्टि हुई. देव दीये आशीष ।
जगत में जयकार अधिको, जीवो कोडी वरीश ॥ रावण ॥ ८९ ॥
ढाल षट् चालीशमीरे, जीतिया श्री राम ।
केशराज मुनीन्द्र भाखे, सर्या वंछित काम ॥ रावण ॥ ९० ॥

ढाल चेपक मूलगी—

अष्टम यह 'वासु' 'बल' देव जानो, त्रिखण्डा धिप ही पहिचानो,
मानजो सघला ही आनो । हरि प्रति हरि ने तो मारे, बात या
शास्त्र पूकारे ॥ सत्य० ॥ ९५ ॥

दोहा मारू रागे—

राक्षस नासे दश दिशे, भय आणी मनमांय ।
धैर्य दिये छे राक्षसां, नृप विभीषण आय ॥ १ ॥
जाति पतीजे जातिने, जाति तणो विश्वास ।
आवि मिलिया एकठा, राय विभीषण पास ॥ २ ॥

आयाँ प्रभुजी पाखती, प्रणमें प्रभुनापाय ।
दीलासो दोधोघणो, स्वमुख राघव राय ॥ ३ ॥
रावण पड़ियो देखने, विभीशण तिणवार ।
मूर्छाए धरणी ढल्यो, नरही शुद्ध लगार ।

क्षेमक ढाल तर्ज धूसारी—

मुख बोलोनी बन्धवा अभिमानी ॥ टेर ॥
किम सूता रणभौमि विचमें, कहां गईतेरी ठकुरानी ॥ मुख ॥ १ ॥
वीरहोय खण्डत्रय जीता, तोआज्ञा चलाई मनमानी ॥ मुख ॥ २ ॥
भवित व्यताकोभय नहीं मनआण्यो, जनकसुता लेघर आनी ॥ ३ ॥
निश्चय भविटरे नहींटारी, तो एह सदा केवल वानी ॥ मुख ॥ ४ ॥
मैं म्हारो ओलम्भो टार्यो, कहीं नहीं कोई हो अगवानी ॥ ५ ॥
परतीय खातिर प्रणगंवाया, जबर हठी बनकरी हानी ॥ मुख ॥ ६ ॥
हेबन्धव तूंमुझसे रूठो, नही बोलेतोकर शानी ॥ मुख ॥ ७ ॥

क्षेपक राधेश्याम—

जबहोसहु आंतो विछाया यहमेंने क्या करवायाहै ।
हा! भाई होकर भाईका, रणमें संहार करायाहै ।
वहवड़ा भ्रातथा डरक्याथा, जोउसने लात लगाईथी ॥
पर मैंने इतने परही हा! उससेली ठान लड़ाईथी ।
अपमान लातसे जब समझा, तबकहां धीरता रहीमेरी ॥
सज्जनता शान्ति शील छोडातो, कब गम्भीरता रहीमेरी ।
मैंतुच्छ संकुचित चित्तकाथा, यहगलती हुई मूझीसेथी ॥
भाईथा वड़ासभी गुणमें, लंकाकी शान उसीसेथी ।

दोहा मूलगा—

विभीषण निज भाईनो, शोक करे अतिस्वाम ।
पेटेछूरी मारतां, हाथ ग्रह्या श्री राम ॥ ४ ॥
मन्दोदरी आदिसहु, शोक करन्ती नार ।
रावण प्रियने रोवती, झूरेमनही मझार ॥ ५ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज–हो पियु पंखीड़ा—

होपिउ अभिमानी नहींमान्यो मुझबोलजो, दाखीरे मैंभाखीवात

थांने घणीरेलो ॥टेर॥ होपिउ अभीमानी नहींदाखी दिलखोलजो आणीरे घरराणी तिणदिन रघुवर तणीरेलो ॥ १ ॥ होपिउ अभिमानी कहांरही रामातेहजो, राज ऋद्धि त्यागी परभवथे गयारेलो । हो पिउ अभिमानी कहांरयो तुझनेहजो, क्षणमांही तो परवश प्रभुजी तुमथ पारेलो ॥ २ ॥

होपिउ अभिमानी क्यों पोढया रणभूमिजो, तुम विनरे अकुलावे जियड़ो मायरोरेलो होपिउ अभिमानी नहीं छोड्यो मानने तुमजो निजकृत कमाई संगसिधाई थायरेरोलो ॥ ३ ॥ होपिउ अभिमानी इसकेतीदेती ओलम्भजो, इसकेती देती ओलम्भजो रोतीरे मूर्च्छाती भामन अति दुःख करेरेलो ॥

क्षेपक राधेश्याम—

इनपरही मन्दोदरी, मुखसे करती हाय ।
पतिप्यारे की लाशपे, गिरी पछाड़े खाय ॥

आंखे पसारकर दुःखियाने प्राणेश्वरके तनको देखा ।
लोहुसे लथपथ छिन्न भिन्न अपने जीवन धनकोदेखा ॥
चिल्लाईहाय सुहाग गया, शृंगार गया साम्राज्य गया ।
घरके राजाके साथ साथ, घरकी रानी का राज्य गया ॥

ईस प्रकार घण्टां तलक, रोई दुःखिया नार ।
चुडिऐ तोड़ी हाथकी, बिछुए दिये उतार ॥

जोशब्दथे उसटूटे दिलके, वह लिखनेमें तेही नहीं ।
उस दुखियामनके पछतावे, सम्पूर्ण कहे जातेही नहीं ॥
ऑसु ओंकी इतनी धारवही, सारा शरीर आंसू मयथा ।
एक नया समुद्र नहोजाए, लंकामे बस यहही भयथा ॥

प्रभुने मन्दोदरीकी, दशा निहारी दीन ।
उधर विभीषण भूपको, देखा निपट मलीन ॥

रहन शके आगे बढे, दिए बहुत उपदेश ।
दवे वियोगी मनोंमें, तब वियोगके क्लेश ॥

क्षेपक ढाल मूलगी—

वीर ए शूरपणे मूओ रावन सम राय नहीं हूओ, जगत अखियात एहु ओ। आस्वासन प्रभुजी दिलवावे, करोमत शोच समझावे।सत्य०९६।

दोहा मूलगा—

रामकरे समझावणी, कां रोवो सहु कोय।
रावण रायां रावथो, अमरां अधिको जोय॥ ६॥
वीरवृत्ति मांही मूओ, न मूओ कायर होय।
शोकन करवो तेहथी, देखो चित्त अवलोय॥ ७॥
संस्कार कायातणो, करो मत लावो वार।
होती आवी थांहरे. सोई करो प्रकार॥ ८॥
कुम्भकर्ण ने शत्रुजीत, घनवाहन ने आन।
बन्धन छोडी मोकला, किया सहु राजान॥ ९॥
सहू कुधुम्ब हुओ एकठो, आवि मिलीयो ताम।
रोयां रीखियां खींजीयां, करे मृत्यु को काम॥ १०॥
परवाली पावन करी, पूजी अरची काय।
करी रत्नमय पिंजरो, लेई चाल्या ते राय॥ ११॥
बावना चन्दन नी चिता, अगर घणो घनसार।
दहन कर्म विधि साचवी, पक्ष्म अने परिवार॥ १२॥
पद्म सरोवर नाहिया, पछे जलांजली दीध।
प्रेत-कार्य रावण तणो, एटलो सघलो कीध॥ १३॥
दिन केताने आंतरे. मिटे शोक सुजाण।
कथा रही रावण तणी, आगे सुणो वखाण॥ १४॥

ढाल सेंतालीशमीं तर्ज यदुपति जीत्यो रे—

रघुपति जीत्यो रे. दशरथ नन्दन धीर॥ रघु०॥
लक्ष्मणनो वड़ वीर॥ रघु॥ सत्यवतीलो कन्थ॥ रघु०॥
गिरु ओनो गुणवन्त॥ रघु०॥ टेर॥
नोबत केरा नादसूं, अम्बर रहियो गाजी।
इन्द्र न आवे आसनेहो, सोर रह्यो अति लाजी॥ रघु०॥ १॥

घरघर रंग वधामणा, घर घर मंगलाचार ।
घर घर गुडी ऊछलेहो, मुख मुख जय जयकार ॥ रघु० ॥ २ ॥
जीत तणा कडखा घणा, गावे गुणिय अपार ।
धन्य सीता धन्य रामजीहो, धन्य लक्ष्मण अवतार ॥ रघु० ॥ ३ ॥
हाथ पडी रावण तणे, तोये न खण्ड्यो शील ।
सीता धन्य ते कारणे हो, निर्मल गंग सलील ॥ रघु० ॥ ४ ॥
हठीसूं हठ लेई रयो, मिलियो कटक अपार ।
राम धन्य ते कारणेहो, न तजी त्रियानी लार ॥ रघु० ॥ ५ ॥
कांटो गयो तिहूं लोकनो, न तजे थो अभिमान ।
लक्ष्मण धन्य ते कारणेहो, मार्यो रावण मान ॥ रघु० ॥ ६ ॥
रामअने लक्ष्मण वदे, वाणि अमिय समान ।
कुम्भकर्ण आदि करीहो. निसुणो सहु राजान ॥ रघु० ॥ ७ ॥
राज्य करो आप आपणां, पहीलां जेम थो तेम ।
आण वहो लक्ष्मण तणोहो, होसे तुमने खेम ॥ रघु ० ॥ ८ ॥
एम सुणोने राजीया, आंसू नांखे ताम ।
गद् गद् वाणि बोलिया हो, निसुणो श्रीरघुराम ॥ रघु० ॥ ९ ॥
काज नहीं राही तणूं. अमारे एक लिगार ।
संजम लेई साधसांहो. अब हम मोक्ष दुवार । रघु ॥ १० ॥
'कुसुमायुध' उद्यान में, 'अप्रमेय बल' नाम ।
चार ज्ञान शूं शोभता हो, आया मुनि अभिराम ॥ रघु० ॥ ११ ॥
साधु हुआते केवली, तिणही रात्रो मझार ।
केवल ओछव कारणेहो. आये देव उदार ॥ रघु० ॥ १२ ॥
प्रातः हुआ श्रीरामजी, सौमित्री सूं साथ ।
कुम्भकर्ण आदि करीहो. चाल्या ते नर नाथ ॥ रघु० ॥ १३ ॥
देई प्रदक्षिणा वांदिया, साधु महा सुखकार ।
आगे बेशी सांभलेहो, धर्म तणो सुविचार ॥ रघु० ॥ १४ ॥
'इन्द्रजीत' 'घनवाहन', पूर्व भवान्तर वात ।

पूछे भाखे केवलीहो, निसुणो ए अवदात ॥ रघु० ॥ १५ ॥
'कौशम्बी' नगरी विषे निर्धन भाई दोय।
प्रथम 'पश्चिम' नामथीहो, साधु समीपे सोय ॥ रघु० ॥ १६ ॥
धर्म सुणी व्रत आदरी, महियल करी विहार।
'कौशम्बी' नगरी फिरीहो, आया ते अणगार ॥ रघु० ॥ १७ ॥
'नन्दीघोष' राजा भलो, 'इन्द्रमुखी' तसुनार।
क्रिड़ा करत वसन्तनी हो, दीठो नयन पसार ॥ रघु० ॥ १८ ॥
'पश्चिम' नियाणूं करे, ए तप तणे प्रकार।
एहवी क्रीड़ा कारीहो, इणही घरे अवतार ॥ रघु० ॥ १९ ॥
वर्ज्यो पण माने नहीं, निन्दे नहीं निदान।
काल करीने उपन्योहो राय घरे सन्तान ॥ रघु० ॥ २० ॥
'रति वर्धन' नामे भलो, यौवन नो वयपाय।
राज्य लही रामत करेहो, तप करणी फल-दाय ॥ रघु० ॥ २१ ॥
प्रथम साधू मरी ऊपन्यो पंचम कल्पे देव।
भाई राजा देखीयोहो, आयो सुरतत् खेव ॥ रघु० ॥ २२ ॥
भेखधरी मुनिवर तणो, रति वर्धन नृप पास।
पूर्व चरित्र सुणावतां हो, जाति स्मरण तास ॥ रघु० ॥ २३ ॥
संजम लीधो सादरो, पंचम स्वर्गे जाय।
दोय देव शचि करीहो, क्षेत्र विदेहे आय ॥ रघु० ॥ २४ ॥
'विबुध नगरे ऊपन्या, दोई भाई भूप।
संयम पामी वारमोहो, पाम्या स्वर्ग अनूप ॥ रघु० ॥ २५ ॥
तिहां थकी चवि आवीया, राजा रावण-गेह।
'इन्द्रजीत' धनवाहनू हो, भाई थया ससनेह ॥ रघु० ॥ २६ ॥
इन्द्रमुखी पट रागिनी, रति वर्धननी माय।
ए राणी मण्डोदरी हो, थांरी माय कहाय ॥ रघु० ॥ २७ ॥
इन्द्रजीत घनवाहनू, कुम्भकर्ण भूपाल।
अवरही बहु व्रतआदरे हो, पट कापिक प्रतिपाल ॥ रघु० ॥ २८ ॥
राणीजी मण्डोदरी, आदि नारी अनेक।

संजम सूधो आदरेहो, वारु एह विवेक ॥ रघु० ॥ २९ ॥

धूलचंदजी कृत—क्षेपक ढाल तर्ज
जीरे मुनियों रो मेलो पुण्य पसायथी—

जीरे,-समता धारीने संजम आदर्यो, जीरे-दीवो संसार्यों ने पूठो, कर्मा पर करडी मूठो । मुगतीना लोभी, वारो जाऊंहो तोपे वारणा ॥ १ ॥ जीरे-प्यारा छ कापोंना न्यारा पापसूं, जीरे-तपकर आतम ने तारी, माया ममता ने मारी, टाली हो कुमती कुनार ने ॥ २ ॥ जीरे-घन जिम थे गाजो, बाजो शूरमा, जीरे-आप मुगतीना रसीया, म्हारे हिरदा में वसिया, कसिया हो तम्बूड़ा शिवपुर जाणरा ॥ ३ ॥ जीरे-गुणराणो आगर सागर ज्ञानरा, जीरे-त्यागी वैरागी भरपूरो सत्य वक्ता-शूरो, आशाथे पूरो भव्य जीवोंरी ॥ ४ ॥ जीरे-वणि अनमोली तोली नहीं तुले जीरे-अमृत ना प्यालापाओ । भाव विध २ रलाओ, घणाही सुहावो नर नारने ॥ ५ ॥ जीरे-साराई मुनिवर माला रतनोंकी, जीरे-भगवन्त वचनोंमें चालो । उलटा जातांने पालो. मालोहो मुनिर महियल ऊपरे ॥ ६ ॥ जीरे-पोपाड़ निवासो प्यासी ज्ञानरो. जीरे धूलचंद मुनि गुणगावे । मस्तक चरणोंमें नावे,तिरण तारण मुनिराजरे ॥ ७ ॥

ढाल मूलगी—

साधु नमी श्री रामजी, सौमित्री कपिनाथ ।
विभीषण आदिकरीहो, लारही लिया बहु साथ ॥ रघु ॥ ३० ॥
शणगारी लंकापूरी, ओछवनो अधिकार ।
विद्या धरीए कीजियोहो. मंगलनो विस्तार ॥ रघु ॥ ३१ ॥
वेत्रण वाट वतावतां, लंका मांही प्रवेश ।
शुभ वेला शुभ मुहूर्तमेंहो, कीधो राम नरेश ॥ रघु ॥ ३२ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज ख्यालकी; राम मुनि कृत—

गढ लंका मांयने, आईरे असवारी राजा रामकी ॥ टेर ॥
राम लक्ष्मण तो दोपे अधिका, हाथी होदे बैठा ।
सारा लोक लुगाई देखे, नगरी मांही पैठा ॥

दर्वाजामें बड़तां ऊचां, मोती झुम्बक देठारे ॥ गढ़ ॥ १ ॥
सावामण को मोती शोभे, बाजू सोहे और ।
राम चन्द्रजी दिलमें सोचे, इसो नदूजी ठौर ।
अयोध्या में शोभे ओतो, लेवां इसकूं तोरर ॥ गढ़ ॥ २ ॥
मनोगत भाव जाण कविवरने, बोले समस्या बोल ।
बमी चीजको वंछेन उत्तम, यह कथा और अमोल ॥
एक एकसे अधिका धिकहै, देखो आगली पोलरे ॥ गढ़ ॥ ३ ॥
सुनकर राम विचारे दिलमें, साचकहेछे एह ।
ए सब चीज विरानी इनसे, भूलन करना नेह ॥
अजब तरह की वस्तु देखत, कहतां न आवे छेहरे ॥ गढ़ ॥ ४ ॥
लोक तणेमुख शोभा सुनने, सीता पास पधारे ।
सीता देखन की अभिलाषा, सोजाणे करतारे ॥
पग २ लाख पसावज देते, इनपर राम पधारे रे ॥ गढ़ ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी—

पुण्य गिरिने मस्तके, बैठीथी उद्यान ।
जाई जोई जानकीहो, जेहवी कही हनुमान ॥ रघु ॥ ३३ ॥
बांहि साई सुन्दरी, राघव लीधी गोद ॥
जीवितव्यए नवू थयूंहो, प्रगट पणे प्रमोद ॥ रघु ॥ ३४ ॥
पिंजरने ए प्राणियो, हुओ एकठो आज ।
राघवजी अब जाणीयोहो, हूंरे अछुं महाराज ॥ रघु ॥ ३५ ॥
महासती म्होटी सती, देव कहे आकाश ।
स्वर्ग मृत्यु पातालमें हो, पामी अति शाबास ॥ रघु ॥ ३६
आंसूं सूं पगधोवतां, आवी करे प्रणाम ।
सौमित्री सोल्हास१सूं, आज सर्या सहु काम ॥ रघु ॥ ३७ ॥
मस्तक चूंबी सादरो२, सीता दिये आशीष ।
चिरानन्दे३ चिरंजी वजेहो, सफली सयल जगीश ॥ रघु ॥ ३८ ॥
भामण्डल प्रणमेंघणूं, बहिनी कहै चिरंजीव ।

१ स-उल्हास-आनन्द सहित, २ आदर सहित, ३चिर-लांबो-आनन्द

म्हारीए आशीस थीहो, वाधो आयु अतीव ॥ रघु ॥ ३९ ॥
विभीषण सुग्रीव जी, हनुमन्त अंगद आया।
चरण नमें सीता तणाहो, भूपतीजी भल भाय ॥ रघु ॥ ४०
'कुमुदिनी विकसे घणूं, देखी पूनम चन्द।
सीता तेम प्रभु देखवेहो, पामी परमानन्द ॥ रघू ॥ ४१ ॥
'भुवना लंकृत हाथीए, चढ्या सजोड़े राम।
लक्ष्मण हाथी आगलेहो, जोड़ वनी अभिराम ॥ रघु ॥ ४२ ॥
आया रावण मन्दिरे, पेख्यो प्रवर प्रासाद।
सहस थम्भनो शोभतोहो, करे गगनसूं वाद ॥ रघु ॥ ४३ ॥
लहु कहे घर माहरे, पूज्य पधारो आप।
सहु कोई जाणेसहीहो, प्रीत तणी ए थाप ॥ रघु ॥ ४४ ॥
राय तणूं मन राखवा, आवे घर प्रभुतास।
भोजन भक्ति भली करीहो, उपजाव्यो उल्हास ॥ रघु ॥ ४५ ॥
पहिरावी परिवारसूं, पोषी परिगल प्रेम।
कर जोडीने वीनवेहो, राय विभीषण एम ॥ रघु ॥ ४६ ॥
ए घोडा एहाथीया, अरथ गरथ भण्डार।
हेम रत्नपट कुलशूंहो, वस्तु अमोलक सार ॥ रघु ॥ ४७ ॥
ए लंका लीलावती, करो अपाणो ईश।
ठकुरायत रावण तणोहो, छेलो विश्वा वीश ॥ रघु ॥ ४८ ॥
लंका राज्य तणो करो, प्रभुजीने अभि शेष।
ताम राम बोल्या हसीहो, बोल हमारो एक ॥ रघु ॥ ४९ ॥
लंका दीधी तुम्ह भणी, पहीलीही हम देख।
आज तिलक सवी ताहरोहो, जाणी कीयो सुविशेष ॥ रघु ॥ ५० ॥
इन्द्र भवनमें इन्द्रजिम, राय भवन में स्वामी।
परिवरियो परिवारसूं हो, आयो आनन्द पामी ॥ रघु ॥ ५१ ॥
सिंहोदर आदिकरी, ताम सहु नर नाह।
दीधी थोजो कन्यकाहो, आणे धरिय उच्छाह ॥ रघु ॥ ५२ ॥

को लक्ष्मण को रामने, परणावी ते बाल ।
सर्व सुलक्षण गुणवतीहो, रमणी रूप रसाल ॥ रघु ॥ ५३॥
इन्द्र तणा सुख भोगवे, क्षण मांही दिन जात ।
छ वर्षतो बोलिगयाहो, अब मिलवा मात ॥ रघु ॥ ५४ ॥
ढालज सैंता लीशमी, रंग विनोद विलास ।
'केशराझ श्री रामनेहो, पूर्व पुण्य प्रकाश ॥ रघु ॥ ५५ ॥

दोहा नह रागे—

इन्द्रजीत घनवाहन्, मरुस्थे ल्लीमें जाय ।
महामुनि मुगतेगया, तीर्थ मेघरथ थाय ॥ १ ॥
'कुम्भ कर्ण शिव गतिलही, नदी नदी नर्मदा मांय ।
'पृष्ट रक्षित नामे भलूं, तीर्थ प्रवर्त्यो त्यांय ॥ २ ॥
अब माता 'अपराजिता' सुमित्रा सूं दोय ।
पुत्रोनी आरति करे, खबर न पावे कोह ॥ ३ ॥
खण्ड धातकीथी चली, आई गयो ऋषि देव२ ।
पगे लागतां पूछही, माता सुण ततखेव ॥ ४ ॥
कां तुम अति आरति करो, कां तुम दुबले देह ।
आंसूं नांखी मायजी, उत्तर आपे तेह ॥ ५ ॥
तात तणा आदेशथी, वत्स गया वनवास ।
सीता पण साथे हुई, पतिव्रता व्रत तास ॥ ६ ॥
सीता रावण अपहरी, करी घणो परपच ।
नन्दन हुआ वाहरूं, मेली कटकनो संच ॥ ७ ॥
राम अने रावण तणा, सुभटोंमें संग्राम ।
होतो रावण खीजियो, शक्ति चलावी ताम ॥ ८ ॥
लागी लक्ष्मणने हैये, पड़ियो मूर्च्छा खाय ।
विशल्या आदि आवीने, लेईगया खगराय ॥ ९ ॥
खबरन पामी आगली, ए अम आरतिहोय ।

१ विंध्यस्थली =२ नारद ऋषि=

के जीवन्तो ऊगर्यो, केवत्स मुओ सोय ॥ १० ॥
नारद भाखे मतिकरो, आरती एह लगार।
लक्ष्मण मार्यो नविमरे, जो रूठे करतार ॥ ११ ॥
जाऊं छूं लंकापुरी, लाऊं लक्ष्मण राम।
आरती भांजू ताहरी, तोमुझ नारद नाम ॥ १२ ॥
एम कहीने आवीयो, राघवजीने पांस।
माय मनोरथ पूरवा, एम करे अरदास ॥ १३ ॥

ढाल अड़ताली शमीं तर्ज रसीयानी (तथा अलगी रहनी—

सुमित्रा अपराजीतारे, जोवे प्रभुजी नीवाट।
लक्ष्मणजी ना घावनो, आणे अति उचाट हो सुणस्वामी ॥ १ ॥
खबर न कोई पायहो सुण स्वामी, झूरी पिंजर थायहो सुण स्वामी ॥ टेर —
रयणी छमासी जाय सुण स्वामी रही घणूं लीधो लायहो ॥सु०॥२॥
पुत्रों ऊपर मायनोरे, होवे नेह अपार।
सुरभी नी परे देखीयो रे, चित्त रहे वत्स लार हों ॥सु०॥३॥
फिरे कुदन्ती वानरीरे, सुतने कण्ठ लगाय।
माले सेवे पंखणीरे, लिये सुतनेरे वधाय हो ॥सु० ॥ ४ ॥
गर्भ धरे वे पोखवेरे, पाले वे अभिराम।
प्राण आपणा आपवेरे, सारे सुतनो काम हो ॥ सु०॥५॥
माता गंगा सारखीरे, माता तीरथ रूप।
माता महियल मोटकीरे, मांने म्होटा भूप हो ॥ सु०॥६॥
पणमुकी गणपति वादमेंरे, अधिकाणी अतिमाय।
साजो हुओ गणपतीरे, शंकरे कीधो न्याय हो ॥ सु० ॥७॥
वीर स्वामी मांने घणूं रे, जवहुता गर्भ मांहे।
माताने दुःख देई नेरे, संयम नहीं लीधो ग्राहे हो ॥सु०॥८॥
घणूं किसूं कहिए दाखिएरे, माताने सुख देत।
सुख दीधो संसारमे रे, एह धर्म नो हेत हो ॥ सु० ॥९॥

* यह कविका कथन है।

रूड़ा भाखे रामजीरे, नाराद सूं सुखपाय।
लंकपति बोलाईके रे, भाखे प्रभु अकुलाय हो ॥सु० ॥१०॥
भूप! तिहारी भक्तिथीरे, विसर्या हम माय।
आगेही खेंच्यां थकीरे, माताजी मरिजाय हो ॥सु० ॥११॥
अबही जाई उतावलारे, मिलिये मातने आज।
तो तो ए साचो पड़े रे. कीधो सघलो काज हो ॥सु०॥१२॥
कहे विभीषण रायजीरे, मांग्या द्यो दिन सोल।
ज्यूं एती त्यूं एटली रे, मांनो हमारो बोल हो ॥सु०॥१३॥
इन्द्रपूरीनी ओपमारे, आछी भांत अनूप।
अयोध्या समरावसूंरे, कहे लंकनो भूप हो ॥ सु० ॥ १४॥
विसर्ज्यो ऋपिरायजीरे, मातापासे आय।
बात कही सन्तोषनीरे, हर्ष हिये न समाय हो ॥ सु० ॥१५॥
कारीगर लंकातणारे, सुघड़ोंना सिरदार।
अयोध्याए आवीयारे, कांई न लागी वार हो ॥ सु० ॥१६॥
जेम कहूयूं तिमही कर्यू रे, चतुर पणे चित्त लावी।
के देखो हरीनी पुरीरे, के देखो ए आवी हो ॥ सु० ॥१७॥
दहाड़े अब सत्तरमेंरे, पुष्पक नामे विमान।
बैसी 'लक्ष्मण' रामजीरे, सोहम ने ईशान हो ॥सु० ॥१८॥
सीता विशल्या वलीरे, रामसुता सुकुमाल।
सघली बैठी सन्मुखेरे, विद्याधरी सुविशाल हो ॥ सु०॥१९॥
'विभीषण' सुग्रीवजी रे. भामण्डल हनुमान।
अंगद सूं दक्षिण दिशे रे, बैठा पुरुष प्रधान हो ॥सु० ॥२०॥
बाम दिशे विशेषथी रे, बैठा राक्षस राय।
पूठे सेवक सामटारे, लीयो विमान चलाय हो ॥ सु० ॥२१॥
अयोध्याने आसना रे, आया जाण्या जाम।
भरत भूप लघु भाईसूंरे, साहमा आवे ताम हो ॥ सु०॥२२॥

१ शाक्रेन्द्र और ईशानेन्द्र एकत्रित हुवे जैसे।

ऊतरीया हाथी थकीरे, नजरे आया ईश।
ईश विमाने ऊतर्यारे, आणी अधिक जगीश हो ॥सु० ॥२३॥

चेपक राधेश्याम—

राम-दरस के हेतु जब, अवध चला उमड़ाय।
भरत भूप के सहितसब, हुए उपस्थित आय ॥
इतनेमें नेत्र भरतजी के, आकाश के ऊपर जाते हैं।
उस समय अचानक निकल पड़ा, रघुराज हमारे आते हैं ॥
इतनेमें वह पुष्पक विमान, कुछ और समीप नजर आया।
आखिर को सबने क्या देखा, नभसे भूमण्डल पर आया।
अब तीन गुणोंयुत तीन व्यक्ती, उसके अन्दरसे प्रकट हुए।
साथही साथ आगे पीछे, जाहिर सब साथी सुभट हुए॥
उस राम लक्ष्मण पे दृष्टिजमी, आगेको भरत झपटते हैं।
मेरे भइया, मेरे, भइया, कहकर चरणों में पड़ते हैं ॥
श्री रामचन्द्रजी भी गद् गद् थे, हाथों पे उठा लिया बढ़कर।
प्राणों से प्यारे भाई को, छातिसे लगालिया चढ़कर ॥

ढाल मूलगी—

भरत भूप भल भावसूंरे, रह्यो चरण शिर नांय।
ऊठाई ऊंचों करीरे, लीधो कण्ठ लगाय हो ॥ सु० ॥२४॥
मस्तक चूंबे रामजीरे, वारम्वार विशेष।
शत्रुघ्न पग लागतांरे, दिये सन्मान नरेशहो ॥सु० ॥२५॥
शत्रुघ्न ने भरतजीरे, लक्ष्मण ने परणाम।
करतां लक्ष्मणजी कर्यूंरे, जेम कीधूं श्रीराम हो ॥सु०॥२६॥
ताम विमाने एक ठारे, बैठा बन्धव चार।
दान शील तपभावसूंरे, पामे शोभ अपार हो ॥ सु ॥ २७ ॥
पहे लाही प्रगट पणेरे, आयोध्या समरावी।
मेलीथी प्रभु आवतांरे, पुनरपि फिरी जड़ावीहो ॥ सु० ॥ २८ ॥

चेपक रधेश्याम—

पातेही इसखबरके, आतेहैं श्री राम।

अवध पूरी बनगईहै, एक अलौकिक धाम ॥
जो नगरी सीता रामविना, एक ख्वार दिखाई देतीथी ।
वह आज खुशोसे फूलागई गुल्जार दिखाई देतीथी ॥
जो कली कभी मुरझाईथी, वह आज खुलपड़ी खिल आई ।
जहां अन्धकार का वासाथा, वहां आज धूपसी ख़िल आई ॥
जो वृक्षकभी पतझाड़मेंथे, वेफिर बाहरमे आयेहैं ।
मालीको आता हुआजान, गुलफिर गुल्जारमें आयेहैं ॥
सरजू की लहरें उठ उठकर, स्वागत की उमंग जतातीहै ।
वृक्षोंकी लता लहलहा कर, फूलोंका फर्श बिछातीहै ॥
कूपोंमें होगयाहै, अमृत जैसा नीर ।
तालावांमें भरगया, मानों आके क्षीर ॥

ढाल मूलगी—

छांटी थोड़े पाणिएरे, रज सघली बपसावी ।
करी सुगन्धी धूपणेरे, फूलही फूल बिछायी हो ॥ सु० ॥ २९ ॥
तोरण नी रचना करीरे, गलिए गलिए देखी ।
घर घर गुडी उछलेरे, घर घर हर्ष विशेषो हो ॥ सु० ॥ ३० ॥
वाजा विविध प्रकारनारे, भूमिअने आकाश ।
वाजे नीका नादसूंरे, होई रह्यो उल्लासहो ॥ सु० ॥ ३१ ॥
नगरी मांही आवीयारे, माधव देखो मोर ।
ऊंची नजर विलोकवेरे, लोक करे चकोर हो ॥ सु० ॥ ३२ ॥

धूलचंदजी कृत क्षेपक ढाल तर्ज दलाली लालनकी—

अयोध्या फूलरहीरे, घर आयाहै लक्ष्मण राम ॥ टेर ॥
घर २ मांही रंगवधावो, गौरी मंगल गावे ।
सब सिणगार सजीने सारी, रघुपति सामी जावे ॥ अ० ॥ १ ॥
आज आंगणिये सुरतरु फलियो, अमृत मेह बरसाया ।
मुंह मांग्या तो ढलगया पासा, इन्द्र चली घरआया ॥ अ० ॥ २ ॥

ढाल मूलगी—

कनक तणे कुसुमे करीरे, भरि भरि मोती थाल ।

वधावे वनिता वलीरे. गावे गीत रसाल हो ॥ सु० ॥ ३३ ॥
वधावे चारु वलीरे. कामनी कलश उदार ।
दाने जल धर वरसतारे, आया नृप दरबार हो ॥ सु० ॥ ३४ ॥
उतरी ताम विमानथी रे. राम- सुमित्रा नन्द ।
महिल मांही मन रंगसूं रे, आवे धरी आनन्दहो ॥ सु० ॥ ३५ ॥
पहेला कौशल्या तणा रे. चरणे नामें शीश ।
पाछे अवर माता भणी रे, माता दिये आशीश हो ॥ सु० ॥ ३६ ॥

सवैयो-

मात को मोह सत्थ सीता को मैंभी लयो महातम मेरो ।
भरत की भक्ति सेव लक्ष्मण की. पोरस लयो पवन-सुत केरो ॥
रावण राय त्रिकूट गढ़ खाई. लंका मार कियो घन घेरो ।
ए सब पूर्व लेखहै सब, अवर प्रतापहै कैकेयी तेरो ॥ १ ॥

सीता विशल्या सतीरे, कौशल्या पगेलागी ।
पिछे सासु अवरनीरे, लहे आशीश सुहागी हो ॥ सु० ॥ ३७ ॥
जिसा सुतहम जन्मीयारे, तैसाही समतोल ।
तुमपण नन्दन जन्मजोरे, मानी हमारो बोल हो ॥ सु० ॥ ३८ ॥
फिरी फिरीमा आपरा जितारे, लक्ष्मण केरो अंग ।
करसूं फरसे शिरधणूरे, चूंबी कहे मन रंग हो ॥ सु० ॥ ३९ ॥
वत्स तुम्हारो आज मेंरे, हुओ जाण्यो जन्म ।
नयणे निरख्यो आपणोरे, धन्य करतानी कर्म हो ॥सु० ॥४०॥
कष्ट घणूं वनवासनूंरे, सीताने रघुदेव ।
तेतो आंघूं काढियूंरे, जोते कीधी सेव हो ॥ सु० ॥ ४१ ॥
ताततणी पर रामजी रे, सीताए ते जेम ।
कहे लक्ष्मण वनवासमेंरे हूंतो राख्यो एम हो ॥ सु० ॥ ४२ ॥
माताजी उद्धत पणेरे, मैं कीधो अविवेक ।
सीता-रामवियोगनोरे, हेतु हुओ हूं एक ॥ हो सु० ॥ ४३ ॥
पण थारी आशीश थीरे, वाये बादल फाटी ।

गयु सही आखी अणीरे, आया अरि निरघाटी हो ॥सु० ॥४४॥
ढाल्ज अड़ तालीशमीं रे, गई वहोड़ी नार ।
केशराज ऋषि राजजीरें, पुण्य वडो संसार हो ॥ सु० ॥ ४५ ॥

❋ इति श्री जैन पद्य रामायणे ❋

॥ तृतीय खण्डम् सम्पूर्ण ॥



श्री वीत रागाय नमः

श्री जैनपद्य रामायण

का

चतुर्थ खण्ड



दोहा

सुगुरु वडो संसारमें, ज्ञान दान दातार ।
शिष्य सुगुरु सेव्यांलहे, विद्यानो विस्तार ॥ १ ॥
'राम सुलक्ष्मण आवीया, माता हर्ष अपार ।
तेमन जाणे आपणो, केजाणे किरतार ॥ २ ॥
'भरत सुभक्ति करेभली, अवसर जाणी सार ।
उत्सव मण्डावे घणा, घर घर मंगलाचार ॥ ३ ॥
सेवक होई साचेव, स्वामी तणी अतिसेव ।
भूपतिनी पदवी तणो, नकरे को अहमेव ॥ ४ ॥
संयम लही स्वामीसूं, भरतभणे सुविचार ।
राज्यग्रहो प्रभु आपणूं, हूंलेऊं संयमभार ॥ ५ ॥
संजम तोहूं सादरो, लेतो राजासाथ ।
शईत शक्ति सूंपीगया, नृप-पद केरी आथ ॥ ६ ॥
आज लगे मैं राखीयो, एह तुम्हारो राज ।
दादाजी रे दयाकरो, सारूं आतम काज ॥ ७ ॥

ढाल गुणपचामीं तर्ज नथनी (तथा उग्रसेन की ललीरे)

क्षणगईरे मेरी क्षणगई, लाखीणी मेरी क्षणगई ॥ क्रोडिणो मेरी क्षणगई, क्षणगई फिरी नावे सोई, अंजलीनूं रेजल जातूं जोई
॥ टेर ॥ १ ॥

समय समय मरन्तो जीव, वीतरागना वचन सदीव ॥ क्षण ॥

तनु साथे डोलन्ती छांय, कालरहे एपूरी बांह ॥ क्षण ॥ २ ॥
कालसूं औषध नहीं है विनाण, जम रूठ्यां नहीं राखे प्राण ॥ क्षण ॥
जातक१ ने जम खाई जाय, अण जातक सामूं नदिखाय ॥ क्षण ३ ॥
काले खाधोहु संसार, कालन खाधो जाय लगार ॥ क्षण ॥
.... ॥ क्षण ॥ ४ ॥
जरान पीड़े न ऊपजे रोग, नघटे इन्द्रीना बलयोग ॥ क्षण ॥
जबलग आवीन पूगेआव, तबलक करीजे धर्म की चाव ॥ क्षण ॥ ५ ॥
जेनरा जरा जमथी नडराय, तेतोढीलो करेरे न्याय ॥ क्षण ॥
मन्दिर द्वारे लागा लाय, तबतो काईहोन कढाय ॥ क्षण ॥ ६ ॥
सागर पल्लने आयु छेह, कौण विचारे गिणती एह ॥ क्षण ॥
जेदव बाले परवत प्राहे, क्योनबले खड़तेदवमांहे ॥ क्षण ॥ ७ ॥
जग में भाख्यो सयल उपाय, घड़ी घटे क्षणहीना रहाय ॥ क्षण ॥
चावण१ चावी पन्थी पुलाय, पन्थी पन्थे न रहेवा पाव ॥ क्षण ॥८॥
एह सयाण पणूं मुझ आज, जेम तेम सारूं आतमकाज ॥ क्षण ॥
घर बालीने कीर्ति करन्त, मूर्ख शिरोमणी नामधरन्त ॥ क्षण ॥९॥
आली२ आंखे कहे श्रीराम, वत्स ! रहे वादे संयम काम ॥ क्षण ॥
राज्य करो तुम्ह पहिला जेम, जोमुझ साथे राखोप्रेम ॥क्षण ॥१०॥
आज्ञा कारी तुम अभिधान, तेतो जाणे सयल जिहान ॥ क्षण ॥
पहीली जेम तुम्ह मानी आण, अबही करोमुझ बोलप्रमाण ॥क्षण॥११
भरत भूप करीने जुहार, ऊठी चाल्यो लोपी-कार३ ॥ क्षण ॥
लक्ष्मण दौड़ी साह्यो हाथ, आणी बेसाड्यो नरनाथ ॥ क्षण ॥ १२ ॥
'सीता' ने 'विशल्या' आद, राणी सहु आवी प्रल्हाद ॥ क्षण ॥
देवरने समझावे तेह, सुन्दरी वचन वदे ससनेह ॥ क्षण ॥ १३ ॥

मुनि श्री रूपचन्दजी कृत चेपक ढाल तर्ज कमली वालेने—

नृप वनिता यों समझाय रही, मत संयम लेवो देवरजी ।
सुन संयमकी छतियां धरकी, फिर मुखसे न केवो देवरजी ॥टेर॥

१ पथिक पन्थ में खाद्य खाकर विश्राम नहीं करता है। पाणी दीने को आतुर होता है ॥ २ आंसू सहित ॥

हिय हेज धरी इम कहत सीया, सुन संयम की अकुलात जीया ॥
इतना दिन वनवास लीया, हम आये जावो ! देवरजी ॥ नृप०१॥
संयम का मारग बहुत कठिन, चलनाहै खड्ग की धार तच्छिण ॥
मत करिये हठ तुम्ह होके दच्छिन, अबतो गम खावो देवरजी ॥नृप२॥
हो सुकुमार फूल ज्यू गौर वदन, वहां करना है कर्मों का कदन ॥
वड़ बन्धवकी अहो गुणके सदनों, आणामें वेवो देवरजी ॥नृप॥३॥
कहे लोक आयेघर राम सीया, जब भरतको संयम दिलायदिया ॥
यह अपयश हमसे नजाय सया, घर रूपो रहोहो देवरजी ॥नृप॥४॥

ढाल मूलगी—

म्होटो भाई तात समान, क्यूं न विचारे तूं राजान ॥ क्षण ॥
सायर केम तजे मर्याद, एतो निश्चय विधि वाद ॥ क्षण ॥ १४ ॥
विसारण संयम नी बात, जल क्रीडा कर वाने जात ॥ क्षण ॥
देवर साथे घाले वाख, तुम्हसूं खेलण कीअभिलाप ॥क्षण ॥१५॥
भाभियोंनो मन राखण हेत; चाल्यो भूपति महिल समेत ॥क्षण॥
घठिका दोई करी जल ख्याल, जल कांठे ऊभो भूपाल ॥क्षण१६॥
एटले गज 'भुवना लंकार', थम्भो ऊखेडे रोष अपार ॥ क्षण ॥
आयो देखी तीयपरिवार, शोर मच्यो पड़ियो गजलार ॥क्षण१७॥
थर हर धूजण लागी वाल, देखी हाथी अति विकराल ॥ क्षण ॥
पूठे राखी सघली देवी, आयो नृप आगे ततखेवी ॥ क्षण ॥ १८ ॥
मदकरी ओंधो तेरे गयेन्द, नयणे दीठो भरत नरेन्द्र ॥ क्षण ॥
मद ऊतरियो तेणीवार, शान्त हुओ गज छाडी विकार ॥क्षण॥१९॥
गज-दर्शन देखी अभिराम, भूपति पण पायो सुख ताम ॥ क्षण ॥
काने साही छाली जेम, भूपति आगे हाथी तेम ॥ क्षण ॥ २० ॥
वात सुणी ने आवे धाय, राम सु लक्ष्मण सुभट सुहाय ॥ क्षण ॥
करी उपाय अनेके जाण, महावते गज आण्योठाण ॥क्षण ॥२१॥
कुलभूषण ने भूषण देश, समो सर्या ऋषिराज विशेष ॥ क्षण ॥
पद्म सौमित्री भरत नरेश, वन्दन आवे लोक अशेष ॥क्षण॥२२॥

पूछे पद्म कहो ऋषिराय, भरत देखी गज निर्मद थाय ॥ क्षण ॥
देश सुभूषण केवल धार, भाखे भूपा सुणो सुविचार ॥क्षण॥२३॥
ऋषभे[1] लीधो संयम भार, साथे हुआ नृप चार हजार ॥ क्षण ॥
एषणा समिती न लह्यो आहार, तापस हुआ ते तेहीवार ॥क्षण॥२४
प्रल्हादन सुप्रभ नृप-नन्द, ताप सना व्रतपाली अमन्द ॥ क्षण ॥
चन्द्रोदय सूर्योदय देख, भवमांहि भमिया सुविशेष ॥क्षण ॥२५॥
चन्द्रोदय गजपुर में आय, हरिमति भूपति नन्द कहाय ॥ क्षण ॥
चन्द्रलेखा सुउदर उत्पन्न, कुलंकर नामे वित्पन्न ॥ क्षण ॥ २६ ॥
'सूर्योदय' पणते पुरमांहे, विश्व भूतिनो नन्दन थाहे ॥ क्षण ॥
अग्नि कुण्डा उदर अवतार, श्रुतिरति नामे कुल आधार ॥क्षण॥२७॥
'कुलंकर' नृप पद पावन्त, तापस वनमें पग ठावन्त ॥ क्षण ॥
विचेमिल्यो ज्ञानीअणगार, अभिनन्दन भाखे सुखकार ॥क्षण२८॥
तापस पंचाग्नी साधन्त, जीवघणानो आणे अन्त ॥ क्षण ॥
लाकड़ अग्नि लगाव्यो आप, तेमां है बलेछे साप ॥ क्षण ॥ २९ ॥
सो अहि पर भवनो तुम्ह बाप, क्षेमकर नामे लहे ताप ॥ क्षण ॥
फाडी लाकड़ काढ्यो नाग, जीव ऊगार्यो तेसो भाग ॥क्षण ॥३०॥
लाकड़ फाड्यो माहे भुजंग, दीठो राजा हुओ विरंग ॥ क्षण ॥
दीक्षा ऊपर आणे भाव, 'श्रुतिरति' ताम कहन्त कहाव ॥क्षण ॥३१॥
वय पाके दीक्षाग्रह हेज, करवो काया आजश तेज ॥ क्षण ॥
एम सुणी भांग्यो उत्साह, लचिपचि मांही रह्यो नरनाह ॥क्षण॥३२॥
'श्रीदामा' राणी छे तास, 'श्रुतिरति' साथे छे सुविलास ॥ क्षण ॥
शंकया आयां पामी भेद, राजाजी करसे शिर छेद ॥ क्षण ॥३३॥
विषदेही मार्यो भरतार, वेगोही मूओते जार ॥ क्षण ॥
पापतणा फल एहिज जूरी, ए दोई भव भमिया भूरी ॥क्षण ॥३४॥

---

१ ऋषभदेव निराहारपणे मौनकर विचरने लगे, पीछे शेष मुनि निर्दोषआहार नमिलनेसे तापसहुए । उन्होंमेंसे प्रल्हादन, और सुप्रभ राजाना पुत्रों अधिक भवकर तेहुए चन्द्रोदय-और सूर्योदय हुए ॥-

'राजगृह' नगर में विप्र, 'कपिल' घरे आयाते क्षिप्र ॥ क्षण ॥
'सावित्री' उदर 'नामे' विनोद, बीजो 'रमण' करन्त प्रमोद ॥क्षण॥३५
रमण गयो भणवाने वेद, देशान्तर भणियो करी खेद ॥ क्षण ॥
घर आवे निशी हुई जाम, यक्ष मन्दिरे लीधो विश्राम ॥क्षण॥३६॥
वडा बंधवनी 'शाखा' नारी दत्तविप्रस्य प्रेम प्रकारी ॥ क्षण ॥
यक्ष मन्दिर में करी संकेत. सा आवी मेलण नेत ॥क्षण ॥ ३७ ॥
पूठे आयो छे तसकन्त, दत्त न आयो ताम तुरन्त ॥ क्षण ॥
रमण ऊठावी माणे भोग, नारी न वंछे धन्य ते लोग ॥क्षण॥३८॥
काढी खड्ग करन्त प्रहार, भेद न जाणे कांई गमार ॥ क्षण ॥
रमण[1] देखी सुपडियो तन्त, शाखाए निज हण्यो कन्त ॥क्षण॥३९॥
भवमें भमी 'धन' माण प्रसिद्ध, इभ्य पुत्र हुओरे समृद्ध ॥ क्षण ॥
रमण हुओ सुत तेहनो जाण. लक्ष्मी उदरे भूपण सु वखाण ॥क्षण ॥४०
परणावी कन्या बत्रीश. सुखमाणेते विश्वावीश ॥ क्षण ॥
ऊपर भूमि बैठा स्वामी. रजनी केरे पश्चिम जाम ॥ क्षण ॥४१॥
'श्रीधर' ऋषिने केवल ज्ञान. ऊपजीयूं छे अधिक प्रधान ॥ क्षण ॥
केवल ओछव करवा देव, देखी धर्म तणो लहे भेव ॥क्षण॥४२ ॥
ऊपर थकी ऊतारियोनन्द. ऋषि वन्दन भरे आनन्द ॥ क्षण ॥
वांटे जातां सापे खाध, शुभ परिणामेंशुभ गति लाध ॥ क्षण ॥४३॥
भला भलातो भवने लेत, भला भलातो लितरण देत ॥ क्षण ॥
भला भलाही पावे ठाम, भला भला गावत गुणग्राम ॥ क्षण ॥ ४४
जम्बू द्वीप अपर विदेह, रत्नपूरी नगरी गुणगेह ॥ क्षण ॥
अचल नामाछे चक्रीश, पूरण हरिणी माय जगीश ॥जण॥४५॥
'प्रिय दर्शन' नामे वरपुत्र. जाण्यूं राखण घरनो सूत्र ॥ क्षण ॥
बाल पणे राखे वैराग धारे नहीं परणेते लाग ॥ क्षण ॥ ४६ ॥
मात पितानूं राखण हेत, कुंवर जब मान्यों परणेत ॥ क्षण ॥

१ रमण को दत्त समझकर शाखा-स्त्री, उसके साथ भोग करने लगी। विनोद ने, रमण को न पहिचान कर खड्ग से मारडाला ॥ और शाखा अपने पति विनोद को मारदिया।

कन्या मेली हजारज तीन, परणायो कुंवर प्रवीण ॥ क्षण ॥४७॥
साठ[1] सहश्र वर्ष ग्रहीगृह वास, वहुला कीधा तप उपवास ॥क्षण॥
अन्त समय आणी शुभ ध्यान, पाम्यो पंचम अमर विमान ॥क्षण॥४८
धन[2] नो जीव करीने काल, भवमांही भमियो असराल ॥क्षण॥
पोतनपुरमें ब्राह्मणवंश, शकुनाङ्गीमुख वंश वतंस ॥ क्षण ॥ ४९ ॥
मृदुमति नामे जन्मज लीध, भूंडोजाणी काढी दीध ॥ क्षण ॥
धूर्त सीख्यो माया जाल, आपाने ऊपायो साल ॥ क्षण ॥ ५० ॥
घर आण्यो न तजे परपंच, वेश्या सरीसो मांड्यो संच ॥ क्षण ॥
पीछे संयम व्रत प्रतिपाल, पंचम कल्प गयोते चाल ॥ क्षण ॥५१॥
गज भव कीधो माया भेली, गतितिर्यच लहीए मेली ॥ क्षण ॥
गिरि वैताढ्य महामदमन्त, हाथी हुओए बलवन्त ॥ क्षण ॥५२॥
'प्रिय दर्शन' नो जीव जिकेव, भूपति भरत हुओरे तिकेव ॥क्षण॥
भरत[3]-तनु गजेन्द्र दीठो दर्श, जातिस्मरण पाम्यो सरस ॥ क्षण॥५३॥
भाई पुत्र पणानी प्रीति, क्यूं अबमें थाए विपरीती ॥ क्षण ॥
मति दुःख पामे म्हारे त्रास, गजमद छोड्यो एम विमास ॥क्षण॥५४॥
एह सुणी भरतेश्वरभूप, संजम आदर्यूं रे अनूप ॥ क्षण ॥
साथ हुआ एक सहश्र नरेन्द्र, महियल विचरे भरत मुनीन्द्र ॥क्षण५५
आतम गुण आराधन कीध, समर समेरे सुधारस पीध ॥ क्षण ॥
श्र॰ जय साधी संथार, पाम्यो भव सायरनो पार ॥ क्षण ॥५६॥
हाथी नानाविध तपकार, अनशन आराधी अतिसार ॥
पाम्यो प्रत्यक्ष पंचम कल्प, सुख साता तिहां छेरे अनल्प[4] ॥क्षण ५७
कैकेयी लियो संयम शुद्ध, पाल्यो टाली कर्म अशुद्ध ॥ क्षण ॥
माताजी गई मोक्ष मझार, जेहने नामे सदा जयकार ॥ क्षण॥५८॥

---

१ चौसठ हजार (जैन रामायणे) २ धन मरके पोतनपुर नगर में शकुनाङ्गी मुखनामक ब्राह्मण की स्त्री ब्रह्मपत्नि के उदर में मृदुमति नामक पुत्र पैदा हुआ। ३ भरत को देखने से हाथी को जातिस्मरण ज्ञान हुआ॥ ४ अन+अल्प—अल्प नहीं अर्थात् विशेष—

एतो भाखी रूड़ी ढाल, ए गुण पचासमीय विशाल ॥ क्षण ॥
केशराज कर शिरही चोड़ी, दोई भरतनमें करजोड़ी ॥ क्षण ५९ ॥

दोहा मल्हार रागे

भरतभूप दीक्षा ग्रही, राज्य तणो रे विवेक।
वासुदेव बलदेवनो, पदवीनो अभिषेक ॥ १ ॥
कीजे चित्त सूं चिन्तवी, भूचर खेचर नरेश।
आवी पूछे रामने, रामदियो आदेश ॥ २ ॥
मण्डप रचायो मोकलो, मांड्या बहु मण्डाण।
विधि सघ लीही साचवी, साजन मिल्या सुजाण ॥३॥
प्रथम कलश लक्ष्मण भणी, ढोलेते भूपाल।
पछी कलश श्री रामने, ढोलेते सुविशाल ॥ ४ ॥
वासुदेव ए आठमो, ए अष्टम बलदेव।
राज्य करो सुविशेषथी, सुरनर सारे सेव ॥ ५ ॥
वासु देवने देवता सेवे आठ हजार।
चार हजारे सेवीये, श्री बलदेव उदार ॥ ६ ॥
सोलह हजारों देशमें, जेहनी वरते आण।
राजा सोलह हजारहीं, आणकरे सुप्रमाण ॥ ७ ॥
हयवर गयवर रथवरु, लाखज बंयालीश।
पाला प्रौढ प्रतापस्तु, क्रोड़ज अड़तालीश ॥ ८ ॥
खेचर खरी खिजमत करे, भूचर आण अखण्ड।
माने--सुर सेवा क, पारेले राज्य प्रचण्ड ॥ ९ ॥

ढाल पचाशमी—

तर्ज हिंडोलणानी—

है उस रघुपति के धर्म सूं राजे, सघला सुखिया लोक ॥टेर॥
अधिक नेहा अधिक मेहा, अधिक निपजण होई।
अधिक सुरभी दूध आपे, अधिक फल तरु जोई॥
अधिक लाभ लहन्त वणजे, अधिक चाकर ग्रास।

अधिक पुत्र कलत्र कमला, अधिक पूरे आश ॥ है उस ॥१॥
अधिक दान सुशील अधिका, अधिक तपही प्रकार ।
अधिक भावन पुज्य पावन अधिक करणी सार ॥
अधिक पोपह ने सामायिक, अधिकहीं आचार ।
अधिक अधिकूं सर्वतो, अधिकाई नो अधिकार ॥ हैं ॥ २ ॥
नहीं हिंसा नहीं झूठज, नहीं कोई चौर ।
नहीं लम्पट नहीं लोभी, नहीं भूडा भौर ॥
नहीं क्रोधी नहींमानी, नहीं द्वेप लिगार ।
नहीं वाद विवाद विकथा, नहीं को कलिकार ॥ हैं ॥ ३ ॥
नहीं आल कराल काल, पिशुनको जंजाल ।
नहीं को परपंच रंचही, कोन केहनो साल ॥
नहीं झार जूगार धूरत, नहीं दुखियो कोई ।
जेहनी उपमान जगमें, आपहीं प्रभुहो सोई ॥ हैं ॥ ४ ॥
राम आपे विभीषणने, राक्षसनो द्वीप ।
कपिपतिने द्वीप कपीनो, अछेजेही सदीप ॥
हनुमन्तने प्रवर श्रीपुर, श्री पति आपन्त ।
कुलक्रमेंजे चाली आया, ते तिहां थापन्त ॥ हैं ॥ ५ ॥
लंकतो पायालां प्रगटी, लहै वीर विराध ।
'नीलने दे ऋक्षपुर, प्रतिसूर्य हनुपुर लाध ॥
रत्नजटी देवोपगीत, चन्द्रगति सुत देखी ।
'रथनू पुर नगर रूपाचले, ए लहेज विशेषी ॥ हैं ॥ ६ ॥
यथायोग्य जेही जाण्या, तिसो तेहने देश ।
देईने सन्तो पीया, श्री राम सकल नरेश ॥
गांव वाले गांव पायो, खेत वाले खेत ।
विमुखतो नर को नरहीयो, पञ्च पृथिवी देत ॥ हैं ॥ ७ ॥
'शत्रुघ्न सूं रामभाखे, देश जेही सुहाय ।
सोई मांगों ताम मथुरा, आपही तस दाय ॥

राम भाखे वत्स ! मथुरा, पूरी अधिक दुसाधी[१] ।
जाणी बूजी आपणे गले, कौन बांधे व्याधी ॥ हैं ॥ ८ ॥
'मधु नृपने चमरे[२] आप्यो, अछे पहेलां शूल[३] ।
अरिहणी तस हाथ आवे, प्रगट छे प्रतिकूल ॥
शत्रुघ्न कहे तुम्है हणियो, राक्षस नाथ निशंक ।
हूंही थारो भाई छूंतो कौणे यह मधु रंक ॥ हैं ॥ ९ ॥
दियो मथुरा ए तमासो, देखसूं हूं जाय ।
राम आपी ताम मथुरा, एह शीक सुणाय ॥
शूलवर्जे होई गाफल, छले करजो काम ।
बल अरु जोर नहीं को चलसे, सीखदे श्रीराम ॥ हैं १० ॥
रामे भाथा अक्षह सायक, आपीया तसु दोई ।
सारथी जमवदन[४] नामा, साथे दीधो सोई ॥
धनुष्यदियो अर्णवावर्त, अग्निमुख शर सार ।
लक्ष्मणे आप्यांथी हर्षे, भाई नो जयकार ॥ हैं ॥ ११ ॥
शत्रुघ्नतव चालीयोरे, करत शीघ्र प्रयाण ।
साथे दलबल सामटोरे, वाजही निशाण ॥
नदी तटे विश्राम लीधो, खबर दीधी राय ।
वनकुबेरे[५] नारी सहित, मधुकेली कराय ॥ हैं ॥ १२ ॥
अस्त्रना आगार मांहे, शूलनूं रे निवेस ।
शत्रुघ्न छल देई राते, करे पूरीय प्रवेश ॥
वात सांभली मधु दौड़ीयो, आवही पुरमांहे ।
शत्रुघ्न ना सुभट बलिया, रोकियो ते प्राहे ॥ हैं ॥ १३ ॥
मधु-नन्दन लवण कुँवरे, मांडियो संग्राम ।
लड़त अधिको युद्धने मुख, मारी लीधो ताम ॥
रामना युद्ध आदिमां जेम, नारीयणे[६] खर मारी ॥

---

१ दुसाध्य, २ = चमरेन्द्र = ३ = त्रिशूल =
४ जम = कृतान्त = वदन = ५ = कूबेर नामक वन = ६ लक्ष्मण =

जीतना घुरही वजाय, तेम एहने संहारी ॥ हैं ॥ १४ ॥
पुत्रनो वध सुणीने मधु, कोपियोरे कराल ।
शत्रुघ्न सूं आवी अड़ियो, लड़े ताम भूपाल ॥
अस्त्र शस्त्रे चोट करवे, अधिक शूरातेह ।
देव असुरों जेममाचे, तेम माची एह ॥ हैं ॥ १५ ॥
धनुष्य तो तब अर्णवा वर्त, अभिमुख तेबाण ।
सुमरियां सानिध्यकारी४, हरण अरिका प्राण ॥
मरियो मधु जेम लुब्धक५, मारही मृगराज६ ।
घाव सान्यां मधु चिन्ते, हुओ एह अकाज ॥ हैं ॥ १६ ॥
शूल नायो ना हणायो, सुप्रभा ७ नो नन्द ।
जन्म हार्यो कोन सार्यों, काजहुं मतिमन्द ॥
सेविया नहीं देव जिनवर, न किया तप प्रकाश ।
पात्र जाणी दान नदियो, आणी चित्त उल्हास ॥ हैं ॥ १७ ॥
एह भावना भावतांरे, राखी शुद्ध परिणाम ।
लही दीक्षा प्राण छोड्या, हुओ सुर अभिराम ॥
स्वर्ग त्रीजे देव देवी, सारही तम सेव ।
देह ऊपर कुसुम वरस्यां, जयो जयो मधु देव ॥ हैं ॥ १८ ॥
देव रूपेशूले जयकरी, चमरसूं एवात ।
शत्रुघ्ने छल बले कीधो, मधु नृपनो घात ॥
मित्रमार्यों सुणी खींज्यो, तातश्री चमरेन्द्र ।
शत्रुघ्न ने आंजमारूं, एम कहे एसुरेन्द्र ॥ हैं ॥ १९ ॥
चलियो तब वेणुदारी, देव पूछे तास ।
किहां चाल्या मित्रहन्ता, तणो करवा नाश ॥
वेणुदारी फिरी भाखे, तेहनों अधिकार ।
अर्द्ध चक्री पुण्यपूरो, अधिक वर्ते वार ॥ हैं ॥ २० ॥
धरणेन्द्र पासे लही रावण, शक्ति जीती जेण ।

४ सहायकारी ५ पारधी ६ सिंह ७ भरत

तीन लोक तणां कोंठो, हण्यो रावण तेण ॥
कौण मधु तस पति सरिसो, प्रभु तणो बल पामी ।
शत्रुघ्ने मधु (ने) मारीयो छे, शान्ती हुओ स्वामी ॥ हैं ॥ २१ ॥
चमर भाखे शक्ति जीति, विशल्या सुपसाई ।
नारायण तो ना वखाणो, एहमें बल कांई ॥
तास अब्रह्म चारिणी नं, सर्वयोग प्रभाव ।
तेहथी जई शत्रुघ्नने, करूं ओछो आव ॥ हैं ॥ २२ ॥
एम कहीने चमर मथुरा, आवीयो ततकाल ।
लोक सुखिया देश नीको, देखीयो सुविशाल ॥
प्रथम तोए प्रजा पीडूं, पछी पीडूं ईश ।
एम चिन्ती रोग पीड़ा, करे विश्वावीश ॥ हैं ॥ २३ ॥
रोगना उपचार कीधा, ताम विविध प्रकार ।
सन्नीपाती ने जेम मिश्री, तेम ए उपचार ॥
ताम नृप कुल देवी समरी, सा कहे सुविचार ।
मधु मार्या चमर कोप्यो, तेहना ए सुविकार ॥ हैं ॥ २४ ॥
लोक दुखिया देखी राजा, करे अरती अपार ।
छींकनो मूर्छायो माणस, जोवेही दिन कार ॥
शत्रुघ्न तब चाली आयो, राम-लक्ष्मण पास ।
चमर कोप्यो केम कीजे करे ए अरदास ॥ हैं ॥ २५ ॥
देश भूषण कुलभूषण, आविया मुनि दोई ।
राम-लक्ष्मण-शत्रुघ्न सुं, वन्देही सहु कोई ॥
शत्रुघ्न ने जो ग्रही मथुरा, कहो प्रभु कौण हेत !
देश भूषण राम सुं कहे, पूर्व भव संकेत ॥ हैं ॥ २६ ॥
शत्रुघ्न नो जीव मथुरा, उपज्यो वहु वार ।
नामे श्रीधर विप्र हूतो, कामनो अवतार ।
राज पत्नि लीयो तेड़ी करण भोग विलास ॥
जाणहुआं चोर भाख्यो, पामीयो ते त्रास ॥ हैं ॥ २७ ॥
हुक्म नृपने वध्य भूमिये, आणीयोते क्षिप्र ।

करी कृपा कल्याण मुनि, छोडावीयोते विप्र ॥
लेई संयम स्वर्ग होई, पुरी अयोध्या आण ।
नन्द चन्द्रप्रभ नृपनो, हुओ पुण्य प्रमाण ॥ हैं ॥ २८ ॥
हरि प्रभा उदर ऊपन्यो, अचल तेहनूं नाम ।
भानु प्रभादिक आठ भाई, और भाई जाम ॥
संकज जाणी मारवानो, करे तेह उपाय ।
भेद मंत्रीश्वरे दीधो, अचल नासी जाय ॥ हैं ॥ २९ ॥
भमत अटवी मांही कांटो वींधियो तसपाय ।
सावत्थी नो वसण हारो, अंक नाम धराय ॥
बापे काढ्यो घरके बाहिर, वहे इन्धन भार ।
नजर आयो अचल तेहने, ऊपज्यो अति प्यार ॥ है ॥ ३० ॥
काष्ट भार उतारी कांटो, काढी दीधो हाथ ।
सोई कांटो तास आप्यो, जाणे आपी आथ ॥
अचल नामा अछूं मथुरा, पुरी केरो राज ।
हुओ मुझसे सुणी आवे, सारसूं तुझ काज ॥ है ॥ ३१ ॥
अचल कौसाम्बी ए पहूत्यो, सिंह गुरुने संग ।
इन्द्रदत्त नरेन्द्र सीखे, कला धनुष्य सुचंग ॥
राय गुरु रींझाविया ते, धनुष्य ने अभ्यास ।
राय-पुत्री साथे पृथिवी, ताम दीधी तास ॥ है ॥ ३२ ॥
अनंगा दिक देश साधो, मेल्यो सबलो साज ।
पुरी मथुरा चाली आयो, विस्तरी रे अवाज ॥
युद्ध करवे भाई आठे बांधीया ते खेंची ।
चन्द्रप्रभ प्रधान मोकली, वात आणे संची ॥ हैं ॥ ३३ ॥
ताम नाम प्रकाश कीधो, सीचव नृप सूं आय ।
आपही तव अंचल नगरी, मांहि लीधो राय ॥
अनुक्रमे नृप राज्य दीधो, वर्तियो जयकार ।
भाई ते अष्ट सेवक, किया आज्ञा कार ॥ हैं ॥ ३४ ॥

एक दिवसे नट नाचे, देख हीं सो भूप ।
राये पुरुष पिछानियो, सोई अंक अनूप ॥
पासे तेड़ी करी दिलासा, जन्म भूमि दीध ।
अचले अंक सुमित्र थाप्यो, विन्दु सिन्धु कीध ॥ हैं ॥ ३५ ॥
समुद्राचार्य नी पासे, लेई संयम भार ।
स्वर्ग पांचमें होई आया, मनुष्य लोक सझार ॥
शत्रुघ्न ए अचल हुओ, हेत मथुरा लार ।
अंक जीव कृतान्त आनन, सारथी तुम्ह सार ॥ हैं ॥ ३६ ॥
श्री प्रभापुर नगर नीको, श्री 'नन्दन' राय ।
धारणी उदर ऊपना सुत, सातही सुखदाय ॥
सुरनन्द श्रीनन्द श्री तिलक नामे जयन्त ।
सर्व सुन्दर चमर अने, जयमित्रजी गुणवन्त ॥ हैं ॥ ३७ ॥
श्री नन्दन रायसाथे, पुत्रसं वैराग ।
मास[1] जातक पाट थाये, साधवा शिव माग ॥
प्रीतिकर गुरु पासे संयम, आदर्यो ततखेव ।
लही केवल मोक्ष पहूतो, रायजी ऋषिदेव ॥ हैं ॥ ३८ ॥
भाई साते शुद्ध संजम, पालता विहरन्त ।
लब्धी जंघा चारणीरे, तपबले उपजन्त ॥
पुरी मथुरा आवी रहीया, तामते चौमास ।
छठ अठम दश द्वादश, करे तप उपवास ॥ हैं ॥ ३९ ॥
पारणो जई अवर नगरे, करी आवे साध ।
तास तप आचार करणी, तणो अतिशय लाध ॥
चमरे कीधा रोग मिटिया, हुओ नगर निरोग ।
अधिक ओछव रंग घर घर, नहीं सुपने शोग ॥ ४० ॥
नीतिलघुर–परिश्वेद ने मेल, थूकने नख केश ।
एहतो औषधी प्राहे, साधु ना सुविशेष ॥

१ एक मास वाले पुत्र को राज्या भिषेक कर अपर पुत्रों सहित दीक्षित बना। = २ पेशाब (मुत्र) = ३ पर सेव =

वायरो तनु फरसी आवे, जले पग धोवाय ।
वाय पाणी फरसियोंथी, रोग सघला जाय ॥ हैं ॥ ४१ ॥
अयोध्या ए आवीयाते, पारणाने काम ।
अर्हदत्त सेठ गृह आंगणे, आवी ऊभा स्वाम ॥
भाव विन वंदना कीधी सेठे, संजम वन्त ।
साधु स्यां चौमासा मांहे, विहरन्ता विचरन्त ॥ हैं ॥ ४२ ॥
शेठ जाणे पूछियेरे, किस्यो तुम आचार ।
भेख दीसे साधुनोरे, फिरो छांद्या कार ॥
एम चिन्तवतोही रहियो, दियो बहुए आहार ।
लेई ऊपासरे आया, जिहाँ छे अणगार ॥ हैं ॥ ४३ ॥
आचार्य श्रीनमी धुतिवर कियो उठी प्रणाम ।
अवर साधु नकरे वन्दन, जाणी शंका ठाम ॥
अशन कीधां पछि पूछयो, आचार्य ऋषि राज ।
पूज्य किहांथी पधारीया, किहां जासो आज ॥ हैं ॥ ४४ ॥
पुरी मथुरा थकी आया, जायछं पण तत्र ।
एमकही ऋषि पांगूर्या, आविया था यत्र ॥
रूड़ा ऋषि संयमो शुद्धा, क्रयाने पालन्त ।
गगने आवे गगने जावे, दोष सहु टालन्त ॥ हैं ॥ ४५ ॥
शिष्य पूछे सुगुरु पासे, कोणए निर्ग्रन्थ ! ।
सुगुरु भाखे साधु साचा, साधेही शिवपन्थ ।
लब्धि वन्त महन्त मुनिवर, मांहे को नवि दोष ॥
एह सुणतां शिष्य मनमें, करे अति अफसोस ॥ हैं ॥ ४६ ॥
एह सांभली सोई श्रावक, करे पश्चात्ताप ।
मास कार्तिक सुदि सातम, चाली आया आप ॥
करी वन्दना वीनवे तुम, गुणां भरीत आगाध ।
पाय लागीने खमाऊं, खमो मुझ अपराध ॥ हैं ॥ ४७ ॥
सप्त ऋषि सुप्रसादथीरे, शान्ति सघले देश ।

सुणी कार्तिक पूर्णिमें, आवियोरे नरेश ॥
पाय नमी कहे साधुजीने, आहार लेवो मुझगेह ।
राज्य पिण्ड न ऋषि नेकल्पे, कहे मुनिवर तेह ॥ हैं ॥ ४८ ॥
शत्रुघ्न तबफिरी भाखे, धन्य २ ताहरो धर्म ।
देव कृत यह रोग मिटियो, कर्यां विन उपकर्म ॥
कोई दिन तुम्ह इहां ठहरो, अवर ठाम विहार ।
भतिकरो अवतार ताहरो, करन जग उद्धार ॥ हैं ॥ ४९ ॥
सप्तऋषि कहे राय १नकरे, साधु ममता भाव
चालस्यूं नविरह्या खिणहीं, चरण गुणस्यूं चाव ॥
देव अरिहन्त नेजधारो, साधु सेवा साधी ।
शील समकित शुद्ध पालो, जेम न उपजे व्याधी ॥ हैं ॥ ५० ॥
ढाल ए पचासमींरे, साधुनो उपकार ।
अछे महोटा नहीं छोटा, गगन ने विस्तार ॥
'केशराज कहे साधु गुणज्यूं, गरुड़ आयां साय ।
नाशही तिम साधु अयां, पापने सन्ताप ॥ हैं ॥ ५१ ॥

दोहा—(सारंग रागे)

गिरि वैताढ्य विशेषथी. दक्षिण श्रेणी देख ।
'रत्नरथ राजाभलो, रत्नपुरे सुविशेष ॥ १ ॥
चन्द्रमुखी उदर ऊपनी, मनोरमा सुकुमारी ।
एके ने परणावस्यूं. राय पड्यो सुविचारी ॥ २ ॥
'नारदे लक्ष्मण कह्यो. सब गुण लक्षण वन्त ।
भाग्यवती ए भामिनी, जो थाए ओ कन्त ॥ ३ ॥
'रत्नरथ राजातणा, कोप्या ताम कुँवार ।
गौत्रज वैर विचारके. अमर्ष वहे अपार ॥ ४ ॥
कह्युं मतो ए कूटिये. नारद नाशी जाय ।
पुरी अयोध्या आवीयो, लक्ष्मण लाग्यो पाय ॥ ५ ॥
मनोरमानूं रूप पट, लियो लिवी देखाय ।

लक्ष्मण थयो अनुरागियो, रूपे राच्यो राय ॥ ६ ॥
लक्ष्मण तबही चालियो, साथे हुआ श्री राम ।
राक्षस-खेचर सैन्यसूं, आई गया अभिराम ॥ ७ ॥
रत्नरथ निज पुत्रसूं, आवीकरी संग्राम ।
लक्ष्मण ते जीती लिया, वाध्यां सुयश दुदाम ॥ ८ ॥
'मनोरमा लक्ष्मण भणी, पुत्री देई प्रधान ।
'श्री दामा श्री रामने, रींजया राजान ॥ ९ ॥
साधी दक्षिण श्रेणीसहु, साध्या खग भूपाल ।
पुरी अयोध्या आवीया, राज्य करे सुविशाल ॥ १० ॥
लक्ष्मण ने अन्ते ऊरी, सोहे सोलह हजार ।
आठ अछे पट रागणी, इन्द्रणी अवतार ॥ ११ ॥
विशल्या आदिकरी, रूपवती वनमाल ।
'कल्याणमाला हतुर्थी, रत्नमाला सुरमाल ॥ १२ ॥
'जीतपद्मा प्रगटीमहा, अभयवती अवधार ।
'मनोरमा मनमोहनी, ए आठे पटनार ॥ १३ ॥
अढीसो नन्दन हुआ, शूर महा शृंगार ।
जाया अग्र महेपियां, ए आठे सुत सार ॥ १४ ॥
विशल्या नो श्रीधरु, रूपवती नो एह ।
'पृथ्वी तिलक सुहामणो, गुणमणि केरो गेह ॥ १५ ॥
वनमाला नो अर्जुन, उपमा अधिकी जास ।
जीतपद्मा नो जाणीये, श्री केशी सो उल्हास ॥ १६ ॥
'कल्याणमाला नोकह्यो, मंगल नाम अमन्द ।
'सुपार्श्व कीर्ती कल्पतरु, मनोरमा नो नन्द ॥ १७ ॥
रत्नमाला नों विमलजी, विमलसो नाम परिमाण ।
'अभयवती नो एसही, सत्यकीर्ति सुनाम ॥ १८ ॥
चार कही श्री राम ने, सीता सती सरेख ।
'प्रभावती ने रतिनिभा, श्रीदामा सुविशेष ॥ १९ ॥

गर्भधरे सीता सती, भलो सुपन अविलोय।
आवेचवी विमानथी शरभ सजोडे दोय ॥ २० ॥
करेप्रवेश निज आननें, वीनवीयो भरतार।
पुत्र युगल तुम्ह प्रसवसो, नहीं सन्देह लगार ॥ २१ ॥
शरभ विमान थकीचव्या, सुत मुझ असुखदाय।
होसे ए जाणोसही, कहे अयोध्या राय ॥ २२ ॥
सीताकहे स्वामीसुणो, एशी आरती ईश।
काम सकलही पाधरो. करसे थी जगदीश ॥ २३ ॥
प्रीतघणी पहेलीअछे, प्रभुनी सीता साथ।
अब ओधान धर्यापछी, अति सन्मानी नाथ ॥ २४ ॥
शौक्य धलेमनमें घणूं. अमर्ष सह्योन जाय।
पणबलको चालेनहीं, ताम करे उपाय २५ ॥

ढाल एकावनमीं—
तर्ज हे रुक्मणी त तोसाची श्राविका--

शूलीथी अति आकरी, शूली शौक्य जोय। हो रघु पति।
शौक्य सरीसी शूलीका, अवरनदीसे कोय। हो रघुपति ॥ १ ॥
शौक कहोक्यू-नाकरे॥टेर॥ मुई दुःखदाईहो ।।रघु।। पूठन छण्डे पापणी
फिट फिट एह सगाई हो रघुपति ॥ शोक ॥ २ ॥
शस्त्र थकी तीखो खरो तास तीखो प्रताप हो रघु० ।
शस्त्र छिप्यो रहे म्यान में, लियां उठे आपहो र० ॥ शो०॥३॥
मापणी ही थी मापणी. सापणी शोक कहायहो र० ।
सापणी मत्रे खीलीये. शोक न क्यूं ही खिलाय हो र. शो० ॥४॥
आग थकी ऊनी खरी. ऊनी शोक ज होय हो ॥ र. ॥
कोऊ१ बले जिम भीतरी, तेम ए बलती जोय हो ॥ र' ॥शो० ।५।
तबलग. दूधज साबतो, जबलग कांजी दूरहो ॥ र. ॥
फाटे कांजी मेलव्ये. ए दृष्टान्त हजूर हो ॥ र. शो० ॥ ६ ॥
अम्बरे ऊमाईया घणा, देखाय था मेह हो ॥ र. ॥
प्रबल वायने वाजवे, फाटी गया घन तेह हो ॥ र. शो० ॥७॥

आटो आछो तो घणो, कोलहे तूटे वाकहो ॥ र. ॥
माणस फेरविया फिरे, जेम फिरन्तो चाक हो ॥ र. ॥शो०॥८॥
बाहिर२ मिलणे मिलीरही, मांहे कटका तीन हो ॥ र. ॥
काकड़ीया में तेवसी, लेगो देखी प्रवीन हो ॥ र. ॥शो० ॥९॥
पारो३ वानी सूं मिल्यो, हींगलू कहिवाय हो ॥ र. ॥
सोहगीना संयोगथी, छटकी अलगी जाय हो ॥ र. ॥शो॥१०॥
आंबा जांबू आंवली, चोथो जूओ बोरहो ॥ र. ॥
ऊपर कोमलता घणी, मांही अधिक कठोर हो ॥ र. शो० ॥११॥
सत्यवती साची सती, वसुधा मांही विख्यात हो ॥ र. ॥
शोक्यां सा हल्ई करो, अवरां केई वातहो ॥ र. ॥ शो० ॥१२॥
शोक्यां कहे सीता तणी, म्हारे तूं सिरदार हो ॥ र. ॥
जीभे अमृत केलवे, काती हृदय मझार हो ॥ र. ॥ शो० ॥१३॥
एक दिवस रसरंग में, पूछे चित्तमें चावहो ॥ र. ॥
रावण-रूप सोहामणूं, हमने लिखी देखाव हो ॥ र. शो० ॥१४॥
सीता कहे सूं जाणीये, केहवो थो तस रूपहो ॥ र. ॥
मैं तो कदहिन देखीयो, देखिया पांव अनूपहो ॥ र. शो० ॥१५॥
सा भाखे सुन सुन्दरी, सोई लिखो थे पांव हो ॥ र. ॥
धूती धूर्तपणो करे, सीता सरल स्वभाव हो ॥ र. ॥शो० ॥१६॥
सीता खिलि देखाड़िया, रावण पाय उदारहो ॥ र. ॥
शोक्यां ढांकी राखिया, पांव तणा आकार हो ॥ शु० ॥१७॥
गोष्ठी विसर्जी वेचसूं, निज निज स्थानक जातहो ॥ र. ॥
सीता ओछी पाड़वा, केवो घाले घाठ हो ॥ र. ॥ शो० ॥१८॥
पग-आकार देखाविया, जब आया श्री राम हो ॥ र. ॥
पूछ्यां ए उत्तर दियो, व्हाली त्रियाना कामहो ॥र.॥शो० ॥१९॥
एतो पावज पूजिये, जो तस साथे नेह हो ॥ र. ॥
वात न मानी रामजी, शोक्य पलेखा एह हो॥ र. ॥शो० ॥२०॥
आप आपणी दासीने, तेड़ीने ते नार हो ॥ र. ॥

गली गली बाजार में, सारी पूरी मझार हो ॥ र. शो० ॥ २१ ॥
सीता चित्त रावण वसे, सघले पाडे साद हो ॥ र. ॥
साल सरिसो सालसे, लोक मुखे अपवाद हो ॥र. ॥शो० ॥२२॥
मास वसन्त विराजियो, प्रभु-तिय साथ कहन्त हो ॥ र. ॥
गर्भ ही खेद निवा रवे, आयो एह वसन्त हो ॥र.॥शो० ॥२३॥
'महेन्द्रोदय' नामथी, आछोछे उद्यान हो ॥ र. ॥
विविध प्रकार विनोद नो, मांहे म्होटो थान हो ॥र.॥ शो०॥२४॥
क्रीडा करवा कारणे, चाल्यो जावा आज हो ॥ र. ॥
सीता कहे मुझ दोहलो, ऊपन्यो श्री महाराज हो ॥र.॥ शो० ।२५।
तवही राम मंगावीया, वाग तणा वर फूलहो ॥ र. ॥
सीता दोहल पूरवा, रचिया मण्डप अमूल हो ॥र.॥ शो० ॥२६॥
पछे पद्मनी सूं प्रभु, वनमें आया चाल हो ॥ र. ॥
विविध वसन्त विनोदमें, रचि रह्या छे ख्याल हो ॥र.॥शो० ॥२७॥
एटले सीता जीतणूं, फरक्यूं दक्षिण नयन हो ॥ र. ॥
शंकी मन मांही घणी, लहिये कोई कुवयन हो ॥ र. शो०॥२८॥
सीता प्रभुजी सू कह्यो, करे विचार नरेश हो ॥ र. ॥
एतो एहवूं देखीये, उपजे कोई कलेश हो ॥ र. ॥ शो० ॥२९॥
राक्षस ने हाथे चढी, दीठो राक्षस देश हो ॥ र. ॥
दैव नतो राजी थयो, सन्तापतां विशेष हो ॥र.॥ शो० ॥ ३० ॥
दिन गयो वर्ष वरोवरे, आरती मांहे उदास हो ॥ र. ॥
पार न पामे केवली, वर्णवतां दुःख तास हो ॥र.॥शो० ॥३१॥
प्रभुजी दे आमासना, एम कहन्त महन्त हो ॥ र० ॥

---

१ खाडामें अग्नि ढकीहो = इस गाथा में कविजन शौकको कटारो अथवा छुरो की उपमा दीवी है । या वात सत्य हो तव "काकड़ीया में" इस ठिकाने, "लाकड़ीया में" ऐसा होना चाहीये । कारण कि म्यान काष्ट का होताहै । २ राखका मिश्रण से पारा हींगलू वनताहै । उसमें सोहगी टंकणखार मिलादेनेसे पारा जुदा हो सकता है । अतःशौकको सोहगी की उपमा दीवीहै । (वांनो-गेरु पाठान्तरे)

सुख दुःख आपद सम्पदा, लागीलार रहन्त हो ॥र०॥शो० ॥३२॥
राम कहे घर जाई ने, कर कोई उपकर्म हो ॥ र० ॥
दान शीयल तप भावना, साचवे श्रीजिन धर्महो ॥र०॥शो० ॥३३॥
जिन धर्म नी सेवा करे, भाव विशुद्ध त्रिकाल हो ॥ र० ॥
आंबिल एकज धान्यनो, करत मिटे जंजालहो ॥र०॥शो० ॥३४॥
सीता आवी मन्दिरे, रहती सम्बर मांहि हो ॥ र० ॥
दानादिक विधि साचवे, आदरसुं उच्छाहिहो ॥ र० ॥ शो० ३५।
यलकर्या जगमें जिके, कोयन राखी खन्तहो ॥ र० ॥
एजिन वचने जाणजो, भावीहोवे ते अन्त हो ॥र०॥ शो० ॥३६॥
'विजयसूर सुरदेवजी, पिंगल ने मधुमानहो ॥ र० ॥
'कालक्षेप काश्यप कह्यो, शूल सुधर अभिधानहो ॥र०॥शो० ३७॥
ए साते अधिकारीया, म्होटा मेरु समान हो ॥ र० ॥
खबर दार करी थापीया, पुरुष महा परधानहो ॥ र० ॥ शो०३८॥
राघव आगे आवीया, ऊभाकरिय प्रणामहो ॥ र० ॥
थर हर लागा धूजवा, न सहाय प्रभु धामहो ॥ र० ॥ शोक॥ ३९

क्षेपक राधेश्याम रामायणमें से--

राज सभा का दूतथा, विजय नामी एक ।
लाताथा वह सभामें, पुर-सम्वाद अनेक ॥
एक रोज ऐसी खबर, लायाथा बुद्धिवान ।
जिसने उसके लिएभी, कर डाला हैरान ॥
सोचेथा खड़ा खड़ा विजय, कैसे यह खबर सुनाऊँमैं ?
कुछनहीं समझमें आताहै, क्योंकर यह वज्र गिराऊँ मैं?
मुंह जभी खोलता हूं अपना, तो हृदय मना कर देता है ।
रखता हूं मुखको बन्द अगर, कर्तव्य खबर तब लेता हैं ॥
अच्छा नौकरी प्रणाम तुझे, आगे यह काम न करना हैं ।
अवतो नौकर जिस बात का हूं, वह बात सभामें धरना हैं ॥
छाती तू पत्थर की होजा, तब बोलूं मैं वन बोलोंको ।

वाणि तूं घोर घटा वनजा, तब वरसाऊँ उन ओलों को ॥
माता तुम्ह मुझे क्षमा करना, अपना मत नहीं सुनाता हूं।
तुम जैसे सतपर कायम हो, वैसेही फर्ज चुकाता हूं ॥
इस तरह हृदय को दृढ करके, दर्बार में अनुचर बोल उठा।
राजेश्वर! वस इतना ही कहा, फिर कांपा फिर कुछ डोल उठा॥
फिर कहा आज यह खबरें हैं, इस वक्त क्षमा कीजिये मुझे।
एकान्त समय में अर्ज करूं, ऐसी आज्ञा दीजिये मुझे।

वस इतनाही कहसका, विजयसूर का मुख वैन।
आगे फिर वाणिरुकी, भरे नीरसे नैन ॥
दशा देखकर दूतकी, बोल उठे श्री राम।
कह डालो क्या वात है, रुकने का क्या काम ॥

तुमतो हो सभा-दूत भाई, नितकी खबरें लाने वाले।
एकान्त समयके फिकरे हैं, सबको भ्रम पहूंचाने वाले ॥
यह सत्य है कोई वात आज, ज्वाला होकरके भड़की हैं।
कारण इस समय अचानकही, मेरी भी छाती धड़की हैं ॥
वामांग फड़कते हैं मेरे, व्याकुलता बढ़ती जाती हैं।
होता हैं विदित मेरे तनसे, आत्मा सी खिंचती जाती हैं ॥
फिरभी मैं आज्ञा देता हूं, जो कुछहो प्रगट जरूर करो।
एकान्त समय में राम सुनें, इस भेद-भावको दूर करो ॥

ढाल मूलगी—

राम कहे भो भाइयो!, कां तुम्ह आरति वन्त हो ॥ र. ॥
कां कम्पो तरुपातज्यूं, भाखे विजय महन्तहो ॥र.॥ शो० ॥४०॥
प्रभुजीसूं इक वीनती, पण सोते न कहिवाय हो ॥ र. ॥
सांभलतां असुहा भणी, छे प्रभु ने दुःखदाय हो ॥र.॥शो० ॥४१॥
अण कहियां लागे सही, स्वामी द्रोह नूं पाप हो ॥ र. ॥
दुनदीमें पड़ियो अछूं, ग्रही छछुन्दरी साप हो ॥ र. ॥ शो०॥४२
राम कहे अभय मानजो, जीव तणूं तो दान हो ॥ र. ॥
तुमने मैं दीधूं सही, भाखे लही प्रभु मानहो ॥र.॥ शो० ॥ ४३ ॥

क्षेपक राधेश्याम—

रोते रोते दूत तब, लगा सुनाने हाल।
क्षीर-सिन्धुमें शेष नें, दिया जहर को डाल॥
बोला-पुरवासियोंमें, उठा प्रश्न महान।
जिसका श्री-महाराज से, हैं सम्बन्ध प्रधान॥

ढाल मूलगी—

देव! सुणों देवी तणा, अति अपवाद प्रसिद्ध हो॥ र.॥
जण जण ने मुख आकरो, कान न जाये दीध हो॥र.॥ शो ४४॥
सु सवादो फल देखीने, कहो कौण न खाय हो!॥ र.॥
फूल सुगन्धों पेखके, सूंघ्यां विन न रहाय हो॥शो०॥ ॥ ४५॥
लेखण ने लिखि देखिये, घटिका जेम घसाय हो॥ र०॥
न रहे त्रिया विण भोगव्यां, नरए निरतो न्यायहो॥र०। शो० ।४६
मांसाहारी मानवी, न त्यजे पायो मांस हो॥ र०॥
लम्पट नारी पामिके, नत्यजे सोवत तास हो। र०॥शो॥ ४७॥
भूखो भोजन पाय के, न रहे तेह लिगारहो॥ र०॥
नरहे तेम त्रिय पामके, नरजे विषय विकारहो॥र०॥शो॥ ४८॥
अम्बर थी तूटे घणा, पंखी पंखथी पेखिहो॥ र०॥
क्यों बचे ओ पंखियो, आगे ऊभी देखि हो॥र०॥ शो॥ ४९॥
सांभली जे छे एहवी, लोकां केरी वाचहो॥ र०॥
ज्ञाण पणे सुविचारतां, देखाये पण साच हो॥ र.॥ शो० ॥५०॥
लेई गयो पण एकली, एकाकी ही आयहो॥ र.॥
काल घणो घर तेहनें, रही पण देखाय हो॥ र.॥ शो० ॥ ५१॥
रावण तो विण भोगव्यां, रहियो होसे केम हो॥ र.॥
जाण्यो करसुं आपणो, छोतो सुंधु एमहो॥ र.॥ शो० ॥ ५२॥
छोती न लागे छे सही, म्होटा मांडा जेम हो॥ र.॥
जगमें जश अपयश पणु, न विचारे छे प्रेम हो॥र.॥शो० ॥५३॥

क्षेपक राधेश्याम—

रावण के कारण माताजी, थोड़े दिन रहीजो लङ्कामें।

बस इसी बातको दोष समझ, कुछ लोग पड़े हैं शङ्कामें ॥
कहते हैं–धर्म नीति रक्षक जब, रघुकुल मणिकी गद्दी है।
तो पर–घर रह आनेवाली, नारी क्यों घरमें रक्खी है ? ॥
रैय्यत के पहिले वाजिब है, अपने पर राज करे राजा।
निर्दोष रहै जिसनें शासन, वैसाही काम करे राजा ॥
शङ्कित दलना का यह आन्दोलन, दिन पर दिन बढता जाता है।
राजा का इसमें चुप रहना, दलका बल और बढ़ाता हैं ॥

ढाल मूलगी—

अपजश एतो ए बड़ो, जाम अमे न खमाय हो ॥ र. ॥
प्रभु ने आवी जणावीयो. कीजे ज्यूंही सुहाय हो ॥र.॥ शो०॥५४॥
नाहना मुखथी महोटिका, बोले छे ए बोल हो ॥ र. ॥
सो वातों की एक है, जगमें जश ही अमोल हो ॥र.॥ शो० ॥५५॥
आदि नाथ आदि करी, आज लगे ए वंश हो ॥ र. ॥
कोई न लागी कालिमा, पृथ्वी मांहै प्रशंस हो ॥र.॥ शो० ॥५६॥
कीर्ति तो आजन्मनी, मतिहारो रघुनाथहो ॥ र० ॥
सीताहुई नाहुई, बहुलो छे तिय साथहो ॥ र. ॥ शो० ॥ ५७ ॥
वज्राहत होई रह्या. एतो वात सुणन्त हो ॥ र. ॥
सीता साथे कालजो. काढे यो एकन्त हो ॥ र. ॥ शो० ॥ ५८ ॥
धीरज आदरी बालीया, महत्तरा१ सूं ताम हो ॥ र. ॥
भली जणावी वातए, करसूं जशनो काम हो ॥र.॥ शो० ॥ ५९ ॥
नहीं दिऊं जश जायवा, त्रियातो कौण वातहो ॥ र. ॥
विसर्ज्या ते वेगसूं, दुःख है ये न समात हो ॥र.॥ शो० ॥ ६० ॥
एकावनमीं ढालमें, सकल मिल्या शुभ साज हो ॥ र. ॥
केशराज सीता तणो, शोक्ये कीधां काजहो ॥ र. ॥ शो० ॥ ६१ ॥

दोहा धन्या श्री रागे—

रात्रि पधार्या रामजी, सुणवा काजे साद।
जिहां जावे तिहां सांभले, जण जण मुख अपवाद ॥१॥
रावणजी लेई गयो, तिहां रही चिरकाल।

जाणी सती आणी सही, राम अपूठी बाल ॥ २ ॥
ज्ञानी देखी वस्तुनी, सौजन करे आहार ।
नारी रूप विलोकवे, ए जगनो व्यवहार ॥ ३ ॥
लेई गयो झख मारवा, झख मारणो गमार ।
तिहांते झख मारी हसे, इहां किस्यो विचार ॥ ४ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज समझ नर पाणी पतासा—धूलचंदजी सुराणा कृत—

समझ नर भावी बल भारी, चेत नर । इस पर जोर चले नहीं किसका सुनजो नर नारी ॥ टेर ॥ फिरता २ धोबीपाड़े, रघुवरजी आवे, २, जिन २ मुख की वातां सुनतां दिलड़ो दुःख पावे । धोबी द्वारे धोबण ऊभी आडो खड़कावे, खोल किवाड़ी पियुड़ा म्हारा जिवड़ा घबरावे । रजक रीस में आकर कहता वात सुणों म्हारी ॥ इस पर० ॥ १ ॥ रात अंधेरी अर्ध निशी में बाहिर क्यों भटके ॥ २ ॥ कुमति–कुलछणनार–कलेशण मुझ उर में अटके ॥ जा जा जा तूं धोबी बोले घरमें नहीं राखूं ॥ २ ॥ राम सरीसो मैं नहीं रण्डी घात सची भाखूं । विगरी सीता पाछी लायो सुनी वात खारी । रामजी सुनी बात खारी । इस पर० ॥ २ ॥

(दोहा)

एम सुणीघर आवीया, राम न लाई वार ।
चरचे चौखा चौकसी, भेज्या नगरी मझार ॥ ५ ॥
ओही कथानो केहवो, ओही जन समुदाय ।
आवी सुणावे रामने, तुरत फिरियो नहीं जाय ॥ ६ ॥
जेहतणे तो कारणे, रावणनो क्षय कीध ।
फिट विधि? तें सीतामणी, कौण अवस्था दीध ॥ ७ ॥
लक्ष्मणजी पण सांभली, लोक मुखे ए वात ।
जाणे पड्यो आकाशथी, वज्र तणो निर्घात ॥ ८ ॥

ढाल बावनमी तर्ज रेजीवा जिन धर्म कीजीये—

लक्ष्मणजी तो एम वीनवेहो, राघवसूं कर जोड़ी ।

कांकीजे तोड़ा तोड़ी, नहीं सीता मांही खोड़ी ॥
न्योसाच कढाईन्होढ़ी ॥ ल ॥ १ ॥
पाणीमें पत्थर तरे. पश्चिमदि शेदिनकार।
उगन्तो सही जाणीए, सीतान लोपे कार ॥ ल० ॥ २ ॥
वैश्वानर शीलोपड़े, अमृत मारणहार।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपे कार ॥ ल० ॥ ३ ॥
सायरना जल भीतरे, उडे रेणु अपार।
तोए सहीकर जाणजो सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ ४ ॥
पंकज पत्थर ऊपरे, पावे अतिविस्तार।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपे कार ॥ ल० ॥ ५ ॥
सूर्य आथमियां थकी. वर्ते, वासर वार।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपे कार ॥ ल० ॥ ६ ॥
सापतणे मुख ऊपजे. अमिय तणो रस मार।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ ७ ॥
साधु नाम ससारमें, जो पामे कलिकार।
तोए सही कर जाणजो. सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ ८ ॥
ताल कूट विष खाइयां, आयुतणो अधिकार।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ ९ ॥
अंधकार सूरज करे, चन्द्रझरे अंगार।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ १० ॥
निर्दय धर्म लहेघणो. अन्यायी जशधार।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ ११ ॥
काव्य कला वांछेघणी, प्रज्ञानो[1] परिहार।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ १२ ॥
क्षमा दया विण वांछही, तपही तणा प्राकार।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ १३ ॥
अल्पमति श्रुत सायरूं, अवगाहिये विचार।

१ निर्बुद्धि।

तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ १४ ॥
आंख विहूणो वांछही. देखूं सब संसार।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ १५ ॥
चंचल चित्तनो मानवी. ध्यान धरे सुखकार।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ १६ ॥
प्रभु तुम्हने नवि बूजिए, अबलानं अतिरोष।
सदोषही नवि छांडिये. एतोछे निर्दोष ॥ ल० ॥ १७ ॥
राम कहे महत्तर[२] नरां, लाधी मुझही सुणाय।
मैंपणकांने सांभली, हेरा[३]पण कही आय ॥ ल० ॥ १८ ॥
वातकाए अपजशतणी. मुझतो सही नजाय।
सीता काढूं घरथकी, जेमए कहण मिटाय ॥ ल० ॥ १९ ॥
दांतांदेई आंगुली, तबभाखे लघु भ्रात।
संसअछे तुम्ह माहरो, फिरिमत काढ़ो वात॥ ल० ॥ २० ॥

क्षेपक राधेश्याम—रामायणमेंसे—

लक्ष्मण बोला किसतरह, हैयहठीक उपाय।
जांच लंकामें होचुकी, फिरभी त्यागी जाय॥

हेदीनानाथ दयाकरिये, छाती छलनी होजातीहै।
शब्दों की नहीं लड़ीहै, यह कोंटोंकी लड़ी दिखातीहै॥
निर्दोषिनी नारीदण्डपाए, क्यायह अधर्म का काम नहीं।
ऐसेकामों को करकेक्या, रघु कुलहोगा बदनाम नहीं।
अबला अर्द्धांगिनी महासती. वेखता निकाली जातीहै॥
पृथ्वी आकाश देखतेहो, ! कोशलपुर कैसाघातीहैं॥
धिक्है उसप्रजाको रक्षापै, जोयूं शिरपर चढ़जाय प्रजा।
सन्तोष-पूर्ण शासनपरभी, पूरा सन्तोषन पाये प्रजा॥
हम तरह तरह की शाखोसे, सन्तोषित करदेंगे सबको।
मातामें कोई दोषनहीं, यह साबित करदेंगे सबको॥

२—राज कर्मचारी=३ जासूस (भेद)

दबजाना ऐसे अवसरपर, अपनी भीरूता बताता है।
सच्चा चुपरहे समयपरतो, झूठा सच्चाहो जाताहै ॥
फिरनहीं हाथ वहआयेगा, जोहाथांसे खोजायेगा।
गृह लक्ष्मीकोयदि त्यागेंगे, तो गृह उजड़हो जायेगा ॥
रोषधरी लक्ष्मणकहे, हमकोतोहै क्रोध।
चलो प्रजाके सामने, डटकर करें विरोध ॥
प्रभुफिर बोलेधैर्यधर, सोचो छोटे राम।
नहीं खिलौनाहै कोई, है शासन का काम ॥
शासन जबतलक नहींहोगा, अपनी इच्छाओंपर मनपर।
तबतलक प्रभाव पड़ेगाक्या, पुर परिजन और पराजन पर ॥
रैय्यत पर भेंट चढ़ादेंगा गृह को गृह लक्ष्मी को तनको।
पर रैय्यत के होकर खिलाफ, कर सकता राम न शासनको ॥
जिस जगह देवों से जांच हुई, आन्दोलन वहां न उठा है।
कपि-निश्चर-दल विश्वास सहित, सीता पर श्रद्धा रखता है ॥
शंकित है अवध इसलिये, मैं सीता का त्याग न करता हूं।
मन से तो हो सकता ही नहीं, तनसे यह साधन करता हूं ॥

ढाल मूलगी—

पड़ह फिरायो शहरमें, मुंह जोड़से जे केई।
ध्वंस करूं श्रीरामनूं, मैं मारे वो तेई ॥ ल० ॥ २१ ॥
लोक वचन सीता सती, क्यूं छोडे नरेश।
उतावल अब छे घणी, पाछे हाथ घसेस ॥ ल० ॥ २२ ॥
मून्ये मूंगी छे घणी, मूहंगी नहीं लगार।
सीतानो संसार में, भाख्यो धन्य अवतार ॥ ल० ॥ २३ ॥
ओ दिन क्यूं न विचार्यो ही, जो दिन पड्यो वियोग।
माणस मुओं थी घणो, करता था अति शोग ॥ ल० ॥ २४ ॥
छाती फाटीती थी घणी, आंसू तो झड़ लाय।
बरसतो ज्यूं भाद्रवो, सीता वांछे राय ॥ ल० ॥ २५ ॥

आज हुई अलखामणी, सुणी लोक ना बोल।
मति रे बिमासो भाईजी, सीताछे निर्मोल ॥ ल० ॥ २६ ॥
क्षण रूसे तूसे क्षणे, भेद न कोई लहाय।
बाहिज दृष्टि भासीया, लोक नहीं समझाय ॥ ल० ॥ २७ ॥
राम कहै ए साचछे, परघर भंजन लोग।
आविमिल्यो ए एहवो, दैव तणे संयोग ॥ ल० ॥ २८ ॥
जब लग नयणे न निरखही, कही न कहणी कोई।
कही कहीणी घाव्रली पड़े, अधिक असाता होई ॥ ल० ॥ २९ ॥
सज्जन तो कोपे नहीं, कोपि न भजे विकार।
सज्जननो गुण ए वड़ो, वाल्यो वले ते वार ॥ ल० ॥ ३० ॥
सायर सायरता भजे, न हुए गांव-तालाव।
सायर शरनो आंतरो, एम भाखे जिनराव ॥ ल० ॥ ३१ ॥
एक नरा एकज घरा, एकज पुरी प्रसिद्ध।
दूर किया सहु जगत में, अपजश पड़हो दीघ ॥ ल० ॥ ३२ ॥
नारी सीता तुम्ह छांहड़ी, सुख दुःख लागी लार।
छोडावी छूटे नहीं, कीधां कोटि प्रकार ॥ ल० ॥ ३३ ॥
कहे विभीषण रायजी, सीतानी दऊं साख।
राजा रावण आगलही, आपण आपो राख ॥ ल० ॥ ३४ ॥
उपद्रव अति आकरा, करी डरावी एह।
दिलासा देई ने करी, तेही प्रभु दीधो छेह ॥ ल० ॥ ३५ ॥
जब आई मन्दोदरी, तब कीधी अतिभांड।
बोलावी दूती कहे, मूंडे पड़ावी खांड ॥ ल० ॥ ३६ ॥
रावण साथ लड़ी घणूं, काणी सकलही चोर।
फिट फिट कही अतलावीयो, एकही शील सजोर ॥ल०॥ ३७ ॥
पूज्य प्रसाद तुम्हारड़े, करी न कोई परवाह।
कणावड़ी जे को हुवे, तो भय धरे अगाह ॥ ल० ॥ ३८ ॥
सूंस करूं एहनीवती, जो भाखो तुम्ह ईश।

सतियों मांही शिरोमणि, सीता विश्वावीश ॥ ल० ॥ ३९ ॥
लक्ष्मणजी भाखी रह्यो, भाखी रह्यो लंकेश ।
राम न मानी एकही, दिन तुझने आदेश । ल० ॥ ४० ॥
सीता थी विरचे नहीं, कोडी प्रकारे राम ।
वात कहन्तां विरचियो, जब सांभल्यो कुनाम ॥ ल० ॥ ४१ ॥
सासु सुसरा सब फिर्या, मात पिताने भ्रात ।
एह कुनाम थकी फिरी, हनुमन्त केरी मात ॥ ल० ॥ ४२ ॥
ए बावनमी ढालमें, जेही जेम कीधां कर्म ।
'केशराज' तेम भोगवे, ए जिन मतनो मर्म ॥ ल० ॥ ४३ ॥

दोहा वैराडी रागे—

कृतान्त मुख सेनापति, साथे कहे श्रीराम ।
सीता काढो घरथकी, वेगे करो ए काम ॥
अटवी मांहे मेलजो, जिहां न कोई नी आश ।
आपणही मरि जायसे, पामी ने अतित्रास ॥ २ ॥
पगे लागीने रोवतां, करतो अधिक विखास१ ।
लक्ष्मण भाखे राम सूं, स्वामी सुणो अरदास ॥ ३ ॥
घर बाहिर किम काढ़ीये, सीता सरीसी नार ।
गर्भवती सुविशेष थी, देखो वात विचार ॥ ४ ॥
मति बोलो मुझ आगले, बोल्यां में नहीं सार ।
काल रूप प्रभु होई रह्यो, अहि अहि कर्म विकार ॥५॥
रोवन्तो घर आवीयो, कोई न चाले सान ।
वात विचार पड़ी घणूं, भाई बाप समान ॥ ६ ॥

क्षेपक राधेश्याम-रामायण में से—

लक्ष्मण रोते रहगया, गया हृदयभी डोल ।
लगे ढालने पर वहां, चली न टालम टोल ॥
आज्ञादे रघुवर उठे, किया न और विचार ।
'लहु लखणसे उसदिवस, हुआ नहीं आहार ॥

१ दुःख=

अपने मन्दिर के निकट, सर पृथिवीपर टेक ।
मनही मन चिन्ता लखण, करने लगे अनेक ॥
किसभांति आज्ञा का पालन, कर डाले आज्ञाकारी यह ।
किसतरह विसर्जन देवीका, मन्दिरसे करे पुजारी यह ॥
हैं एक ओर आज्ञा-पालन, दूसरी ओर संकट अतिहै ।
उगले न बने खाये न बने, यह साप छछुन्दरकी गतिहै ॥
हे विधना! साध्वी सीतापर, क्या वज्राघात किया तूने ।
जोमंगल-आश दिनोंसेथी, उसमें उत्पात कियातूने ॥
गृहीणीकापद जिसनेपाया, वह त्याज्य आजयों अतिशयहै।
न्यायाधीश्वर यहन्यायहैतो, न्यायालय अन्यायालयहै ॥
पूछे कोई उसके दिलसे, जिसपर यह आफत आतीहै ।
पति-सेवाकरती हुई सती, पति-द्वारा त्यागी जातीहै ॥
मैं खूबजानताहूं सीता, निर्दोषिनी निष्कलंकिनीहै ।
गुणखानीहै क्षत्राणीहै, विदुषीहैं जनक नन्दनीहैं ॥
इन्ही खयालोंमें लखण, पड़े एकदम रोय ।
मुखसे यह निकला प्रगट, विधना कैसी होय ॥

दोहा मूलगा—

गिरिसमेतनी जातनो, दोहलोकरो प्रमाण ।
आज्ञा प्रभुनी छेकहै, सेनापति रे सुजाण ॥ ७ ॥
भद्रपणे साभामिनी, ऊठी चालो जाम ।
शकुन वर्जना अवगुणो, चाली जाये ताम ॥ ८ ॥

क्षेपक राधेश्याम—रामायणमेंसे—

कौशलके राज-मार्गसेजब, वहरथ जंगलको जाताथा ।
पीछेहटताथा अन्धकार, आगे प्रकाश दिखलाताथा ॥
सचमुच उसदिन का वह तड़का, दुःख सुखसे मिला सवेराथा ।
कौशलके लिये अंधेराथा, जंगलके लिये उजेराथा ॥
आकाशके तारे फीकेथे, चन्द्रमा उदासहो रहाथा ।
कणनहीं ओसके गिरतेथे, पृथ्वीपर व्योम रो रहाथा ॥

दूसरी ओर लालिमालिये, सूरज रुक रुक कर उगताथा।
उनमोती जैसी बूंदोंको, अति शीघ्र हंस सम चुगताथा ॥
जबसाफ होगया सबमतला, तबनाची डाली हिलमिल कर।
अवलोक प्रकृतिका यह रहस्य, सबकली हंसपड़ी खिल खिल कर।
पुष्पोंके केदल वृक्षोंको तज रथ-पथ परआय विखरतेथे।
पक्षीअपने मीठे स्वरसे, माताका स्वागत करतेथे ॥

दोहा मूलगा—

पवन गतिए प्रेरीदियो, सारथी ए रथसार।
गंगासागर ऊतरी, पहूंतो पेलेपार ॥ ९ ॥
'सिंहनी नाद' अरण्यथी, आगेन चले सोई।
आंखे आंसू नांखतो, सीता सामो जोई ॥ १० ॥
कह्योन जाये कांईहीं, आवेहै योभराय।
फिटफिट जन्म सेवकतणो, काम दिया नटलाय ॥ ११ ॥

क्षेपक राधेश्याम-रामायणमेंसे—

कहताहूंतो खुलतीनजुबां, चुपरहनेमें दम घुटताहै।
वह गाफिल कर्ज दारहूंमैं, जोभीतर भीतर लुटताहै ॥
आज्ञाका बर्छा स्व सीने, माराहै मुझ हतभागीके।
यह अत्याचार धर्मकाहै, जो शिरपरहै अनुरागीके ॥
बस इतनाही कहसके, नयनों वर्षे नीर।
धीरहृदय पलमात्रमें, फिरहोगया अधीर ॥
निकले सिंहनी गुफासेज्यों, अपने शिशुका रोदन सुनकर।
रथसे उतरी त्यों सीता मात, सारथीका करुण-कथन सुनकर ॥
बोलीं-स्वामीकी आज्ञाको, बर्छीपहचान भूलकीहै।
दासीकोतो वज्रज्ञाभी, मामूली छड़ी-फूलकीहै ॥
वेमेरे और तुम्हारेक्या, सारेही जगके हितकरहै।
सूरज वंशी राजेश्वरहैं, रघुकुलके गौरव रघुवरहैं ॥
वेबर्छा कैसेछोड़ेंगे, जबदृष्टि विश्वके प्रेमकीहै।
तुम्ह धीरज धरकर यह कहदो, दासीको क्याआज्ञादीहै ॥

इन शब्दों से जब खिची, सकुचाहट की फांस ।
तबस्चारथी कहनेलगा, लेकर गहरी सांस ॥
हेमाता उमारमाहो तुम, मन-मन्दिरकी प्रतिमाहो तुम ।
महिमाहो तुम सुपमाहोतुम. अणिमा होतुम गरिमाहो तुम ॥
लंकामें डंकावजालिया, परअवध वध किए देताहै ।
वस वास अशेक वटिकाका सारे शोकोंका नेताहै ॥
भारत की ऊँची नारीका, तुमनेतो चरित दिखायाहै ।
पर नगर वासियोंने इकको, अत्यन्त बूरा बतलायाहै ॥
वेकहतेहैं परवशतामें, जवप्रण गंवा देतीं माता ।
तबसच्ची पतिव्रता ओंकी, पदवीको पालेतीं माता ॥
यह नहीं समझतीहै, दुनियों आचार्य्य परीक्षादी तुमने ।
पतिकेहित एकही निजप्राणोंकोरख, पतिप्राणकी रक्षाकी तुमने॥
वस इसी एकही कारणसे, प्रभुने मुझे पढायाहै ।
वेटेके हाथों हीउसकी, माताका त्याग करायाहै ॥

दोहा मूलगा—

लेईगयो लंकाधणी, चित्तमें आणी चाव ।
लोकोंने मुख आकरो, निसुणी एह कहाव ॥ १२ ॥
राज तज्यांछे रामजी, मेला यांही रान ।
लक्ष्मण केरी वीनती, राम सुनी नहीं कान ॥ १३ ॥
ए वनश्वपद संभर्यो, जेहवू जमनूं गेह ।
मुझ मूकीकेम जीवसे, प्रथम परिक्षण एह ॥ १४ ॥
एम सुणी मूर्छालही, रथथी ताम पडन्त ।
जाणे मूई सेनापति. आपण अधिक रडन्त ॥ १५ ॥
चेतलहे वन वायरे, फिरी फिरी मूर्च्छन्त ।
सुसती होईनेसती, तस साथे पूछन्त ॥ १६ ॥
दूरेकेट लीसापूरी, किहांअछे प्रभुआप ।
झगडूं जेछेड़ो ग्रही, कां दियो मुझ सन्ताप ॥ १७ ॥
तामकहे सेनापति, रहेवाधो ए काम ।

वतलायो जायेनहीं, एहि अवसर श्री राम ॥ १८ ॥
सा सेनापति सूंकहे, मुझ भाख्यो ए एम।
तूं कहजेश्री रामने, नकहेतो मुझनेम ॥ १९ ॥

ढाल तेपनमीं—तर्ज विलवे राणी रुकमणी—

सीताजी दे उलम्भड़ो, सुण ससनेहीं राम।
तुमथी एम केम बूजियूं, तुमे आशा विश्राम ॥ सीताजी ॥ १ ॥
फौजबांधी लड़तीनहीं, नाकरती तुम्ह त्रास।
शुद्धकरी मुझ काढतां, कीधां कांरे विखास ॥ सीताजी ॥ २ ॥
धरणेपण नविबेसती. नाकरती उपवास।
लोकोंने नवि मेलती, कीधां कांरे विसास ॥ सीताजी ॥ ३ ॥
कूवे पण पड़ती नहीं, नालेती गलपास।
पेटे छूरी न विमारती, कीधां केरे विसास ॥ सीताजी ॥ ४ ॥
कन्त भणी नवि क्रोध थी, नवि खाती विषग्रास।
शाप न देती स्वामी ने, कीधां कांरे विसास ॥ सीताजी ॥५॥
होई ने अति आकती, मेली लाकड पास।
जुहर[1] पण करती नहीं, कीधां कांरे विसास ॥ सीताजी ॥६॥
पर्वत थी पड़ती नहीं, मरती रोकी न श्वास।
छेहड़ो पकड़ नवि झघड़ती, कीधां कांरे विसास ॥सीताजी ॥७॥
जाणती थी सुत जन्म से, पहोंचसे सब आश।
साज न मिलसे आंगणे, कीधां कांरे चिसास ॥ सीताजी ॥८॥
सही[2] सुहामणी आवसे. पहिराव सूं वस्त्र तास।
देसे अमृत आशिश का, कीधां कांरे विसास ॥सीताजी ॥ ९ ॥
गुरु गोत्र जमनावसूं, आणीने उल्लास।
विधी सघली ही करसूं सही, कीधां कांरे विसास ॥सीताजी ॥१०॥
नाना सूं नेकी परे, करसूं रंग विलास।
एक न आवी पाधरी, कीधां कांरे विसास॥सीताजी ॥ ११ ॥

१ अग्निमें बलना ॥ २ बहिन

हूं जाणती थी माहरो, पूरो पुण्य प्रकाश ।
भलो देवर भलो, कीधां कांरे त्रिसास ॥सीताजी ॥ १२ ॥
अवरां ने अंधारडो. माहरे छे उजास ।
दैव न शक्यो ओ साखही कीधां कांरे त्रिसास ॥सीताजी॥१३॥
ऊंची नींची होवतां लांबा लेई निसास ।
दुःख आणी अति रोवती, कीधां कांरे त्रिसास ॥ सीताजी॥१४॥
किहां सीता कुसुमालिका, किहां वननो वास ।
एती करी न विचारणा, कीधां कांरे त्रिसास ॥सीताजी ॥ १५ ॥
गुप्तपणे घर भीतरे, कां न कर्यो शिर नास ।
भांड करी सब लोकमें, कीधां कांरे त्रिसास ॥ सीताजी ॥१६॥
देखाये अति चगचगो, रंग कुसुम्ब पतंग ।
उतरियो ही देखियो, राम तणो तिम रंग ॥सीताजी ॥ १७ ॥
नगरां[१] केरा वालिया, ओछां केरो नेह ।
प्रहर घड़ी दिन आंतरे, रीतो देखे तेह ॥सीताजी ॥ १८ ॥
पहिला प्रहरनी छांहड़ी, घटती जाये जेम ।
राजचन्द्रनी प्रीतड़ी, मुझ सूं होई एम ॥ सीताजी ॥ १९ ॥
विन्दु तणां करे सायरु, उत्तम माणस जेह ।
सायरनो तो विंदुओ, राम कियोरे एह ॥ सीताजी ॥ २० ॥
कोईयक गुणतो चित्त धरी, लेतो मुझने राख ।
राक्षस राक्षसणी कन्हे, पूछी लेतो साख॥सीताजी ॥२१॥
लम्पट जे नर लालची, तेह तणी सुणी वात ।
मन चोर्यो तुम मुझभणी, हो लक्ष्मण जीना भ्रात ॥सीताजी॥२२॥
आपणये अंगी करूं, केम करीजे दूर ।

१ नगर का मालिक (राजा) और नीच (ओछा) मनुष्य का प्रेम अल्प समय में ही कम होजाता है ॥ (रीतो-रिक्त=मुर्कायलो) इस सम्बन्धमें ऐसा कहा है ।यथा-डुंगर केरा वालिया, ओछा केरानेह । वहता वहे ऊतावला, छटक दिखावे छेह ॥ ..

शंकर ज्यूं विष आदर्यो, राख्यो रहे हजूर ॥ सीताजी ॥ २३॥
वडवांनल सायर तणूं, बाले जल नित्य ऊठ।
सायर उन्हावे नहीं, राखी रह्यो तसु पूठ ॥ ॥सीताजी॥ २४ ॥
जो प्रभुने सन्देह थो, कांरे न लीधो साच।
साचवडो संसारमें, साचतणी वडवाच ॥ सीताजी ॥ २५ ॥
भोगवी सुकृत आपणूं, वनही मांही वसन्त।
प्रभु ए कारज केम करे, जेह थी लोक हसंन्त ॥सीताजी ॥२६॥
राजा राच्या ही भला, विराच्यां नहीं काज।
राम न हुओ माहरो, अवरोंने सीं लाज ! ॥ सीताजी ॥ २७ ॥
हूंस न राखी माननी, अपमाने नहीं पार।
दोई पक्ष पूरो बह्यो, हो म्हारा भरतार ॥ सीताजी ॥ २८ ॥
खीर नीरनो नेहलो, चन्द्र समुद्रां प्यार।
आंपांने ए ओपमा, कियो किसो करतार ॥ सीताजी ॥ २९ ॥
पंचही आश्रव सेवियां, सेव्यां पाप अढार।
शरणा चारे नविकर्या, धर्म ही चार प्रकार ॥सीताजी ॥ ३० ॥
त्रि करण शुद्धन राखियां, मद आठे मैं कीध।
इन्द्रिय पांचे पोखियां, वस्य वतांची न लीध ॥सीताजी ॥३१॥
विकथा चारे समाचरी, सेव्यां कुव्यसन सात।
कीधा चार कषायजी, पांच पदे विख्यात ॥ सीताजी ॥ ३२ ॥
ते फल ए हूं भोगवूं, दोष न प्रभु लवलेश।
कर्म लिख्यो फल पामिए, ए जिननो उपदेश ॥सीताजी ॥३३॥
रवि उग्यो देखेसहु, घुवड़ ने अंधकार।
घन वरसे जवासीओ, सूक्यो जाय गमार ॥सीताजी ॥ ३४ ॥
मास वसन्ते केरड़े, पान तणूं नहीं पोष।
सूरज मेह वसन्तनो, कोई न दीसे दोष ॥ सीताजी ॥ ३५ ॥
रामचन्द्र ना राजमां, सुखिया सहु लोक।
हूं वन मांहे रडवडूं, ए कृत्य कर्मां योग ॥ सीताजी ॥ ३६ ॥

खल खंचने हूं परिहरी, कोन विचारी मर्म ।
मिथ्यात्वी उपदेश थी, मतिरे तजो जिनधर्म । सीताजी ॥३७॥
एम कही मूर्छा पड़ी, करी शीतल उपचार ।
करी सचेतन सुन्दरी, वचन वदे सुविचार ॥ सीताजी ॥ ३८ ॥
राम विनाहूं दुःख लहूं, तिमही मुझ विण स्वाम ।
लेसे आरती आकरी, विविध परे दुःख पाम ॥ सीताजी ॥ ३९ ॥
हूंतो हुई नाहुई, मुझ जैसी बहुलीदास ।
यत्नकरीजो आपणूं, प्रभु एमुझ अरदास ॥ सीताजी ॥ ४० ॥
जेहना घरमें जोवड़ो, लीजे ते प्रतिपाल ।
नाभि विना आराकरी, कहन नशके चाल ॥ सीताजी ॥ ४१ ॥
सूर्यवंशे दीवड़ो, तूं शशिहर तूं भाण ।
तूं सुरतरु तूं जलहरू, महिमा मेरु समान ॥ सीताजी ॥ ४२ ॥
तूं प्रभु सायर सारिसो, गुणे भरियो भरपूर ।
धणी पणे में पामीयो, पूर्व पुण्य अंकूर ॥ सीताजी ॥ ४३ ॥
कायम रहे तुझ साहिबी, कायम तूं राजान ।
सयल कुटुम्बोंसे होईजो, प्रभु तुम्हने कल्याण ॥ सीताजी ॥ ४४ ॥
संभलावे मुझ मुखतणा, स्वामीने ए बोल ।
बोल सहुने सुहामणा, आछा अनेरे अमोल ॥ सीताजी ॥ ४५ ॥
लक्ष्मणसुं ए माहरी, केजे तूं आशीश ।
सेवाकरजो प्रभुतणी, प्रभु थारे जगदीश ॥ सीताजी ॥ ४६ ॥
पन्थे शिव होजोतुने, रेवत्स! विश्वावीश ।
विदाय कियो सेनापति, जाई मिल्यो निज ईश ॥ सीताजी ॥ ४७ ॥
त्रेपन मीए ढालमें, सीतासुं प्रभु कोप ।
केशराज सोने वधे, ताव्यांथी अति ओप ॥ सीताजी ॥ ४८ ॥

(दोहा जयतश्री रागे)

सत्यवती साचीसती, फरे घणूं वनमांहे ।
यूथ भ्रष्ट जिम हरणली, आपे निन्दे माहे ॥ १

अई अई कर्मगति बांकड़ी, नहींछे केहने मान।
तीर्थंकर चक्रीसहु, नडियां एही जान ॥ २ ॥
रंककरी राजाकरे, राजाछे पणरंक।
करेसही नवि मेटियां, जाये विधिना अंक ॥ ३ ॥
अघट्यो घाट घड़ेघणूं, घड़ियाने भाजन्त।
माथेए तिहूं लोकने, दैवसदा गाजन्त ॥ ४ ॥
फरि फरि रोवेघणी, पग पग चलत थकाय।
दर्भांकुर कण्टक करी, पांव घणूं विंधाय ॥ ५ ॥

क्षेपक-राधेश्याम-रामायणमेंसे—

विरह घटा छारहीथी, घुमड़ घुमड़ जबघोर।
बोलेथा तबइस तरह, विरहिनका मन मोर ॥
तुम्हे तुम्हारी प्रजाको, दोषनहीं सुखधाम।
दो सौतोकाहो रहा, था भीषण संग्राम ॥
गृह लक्ष्मी ने स्वामी के संग, चौदह वरसों वनवास किया।
उस राजलक्ष्मीके मदका, अपमान कराया हस किया ॥
अवडाह निकालाथूं उसने, जोबनमें मुझे पढायाहै।
सम्पूर्ण रूपसे रानीवन, जीवन-धनको भरमायाहै ॥
दुनियोंमें मुझसी दुःखी, औरन दूजीकोय।
जिसने सारी आयुही, संकटमेंदी खोय ॥
कवारीसे व्याही करनेमें, किसदर पिताको त्रासहुआ।
फिरज्योंही श्वसुरालय आयी, त्योंही पतिको वनवास हुआ।
रानीहोने जोगिनीहुई, पायाझौंपडा महल-बदले।
तिसपरभी नहीं विधाताके, कालेकाले बदल बदले ॥
लक्ष्मणका सहायकहो योंभेजा, रघुको कठिन वचन कहकर।
खुदभी स्वामीका विरहसहा, उस लंका नगरीमें रहकर ॥
मेरेही कारण प्राणनाथ, गमगीन रहे कितनेही दिन।
मेरेही खातिर खूनोंके, दरियाऊबहे कितनेही दिन ॥

इतनेपरभी उसविधनाने, सुखसे नमुझे बिठलायाहै ।
इन्तहा कष्टकी यहकरदी, जोअब वनमें भिजवायाहै ॥
जिसने अपने जीवन भरमें, आरामन देखा भाला हो ।
माङ्गलिक समय मेंस्वामीने, महलोंसे जिसे निकालाहो ॥
ऐसी दुखियारी नारीको, हेवृक्षो! कहींभी देखाहै ।
इतने कष्टों की मारीको, हे जीवो ! कहींभी देखा है ॥

सीता रह सकती नहीं, यों वियोग आधीन ।
नीर बिना संसार में, कहीं रही है मीन ॥
इन्हीं विचारों में हुई, जब अत्यन्त अधीर ।
मूर्छाखा चेतन हुई, जब चलता शीत समीर ॥

दोहा मूलगा—

भाग्यवन्त माणस जिके, तेतो नवि सीदाय ।
दीठी सेना सामठी, आगे ऊभी आय ॥ ६ ॥
जीवत ने मरवातणू, भय नवि आणे कोय ।
नमोकार नाध्यान में, लोगां दीठी सोय ॥ ७ ॥
लोक तदाचित्त चिन्तवे, ए कोई वनदेवी ।
कारण कोई विचारवे, प्रगट थई ततखेवी ॥ ८ ॥
रोज सुणी सीता तणूं, स्वरनो जानन हार ।
नायक तो सेनातणू, चित्त सूं करे विचार ॥९॥
गर्भवती साची सती, सीदाती अतिजाण !
चाली आयो पाखती, सती तदा भय आण ॥१०॥
अलंकार सहु अंगना ऊतारी ने ताम ।
राजा आगे मेलिया, राखेवा निज माम ॥ ११ ॥
बहिन ! न चिये मुझथकी, राजा भाखे रंग ।
अलंकार एताहरा, अखे रहो तुझ अंग ॥ १२ ॥

ढाल चौपनमी—

तर्ज—नेमन माने कह्यो—

सू भूपति आय मिलियो, वज्र सुजंघ उदार ।

कलेश अशेश टल्यो, सीता भाग्य अपार ॥सु० ॥ १ ॥
कवण अछो तुम्ह आप, आपणो नाम प्रकाशो ।
एह अरण्ये किसी तुम्हे, ए वडो तमासो ॥
निर्दयी थी निर्दय घणो. जेणे कीधो ए काम ।
चौर अन्यायी आकरोहो, तेह तणूं ए काम ॥ सु० ॥ २ ॥
आशंका सब छोड़ी, जोडिने कर दोई ।
पूछूं हूं तुझ पास, अधिक हूं अर्थी होई ॥
तुझ पीड़ाए पीड्यो, दया वसी दिल मांही ।
वीतक वीत्यूजे अछेहो, ते तुम्ह भाखो प्राही ॥ सु० ॥३॥
सुमति नाम प्रधान. ताम तस पासे आवी ।
कोमल वाणी प्रकाशी, वात तस कहे सुहावी ॥
'पुण्डरीक' पुग्नो धणी, 'गजवाहन' पूत ।
'बन्धुदेवी' जाइयो हो, रावण पर घर सूत ॥ सु० ४ ॥
वज्रजंघ जी राय, परम ए श्रावक कहियो ।
देव गुरु धर्म तत्वतणो, जेणे निश्चय लहियो ॥
सहोदर परनारीनो; विरुध बहन्त अपार ।
परदुःख कापण छे घणोहो, जगमांही जशसार ॥सु० ॥५॥
हाथी लेवा काज, आजेही अटवी आयो ।
हाथी चढिया हाथ, ताम मन घरही चलायो ॥
रोज सुणीने ताहरू आयो इहां नरेश ।
भाई भणी अब भाखिये हो. वात विशेष अशेष ॥ सु० ॥६॥

मुनि श्री रूपचन्दजी कृत क्षेपक तर्ज मेरे बापनेरे मुझको
बालपणे परणाया ।

कहदे मांडनेरे क तांमें विती जितरी वात ॥ टेर ॥
रूप अनूपम अवल विराजे, वडाघरों की जाई ।
दुःख दाई इस घोर जंगलमें, कहो किन कारन आई । कहदे ॥१॥
अथवा दानव देव विद्याधर, अपहर तुझ बिठाई ॥

एकाकी अबला को वनमें, नर कोई तजी अन्यायी ॥कहदे ॥२॥
कहूं मैं मांडनेरं क मां में बीती जितरी बात ॥ टेर ॥
दशरथ नृपनी पुत्र वधु मैं, रामचन्द्र घर नारी ।
भामण्डल की भगिनी हूं मैं, जनक विदेह दुलारी ॥ कहूंमैं ॥३॥

ढाल मूलगी—

एम सुणतां सचिव, राय परतीत ह राखी ।
धुरथी छेह लगे मांडी. वाततो सघली भाखी ॥
रोवन्ती राणी वही, मंत्रीने भूपाल ।
पीली माटी पाणिये हो; गिवली हुवे ततकाल ॥सु० ॥७।
निष्कपट थी अति प्रगट पणे, भाखे तवते भूप ।
आज थकी तूं वेहनी, बन्धु अछूं अनूप ॥
एक धर्म जेही करे, तेही सगो संसार ।
सगपण तोछे कारमोहो, स्वामी तजी क्यूं नार ॥ सु० ॥८॥
भामण्डल जेहवो जाणी, राज ! मुझ घरे पधारो ।
होई खिजमतदार. करूंछूं सफल जन्मारो ॥
अवधारो अरदास, ए सोचतणूं नहीं काम ।
बारम्बार विशेष थीहो, रायभणे अभिराम ॥ सु० ९ ॥
पीयरिए धसि जायए, सासरे जो दुःखपावे ।
एहवात समरथ, त्रियाने कांईयन आवे ॥
सूधी वाटां चालतां, जोकांटा भाजन्त ॥ सु० ॥ १० ॥
तोही दुश्मन लोकमें हो, नारी नवि लाजन्त ॥ सु० ॥ १०॥
लोक वचनथी राम, कामए कियो देखो ।
उतरियां थीरोप, तुम्ह सरिसो पेखो ॥
गवेषण करसेघणी, सुखनहीं लहे लगार ।
चक्रवाक जिम एकलोहो, आणे आरति अपार सु० ॥ ११ ॥
शिविकाए बेसाड़ी, ताम सीताघर आणी ।
आवी राय वियोगे, तिहां रहे राघव-राणी ॥

धर्म ध्याने चित्त वासियो, आरती परही टाल ।
सुखसाता मांने घणीहो, पाछेही मन वाली ॥ सु० ॥ १२ ॥
अबसेना पति आवी, रामने चरणे लागी ।
वातविशेष विचार, कहेछेते अनु रागी ॥
'सिंहनिनाद अरण्यमें, प्रभुमैं मूकी देवी ।
वातसुणी रथथी पडीहो, मूर्च्छाणी ततखेवी ॥ सु० ॥ १३ ॥
वनवाये लही चेतन अने, फिरफिर मूर्च्छा आवे ।
शुद्धनरही लगार ताम, गाढो दुःख पावे ॥
धीरज अति आलम्बीने, माताजी कही एह ।
खमलावी पण स्वामीने, वातभलीछे तेह ॥ सु० ॥ १४ ॥
उलम्भो तोतेणिए, सुणावी लीधो पहेलां ।
विगत विगतसुं वात, वातावी भारवी वहेलां ॥
जेमजेम निसुणे रामजी, सीता मुखना वयन ।
उपजतो जाये गणूंहो, तेमरचित्तमें चयन ॥ सु० ॥ १५ ॥
सदा राम तुम्ह काम, कियो सघलोही विमासी ।
कदहीन कीधो काम, जेहथी होवे हाँसी ॥
भाग्य दोषतो महायरे, ए अति उपज्यो रोष ।
सोनेन लागे श्यामताहो, स्वामी सदा निर्दोष ॥ सु० ॥ १६ ॥
लोकोनी सुणी वात, नाथजी तमें हमें छोडी ।
बालपणा की प्रीत, तूणजेम ताणी त्रोडी ॥
मिथ्या दृष्टिनी सुणी, वातघणी विपरीत ।
छोडोमति जिनधर्म नेहो, राखोओ कुलरीत ॥ सु० ॥ १७ ॥
एम सुणी मूर्च्छा पड्या, रघुनाथ तेवार ।
लक्ष्मण करी उपचार घणा, मूर्च्छाही निवार ॥
उठाई ऊभाकिया, वेदनतो असमान ।
किहांगई सीता सतीहो, प्यारी प्राण समान ॥ सु० ॥ १८ ॥
क्षेपक-राधेश्याम-रामायणमेंसे—

लखण! अततुम सखातुम, प्रियतुम; तुमहृदयेश ।
आजहृदय की कहेगा तुमसे यह अवधेश ॥
थेमिलेहुए दोफूल. एक डालीके ऊपर खिलेहुए ।
ज़ालिम हाथोंसे दोनोंहीटूटे, और दममें जुदेहुए ॥
एकही वायुके झोंकेने, करडाले तितर-बितर दोनों ।
रस्ता निहारतेहैं अपना, होकरके इधर-उधर दोनों ॥

ढाल मूलगी—

लोकवचन विषव्याप, हुवोथो नृपने भारी ।
सीता वचन गारुडमंत्रे, लीधो उतारी ॥
घर आयानृप आपणे, नामकरे सम्भाल ।
महियलमें म्होटी सतीहो, नादिही दिएजन आल ॥ सु० ॥ १९ ॥
लोक चोक जगमांही, एतो न्याय कहाणा ।
परघर भंजन लोक, ए आज जणाणा ॥
रूडोदेखी नाशके, भूंडेराते[1] भोर[2] ।
भोरोंनो वाह्यो[3] बहुहो, कीधो काम कठोर ॥ सु० ॥ २० ॥
बहेरी[4] विकथा वात, पुरुष पुर देखण आंधी ।
मूंगी कहेण कुबोल, कहे पणन लिये सांधी ॥
परघर फरवा पांगुली, लूली परधन लेण ।
एह गुणोंनो धारणीहो, कहेणी कडी कहो केण ॥ सु० ॥ २१ ॥
मतो देण मंत्रीशर्म, काम समारण दासी ।
प्रीतवती प्रिय साथ, महासुख भोग विलासी ॥
पुण्यवती प्रगटी खरी, क्षमावती संसार ।
होईनहीं होसो नहींहो, सीता सरिसी नार ॥ सु० ॥ २२ ॥

---

१ खुशहोना = २ मूर्ख = ३ ठगायाहुवा = ४ — २० — पा० २१मीं गाथा ओंका अर्थ बधिर केशिर वात श्रवण करनेका, आंधीकेशिर पुरुष देखनेका, गूंगीके शिर कुवचन कहनेका, पांगली शिरपर-घर फिरनेका, और लुलीके शिरपर-धन हरण करनेका कथनआवे, वैसा सीता के शिर यह कथन (झूंठाआल) आया हुवाहै ।

चन्द्र कमल शुक भृंग, नागणी अठाम शशिहर।
विमद्रु पंकज-नाली, कलस जख केसरी वर॥
कुरमंत्र चकने फले, कोयल अने मराल।
ए शब्दो केरी उपमाहो, सीताने सुविशाल॥ सु० ॥ २३॥
देवी कहीते दूरी, इद्रनी नारी अलगी।
अमरी नहीं आसनी, आपणे कामे चलगी॥
देवीशची अमरी थकी, सीता रूप रसाल।
दैवे दीधीथी खरीहो, मैंन रखाणी बाल॥ सु० ॥ २४॥

मुनिश्री रूपचन्द्र कृत क्षेपक—तर्ज नवीनरसीया—

अनुचित करडाला यह कार्य, सीयाको भेजादिवी वनमें॥ टेर॥
जद सीयको लंकसे साथ करीथी, तदवहां सुरगण साख भरीथी।
होगया वहां विश्वास पूर्णनया, दोपनहीं इसमें॥ अनु॥ १॥
सौतोंने मिल कार्य कियायह, जिससे जशकुम्भ फूट गया वह।
कैसे रकखू गृहबीच वातया, फैली पुरजनमें॥ अनु॥ २॥
लक्ष्मण लहु आकर समझाया, कथन उन्होंका दायन आया।
कर नादानी प्रति पुरानी, तोड़ दिवी छिनमें॥ अनु॥ ३॥
कठिन-कष्टअब कैसे सहेगी, कित तिरसी कितभूखी रहेगी।
खुद मरजासो वनचर खासी, सोचत रघु मनमें॥ अनु॥ ४॥

ढाल मूलगी—

लक्ष्मण भाखे ताम, रामजी अवधारो।
माणसनो एसहज, वात विगड्योही विचारो॥
सरेन हजही बाहरो, ते रूसचिये काय।
जेहन मानी वीनतीहो, कांईहुवे पसताय॥ सु० ॥ २५॥
गई तिका घो जाय, स्वामी अबहीसम्भालो।
पछी वरस्यांमेह, कहिये सुधरे वरसालो॥
स्वप्रभावे स्वामीनी, जीवन्ती अबतांई।
हीसे सही एम जाणजोहो, पाछेकी आशे॥ सु० ॥ २६॥
जावो स्वमी तुम्ह आप, करीने घणा दिलासा।

सीता आणोगेह हमारी, सुणो अरदासा ॥
अवर गयां आवेनहीं, अवरोंनो नहीं काज ।
त्रिया-हितेतो दौड़ियेहो, नहीं ए वातां लाज ॥ सु० ॥ २७ ॥
वयसीने विमाने स्वामी, चमुपति[१] साथे लीधो ।
खेचरने परिवारं चाल्यो, आलस नवि कीधो ॥
'सिंह निनाद-अरण्यमें, आपगया ततकाल ।
अतुरता मिलवात णीहो, जोजो जगनी हाल ॥ सु० ॥ २८ ॥
ऊभां आवीने तिहां, जिहां मूकीथी सीता ॥
नयणे नाची नागी, ठामते दीठा रीता[२] ॥
थल जल तरु गिरि सोधीया, शुद्धन लागी कोई ।
कर पटकीने बोलियाहो, पांचांसुं प्रभु सोई ॥ सु० ॥ २९ ॥
कपरे विलुरी वाघ, वेगकरी सिंह खाधी ।
कयेरे गिली अजगरं, मूई भारण्डे लाधी ॥
लेईगयो परद्वीपमें, आपां अलगी वात ।
आंसु ढाली बाहुल्याहो, राघवजी विललात ॥ सु० ॥ ३० ॥
फिरीआया पुरमांही, स्वामी अतिकरुता शोगो ।
माहारुं घर घाल्यूं[१] हों, अहो पुरवासो लोगो ? ॥
किस्यूं करूं तुम साथजी, गीमघणी आवन्त ।
अवदोई कांईन गिमूंहो, गईतो नवि पाकन्त ॥ सु० ॥ ३१ ॥
प्रेत कामश्रीराम ताम, सीतानां करावे ।
शून्य रूपसहु देखी, हैयो अति आय भरावे ॥
हैयेतो दृष्टेहींतो, आगे ऊभी आय ।
वचने पण श्री रामनेहो, मीता रहीरे सुहाय ॥ सु० ॥ ३२ ॥
ए चौपनमीं ढाल, रामजी रहे उदासी ।
शोकयोंनूं नसपूं काम, फोकहे मांडी फांसी ॥
'केशराज सीतातणू, जश अरु सौभाग्य ।

१ सेनापति (कप्तान) २रिक्त-खाली

सीताही भलुं पावसेहो, नहीं अवरोंसुं लाग ॥ सु० ॥ ३३ ॥

दोहा आसावरी रागे—

हाथी तो जगमें घणा, पण ऐरावति एक।
उच्चेश्रव पण एकछे, अश्व अछेरे अनेक ॥ १ ॥
गंगोदक पण एकछे, पाणीनो नहीं पार।
'क्षीरोदधि' पण एकछे, 'अम्बुधि[1]' अवर अपार ॥२॥
'परमेष्ठी'[2] पण एकछे, मंत्र घणा गुणवन्त।
सुदर्शन[3] पण एकछे, अवर गिरि नहीं अन्त ॥ ३ ॥
दाता सुरतरु[4] एकछे, अवर घणा दे दान।
'दशारणभद्र' पण एकछे, करे घणा अभिमान ॥४॥
'शालिभद्र' पण एकछे, घणा भोगवे भोग।
'थूलिभद्र' पण एकछे, घणा ग्रहे जग योग ॥ ५ ॥
तेम सीता पण एकछे, नारी नामछे लाख।
आंबलिए पहूंचे नहीं, आंबानी अभिलाष ॥ ६ ॥
मास दिवस पूरा हुआ, शुभवेला शुभवार।
सीताए सुत जन्मीया, युगल पणे सुखकार ॥ ७ ॥

ढाल पचपनमीं—

तर्ज बाबू गोदड़िया गुणगारी।

सीता स्वामीनी सुत जाया, तेतो युगल पणे सुखदाया।
तब आनन्द अधिकापाया, तब गोरड़िए गुणगाया ॥
तब गुहिर निसाण गुड़ाया ॥ सीता ॥ १ ॥
ओछव अधिक मंडाया, बंधीवान छुडाया।
सुत जायां जेम कीजिये, त्यूंही राय कराया ॥ सीता ॥ २ ॥
बारसमो दिन आया, नन्दन नाम धराया।
'अनंगलवण सुहामणो, मदनांकुश कहवाया ॥ सीता ॥ ३ ॥
पांच धावकरी पालीया, मामनियां मनभाया।
हाथो हाथ संचारवे अमर चवीने आया ॥ सीता ॥ ४ ॥

१ समुद्र=२ नमुक्कार मंत्र=३ मेरु=४ देवलों का वृक्ष=

चन्द्रकला जेम वाधही, बालपणे बालाय ।
शृंग शरभ तणीपरे, राजाजी रींझाया ॥ सीता ॥ ५ ॥
सासूजी पगे लागतां, दीधीथी आशीषो ।
हम सरखा सुतजन्मजो, कीधी सफल जगीसो ॥ सीता ॥ ६ ॥
कौशल्या इक जाईयो, सीता दोई विदिता ।
कौशल्या थीतोघणो, अधिकाणी ए सीता ॥ सीता ॥ ७ ॥
सिद्ध पुत्रछे अणुव्रती, सिद्धारथ[1] अभिधानो ।
विद्यावल ऋद्धिकरी, सवविधि जाण सुजाणो ॥ सीता ॥ ८ ॥
विदेह अदि क्षेत्रविषे, स्वेच्छा विहारे ।
गगनगति सोतांघरे, भिक्षाने पधारे ॥ सीता ॥ ९ ॥
चारु भोजन पानसूं, दीधो तसु अहारो ।
सुखपूछे सीताघणूं, उत्तर दिएते सारो ॥ सीता ॥ १० ॥
देव सुगुरु प्रसादथी, महारे वोतेही खेमो ।
दर्शन करूंजिन साधुनां, शुद्ध धरूं व्रत नेमो ॥ सीता ॥ ११ ॥
सो पूछे सीतासती, कोण अवस्था थारी ।
चरित्र सुणावो आपणो, धुरथीछेह लगेभारी ॥ सीता ॥ १२ ॥
छाती भरी आवीघणी, भाईजाणी तासो ।
सो वातां राजाकरें, अतितो परघर वासो ॥ सीता ॥ १३ ॥
कहे अष्टांग निमित्तियो, करुणानी मति आणो ।
सुत लवणांकुश सारिसा, श्री आरती तुझ राणो ॥ सीता ॥ १४ ॥
शुभ लक्ष्मण करी शोभता, जेम लक्ष्मण रामो ।
'लवणांकुश छे तेहवा, आ आरतिना ठामो ॥ सीता ॥ १५ ॥
देईअति आसासना, सीता सुसती कीध ।
आश वड़ी संसारमें, आशाए लंका लीध ॥ सीता ॥ १६ ॥
प्रार्थना कीधी घणी, पुत्र पढावो भाई ।
लीधी मानी सिद्धारथे, हरखी सीता माई ॥ सीता ॥ १७ ॥

१ इस नाम वाले मुनि,

भव्यजीव जाण्या खरा, पात्र शिरोमणि पात्रो ।
जीतीतो कोई नासके होई माणम मात्रो ॥ सीता ॥ १८ ॥
विद्या विविध प्रकारनी, बहुतरे विज्ञानो ।
सिद्ध किया सिद्धारथे, म्होटा पुरुष प्रधानो ॥ सीता ॥ १९ ॥
वज्रजंघनी पुत्रिका, शशिचूला तस नामो ।
उदर लक्ष्मी रेवती तणे, उपजीछे अभिरामो ॥ सीता ॥ २० ॥
कन्यावर बत्रीशसुं, वज्रजंघजी तामो ।
अनंगलवण परणावीयो, कीधां उत्तम कामो ॥ सीता ॥ २१ ॥
पृथिवीपुर पति परगड़ो, पृथु नामा भूपाला ।
पटराणी अमृतवती, कन्या कनकमाला ॥ सीता ॥ २२ ॥
मदनांकुश ने मांगतां, नाये ते राजानो ।
वंश अजाणे क्यूं हुवे, कन्या केरो दानो ॥ सीता० ॥ २३ ॥
एम सुणी चढी चालीयो, वज्रजंघ शर सांधी ।
व्याघ्ररथ पृथु सहायजी, जीती आण्यो बांधी ॥ सीता० ॥ २४ ॥
पृथु भूपति ए तेडियो, पोतन पुर पति धाई ।
वार न लागी आवीयो, कष्टे मित्र सहाई ॥ सीता० ॥ २५ ॥
वज्र जंघे सुत तेडिया, चाले अति मण्डाणे ।
लवणांकुश तो चालिया, वर्ज्यां पण नवि माने ॥ सीता० ॥ २६ ॥
दोई पखे भट सामटा, मांड्यो अति संग्रामो ।
पृथु-बल आगे भाजीया, वज्र जंघ भट जामो ॥ सीता० ॥ २७ ॥
मातुल-सेना भांजती, लवणांकुश देखन्ता ।
करी उठावणी आकरी, चाल्हा पृथु पेखन्ता ॥ सीता० ॥ २८ ॥

ढाल दीपक मूलगी—

उभय दल आपस में भिड़िया, नाना विध आयुध से लड़िया, केई नर भूमिपर पडिया । भाजती फौज देखी जाम, पृथु ने रीस आई ताम ॥ सत्यव्रतपालो ॥ ९७ ॥ पृथु कहे सुनिये अयि छोरे, आये क्यों सामने मोरे । चन्द दिन जीता जो चावो, नमन कर पाछा फिर जावो ॥ सत्य० ॥ ९८ ॥

मुनि श्री रूपचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज कांईरे जवाब करूं रसिया-

कांईरे मिजाज करे झूठो, झूठोजी झूठो साफ है झूठो, तो पर आज सीयासुत रूठो ॥ टेर ॥ मिजाज करे क्यूं इतरो मन में, ओ सब साज उडेगो छिन में ॥ कां० ॥ १ ॥ थोथा चणा जिम अधिको बाजे, मो आगे भाजतां तव कुल लाजे ॥ कां ॥ ॥ २ ॥ निज बलमें क्यों भूले भोले ! तुने पकड़ पछाडूं एक ही ठोले ॥ कां० ॥ ३ ॥ काहे करो ओख्यों काढ़ डरावे, क्या मझाल तूं हमको जीत के जावे ॥ कां० ॥ ४ ॥ आंटीले भूप आये भगती में, तो सम ढोर किसी गिनती में ॥ कां० ॥ ५ ॥ क्यों लड़ने को सन्मुख आवो, मर मम हाथों क्यों पाप लगावो ॥कां० ॥ ६ ॥ कीडी पर कटकी नहीं करते, तो निर्बल वृद्ध से कबहु न लरते ॥ कां ॥ ७ ॥ वृद्ध पणे झगड़ो नहीं कीजे, श्री शार्दूल शिष्य कहे समता ही लीजे ॥ कां० ॥ ८ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

छोरा ए बोलीरां वेड़ा, देख्या नहीं एबदार एड़ा, भागो मत आवो अब नेड़ा । मच्यो तब द्वन्द युद्ध भारी, बांध लियो पृथु ने तिणवारी ॥ सत्य० ॥ ९९ ॥

ढाल मूलगी—

लवणांकुश हसि बोलिया, ए अण जाण्यो वंशो ।
तसु आगे क्यूं भांजता, पामी वंश प्रशंसो ॥ सीता० ॥ २९ ॥
पृथु भाखे कुंवर सुणो, वंश जणाणो आजो ।
पराक्रम वंश न सही सके, अष्टापद घन गाजो ॥ सीता० ॥३०॥
'वज्रजंघ' सूं 'पृथु' कहे, अंकुशनें मैं दीधी ।
कनक मालिका बालिका, परणावो पर सिद्धि ॥ सीता० ॥ ३१ ॥
रंगहुओ दोई नृप में, कीधो कटक पड़ावो ।
एटले चाली आवियो, नारदजी ऋषि रावो ॥ सीता० ॥ ३२ ॥
रंग रली दोई दलां, देखी पूछे साधो ।
दीसो छो रस रंगमें, कहो किस्यो तुम्ह लाधो ! ॥सीता ॥ ३३ ॥

कन्या पृथु राजा तणी, 'अंकुश सूं परणेतो ।
कीजे छे ते जाणवो, हर्ष तणो संचेतो ॥ सीता० ॥ ३४ ॥
सबलानो ए जोहरो, तेरे गुदिनो पावो ।
वंश कहो कुंवरां तणां, जेम वधे चित्त चावो ॥ सीता० ॥३५॥
नारद भाखे नयणछे, तेतो देखे भानो ।
ए आंधाने पूछवो, किस्यो अछे रवि छानो ॥ सीता० ॥३६॥
आदि हुआ आदीश्वरू, आदि नाथ जगदीशो ।
भरत हुओ सुत तेहनो, ते पण धुरे चक्रीशो ॥ सीता० ॥ ३७ ॥
पुरुष पनोता होवता, इणही वंश विख्यातो ।
पुरी अयोध्या प्रगटिया, राम सु लक्ष्मण भ्रातो ॥ सीता० ॥३८॥
गर्भ विषे जब ए हुता, लोक-वचन ने त्रासो ।
पामी राम दिवाड़ियो, सीता ने वन वासो ॥ सीता० ॥ ३९ ॥
रामचन्द्र ना नन्द छे, सीता उदर उत्पन्न ।
वंश इक्ष्वांकु ना विषे, म्होटा पुरुष रतन्न ॥ सीता० ॥ ४० ॥
अंकुश कहे ऋषि रायजी, मलोन कीधो एहो ।
कारण अति अबला भणी, क्यूं देवाए छेहो ॥ सीता० ॥ ४१ ॥
लवण कहे ऋषिसा पुरी, कहो छे केतिक दूर ? ।
साठ अने शत योजन, दीसे एह हजूर ॥ सीता० ॥ ४२ ॥
वज्र जंघ कहे कुंवरां, अब चालो निज थानो ।
लक्ष्मण राम देखाड़स्यूं, शूरपणे मन मानो । सीता० ॥ ४३ ॥
मानी वात विशेषथी, वज्रजंघजी भाखी ।
कनक माला परणावियो, अंकुश रवि-शशि-साखी ॥ सीता० ॥४४॥
पंचावनमीं ढाल में, शूर तणो ते शूरो ।
केशराजजी तो हुअे, जो पूर्व पुण्य अंकुरो ॥ सीता० ॥ ४५ ॥

दोहा सोरठ रागे—

'वज्रजंघ पृथु रायजी, लवणांकुश नीलार ।
चाल्या दलबल सामटे, साधन[१] देश अपार ॥ १ ॥

---

[१] स्वाधीन करनेको

पहेलीतो लोकाक्षपुरी, लवणांकुश आनन्त ।
'कुवेरकन्त जी रायजी, जीती जश पावन्त ॥ २ ॥
रायकर्ण लंकाकपति, जीती लीधो जेह ।
भ्रातृशत विजयस्थली, आण मनाव्या एह ॥ ३ ॥
उतरिया गंगानदी, जिहांछे गिरि कैलाश ।
तिहांथी उत्तर नेदिशे, आयाधरी उल्हास ॥ ४ ॥
नन्दनचारु देशवहु, जीती लीधा स्वामी ।
सिंहल कुन्तल ए, जीत्याछे जश पामी ॥ ५ ॥
'भूतरवादि कालाम्बु, नन्दी नन्दन देश ।
'भीम शूल शलभातल, साधीलिया सुविशेष ॥ ६ ॥
साधीलिया सुखमेंसहु; सिंधुना[१] परकूल ।
अनारज[२] ने आरजा, कीधो सघलो सूल ॥ ७ ॥
देशवहु साधिवल्या, साथेघणा भूपाल ।
पुण्डरीक पुरी आवीया, लवणांकुश सुविशाल ॥ ८ ॥
'वज्रजंघ धन्य रायजी, जेहता ए भाणेज ।
एम सुणतां घर आवीया, माय मिलणनूं हेज ॥ ९ ॥
'लवणांकुश वहु रायसूं, प्रणमे माता पाय ।
मातादे आशीषड़ी, वधजो अधिको आय ॥ १० ॥
नन्दननें नीकीपरे, करजे तूं करतार ।
राम-लक्ष्मण सारिसा, भूमितणा भरतार ॥ ११ ॥
वज्रजंघने कहे कुंवरां, एहछे अवसर सार ।
पुरी अयोध्या जायके, कीजे तात जुहार ॥ १२ ॥
'लम्वाक कालाम्बू लंका, और सुकन्तल चूल ।
'सरभानल ओदघणा, साथे हुआ अनुकूल ॥ १३ ॥
प्रयाणनी भम्भामली, देवाड़े अभिराम ।
साहण वाहण सामटे, कुंवर चाल्या ताम ॥ १४ ॥

१ सिंधुनदीके पर नादेश २अनार्य—और आर्य

ढाल छपनमीं तर्ज कडवरांनी—

आवेरे दोई लवणांकुश सजी, साजी तात प्रत्ये।
आपो देखावण करी विधिसाजा, चाल्या करी अधिक दिवाजा ॥ १ ॥
रोवन्ती माताजी बोले, किस्यूं करो तुम एहो।
युद्धतणी विधि सजी चाल्या, मुझमन एह अन्देहो ॥ आ० ॥ २ ॥
पितृ[१] पितृव्य[२] तुम्ह दुर्जय[३], पहूंची सकेनहीं देव।
तीन लोकनो कण्टक रावण, मारी लियो ततखेव ॥ आ० ॥ ३ ॥
ठूंठतिके नवि वायेहाले, मेरु नविवाये कम्पे।
म्होटासूं लड़वूं नविशोवा, पुत्रांसू मा-जम्पे ॥ आ० ॥ ४ ॥
जलधर केरी गाजसुणीने, अष्टापद अति कोपे।
कूदी कूदी निज गोड़ा तोड़े, पण घनने नवि लोपे ॥ आ० ॥ ५ ॥
विनय करेवा जोतुम्ह जावो, तो तुम्ह वेगाहोवो।
पूज्य पूज्यां पीड़ प्राजे, एह विमासी जोवो ॥ आ० ॥ ६ ॥
पतिविनमें तुम्हसूं मन बांध्यू, तुम्हविन सी गतिम्हारी।
रांकतणा छोरुआछी थैतो, मतहीं चलोमैं वारी ॥ आ० ॥ ७ ॥
पुत्रकहे माजी तुम्ह साचा, जेम कियारा काजो।
तेहि साथे न मिले मन मोती, तूट्यां मेघ आकाशो ॥ आ० ॥८॥
माताजी कहे पुत्रनिसुणो, ए रहिवाद्यो कामो।
कातणहारी तारतणीपरे, जोड़ेही अभिरामो ॥ आ० ॥ ९ ॥
पुत्र तुम्हारा हमछों एहवी, किम कहिवाये वातो।
छोहरा ए छोंडेली केरा, इमही कहसे तातो ॥ आ० ॥ १० ॥
आनन्द कारी तातहीने, युद्ध तणूंतो नामो।
कुल दोईनो उज्वल, सुन्दरछे संग्रामो ॥ आ० ॥ ११ ॥
एमकहीने चाल्या कुंवर, रोती मेली मायी।
उत्साहवन्त महन्त कटकसं, रेणुरही नभ छायी ॥ आ० ॥ १२ ॥
कुठार कुडालतणा सहवाहण, हारा दशही हजारो।

१ पिता (राम)–२ काका (लक्ष्मण)–३ कोई भी जीत सके नहीं।

पन्थतणा तरु छेदी सूधो, कीधो पन्थ अपारो ॥ आ० ॥ १३ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

अनुक्रम अवधपुरी आया, डेरा पुरबाहिर लगवाया, सैन्यसे पुरसब घेराया । दूतने खबर आयदीनो, राम लछिमन सुनलीनी । सत्य व्रत पालो १०० । सेनापति सेना ललकारी युद्धकी खबकरी त्यारी, भुजास्फोठ सुभटकरे भारी । सैन्यद्वय आपसमें मिलिया, समर रा सौखी महाबलिया ॥ सत्य ॥ १०१ ॥

ढाल मूलगी—

सेनानीसूं अवी अड़िया, अतिबलवन्ता दोई ।
नहीं सेनानी कच्चूरे सारे, एहसुणे प्रभु सोई ॥ आ० ॥ १४ ॥
सौमित्री कहे एरे पतंगा, आतुर अति देखाता ।
आरति पराक्रम पावक मांही, करवा झंपापाता ॥ आ० ॥ १५ ॥
एमकहीने राम-सुलक्ष्मण, सुग्रीवादिक लारो ।
युद्धभणी चाली सहामीआया, कोईन लाई वारो ॥ आ० ॥ १६ ॥
एटले नारद नेमुख सांभली, भामण्डलजी भाई ।
रोवन्तीकहे भाई! मुझसूं प्रभुजीतो ए कीधी ।
खुणस करीने तुम्ह भाणेजा, लड़वानी मति लीधो ॥ आ० ॥ १८ ॥
भामण्डल कहे रामे करियो, जेमतूं त्यागी विगाड़ो ।
अणजाण्यांए दोई हणवा, करसे नहीं विचारो ॥ आ० ॥ १९ ॥
जबलगे विणसे एनहीं कारज, तबलग दौडीजावा ।
करूं निवेड़ो वात जणाची, रामहीं रोप मिटावा ॥ आ० ॥ २० ॥
एमसुणी सीता भामण्डल, बैसी विमाने आवे ।
लवणांकुश धसी माताजीने, चरणे शीश नमावे ॥ आ० ॥ २१ ॥
सीता कहे भामण्डल भाई, थोंरो मामो साचो ।
माताने भाणेजा मांहे, नेह जणाणो जांचो ॥ आ० ॥ २२ ॥
पगेलाग्या उठाई ऊंचा, लीधा कण्ठ लगाई ।
शिर चुम्बी खोले बेसाड़ी, मामोकहे सुखदाई ॥ आ० ॥ २३ ॥

वीरतणी पत्नी नी कीर्ति, पहिलीथी जगमांई।
वीर प्रसूनी कीर्ति बीजी, ए पामीते प्राही ॥ आ० ॥ २४ ॥
वीरतणासुत वीर अछोतुम्ह, कामकरोरे विमासी।
पितृ वंशों साथे लड़तां, होसे जगमां हासी ॥ आ० ॥ २५ ॥
जेहने रणमां राजा रावण, आपणपे रे मराणो।
प्रगटपणे एतोरे पवाड़ो, सघलेही रे गवाणो ॥ आ० ॥ २६ ॥
लवणांकुश कहे मामाजी तुम, बात कहो ए फीकी।
आवी भिन्यां उसरियां अलगां, बात न लागे नीकी ॥ आ०॥२७॥
एम कहन्तां दोई पक्षना, शूरा अति सम्बाह्या।
स्वामी तणो ए काम समारण, अधिकपणे उमाह्या ॥ आ० ॥२८॥
सुग्रीवादिक खराही खेचर, भूचर भटने डरावे।
भामण्डल खेचर साथे, मण्डे सरिखे दावे ॥ आ० ॥ २९ ॥
लवणांकुश अंकुश सरिसा तीखा, शूर शिरोमणि शूरा।
राम तणा भट उपर आवे, जेम आवे जल पूरा ॥ आ० ॥ ३० ॥

चेपक राधेश्याम रामायण में से--

इसी समय सेना-सहित, आ पहूंचे कपिराज।
बोले-हे लघु बालकों! संभलो रणमें आज ॥
अच्छातो यह है—धनुष बाण, धरती पर धरो रसाई में।
सुग्रीव देखकर डरता है, आजाय न मोच कलाई में ॥
लंका विजयी दलके आगे, मत यह प्रत्यञ्चायें फेरो।
अपनें सदन में जाकर के हसो रमो कर शिशुगण-मेरो ॥
कुश बोले क्या तुम्हहीं हो, वानर-पति सुग्रीव।
भाग्य हमारे खुल गये, देखे बलके सीव ॥
भय खाय साहसगति से तुम्हने फिर राम-लषण को बुलाया था।
वह हृदय मुबारक है जिससे, उस योद्धा को मरवाया था ॥
वाक्य नहीं यह छुट रहे थे, जहरी ले तीर।
बींध दिया सुग्रीव का, क्षणमें सकल शरीर ॥

बोले-बस बस मुंह बंध करो, क्यों विष टपकाये जाते हो।
मट्टी के ढेले होकर तुम, गिरि-शिखरों से टकराते हो ॥
ऐसा कह कर कुश के उपर, दौडे सुग्रीव मिटाने को।
धाता है राहु दिवाकर पै, जिस तरह ग्रास कर जाने को ॥
लेकिन रास्तेही में कुश ने, सम्पूर्ण वीरता हरडाली।
बाणों से नयनों के आगे, बस चका चौंधसी कर डाली ॥
लड़ते लड़ते सुग्रीव थके, पर बालक का तन छुआ नहीं।
कुश वैसेही मुसकाते थे, मानों अब तक कुछ हुआ नहीं ॥
बोल उठे कुश-कर चुके, पूरा तुम अरमान।
अब बच्चों का बाणभी, स्वीकारें श्रीमान् ॥
जैसेही कुशके धन्वासे छोटासा शर कुश का पहूंचा।
सुग्रीव मूर्च्छावन्त हुवे, माथा घूमा कांपा पहूंचा ॥
अङ्गद दोडा ज्यूं ही उसने, कपिपति को गिरजाते देखा।
आगया उबाल नेत्रों में, जब लव को मुसकाते देखा ॥
बादल की नाई आकर के-गर्जे-बच्चे ! क्यों हंसता है ! ।
ऐसा होता ही आया है, दो लड़ते हैं एक गिरता है।
राजा के गिरजाने का बदला, अङ्गद युवराज चुकायेगा।
हो सावधान हंसने वाले, यह नाहर तुझे रुलायेगा ॥
लव बोले क्यों व्यर्थ ही, बकता ओ बाचाल।
नाहर तूं कबसे हुआ, ! विदित हमें सब हाल ॥
जबसे स्वामी घातीके पगमें, यह अपना शीष झुकाया है।
तब से ही इस दुनियों में, नाहर पन तूने पाया है।
अच्छा नाहरजी घर जाओ, क्यों प्राण गँवाने आये हो।
यह रावण का दरबार नहीं, जो पैर जमाने आये हो ॥
कैसे सह सकता भला, अंगद 'लव' के वैन।
बाल-भास्कर की तरह, अरुण होगये नैन ॥
गम्भीर गर्ज के साथ साथ बस गदा चलादी बच्चों पर।

लेकिन सबने देखा वह थी, 'कुश' के बाणों की नोकों पर ॥
इतनेमें लवने शरछोड़ा, शिर घूमा जिससे अंगद का ।
पृथ्वी पर गिरतो गया किन्तु, तन लाल था रीस अंगद का ॥

ढाल मूलगी—

सुग्रीवादिक 'भामण्डल' सूं, पूछे ए कुण होई ? ।
'भामण्डल' कहे सीता जाया, राम तणा सुत दोई ॥आ० ॥ ३१ ॥
आवी सीता चरणे लाग्या, खेचर बैठा आगे ।
'लवणांकुश' उठावणी आगे, राम तणा भट भागे ॥ आ० ॥३२॥
जिहां तिहां रण रंगही खेले, हरि जेम मृग-वन मांही ।
रथ सारथी नेरे निखेदी, एक न कोई साही ॥ आ० ॥ ३३ ॥
राम सु लक्ष्मण सामा आया, देखी सुन्दर ताई ।
कोई शूर ऊपन्या आई, जोई रह्या लोभाई ॥ आ० ॥ ३४ ॥
नयणे नेह जणावे निजसूं, परसूं पोखे द्वेषो ।
नयणोंना निन्याती भाख्या, लिखे लई सयल विशेषो ॥आ०॥३५॥
मनतो मिलवाने उमाहे, बलती तामस जागे ।
एही अवसर छे कांई ज्ञानी, न रहे शंशय तस आगे ॥आ०॥३६॥
लवण कहे रघुपति सूं रूडी, अंकुश लक्ष्मण साथे ।
चोर सहस अक्षौहणीनो पति, तुम हण्यो निज हाथे ॥आ० ॥३७॥
सोरे हम तुम साथे अड़िया, सुजश दियो जग नाथे ।
अस्त्र शस्त्र सूं अति लड़िसूं, नहीं तब पड़िसूं बाथे ॥ आ० ॥३८॥
रावण सूं लड़तां न थाक्या, सो अब लड़ो हम सेती ।
हमतो आदि थकी अब लड़सों, क्षत्रीनी ए खेती ॥ आ० ॥३९॥
एमसुणीने राम-सु लक्ष्मण, लवणां कुश दो वीर ।
धनुष्य चढावी सन्मुख आवे, मेरु तणी पर धीर ॥ आ० ॥४०॥

क्षेपक राधेश्याम रामायण में से—

देखी जब निज साथियों की, सब दिशी से हार ।
लक्ष्मण तत्क्षण होगये, लड़ने को तैय्यार ॥

सोचा-जगविजयी सेना का, इस तरह भागना लज्जा है ।
बच्चों से रघुकुल का दबना, सचमुच कलङ्क का टीका है ॥
परबच्चे यह बच्चेक्याहै, बेजोड़ दिलेर जहांकेहैं ।
शायद ब्रह्माने प्रथमबार, सिरजे यहबच्चे वहांकेहैं ॥
अस्तु शीघ्रतासे वहां, पहुंचे यह बलवान ।
जहां बालके खड़ेथे, तानेहुए कमान ॥
देखा-कितनेही योद्धागण, पृथिवीपर शयनकर रहेहैं ।
बातिनमें सबमें साँसेहैं, जाहिरमें सभी मर रहेहैं ॥
हतको देखातो आहतथा, आहत हतसा दिखाताथा ।
कितने हतथे कितने आहत, यहजोड़ नजोड़ा जाताथा ॥
वहशान्त विपिनकी तपो भूमि, उसओर लालहो दमकीहै ।
उसलाली-मेंकुन्दन जैसी, शस्त्रोंकी ढेरी चमकीहै ॥
मनों विपिन स्थलिने ओढा, यह सुर्ख दुपट्टा तारो का ।
या लाल प्रभाने पहना है, यह गहना मुक्ताहारों का ॥
दूसरी और यह भी देखा–दो बच्चे धनुष-चढाये हैं ।
उस अवधपुरी के शासन-पर, अपना अधिकार जमाये हैं
बोले-सुकुमारों ! धन्य तुम्हें, सचमुचं अद्भुत बल पाया है ।
किष्किन्धा के गर्वीलोंको, रणमें नीचा दिखलाया है ॥
लेकिन रघुवर को-रघुकुल को, ब्रह्मा भी हरा नहीं सकता ।
सागर कितनाही बढे मगर, सूरज को डुबा नहीं सकता ॥
इसलिए फौज को लौटादे, तुमसे रन करना ठीक नहीं ।
बच्चोंकोमार बाल-हत्या का, अघ निजशिर पर लेना ठीक नहीं ॥
कुश बोले यह ठीक है, कहते जो श्रीमान् ।
किन्तु हमारी भी विनय, सुनिये धर कर ध्यान ॥
ईश्वर-भक्तों का प्रथम कर्म, ईश्वर की भक्ति करना है ।
फिर ईश्वर भक्तों ही की, इस जग में वृद्धि करना है ।
ईश्वर–भक्तों की वृद्धी को, धर्मी राजा आवश्यक है ।

सङ्गीत जमाने की खातिर, सुन्दर बाजा आवश्यक है ॥
हम खूब जानते हैं-रघुपति, रैय्यत का पालन हारा है ।
लेकिन वह त्रिभुवन विजयी नर, नारी के द्वारा हारा है ॥
सीता साध्वी के कष्टों ने, करदिया नष्ट उसके बल को ।
अब नहीं बढ़ाई जग देता, लङ्का किष्किन्धा कौशल को ॥
इस लिए जगत का धर्म हुआ, उससे सिंहासन ले लेना ।
जो व्यक्ति योग्य हो शाशन के, उसको ही शाशनदे देना ॥
अतएव देश के नाते से, हम को यह धर्म चुकाना है ।
उस मद से भरे महिपतिका, मद सब विध्वंस कराना है ॥
अच्छा ये बातें जाने दो, अब योद्धा पन की बात करो ।
यातो वापिस घर को जाओ, या आओ रन की बात करो ॥
लक्ष्मण बोले क्षत्री के प्रति, ऐसा कटु वाक्य न अच्छा है ।
क्षत्रीतो फिरने के बदले, रनमें कट जाना सीखा है ॥
जिसने रावन को संहारा है, उसको तुम भीरू समझते हो ।
ठहरो इन बाणों से विंधकर, क्षण यम लोक पहूंचते हो ॥

अब क्या था दोनों तरफ, खिंचे धनुप और बान ।
क्षण भर में होने लगा, युद्ध घोर घमसान ॥

ढाल मूलगी—

एम सुणीने राम-सु लक्ष्मण, लवणांकुश दो वीर ।
धनुष्य चढावी सन्मुख आवे, मेरु तणी पर धीर ॥ आ० ॥४०॥
रामतणा रथनो सारथियो, सेनापतिजे सुहावे ।
वज्रजंघजी लवण तणोरथ, खेड़ने जश पावे ॥ आ० ॥ ४१ ॥
'वीरविराध लक्ष्मण रथआगे, पृथु अंकुश रथखेड़े ।
रथ सारथिया चारही सरवरा, एक एकने छेड़े ॥ आ० ॥ ४२ ॥
पितृ पितृव्य जाणीजाची, कुंवरजीतो शंका ।
प्रभुजीपुत्रो-भेदन जाणे, चोट करत निशंका ॥ आ० ॥ ४३ ॥
विविधायुधे विविधपरेरे, लड़वे हंस मनावी ।
रामकहे खेड़ु रथखेड़ी, लिये अरिने रेदवावी ॥ आ० ॥ ४४ ॥

कहे सारथी हयनहीं हाले, पीड़ाणा शरघावे ।
कयां घावथूं ताडतांही, पाछाही प्रगठावे ॥ आ० ॥ ४५ ॥
रथ प्रभुजीनो सिथिलहुओअति. वयरिये अति ताड्यो ।
करी सिथिलता खेंचत रश्मी, अरि तोही न नमाड्यो ॥ आ०॥४६
राम कहे न पड्या कर ढीला, कोई काम इण सारे ।
सो कर ढीला आज पड्याछे, सांसो कोण निवारे? ॥ आ ॥ ४७ ॥
वज्रा वर्ता धनुप धणीनूं, सघलूं काम समारे ।
सोही मुंडो फेरी रहीयो, वातपड़ी अविचारे ॥ आ० ॥ ४८ ॥
मूसल-रत्न दलन वल अरिनूं, सो पण ढीलो पड़ियो ।
अरिगंजन अंकुश स हल ए, एही अहिथूं न वि अड़ियो ॥ आ० ४९
जक्ष हजारे से वितछे रे, हल मूसल ए स कामा ।
कोई अवस्था केरे केडे, हुआ आज निकामा ॥ आ० ॥ ५० ॥
राघवनां जेम जेम लक्ष्मण नां, सघलाही उप कर्मो ।
जेकीधा तेसामां नायां, जग जागन्तो धर्मो ॥ आ० ॥ ५१ ॥

क्षेपक राधे श्याम रामायण में से

लक्ष्मण जिस समय अग्नि-शर से, सर्वत्र अग्नि फैलाते थे ।
कुशल तभी बाण से जल वरसा, तत्क्षण उसे बुझाते थे ॥
फिर लक्ष्मण अपना बाण छोड़ा, जब जल को घीसा करते थे ।
कुश तभी बाण से रेते के, घी को मट्टी सा करते थे ॥

धीरे धीरे बढ़ चला, वैज्ञानिक संग्राम ।
घटा जभी छाई इधर, उधर खिलगई घाम ॥

बाणों ही बाणों के द्वारा, नाना प्रकार के ज्वर आये ।
बाणों ही बाणों के द्वारा, सब नष्ट हुवे सब चिल गाये ॥
माया की सेनायें बनकर, लड़ती थी मरती जाती थीं ।
धोखे की शक्लें धाती थीं, बनती थीं मिटती जाती थीं ॥

जब वैज्ञानिक युद्ध का, होने आया अन्त ।
तन्त्र शक्तियों की बनी, वह रण भूमि तुरन्त ॥

उच्चाटन-मारण-वशीकरण-, सम्मोहन आदि तन्त्र आये ।
इन तन्त्रों ने इन मन्त्रों ने, कितने-ही कौतुक दिखलाये ॥
लड़ते थे कभी प्रगट होकर, ओर कभी गुप्त हो जाते थे ।
नाना प्रकार की लीला से, वोरता वीर दिखलाते थे ॥

ढाल मूलगी—

एटले अंकुश वाणे हणीयो, हैये लक्ष्मण काको ।
मूर्च्छाए पड़ियो रथमांहीं, अंकुश कीधो शाको ॥ आ० ॥ ५२ ॥
मूर्च्छाए पड्यो प्रभु पेखी, रथतो घरने चलायो ।
वीर विराध विचारी वारु, स्वामी संज्ञापायो ॥ आ० ॥ ५३ ॥
वीर विराध सूं प्रभु बोलियो, अनुचित कार्य तें कीधो ।
राम लड़े रस रंगे रणमें, मुझ रथ घरने लीधो ॥ आ० ॥ ५४ ॥
लेई रथ रणमें अरिने हणीसं, चक्रे छेदी शीशो ।
लक्ष्मणजी फरि रणमें आयो, उपजी छे अति रीसो ॥आ० ॥५५॥
रे ! अंकुश कुंवरां तृण जेम तोड़ूं, कोई न लावूं वारो ।
चक्र चलावे अरिने दावे, अंकुश सुतनी लारो ॥ आ० ॥ ५६ ॥
देई प्रदक्षिणा पाछो वलियो, लक्ष्मण ने करे वेठो ।
जेम तरु पंखी उडी अपूठो, आवी माले पेठो ॥ आ० ॥ ५७ ॥
फिरी मुकीयो सो फिरी आयो, पण्डित ताम विचारे ।
गोतीने पहुंचे ए गुण गिरुओ, सो यूंही क्यूं मारे ॥आ० ॥ ५८ ॥
राम-सु लक्ष्मण आरती आणे, वासु देव बल देवा ।
ए दोई भाई ऊपजीया, पदवी ए हम लेवा ॥ आ० ॥ ५९ ॥
एह छपन्नमीं ढाले कुंवरां, किरती अधिक देखाया ।
केशराज जग जेता जेथी, ते आगे जश पाया ॥ आ० ॥ ६० ॥

दोहा काफीरागे—

'सिद्धारथ साथेकरी, नारद ऋषि आवन्त ।
त्रिधिसूं करतां वन्दना, गाढो सुख पावन्त ॥ १ ॥
दुचिन्ता देखी रामने, नारदजी पूछन्त ।

कोण कारण आरतितणूं, राघव कहे तुरन्त ॥ २ ॥
फोड़ादाधां ऊपरे, कांपीड़ो ऋषिदेव ।
भूमि पराई थापछे, आवे ए अहमेव ॥ ३ ॥
एआया बलियामहा, नहीं हमारो ताल ।
कारण ए आरतितणुं, ऋपिभाखे सुविशाल ॥ ४ ॥
हर्ष-थान विषवादयह, कांईकरो रघुनाथ ।
एह सुबोल सुहामणा. निसुणो सघलो साथ ॥ ५ ॥
ए जाया सीतातणा. युगलपणे अभिराम ।
लवणांकुश अभिधानथी, पुत्र तुम्हारा राम ॥ ६ ॥
त्याग तणोदिन थुरथकी. युद्धतणो दिनअन्त ।
सम्भलायो श्री रामने, सीतानो विरतन्त ॥ ७ ॥
प्रभुजीने मिलवाभणी, आया आणीस्नेह ।
आप जणावण कारणे, करी देखावी एह ॥ ८ ॥
एहनीए अहिनाणिका, मनग्रं करो विचार ।
चक्र अपूठोतो फर्यो, जो सगपण व्यवहार ॥ ९ ॥
आदिनाथना पुत्रनी, निसुणी होसे वात ।
'वाहुवल भाईतणी,चक्रेन कीधोघात ॥ १० ॥
तुमढालीने तुमतणी, अवरां शिर केमहोय ।
हाथीजाया हाथीया, साथे लडन्तो जोय ॥ ११ ॥
विस्मय पीड़ा खेदनो, हर्षहैये नसमाय ।
मूर्च्छाखाई धरणी पड्या, लीधा ताम उठाय ॥ १२ ॥
आंखेआंसू नांखता, लक्ष्मण लीयालार ।
पुत्रोंने मिलवा चल्या. कोईन लायावार ॥ १३ ॥
स्वरथ१थी तब उतर्या, आवन्ता प्रभुदेख ।
'लवणांकुश सकुमारजी, विनयकरे सुविशेष ॥ १४ ॥
हाथांथी हथियारजे, अलगा नांख्या ताम ।

१ स्पन्दनथी-इति पाठान्तरे (अपने रथसे)

राम-अने लक्ष्मण तणे, चरणकरे प्रणाम ॥ १५ ॥

ढाल सत्तावनमी—तर्ज वूढ़ा आडा डोकरा रे मोहना—

चन्दन शशीजल छांयड़ीरे नन्दना, शीतलहोई अपाररे नन्दन ॥ ते नवि पूजीहीरे नन्दना नन्दन वडो संसार रे ॥ नन्दन परम पियारे ॥ टेर ॥ १ ॥ नन्दना रे नन्दन थी आनन्दरे, नन्दन है सुख कन्दरे ॥ नन्दन पूनमचन्द रे, उल्लासे वंश समुन्दरे ॥ नन्दन परम ॥२॥ सुत पाछे सुख सयलजीरे, नन्दना, पहेलू सुखतो पूतरे ॥ स्थितिनो थोभण पूतजीरे, नन्दना, पुत्र थकी घरसूतरे ॥ नन्दन ॥ ३ ॥ उठाई उंचा करीरे ॥नन्दना ॥ लीधा कण्ठलगायरे हलधरनेहरिजीतणेरे ॥नन्दना॥ हैज हैये नसमायरे ॥ नन्दन ॥ ४॥

क्षेपक राधेश्याम—

ज्यूं ही नारद से सुना, वैदेही-वृत्तान्त ।
वीर-भूमि पैत्रस तभी, चरम उठा रस शान्त ॥
क्षमा मांगने को बढे, लव-कुश दोनों भाय ।
आगे बढ रघुनाथ ने, छाती लिया लगाय ॥
पुत्रों का और पिता का, यह प्रिय-मिलन निहार ॥
सुर-पुरसे बरसे सुमन, जगने की जयकार ।
लखन लाल ने जब लखे, युगल स्वरूप अनूप ।
कहा-अमंगल रण हुआ, आज सुमंगल रूप ॥
आशीर्वाद के लिए आज, प्रत्येक हृदय उमड़ाता है ।
अभिवादन करने को तन का, हर रोम रोम हर्षाता है ॥
यह हार नहीं है जीत हुई, अपयश के भीतर यश पाके ।
कोशलने खुद पर जय पाई, परिपूर्ण परीजय में आके ॥
इब इसका निर्णय कौन करें, किसने यह युद्धस्थल जीता ।
कोशल ने यह दोनों जीते, इन दोनों ने कोशल जीता ॥

ढाल मूलगी—

खोले लीधा खांतसूं रे, नन्दना ॥ चूंबे शिर सोवार रे ॥ न्हवराने नयनो दकेरे नन्दना । पोपे प्रेम अपार रे ॥ नन्दना० ॥ ५ ॥

शत्रुघ्न पगे लागतारे ।।नन्दना।। आलिंगिन अधिकार रे ।। लवणां-कुश पाय नमेरे, ।।नन्दना।। ताम सहु परिवाररे ।। नन्दन० ।।६।। दोई पक्षना राजीयारे, ।।नन्दना।। मांहोमांहे उच्छाहरे ।। होवे रंग विनोदजीरे । नन्दना।। जाणे मांड्यो विवाह रे ।। नन्दन० ।। ७ ।। पराक्रम दीठो पुत्रोंनांरे, ।। नन्दना ।। पुत्र पितामें मेलरे । मिलियो वचन आगोचरूरे, ।।नन्दना।। दूधे साकर भेलरे ।। नन्दन० ।।८।। निरखी हरखी जानकीरे ।।नन्दना।। वात पडी सहु ठाम रे । वा हुड़ी गई निज थानकेरे, ।।नन्दना।। वैसी विमाने तामरे ।। नन्दन० ।। ९ ।। सरखा पुत्र शोभियारे, ।।नन्दना।। थी लक्ष्मणजी राम रे । इन्द्र तणे घर ऊपन्या रे, ।।नन्दना।। जयन्तक अभिराम रे ।। नन्द-न० ।। १० ।। सरखा सुत छे कोई नारे ।।नन्दना।। असरखारे अ-नेक रे । गाली देवाडण हारजीरे ।।नन्दना।। जश वाला को एकरे ।। नन्दन० ।। ११ ।। भामण्डलजी भाखीयूंरे ।।नन्दना।। ए नृपने सुपसायरे । ए तुम रसरंग देखीयोरे ।।नन्दना।। सु सन्मान्यो रायरे ।। नन्दन० ।। १२ ।। भामण्डल जेम वाल्होरे ।।नन्दना ।। म्हारो तो छे तेमरे । खीर नीर ज्यूं मिली रयोरे ।।नन्दना।। नृप द्वं प्रभुने प्रेम रे ।। नन्दन० ।। १३ ।। बेसी विमाने विराजता रे नन्दना ।। लक्ष्मण राम उच्छाहीरे । आगे वैठा पुत्रजीरे नन्दना । आवे नगरी मांहीरे ।। नन्दना० ।। १४ ।। ऊंची ग्रिवाये लोकजीरे ।।नन्दना।। मिलीया ख्याले आयरे ।। मुख मुख जय उच्चरेरे ।। नन्दना ।। धन्य धन्य राघव रायरे ।। नन्दन ।। १५।। उतरिया विमानथीरे ।।नन्द-ना ।। आवीने दरबाररे ।। ओच्छव मांड्यो अति घणोरे । नन्दना ।। घर घर मंगलाचाररे ।। नन्दन० ।। १६ ।। नोवत वाजे नाद सूंरे ।।नन्दना।। नाचे पात्र अपाररे ।। जड़ मंडिने वरसिया रे ।। नन्दना।। वरस्या कंचन धाररे ।। नन्दन० ।। १७ ।। लक्ष्मणजी सुग्रीवजी रे ।।नन्दना।। विभीषण हनुमान रे ।। अंगद आदि सहुं मिली रे ।।न-न्दना।। विनविया राजानरे ।। नन्दन० ।। १८ ।। राज-वियोगे पुत्र

सूंरे ॥ नन्दना ॥ दिनकाढ्याथा मातरे ॥ परदेशोंमें एकलीरे नन्दना ॥ रयणी छमासी जानरे ॥ नन्दन ॥ १९ ॥ पतिने पुत्र वियोगिणीरे ॥ नन्दना ॥ योगिणी जेहवी जोयरे ॥ मरीजासे साटल बलीरे ॥ नन्दना ॥ पातिक म्होटो होयरे ॥ नन्दन ॥ २० ॥ इहां लेईआवीयेरे ॥ नन्दना ॥ पामी प्रभु आदेशरे ॥ आगे इच्छा रावलीरे ॥ नन्दना ॥ पंचवाक्य सुविशेषरे ॥ नन्दन ॥ २१ ॥ भाखे राघव राजीयोरे ॥ नन्दना ॥ बोलावीजे केमरे ॥ नन्दन ॥ ॥ २२ ॥

क्षेपक राधेश्याम रामायणमेंसे—

रघुपतिबोले-सीयासे पृथकन होगा राम।
किन्तु करेगा वहनहीं, प्रजा-विरोधी काम॥
संसार सहस्रो रूपरचे, पर मुझको डिगानहीं सकता।
ब्रह्माभी चाहेतोमुझको, इसहठसे हटानहीं सकता॥
मेरी इसमें कुछरायनहीं, यहसब रैयत की मर्जीहै।
जिसने उनकोवन भेजावह, महलोंमें फिर रख सकतीहै॥
वाल्मीकिजीनेकहा, धन्य तुम्हें श्रीकन्त।
दिखादिया संसारको, प्रजा-प्रेमकाअन्त॥
मेरीतो सम्मतियही, करोन ऐसाकाम।
जिसके द्वारा विश्वमें, रघुकुलहो बदनाम॥
बहुमतसे होकरके विरुद्ध, राजाका चलना ठीकनहीं।
जबप्रजा खिलाफ होरहीहै, तो सियाका रखना ठीकनहीं॥
अच्छा अब प्रथम प्रजाकाही, अज्ञान मिटाया जायेगा।
जिस दर्पणमें धुंधलापनहै, उसको चमकाया जायेगा॥
इतनेमेंही सिंहवत्, गर्जे पवन कुमार।
बोले-मुनिमहाराजका, है अति श्रेष्ट विचार॥
मैं शपथ पूर्वक कहताहूं कह झूठादोष मिटाऊंगा।
फिर महलोंमें अपनी मांको, अपने बलसे पहूंचाऊंगा।

कानोंकी सुनी नहीं, आँखोंकी देखीहुई सुनाऊंगा ।
उस सोतीहुई अयोध्याको, सीताका ज्ञान कराऊंगा ॥
फिरभी विश्वास न होगा तो, रैयतसे रनठन जायेगा ।
यह सहन शक्तिवाला हनुमत्, बस रुद्र-रूप बनजायेगा ॥
पृथ्वी आकाश विलोकेंगे, उस समय कर्म इस सेवकका ।
ब्रह्मा और शंकर देखेंगे, उस समय धर्म इस सेवकका ॥
तामसी प्रकृतिका दुनियां से, अस्तित्व मिटाया जायेगा ।
सद्गुण की सामग्रीसे फिर, संसार बसाया जायेगा ॥
यह जीवन सुफल तभीहोगा, यहआँखें सुखी तभी होंगी ।
जब सीतापति की वामांगी, कोशलकी साम्राज्ञी होंगी ॥
वचनों से बजरंगके, दहल उठा संसार ।
हुआ तामसी प्रकृतीमें, भीषण हाहा कार ॥
सुन बजरंगी का यह प्रण, वीरोंके हृदय फड़क उट्ठे ॥
अनुमोदन को वच्चों के भी, तर्कश में तीर कड़क उट्ठे ।
सीयापति की इतने पर भी, वह दिव्य मूर्ति मुसकाती थी ।
घटनाकी घटा बरसतीथी, सूरज पर बूंद न आतीथी ॥

ढाल मूलगी—

भाखे राघव राजीयोरे ॥ नन्दना ॥ बोलावीजे केमरे ॥ जन-अपवाद मिथ्योनहींरे ! ॥ नन्दना ॥ तुमपण जाणोएमरे ॥ नन्दन ॥ २२ ॥ हूंजाणूं सीता सतीरे ॥ नन्दना ॥ सापण जाणे आपरे ॥ दिव्य कियां सघलो मिटे रे ॥ नन्दना ॥ लोक-वचन सन्ताप रे ॥ नन्दन ॥ २३ ॥ सर्व लोकनी साखसूंरे ॥ नन्दना ॥ दिव्य कराऊं देवरे । मुंहडो फिर से लोकनोरे ॥ नन्दना ॥ साच लह्यां ततखेव रे ॥ नन्दन ॥२४॥ भलूं २ भूपे भण्यूंरे ॥ नन्दना ॥ नगरी बाहिर जायरे । मण्डप मांड्यो मोटकोरे, ॥ नन्दना ॥ मंचक बहु मण्डायरे ॥ नन्दन ॥ २५ ॥ आवी बैठा राजीयारे ॥ नन्दना ॥ विभीषण सुग्रीव रे । भूचरने खेचर सहुरे ॥ नन्दना ॥

आया जंगम जीवरे ॥ नन्दन ॥ २६ ॥ पुरी अयोध्या ए सहुरे ॥ नन्दना ॥ ते डाव्या सहु लोकरे । साच दियां लोगां खरूंरे ॥ नन्दना ॥ ज्यूं फिरी नवि करे खोकरे ॥ नन्दन ॥ २७ ॥ प्रभु आदेशे चालीयोरे ॥ नन्दना ॥ कपिपति लेवा तास रे । पुण्डरीक पुरी आवीयोरे ॥ नन्दना ॥ आणी अति उल्हास रे ॥ नन्दन ॥ ॥ २८ ॥ पग प्रणमी सीता तणारे ॥ नन्दना ॥ तेम करे अरदासरे पुरी अयोध्या आयकेरे ॥ नन्दना ॥ सफल करो हम आशरे ॥ नन्दन ॥ २९ ॥ पुष्पक नामे विमान एरे ॥ नन्दना ॥ मोकल्यो रघुनाथ रे । मतूं करीने मोकल्योरे ॥ नन्दना ॥ एहूं सघले साथ रे ॥ नन्दन ॥ ३० ॥ आज लगे समियुज थोरे ॥ नन्दना ॥ अरण्ये तज्यानूं दुःख रे । वलि किस्यूं करसे प्रभु रे ॥ नन्दना ॥ सयूँ स्वामीनूं सुखरे ॥ नन्दन ॥ ३१ ॥

मुनि श्रीरूपचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज पन्नजी मूडे वोल ।

माता जल्दी चाल, चाल चाल वनिता का वासी वाट उडीकेहो ॥टेर॥
जन अपवाद थकी प्रभु थोने, काढ दिया घर बारे हो ।
तो पिण अनुपम प्रेम केम, रघुनाथ विसारे हो ॥ माता० ॥ १ ॥
विरह तुम्हारे कृश तन वोर, कारे मुख प्रभु ह्वेगा हो ।
थां विन तजसी प्राण जानसच, होसो भोगा हो ॥ माता० ॥ २ ॥
थांरी याद में लक्ष्मणजी को, मुख पंकज कुमलाणो हो ।
दर्शन प्यासी नित रहे उदासी, करूणा आणो हो ॥ माता० ॥३॥
साच कहूं माजीसा थां विन, दिसे अयोध्या सूनीहो ।
आप आने सूं रंगरली होसी, नित दूनी हो ॥ माता० ॥ ४ ॥
कपिपति कहे कर जोड सिया से, रघुपति मुझने भेज्यो हो ।
अवधपुरी चालन नाकारो, मत थे देज्यो हो ॥ माता० ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी—

पुनरपि कपिपति वीलवेरे. ॥ नन्दना ॥ शुद्धिकरे वा काजरे ।
बुलाव्या छे तुम प्रभुरे ॥ नन्दना ॥ वेगेपधारो राजरे ॥ ३२ ॥
एम सुणी हरखी खरीरे ॥ नन्दना ॥ वांछीथी एवातरे ।

बैसीने विमानमेंरे ॥ नन्दना ॥ आगेगई तबमातरे ॥ नन्दन ॥ ॥ ३३ ॥ माहेन्द्रोदय वागमेंरे ॥ नन्दना ॥ उतारीशु विमानरे । लक्ष्मण जई पगे लागीयोरे ॥ नन्दना ॥ पगेलाग्या नृप आनरे ॥ नन्दन ॥ ३४ ॥ आगेबैसी विनवेरे ॥ नन्दना ॥ घेर पधारो आजरे । ए घरएपुर थाहरोरे ॥ नन्दना ॥ एथारोसहु राजरे ॥ नन्दन ॥ ॥ ३५ ॥ सतीकहे वत्स! साचएरे ॥ नन्दना ॥ पहिली करिसुं शुद्धिरे । पाछे जाणे केवलीरे ॥ नन्दना ॥ जेउपजसे बुद्धिरे ॥ नन्दन ॥ ३६ ॥ ए सघलुं सम्भलाव्युरे ॥ नन्दना ॥ राघवजीने आपरे ॥ सतीकने प्रभु आयकेरे ॥ नन्दना ॥ बोलेसीधा न्याय रे ॥ नन्दन ॥ ३७ ॥ रावण साथे रागनो रे ॥ नन्दना ॥ न हुवो छे लवलेश रे । धीज करो धृति आदरो रे ॥ नन्दना ॥ देखे लोग अशेप रे ॥ नन्दन ॥ ३८ ॥ हसी बोली तब जानकी रे ॥ नन्दना ॥ प्राण नाथ! अवधार रे । तुम्ह थी शाणो कौण छेरे ॥ नन्दना ॥ न करो काम विचार रे । नन्दन॥३९॥ बात कहन्तां विरचिया रे ॥ नन्दना ॥ लवणांकुश ना तात रे ॥ ओछोतो ओ-छी कररे ॥ नन्दना ॥ पूरा पूरी बात रे ॥ नन्दन ॥ ४० ॥ झूठी जाणो छो मने रे, ॥ नन्दना ॥ तो पहेलां द्यो दण्ड रे । पाछे करसुं हुं सहीरे, ॥ नन्दना ॥ धीज तणी पगमण्ड रे ॥ नन्दन ॥ ४१ ॥ राम कहे भद्रे! सुणोरे ॥ नन्दना ॥ मैं नवि जाणी खोड़ रे ॥ अबही जाणूं छूं नहीं रे ॥ नन्दना ॥ लोक करे मुखमोड़रे ॥ नन्दन ॥ ४२ ॥ तेहथी ए मुझ ऊपनीरे ॥ नन्दना ॥ उतारवा तुझ भार रे ॥ दिव्य करो सहू देखतां रे, ॥ नन्दना ॥ साचे सहु नो प्याररे ॥ नन्दन ॥ ४३ ॥ युक्तिवात कहे जानकीरे, ॥नन्दना॥ दिव्य[1] करूं हूं पंचरे । अग्नि में डाकी पडुं रे ॥ नन्दना ॥ न

---

१ दिव्य–दिव्यंज–अर्थात् धीज, मनुष्य अपराधी है निरपराधी–इसकी परीक्षा के लिए पांच उपाय हैं। १ तुला = २ अग्नि = ३ जल = ४ विष = ५ कोश =

करूं को खल संचरे ॥ नन्दन ॥ ४४ ॥ चावल[1] ने चावूं सही रे ॥ नन्दना ॥ पिऊं[2] तातो कोश रे । जीभे[3] साहूं फालीया रे । नन्दना ॥ चढूं[4] तुला ए सरोस रे । नन्दन ॥ ४५ ॥ इणमें जो तुमने गमे रे ॥ नन्दना ॥ सोई करो पर साद रे । शंका कोई मति आणजो रे ॥ नन्दना ॥ मुझने एह अल्हाद रे ॥ नन्दन ॥ ४६ ॥ सिद्धारथ ऋषि रायजीरे ॥ नन्दना ॥ अन्तरिक्ष भाखन्तरे । मतिरे वरांसो रामजीरे ॥ नन्दना ॥ दखावी दाखन्तरे ॥ नन्दन ॥४७॥ लोक सहु प्रभु आगलेरे ॥ नन्दना ॥ करे विनती आवीरे । सीताजी म्होटी सतीरे ॥ नन्दना ॥ शील तणे सुप्रभावीरे ॥नन्दना॥ ४८॥ कह्यो तेही कीधो सहीरे ॥नन्दना ॥ जगमें एही कहायरे ॥ रहे चाह्यो ए कामनेरे ॥ नन्दना ॥ समजी राघव रायरे ॥ नन्दन ॥ ४९ ॥ हूंतो समजूं छूं सहीरे ॥ नन्दना ॥ सीता छे निर्दोष रे ॥ दोष चढाव्यू छो तुम्हेंरे ॥ नन्दना ॥ मुझने ए अफसोसरे ॥नन्दन॥५०॥ मीठा मुखडा आगलेरे ॥ नन्दना ॥ कड़वा तुम पर पूठरे । पंचों में परमेश्वरूरे । नन्दना ॥ वात पड़ी ए झूठरे ॥ नन्दन ॥ ५१ ॥ कूर्म[5] जिह्वानी परेरे ॥ नन्दना ॥ एह तुम्हारी जीहरे । खिण मांही खिण बाहीररे ॥ नन्दना ॥ आतुर बहे अबीहरे ॥ नन्दन ॥ ५२ ॥ काल फरी तुम भाखसोरे, ॥ नन्दना ॥ सीता छे सकलंकरे । अम मन राख्यू स्वामीनूं रे ॥ नन्दना ॥ किहां गयूं छे शंकरे ॥ नन्दन ॥ ५३ धीज करावी आकरो रे ॥ नन्दना ॥ आज करूं सहु साचरे । साच बड़ो संसार मांरे नन्दना ॥ मणि नवि थावे काचरे ॥नन्दन॥५४॥ हाथ तीनसोनी खणीरे ॥ नन्दना ॥ लांबी चहूडी खाड़रे । पुरुष दोई ऊंडी करीरे ॥ नन्दना ॥ इन्धन चन्दन फाड़रे ॥ नन्दन ॥ ५५ ॥

१ मंत्रित चावल = २ तपा हुवा कोश (सीसा) को पीना = ३ तपा हुवा लोह का फालीया को हाथ में लेजाया जीभसे चाटना = ४ तराजू ५ काछवानी जीभनी परे (पाठान्तरे कमलनी कम्वापरे)

सत्तावनमीं ढालमेंरे ॥ नन्दना ॥ राघव थाप्यो धीजरे ॥ केशराज सत्य-शीलथीरे, ॥ नन्दना ॥ साच साचनूं बीजरे ॥ नन्दन ॥५६॥

दोहा केदाररागेः—

गिरि वैताढ्य जाणिये, उत्तर श्रेणि मझार।
हरि विक्रम वड राजवी, जय भूषण सुतसार ॥ १ ॥
अठोत्तर शत कुंवरी, परणावी राजान।
सुख भोगवतां आवीयो, मोह तणो अवसान ॥ २ ॥
मातुल-नंदन "हेमशिखर", किरण मण्डला नार ॥
वे मरजोद विलोकतां, वात पड़ी सुविचार ॥ ३ ॥
काटी दिधी कामिनी, आपण संयम धार।
'विद्युत् दष्ठा' नाम थी, राक्षसणी थै ते नार ॥ ४ ॥
अयोध्याना उद्यानमां, ऋषि प्रतिमा प्रतिपन्न।
राक्षसणी उपसर्ग थी, निश्चल राख्यो मन्न ॥ ५ ॥
साधु हुओ ते केवली, ओच्छव करवा काज।
इन्द्रादिक बहु देवता, आवी अधिक विराज ॥ ६ ॥
अवसर देखी धीजनो, देव दया पर ग्राही।
हरीजी साथे वीनवे, जोर वहे जग मांही ॥ ७ ॥
ज्ञानीजी निश्चल लहे, सीता सती अपार।
दग्धे छे अवलाभणी, मूर्ख लोक गंवार ॥ ८ ॥
सीता सानीध्य[1] कारणे, अनीक[2] पति अभिराम।
मूकी हरि[3] आपण करे, केवल ओछव काम ॥ ९ ॥

---

१ सहायता, २ सेनापति, ३ इन्द्र

दोहा के पहीली गाथा से लेकर नवमीं गाथा तक का स्फस्टार्थ यह हैं-कि हरि विक्रम राजा का पुत्र जय भूषण की किरणमंडला नामक स्त्री अपने मामा का पुत्र हेमशिखर के साथ आसक्त थी। इस बात की जयभूषण को मालूम पड़ते ही अपनी स्त्री (किरणमंडला) को देश निकाला दे दिया। वह स्त्री मर कर विद्युद्दष्ठा नाम की राक्षसणी हुई। और जयभूषण दीक्षा लेकर फिरते २ इस समय में अयोध्या के उपवन

रामतणा आदेश थी, दीधां काष्ट घणाय ।
मिली रही ज्वाला बली, देख्यों ही न विज़ाय ॥ १० ॥
सीता-पावक१ पारवती, आवी एम भाखन्त ।
वीत राग अज साधु सुर, आप साखी राखन्त ॥ ११ ॥
लोक पाल सहु सांभलो, सूर्य चन्द्र वड़ देव ।
दिवस निशाना साखिया, तुम जाणो सहु भेव ॥ १२ ॥
मने करी वचने करी, काया ए करी जोय ।
जागत ने सोवत विगे, राम टाली नर कोय ॥ १३ ॥
जोको मैं वांछयो हुवे, बाली करो मुझ छार ।
वैश्वानर जग साखीया, एह अछो तुमचार ॥ १४ ॥
नहीं तर तूं पाणी हुजे, एम कही ततकाल ।
श्री नमोकारही सुमरती, डाके पड़िसा चाल ॥ १५ ॥
पड़तांही पहीली थई, अग्नि फिठी वाव ।
निर्मल पाणीमूं भरी, शील तणे सुप्रभाव ॥ १६ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज—अलबेल्यानीः—

झल झलती मिलती घणीरे लाल, झालो झाल अपाररे । सुजाण सीता । जाणे केसू फूलीया रे लाल, राता खेर अंगाररे ॥ सुजाण सीता ॥ १ ॥ धीज करे म्होटी सतीरे लाल ॥ टेर ॥ शील तणे परमाणरे ॥ सुजाण सीता ॥ लक्ष्मण राम तिहां खडारे लाल, मिलीया राणो राण रे ॥ सु० ॥ धीज ॥ २ ॥ स्नान करी निर्मल जलेरे लाल, पावक पासे आयरे । सुजाण सीता । ऊभी जाणे देवांगनारे लाल, बिमणो रूप दिखायरे ॥ सु० धीज ॥ ३ ॥ नर

में आकर कायोत्सर्ग किया। वह राक्षसणी आकर मुनि को बहुत उपसर्ग दिया। मुनि स्थिर रहे। अनित्य भावना भाते हुये-केवल ज्ञान की प्राप्ती हुई। ज्ञानोत्सव के लिये इन्द्रादिक देव-गण आया, देव-गण का आग्रह से इन्द्र ने अपने सेनापति को सीता की सहायार्थ भेजकर आप केवल ज्ञान का उत्सव किया।

१ अग्नि।

नारी मिलिया घणारे लाल, ऊभा बहु अकुलायरे ॥सुजाणसीता॥ भस्म होसी इण आगमें रे लाल, राम करे अन्यायरे ॥ सु० ॥ धीज ॥ ४ ॥ राघव चिन वंछयो हुवेरे लाल, सुपनां में नर कोपरे । सुजाण सीता । तो मुझ अग्नि प्रजालजोरे लाल, नहीं तर पाणी होयरे ॥ सु० धीज ॥ ५ ॥ इम कही बैठी आगमेंरे लाल, तुरत थयो अग्नि नीररे ॥ सुजाण सीता ॥ जाणे द्रह जल से भरयो रे लाल, झूले मन धर धीर रे ॥ सु० ॥ धीज ॥ ६ ।

ढाल मूलगी क्षेपक

अग्नि मिट पानी जद होवे, लोक सब दश दिश ही जोवे, कलंक को बीज ही खोवे । कहो अब किणरो हे मूंडो, करेगो सीता को भूंडो ॥ सत्यव्रत पालो ॥ १०२ ॥ प्रथमतो वातां जे ऊठी, वेतो सब आज हुई झूठी, इन्हीं पर शोकोंही रूठी । सीता है बिलकुल ही साची, सत्य अरु शील माही राची ॥ सत्य० ॥ १०३ ॥

ढाल अठावनमीं—तर्ज नायकानी

सिंहासन जल ऊपरेरे, ते उपर सा जायरे ॥ सीता ॥
हंसी ज्यूं पंकज उपरेरे, वैठी शोभा पाय रे ॥ सीता ॥ १ ॥
सत्यवती साची सतीरे लाल ॥टेर॥ साचो जेहनो शीलरे ॥सीता॥
सुरवर सानिध्यकारीयारे लाल, शीलथकी अति लीलरे॥सीता॥२॥
अग्नि सूं ज्वाला आकरी रे, धग धगता अंगाररे ॥ सीता ॥
सीताने शोले करी रे, सलिल हुआते साररे ॥सीता ॥सत्य०॥३॥
अर्ण वावर्त नामथी रे, चोखूं छे ते चाप रे ॥ सीता ॥
सीताने शीले करी रे, राम चहोड़ियूं आप रे सीता॥सत्य०॥४॥
हनुमन्त उदधि उलंघियो रे, भंजिओ वर उद्यान रे ॥ सीता ॥
सीताने शीले करी रे ॥ सीजायो राजान रे ॥ सीता ॥सत्य०॥५॥
पत्थर पाणी ऊपरे रे । तारविया श्रीराम रे ॥ सीता ॥
सीताने शीले करी रे, सरिया वंछित कामरे ॥सीता॥ सत्य०॥६॥
शक्ति प्रहारे ना मूओ रे, सौमित्रीजी सोई रे ॥ सीता ॥

देवेने बलि दानवे रे, रावण तो न मराय रे ॥ सीता ॥
सीताने शीले करी रे, मारि लियो सोई राय रे ॥ सीता ॥ स० ॥८॥
त्रिकोटी लंका पुरी रे, किहांहीन लगाव रे ॥ सीता ॥
सीताने शीले करी रे, लिधी विन उपाव रे ॥ सीता ॥ स० ॥९॥
राम तजाई अरण्यमें रे, जिहां न आशा कोई रे ॥ सीता ॥
सीताने शीले करी रे, राम विलावल होईरे ॥ सीता ॥ सत्य १० ॥
पुत्र पनोता ऊपना रे, दोई ते सम तोल रे ॥ सीता ॥
सीताने शीले करी रे, निका ते निरमोल रे ॥ सीता ॥ सत्य ११ ॥
लक्ष्मणसूं जाई अड्या रे, तो नहीं पाम्या हार रे ॥ सीता ॥
सीताने शीले करीरे, सुराह्या संसार रे ॥ सीता ॥ सत्य १२ ॥
पियरियो ने सासरियो रे, उज्वाल्या कुल दोई रे ॥ सीता ॥
उज्वाल्या पियु रामजी रे, अपकीर्ति मल धोई रे ॥ सीता ॥ स० १३ ॥
गुल २ शब्द सुहामणा रे, कोई करे हूं कार रे ॥ सीता ॥
कोई भम्भाए भला रे, कोई जय २ कार रे ॥ सीता ॥ सत्य १४ ॥
कोई खल २ खांतसूंरे, कोई दिल २ देवरे ॥ सीता ॥
विविध प्रकारे चेष्टाए रे, देव करे ततखेव रे ॥ सीता ॥ सत्य १५ ॥
धौं २ नादसूंरे, वाजे मधुर मृदंग रे ॥ सीता ॥
ताल स्वर उपांग सूंरे, होई रह्यो रसरंग रे ॥ सीता ॥ सत्य १६ ॥
कोई वजावे वांसली रे, कोई वजावे वीण रे ॥ सीता ॥
तान रु मान अनुमानसूंरे, होई रह्या लय लीन रे ॥ सीता ॥ स० १७ ॥
कोई अलापे रागने रे, कोई सुरती धरन्तरे ॥ सीता ॥
नाचे ताम वारांगनारे, थै २ शब्द करन्तरे । सीता ॥ सत्य १८ ॥
वापी नूं जल वाधियो रे, जेम सायर कल्लोलरे ॥ सीता ॥
पसर्यूं दिशा चारमां रे, करतो अधिक अल्लोलरे ॥ सीता ॥ स० १९ ॥
मांचा ताम तणावता रे, लाग्या नाठा लोग रे ॥ सीता ॥
असंख्याला आकता रे, जाणी जलनो जोगरे ॥ सीता ॥ सत्य २० ॥
विद्याधर ते वेगसूरे, ताम गया ते नाशरे ॥ सीता ॥
पाणीनो भय पामके रे, ऊँचा अति आकाश रे ॥ सीता ॥ स० २१ ॥

विद्याधर ते वेगसूं रे, ताम गया ते नाशरे ॥ सीता ॥
पाणीनो भय पामके रे, ऊंचा अति आकाशरे ॥सीता॥ स०॥२१॥
भूचर भरमाणा घणा रे, दीन पणूं अति दाखरे ॥ सीता ॥
महासती म्होटी सती रे, राख राख अब राखरे ॥सीता॥ स०॥२२
लोक किस्यूं भाखे घणूं रे, साचा केरी साखरे ॥ सीता ॥
देव दानवे मिलीरे भलि भलि मुख भाखरे ॥सीता॥ स०॥२३॥
चालीने दोई हाथसूं रे, उतारी पूते पूररे ॥ सीता ॥
प्रथम प्रमाणे आणीयूरे, पाणी पूर पण्डूररे ॥ सीता स० ॥२४
उत्पल कुमुद कह्या घणा रे, पुण्डरीकने पद्मरे ॥ सीता ॥
पंकज विविध प्रकारना रे, हंसां केरा सद्मरे ॥ सीता ॥ सत्य २५ ॥
जल विचे तरी आफलेरे, मणि केरा सोपानरे ॥ सीता ॥
रत्नपली तट बांधीया रे, वापी छे सुख थानरे ॥ सीता ॥ स० २६ ॥
नारद ऋषि नाचे घणूरे, करतो शील प्रशंसरे ॥ सीता ॥
गगन चढ्यो रसरंगमें रे, वर्णव तो कुल वंशरे ॥ सीता ॥ स० २७ ॥
शीलवडूं सुवखाणीयूंरे, सीतानो जगमांहे रे ॥ सीता ॥
लोक सराहे सादरोर, एक समां उच्छाहे रे ॥ सीता ॥ सत्य २८ ॥
सुप्रभाव सीता तणोरे, लवणांकुशजी देखरे ॥ सीता ॥
तरता हंस तणी परेरे, पासे गया सुविशेषरे ॥ सीता ॥ सत्य॥२९॥
शिर चूम्बी बैसाड़ीयारे, दोई सुत दोई पासरे ॥ सीता ॥
करणी जेम कलभा करीरे, पामी सास्या बासरे ॥सीता॥स०॥३०॥
सौमित्री शत्रुघ्नरे, भामण्डल भल भूपरे ॥ सीता० ॥
विभीषण सुग्रीवजीरे, आदि भूप अनुपरे ॥सीता०॥सत्य०॥३१॥
जय जय करता पारवतीरे, आया आणी उल्हासरे ॥सीता०॥
पाय नमी मुख भाखहीरे, हम चरणांना दासरे ॥सीता०॥३२॥
आवी पधार्या रामजीरे, करता पश्चात्तापरे ॥ सीता ॥
अंजली जोड़ी वीनवीरे, एम कहन्तो आपरे ॥सीता०॥ सत्य०॥३३॥
लोक वचने में तू त्यजीरे, न कर्यो को आलोचरे ॥सीता०॥

अटवी मांहे मेलतांरे, सम्भल्यो नहीं सोचरे ।।सीता०।।सत्य०।।३४।।
सुप्रभावथी सुधर्यारे, ताहरा सघला काजरे ।। सीता ।।
छेल्लू दुःखए मैंदियूरे, आगतणूंता आजरे ।।सीता।। सत्य ।। ३५ ।।
इत्यादिक एतूंखमेंरे, म्हाराअति अपराधरे ।। सीता ।।
आपसुधारी आपणीरे, धन्य मानव भवलाधरे।। सीता ।। स० ।। ३६
सीता भाखेस्वामीजीरे, कांईकरो विखादरे ।। सीता ।।
जेहीभलो जगजाणवोरे, तेसहु तुम्ह प्रसादरे ।। सीता ।। स० ।। ३७।।
जन-अपवाद निवारवारे, नांखी आगमझाररे ।। सीता ।।
हूंजीवती ऊगरीरे, नामतणे आधाररे ।। सीता ।। स० ।। ३८ ।।
भूमण्डलनी रेणुथीरे, सूर्यझांखो थायरे ।। सीता ।।
एगुणवाय तणूं घणूरे, रेणूनो नकहायरे ।। सीता ।। स० ।। ३९ ।।
सापही माथे मींडकोरे, नाजन्तो देखायरे ।। सीता ।।
एगुण मंत्रतणो घणोरे, मिंडकनो नकहायरे ।।सीता।।स०।। ४०
चैत्रहीमासे कोकिलारे, कूकूशब्द करायरे ।। सीता ।।
एगुण आंबानोघणोरे, कोकिलनो नकहिवायरे ।। सीता ।। स० ।।४१
नगर तणातो खालनांरे, पाणीजे पूजायरे ।। सीता ।।
एगुण गंगाजी तणोरे, पाणीनो नणीनो नकहायरे ।। सीता ।।स०४२
पारस फरस्यां लोहनूंरे, कंचन नाम धरायरे ।। सीता ।।
एगुण पारसनो घणोरे, लोहतणूं नकहायरे ।। सीता ।। स० ।। ४३।।
विवाहतणा दिन आदिथीरे, आजतणो दिनछेहरे ।। सीता ।।
नेकीते सब स्वामीनीरे, बडी लगीछे देहरे ।। सीता ।। स० ।। ४४
दुःखहिमें राखियोरे प्रभुजी थांरो नामरे ।। सीता ।।
तेसुखमेंनवि राखियोरे, एहपलेखा ठामरे ।। सीता ।। स० ।। ४५ ।।
माहरो ताहरो लोकनोरे, कोईन दीसे दोषरे ।। सीता ।।
दोषजए कृत कर्मनोरे, करवो रागन रोषरे ।। सीता ।। स० ।। ४६ ।।
घरे पधारो आंपणेरे, पूर्वला सुखभोगरे ।। सीता ।।
भोगविए भल भावसूंरे, पुण्यतणे संयोगरे ।। सीता ।। स० ।। ४७

ढाल क्षेपक तर्ज—नवकार ही मन्त्र बड़ा है।

घर चलना तुम्हें ज़रूरी, कहे राघवजी धर प्यार के ॥टेर॥
बीती जो बात विसारो, चित्तकी मम चिन्ता टारो,
प्रियमान कयोहि व म्हारो, गुण सज्ज नभाव निहार के,
मम करो कामना पूरी ॥ घर० ॥ १ ॥
धरलिया जनम धन तेरा, सत्य शील दृढ़ाया गहरा,
मन मुदित होगया मेरा, दो झट पट वैन उचार के,
नहीं पूरी अयोध्या दूरी ॥ घर० ॥ २ ॥
होगई बात जो हुणी प्रिय ! याद प्रीत कर जूनी,
तुम बिना अयोध्या सूनी. मेरे अवगुण दूर निवार के,
मैं कहूं छोड़ मगरूरी ॥ घर० ॥ ३ ॥
सब सम्पद सुख को भोगो, झट पट अब चलो ओरोगो,
मिटजाय मोर मन शोगो, (शुभ उदय मिल्यो संयोगो)
अब कथन मेरो अवधार के करदो सब माफ कसूरी ॥ घर० ॥४॥
रघुपति कसर नहीं राखी, कही भिन भिन रखीन बाकी,
मुनि भयरव इण पर भाखी, आपरगट मध्य पीपार के,
धन्य सत्य शील में पूरी ॥ घर० ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी—

सीता भाखे स्वामीजीरे, सरियु तुम्ह सन्मानरे ॥ सीता ॥
सांयम लेसूंसादरोरे, नरजन्म सुख आनरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ४८ ॥
एमकहीं ऊपाड़ीयारे, स्वहाथे शिरकेशरे ॥ सीता ॥
प्रभुजीने पकड़ावीयारे, जिन नाजेम सुरेशरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ४९
प्रभुजी तब मूर्च्छित पड्यारे, नरही शुद्धलगाररे ॥ सीता ॥
'जयभूषण श्रीगुरुमुखेरे, लीधो संयम धाररे ॥ सीता ॥ स० ॥ ५६
सुव्रता गुरुणीकनेरे, सीखे विविध विशालरे ॥ सीता ॥
परम महासुख पामीयूरे मत्यो सहु जंजालरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ५१
अड्ढाव नमी ढालमेंरे, षट्कायिक प्रतिपालरे ॥ सीता ॥
केशराज धन्य एसतीरे, नमिये चरण त्रिकालरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ५२

दोहा (धन्या श्री रागे)

चन्दनसूं सिंच्योप्रभु, थयो सचेतन जाम।
किहांगई सीता सती, राम कहे-अभिराम ॥ १ ॥
भोभोभूचर खेचरो,भक्त महाछो भूर।
लुंचित-केशा कामिनी, मेलोआणी हजूर ॥ २ ॥
रे लक्ष्मण ! तेनासुणी, ए सघला ही लोक।
हांसीकरे छे, हर्षसूं. देखी म्हारो शोक ॥ ३ ॥
धनुष्यग्रहे रोषेभर्यो, लक्ष्मण भाखे ताम।
ए सहु सेवक स्वामिना, कोण हांसीनो ठाम ॥ ४ ॥
प्रभुजीजेम सीता तजी, दोषतणो डरआण।
तेमसीता संसारए, तज्यो भवभय आण ॥ ५ ॥
प्रभु आगल शिर लोचियूं. जग भूपण गुरु पास।
संयमलीधो सादरो, समतासूं वनवास ॥ ६ ॥
जयभूषण प्रभु केवली, आज हुवाछे देव।
आपजई ओळवकरो. चरण कमलनी सेव ॥ ७ ॥
तिहां अछे, सीता सती, बैठी सतियां मांहि।
दर्शन कीजे देवीनूं आपण पे उच्छाहि ॥ ८ ॥
सहजपणा में आवीया, राम करे सुविचार।
शुभ गुरु पे संयम लियो, धन्य २ सीता नार ॥ ९ ॥
एम कही परिवार सूं, जयभूपण गुरु संग।
आवी पाय प्रणमी करी, देशना सुणी सुचंग ॥ १० ॥
देशना अन्ते पूछियूं, हूं छूं भव्य अभव्य।
तुमने नहीं अभव्यता, भद्र ! अछो तुम भव्य ॥ ११ ॥
एहिज भवे शिव पांमसो, पामी केवल ज्ञान।
जन्म जरा भय टाल सो. तुम छो पुरुष प्रधान ॥ १२ ॥
संयम विन शिवगति नहीं, ते तो में न लेवाय।
लक्ष्मण-साथे मोहिनी; मैं क्यूं हिं नें त्यजाय ॥ १३ ॥

ऋषि भाखे चिन्ता नहीं, भोगवी पद बलदेव।
आपहीं प्रति बूजसो, जिनमतनूं ए भेव ॥ १४ ॥
विभीषण भाखे भल्ल, सीता रावणे लीध।
किण कर्मे लक्ष्मण हण्यो, रावण पणे प्रसिद्ध ॥ १५ ॥
भामण्डल सुग्रीव हूं, लवणांकुश ए दोय।
किसे कर्मे करी ऊपन्या, प्रभु भक्ता सहु कोय ॥ १६ ॥

ढाल एगुणसाठमीं तर्ज- मईडा दानी वे।

स्वामी भाखे सयल विचार, दक्षिण भरत अछे भलो!
भाखे स्वामी वे खेमपुरे, नयदत्त वणिक वसे गुण आगलो भा०१
सुनन्दा उदर दोई, नन्दन धुर धनदत्त छे।
भाखे०वसुदत्त विशेष, याज्ञवल्क्य सुमित्तछे ॥ भा० ॥ २ ॥
तिणही नगर मझार, सागरदत्त वसे सही।
भाखे गुणधर नामे नन्द, गुणवती कन्याकही ॥ भा० ॥ ३ ॥
'सागर दत्ते दीध, धनदत्त ने सा सुन्दरी।
भाखे जाणी सरखी जोड़, लालचतो कोनाधरी ॥ भा० ॥ ४ ॥
रत्नप्रभा तसमात, अर्थ तणेलांभेकरी।
भाखे शेठअछे श्रीकान्त, तेहने दीधी दीकरी ॥ भा० ॥ ५ ॥
याज्ञवल्क्ये जाणी, जणावी मित्रोंभणी।
भाखे वसुदत्ते निशिजाई, हण्यों श्रीकान्त ने हणी ॥भा० ॥ ६ ॥
श्री कान्ते पणतेह, मारीलियो तव नासतां।
भाखे एसुधो व्यवहार, विणसे परही विनासतां भा० ॥ ७ ॥
'विन्ध्या वनमेंआय, मृगहुआते दोयवे।
भाखे गुणवंती नोजीव, हुई हिरणली सोयवे ॥ भा० ॥ ८ ॥
हरणी केरेहेतु, मुआदोई कुरंगवे ॥ भाखे० ॥
रुलिया काल अपार, जगमें करतां जंगवे ॥ भाखे ॥ ९ ॥
सो धनदत्त तेवार, भाई मूओते सांभली।
भाखे हुओ अधिक उदास, घरथी चाल्यो नीकली ॥ भा० ॥१०॥

राते लागीभूख, ताम मुनीश्वर देखीया।
भाखे० भोजन केरेकाम. वास्वचन विशेषीया॥ भाखे॥ ११॥
संग्रह नकरेसाधु. दिनहींतो रात्रे किस्यूं।
भाखें० तुम्ह सरिसाने रात्री, भोजनकर्यो मनमें वस्यूं॥ भा०॥१२
प्रतिबोधाणो सोई, श्रावक हुओ साचलो।
भाखे०स्वर्ग सुधर्मे देव, आगेकी अव सांभलो॥ भा०॥ १३॥
महापुर नगर मझार, मेरु सेठ प्रिया धारणी।
भाखे० पद्मरूचि सुत सार, श्रावक मतिसुख कारणी॥भा०॥१४॥
एकदिन गोकुल जात, पडियो वृषभ विलोकीयो।
भाखे० दयातणी मतिआणी. मंत्र राज तेहने दियो॥ भा०॥१५॥
छत्र छाय नरेन्द्र, श्रीदत्ता उदर ऊपन्यो।
भाखे वृषभध्वज अभिधान, नन्द निरूपम नीपन्यो॥भा०॥१६॥
कुंवर करतो केली, आयोहिथाने चालो।
भाखे० जिहां मूओछेवेल, देखी ऊपज्यूं मनरली॥ भा०॥१७॥
जातिस्मरण पामी. ताम करावे देहरो।
भाखे० उपकारीनेहित, कुंवर कुंवर सेहरो॥ भा०॥ १८॥
भींतेआलेख्यू रूप, वद्ध वृपभनो तामवे।
भाखे० सेठही रूपअनूप, जेमहूओ थोकामवे॥ भा०॥ १९॥
पलाणीयो हयएक, तेनेपासे राखीयो।
आरक्ष नरने एह, भूपतिने सुत भाखीयो॥ भ०॥ २०॥
एहना रूपनो जाण, महारी पासे आणवो।
भाखे करसूं तस उपकार, कियोगुणतो मानवो॥ भा०॥ २१॥
एमकही घरेजाय, एटले सेठ पधारीयो।
भाखे०गोकुल मांहीजात, पद्मरूची उपकारीयो॥ भा०॥ २२॥
भींते आलेख्यू जे चित्र, देखी विस्मय पामीयो।
भाखे आरक्षथी लही शुद्ध, आपण आव्यो वामीयो॥ भाखे॥२३॥
पूछे भाखे सेठ, म्हारा कीधा कामवे।

भाखे० कुंवर करे परणाम, आप प्रकाशो नामवे ॥ भा० ॥ २४ ॥
प्रभुजी तुम्ह सुपसाय, पायो पद अभिरामवे ।
भाखे० तूं मेरा गुरुदेव, तुझकूं करूं सलामवे ॥ भा० ॥ २५ ॥
भोगविए ए राज्य, तुम्हारो आपीयो ।
भाखे० पुरमांही वडवीर, आपसमो कर थापीयो ॥ भा० ॥ २६ ॥
सेठ अने सुकुमार, श्रावक ना व्रत पालवे ।
भाखे० स्वर्ग दूसरे देव, विलसे सुख चिरंकालवे ॥ भा० ॥ २७ ॥
गिरि वैताढ्य विख्यात, नगरी नन्दावर्तवे ।
भाखे नन्दीश्वर अभिधान, राजा राज्य करन्तवे ॥ भा० ॥ २८ ॥
पद्मरूचि सो देव, करतो अति आनन्द वे ।
भाखे० कनक प्रभानी कूख, नन्दन नयनानंदवे ॥ भा० ॥ २९ ॥
राज्य करी व्रत लीध, स्वर्ग पंचमें जायवे ।
भाखे० पूर्व विदेह मझार, क्षेमा नगरी आयवे ॥ भा० ॥ ३० ॥
विपुला वाहन राय, नारी पौमावे उदरे ।
भाखे० श्री चन्द्र नरेन्द्र, राज्य तणी पदवी वरे ॥ भा० ॥ ३१ ॥
गुप्ति समाधी समीप, संयम लीधो सादरो ।
भाखे० ब्रह्मलोकनो देव, होई आयो पाधरो ॥ भा० ॥ ३२ ॥
ए अष्टम बलदेव, देवे सेव्या सदैव वे ।
भाखे० वृषभ ध्वजनो जीव, राजाए सुग्रीववे ॥ भा० ॥ ३३ ॥
जे हुतो श्रीकान्त, भव में भमियो भूरीवे ।
भाखे० पाटणकन्द मृणाल, होई पुण्य अंकूरवे ॥ भा० ॥ ३४ ॥
वज्र सुकण्ठ नरेश, हेमवती नो जाईयो ।
भाखे० शम्भू नाम लहन्त, साजन मन भाईयो ॥ भा० ॥ ३५ ॥
जे हुतो वसुदत्त, हुओ शम्भू भूपतो ।
भाखे० विजय पुरोहित नारी, नलचूड़ा अनूपजो ॥ भा० ॥ ३६ ॥
नामे तो श्रीभूति, नन्दन नीको जाणीयो ।
भाखे० गुणवती भवमांहे, भूपति ठाणे आणीयो ॥ भा० ॥ ३७ ॥

श्रीभूति ने घरनार, नाम प्रणामें सरस्वती ।
भाखे० वेगवती सुकुमारी, ऊपजी अधिक कलावती ॥भा० ॥३८॥
सा यौवन वयपाय, एक दिन गई उद्यानवे ।
भाखे० एकध्याने प्रतिपन्न, साधु रह्यो शुभ ध्यानवे ॥ भा० ॥३९
लोक करन्तासेव, एहवोदेखी साधुवे ।
भाखे० आणीद्वेष अतीव, साभाखे अपराधवे ॥ भा० ॥ ४० ॥
नारीसाथे एह, भोगवतो वरभोगवे ।
भाखे० मैंदीठो एआज, तामफिर्या सहुलोगवे ॥ भ० ॥ ४१ ॥
ऋषिकरे काउसग्ग, प्रगट पणेतो एमकही ।
भखे० उत्तरसे एदोष, तोमैं पारेवो सही ॥ भ० ॥ ४२ ॥
सुरेकरी सानिध्य, वेगवती मुख सीवेबे ।
भाखे० आकुल व्याकुल थाय, पावेदुःख अतिववे ॥ भा० ॥ ४३ ॥
एह सुणीने वात, मावित्रों त्रासी घणी ।
भाखे० भयमानी मनमांहे, भाखे अवगुण आपणूं ॥ भा० ॥ ४४ ॥
'सुदर्शन मुनिपास, आविलोक घणामिल्या ।
भाखे० खमजो मुझ अपराध, तुम तपस्वी तेसांभल्या ॥ भा० ॥ ४५
सांमी नांख्यों खेह, सूर्य झांखोनापड्यो ।
भाखे० तुमने देखी निर्दोष, किस्यूंबके नर बापडो ॥भा० ॥ ४६ ॥
तुझ रूठ्यां जगमांही, कोईनहींजो राखिले ।
भाखे० क्षमाकरो ऋषिराय, थाऊंसुखी एम भाखोले ॥ भा० ॥ ४७
एम सुणन्तांलोक, पुनरपि सेवा साचवे ।
भाखे० श्रावक धर्मसाथ, वेगवती मनराचवे ॥ भा० ॥ ४८ ॥
राजा देखीरूप, वेगवतीसूं राचीयो ।
भाखे० कन्याकेरे काज, पुरोहित तब जाचियो ॥ भा० ॥ ४९ ॥
मिथ्यादृष्टि जाणी, कन्या नापे तातवे ।
भाखे० जोरे लीधीबाल, जनक तणोकरी घातवे ॥ भा० ॥ ५० ॥
विप्रक्रियोरे नियाण, राजाने दुःखदायवे ।
भाखे० होजो वचन प्रमाण, मंडू एह उपायवे ॥ भा० ॥ ५१ ॥

दिन थोडाघर राख, छोडी दीधी ब्राह्मणो ।
भाखे० आरजिका अभिराम, हरिकान्ता पासेभणी ॥ भा० ॥५२॥
मरण तणेहूंहेतु, होजो शम्भूनेहणी ।
भाखे० ग्रहीसंयम सुरलोक, पामीगति पंचम तणी ॥भा०॥ ५३ ॥
जनक तणेघरआय, सोताजीए ऊपनी ।
भाखे० वयर विलय नविजाय, जेमभाखी तेम नीपनी॥भा०॥५४
मुनिवर जी ने जेह, झूठो आल चढावीयो ।
भाखे० झूठो आलज एह, लोकांमांही पावीयो ॥ भा० ॥ ५५ ॥
भवमें भमत अपार, शम्भु जीव सुहामणो ।
भाखे० कुशध्वज छे विप्र, रूड़ो ने रलियामणो ॥ भा० ॥ ५६ ॥
सावित्री तस नारी, उदरे लियो अवतारवे ।
भाखे० नन्दन नामे प्रभास, सुन्दर ने सुखकारवे ॥ भा० ॥ ५७ ॥
विजयसिंह नी पास, संयम लीधो सादरा ।
भाखे० दुक्कर तप जय कार, सहे परिषह आकरा ॥ भा० ॥ ५८ ॥
गिरी समेते जात, कनकप्रभ विद्याधरूं ।
भाखे० ऋद्धि तणो विस्तार, देखी भोग पुरन्दरू ॥ भा० ॥ ५९ ॥
ए तप तणोही प्रकार, म्हारे ऋद्धिज एहवी ।
भाखे० होजोकरेही निपाण, जेहवी गति मति तेहवी ॥भाखे॥६०
जईनीजे सुरलोक, देवतणा सुखभोगवी ।
भाखे० आयुकर्म नेअन्त, आयोते सुरवरच्वी ॥ भा० ॥ ६१ ॥
हुओ रावण राय, भाई तुम्हारो ए वड़ो ।
भाखे० सहुरायां शिरताज, वसुधामांहे चांकड़ो ॥ भा०॥ ६२ ॥
'याज्ञवल्क्य नो जीव, भमतोए भवसिन्धुवे ।
भाखे० एतूं उपज्यो आय, रावण नो लघुबन्धुवे ॥ भा० ॥ ६३ ॥
श्रीभूति हण्योजे राय, पृथिवी एपहीली गयो ।
भाखे० पुर भले सुप्रतिष्ठ, पुनर्वसु खेचर थयो ॥ भा० ॥ ६४ ॥
क्षेत्र विदेह मझार, पुण्डरिकीणी छे विजय ।

भाखे० नामे त्रिभुवनानन्द, चक्री भगवंतही भजय ॥ भा०६५ ॥
अनंग सुन्दरी तास, पुत्री अमरी अवतरी ।
भाखे० पुनर्वसु तस देखी, लेईचाल्यो तस अपहरी ॥ भा० ॥ ६६
चक्री सुभटे आय, पन्थे रोक्यो पापीया ।
भाखे० अकुलाणो झझन्त, सुभटअति सन्तापीया ॥ भा० ॥ ६७॥
अनंगसुन्दरी बाल, यान थकी डाकी खरी ।
कोई निकुंझमझार, आवीपड़ीसा सुन्दरी ॥ भा० ॥ ६८ ॥
पुनर्वसु लेईदिक्ष, आगे सुखियो थायजो ।
भाखे० कीधो एह निदान, ए सुन्दरीहूं पायजो ॥ भा० ॥ ६९ ॥
भोगवी सुरपद सार, विविधप्रकारे झूंझियो ।
भाखे० दशरथ घर अवतार, ए प्रभु लक्ष्मणजी हुओ ।।भा०७०॥
वसती वनहर मझार, राज-सुता अविरुधवे ।
भाखे० तपतो उग्र अपार, कग्तीभाव विशुद्धवे ॥ भाखे ॥ ७१ ॥
अन्त समय आराधी, सन्थारे सूतीसती ।
भाखे० अजगर आवी गलन्त, आरतिमें नपडी रती ॥ भा०॥७२
बीजे कल्पे वसाय, हुई विशल्या एहवे ।
भाखे० लक्ष्मण नेसुखदाय, दिन२ चधतो नेहवे ॥ भा० ॥ ७३ ॥
गुणवती नोभ्रात, गुणधर नाम धरायवे ।
भाखे० संसारतो सर्व असार, कुण्डल मण्डित थायवे ।भा०॥७४॥
श्रावक व्रत प्रतिपाल, कीधो धर्म त्रिकालवे ।
सीता सहोदर एह, भामण्डल भूपालवे ।' भा० ॥ ७५ ॥
काकन्दी पुरमांही, वाम देव ना पुत्रवे ।
भाखे० श्यामा उदर अवतार, राखण घरना सूत्रवे ॥ भा०॥७६॥
'सुनन्द' वसुनन्द अन्य, हुओ स्वकारणे ।
भाखे० प्रतिलाभ्यो मुनिएक मास खमणने पारणे ॥भा॥०॥७७
उत्तर कुरु भवलेई, सुधर्मे सुर लोकवे ।
भाखे० काकन्दी राजान, रतिवर्द्धन आलोकवे ॥ भा० ॥ ७८ ॥

सुदर्शनाजी मांय, दोई सुतउदर धारीया।
भाखे० प्रियंकर प्रसिद्ध, शुभंकर शुभकारीया॥ भा०॥ ७९॥
राज्यकरी व्रतपाली, देवहुआ ग्रैव्येकवे।
भाखे० लवणांकुश एदोई, सीता सुत सुविवेकवे॥ भा०॥ ८०॥
सुदर्शनाजी मांय, भवान्तर नी जेहवे।
भाखे० सिद्धारथ साथायं, जेही पढाया एहवे॥ भा०॥ ८१॥
ए मुनि वचन सुणन्त, बहुजनने वैराग्यवे।
भाखे० ग्रही संयम पावन्त, सेनानी सौभाग्यवे॥ भा०॥ ८२॥
राम नमी ऋषिपाय, पायाअति सन्तोष वे।
भाखे० आरति गईसुखथाय, प्रीती तणा अति पोषवे॥ भा०॥८३
एगुण साठमी ढाल, भवान्तर अवदातवे।
भाखे० केशराज ऋषिराजमें, वारुकही एवातवे॥ भा०॥ ८४॥

दोहा (सारंग सोरठी रागे)—

सीता पासे चालिके, तवआया श्री राम।
सुकुमालांगी स्वामिनी, कठण घणूं एकाम॥ १॥
शीत तापना क्लेशअति, क्षुधा तृषानी व्याय।
रहेवो मेलेलूगड़े, जिनमत नीए छाय॥ २॥
भारथकी ए भारअति, म्होटो संयम भार।
क्यूंनिवर्तसे एभणी, सांसो एह अपार॥ ३॥
राजा रावण-आगले, राखी रही निजटेक।
राखजे संयम विषय, साचीटेक अनेक॥ ४॥
एम विमासी वन्दना, किधी राघव राय।
लक्ष्मण आदे प्रणमीया, सीताजीना पाय॥ ५॥
स परिवारे रामजी, अयोध्या आवन्त।
गुण गातां सीता तणा, गाढो सुख पावन्त॥ ६॥

ढाल साठमीं-

तर्ज-ओंभूनी-अथवा-खेमावन्त सुण भगवन्तनोजी—

सतियों में सीता साचीजी, सुरवर दीधी साखी (टेर)
भलि २ मुख भाखी ॥ स० ॥
श्री मुखे भाखी रामजी जी, शील सहाय राखीयां जी ॥स०॥१॥
तीरथ में साचो सुद्दीजी, तीरथ चारु ही देखी ।
मंत्रों में साचो सुणोजी, श्री नमोकार विशेषी ॥ स० ॥ २ ॥
दानों में साचो कह्योजी, जीवतणू जगदान ।
व्रतों में साचो कह्योजी, साचो शील प्रधान ॥ स० ॥ ३ ॥
नियमों में साचो भण्योजी, नियम बड़ो सन्तोष ।
साचो तप तपियां तणोजी, समता रसनो पोष ॥स०॥ ४ ॥
दुक्कर तप तपने करीजी, सेनापतिजी सोई ।
स्वर्गे पहूंच्यो पांचमेजी, परम महा सुखहोई ॥ स० ॥ ५ ॥
साठ वर्ष लगे स्वामीनीजी, विविध परे तप कीध ।
काया कीधो दूबलीजी, नरभवनूं फल लीध ॥ स० ॥ ६ ॥
अहोनिशा तेतीशनोजी, अनशन अति आराधी ।
दश विध आराधन करीजी, समरस नो रस साधी ॥ स० ॥ ७ ॥
सागरतो बावीशनोजी, पायो पूरो आव ।
अच्युत इन्द्र पद भोगवेजी, सीता पुण्य प्रभाव ॥ स० ॥ ८ ॥
गिरि वैताढ्ये जाणीयेजी, कंचन पुर प्रसिद्ध ।
कनकरथ राजा भलोजी, राज्य करे समृद्ध ॥ स० ॥ ९ ॥
मन्दाकिनी सुमानुनीजी, चन्द्रमुखी उल्लास ।
पुत्री दोई परणवाजी, स्वयम्बर मण्डप तास ॥ स० ॥ १० ॥
राम सु लक्ष्मण तेड़ियाजी, पुत्रने परिवार ।
आया आडम्बर घणेजी, वर्त्यो जय जयकार ॥ स० ॥ ११ ॥
लवण 'वरे' मन्दाकिनीजी, चन्द्रमुखी चउसाल ।
'अंकुश' नेआगे धसीजी, प्रहिरावे वरमाल ॥ स० ॥ १२ ॥

लक्ष्मण कुंवर कोपियाजी. अढाईसो वरसार ।
लवणांकुश ने आगलेजी, मांडवे युद्ध अपार ॥ स० ॥ १३ ॥
लवणांकुश भाखे भलीजी, काकोजी ते बाप ।
प्रीतपनोतो छेघणोंजी. सूंकरवो सन्ताप ॥ स० ॥ १४ ॥
अवध्यछे भाई भणीजी, तेहथी वध नविथाय ।
गज केसरीने आगलेजी, बोलन्तां नलजाय ॥ स० ॥ १५ ॥
शर्माणा सुमता थयाजी, वैराग्ये वन वास ।
अनुमति मांगी बापनीजी. आया मुनिवर पास ॥ स० ॥ १६ ॥
अढाईसो एकठाजी, कुंवर एकही वार ।
'महावल मुनि श्रीमुखेजी, लीधो संयम भार ॥ स० ॥ १७ ॥
लवणांकुश कुंवर तणोजी, कीधो तव विवाह ।
स्वामी अयोध्या आवीयाजी. हूओघणो उत्साह ॥ स० ॥ १८ ॥
'भामण्डल भूपालनेजी, उपर भूमिआय ।
बहुविध भावे भावनाजी, चित्तने लिये समझाय ॥ स० ॥ १९ ॥
वशकरी श्रेणीदोईनेजी, वर्तावी जय आण ।
अबजो दीक्षा लीजियेजी, तो सघलोमु प्रमाण ॥ स० ॥ २० ॥
एम चिन्तवतां तेहनेजी, माथे विद्युत् पात ।
देवकुरु एजई ऊपन्याजी, सुखमांही दिनजात ॥ स० ॥ २१ ॥
एक दिवस हनुमन्तजी जी, मेरु गिरिपे जाय ।
चैत्रमासे क्रीडा करीजी, मन रलियापत थाय ॥ स० ॥ २२ ॥
वाटे आवन्तां थकांजी, रवि आथमतो देख ।
एह स्वरूप संसारनूंजी, चित्त चिन्ते सुविशेप ॥ स० ॥ २३ ॥
दिनने आदे ऊगीयोजी, वध्यो मध्य दिन ताय ।
घट्योदिन घटवे करीजी, माणस एम गणाय ॥ स० ॥ २४ ॥
पुत्र पनोतो पाटवीजी, राज भार थापन्त ।
दीक्षा महोत्सव मांडियोजी, दानघणूं आपन्त ॥ स० ॥ २५ ॥
'धर्मरत्न गुरु पाखतीजी, लीधो संयम भार ।

सुन्दरी साडी सातसेजी, लागीप्रभुने लार ॥ स० ॥ २६ ॥
खावे पीवे पहिरवेजी, करवे भोग विलास ।
प्रेम करावे पद्मनीजी, मांडी एप्रियसूं आश ॥ स० ॥ २७ ॥
अलूणी सीला चाढवेजी, प्रिय साथे वैराग्य ।
करेनिका धन्य कामनीजी, साथे शिवनूं माग ॥ स० ॥ २८ ॥
आर्जिका लक्ष्मीवतीजी, प्रवर्तिनी कहिवाय ।
साथेरहे ए साधवीजी, पढेगुणे सुखपाय ॥ स० ॥ २९ ॥
साचो संयम पालवेजी, कर्मतणो क्षयकार ।
हनुमन्त हुआ केवलीजी, पाम्या भवनो पार ॥ स० ॥ ३० ॥
हनुमन्त-दीक्षा सांभलीजी, चित्त चिन्ते श्री राम ।
कष्टग्रह्यू दीक्षातणोजी, छांडो विषय सुखठाम ॥ स० ॥ ३१ ॥
सौधर्म-हरि अवधि एकरीजी जाणीएह परणाम ।
विषय महागति कर्मकीजी, कहे सभाए ताम ॥ स० ॥ ३२ ॥
चर्मशरीरी-रामजीरे, करे धर्मनी हांसी ।
वखाणे विषया घणीजी, न बदे वचन विमासी ॥ स० ॥ ३३ ॥
हाहामें जाण्योसहीजी, लक्ष्मण-राम-सनेह ।
वचन अगोचर छेघणोंजी, कोईन पावेछेह ॥ स० ॥ ३४ ॥
ताम चल्या दो देवताजी, पुरी अयोध्या आय ।
नेह परिक्षा कारणेजी, मांडे एह उपाय ॥ स० ॥ ३५ ॥
लक्ष्मणने माया करीजी, देखात्रे तेदेव ।
अन्तेउर सहु रोवतोजी, करुणस्वरे ततखेव ॥ स० ॥ ३६ ॥
पद्म? पद्म? हा? पद्मनयन?जी, पद्मिनी अधिक पुकार ।
रोवेमरण अकालनूंजी, कर्यूंकिस्यूं किरतार! । स० ॥ ३७ ॥
वक्षस्थल कूटेघणीजी, माथेछूटा केश ।
मेलीनेते माजुनीजी, करती अधिक कलेश । स० ॥ ३८ ॥
विलोकी विषवाद सूंजी, भाखे लक्ष्मण भूप ।
जीवितवनूं जीवितघणूंजी, भाई भूप अनूप ॥ स० ॥ ३९ ॥

वात कहन्तां मरिगयोजी, फिटरे पापी काल ।
छेतरियो छलवट करीजी. रघुपतिस्यों भूपाल ॥ स० ॥ ४० ॥
एह कहन्त स्वमीनोजी. वचनां साथे जीव ।
निकलीगयो ततक्षण तदाजी, आतुर पणे अतीव ॥ स० ॥ ४१ ॥
सिंहासन बैठा थकाजी, हेमथम्भ अवथम्भि ॥
आंख पसार्योंही रह्योजी, लेप विम्ब निरदम्भि ॥ स० ॥ ४२ ॥
लक्ष्मण मूओ जाणिकेजी, देवकरे विखवाद ।
हास्यथकी अनरथ हुओजी, वहीगयो परसाद ॥ स० ॥ ४३ ॥
विश्वाधार विशेषथीजी, ओंयों हणियो एह ।
पश्चात्ताप करी घणोजी, स्वर्ग गया सुरतेह ॥ स० ॥ ४४ ॥
अन्तः पुरिनी पद्मनीजी, मूओ जाणी कन्त ।
कूटे पीटे आवटेजी, रोवे अति विलवन्त ॥ स० ॥ ४५ ॥
शोक वचन श्रवणे सुणीजी, राघव धसि आवन्त ।
अमंगल अजाणीयाजी, मण्डे किस्यो तुरन्त ॥ स० ॥ ४६ ॥
जीवेछे मुझभाईजीजी. एमगुँ केम मरन्त ? ।
मूर्च्छियो कोई प्रकारथीजी, तव उपचार करन्त ॥ स० ॥ ४७ ॥
वैद्य बुलाया वेगसूंजी, पूछ्यूं ज्योतिष जाण ।
तंत्र मंत्र उपकर्म अनिजी, कीधा आप प्रमाण ॥ स० ॥ ४८ ॥
कोइयन आयो पाधरोजी ताम प्रभु मूर्च्छाय ।
संज्ञापामी ने खरोजी, करुण स्वरे विललाय ॥ स० ॥ ४९ ॥
शत्रुघ्न सुग्रीवजीजी. विभीषण लंकेश ।
दुःखे अधिकूं आरड़ेजी. रोवे राय अशेष ॥ स० ॥ ५० ॥
कोशल्यादिक मायजीजी, नयणे नांखे नीर ।
छोडिने वडवोर नेजी, गया विललाई वीर ॥ स० ॥ ५१ ॥
मार्ग मार्ग पन्थमेंजी. घर घर हाटे हाट ।
शोकमय सहुको हुआजी, पड़ी अचिन्ती वाट ॥ स० ॥ ५२ ॥
लवणांकुश प्रभुने नमीजी, अनुमति मांगे आप ।

ए संसार असारछेजी, यमनो प्रबल प्रताप ॥ स० ॥ ५३ ॥
अमृतघोप मुनिशपेजी, पामी उत्तम दिक्ख।
मोक्ष गया मुनिवर सहीजी, आराधी गुरु शिक्ख ॥ स० ॥ ५४ ॥
भाईने पुत्रों तणोजी पामी घणो वियोग।
फिरी फिरी मूर्च्छाए प्रभुजी, वधतो जाये शोग ॥ स० ॥ ५५ ॥
भाईजीए तुम्ह विनाजी, पुत्रों दीधी पूठ।
हजु किस्यूं आगे हुसीजी, तिहांथी वेगो ऊठ ॥ स० ॥ ५६ ॥
मोहे मूर्च्छाणो घणोजी, जाण्यो राम नरेश।
विभीषणादिक रायजीजी, समझावे सुविशेष ॥ स० ॥ ५७ ॥
धीरा मांही धीरतुजी, वीरों को शिरताज।
लज्जा कारी लोकमेंजी, अधिर पणूं तजि आज ॥ स० ॥ ५८ ॥
एह सुणी अति कोपियोजी, होठ डसी बोलन्त।
प्रबल वायने वाजवेगी, डूंगर नवि डोलन्त ॥ स० ॥ ५९ ॥
जीवेछे मुझ भाईजीजी, मुआ तुम्हारा भ्रात।
देवोतुम्हे दाग उतावलोजी, अवसर वहियोजात ॥ स० ॥ ६१ ॥
वलि वलितूं भाईजीजी, कांई लगावे वार।
छिद्रलई करसे घणूंजी, दुर्जन एह पेसार ॥ स० ॥ ६२ ॥
अथवा दुर्जन देखतांजी, कोपेनहीं राजान।
एमकही खांधे धरीजी, चल्यो अनेरे थान ॥ स० ॥ ६३ ॥
स्नान करावे हाथसूंजी, अंगूछीने अंग।
विलेपन विधि साचवीजी, राम करे अतिरंग ॥ स० ॥ ६४ ॥
थालभरी भोजन तणोजी, मूके आगेआण।
भाईजी आरोगोयेजी, बोले मीठी वाण ॥ स० ॥ ६५ ॥
कदहीं अंका[1] रोपिकेजी, चूंबे वार अनेक।
मस्तक बालकनी परेजी, एपगवडे विवेक ॥ स० ॥ ६६ ॥
पोढावी ने पालकेजी, आपहीं चम्पे पांव।

१ गोदीमें बैठाकर =

कानेलागी वात करेजी, कहिर घाले वाय ॥ स० ॥ ६७ ॥
ए विध पोगे मोहिनीजी, न लहे शुद्ध लगार।
वोली१गया खट्मास जवजी, वैरीकरे विकार ॥ स० ॥ ६८ ॥
इन्द्रजीत ने सुंदनाजी, नन्दन महामय वन्त।
अपरही वयरी घणाजी, निसुणो ए विरतन्त ॥ स० ॥ ६९ ॥
'अयोध्या ए आवीयाजी, गुप्तपणे ततकाल।
छानी जाणीने गुफाजी, जेम आवन्त सीयाल ॥ स० ॥ ७० ॥
खवर लेई श्री रामजीजी, अंकारोयो बन्धु।
धनुष्य बाणने करग्रहीजी, गाजन्तां जेम सिन्धु ॥ स० ॥ ७१ ॥
आसन कम्पे अवधिसंजी, आवे देव जटायु।
देवघणासं परिवर्योजी, करवा राम सहायु२ ॥ स०॥ ७२ ॥
सुरवर सानिध्य साचवेजी, तेनहीं केहने पाड़ी।
विभीषणादिक खेचराजी, अलगाकिया तेताड़ी ॥ स० ॥ ७३ ॥
लज्जाणा संयम ग्रहोजी, भेट्या गुरु अतिवेग।
तेग फूरीनहीं राजनींजी, तामग्रही व्रत वेग ॥ स० ॥ ७४ ॥
ढाल भणीए साठमीजी, जेहनां चरम शरीर।
'केशराज वश मोहनेजी, हुआ अधिक अधीर ॥ स० ॥ ७५ ॥

दोहा (गोडी रागे)

देव जटायु रामने, देखावे दृष्टान्त।
समझावा ने कारणे, आव्यो छे एकान्त ॥ १ ॥
पंकज रोपे शील उपरे, सींचे सको वृक्ष।
उखर खेते अकालहीं, वावे बीज प्रत्यक्ष ॥ २ ॥
घाणी पीले रेतनी, ताम कहे श्रीराम।
किस्यूं करेरे मानवी, मूढ़ पणानों काम ? ॥ ३ ॥
पंकज२ ऊगे पाणिए, पाणी विण न उगन्त।
जलसं सींच्ये मूसलं, क्यूंही नेवि फूलन्त ॥ ४ ॥

---

१ पूरेहुवे= २ सहाय=, २ कमल=

बीज न ऊगे जल विना, उखर खेत विशेष।
वेलू पिल्यां घाणिए, मूर्ख तेल मत देख ॥ ५ ॥
तब बोल्यो हसि देवता, एजो एमज होय।
मूओ फरी जीवे नहीं, स्वामी विमासी जोय ॥ ६ ॥
एम कह्यां कोप्या घणूं, आलंगीने[१] देह।
कहे दूरजा दृष्टिथी, आणूं छूं तुझ छेह ॥ ७ ॥
सेनापति[२] सुर लोकथी, जटायु नो उपाय।
देखे जब लागे नहीं, मोहमें रहै रघुराय ॥ ८ ॥
आप उपायज केलवे, मूई नारी एक।
खांधे धरीने आवीयो, राम वदे सुविशेष ॥ ९ ॥
एकां मूर्ख धीट नर, मूई नारी खांध।
लेई फरे लेशे नहीं, मूओ आयुखो सांध ॥ १० ॥
स्वामी ! अमंगल कहां कहो, ए मुझ व्हाली नार।
हैया थकी नवि ऊतरे, राम कहे सुविचार ॥ ११ ॥
व्हाला थी व्हालो हुवे, मूओ फरि नावन्त।
मूआ गयाते शोचतां, शोभ न को पावन्त ॥ १२ ॥
पर उपदेशी जग घणो, आप न समझे कोई।
राम मोहे मोही रह्या, ताम कहे सुर सोई ॥ १३ ॥
डूंगर बलतो देखीए, पग तले नवि देखन्त।
छिद्र पराया पेखिए, पोताना न पेखन्त ॥ १४ ॥
ए वचने अति बूजियो, प्रभुजी आयो ठाम।
लक्ष्मण भाईजी सही, मूओ जाणे ए राम ॥ १५ ॥
तबते दोई देवता, आपणयो देखाय।
पगेलागी प्रभुजीतणे, स्वर्गे पहूंता जाय ॥ १६ ॥
संस्कार कायातणो, राम कियो तेवार।
आपहुवा ऊतावला, लेवा संयम भार ॥ १७ ॥

१ राम लक्ष्मण के शरीरसे आलिंगनकर २ कृतान्तवदन

शत्रुघ्न ने राजनी, पदवी आये ईश।
शत्रुघ्न इच्छेनहीं, संयम साथे जगीश ॥ १८ ॥
लवण-तणो अंगजअछे, अनंगदेव उदार।
राज-भार तस अर्पियो, ओछवकरी अपार ॥ १९ ॥

ढाल इकसठमीं—तर्ज हामेरे पूज्यजी हा मेरे गुरुजी

धन्य प्रभु रामजी धन्य परिणामजी, पृथ्वीमें प्रशंसवे।
धन्य तुम्ह तातजी धन्यतुझ मातजी. धन्यतेरा कुलवंशवे ॥धन्य॥ १
मुनिसुव्रतने तीर्थे वर्ते, सुव्रतजी गणधारवे।
अर्हद्दासे वताव्यो सद्‌गुरु, भवजल तारण हारवे ॥ धन्य ॥ २ ॥
शत्रुघ्न-सुग्रीव-विभीषण, वीर विराध उदारवे।
सोलेहजार नरेश्वर साथे, रामहुवा व्रतधारवे ॥ धन्य ॥ ३ ॥
वरनारी संयमव्रत लीधो, सहस तदा सेंतीशवे।
श्रीमती आरजिका केरी, सेवकरे निश दीसवे ॥ धन्य० ॥ ४ ॥
पंचाचारी शुद्धाहारी, समितीगुप्ति प्रतिपालवे।
शीलसुधारी परउपगारी, पट्कायिक रखवालवे ॥ धन्य० ॥ ५ ॥
छट्ठअट्ठम आदि तपकीजे, विविध अभिग्रह वन्तवे।
कंचन नीपरे काय कसीजे, गुरु गिरुवा गुण वन्तवे ॥ धन्य ॥ ६ ॥
चवदेपूर्व अंग इग्यारे, पढ्या बुद्धि प्रमाणवे।
पण्डित राज शिरोमणीसाचा, सवविधि जाण सुजाणवे ॥धन्य॥७॥
आसेवन नेग्रहण शिक्षा, दो सिक्या गुरुने संगवे।
गुरुकुलवासे साठवर्ष लगे, रहिया मनने रंगवे ॥ धन्य ॥ ८ ॥
गुरु आदेशे उग्रविहारी, एकाकी विचरन्तवे।
तीनही रात्रे ध्यान तणेवल, अवधि अति उपजन्तवे ॥ धन्य ॥ ९ ॥
चउद रज्जात्मक लोकविलोके, जेमतो फलकर मांहीवे।
अनुज अधिक वेंदन अनुभवतो, दीठो नरके प्राहीवे ॥धन्य॥१०॥
प्रभुजी चिन्ते जब हूं हूतो, नामे श्री धनदत्तवे।
लक्ष्मणजी हूतो लघुभाई, वसुदत्त सुदत्तवे ॥ धन्य ॥ ११ ॥

उहांपण मुझेकाजे मूओ, भवमें भमतो भूरीवे।
इहांपण लक्ष्मण मुझसाथे, रह्योनित्य हजूरीवे ॥ धन्य० ॥ १२ ॥
चरस सो कुँवर पणेरे, मण्लीक शयतीनवे।
दिग्विजय चालीस वर्षलगे, पदवीधर प्रवीनवे ॥ धन्य० ॥ १३ ॥
इग्यारे हजार पांचसे ऊपर, वरस विदिता साठ वे।
सर्वायु तस बार सहश्रनूं, दीसे ग्रन्थ ही पाठ वे ॥धन्य०॥१४॥
अविरतीने वलि नर्के पहूंत्यो, कृत कर्मोंनो जोरवे।
जैसो कीजे तैसो लहिये, कांई करो नर शोर वे ॥ धन्य० ॥१५॥
एमचिन्तवतां राम ऋषीश्वर, कर्म हणेवा हेतवे।
तपजप अधिका अधिका कीजे, समता भाव समेतवे ॥धन्य०॥ १६॥
दो[1] उपवास किया दिनतीजे, लेवा काज आहारवे।
'स्यन्दनस्थल[2] नगरे पउधारे, जयणानी गतिसारवे॥धन्य०॥१७॥
चन्द्रही जेम चकोरहदेखे, तेम पुराना सहु लोकवे।
सन्मुखआया प्रणमेंपाया, ए शुभनो संयोगवे॥ धन्य० ॥ १८ ॥
आप आपणा घरनेद्वारे, भोजन केरा थालवे।
आगेमूके भक्तिन चूके, आणीभाव रसालवे ॥ धन्य० ॥ १९ ॥
लोक शब्द थी शोरमच्यो अति, हाथीभंजे थम्भ वे।
ऊंचाकान करे अतिघोड़ा, हुओ अधिक अचम्भवे ॥धन्य० ॥ २०
ओआहारन लीधोरामे, चलिआया नृपगेहवे।
'प्रतिनन्दी भूपेप्रतिलाभ्या, आणीधर्म सनेहवे ॥ धन्य० ॥ २१ ॥
प्रभुजीनो पारणो पहूंत्यो, उपज्यो अति उल्हासवे।
पंचसुदिव्य प्रसिद्धाहुआ, उद्घोषण आकाशवे ॥ धन्य० ॥ २२ ॥
प्रभुजी वनमेंजई चित्तचिन्ते; पुरमांही नविजाऊंवे।
क्षोभघणो लोगोंने उपज्यो, दुःखदाई नवि थाऊंवे ॥धन्य० ॥ २३
अन्न सूजतो वनमें विचरे, मिल्या आहारही आशवे।
नहींतर एह अभिग्रहकीधो, करवा तप उपवासवे ॥ धन्य० ॥ २४॥

१ छदिवसके उपवास की समातीमें, स्यन्दनस्थल नगरमें आहारार्थआये

ममताभावनहीं कायानो, आणी समाधी अशेषवे ।
प्रतिमाधर परमारथ साधे, समरसई सुविशेषवे ॥ धन्य० ॥ २५ ॥
घासी१ चन्दन जीवनमरणो, मित्रअरि सम तोलवें ।
चाकर ठाकुर सुखदुःख सरसां, सग्सावोल कुवोलवे ॥ धन्य० ॥ २६
हर्षनांही विखवाद्जनांही, नाहीं रागज रोषवे ।
आतम राम रमावे पावे, सुखकर्ता सन्तोषवे ॥ धन्य० ॥ २७ ॥
प्रतिनन्दी घोडानेखेंच्यो, तेवनआयो चालीवे ।
नन्दन पुण्य सरोवर घोड़ो, खूंच्यो नसकेहालीवे ॥ धन्य० ॥२८॥
एटले सुभटधसी वहुआया, नृपहय काढो लीधवे ।
कटक पड़ावकियो सरतीरे, ताम रसोई कीधवे ॥ धन्य० ॥ २९ ॥
आरोग्यो नृप सुभट सहूई. पुण्य तणो परिणामवे ।
रामऋषीश्वर वहिरण काजे, आयासाधु सुजाणवे ॥ धन्य० ॥ ३०
सन्मुखजाई दई प्रदीक्षणा, रायकरे परणामवे ।
धन्यएदहाड़ो धन्य एवेला, भेट्याश्रीऋषि रामवे ॥ धन्य० ॥ ३१
अन्नसूझतो प्रभु प्रतिलाम्यो, रत्नतणी तववृष्टिवे ।
सुरवरकीधी पृथिवी प्रसिद्धि, भूपभक्ती उत्कृष्टिवे ॥धन्य०॥३२॥
रामऋषि उपदेशदियोतव, श्रावक नावात वारवे ।
आदरीया प्रतिनन्दी राये, अवरांपिण नृपलारवे ॥ धन्य० ॥ ३३ ॥
राजाही घरही पधार्यो प्रभुजी, वनमांही वसन्तवे ।
सेवकरे सुरवर सुरदेवी, जाणीसाधु महन्तवे ॥ धन्य० ॥ ३४ ॥
एकमासी दो मासीकीजे, त्रिमासी चउमासवे ।
तप उपवास करन्तां काये, कर्मा केरा पासवे ॥ धन्य० ॥ ३५ ॥
पर्यंकासन कदहीकीजे, उत्कटिकासन सारवे ।
प्रलम्बितभूज कदिही कदिहीं, उर्ध्ववाहु उदारवे ॥ धन्य० ॥ ३६॥
अंगुष्ठाधारे कदिरहिवो. कदिएडी आधारवे ।

१ घास और चन्दन, जीवन व मरन, मित्र और शत्रु, सुख और दुःख समान जानने लगे—

इत्यादिक चौरासी आसन, रामकरन्त अपारवे ॥ धन्य० ॥३७॥
विचरत विचरत कोटिशिलाए, राम पधार्या तामवे ।
कोटिमुनिवर मोक्ष सिधाया, तेहथी कोटीनामवे ॥ धन्य० ॥ ३८॥
रात्रीरह्या प्रतिमाधरहोई, शुक्लसुध्यान धरन्तवे ।
क्षपकश्रेणी चढ्यातवकीधो, घातीकर्मनो अन्तवे ॥ धन्य० ॥ ३९॥
एटले अवधिए प्रभुजीदेखे, श्री सीतेन्द्र तेवारवे ।
ध्यानचलावी जावानदिदेऊं, प्रभुने मोक्ष मझारवे ॥ धन्य० ॥४०॥
उपद्रव अनुकूल करीने, श्रेणीचढन्तों स्वामीवे ।
उतारूंमुझ मित्रहुवे जेम, सुरगति पदवी पामीवे ॥ धन्य० ॥४१॥
एमचिन्तवी सीतेन्द्र पधार्यो, रामऋषीश्वर पासवे ।
मासवसन्त विकूर्व्यूवारु, रच्योमन सुविलासवे ॥ धन्य० ॥ ४२ ॥
ढाल भली एतो एकसठमीं, सीता मांड्यो रंग वे ।
केशराज अनुराग करीजे, न त्यजाये शुभ संग वे ॥धन्य०॥४३॥

दोहा (धन्याश्री रागे)

कंकेली पाडल बकुल, चम्पकने सहकार ।
विविध प्रकारे फूलीया, एह मदन शर सार ॥ १ ॥
मलया चलना वायरा, वाये अति सुखदाय ।
भमरा गुँजारव करे, कोयल शब्द सुनाय ॥ २ ॥
श्री सीतेन्द्र विकुर्व्यो, सीता केरो रूप ।
नारी जन परिवारसूं, आछी भान्ती अनूप ॥ ३ ॥
राम कने आवी कहे, प्रीतम सुण अरदास ।
आगे जई परस्तायके, फरी आवी तुम पास ॥ ४ ॥

ढाल बासठमीं–तर्ज पदनीः—

सीता आवेरे धरी राग, बालपणा को राम सनेही,
भोग करण को लाग ॥टेर॥
बरसों सोलां केरी सुन्दरी, सुन्दर सलज भाख ।
रूप अनूपम अधिक बनायुं, इन्द्र करे अभिलाख ॥ सीता० ॥ १ ॥

रम जम रम झम घूघर वाजे, नेपुर केरो नाद।
खल खल करी चूडो खलकावे, उपजावे अल्हाद ॥ सीता० ॥ २ ॥
चित्तको चढको मननो मटको, तनको पटको फार।
अमृत फुटको फग्डक नटको, घूंघट को सुविचार ॥ सीता० ॥३॥
पहीरण पीत पटोली चोली, सोहे भांत सुरंगे।
सहियर टोली भामर भोली, बनती आछे अंग ॥ सीता० ॥ ४ ॥
काजल रेखा सोह सरेखा, आरोग्यां मुखपान।
भृह कबान चढावे चतुरा, मूके लोचन बान ॥ सीता० ॥ ५ ॥
अंग देखावे हाथ नचावे, काम जगावण हारी।
वेण बनावे रूप रचावे, निरखण सरखी नारी ॥ सीता० ॥ ६ ॥
धौं धौं धपमप मांडल वाजे, चटपट २ ताल।
क्रुण क्रुण शब्द रवाब करन्तो, वीणा वंशी रसाल ॥ सीता० ॥ ७ ॥
नाटक करती चित्त अपहरती, ठुमक ठुमक की चाल।
राग आलावे मीठी गावे, राची रही अति ख्याल ॥ सीता० ॥८॥
तबतो तुम्ह प्रभु राखेथा मुझ, मैंही ग्रह्यू अभिमान।
सोच विचारी जोतां जाण्यूं, प्रिय सुख अमिय समान ॥सीता०॥९॥
लेतन मेलत एक हि न बने, लचपच में मन एह।
एटले एक खेचरणी आवी, वाणी वदे ससनेह ॥ सीता० ॥ १० ॥
रे भोली ! भरमाणी भीरे, राघव स्यों भरतार।
प्रबल पुण्य प्रतापे स्वामी, तूठ्या तुझ किरतार ॥ सीता० ॥ ११ ॥
तजी संयम भज राम नरेश्वर, भोगवी भोग अपार।
हम पण रामतणी तिय[1] थांछं, रहोछं थारे लार ॥सीता० ॥ १२ ॥
एह विद्याधर पुत्री वरजे[2], काजे भोग विलास।
हूं छूं बन्दी नाथ तुम्हारी, आदि लगे ए भास ॥ सीता० ॥ १३ ॥
हूं जाणूं तुम्ह मुझ वियोगे, आदरियो ए जोग।
सोहूं आगे ऊभी आवी, क्यों नवि मांगो भोग ॥ सीता० ॥१४॥

१ स्त्री = २ परणजे =

पहेलो बोलन मान्यो प्रभुनो, तेहनोए तुम्ह रोप ।
अवला अर्थी हुई जे वारे, तब देवो सन्तोष ॥ सीता० ॥ १५ ॥
एमकहीने नाटक करवे, मास वसन्त विनोद ।
राम तणूं मन रंच न राच्यूं, राच्यूं ज्ञान प्रमोद ॥ सीता० ॥ १६ ॥
माघ शुक्ल बारस निशि अत्ये, उपज्यो केवल नाण ।
ए सीतेन्द्र अवर हरि मळियो, ओच्छवनो मण्डाण ॥सीता०॥१७॥
सोवन पंकज बैठा स्वामी, चामर ढाले देव ।
मस्तक छत्र विराजे वारु, देव करे अति सेव ॥ सीता० ॥ १८ ॥
देशना दीधी देवों निसुणी, देशना अन्त्ये खमावी ।
सीतेन्द्र सौमित्री रावण, गति पूछी कहे स्वामी ॥ सीता० ॥ १९ ॥
नरक चतुर्थी ए बेऊं होई, शम्बुक ने लंकेश ।
लक्ष्मण कृत कर्मो ने योगे, सहे वेदन सुविशेष ॥ सीता० ॥ २० ॥
नरक थकी निकलीने रावण, लक्ष्मण पूर्व विदेह ।
विजय पुरीरे सुनन्द रोहिणी, होसे सुत ससनेह ॥सीता० ॥२१॥
सुदर्शन[1] जिनदास[2] लहेसे, श्रावक धर्म अगाध ।
स्वर्ग सुधर्मे होई विजया, नगरिए होसे श्राध[3] ॥ सीता० ॥२२॥
तिहां मरी हरी वर्षे होसे, दोई पुरुष प्रधान ।
सुर होई विजया नगरिए, श्रीकुमरावर्त राजान ॥ सीता० ॥ २३ ॥
लक्ष्मी राणी उदर उपजसे, जय प्रभ जय कान्त ।
संयम पाली स्वर्ग छठेरे, लहेसे सुख एकान्त ॥ सीता० ॥ २४ ॥
तबतूं इन्द्रपणूं त्यजीआवी, पामी भरतज खेत ।
'सर्वरत्नमती नामेचक्री, होसेशुभ संकेत ॥ सीता० ॥ २५ ॥
तेदोई देव चवीधरथारे, होसे वरसन्तान ।
'इन्द्रायुध' ने मेघरथाभिध, वसुधा वधतो वान ॥ सीता० ॥२६॥
तूंचक्री संयम व्रतपाली, विजयवन्त विमान ।
पामसे परिगल पुण्येकरी, देवसदा कल्याण ॥ सीता० ॥ २७ ॥

१ रावण नो जीव २ लक्ष्मण नो जीव ३ श्रावक

इन्द्रायुध सोतो रावणजी, तीर्थंकरनूंगोत ।
उपाई भवत्रीजे करसे, जिनपदनो उद्योत ॥ सीता० ॥ २८ ॥
रावण जिन तीर्थे तूंलेसे, गणधर पदवी गाज ।
रावणतो शिवगति साधसे. भाखे रघु ऋषि राज ॥ सीता० ॥२९
लक्ष्मण जीव तुम्हारो नन्दन, मेघरथ लेसे दिक्ख ।
शुभगति लहसे अतिगहगहसे, पाली मद्गुरु शिक्ख ॥सीता०॥३०
पुष्कर द्वीपे पूर्व विदेहे. रत्नसुचित्रा नाम ।
नगरिए नरदेव[1] तणोपद, पहीली पाडीठाम ॥ सीता० ॥ ३१ ॥
पछी तीर्थंकर पदभोगवी, पहूंचसे निर्वाण ।
लक्ष्मण लेसे अनन्त चतुष्टय, अष्टमहा गुणठाण ॥ सीता० ॥३२॥
एम सुणीने सीतेन्द्र प्रभुने. चरणे करी प्रणाम ।
पूर्वनेह तणेवस्य आयो, लक्ष्मण पासे[2]ताम ॥ सीता० ॥ ३३ ॥
सिंहादिक नारूप विकूर्वी, शम्बुक रावण दोई ।
लक्ष्मण सूं संग्राम करन्ता, देखे सुरपति सोई ॥ सीता० ॥ ३४ ॥
एहकर्मथी ए गतिलाधी, लाध्याएह सन्ताप ।
अजहूं कर्मन ओईछूटे, अईअई कर्म कलाप ॥ सीता० ॥ ३५ ॥
तेदोई समझावी स्वामी, लक्ष्मण रावण साथ ।
वातसुणावे अति विभावे, जेभाखी रघुनाथ ॥ सीता० ॥ ३६ ॥
लक्ष्मण-रावण-कहेकृपानिधि. कीधूं रूड़ काज ।
एह उपदेश सुण्यां विसरियो, ए गतिना दुःखआज ॥सीता०॥३७॥
निजकृत कर्मतणे वलएहवी, आपद पाम्या आप ।
आपही भोगवीने छूटसे, आप कमाया पाप ॥ सीता० ॥ ३८ ॥
करुणा आणी सुरपति भाखे, नरक थकी तुम्हकीन ।
काढीने सुरलोक पहूंचाऊ, तोहूंजाण प्रवीन ॥ सीता० ॥ ३९ ॥
एमकही करग्रहीने तीने, लेई चाल्या सुरराय ।
पारानी परे करथी खरखरी, पड्या अपूठा आय ॥ सीता० ॥४०॥

---

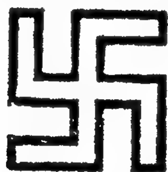
१ चक्रवर्ती = २ चौथी नरके—

पुन रपि उद्यम कीधो अधिको, पहेल तणी पर थाय ।
सांमी वेदना वधती जावे, पीड़ ये अतिकाय ॥ सीता० ॥ ४१ ॥
आप कमाणी भोगवणीछे, विण भोगवियों छूटी ।
नहींछे प्रभु तुम्ह थान पधारो, मेली माथा कूटी ॥ सीता० ॥४२॥
ते तीने तजी सुरपति आयो, प्रणमीं राघव राय ।
देवकुरु ए भामण्डल भेटो, स्वर्ग गयो सुखदाय ॥ सीता० ॥४३॥
पचवीश वर्ष लगे पालीयो, प्रभु केवल पर्याय ।
भविक जनना काम समार्या, मिथ्या मति मेटाय ॥ सीता० ॥४४॥
पन्नर हजार वर्षनो आयु, पूरोही प्रतिपाल ।
राम ऋषिश्वर मोक्ष सिधाया, जन्म जरा भय टाल ॥सीता०॥४५॥
नमो नमो श्री राम ऋषिश्वर, अजर अमर कहिवाय ।
तीन लोकने माथे बैठा, सासय सुख लहाय ॥ सीता० ॥ ४६ ॥
संवत् सोले तियासीए रे, आछो आसु मास ।
तिथी तेरस अन्तर पुरमांही, आणी अति उल्लास ॥ सीता० ॥४७॥
श्री गुरुदेव तणे सुपसाए, ग्रन्थ चढ्यो सुप्रमाण ।
ग्रन्थ गुणे गिरी मेरु सरिखो, नवरसमांहे वखाण ॥सीता० ॥४८॥
एवं बासठ ढाल सुधारी, वचन रचन सुविशाल ।
रामयशो रसायन नामा, ग्रन्थ रच्यो सुविशाल । सीता० ॥४९॥
कविजनतो कर जोडी करेरे, पण्डित सूं अरदास ।
पंचों आगे तो वांचवो, जो हुवे राग अभ्यास ॥ सीता० ॥ ५० ॥
अक्षर भंगे ढालज भंगे, रागज भंगे जोई ।
वाचतांरे वचनने भंगे, रस नहीं उपजे कोई ॥ सीता० ॥ ५१ ॥
अक्षर जाणी ढालज जाणी, रागज जाणी एह ।
पंचों आगे वांचवाथी, उपजसे अति नेह ॥ सीता० ॥ ५२ ॥
जब लग सायर नूं जल गाजे, जबलग सूरज चन्द्र ।
केशराज कहे तब लगेए, ग्रन्थ करो आनन्द ॥ सीता० ॥ ५३ ॥

-(कलश)-



राम-लक्ष्मण अने रावण, सती सीतानी चरी ।
कही भाखी चरित्र माखी, वचन रचनाए करी ॥ १ ॥
संघ रंग विनोद वक्ता, अने श्रोता सुख भणी ।
केशराज मुनिंद जम्पे. सदा हर्ष वधामणी ॥ २ ॥



इति श्री जैनपद्य रामायणे-भरत दीक्षाग्रहणं-मधुमरणं—शत्रुघ्नराज्य प्रदानं-सीतोपरिकलंकं-सीता वनवासं-लवणांकुशयो-जन्मं-विद्यापठनं-लवणांकुश पाणिपीडनं-राम-लक्ष्मण सार्धं-युद्धं-सीताग्निप्रवेशं-सीता दीक्षा ग्रहणं-देवमाया-लक्ष्मण मरणं-रामदीक्षा-मोक्षप्राप्ति-पूर्वभव वर्णनमादि-विषयकं चतुर्थ-खण्डं समाप्ति मफणीत—

इति श्री जैनपद्य-रामायणं सम्पूर्णम्

शुभं भूयात्— कल्याण मस्तु—
इत्यर्हम्— इत्यर्हम् इत्यर्हम्

लिखितं श्री शार्दूलशिष्य मुनि रूपेन्दुना

मुद्रकः—

राम—श्याम प्रिन्टिङ्ग प्रेस

कटला बाजार, जोधपुर.

अर्हम्

परिशिष्ट (१)

गीत [१] तर्ज—सहेल्यां हे आंबो मोरियो

राज कंवर रलियावणा, नयणांरा हे धन जीवन जेह के,
हरसावण हिवड़ां तणा, बरसावण हे आनन्दरस मेह के,
रघुनन्दन मन मोहियो [टेर]

एतो किसा हे नगररा राजवी ? अवनीपत हे किण घर अवतार ? के,
किण विधं इण पुर आविया, हिवड़ां रा हे हरलेवण हार के,
रघुनन्दन मन मोहियो [२]

एतो अवध नगर रा है राजवी, रघुकुल रा है जाणुं सूरज चंद के,
सीय-सुयम्बर निरखवा अठे आया है एतो आनन्द कन्द के,
रघुनन्दन मन मोहियो [३]

एतो नेह नगर रा है राजवी, आनन्द रा हे दरसे आपाण के,
नयण-निवाजण आविया, जग जीवण है प्राणां रा ही प्राण के,
रघुनन्दन मन मोहियो [४]

गीत [२] तर्ज—जलो म्हारी जोड़ रो उदयापुर मारहे हे

कंवर दशरथ तणा, कोई जादू कीनो है ।
भंवर मन भावणा, म्हारो मन हर लीनो है ॥ टेर ॥

म्हे थाने आली ! बरजिया हे, रघुवर रुख मत जोय ।
सुखरी सीख सुणी नहीं जद,
बैठी तन मन खोय ॥ कंवर ॥१॥

रघुवर-रुख लागो नहीं हे सखी !, तो तन मन किण काम,
वे हिज तन मन सफल हे सखी,
ज्यां रचियो रंग राम, ॥ कं० ॥२॥

जे नयणा छाकां छई, सखी राम-रूप-रस चाख,
दूजी दिस नहिं देखसी वांने,
लोभ दिखावो लाख ॥ कंवर ॥३॥

दया दीठ जिण दिस हुई, जाणूं दुनिया रा चूका दाम,
कोड़ काम करणा मदा थांरी,
एक अदा रो काम, ॥ कंवर ॥४॥

श्रवण वयण सुण ना सुणे, सखी ! नारद सारद वीण,
लज तज लारे लग रया है,
अली भड़ा २ परवीण ॥ कंवर ॥५॥

सुर तरु तो सूको लगे है, अली ! अमरत फीको होय,
लूखो जग तिणने लगे अली,
जिण लीना ए जोय ॥ कंवर ॥६॥

ए सूरज सूरज तणा हे, सखी ! ए चंदारा ही चन्द,
ए मनमथ मनमथ तणा हे अली,
ए इन्दर रा ही इन्द ॥ कंवर ॥७॥

सीताजी तथा सखियां री सलाह

गीत [३] तर्ज—बालम छोटो रे

ओ धनुष बड़ो विकराल, रघुवर छोटो रे,
कमल जिसो तन राम रो,
ओ धनुष वजर सो जाण, रघु० ॥१॥
बड़ो कठण पण पिता कियो,
कोई रंच न कियो विचार, रघु० ॥२॥
धनुष चढ़ो कै मत चढ़ो,
म्हारो राम भंवर भरतार रघु० ॥ ३ ॥
छोटो छोटो मत कहो,
ओ पूरण ब्रह्म परेस रघु० ॥४॥
सूरज छोटो सो लगे,
कोई जग में करे प्रकाश, रघु० ॥ ५ ॥
रघुवर चाप चढावसी,
कोई इणमें फेर न फार, रघु० ॥६॥

बरात चढे है

गीत [४] तर्ज—धूंसारी

रघुवर री बरात बणी भारी रे, सियावर री ॥ टेर ॥
सुंडाला सुमेर सा सजिया अमर-विमाणसी अम्बारी रे, रघु०
चंचल हय चित्त चाल चुकावण नाचे मोर मनोहारी रे, रघु०
रंग रसीला बाजा बाजे, शब्द हुवे आनन्दकारी रे, रघु०
देव सकल भूपत मिल आया, छाजे घणा छत्तर धारी रे, रघु०

गीत [५] तर्ज—बामण का

सांवरिया ! तूं जीवन री है जड़ी, राम प्यारा रे !
तूं हिवडा रो है हार ॥ १ ॥
रघुवर प्यारा रे, हांरे राम प्यारा रे ! हांरे गोविन्द प्यारा रे,
नेह लग्यो सो निभायले रे ॥ टेर ॥
सांवरिया ! तूं सरवर में हंसला, राम प्यारा रे !
म्हे चातक तूं मेह ॥ २ ॥
राम प्यारा रे ! नेह लग्यो सो निभायले रे
सांवरिया ! म्हे भंवरा तूं कुंज है, राम प्यारा रे !
म्हे चकोर तूं चन्द ॥ ३ ॥
राम प्यारा रे ! नेह लग्यो सो निभायले रे
सांवरिया ! म्हे जलचर तूं नीर है, राम प्यारा रे !
म्हे काया तूं जीव ॥ ४ ॥
राम प्यारा रे ! नेह लग्यो सो निभायले रे

श्री सीताजीरो पति-प्रेम

गीत [६] तर्ज—कांई रे जवाब करूँ रसिया

कांई रे जवाब करूं हरि सूं !
जवाब करूंगी, जवाब करूंगी,
रमैयारा चरणां में लपट रहूंगी।
सांवरियारा चरणां रो ध्यान धरूंगी
कांई रे जवाब करूं हरिसूं ॥ टेर ॥
पलकां रे ऊपर पग धर आजो,
तो हिवड़ारे आसण आप विराजो, कांईरे० ॥१॥

कहोजी ! प्रभूजी ! थांने किण विलमाया ?
तो दासी रे महलां विलम्ब सूं आया, कांईरे० ॥२॥
आप, बिना म्हारो भवन अलूनो,
तो आप बिना सब ही जग सूनो, कांईरे० ॥३॥
आप मिल्यां सबही सुख मानूं,
तो आप मिल्यां धन जीवन जानूं, कांईरे० ॥४॥
ले पग धूर मधुर मन मांजूं,
तो ओ अंजन म्हारा नयणां में आंजूं, कांईरे० ॥५॥
नेहरे नीर चरण जुग धोसूं,
तो प्रेम पदारथ भोग परोसूं कांईरे० ॥६॥
चरण पियूख प्रेम सूं पीऊं,
तो इण रामैया ने जोयां ही जीऊं, कांईरे० ॥७॥
प्रेम पलंग पर प्रभु पोढाऊं,
तो पाय पलोट परम सुख पाऊं, कांईरे० ॥८॥

श्रीरामजी सीताजी ने समझावे

गीत [७] तर्ज—पणिहारी बीकानेरी

पिता-वचन पालण वन जावां
वचन पाल आवां प्यारी !
प्राण-प्रियाजी थे भवन विराजो हे !
आ आज्ञा मानो म्हांरी ।

सास ससुर री सेवा कीजो,
मन मांहे धीरज धारी,
दिन जातां कोई देर न लागे हो !
आण मिलां पाछा प्यारी !

कमल समान कलेवर कोमल,
कठण वाट वनरी भारी।
इण कारण थांने लार न लेवां हो,
भवन रहो भामण म्हांरी।

पग वहणो, विखमे थल रहणो,
सीत घाम संकट सहणो।
ए बातां थांसू बण नहीं आवे हो,
कन्ज मुखी! मानो कहणो।

पोढण धर, ओढण ने आभो
पात विछावण रे तांई,
पहरण छाल, अरोगण वनफल
शेर, सूर वन दुःखदाई

कोयल किम थूहर–थल सोहै?
हंसण किम कादा मांही?
कमल-कली भुरटांरे भारे हो?
यूं सोहो वन थे नांही।

सीताजी री विनती

गीत [८] तर्ज—विहीज

पितु-पण पालण आप पधारो, संग अरधंगा ले नारी।
प्राणपतिजी! म्हांने संग ले, सिधावो हो, धर्म-नेम पूरणधारी!

राका पति बिन रयण अलुणी जीव विहूणी देह सही।
ज्यूं सरिता पाणी सूनी, यूं कामणी बिन कन्त कही॥
पति पूजन जीवन पतनी रो, सो कई कोसो जगजामी!
सब ही विध सेवा व्रत साधूं हो! संग लीजे मोने स्वामी!

श्रीरामजी रा वचन

गीत [९] तर्ज—खेलण दो गणगोर

ना चालो वन लार, प्रिया हे ! थे तो मत चालो०
हांहे वन में है विपत अपार, प्रिया हे ! थे तो०
सुख लायक सुकुमार, प्रिया हे थे तो सुख०
हांहे वन में दुःख विकट अपार, प्रिया हे थे तो०
विखम आहार विहार, प्रिया हे ! उठे विखम०
हांहे वन है खांडा री धार, प्रिया हे ! थे तो०
यो हठ लेवो निवार, प्रिया हे ! थे तो यो हठ०
हांहे म्हांरी मानो बात विचार, प्रिया हे ! थे तो०

सीताजी री प्रार्थना

गीत [१०] तर्ज—आहीज

चालण दो वन लार, प्रभूजी म्हांने, ले चालो,
वन लार ओजी म्हारा आतम रा आधार, प्रभू०
पिव भजतां दुःख भार, प्रभूजी ! ए तो पिव०
हांजी वे तो है हिवड़ारा हार, प्रभूजी० ॥१॥
आडी हुवे अंगार, प्रभूजी जे आडी हुवे अंगार,
हांजी तोही नाह तजे नहीं नार, प्रभूजी० ॥२॥
सारा सुख संसार प्रभूजी एतो सारा सुख संसार,
हांजी वे तो आप विना छे असार, प्रभूजी० ॥३॥
सुरगां रा विमल विहार, प्रभूजी एतो सुरगांरा०
हांजी विन कन्त नरकां रा हे द्वार, प्रभूजी० ॥४॥

ऊगे भाण हजार प्रभूजी जे ऊगे भाण०
हंजी तो ही आप विना छे अंधार, प्रभूजी० ।।६।।
नेह निहावण हार प्रभूजी थेतो नेह निहावण हार०
हांजी म्हारा भव भवरा भरतार, प्रभूजी० ।।७।।

सीताजी श्रीरामचन्द्रजीरो हुकम पायों अब सासूजी सूं विदा मांगे

गीत [११] तर्ज—पणिहारी बीकानेरी

हुकम हुवो सुसराजी सा रो, बरस चतुरदस बन-चारी,
प्राण प्रियाजी म्हारा वन में पधारे हो पति-सेवा ही सुखकारी
चित्त लागो पीवमरे चरणां, भवन रहण रुचि नहीं म्हांरी,
हुकम करो तो सासू ! पिव संग जाऊंसा ! पति-सेवा ही सुखकारी
सीख सुणी म्हे मात पितारी, पति परमेसर तनुधारी,
पति बिन गति पतनी ने नाहीं हो, पति-सेवा ही सुखकारी
धन धन है थांरा पिता सियाजी, धन धन माता थांरी,
ज्यांने थांने लाड़ी ! लाड लाडाया है, पति-सेवा ही सुखकारी,

कौशल्याजीरो उपदेश

गीत [१२] तर्ज—पणिहारी

परम धरम पतिव्रत कह्यो, सुण सीताजी,
श्रो सारांरो सार सीताजी !
पति जग में परकाश है, सुण सीताजी,
पति बिन घोर अंधार सीताजी !

जग पूजे पति पूजतां, सुण सीताजी !
सुर सेवे पति-सेव, सीताजी !

पति परमेसर सारिखो, सुण सीताजी !
पति देवांरो देव, सीताजी !

पति भजतां जग जीतजे, सुण सीताजी !
कदे न होवे हार, सीताजी !

पति सेयां सुख संपजे, सुण सीताजी !
पति पूज्यां भवपार, सीताजी !

पति नयणांरी पूतली, सुण सीताजी !
पति हिवडारो हार, सीताजी !

पति जीवणरी है जडी, सुण सीताजी !
पति आतम आधार, सीताजी !

पतिव्रता री प्रशंसा

गीत [१३] तर्ज—हां सगीजी ने पेड़ा भावे

हां पतिव्रत-पालनहारी, धन्य धन्य धरती पर नारी ॥टेर॥

धन्य वंश जिणमें वा जाई, धन सुसराल जठे परणाई ।
धन्य पुरुष जिणने वा ब्याही,
धन्य धन्य धरणी जठे वा आप पधारी रे, पति० ॥ १ ॥

पति के प्रेम रहे नित राती, मात पिता मन मोद बढाती ।
सास ससुर में सुख उपजाती,
प्रेम-चन्द्र चन्द्रिका, शील-सूरज उजियारी रे, पति० ॥ २ ॥

स्त्रियां रो राम-विरह वर्णन

गीत [१४] तर्ज—जलो म्हारी जोड़ रो

सनेही सांवरो बणगो वन-वासी हे !
रसीलो रामजी अब कद घर आसी हे ! ॥ टेर ॥

नयणां रो अंजन सांवरो, म्हारे हिवडा रो रंजनहार ।
गंजन दुःख परजातणो, ओतो भव-भंजन भरतार,
सनेही० ॥ १ ॥

जिण वन रघुनन्दन वसे हे सखी ! सो नन्दन वन जाण,
चरण धरण हरि जिण धरे, हूं तो पल पल वारूं प्राण,
सनेही० ॥ २ ॥

सुर नर रो तन जे हुवो हे सखी! तो आवे किण काम,
वनरा पशु पन्छी भला है, वे तो नयन निहारे राम,
सनेही० ॥ ३ ॥

राम वसे जिण जंगलां हे सखी! सो हिज सुरग निवास,
राम-विहूणो सुरग ही सखी ! तन उपजावे त्रास,
सनेही० ॥ ४ ॥

वन तो बडभागी बड़ो, सखी रमे जठे रघुराज ।
राम प्रभू त्यागी तिका, आतो अवध अभागी आज,
सनेही० ॥ ५ ॥

अवध प्रजा म्हांने करी, दिया रघुवंशी भरतार ।
राम-विछोहो क्युं कियो, ओतो कांई भूलो करतार,
सनेही० ॥ ६ ॥

गीत [१५] तर्ज—

राम बिना तो म्हांरे सुख ही सूल ।
राम बिना तो म्हांरे धान ही धूल ॥

राम बिना तो म्हांरे हार ही सांप ।
राम बिना तो म्हांरो पुन्न ही पाप ॥

राम बिना तो म्हांरे पीत ही रार ।
राम बिना तो म्हांरे जीत ही हार ॥

राम बिना तो म्हांरे हरख ही सोग ।
राम बिना तो म्हांरे भोग ही रोग ॥

गीत [१६] तर्ज—खेलण दो गिणगोर

किण विध विसर्‍यो जाय,
रामैयो म्हांसूं किण विध विसर्‍यो जाय ।
ओजी म्हांरो दशरथ राजकुंवार,
ओजी म्हांरो जनक सुता भरतार,
सांवरियो म्हांसू पलक न विसर्‍यो जाय ॥ टेर ॥
हरि हिवडे रो हार,
अली हे ! म्हांरो प्राणां रो प्राण आधार ।
हां हे म्हांरो जनम सुधारण हार,
हां हे म्हांरो मरण मिटावण हार,
सांवरियो० ॥ १ ॥
आनन्द रो आगार,
आली हे म्हांरो सुघड़ां रो सरदार,
हां हे ओ तो निराधारां आधार,

हां हे ओतो निरधन रो धन सार
सांवरियो० ॥ २ ॥

प्रेम रो पारावार,
अली हे ओतो सारां रो ततसार ।
हां हे हरि नेह निभावण हार,
हां हे प्रभु पार लगावण हार,
सांवरियो० ॥ ३ ॥

जोवे न कुल आचार,
अली हे ओतो नहिं गुण रूप अपार ।
हां हे हरि रीझे नेह निहार,
हां हे ओतो भगती-वस भरतार,
सांवरियो० ॥ ४ ॥

देखो भूल अपार,
अली हे वांने भूल रह्यो संसार ।
हां हे तो ही वो नहिं भूलण हार,
हां हे हरि सबरी करण संभार,
सांवरियो० ॥ ५ ॥

भरतजी आदि पाछा अयोध्या जावता श्रीरामजी ने विनती करे ।

गीत [१७] तर्ज—समदण जावांला थारी बलिहारी है

रघुवर ! दरसण देवणने वेगो आइजो ।
प्यारा प्रभू ! प्रेमरा प्यासा ने मत तरसाईजो ॥

वचन पिता रा पालो,
सतपथ चालो, धरम संभालो स्वामी !
ज्यूं निज वचन निभाईजो ॥ रघु० ॥ १ ॥

चवदा वरस बितावो,
उणरे दूजे ही दिन आवो, स्वामी !
आगे मत विलम्ब लगाईजो ॥ रघु० ॥ २ ॥
आप दया मय नामी,
अन्तरजामी, सुख रा सागर स्वामी !
जिवड़ारी जलन मिटाइजो ॥ रघु० ॥ ३ ॥

सूर्पनखां आई

गीत [१८] तर्ज—पनजी मून्डे बोल

बोल बोल हिवडारा जिवडा !
कांइ थांरी मरजी रे ? बालम ! मून्डे बोल ॥ टेर ॥
सुन्दर रूप अनूपम जोवन, सो बन किण विध आया रे ?
भोग भोगवा जोग, जोग किम लीनो काया रे, बालम० ॥१॥
थांरे जिसो नहीं नर सुन्दर, म्हारे जिसी न नारी रे ॥
आ जोड़ी जग मांय, विधाता एक उतारी रे, बालम० ॥२॥
तीन लोक रो राजा रावण, सो है म्हारो भाई रे ।
म्हांसूं नेह निभाय, पाय पूरण प्रभुताई रे, बालम० ॥ ३ ॥

प्रभुरो उत्तर

गीत [१९] तर्ज—बालम छोटो रे

बन्धव छोटो हे ! तूं भामण कर भरतार बन्धव० ॥ टेर ॥
म्हांसूं छोटो बन्धवो, कोइ सुन्दर रूप अपार, बंधव० ॥१॥
स्याम वरण पण है नहीं, वो गौर वरण दीदार, बन्धव० ॥२॥
म्हारे तो संग सुन्दरी, कोइ नहीं उणरे संग नार, बन्धव० ॥३॥

सूर्पनखां लछमणजी ने कहे है

गीत [२०] तर्ज—झरोखां झालो देजा है भांगडली

म्हारे सूं मोह करलो हो साजन जी ! थांरी मूरत मो मन मोह्यो,
हिरदा सूं मोने वरलो हो साजन जी !

श्रीराम वचन (प्रभु विरहलीला करे)

गीत [२१] तर्ज—कण झुणियो ले

हे सरिता रा हंसलां ! थे महर करो ।
सीता ने वेग बताय, ओ उपकार करो ॥
ऊजल थांरी जात है, थे महर करो ।
कोई ऊजल खान र पान, ओ उपकार करो ॥
हे सूवा ! हे सारिका ! थे महर करो ।
सीता रो पतो बताय, ओ उपकार करो ॥
हे आरणरा हेरणां ! थे महर करो ।
सीतारी बात सुणाय, ओ उपकार करो ॥
बनवासी पशु पंछियां, थे महर करो ।
म्हांरी सारा ही करो सहाय, ओ उपकार करो ॥
हे तरुवर ! हे वेलड़ी ! थे महर करो ।
प्यारी रो पतो बताय, ओ उपकार करो ॥
पर-हित कारण प्रगटिया, थे महर करो ।
म्हांरा जीवरी जलन मिटाय, ओ उपकार करो ॥
हे सूरज ! हे चन्द्रमा ! थे महर करो ।
म्हांने बिछड़ी प्रिया मिलाय, ओ उपकार करो ॥
जीवजड़ी म्हांसूं बीछड़ी, थे कृपा करो ।
म्हांसू उण बिन जियो न जाय, ओ उपकार करो ॥

परिशिष्ट (२)

भामंडल और सीता का पूर्वभव का सम्बन्ध और उनका जन्म

भरतक्षेत्र में दारुग्राम था। उसमें वसुभूति नामक ब्राह्मण रहता था। उसकी स्त्री का नाम अनुकेशा था। इनके पुत्र का नाम अतिभूति था। अतिभूति की स्त्री सरसा एक कयान नामक ब्राह्मण पर आसक्त होगई और वह ब्राह्मण उसे साथ लेकर भाग गया। कहा है "जो काम से आतुर होते है उन्हें न भय होता है, न लज्जा होती है"।

अतिभूति अपनी स्त्री की खोज करने के लिए भूत की भांति भूतल पर भटकने लगा। जब यह बात उसके मात-पिता को मालूम हुई तो वे भी अपने पुत्र और पुत्रवधू को ढूंढने के लिए परदेश को चल पड़े। घूमते घूमते, किसी समय उन्हें एक साधु मिले। साधु को भक्ति भाव से नमस्कार करके वे उनका धर्मोपदेश सुनने के लिए बैठ गये। धर्मोपदेश सुनने से उन्हें संसार से वैराग्य होगया और वसुभूति तथा अनुकेशा दोनों पति-पत्नि ने साधु के समीप दीक्षा लेली। इसके बाद गुरु की आज्ञा लेकर अनुकेशा, कमलश्री नामक आर्या के पास आकर रहने लगी। चारित्र का पालन करते करते कुछ समय के पश्चात् दोनों ने शरीर का त्याग किया और दोनों सौधर्म स्वर्ग में जन्मे। वहां से चल कर वसुभूति का जीव वैताढ्य पर्वत पर रथनुपुर नगर का चन्द्रगति नामक राजा हुआ और अनुकेशा भी देवलोक से चलकर इसी राजा की पुष्पवती नाम की रानी हुई।

अतिभूति की स्त्री सरसा ने भी जिसे कयान लेकर चला गया था, संसार को असार समझ कर एक साध्वी के पास

दीक्षा लेली और वह काल करके ईशान देवलोक में देवी रूप से उत्पन्न हुई। अतिभूति अपनी स्त्री की खोज करता करता कुछ समय के अनन्तर मर गया और चिरकाल तक संसार में भटक कर एक बार हंस का बालक हुआ। उसे सेन नामक पक्षी लेकर खाने लगा, पर दैवयोग से वह किसी प्रकार उससे छूट गया और जैसे तैसे उड़ता उड़ता एक साधु के पास आकर गिर पड़ा। उस समय उसके प्राण सिर्फ कण्ठ में शेष रह गये थे। इस प्रसंग पर महा करुणासागर उन मुनि ने उसे नवकार मन्त्र सुनाया। मन्त्र के प्रभाव से वह हंस बालक आयु समाप्त होने पर किन्नर लोक में दस हजार वर्ष की आयु वाला देव हुआ। वहां से चल कर वह विदग्ध नामक नगर के राजा प्रकाशसिंह की प्रवरा रानी के उदर से कुण्डलमण्डित नामक पुत्र हुआ।

भोगोपभोग में आसक्त कयान, मृत्यु का ग्रास बन कर भवाटवी में भटकता भटकता चक्रपुर नगर के राजा चक्रध्वज के उपाध्याय धूम्रकेतु की स्वाहा नामक स्त्री के उदर से पुत्र हुआ। उसका नाम पिंग रक्खा गया। राजा चक्रध्वज की कन्या अति-सुन्दरी तथा पिंग एक ही गुरु के पास विद्याभ्यास करते थे। वहां दोनो का आपस में प्रेम होगया। मौका पाकर पिंग ने अति सुन्दरी का हरण किया और वहां से भाग कर विदग्ध नामक नगर में जाकर रहने लगा। वहां वह घास तथा लकड़ियां वेच कर किसी प्रकार अपना निर्वाह करने लगा, क्योंकि गुणहीन पुरुषों का पेट ऐसे कार्य किये बिना भरता ही नहीं है।

एक बार उस नगर के राजकुमार कुण्डलमण्डित की नजर अतिसुन्दरी पर पड़ गई। चार आंखें होते ही दोनों की परस्पर में प्रीति बँध गई। इसके बाद अपने पिता के डर से कुन्डलमंडित गुप्त रूप से अतिसुन्दरी को साथ लेकर वहां से निकल भागा और किसी पर्वत पर जाकर वहां मकान बना कर रहने लगा। अतिसुन्दरी के वियोग से व्याकुल होकर पिंग पागल की तरह इधर उधर फिरने लगा। उसे किसी समय गुप्ताचार्य नामके आचार्य के दर्शन होगये। उनसे धर्मोपदेश सुन कर उसने दीक्षा धारण करली पर अतिसुन्दरी का अनुराग उसके अन्तःकरण

से दूर नहीं हुआ। वह अन्त में काल करके सौधर्म स्वर्ग में देव हुआ।

पर्वत पर रहने वाले कुण्डलमण्डित ने कुत्ता की भांति दशरथ राजा के राज्य में लूट मार शुरु करदी। उसे बालचन्द्र नामक एक सुभट ने पकड़ कर बांध लिया और राजा के सामने पेश किया राजा दशरथ ने कुछ समय तक उसे कैदखाने में डाल रक्खा। जब उन्हें उसका चालचलन अच्छा प्रतीत हुआ और उसकी दीनता दिखाई दी तो उसे छुटकारा दे दिया। कहा है—"शत्रु जब दीन बन जाता है तो महापुरुषों का कोप शांत होजाता है।" कुण्डलमण्डित छुटकारा पाकर अपने पिता का राज्य लेने की इच्छा करता हुआ पृथ्वी पर विचरने लगा। फिरते फिरते एक बार उसे मुनि चन्द्र नामक साधु का समागम होगया। उनसे देशना सुनकर वह श्रावक बना। इसके बाद आयु समाप्त करके, राज्य पाने की इच्छा करता हुआ वह मिथिला नगरी के राजा जनक की स्त्री विदेहा की कूंख से उत्पन्न हुआ।

सरसा, जो ईशान देवलोक में उत्पन्न हुई थी, वहां से चलकर अनेक भव करके राजा के उपाध्याय की वेगवती नामक कन्या हुई। वह वहां दीक्षा धारण करके, अन्त में काल धर्म पाकर ब्रह्म देवलोक में देवी हुई। वहां फिर आयु पूरी करके जनक राजा की विदेहा नामक रानी के उदर से कुण्डलमंडित के जीव के साथ कन्या रूप में उत्पन्न हुई।

दशरथ राजा का पूर्वभव वृत्तान्त

(जनक आदि का संबंध)

पहले तुम सेनापुर नामक नगर में महात्मा भावन नाम के एक वणिक की स्त्री दीपिका के उदर से उपास्ति नामक कन्या के रूप में उत्पन्न हुए थे। वह कन्या साधुओं की निंदा करने वाली थी। उस पाप के उदय से वह कन्या का जीव पशु आदि की योनियो में भटकता रहा। भव-भ्रमण करते-करते एक बार चन्द्रपुर

नामक नगर में धन्य नामक व्यापारी की स्त्री सुन्दरी के उदर से तुम्हारा जीव वरुण नाम से पुत्र रूप में जन्मा। वह अत्यन्त उदार था। उस भव में अपने उदार स्वभाव के कारण वह साधुओं को इच्छा से भी अधिक दान देता था। वहां से काल करके तुम देवलोक में देव हुए। फिर वहां से भी चल कर तुम पुष्कला नामक नगरी में नन्दिघोस राजा की रानी पृथ्वी देवी की कूंख से नन्दिवर्धन नामक पुत्र हुए। राजा नन्दिघोस तुम्हें राज सिंहासन पर बिठा कर यशोधर नामक मुनि के समीप दीक्षित होगये। वे आयु पूर्ण करके ग्रैवेयक देवलोक में देव हुए, और तुम श्रावक-धर्म का पालन करके आयु समाप्त होने पर काल करके ब्रह्म देवलोक में उत्पन्न हुए। वहां से चलकर तुम्हारा जीव पूर्व महाविदेह क्षेत्र में वैताढ्य पर्वत की उत्तर दिशा की तरफ शशिपुर नामक नगर में विद्याधरों के स्वामी रत्नमाली की स्त्री विद्युल्लता के उदर से महापराक्रमी सूर्यंजय नामक पुत्र हुआ। एक बार रत्नमाली राजा ने विद्याधरों के अत्यन्त अभिमानी राजा वज्रनयन को जीतने के लिए सिंहपुर नगर में आकर, बाल, वृद्ध, स्त्री, पशु तथा उपवन सहित नगर को जलाना आरंभ किया। उस समय एक पूर्वजन्म में उपमन्यु नामक उपाध्याय था। उसका जीव सहस्त्रार स्वर्ग में देव हुआ था। वह वहां से आकर रत्नमाली से कहने लगा—'हे रत्नमाली! यह घोर पातक मत कर। पूर्वजन्म में तूं भूरिनन्दन नामक राजा था। उस समय तूंने मांस-भक्षण न करने की प्रतिज्ञा की थी। पर तूंने उस प्रतिज्ञा का पालन नहीं किया। इस कारण कितनेक भवों में भटक कर किसी पुण्य के प्रताप से तूं रत्नमाली राजा हुआ है। अतएव अनेक भवों में भ्रमण कराने वाला ऐसा घोर कृत्य मत कर। देव के इस प्रकार के वचन सुन कर रत्नमाली चुपचाप बैठा रहा। देव इसके बाद पूर्वभव का वृत्तान्त कहने लगा—"हे राजन्! पहले मैं उपमन्यु नामक उपाध्याय था। उस समय स्कन्द नामक पुरुष ने मुझे मार डाला था। मर कर मैं हाथी हुआ। हाथी को पकड़ कर भूरिनन्दन राजा अपने घर ले आया। कुछ समय वहां रहने के बाद एक बार संग्राम में आने से मेरी मृत्यु होगई। मृत्यु के पश्चात् उसी भूरिनन्दन राजा की रानी गंधारा के उदर से मेरा जीव अरिसूदन नामक पुत्र हुआ। उस भव में मुझे जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न

होगया। संसार से विरक्त होकर मैंने दीक्षा धारण करली। वहां से काल करके सहस्त्रार नामक देवलोक में मैं यह देव हुआ हूं। भूरिनन्दन राजा मृत्यु के पश्चात् किसी वन में एक बड़ा अजगर हुआ। वह दावानल में जल कर वहां से नरक में उत्पन्न हुआ। वहां से निकल कर तूं यह रत्नमाली राजा हुआ है। तुम्हारे साथ पूर्वभव का मेरा स्नेह है और इसी कारण मैंने यहां आकर तुम्हें बोध दिया है। पहले, भूरिनन्दन के भव में मांस न खाने की प्रतिज्ञा को भंग करने के कारण तुम्हें नरक के दुःख देखने पड़े और इतने भवों में भटकना पड़ा। इसलिए अनेक दुःखों को उत्पन्न करने वाला, इस नगर को भस्म करने का यह घोर कृत्य तुम छोड़ दो।'

देव के इस प्रकार वचन सुनकर राजा रत्नमाली ने नगर को भस्म करना स्थगित कर दिया। वह युद्ध से विमुख हो गया। उसने कुलनन्दन नामक अपने पुत्र को राज्य भार सौंप कर सूर्यंजय नामक अपने दूसरे पुत्र के साथ, उसी समय श्रीतिलकसुन्दराचार्य के समीप दीक्षा ग्रहण करली। इसके अनन्तर वे दोनों पिता पुत्र मुनि आयु पूर्ण होने पर, काल धर्म पाकर महाशुक्र देवलोक में देव हुए। वहां से चल कर रत्नमाली का जीव राजा जनक हुआ और सूर्यंजय का जीव राजा दशरथ हुआ है। उपमन्यु उपाध्याय का जीव सहस्त्रार स्वर्ग में चलकर जनक राजा का कनक नामक भाई हुआ है। और नन्दिवर्धन के भव का तुम्हारे पिता नन्दिघोष का जीव मैं हूं जो ग्रैवेयक देवलोक से चलकर सत्यभूति हुआ हूँ।

इस प्रकार अपने पूर्वभव की कथा तथा जनक आदि का सम्बन्ध सुन कर राजा दशरथ ने सम्यक्त्व प्राप्त किया। तत्पश्चात् मुनि को नमस्कार करके दीक्षा धारण की इच्छा से राजा दशरथ वहां से उठे और अपने घर लौट आये।

कुलभूषण और देवभूषण मुनि तथा अनलप्रभ देव
(पूर्वभव के वैर-सम्बन्ध का वृत्तान्त)

पद्म नामक नगर में विजय पर्वत नाम का राजा राज्य

करता था। उसके एक दूत का नाम अमृतस्वर था। अमृतस्वर की स्त्री उपयोगा के उदर से उदित तथा मुदित नाम के दो पुत्र थे। अमृतस्वर का वसुभूति नामक एक ब्राह्मण मित्र था। उसके साथ उपयोगा का प्रेम-सम्बन्ध होगया। वह अपने प्रेमी से कहने लगी—"अगर तुम मेरे पति (अमृतस्वर) को मार डालो तो हम लोग निर्भय होजायेंगे।" वसुभूति ने उपयोगा की बात स्वीकार करली और वह अमृतस्वर को मार डालने का अवसर खोजने लगा। कहा भी है—'कामी पुरुष कौन-सा कुकृत्य नहीं कर डालता है?' कुछ दिनों बाद अमृतस्वर और वसुभूति, राजा के काम से विदेश जाने के लिए निकले। मौका पाकर वसुभूति ने राह में ही अमृतस्वर का काम तमाम कर दिया और स्वयं नगर में आकर लोगों से कहने लगा—'अमृतस्वर स्वयं परदेश चला गया है और एक विशेष प्रयोजन से मुझे पीछे लौटा दिया है।' उसने उपयोगा से कहा—'लो, हमारे तुम्हारे सम्भोग में विघ्न डालने वाले अमृतस्वर को, तुम्हारे कथनानुसार मैंने यमलोक भेज दिया है।' उपयोगा ने कहा—'बहुत अच्छा किया' पर जब तक मेरे ये दोनों पुत्र जीवित हैं तब तक हम लोग मनचाही मौज नहीं लूट सकते। अगर ये दोनों मर जायँ तो बस, फिर कोई अड़चन नहीं रह जायगी। वसुभूति बोला 'तुम चिंता न करो। मैं इन्हें भी मार डालूंगा।' दैवयोग से इनकी इस गुप्त मंत्रणा का हाल वसुभूति की स्त्री को मालूम होगया। उसके हृदय में ईर्षा की आग भड़क उठी और उसने उपयोगा के पुत्र उदित और मुदित को यह सारी घटना कह सुनाई। यह सुनते ही उदित के क्रोध का पार न रहा। उसने अवसर पाकर वसुभूति की जीवन-लीला समाप्त करदी। वसुभूति मर कर नलपल्ली में म्लेच्छ हुआ। तदन्तर किसी समय विजयपर्वत राजा ने मतिवर्धन नामक मुनि से धर्मदेशना सुन कर दीक्षा धारण की। और उदित तथा मुदित दोनों भाईयों ने भी दीक्षा ग्रहण की। ये दोनों साधु साथ साथ विहार करते हुए कर्मयोग से वे रास्ता भूल जाने के कारण नलपल्ली नामक उसी म्लेच्छ बस्ती में पहुँच गये। वहीं वसुभूति का जीव म्लेच्छ हुआ था। इन दोनों साधुओं को देखते ही उसे जाति स्मरण ज्ञान होगया। पूर्वभव की घटना स्मरण हो आने से पूर्व वैर का स्मरण करके वह मुनियों को मारने दौड़ा पर म्लेच्छों के राजा ने उनकी रक्षा की।

म्लेच्छ राजा और इन मुनियों का पूर्वभव का सम्बन्ध यह था— म्लेच्छ राजा पूर्वजन्म में एक मृग था। उसे एक शिकारी ने मारा था उदित और मुदित मुनियों के जीव वहां किसान रूप में थे, उस समय मृग को शिकारी से बचाया था। इसी कारण म्लेच्छ राजा ने इनकी रक्षा की। आखिर वहां से विहार करके दोनों मुनि धर्म-कृत्य करके अन्त में अनशन धारण कर काल करके महाशुक्र नामक स्वर्ग में सुन्दर और सुकेश नामक दो देव हुए। वसुभूति का जीव म्लेच्छ योनि भोग कर मरने के बाद चिरकाल तक अनेकानेक योनियों में घोर वेदनाएँ सहन करता हुआ, एक बार किसी शुभ कर्म के योग से, अत्यन्त कठिनाई से मनुष्य रूप में उत्पन्न हुआ। उस जन्म में तापस होकर मरने के पश्चात् ज्योतिष्क देवलोक में यह धूमकेतु नामक देव हुआ, तदनन्तर उदित तथा मुदित के जीव महाशुक्र स्वर्ग में चलकर भरत-क्षेत्र में अरिष्ट नगर के राजा प्रियंवद की रानी पद्मावती के उदर से रत्नरथ और चित्ररथ नाम के दो पुत्र हुए। ज्योतिष्क देवलोक से भ्रष्ट होकर धूमकेतु भी उसी राजा की कनका नामक दूसरी रानी के उदर से अनुद्धर नामक पुत्र हुआ। वह रत्नरथ और चित्ररथ के साथ वैर करने लगा, पर इन दोनो ने उसके प्रति कभी भी द्वेष नहीं किया। कुछ समय के बाद राजा प्रियंवद ने रत्नरथ को राज सिंहासन पर बिठा कर, शेष दो पुत्रों को युवराज-पद दिया और आप छह दिन का अनशन करके, काल कर देवलोक में देव होगया। राजा रत्नरथ राज्य का संचालन करने लगा।

एक समय की बात है। युवराज अनुद्धर ने किसी राजा की कन्या की मँगनी की। राजा ने वह कन्या अनुद्धर को न ब्याह कर राजा रत्नरथ को ब्याह दी। इससे अनुद्धर आग बबूला होगया और राज्य में लूटमार मचाने लगा। शत्रु ने पकड़ कर उसकी खूब मरम्मत की और उसे छोड़ दिया। तब वह तापस होगया। वहां किसी स्त्री के साथ समागम होगया और उसकी तपस्या निष्फल होगई। इस कारण मृत्यु के बाद चिरकाल तक भव-भ्रमण करते करते किसी कर्म के उदय से फिर मनुष्य भव की प्राप्ति होगई। इस भव में भी उसने तापस-दीक्षा अंगीकार करके अज्ञान-तप किया। इससे मरने के बाद वह ज्योतिष्क नामक देवलोक में अनलप्रभ

नामक देव हुआ। रत्नरथ और चित्ररथ नामक दोनों भाई धर्म लाभ करके, जिन-दीक्षा अंगीकार करके, अन्त में अच्युत कल्प नामक स्वर्ग में अतिबल और महाबल नामक महर्द्धिक देव हुए। वहां से चल कर सिद्धार्थ नगर में क्षेमंकर राजा की रानी विमला देवी की कुक्ष से कुलभूषण और देवभूषण नाम से हम दोनों भाई पुत्र रूप में जन्मे। हम क्रमशः बड़े हुए तो हमारे पिताजी ने घोष नामक उपाध्याय के पास अध्ययन करने के लिए हमें भेज दिया। बारह वर्ष तक उपाध्याय के घर रह कर हम दोनों ने विद्याभ्यास किया। तेहरवां वर्ष लगने पर हम समस्त कलाओं में कुशल होगये। तब घोष उपाध्याय हमें राजमन्दिर में ले आये। वहां राजमहल की खिड़की में बैठी हुई एक राजकन्या को देख कर, उसके लावण्य के कारण हमारे अन्तःकरण में काम विकार जागृत होगया। अज्ञानवश हमारी दृष्टि उसके सम्बन्ध में विकृत होगई।

हम राजा के पास आये। हमने सीखी हुई सब कलाएँ उन्हें बताई। महाराज ने प्रसन्न होकर उपाध्याय को अच्छी सीख (विदाई) देकर विदा किया। हम पिताजी की आज्ञा लेकर अपनी माता को नमस्कार करने के लिए अन्त पुर में गये। वहां वह कुमारी माता के पास बैठी दिखलाई दी। उस समय हमारी माता ने हमसे कहा—'यह कनकप्रभा तुम्हारी बहिन है। जब तुम दोनो भाई उपाध्याय के यहां पढने चले गये तब इसका जन्म हुआ था। यह बात तुम्हें अब तक मालूम नहीं है।' माता के मुख से यह वृत्तान्त सुन कर हम लज्जित हुए। अज्ञानवश अपनी बहिन के साथ काम-भोग भोगने की इच्छा होने के लिए हमें धिक्कार है। ऐसा समझ कर वैराग्य होआने से हम तत्काल वहां से निकल पडे और गुरु के पास पहुँच कर दीक्षित होगये।

कुछ दिनों बाद हम शरीर से निरपेक्ष होकर और अहंकार का परिहार कर इस पर्वत पर आकरके कायोत्सर्ग ध्यान में रहे। हमारे पिता क्षेमंकर राजा हमारे वियोग से अनशन व्रत लेकर काल करने के बाद गरुड़ देवलोक में महालोचन देव हुए। एक बार अपने अंग के कम्पन से उन्होंने समझा कि हमारे ऊपर कोई उपसर्ग

आ पड़ा है। पूर्व जन्म के स्नेह से पीड़ित होकर वह हमारे पास आये। उनके साथ अनलप्रभ तथा और भी देव आये थे। वे सब इकट्ठे होकर अनन्तवीर्य नामक महामुनि के पास गये। उस समय महामुनि धर्मदेशना देने बैठे थे। धर्मदेशना समाप्त होने के बाद उनके एक शिष्य ने उनसे पूछा—महाराज! आपके पश्चात् केवली कौन होगा? उन्होंने उत्तर दिया—मेरे शरीर त्यागने के बाद कुल-भूषण और देवभूषण दोनों भाई केवल ज्ञान प्राप्त करेंगे। यह सुन कर सब देव अपने अपने स्थान पर चले गये। अनलप्रभ विभंग ज्ञान द्वारा हमें कायोत्सर्ग ध्यान में जान कर, अनन्तवीर्य मुनि के वचनों को मिथ्या करने के लिए और पूर्वजन्म सम्बन्धी वैर क कारण हमें अत्यन्त दुःख पहुँचाने लगा। उसके उपद्रवों को आज चौथा दिन हुआ है। आज तुम दोनों भाईयों के आने से डर कर वह यहाँ से भाग गया है और इस निमित्त को पाकर हमें केवलज्ञान की प्राप्ति हुई है। यद्यपि इस देव ने हमें दु:ख पहुँचाने के अनेक उपाय किये, पर वह हमारे कर्म-क्षय में सहायक हुआ है। इस प्रकार कुलभूषण तथा देवभूषण नामक मुनियों का तथा उन पर उपसर्ग करने वाले अनलप्रभ देव का, पूर्वजन्म का सम्पूर्ण सम्बन्ध उन मुनि ने राम लक्ष्मण को कह सुनाया।

इन्द्रजीत और मेघवाहन का पूर्वभव-सम्बन्ध

पहले भरत क्षेत्र की कौशाम्बी नगरी में तुम दोनों प्रथम और पश्चिम नामक अत्यन्त दरिद्र भाई थे। वहां तुम दोनों ने भवदत्त नामक महामुनि के पास धर्म श्रवण कर दीक्षा अंगीकार की और कषाय का त्याग कर विहार करने लगे। विहार करते-करते दोनों मुनि एक बार कौशाम्बी नगरी में आये। वहां उन मुनियों ने कौशांबी के राजा नन्दिघोस को अपनी इंदुमुखी नामक रानी के साथ क्रीडा करते देखा। यह देखकर पश्चिम नामक मुनि ने निदान (नियाणा) किया कि—'इस तप के प्रभाव से मैं भी इसी प्रकार क्रीडा करने वाला पुत्र होऊँ।' दूसरे मुनि ने उसे बहुत रोका तथापि उसका वह निदान पक्का बँध गया। अतएव मरण होने के पश्चात् पश्चिम मुनि का जीव, उसी नन्दिघोस राजा की इन्दुमुखी रानी के

उदर से पुत्र रूप से उत्पन्न हुआ। उसका नाम रतिवर्द्धन रक्खा गया, क्रमशः वह यौवन अवस्था में आया और राजगद्दी पर आरूढ हुआ। इसके बाद वह अपने पिता की तरह अपनी पत्नी के साथ क्रीडा करने लगा, प्रथम नामक दूसरे मुनि कालधर्म पाकर तपस्या के योग से पंचम कल्प देवलोक में एक महान् ऋद्धि-धारी देव हुए। देव ने अवधिज्ञान द्वारा अपने पूर्वजन्म के भाई की उत्पत्ति जानी और उसे बोध देने के उद्देश्य से वह मुनि का वेष धारण कर उसके पास आया। राजा रतिवर्द्धन ने विनयपूर्वक वन्दना करके उसे आसन पर बिठलाया। इसके बाद मुनि-वेषधारी देव ने बन्धु-प्रेम से प्रेरित होकर अपना और उसका पूर्वभव कह सुनाया। पूर्वभव सुनने से रतिवर्द्धन राजा को जाति-स्मरण ज्ञान उत्पन्न होगया और उसने विरक्त होकर दीक्षा अंगीकार करली। वहां से काल करके तुम दोनों भाई विदेह क्षेत्र में विबुद्ध नगर के राजा हुए। वहां तुम दोनों ने धर्म-देशना सुन कर दीक्षा धारण की और अन्त में देह त्याग कर अच्युत देवलोक में उत्पन्न हुए। वहां से चलकर इन्द्रजीत तथा मेघवाहन नाम से तुम दोनों भाई प्रतिवासुदेव रावण के पुत्र हुए हो रतिवर्द्धन की माता इन्दुमुखी वहां से काल करके अनेक भव करने के बाद तुम्हारी माता मन्दोदरी हुई है।

राजा भरत और भुवनालंकार हाथी का पूर्वभव-संबंध

श्री ऋषभदेव स्वामी के साथ चार हजार राजाओं ने दीक्षा ग्रहण की थी। उनमें से श्रीऋषभदेव भगवान आहार का त्याग करके और मौन धारण करके विचरने लगे। अतएव उनके साथ दीक्षा लेने वाले सब तापस आहार के बिना दुःखी होने लगे। इन तापसों में चन्द्रोदय तथा सूर्योदय नामक दो तापस प्रह्लादन सुप्रभ राजा के पुत्र थे। काल करके अनेक भवों में चिरकाल तक भटकने के बाद, उनमें से चन्द्रोदय गजपुर के राजा हरमति की रानी चन्द्र-लेखा की कूंख से कुलंकर नामक पुत्र हुआ। सूरोदय भी उसी नगर में विश्वभूति ब्राह्मण की अग्निकुण्डा पत्नी के उदर से श्रुतिरति नामक पुत्र हुआ। राजकुमार कुलंकर यौवन अवस्था प्राप्त होने पर सिंहासन पर आसीन हुआ। एक बार वह तापसों के आश्रम में गया

था। वहां अभिनन्दन नामक अवधिज्ञानी साधु ने उससे कहा-इस आश्रम में पञ्चाग्नि साधन करने वाला एक तपस्वी जलाने के लिए लक्कड़ लाया है। उसमें एक सांप है। वह तुम्हारे पूर्वजन्मों में से एक जन्म का क्षेमकर नामक पितामह है। अतएव उस लक्कड़ को चीर कर उसकी रक्षा करो। मुनि का कथन सुन कर राजा कुलंकर दुःखी हुए और तत्काल ही उन्होंने लक्कड़ चिरवाया। उसमें सच-मुच एक सांप निकला। यह देख कर राजा कुलंकर को वैराग्य हो आया और उन्होंने दीक्षा लेने का विचार किया। इतने श्रुतिरति ब्राह्मण राजा से कहने लगा—हे राजन्! इस धर्म का नाम क्या है? अगर आपकी इच्छा हो ही तो वृद्धावस्था में उसे अंगीकार करना। इस समय क्यों दुःख भोगना चाहिये? ब्राह्मण का यह कथन सुन कर कुलंकर ने दीक्षा लेने का आग्रह त्याग दिया। राजा की पत्नी श्रीदामा का इस उपाध्याय (श्रुतिरति) का अनुचित सम्बन्ध था। एक बार उसने सोचा अगर हमारे कार्य की खबर राजा को लग गई तो वह हमें मार डालेगा। अतएव मैं ही राजा को मार डालूं तो झंझट मिटेगी। ऐसा विचार करके श्रीदामा ने उपाध्याय की सलाह से अपने पति कुलंकर राजा को विष देकर मार डाला। इसके बाद कुछ दिनों में श्रुतिरति ब्राह्मण भी मर गया। ये दोनों दीर्घ काल तक नाना प्रकार की योनियों में भटकते फिरे। उसके बाद किसी समय राजगृह नगर में कपिल ब्राह्मण की स्त्री सावित्री के उदर से विनोद और रमण नामक दो युगल पुत्र जन्मे। उनमें से रमण वेदा-ध्ययन करने के लिए परदेश गया था। कुछ समय बाद वेद का अध्ययन करके वह अपने घर लौट रहा था। जब वह राजगृह नगर के नजदीक आ पहुँचा तब रात्रि होजाने के कारण वहीं एक यक्ष के मन्दिर में सोगया। उसी जगह उसके भाई विनोद की स्त्री शाखा, दत्त नामक एक ब्राह्मण के साथ संकेत करके रात्रि के समय आई। उसके पीछे पीछे विनोद भी आया। शाखा रमण को ही दत्त समझ कर उसके साथ भोग भोगने के लिए उतारू होगई। इधर विनोद ने अपने भाई को पहचान न सकने के कारण तलवार के घाट उतार दिया। तब रमण की इच्छा रखने वाली शाखा ने विनोद के भी प्राण लेलिये। विनोद दीर्घ काल तक भव-भ्रमण करके किसी विश्व सेठ से यहां धन नाम से पुत्र हुआ। रमण भी भवाटवी में भटकता

भटकता उसकी स्त्री लक्ष्मी के पेट से भूषण नामक पुत्र हुआ। यौवन अवस्था प्राप्त होने पर पिता की आज्ञा से बत्तीस कन्याओं के साथ उसका विवाह हुआ। एक बार रात के समय स्त्रियों के साथ क्रीडा करता हुआ वह बैठा था। उसी पिछली रात्रि में श्रीधर नामक एक मुनि को केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ। देवताओं ने केवलज्ञान का महोत्सव किया। यह देख कर धर्म के प्रति उसकी रुचि जागृत हुई। अतएव वह उसी समय उठ कर उन साधुओं को वन्दना करने के लिए चल पड़ा। रास्ते में जाते समय उसे एक सांप ने काट खाया। उस समय उसके परिणाम शुभ थे, अतएव काल करके उसने शुभ गति पाई। तदनन्तर जम्बू द्वीप के महाविदेह क्षेत्र में, हनुपुर नगर में, अचल चक्रवर्ती राजा की महारानी हरिणी की कुक्षी से वह प्रियदर्शन नामक धर्मतत्पर पुत्र हुआ। वहां उसने दीक्षा लेने की इच्छा की, पर अपने पिता की आज्ञा से तीन हजार कन्याओं के साथ उसने विवाह किया, फिर भी उसका अन्तःकरण वैराग्यमय ही बना रहा। गृहवास में रहते हुए भी चौसठ हजार वर्ष उत्तम तप करके वह ब्रह्मलोक स्वर्ग में देव हुआ।

धन सेठ मर कर लम्बे समय तक संसार में परिभ्रमण करता हुआ पोतनपुर नगर में शकुनाग्निमुख ब्राह्मण की पत्नी ब्रह्मपत्नी के उदर से मृदुमति नामक पुत्र हुआ। वह पुत्र अविनयी था। अतएव उसके पिता ने उसे बाहर निकाल दिया। परन्तु कुछ समय बाद समस्त कलाएँ सीख कर वह घर लौट आया। घर आकर वह रात दिन जुआ खेलने लगा। उसे जीतने में कोई भी समर्थ न हो सका, अतएव उसने बहुत सा धन कमा लिया। फिर उसी नगर में रहने वाली वसन्तसेना नामक वैश्या के साथ उसका प्रेम-सम्बन्ध होगया और उसने खूब भोग भोगे। अन्त में वैराग्य होने से उसने दीक्षा धारण करली। शक्ति के अनुसार चारित्र का पालन कर वह भी ब्रह्म देवलोक में उत्पन्न हुआ। वहां से चल कर पूर्वजन्म के माया दोष के कारण वह वैताढ्य पर्वत पर भुवनालंकार नामक हाथी हुआ है। प्रियदर्शन का जीव भी ब्रह्म देवलोक से चलकर तुम्हारा यह महाभुज भाई भरत हुआ है। इनका दर्शन होते ही हाथी को जाति-स्मरण ज्ञान हुआ है और वह मद-रहित होगया है। कहा है—'विचार करने से रौद्र भय नहीं रहता।'

शत्रुघ्न के पूर्वभव का वृत्तान्त

शत्रुघ्न का जीव एक बार मथुरा नगरी में उत्पन्न हुआ। वह किसी समय साधुओं की सेवा करने वाला श्रीधर नामक ब्राह्मण हुआ, वह बहुत रूपवान था। एक बार वह रास्ते में जा रहा था तब वहां के राजा की रानी ललिता की नजर उस पर पड़ गई। रानी उस पर मोहित होगई। कामभोग भोगने की इच्छा से रानी ने उसे अपने पास बुलाया। श्रीधर के आने पर राजा भी अचानक वहां आ पहुँचा। इससे ललिता बहुत घबराई। श्रीधर को देखकर राजा चिल्लाया—'चोर है चोर इसे पकड़ लो।' राजा के कर्मचारी तत्काल दौड़े और श्रीधर को पकड़ कर बांध लिया। राजा की आज्ञा पाकर कर्मचारी उसे सूली पर चढ़ाने के लिए ले गये। उस समय कल्याण नामक एक साधु ने श्रीधर को देखा। उसे देखकर मुनि ने जान लिया कि यह ब्राह्मण साधु सेवक है। अतएव मुनि ने उसे छोड़ देने के लिए राजा को समझाया। राजा ने उसे छोड़ दिया और तत्काल ही दीक्षा लेली। दीक्षा पालन कर शरीर का अन्त होने पर वह स्वर्ग चला गया।

स्वर्ग से चल कर वह मथुरा के राजा चन्द्रप्रभ की स्त्री कांचनप्रभा के उदर से अचल नामक पुत्र हुआ। अचल, राजा चन्द्रप्रभ को बहुत प्यारा था, अतएव उसीको राज्य मिलेगा, यह सोच कर उसके भानुप्रभ आदि आठ सौतेले भाईयों को बड़ी डाह हुई और वे उसे मार डालने का प्रयत्न करने लगे। प्रधानमन्त्री को यह रहस्य मालूम होगया और उसने अचल को सावधान कर दिया। अचल वहां से भाग गया। रास्ते में एक जंगल आया और जंगल में कांटा चुभने के कारण वह रोने लगा। वहां होकर श्रावस्ती नगरी का निवासी, अपने पिता द्वारा बाहर निकाला हुआ, अंक नामक एक पुरुष लकड़ियों का भारा लिये जा रहा था। उसने अचल को रोते देख भारा नीचे उतारा और अचल के पैर में से कांटा निकाल दिया। कांटा निकल जाने पर वेदना कम होजाने से अचल ने कहा—'तुमने बहुत अच्छा किया है। जब तुम सुनो कि मथुरा में अचल राजा हुआ है, तब वहां आना। तुम मेरे महान् उपकारक हो।'

अचल वहां से रवाना होकर कौशाम्बी नगरी पहुँचा। वहां उसने सिंहगुरु नामक आचार्य के समीप धनुर्विद्या का अभ्यास करने वाले राजा इन्द्रदत्त को देखा। अचल ने भी उसे अपना धनुष चलाना वताया। इससे प्रसन्न होकर राजा इन्द्रदत्त ने पृथ्वी अपनी कन्या उसे प्रदान करदी। अचल ने वलवान होकर अंग आदि देश जीत लिये। इसके वाद उसने मथुरा नगरी पर चढाई करदी और भानुप्रभ आदि आठो सौतेले भाईयो को कैद कर लिया। तब उसके पिता चन्द्रप्रभ ने, अपने पुत्रों को छुड़ाने के लिए अपने प्रधान मन्त्री को उसके पास भेजा। अचल के पास आकर प्रधानमन्त्री ने भानुप्रभ आदि को छोड़ने की प्रार्थना की। उस समय अचल ने अपना संपूर्ण पूर्व वृत्तान्त कह कर उसे विदा किया। प्रधानमन्त्री ने सारा वृत्तान्त राजा चन्द्रप्रभ से निवेदन किया। राजा चन्द्रप्रभ अचल के ऊपर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और यद्यपि अचल सबसे छोटा था फिर भी मथुरा में लाकर उसका राज्यभिषेक कर दिया। अचल पर ईर्षा रखने वाले भानुप्रभ आदि आठों पुत्रों को देश-निकाला देदिया। पर अचल ने उन्हें वापिस बुलाकर अपना सेवक बना लिया। इसके बाद एक बार अचल राजा ने नाट्यगृह में, अपने पैर का कांटा निकालने वाले अंक को देखा। उसने उसी समय सेवको को भेज कर अंक को अपने पास बुला लिया और उसकी जन्मभूमि श्रावस्ती नगरी का राज्य उसे दे दिया। दोनों एकता पूर्वक राज्य करने लगे। कुछ समय बीत जाने के बाद अचल और अंक ने विरक्त होकर समुद्रगुप्ताचार्य के समीप दीक्षा धारण करली। दोनों दीक्षा पालन करके अन्त में ब्रह्म देवलोक में जन्म ग्रहण किया। अचल का जीव वहां से चल कर यह तुम्हारा छोटा शत्रुघ्न हुआ है। पूर्वजन्म के मोह के कारण उसे मथुरा नगरी का राज्य लेने की इच्छा हुई। अंक का जीव ब्रह्म देवलोक से आकर तुम्हारा यह कृतान्तवदन नामक सेनापति हुआ है।

राम, लक्ष्मण, सीता विभीषण, रावण, सुग्रीव लवणांकुश आदि का पूर्वभव वृत्तान्त

प्राचीन काल में दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र में क्षेमपुर नामक

एक नगर था। वहां नयदत्त नामक एक वाणिक् निवास करता था। उसकी सुनन्दा नामक स्त्री के उदर से धनदत्त और वसुदत्त नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए। याज्ञवल्क्य नामक एक ब्राह्मण के साथ उसकी मित्रता थी। उसी नगर में एक सागरदत्त नामक दूसरा वाणिक भी रहता था। उसकी पत्नी रत्नप्रभा के पेट से उत्पन्न गुणधर नामक पुत्र और गुणवती कन्या थी। सागरदत्त ने अपनी कन्या गुणवती, नयदत्त के पुत्र धनदत्त को देदी और उसकी पत्नी ने द्रव्य के लोभ से उसी नगर में रहने वाले श्रीकान्त नामक सेठ को देदी। याज्ञ-वल्क्य को यह समाचार मालूम हुआ तो उसने धनदत्त तथा वसुदत्त से कह दिया। क्रोध से आग बबूला होकर वसुदत्त श्रीकन्न्त को मार डालने के लिए रात में रवाना हुआ। वहां उसने श्रीकान्त को मारा और श्रीकान्त ने तलवार से वसुदत्त को मार डाला। मरने के बाद दोनों विन्ध्याटवी में मृग हुए। गुणवती भी अविवाहित अवस्था में ही मर कर उसी अटवी में मृग के रूप में जन्मी। उसके लिए फिर दोनो मृग आपस में लडे और दोनों की मृत्यु होगई। पारस्परिक वैर के कारण वे दोनों अनेक भवों में भटकते फिरे।

इधर धनदत्त अपने भाई वसुदत्त की मृत्यु से दुःखी हुआ रात में भटक रहा था, तब उसे भूख लगी। उसी समय उसकी दृष्टि कुछ साधुओं पर जा पड़ी। उसने उनसे खाना मांगा। मुनियों में से एक ने कहा-'साधु तो दिन में भी अन्नपानी नहीं रखते, ऐसा होते हुए भी तुम्हें रात में भोजन मांग कर खाने की इच्छा क्यों हुई? ऐसे अंधकार में अन्न को कौन देख सकता है?' इस प्रकार बोध देकर उसके कानों में बोध रूपी अमृत डालकर मुनि वहां से चले गये। तत्पश्चात् काल करके धनदत्त सौधर्म देवलोक में देव हुआ। देवभव की आयु पूर्ण करके वह महापुर नगर में मेरुनन्दन नामक श्रावक की धारिणी स्त्री की कूंख से पद्मरुचि नामक पुत्र हुआ। यौवन अवस्था प्राप्त होने पर किसी समय वह अपनी इच्छा से घोडे पर सवार होकर गोकुल की ओर गया। रास्ते में उसने मरणासन्न पडे हुए बैल देखे। उसके दिल में दया उमड़ पड़ी अतएव वह घोडे से नीचे उतरा, बैलों के पास गया और उनके कान में पंचपरमेष्ठी (नवकार) मन्त्र सुनाया। उनमें का एक बूढा बैल देह त्यागने के बाद नवकार-

मन्त्र के प्रताप से, उसी नगर में, छत्रछाय राजा की रानी श्रीदत्ता के उदर से वृषभध्वज नामक पुत्र हुआ। वह बड़ा होकर इच्छानुसार इधर उधर डोलता फिरता था। एक बार वह बैलों के पहले वाले स्थान पर आया। पूर्वजन्म के दर्शन से उसे वहां जातिस्मरण ज्ञान होगया। उसने उस स्थान पर एक मकान बनवाया और उसकी दीवाल पर मरणासन्न बैलों के चित्र बनवाये। साथ ही बैलों के कान में नवकारमन्त्र सुनाने वाले पुरुष को चित्रित किया। इसके बाद उसने वहां पहरेदार नियत कर दिये और उन्हें हिदायत करदी कि इन चित्रों को जो मनुष्य यथार्थ-साक्षात् की तरह देखे, उसकी खातरी करके उसी समय मेरे पास आकर निवेदन करना। इस प्रकार व्यवस्था करके वृषभध्वज कुमार अपने महल को चला गया।

इसके बाद कुछ दिन व्यतीत होजाने पर वह पद्मरुचि सेठ वहां आया और उसने दीवाल पर चित्र देखे। चित्र देख कर वह चकित सा रह गया और कहने लगा—यह सब मुझे लक्ष्य करके चित्रित किया गया है। यह बात पहरेदारों ने वृषभध्वज के पास जाकर निवेदन की। वृषभध्वज वहां आया और पद्मरुचि से पूछने लगा—इन चित्रों का आप क्या वृत्तान्त जानते हैं? तब पद्मरुचि ने कहा—पहले मरते हुए इन बैलों को मैंने नवकारमन्त्र सुनाया था। इस बात को जानने वाले किसी पुरुष ने यहां मेरा चित्र अंकित किया है। इतना सुनते ही वृषभध्वज ने उसे नमस्कार किया और कहा-यह जो वृद्ध बैल अंकित है, वह मैं हूँ। आपके द्वारा सुनाये गये नवकारमन्त्र के प्रभाव से मैं राजपुत्र हुआ हूँ। इस तिर्यञ्च योनि में कृपा करके आपने मुझे नवकारमन्त्र न सुनाया होता तो फिर मुझे वैसी ही योनि मिलती। यह आपका ही प्रताप है। अतएव आप मेरे स्वामी, गुरु तथा देव हैं। यह राज्य भी मुझे आपके ही प्रताप से मिला है अतएव उसे आप ही स्वीकार कीजीये और उसका उपभोग कीजिये।

इसके बाद पद्मरुचि तथा वृषभध्वज श्रावक के व्रतों का पालन करते हुए दिन बिताने लगे। इस प्रकार बहुत समय व्यतीत होजाने पर दोनों आयु का अन्त होने के बाद ईशान देवलोक में महान् ऋद्धिधारी देव हुए। उनमें से पद्मरुचि का जीव स्वर्ग से चल

कर मेरु की पश्चिम दिशा में, वैताढ्य पर्वत पर नन्दावर्त्त नगर में राजा नन्दीश्वर की स्त्री कनकमाली की कूंख से नयनानन्द नामक पुत्र हुआ। बहुत समय राज्य का सुख भोग कर, अन्त में दीक्षा ग्रहण करके, काल करके माहेन्द्र देवलोक में देव हुआ। वहां से चल कर पूर्व महाविदेह क्षेत्र में क्षेमा नगरी के नरपाल विपुलवाहन की रानी पद्मावती के उदर से श्रीचन्द्र नामक पुत्र हुआ। वह फिर बहुत समय तक राजभोग भोग कर समाधिगुप्त मुनि के समीप दीक्षा ग्रहण करके, आयु पूर्ण होने पर काल करके ब्रह्म देवलोक का इन्द्र हुआ। वहां से चलकर पद्म नामक बलवान राजा राम हुआ, और वृषभध्वज ईशान स्वर्ग से चल कर, कितनेक भव करके यह सुग्रीव हुआ है।

श्रीकान्त का जीव मृग भव के पश्चात् अनेक पर्यायों में भ्रमण करता हुआ मृणालकन्द पत्तन में वज्रजम्बू नामक राजा की स्त्री हेमवती के उदर से शंभु नामक पुत्र हुआ। वसुदत्त का जीव भी इसी प्रकार अनेक भवों में भटकने के बाद शंभु राजा के उपाध्याय विजय की पत्नी रत्नचूड़ा की कूंख से श्रीभूति नामक पुत्र हुआ। गुणवती भी भव-भ्रमण करके श्रीभूति की स्त्री शाश्वती के उदर से वेगवती नामकी कन्या हुई। वेगवती जब यौवन अवस्था में आई तब उसने एक बार मानव-समूह द्वारा वन्दनीय सुदर्शन नामक प्रतिमाधारी साधु को देख कर उनका उपहास किया। वह बोली– 'ओ हो! आज यह साधु दिखाई पड़ा है। पहले तो यह औरतों के साथ क्रीडा करता फिरता था। उन स्त्रियों को इसने और कहीं भेज रक्खी है। न मालुम क्यों ऐसों को लोग वन्दना करते हैं? वेगवती के इस प्रकार कहने से जनता की श्रद्धा उन मुनि पर नहीं रही और लोगों ने उन पर दोषारोपण करके उनके साधुपन को नष्ट करना आरम्भ कर दिया। यह अवस्था देख मुनि ने प्रतिज्ञा की–'जब तक मुझ पर लगाया हुआ कलंक न मिट जायगा तब तक मैं पारणा नहीं करूंगा।' इस प्रकार की प्रतिज्ञा करने पर देवता के कोप से वेगवती के मुख पर सूजन चढ गई। वेगवती के पिता ने सोचा साधु के माथे मिथ्या कलंक मढने का ही यह भयानक फल है। अतएव उसने वेगवती का खूब तिरस्कार किया। इसके पश्चाताप घोर वेदना से पीड़ित और पिता के भय से भीत वेगवती सुदर्शन मुनि के पास

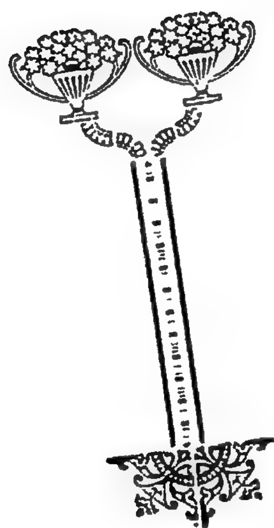
गई और सब लोगों के सामने चिल्ला चिल्ला कर कहने लगी–'हे क्षमा-सागर ! मेरा अपराध क्षमा करें । हे मुनिवर, आप सर्वथा निर्दोष हैं आपको मिथ्या कलंक लगाया है ।' यह सुनकर लोगों ने पुन: मुनि की पूजा कीं । उसी दिन से वेगवती निरोग होकर श्राविका बन गई। वह अत्यन्त रूपवती थी, अतएव राजा शंभु ने उसकी मँगनी की। तब उसके पिता श्रीभूति ने कहा–'मैं मिथ्यादृष्टि पुरुष को अपनी कन्या नहीं दे सकता।' राजा शंभु ने श्रीभूति को मारकर बलात्कार से उसकी कन्या वेगवती का उपभोग किया। अतएव वेगवती ने राजा को शाप दिया कि मैं अगले जन्म में तेरा वध करने के लिए उत्पन्न होऊँगी। इस भय से शंभु राजा ने वेगवती को त्याग दिया और वेगवती ने हरिकान्ता नामक साध्वी के पास दीक्षा अंगीकार करली, कुछ समय तक पंच महाव्रत पालकर वेगवती काल करके ब्रह्म देवलोक में देवी हुई। वहां से चलकर शंभु राजा का जो जीव रावण हुआ है, उसकी मृत्यु के लिए पहले किये हुए निदान के प्रभाव से वेगवती राजा जनक की कन्या सीता हुई है। पूर्वभव में उसने सुदर्शन मुनि को मिथ्या कलंक लगाया था अतः इस भव में उसे लोगों ने झूठा दोष लगाया है। राजा शंभु मरने के बाद कितने ही भवों में भ्रमण करके कुशध्वज ब्राह्मण की स्त्री सावित्री के उदर से प्रभास नामक पुत्र हुआ। उसने विजयसेन मुनि के समीप दीक्षा ग्रहण की और उग्र तपस्या करता हुआ विचरने लगा। एक बार इन्द्र के समान समृद्धिशाली विद्याधरों के स्वामी कनकप्रभ को, ऋद्धि के साथ प्रभास मुनि ने देखा। उसे देख कर मुनि ने निदान किया कि—'मैं अपने इस तीव्र तपश्चरण के प्रभाव से ऐसा सम्पत्ति-शाली होऊँ।' इसके बाद वह काल करके तीसरे स्वर्ग में देव हुआ। वहां से चलकर पहले किये हुये कनकप्रभ के बराबर ऋद्धि के निदान के कारण वह तुम्हारा भाई रावण हुआ है। धनदत्त और वसुदत्त का मित्र याज्ञवल्क्य ब्राह्मण चिरकाल तक भव-कानन में चक्कर लगाता हुआ तुम अर्थात् विभीषण हो।

शंभु राजा के उपाध्याय विजय का पुत्र और वेगवती के पिता श्रीभूति का जीव काल करके, स्वर्ग में जाकर, फिर वहां से चलकर सुप्रतिष्ठ नगर में पुनर्वसु नामक विद्याधर हुआ। एक बार

काम से पीड़ित होकर उसने पुण्डरिकविजय नामक नगर में निवास करने वाले त्रिभुवनानन्द चक्री की अनंगसुन्दरी नाम की कन्या का हरण किया। उस कन्या को ढूंढने के लिए निकले हुए विद्याधरों के साथ उसका युद्ध हुआ। उस समय अनंगसुन्दरी विमान में से उतर कर एक कुंज में आ पहुँची। पुनर्वसु ने उसकी बहुत खोज की पर वह उसे न मिल सकी। अतएव वह उससे मिलने का निदान (नियाणा) करके, दीक्षित होकर आयु समाप्त होने पर स्वर्ग में गया। वहां की आयु पूर्ण होने पर चलकर यह लक्ष्मण हुआ है। अनंगसुन्दरी, जो कुंज में पहुंच गई थी, वहीं रह कर उत्तम प्रकार का तप करने लगी। एक बार उसे अजगर ने निगल लिया और समाधिमरण करके वह तीसरे देवलोक में देवी हुई। वहां से चल कर वह लक्ष्मण की स्त्री विशल्या हुई है। गुणवती का भाई गुणधर कुछ काल तक भव-भ्रमण करके कुण्डलमण्डित राजपुत्र हुआ। उस भव में श्रावक के व्रतों का पालन करके वह सीता का भाई भामण्डल हुआ है।

कालिंदी नगरी में वामदेव ब्राह्मण की पत्नी श्यामला के उदर से उत्पन्न वसुनन्द सुनन्द नामक दो पुत्र थे। किसी समय मासोपमास का पारणा करने के लिए एक मुनि उनके घर आये। दोनों भाईयों ने भक्तिभाव के साथ उनको आहार कराया। इस दान धर्म के प्रभाव से दोनों भाई उत्तर कुरुक्षेत्र में युगल (जोड़ला) के रूप में उत्पन्न हुए। वहां से देह त्यागने के पश्चात् वे स्वर्ग में देव हुए। वहां से चल कर कालिंदी नगरी में राजा रतिवदन की रानी सुदर्शना की कूंख से प्रियंकर शुभंकर नाम से भाई के रूप में जन्मे। बहुत समय तक राज्य करके दोनों भाईयों ने दीक्षा अंगीकार की और काल करके ग्रैवेयक देवलोक में देव हुए। वहां से चलकर अनंगलवण तथा मदनांकुश नामक राम और सीता के पुत्र हुए हैं। इनकी पूर्वभव की माता सुदर्शना का जीव चिरकाल पर्यन्त भव-भ्रमण करके इन्हें (लवणांकुश) को विद्या सिखाने वाला यह सिद्धार्थ हुआ है।





परिशिष्ट (३)

श्री जैन पद्य-रामायण का शुद्धाशुद्धि पत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
स्थान की	स्थानक	२	३
घनवाहन	घनवाहन	२	१८
"	"	२	२२
"	"	३	१
ताम्रपुजः	ताम्रयुजः	३	१६
तेम	हेम	३	१६
थीकरठ	श्रीकरठ	५	१३
लोप	लोक	६	४
माल्यान	माल्यवान	८	४
पुस्वर	पुरवर	८	२३
महोदूं	म्होदू	८	२३
न तु	तनु	१२	३
आये	आपे	१४	७
अनन्द	आनन्द	१४	११
सहश्रांस	सहश्रांशु	१८	६
राम	राय	१६	१७
राम	राय	२०	२
तणा वे	तणा बे	२०	१५
भामी	भमी	२०	१६
पाम्यो	पामी	२२	६
वसुदा	वसुधा	२२	१६
म्यारा	म्हारा	२३	१४
याद	याद कर	२३	१६
नाप्ने	नामे	२६	१६

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
अशामतो	अशातो	२७	२
मयरनी	मयरचनी	२७	२२
रांघत	रांघत ही	३०	२३
त्रल्यां	त्रूल्यां	३०	२५
योगणोप	योगणीप	३२	२७
हूत	दूत	३४	१२
सहथ	सहद्य	३४	२०
हूंसियार	हूँलीयारी	३४	२४
रावती	रोवती	४४	१३
महियर	सहियर	४६	५
साहा	साही	४८	२५
प्राती	प्रीती	७३	८
अजया	अजपा	७५	३
कहूं	कहूं	८१	१
गुप	गुप्ती	१०६	६
सजम	संयम	१०७	१४
वालावी	बोलावी	१०८	१६
उधम	उद्यम	११२	१८
शाचा	शिक्षा	१३७	१५
भांतो	भांति	१४०	२८
विविकप	विवेकप	१४४	२०
राघवजी	राघवजी	१४६	६
पतिन	पतित	१४६	१७
राघव	राघव	१४७	११
राज	राजा	१५१	२३
तृणा	तृषा	१५६	२३
जुऊआंजी	जुआजुआ	१६०	२
आत्रायो	आचीयो	१७७	११
आय	आप	१७९	२०
क प	कहे	१८२	२६

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
श्रोप	श्रोपे	१६२	१६
वीर	चीर	१६२	२४
मील	भील	१६३	८
थायो	थापो	२०७	१६
यही चाणूं	पहिचाणूं	२०८	१
	ढाल मूलगी	२०८	२
थपो	थयो	२०६	२
श्रकाश	आकाश	२०६	५
टकार	टंकार	२१२	११
लोकाम्यार	लोकाचार	२२०	२१
सवर	सब रही	२२६	१
सेरे	मेरे	२३५	२६
आग्यो	आयो	२३६	१३
मव	भव	२४३	१६
निनंक	निशंक	२४४	१
कैसो	कैसी	२४४	१६
रयूं	स्यूं	२४५	६
पाय	पाप	२५६	३
दीयता	दीपता	२५६	१८
सकाभ	सकाम	२६०	२१
माय	वाय	२६८	३
ढले	टले	२८२	४
उच्छत	उच्छल	२८२	२४
रातक	राक्षस	२८६	६
होजा जा	होजाता	२८६	१७
रम	राम	२६०	६
डत्तर	उत्तर	२६१	३
नव	तब	२६३	२
मेद	भेद	२६४	६
मुभ	मुझ	३०६	१४

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
कोशनाधीश	कोशलाधीश	३१६	१५
ततूकाल	तत्काल	३१६	१६
आभूपण	आभूपण	३१७	१८
पुक्तो के	युक्ति	३१८	१
भया	भाया	३१८	६
जा	जावे	३१९	३
वचि	चली	३१९	३०
अदश्ये	अदृश्य	३२०	२६
हानो	हीनो	३२०	२७
थपा	थया	३२५	५
इस	इम	३२५	६
धंटां	घटां	३२५	१८
में तेही	में आते ही	३२५	२०
पदम	पद्म	३२६	१८
कापोंना	कायोंना	३२९	६
वणि	वाणि	३२९	१२
भाय	भाया	३३१	३
थाय	थाप	३३१	११
पहिरावी	पधरावी	३३१	१४
आये	आपे	३३२	१७
नाराद	नारद	३३४	१
त्रिक्रट	त्रिकूट	३३७	११
आपराजिता	अपराजिता	३३७	१७
पदम	पद्म	३४१	२७
ऋृषमे	ऋृषभे	३४२	३
शंक्या	शका	३४२	२२
इम्प	इभ्य	३४३	११
शत्रुंजय	शेत्रुंजय	३४४	१९
क	करे	३४५	२१
पारेले	पाले	३४५	२१

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
मन्नी	सन्नी	३४९	१३
यहूत्यो	पहूत्यो	३५०	१६
कल्ये	कल्पे	३५३	३
साय	साप	३५३	१४
रत्नपुरे	रत्नपुरे	३५३	१८
हतुर्थी	चतुर्थी	३५४	१३
खिली	लिखी	३५६	१९
वेवसूं	वेगसूं	३५६	२१
घाठ	घात	३५६	२२
यत्न	सयत्न	३५८	८
घात	वात	३६२	१५
ढ़ालने	टालने	३६७	२५
पुष्यों के	पुष्पों के	३६९	५
के दल	दल	३६९	५
प्रण	प्राण	३७०	९
कपाय	कषाय	३७३	१९
विध्यात	विख्यात	३७३	१९
हस	हास	३७५	१५
किसदर	किस कदर	३७५	२०
कसती	सकती	३७६	७
ढल्यो	टल्यो	३७७	१
ढाल	टाल	३७९	१
समलावी	संभलावी	३७९	१०
तृण	नृण	३७९	२०
भ्रत	भ्रात	३८०	१
इसमें	इनमें	३८१	१२
कपरे	कथरे	३८२	१२
सर्पू	सर्यू	३८२	२५
बालाय	बोलाया	३८४	१
न.ये	नापे	८५३	११

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
ढाली	टाली	३९८	१८
वीलवे	वीनवे	४०३	२५
आप	आय	४०४	६
इन्द्रदिक	इन्द्रादिक	४०६	१४
सीताने शीले करीरे	युद्धे जीत्यो जोईरे	४०६	१
वात	व्रत	४३०	१७
काये	कापे	४३०	२२
चढको	चटको	४३२	३
मोग	भोग	४३२	२३
ढाले	ढोले	४३३	७

ब्रह्मचर्य रक्षा में

तबि	नवि



परिशिष्ट (४)

धन्यवाद

जिन महानुभावों ने मेरे उत्साह की वृद्धिकरने के लिए ग्राहक श्रेणि में पहिले ही से अपना नाम लिखाकर उदारता प्रकट की है अतः उन सज्जनों को मैं हृदय से धन्यवाद दे रहा हूं और भविष्य में भी मेरे कार्य में सहयोग देते रहें, यही प्रार्थना करता हुआ उनके नाम नीचे लिख देता हूं।

श्री सेठ विजयलालजी चंपालालजी गुलेच्छा	पुस्तक नग	५१	खींचन
,, लाधुरामजी अगरचन्दजी	,, ,,	१५	,,
,, रतनलालजी मानमलजी	,, ,,	११	,,
श्री सेठ सिम्भुरामजी गंगारामजी फार्म के मालिक सेठ छगनमलजी मूथा	पु० नग	२५	मु० चलुन्दा
,, जसराजजी कालूरामजी मूथा	,,	१५	रायचूर
,, कनकमलजी वोहरा	,,	५	जयतारण
,, अभयराजजी खेवरचन्दजी संखलेचा	,,	१०	,,
,, सेठ लिखमीचन्दजी पुखराजजी गुलेच्छा कपड़ा बाजार		५	जोधपुर
,, सेठ किसोरमलजी किस्तूरचन्दजी मोदी गांधियों की गली		५	जोधपुर
,, चुन्नीलालजी मोदी की धर्मपत्नी		१२	जोधपुर
,, सेठ पन्नालालजी ललवाणी		६	नागौर
,, केसरीमलजी सींगी की धर्मपत्नी		५	नागौर
श्री व्यास नथमलजी मूलचन्दजी		१५	नागौर
,, चन्दनमलजी तातेड़		५	कुचेरा

	स्थानकवासी संघ	५	बालोतरा
,,	मूलचन्दजी आसारामजी	५	गढ़ सीवाणा
,,	छोगमलजी मूलचन्दजी जिनाणी	५	गढ़ सिवाणा
,,	जैन स्थानकवासी ज्ञान मुनि मण्डल पुतस्कालय	५	जालौर
,,	जैन वर्धमान सभा	५	धूंधाड़ा
,,	मगनीरामजी कपूरचन्दजी बोरा	५	पाली
,,	उम्मेदमलजी सिरदारमलजी नाहर	५	देवलो (आऊवा)
	जैन श्री संघ करमावस मालियों की	५	करमावस
	जैन श्री संघ बिरांटियां (मेला का)	५	बिरांटिया
,,	अमरचन्दजी गजराजजी समदड़िया	६	नानणा
,,	नानक पुस्तकालय	१५	विजयनगर
,,	किस्तूरचदजी मुणोत की धर्मपत्नी गंगाबाई	५	पीपाड़
,,	सूरजमलजी मिश्रीमलजी मुणोयत	५	पीपाड़
,,	मोतीलालजी सोनराजजी बोरा	५	पीपाड़
,,	हरखचन्दजी मोतीलालजी कोठारी	५	पीपाड़
,,	जुगराजजी जवन्तराजजी खिवसरा	५	पीपाड़
,,	पेमराजजी बोहरा	५	पिपलिया
,,	किसनलालजी लूनिया	५	पिपलिया
,,	नथमलजी मूलचन्दजी	११	सादड़ी
	श्री संघ	५	भूटा

नोट—जो महाशय कम से कम पांच पुस्तकों के ग्राहक बने हैं उन महानुभावों के नाम अंकित किये गये हैं।

भवदीय.—

जैनोपदेशक वैद्य,

धूलचन्द सुराणा

पीपाड़ सीटी.

पुस्तक मिलने का पता:—

१ धूलचन्द सुराणा;
मु० पो० पीपाड़ सीटी
(मारवाड़)

२ बालकृष्ण उपाध्याय
नारायण प्रिंटिंग प्रेस,
ब्यावर (राजपूताना)